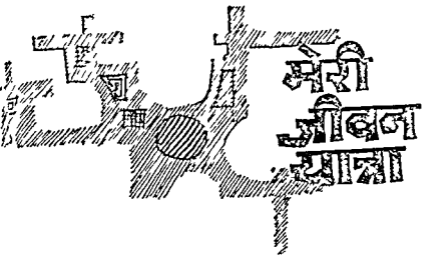




राजकमल

राजकमल प्रकाश

राहुल सांकृत्यायन



© कमला साठ्यायन १९६६

प्रथम मस्करण एप्रिल १९६७

मूल्य ११००

प्रकाशक

राजकमल प्रकाशन प्राइवट लिमिटेड

८ फज्ज बाजार दिल्ली ६

मुद्रक

नवीन प्रस

नेताजी सुभाष मार्ग दिल्ली ६

दो शब्द

प्रस्तुत ग्रंथ स्वर्गीय महापण्डित राहुलजी की बहुचर्चित 'जीवन यात्रा' का दोप भाग है, जिसे तीन खण्डों में प्रकाशित किया जा रहा है। प्रथम तथा द्वितीय खण्ड को पढ़ने वाले राहुलजी के पाठक दोप खण्डों के लिए भी व्यग्रता से प्रतीक्षा कर रहे थे, किन्तु लेखक की लेखनी से वहाँ पहले लिखे जान के बाद भी यह खण्ड बिन्ही कारणों से अप्रकाशित रहा। लेखक ने अपने जीवन-काल में उसे प्रकाशित करवाने की ओर उतनी तत्परता भी नहीं दिखाई क्योंकि वे अपने जीवन-काल में इसे प्रकाशित देखने के इच्छुक नहीं थे।

राहुलजी के देहावसान के बाद हिन्दी प्रेमियों तथा राहुल-साहित्य के पाठकों ने जीवनी के दोप खण्डों के लिए बहुत उत्कण्ठा व्यक्त की है। आज यह आपके हाथ में आ रहा है। पाठक इस ग्रंथ की नरम और गरम दोनों प्रकार की शैली का रसास्वादन करेंगे जो राहुलजी की चुस्त लेखनी की विशेषता रही है।

ग्रंथ की पाण्डुलिपि को आद्यापात पढ़कर उसके प्रकाशन को सम्भव बनाने के लिए हम राहुलजी के अनन्य मित्र श्रद्धेय भदन्त आनन्द कौसल्या-यनजी का कृतज्ञ हाना चाहिए। ग्रंथ का इतने सुन्दर रूप में प्रकाशित कर देने के लिए हम राजकमल प्रकाशन के आभारी हैं।

कमला साहत्यायन

राहुल निवास

२१, कचहरी राड,

दार्जिलिंग

क्रम

१	रूस से लौटा	१
२	दंग का चक्कर	१६
३	कलम घिसाई	३५
४	बम्बई में सम्मेलन	५३
५	साहित्य यात्रा	५९
६	सम्मेलन में वाप	८७
७	परिभाषा निर्माण के काम में	१११
८	वैशाली में	१३२
९	विन्हर दंग में	१४२
१०	तिब्बत के सीमान पर	१५८
११	फिर चिनी में	१७३
१२	बनौर से वापस	१८०
१३	परिभाषा के काम में	२०३
१४	राष्ट्रभाषा की जद्दोजहद	२२७
१५	नये वष का आरम्भ	२६३
१६	गाति निवेदन में	२६५
१७	कलिम्पोग में	३०८
१८	कलिम्पोग में शेष काम	३३६
१९	कलिम्पोग के अन्तिम मास	३६८
२०	हैदराबाद सम्मेलन	३९०
२१	नीड की खोज	४०८
२२	नैनीताल	४४३
२३	मसूरी की	४८५
२४	मसूरी का प्रथम निवास	५०१

रूस से लौटा

बम्बई—१७ अगस्त १९४७ को मैं 'स्ट्रेयमोर' जहाज में बम्बई उतगा। दो सप्ताह में अधिकांश बम्बई में ही रहा। १५ अगस्त को अंग्रेज भारत छोड़कर चले गए। उस दिन भारत के और भागों की तरह बम्बई में भी स्वतंत्रता का उत्सव मनाया गया। हम हमें बाल का अफमास था, कि हम उन पुण्य पर्व के दो दिन बाद बम्बई उतरे। लार्ड साउं के हुए परिश्रम का हा हम देखना नहीं था, बल्कि अंग्रेजों के शासन की वाक्यांश के अन के रूप में देना में जा ऐतिहासिक परिवर्तन हुआ था, उसे भी देना था। बम्बई में पार्टी-क्रैट में देना भर के अगवार आते थे। हिंदी में पत्र पत्रिकाओं की बात सी आ गई थी, लेकिन सब चीजों के लिए निवृत्त रहे थे। भाव्य भरासे निस्तार बने हा मकान है? जानकर दुःख हुआ, कि जिम वामपक्ष के ऊपर देश का भविष्य निर्भर है, वह आपस में बुग्री तरह में उलझ रहा है। कम्युनिस्ट चाहते थे, कि सब में एग्रेसिव स्थापित है, लेकिन सोगलिस्ट, फारवर्ड ब्लॉक, प्रातिनारी समाजवादी पार्टियाँ हमारे लिए तैयार नहीं थी।

सबसे दिल हिलाने वाली बात यह थी कि १५ अगस्त के महात्सव के साथ ही बंटे हुए भारत में आग लग गई। पंजाब में मानव-मानव का घाम मूली की तरह काट रहा था—बच्चा, बूढ़ा, स्त्री किसी की जान सुरक्षित

नहीं थी। सामान्यतः समीप न पूव और पश्चिम की सीमाओं के बारे में निर्णय ले दिया था। जहाँ पर मेरे साथ आने वाले मिशन भाई न बड़े विश्वास के साथ कहा था—लाहौर जरूर भारत का मिलगा, नहीं तो छून की उम्मीदें बह जाएंगी। लाहौर हिंदुस्तान का कैसे मिल सकता था जब कि यह मुस्लिम बहुमत समुद्र के बीच एक द्वीप सा था? हाँ, छून की नदियाँ इस वक्त बह रही थीं। सीमा निर्धारण के पहले यदि दोनों ओर के अनिच्छुक निवासियों को बदलना का प्रयत्न कर दिया गया होता, तो शायद इन दिनों का दर्शन की नीबट नहीं जाती। राजनीतियों को यह पहले ही से साच लेना चाहिए था, कि दंग के बटवार के समय ऐसी स्थिति का पैदा होना बिल्कुल सम्भव है। बम्बई में बठा-बठा इन खबरों को सुनकर मैं केवल चुपचाप भाविक वेदनाओं का सह सकता था।

अगस्त का महीना वर्षा का ही महीना है। लगातार वर्षा हो रही थी अब के साथ बह देर से शुरू हुई थी। वर्षा के होते भी पसीना तप कर रहा था। सड़कें और गलियाँ कीचड़ में भरी थीं। ता भी जहाँ-तहाँ व्याख्यान देने के लिए जाना पड़ता था। २१ अगस्त का ही महाशिव भाई (माहा) २८ सितम्बर तक साथ रहने के लिए आ गए। एकाकी तपस्या ही की जा सकती है दूसरे कामों के लिए दा रहने से मन लगना है। २२ अगस्त को मुझे ब्रह्मचर्य विहार में जाना पड़ा। आचार्य घर्मनाथ बागाम्बा का बनवाया यह पुनीत विहार था। कितनी ही बार मैंने यहाँ पर मुक्ति प्राप्त की थी। सफल होने से देखा उनका सौम्य मुख कभी भूला नहीं जा सकता। उनकी विमोह म पड़ती नहीं थी। क्या यह मुझे समझ में नहीं आता था। वह सरलता की साकार मूर्ति थे, और व्यवहार में अति मधुर। जब कभी जान पर प्राय बनाकर पिलाने का उनका आग्रह होता और पाप बिना पिंड नहीं छूटता था जिन भावों के साथ बनता थी उनके कारण वह सौगुनी मधुर हो जाता था। लंबा जान पर मैंने उनकी जीवन-यात्रा गुजरात में पढ़ी थी। मराठी और गुजराती में बौद्ध साहित्य के निमाण का उन्होंने भारी काम किया। पाली का गम्भीर ज्ञान उनकी श्रुतियाँ में झलकता

रस से लौटा

है। वह विद्वान् और गाय ही घुमकांड भी थे। गायद यह घुमकांडी प्रवृत्ति ही उन्हें स्वान और व्यक्ति से रट्ट पर देती थी। वह व्यवस्था के अत्यंत प्रेमी थे और जरा भी अपयस्या देवन पर अपन को सम्भाल नहीं सकते थे। यहाँ कारण था जो वह कहीं भी टिक नहीं सकते थे। लेकिन क्या, इस एग दोष व कारण उनके मकड़ गुण भुगाए जा सकते हैं? मुझे यह आता नहीं था कि भरे प्रवाम के समय वह मदा के लिए चल बसंग और तो भी अपनी इच्छा से। गरीर व्याधि से जजर हो रहा था। जिसे देखकर उनके मन में भारी निराशा पैदा हो गई। वह अपने जीवन को भार समझने लगे। नहीं चाहते थे कि उन भार का दूगरे भी उठाने के लिए मजबूर हों। अन्याय गुरु वर दिया जिमका जत जीवन व साथ हुआ। यह आत्महत्या थी। आचार्य कौण्डिन्य बोद्ध थे और जानते थे आत्महत्या का बुद्ध ने बुरा बनगया है। उस दिन उन स्वान में चलते समय आचार्य का चयाल जाना जरुर था। हृदय विचलित हो गया, गला हँघ गया और बोलना समाप्त करना पडा था। लेकिन, प्रिय हा या अप्रिय सबका महाप्रस्वान एक दिन होना ही है।

२५ जगस्त का चेर का पैसा भुनाने के लिए टामस बूक के आफिस हम जा रहे थे। भिड़ी वाजार में टाम की प्रनोक्षा कर रहे थे। बहुत भीड नहीं थी, लेकिन वह इतनी जरुर थी कि पाकेटमार अपना काम बना सके। चुपक म मेरे पाकेट में से उसने कोई चीज निकाल ली। उसने ममझा, जिस चमडे की बेली का वह निवाल रहा है उसमें नोट भरे हांग। लेकिन उसे कितना निराशा होना पडा हागा, जय उम बेली में नोट की जगह मेरा पासपाट मिला हागा। पामपोट व वा जान की सूचना मैंने पुलिस का दे दी भले मानुस पाकेटमार न पासपोट को किसी तरह पुलिस के पास पहुँचान में जरुर सहायता की, तभी ता कुछ समय बाद वह मेरे पास चला आया। चार के पाम गया पामपोट लौट सकता है, लेकिन पासपाट के दूसरी प्रकार व भी चोर हाते हैं, जिनने हाय में पडा वह फिर लौट नहीं आता। मैं नहीं जानता कि पासपाट की चोरी करना खुफिया पुलिस

के वस्तुव्यापकता है, त्रेडिन्ग सुफिया के एक तरफ ने लडाई के दिनाम ऐसा किया था। पारेटमार के पास से लौटा यह पामपाट भी उमा तरह एक दिन कलिम्पोंग में गायब हो गया। पासपाट न होकर सरक का यात्रा का चेक मुनन में दिक्कत हो सकती थी। तबिन वहाँ के जादमी भ्रमानुस निक्के उहाने विश्वास करके रुपय दे दिए।

व्याख्यान रोज ही वही न वही न्ने हान वे। वभी-वभी एक बार दादर में मराठीभाषी नर नारियो के सामने भाषण देने में कुछ अडचन सी मालूम हुई। लेकिन मैं जानता था उस समय यदि संस्कृत गला रा लगी भाषा हिन्दी का उपयोग किया जाए तो श्रोताओं के गुनने में आसानी होती है। बंगाल में भी यह तर्जुमा देना। असल बात यह है कि उद्घोष हमारे देश की सभी माहित्विक भाषाओं में सरलत के एक ही तरह के शब्द प्रयुक्त होते हैं जिन्हे कारण हम एक दूसरे का भाषा का बहुत कुछ समझ लेते हैं।

अपेक्षा के गायन-वाल् में ही भारतीय कराइपतिया न अल्पवारी को हाथ में लेने का काम शुरू कर दिया था। वह ऐसा करके जोगम नहीं उठा रहे थे क्योंकि अपेक्षा के गिराफ कलम की लडाई लडना उनका काम नहीं था। बहुत हुआ ता दबो जवान से राष्ट्रीय आन्दोलन का समय समय पर कुछ समयन कर दिया। जब अग्रज अपन पत्रा का बचन न्ने ता भारतीय पृजापति उहे सम्मालन के लिए सामने आण। बिटला डाकमिया गायनका अत्र पत्रा के राजा बन गए थे। सरिपत यही है कि अभी पुस्तक प्रकाशन के मदान में वह खुलकर नहीं जाए नहा तो ऐतका का भी आसानी से खरीद सकत वे। यह सब प्रेम की श्रुतयता के गिण हो रहा था इसे निरा मोत्रा आत्मो मान सकता है। मुद्रण पर आधिपत्य दूसरे पंजीवादी दगा में भी है जिसे लाजत प्रता कहकर डाल पीटा जाता है।

२६ अगस्त का गान्ध के बनमागी हाल में बुद्ध जीर माक्स पर मुये बोलने के लिए कहा गया। मेरी रचि का विषय था। जाय समाज के स्वतंत्र विचारों के बारे में बुद्ध के पाम पहुँचा और उनके अनोखरवान, विचार-

रस से लौटा

स्वातंत्र्यवाद आर्थिक समतावाद में बहुत प्रभावित हुआ। उसमें बाद
 मार्क्स के विचारों का अपना मुझे मिलना स्वाभाविक था। बुद्ध का
 बुद्ध का दान इसमें और भी सहायक सिद्ध हुआ। बुद्ध विचारों की हरेक वस्तु
 को अनित्य मानने हैं। हरेक चीज क्षण क्षण बदल रही है बल्कि यह कहना
 चाहिए कि जो चीज क्षण क्षण बदल रही है वह दुनिया में ही नहीं
 वह केवल बदलना मात्र सिद्धांत है। अनात्मवाद अनौपचारिक प्रय-
 अभ्यासवाद में सभी आदमी के मानसिक जीवन को खाली देना है। यह
 सब हानि देने की शक्ति का दान वह काम नहीं कर सकता था, जिस
 मार्क्स की शिक्षा कर सकता है। मार्क्स का दुनिया और उसकी वस्तुओं की
 व्याख्या ही नहीं करना थी, किन्तु उन्हें बदलना था। बदलना या क्षणिक-
 बाद का बौद्ध भी मानते हैं, पर मनुष्य अपनी इच्छा में वस्तुओं का
 अपने अनुकूल बदलने में मनुष्य मार्क्स के बतलाए रास्ते से ही हाँ मका।
 कितने ही पण्डितों ने अपने का अंतिम पण्डित हान का दावा किया।
 मार्क्स ने अपने का पण्डित कहा कि अंतिम पण्डित होने का दावा किया।
 पण्डित का सामान्य अर्थ है, संदेहवादी। संदेह में मतलब भगवान् के
 संदेह से है। बुद्ध और मार्क्स पण्डित का नहीं मानते थे इसलिए वह
 भगवान् के संदेहवादी नहीं हो सकते थे। पर जहाँ दुनिया का महान्
 संदेह दिया, उसमें बौद्ध पण्डित बन सकते हैं। बुद्ध ने अपने गान्धियों
 उपस्थापना मानवता के एक बड़े बड़े भाग का महान् संदेहवादी बनने का
 किया, और मार्क्स का अभी अधूरी मात्रा में ही मानवता के इन बड़े भाग
 को अपने विचारों के मुफ्त में लाना बतलाने के हैं जितने वही किसी
 एक महापुरुष ने नहीं किया।
 बम्बई या कोई भी महानगर सघन, अगाध, दौड़ धूप और भगदड़
 का स्थान है। अधिन परिचितों के होने पर वहाँ अधिन समय बतलाने
 और शिक्षाचार दिखलाने में लग जाता है। ऐसी जगह रहकर शिक्षण-प्रदान
 जैसा कोई काम करना संभव नहीं, पर अभी तो मैं बसा करने की नहीं जा
 रहा था। सबसे पहले देना के काफी भाग का देखना और नई परिस्थिति का

समझना आवश्यक है। यह काम १ मितम्बर को बम्बई में प्रस्थान कर हमने किया। उम्र समय रेलों की अवस्था बहुत अनिश्चित थी टिकट मिलना आसान नहीं था। फिर मर माथ माडे तीन मन पुस्तकें भी चल रही थी, जिन्हें मैं इस से खाम तोर से अपनी पुस्तक के लिखन के लिए लाया था। उस दिन साडे ८ बजे रात को मैं प्रयाग के लिए रवाना हुआ। रात बीती। मन्वेर के बक्त देगा चारों तरफ घरती हरियाली से ढँकी हुई है। बम्बई नगर में मुक्त प्रकृति का देखना संभव नहीं था। यहाँ वह बड़ी मनाहर मालूम होती थी। खान की चीजें दुर्लभ, और चौगुन दाम पर बिक रही थी। दापहर का गाना डेढ़ रुपये की आदमी मिला। गाम का रस्तरा वार में यूरोपीय भाजन करने गये। चाज तीन रुपये का आने, जेकिन सभी चीजें नीरस और अस्त-व्यस्त मालूम होती थी। बैरा को परामन रा नकाइ पर्वहि की जोर न सफाई की। वह अग्रेजा को ही बड़ा आदमी समझन थे जा अब भारत में चले गए थे। बाले आदमिया के लिए उनके दिल में जा पहिंठे भाव था वही जब भी काम कर रहा था।

प्रयाग—२ मितम्बर का १० बजे हम प्रयाग पहुँच। बहुत में मिन स्टेशन पर आय थे। डा० बदरीनाथ प्रगाद के साथ हम उनके बँगल पर गये। डा० बदरीनाथ प्रगाद प्रयाग में मेरे लिए बम ही थे जस पटना में विता ममय डा० कागीप्रगाद जायमवात्र। उनके यहाँ मैं बिल्कुल अकृत्रिम आत्मीयता अनुभव करता था। जिनन हा ममय तक घर और बाहर वालो से हम की यात्रा पर बातें होती रहा। गायद सत्र मुल्क में आना कारण हो पगीन की चिपचिपाहट से तबीयत बड़ी परगान रहनी, जिनका निवारण पया ही कर मजना था जेकिन उसे माय लेकर ता घूमा नहीं जा सकता था।

प्रयाग में प्रगतिगोल जेवन मघ या सम्मलन होने का रहा था जिनका समापन मुझे बनाया गया था। सम्मलन ६ में ८ मितम्बर तक हुआ रहा। उद्घाटन डा० अमरनाथ या न किया था। भाषा और माण्डिय के बारे में डा० या के विचार बड़े सुधरे हुए थे। वह मानू भाषाभाषा के महत्व का सम

रस से लौटा

यने थे। उनकी अपनी मानृभाषा मयिली उपगित-मी था, जिमवा उह दद था, इगोलिए वह अवधी, घन आदि मानृभाषाआ की म्पिति के पारे मे भी ठीक तरह विचार कर मन थे। हिंदी उरू का प्रश्न भी उठ मडा हुआ। प्रश्न वस्तुन युक्तप्रान और पूर्वी पत्राज वा ती था। मेरा विचार था, उरू का हिंदी लिपि म लिने जान पर वन मत्रा वा बहुत कुठ हू हो मवना है। म्मवा यह अय नहीं कि उरू का अरबी लिपि म प्रकागित न किया जाय। हाँ अ-वी लिपि तक सीमित रय कर बनुमदयक पाठका को वचित नहीं करना चाहिए।

उपर सम्मेलन हा रहा था, उपर पत्राज की मार राट के छोटे प्रयाग पर भी पडने लग। ५ मितम्बर का छुर म रिमी जादमी के मारे जान की खबर मिली। अगले दिन रात को कपयू ग्या दिया गया—विना पाम के रात वा जादमिया का आना-नाना निपिड हो गया। पहने रात घर पहुँचने के लिए श्री श्रीनिवामजी अपनी माटर म मुण ले जा रहे थे। राम्ने म बारम मरावी हा गई। कपयू वा समय था। गरियन उड़, जगह रहन क म्यान मे डू नही थी। अगले दिन पत्राज म कत-पत्राम की खबरें बडे जोर मे आने लगी। रेश म चरना निरापद नहीं था। गान्नि कायम करने के लिये मेनाएँ बराबर उपर म उपर भेची जा रही थी, जिमने वारण ट्रेन मे जगह भी आनालो मे नहीं मिगनी थी।

८ मितम्बर का कवि-सम्मेलन उरूा मुमन जोर मरदार जाफरी की कविताआ को लोगान उरून पमद किया। अगले दिन जनकवि-सम्मेलन हुआ। रामकेर जोर बगीचर गुक् की मरू और चुमनी हुई कविताएँ वरून पमद की गई। जन-राम-कविता आ जनप्रिय देखकर कितन हा लग उमने नरू कर रहे थे पर यह नकल अविनतर बहुत भरी थी, और जाया तीतर जाया बटर देखकर महदया का विरक्ति हानी थी। निक्षित कवि के लिए लोक-कवि जनना और भी मुदिक्क था, क्वाकि अहम्मयता के कारण वह निरम्बर जनकवि क चरणो म बठन के लिए तैयार नहीं हा मवना था।



बनारस—प्रयाग से बनारस जाने के लिए बड़ी लाइन और छोटी लाइन दाना मौजूद हैं। दिल्ली में इसा समय भारी साम्प्रदायिक दंगा हा गया, जिसके कारण बड़ी लाइन से जाना संदिग्ध हा गया था। हमने छोटी लाइन से ११ सितम्बर का प्रस्थान किया। महादेव भाई और नागाजुनजी साथ थे। बनारस में जमूनरायजी के निग्राम पर गये। पहले पितरबुड़ा पर रहते उन्हें देखा था अब वह गादौलिया के एक मकान में जा गये थे। यकी प्रेस भी था अब वह यही रहेंगे। किन्तु व्यवसाय स्वयं अपना स्थान निश्चित करता है। पाँच अमृतराय का प्रयाग जान के लिए मजबूर होना पड़ा। उनकी माता गिवरानीदेवा गादौलिया में वाणीवास करने के लिए रह गई है।

बनारस में चार दिन रहना था। इसी में १२ सितम्बर को सारनाथ हा आया। बाढ़ आई हुई थी बरना का पानी एक जगह सड़क पर चढ़ आया था। बनारस से सारनाथ जान वाली सड़क इनकी खराब थी जितनी कभी रहा दना। सड़क का ठेकदारा पर बनवान से काम कसा जाता है इसका तजर्बा मुझे पहले भी हा चुका था। बिहार में जब जिला बाढ़ गर-मरकारा हा गया, ता ठेका अपने-अपने आदमियों का दिया जान लगा जा पैसे में अधिक से अधिक को अपने-पकेट में रखना चाहते थे। ऊंची इट जसी बवार की सामग्री से सड़क का पक्की बनाने जो छ महीने भी ठीक में काम नहीं देता थी। ठेकदारा की लूट जीर भी बड़ी हुई है। रिश्वत का बाजार गम लूट में से कुछ दे देन पर *जीनियर और आकरसियर काम पाय कर देते हैं। जिसका पडो है काम का मजबूत बनाने की।

सारनाथ में सात-आठ मिथु मिल। बर्मी घमणाला में रित्तिमा बाबा का रागी दसवर दु ग हुआ। अब वह तरुण से बुद्ध हो चुके थे। बर्मी की स्थिति अभी अनिश्चित था जिसके कारण आदिक कठिनाइया का उत्पन्न हाना स्वाभाविक था। महाबाधि हाई स्कूल में साढ़े तीन सौ विद्यार्थी पढ़ रहे थे। विद्यार्थियों के सामने भाषण देकर ४ बजे गाम को बनारस लौट आये।

रुत से लौटा

१३ सितम्बर को यह सुनकर दिल का भारी धक्का लगा, कि विसराम अब इस दुनिया में नहीं रहे—विसराम आजमगढ़ के तरुण वियागी लोक-कवि। कभी ही कभी ऐसे कवि पदा हात है। वह अपनी मातृभाषा भाजपुरी में कवि बनने के लिए कविता नहीं करते थे। स्वात मुत्ताय भी नहीं करते थे क्योंकि उनकी कविता सुनने के लिए नहीं दुःख के लिए हात थी। तर्णाई में ही उनकी प्राणप्रिया पत्नी मर गई वियोग ने उन्हें पागल बना दिया। वह दुनिया की किसी चीज का देयत ही अपनी प्रियतमा का याद करते थे। अपन सीधे सादे विरहा का जाटवर स्वयं गुनगुनाया करते थे। उहान कागज पर उतारने के लिए उन विरहा का नहीं रचा अपनी इष्ट देवा की पूजा के लिए गंगा की माला बनाई। कानानान उन विरह दूरमा के पाय पहेंचे, लगा न इन अनमाल मातिया का परत भी लिया। विसराम अपन सभी विरहा का याद नहीं रख सकते थे, जो याद थे, उन्हें लिपिबद्ध करने की पूरी कागि नहीं की गई। समय-मय पर लिखकर बीस के करीब विरह एन्विन किये जा सकें वहा विसराम की कृति के रूप में बच रहे हैं, जिसका श्रेय श्री परमेश्वरीलाल गुप्त को देना चाहिए। हम सभी इसक लिए अपराधी हैं जो विसराम के और विरह नहीं जमा कर सके। लेकिन विसराम पता था, यह वियागी कवि २५-२६ वर्ष की उमर में ही चल बसेगा? उनक विरह बतला रहे थे, कि जा बटवा उनक हृदय में घाय घाय जल रही है उनके कारण वह देर तक नहीं रह सकने।

डा० मंगलदब शाम्शी से बिना मिले बनारस का आना पूरा नहीं हुआ सकता था। यह मेरे बहुत पुराने कृपालु मित्र हैं। साल भर ही बाद उन्हें पेंशन हान वाली थी। राजकीय संस्कृत कालेज के प्रधानाचार्य होकर उन्होंने उसके लिए बहुत से काम किये। ऋषिवादिना के गढ़ को उन्होंने मुक्त होकर सास लन लायक बनाया। निश्चित ही है गंगा का उलटो नहीं बहाया जा सकता। किसी संस्था का भी समय के प्रवाह के साथ ही आगे चलना होता है। कुछ साधु मित्रों ने मुझसे पूछा—हमारा क्या भविष्य है? मैंने बतलाया था—“आपका और संस्कृत के गम्भीर पांडित्य का भाग्य एक साथ बंधा

बनारस—प्रयाग से बनारस जान के लिए बड़ी लाइन और छोटी लाइन दाना मौजूद है। दिल्ली में दसों समय भारी साम्प्रदायिक दंगा हुआ गया, जिसके कारण बड़ी लाइन से जाना सदिग्ध हुआ गया था। हमने छोटी लाइन से ११ सितम्बर को प्रस्थान किया। महादेव भाइ और नागाजुनजी साथ थे। बनारस में अमृतरायजी के निवास पर गये। पहले पित्तर्कुंडा पर रहने उन्हें देखा था, अब वह गादौलिया के एक मकान में आ गये थे। यही प्रसन्न भी था अब वह यहीं रहेंगे। किंतु व्यवसाय स्वयं अपना स्थान निश्चित करता है। पाँच अमृतराय का प्रयाग जान के लिए मजबूर हाना पड़ा। उनकी माता गिवरानीदेवी गादौलिया में वाणीवास करने के लिए रह गई है।

बनारस में चार दिन रहना था। इसी में १२ सितम्बर को सारनाथ हो आया। बाढ़ आई हुई थी बरना का पानी एक जगह सड़क पर चढ़ आया था। बनारस से सारनाथ जान वाली सड़क इतनी खराब थी, जितनी कभी नहीं देखी। सड़क का ठेकेदारों पर बनवाने से काम कसा जाता है, इसका तजर्बा मुझे पहले भी हुआ चुका था। बिहार में जब जिला बोर्ड भर-सरकारी हुआ गया तो ठेका अपने-अपने जादमिया का दिया जान लगा, जो पैसों में से अधिक से अधिक का अपने पाकेट में रखना चाहते थे। कच्ची इट जसी बकार का सामग्री से सड़क का पक्की बनाने जो छ महीने भी ठीक से काम नहीं देता थी। ठेकेदारों की लूट और भी बढ़ा हुई है। रिस्वत का बाजार गम लूट में से कुछ दे देना पर इजीनियर और आवरसियर काम पास कर रहे हैं। किसका पट्टी है काम का मजबूत बनाने की।

सारनाथ में सात-आठ भिक्षु मिले। बर्मों घमंगाला में कित्तिमा बाबा का रागा देखकर दुःख हुआ। अब वह तरुण से बूढ़ हो चुके थे। बर्मों की स्थिति अभी अनिश्चित था जिसके कारण आर्थिक कठिनाइया का उत्पन्न हाना स्वाभाविक था। महाप्राधि हार्ड स्कूल में साढ़े तीन सौ विद्यार्थी पढ़ रहे थे। विद्यार्थियों के सामने भाषण देकर ४ बजे शाम को बनारस लौट आया।

१३ सितम्बर को वह सुनकर टिप का भारी घक्का लगा, कि विमलम अब इस दुनिया में नहीं रहे—विमलम आज्ञाकार के तर्क दिया था कि कवि। कभी ही कभी तो कवि पदा है। वह अपनी मातृभाषा भाव-पुरी में कवि बनने के लिए बतिया नहीं करे। स्वयं मुझमें भी नहीं करते थे, बस कि उनकी कविता सुनने के लिए महा दुःख के लिए हानी थी। तर्काई में ही उनकी प्राणप्रिया पत्नी मर गई दिया न उन्हें पागल बना दिया। वह दुनिया को विमल चीज का दग्ध हो अपना प्रियतमा का याद करते थे। अपने माथे सादे विरहा का जाटकर मय गुनगुनाया करते थे। उन्होंने कागज पर उतारने के लिए उन विरहा का नहीं रखा, अपना रट्टु धरी का पूजा के लिए गदश की माला बनाई। कानाफान उनका विरह दूरता के पास पहुँचे, आगा न इन अनमाल मातियों का परम भोगिया। विमलम अपने सभी विरहा का याद नहीं रख सकते थे, या याद थे, उन्हें निमित्त करने की पूरी कागिण नहीं की गई। ममता-ममता पर विरह बाल के बरोबर विरह एकत्रित किम जा मक, वहा विमलम की वृत्ति के मय में बच रहे हैं, जिमका धेम श्री परमदरशागत गुण का दना चाहिए। हम सभी रसक लिए अपराध हैं जो विमलम के आर विरह नहीं रना के उत। किन् विमलम पता था, वह दियागी कवि २५ २६ वष का उमर में ही बच बमगा ? उनका विरह बनला र्थे थे, कि जो बसता उनका हृदय में धीरे-धीरे जल रहा है उसका कारण वह दा ठक नहीं रट्टु सकी।

दा० मंगलदत्त गाम्त्री से विना निचे बनारस का जना पूरा नहीं हो सकता था। वह मर बरुत पुगन वृत्तात् निर है। मात नर हो बाउ उन्हें पंगन हान वाग था। उत्रकीय सम्भृत कात्र के प्रजावाचाद हाउ उन्हें उसक लिए बरुन से काम किय। मद्रिगादिनों के उद का उरुने मुझ हउर सीम उन लापक बनाता। निचित ही है मात का उरुने उरुने उरुने जा सकता। विमल मय्या का ना समय के प्रदा के माय के जाय उरुने उरुने है। वृत्त माधु मित्रों ने मुझमें पूरा—रुमाग का नरिपर है ? कि उरुने उरुने था—'आपका और सम्भृत के उरुने पादिन का उरुने उरुने उरुने उरुने

हुआ है। स्वतंत्र भारत में आज की आर्थिक स्थिति तथा भाषा की मुग़ मता व कारण के विद्यार्थी सम्बन्धित पढ़ना छोड़ देंगे, जो और शिक्षा पाने से वंचित हो धोखा की राटियां तानकर सम्स्कृत पढ़ करने के। पढ़ने वाले भी तीस-तीस वर्ष सम्स्कृत की साधना नहीं करेंगे। दूसरा की तरह वह भी बीस पच्चीस वर्ष की उमर में पहुँच पढ़ाई समाप्त कर कोई काम में लगे। ऐसे समय सम्स्कृत का सम्भार पाण्डित्य किस कायम रह सकेगा ? पर निराग होने की आवश्यकता नहीं। साधु पच्चीस-तीस साल नहीं जपने सार जीवन को विद्याध्ययन में ला सकने है। वही सम्भार पाण्डित्य को अप्रुण रग सकते है। सम्स्कृत विद्या वं साधु आजगम गोपाय मां गेवधिष्टमस्मि' कहनी जब आप आगे न पास जायगी। और इस निधि की रक्षा करने के कारण आपकी उपयागिता को आगे मानेंगे।

छपरा— बनारस से हम तीन दिन के लिए छपरा गए। १४ बजे रात की ट्रेन में हम चले थे और १५ नारीख को सुबह बलिया पहुँचे। उन्धिया का देखन हैलेटगाहा जुलूम याद आन लगा। १९४२ में अंग्रेजों ने बलिया जिले पर बने ही जुलूम लाए थे जसे मायाज ला के दिना में उठान पजाब में किया था। बलिया आगे न जुलूमों का बड़े साहम के साथ मामला किया था और अपनी स्वतंत्रता की भावना का दर्शन नही किया। बलिया के वीर वक्ता चित्तू पाठे यात्रा जा रहे थे। भाजपुरी न ऐसा वक्ता पाएद हा कभी पता किया हा। सन् ४२ के आदालत में ता वक्त बड़े सनानी थे। जब आदालत दब गया और घण्टे-घण्टे हान आया ता चित्तू पाठे मम के सौदागर बनकर दूसरे जिले में घूम रहे थे जहाँ में पुलिस उन्हें पकड़ लाई।

आगे सुरेसपुर के पहले एक जगह वर्षा के कारण रेल की मडक दब गई थी। ट्रेन टूटकर लगे रह गई। तब पलीप पत्रक चलाना पना। यद्यपि मरम्मत का काम एक दो घंटे में हो सकता था लेकिन रजवाड़े एमा करके अपना योग्यता का पश्चिद कैसे देन ? कई घंटे आगे दूसरी ट्रेन पर चक्कर हम दा बजे आगे पहुँचें। बलिया को आठ में और छपरा में वर्षा का कमी

रूस से लौटा

से फमल का नुबमान हुआ। छपरा म मग से मेरा निवाम स्थान प० गोरगनाथ त्रिवेदी का मगन रहा। अमन्याग मे आदान्म म हम माय साथ काम करते थे फिर वकील बनकर उहानि बरालन गुरु की। तब से मैं बराबर उही व यहा ठहरा करता। त्रिवेदीजी वैसे बन्त नेज दिमाग के हैं, पर त्रिमो काम क बार म निणय करने म जन्मत मे अधिव ममय भेते हैं। जब गहर के भीतर सम्नी जगह मिल रही थी तब उहान आज-कल कर दिया। जमोन ली तो गन्तर स बाहर एव बगोचे म जहाँ चाग के लिए जनरा पर हमगा तैयार मिगता था। एक मे अधिव बार चारियाँ हा चुकी हैं। बागवाजे मगन म हम टहरे। पञ्जब के दगा की बवर्षे अगवारी द्वारा यहाँ भी पहुँच रही थी, जिमव कारण मभी जगह उत्तेजना पैला हुई थी। उम बवन ता मालूम हाना था कि भारत म बाइ मुसलमान नही रह पाएगा, सभी पाकिस्तान चल जाएंगे।

१९१३ म पहर पल छपरा म मेरा सम्बन्ध स्थापित हुआ। २४ वष हा चुके। राजनीतिज जीवन का मैने यही आरंभ आरम्भ किया। असहयोग के दिना की समनियाँ तज भी मुझे बहुत मधुर मालूम होती हैं। उम समय क सहमिया व प्रति ता एक अद्भुत स्नेह, श्रद्धा और गद्भायना मन म पैदा होती है। मेरी हर यात्रा कुछ वर्षों के बाद हुआ करती है। इतन वर्षों म नये लग भी आ जाते हैं, लेकिन गिगुआ मे तो हमारा परिचय नही और जा परिचित थे, उनमे स कितने ही अनन पथ क पथिक हो गए। बाबू बच्चू गिहारी अब नही रह। उनकी बातें बहुत याद जानी थी। घटनाआ का बने रोचक डँग मे कहते थे रसे एज बजूम कायस्थ तरण न अपने ब्याह पर कुन मिगकर आठ जाग ही पच करने की प्रतिना का पूरा किया किम तरह चैनपुर के बानू की बारात मे नीतरा चाकरा की बवपूकी से सारी बारात का आफत म पट जाना पडा। बच्चू बावू बनील थे। वतना ही कमा पान थे, जिममे राज की नून तेर लवडी का प्रबघ हा जाए। बच्चे अब निराश्रय थे। बडी कटकी ने त्रिमो तरहु डाक्टरी पास कर लिया, बह घर का अबलम्ब मावित हुई। प० भरत मिश्र अब सोहम स्वामी थे।

छोटे छोटे वच्च-वच्चिया के लिए उहान साह्य विद्यामन्दिर स्थापित कर दिया था जिसमें पढाइ का माध्यम संस्कृत थी उच्च संस्कृत में ही बान्धीत करत थे। पाँच वक्षाएँ थी हर साल दस विद्यार्थी उक्त थे। जानकर प्रसन्नता हुई कि विद्यालय स्वावलम्बी है। जा लटने यहा स पाच साल पढकर निकलन, वह अपना सारी पढाइ में संस्कृत और हिन्दी में आगे रहत है फिर माना पिता एम् विद्यालय का उपभागिता को क्या न भावें।

राजद्र कालज बापा उनति कर चुका था। विद्याधिया क सामन बागा पडा। सबसे दु खद समाचार यह भिगा कि गुह्य बाबू का एकमान पुत्र गगा में डूबकर मर गया। गुह्य बाबू की दवाइया की दूकान छपरा की सबसे बड़ी और पुरानी दूकान है। पर, वह उसमें लिए बिगप म्यान नहीं रखत। राजनीतिक आन्दोलन में उहाने बराबर हर तरह से भाग लिया। छपरा क वह बडे उदार नागरिक थे। कांग्रेस उम समय तपस्विया की कांग्रेस थी। कर्मी जभाउप्रस्त रहत थे गुह्य बाबू हमगा उनका सहायता करन क लिए तयार रहत थे। उनर अनुज डा० गिबदास मूर का एक मात्र पुत्र सुनील जब दाना भाइया क अवलम्ब रह गए है। सुनील कम्युनिस्ट पार्टी क मन्बर ह।

१७ सितम्बर का तीज हरिलालिका के नाम से नयी बरिक् तीज के नाम से स्त्रिया का सबसे प्रिय त्यौहार था, तीज त्यौहार कहा जाता है। नवीमज मुहल्ले का महिलाजा न भाषण करन क लिए बुठाया। मैं गया भी। गतादो क आरम्भ में अब तर स्त्रिया में बहुत अंतर आया है इसमें शक नहीं। किंतु उनक सामन मजिल बितना दूर है उस देखकर देखते सन्ताप नहीं हो सकता था। बिहार में स्त्रिया की प्रगति चीटी की चाल से हा रहा है, गिधा में भा अपन पढामी प्रदगा की महिलाजा से बह बहूत पीछे हैं।

छपरा में सभी तरह क लागे से मरा घनिष्ठ परिचय था, यह दखकर आश्चर्य और खद भी हुआ कि गालिस्ट मित्रा ने मरा पूणतया वायकाट किया। सन् ४२ क आन्दोलन क वह सनानी थे, जिसके कारण उनकी

हस्त से लौटा

बाफी इज्जत थी। समझते थे, हम मर कुछ कर सकते हैं। उनके नता काप्रेम को भी अपने सामन कुछ लगाते नही, पर साथ ही इतना आत्म विद्वाम भी नही, जि काप्रेम से अलग हा जाएँ। बाफी पीछे समय जाया, फिर पना लग गया जि पुरानी बमाइ पर सफलता की आगा रपना वेनार है।

पटना—उम समय रल नी यात्रा करना आफन मान लेना था। लेकिन उमव जिना यात्रा कैसे की जा सकती थी ? १८ मितम्बर को हम तीन दिन के लिए पटना को राना हुए। ममरण म माल और पसिजर ट्रेनें गट गई थी। डाइवर न सिगनल की पर्वाह किए बिना गाडी स्टेशन की जार हाक दी। स्टेशन मास्टर ट्रेने के जाने के समय वायने के विरुद्ध शॉटिंग करा रहा था। वस्तुन दंग का विभाजन भी रेला की अव्यवस्था का कारण हुआ था। बहुत अधिक मरुपा म मुमलमान इजन गदर भारत, डोल्बर पारिस्तान चले गए थे। नये डाइवरा का तजर्वे की आवश्यकता थी। उम दिन हमने रास्ते म दो डब्बा का उल्टे देला। ट्रेना का बेकार जगह-जगह रोना देना आम बात थी। गानपुर म दूसरी ट्रेने पकटकर पलेजा वाट पहुँच। एक ही ऐमा जहाज था जो घर से ऊपरी आर जा सकता था, इसलिए गमना गमन म दिक्कत हा रही थी। जानकर सताप हुआ कि गगा वा पानी उतर रहा है। हम १ बजे के बरीब पटना के महंद्र घाट पर पहुँचे। जहाज समय मे पहुँचे आ गया था इसलिए स्वागत करन वाले बितन ही पीछे से पहुँचे। सुयाय्य पिता के सुयोग्य पुत्र श्री देवेद्रनाथ शर्मा पटना बालेज म अध्यापक थे। ५० गारगनाथ त्रिवेदी के दामाद होन से उनके साथ मरी बिनैप आत्मीयता थी। उही के यहा ठहर। पटना का तीन दिन का व्यस्त कार्यक्रम गुरु हुआ। जब व्याग्यान दन या टहलने न जाता ता घर पर ही गाळी चलनी रहती। आखिर साम्यवादी देश मे वर्षों रहकर आया था इस लिए लागा की जिनासाएँ बहुत थी। यह जानकर प्रसन्नता हुई कि बिहार की बम्भुनिस्ट पार्टी न हम बीच बाफी उन्नति की है उसके ३६०० सदस्य हैं। अपना बग प्रस लगा दिया है जिसस पत्र निकलता है। १९ मितम्बर को

म्यूजियम देखने गए। म्यूजियम के साथ मरा वर्षों से सम्बन्ध रहा है। तिव्वत से लाई अपनी चाँसे मैं इसी का प्रदान की हैं। तिव्वत की चौथी और अंतिम यात्रा में मैं बहुत सी मस्वृत की ताल पाथिया का फाटो उतरवाकर लाया था जिनका प्रमाणित करने का कोई प्रबन्ध नहीं हुआ था। यह जानकर सताप हुआ कि फाटो खराब नहीं हुए हैं। जानथी क प्रथम बड़ा महत्व रखत है उनका किसी भाषा में अनुमान नहीं हुआ है।

गाधीजी के साथ काम करने वाला दा तरण जाए गाधीवाले और साम्यवाले के सम्बन्ध का बात कर रहे थे। कह रहे थे कि भेद तो केवल साधन या हिंसा और अहिंसा के सम्बन्ध में है। शापणहीन समाज गाधीजी भी वायम करना चाहते हैं। मैंने कहा—गाधीजी ने देश की जो सेवा की है वह अद्वितीय है। हम स्वतंत्रता जनजागरण और कुर्बानियाँ के कारण मिला जन जागरण में सबसे बड़ा हाथ गाधीजी का है। यह भी मानने में बाई जापत्ति नहीं है कि गाधीजी जैसे प्रभावशाली महापुरुष यदि जायिक स्वतंत्रता के ध्येय में लग जाँएँ तो बहुत काम हो सकता है। पर उसमें बाई बाधाएँ हैं। उद्योग बंधा और हस्त शिल्प दाना एक दूसरे के पूरक हो सकते हैं। सावियत भूमि में भा दस्तकारी की उपेक्षा नहीं की जाती उमका बाई गुना बढ़ा दिया गया है। हाँ वह कल-कारखाना से हाट नहीं लगाती, कलापूर्ण चीजों का उत्पादन करती है। इससे अतिरिक्त देश की जायिक स्वतंत्रता में नितन ही स्वायत्त भारी बाधन है जिनका दबाएँ गिना हम आगे नहीं बढ़ सकते। गाधीजी उतने भारी परिवर्तन को और सा भी शीघ्रता के साथ करने के लिए तयार हो जाँएँगे इसमें सन्देह है।

तीन चार सावजनिक भाषण राज ही देने पड़ते हैं। बीच बीच में समय निकालकर मैं मित्रों से मिलने चला जाता था। सोशलिस्ट पार्टी वाला न पढ़ी भा बायपाट कर रहा था लेकिन मैं अपने पुराने मित्रों से मित्र बिना काम पटना जा सकता था? सोशलिस्ट पार्टी के जायिक में गया, तो वहाँ मभी चहरे नये मिले। फिर पता लगाने मायी गंगाकरण के घर पर गया। उनमें देर से साम्प्रदायिक दंगा के बारे में बातचीत की। यतला

रस से लौटा

रह ये हिंदुआ न अबलाआ तक पर भीषण अत्याचार किए हैं। मेरी इच्छा थी राजनीतिक विषया पर, विशेषकर कम्युनिस्टा और मागलिस्टा व नजदीक लाने के बारे में, कुछ कहूँ, पर उसका वह अवसर नहीं था। नेताओं को उमकी जरूरत नहीं महसूस हो रही थी। २० तारीख का मुनि वर्मिटी और मडिनल कालेज के छात्रा की दा सभाजा में व्याख्यान देना पडा, उसी रात पौन २ बजे मैं जीर महादेव जी कल्कत्ता के लिए रवाना हुए।

देश का चक्कर

२१ मिनम्बर को सवा १२ बजे हमारी ट्रेन हावड़ा पहुँची। उसी ट्रेन में घरेली के एक इमाम साहब अपने परिवार के साथ चले थे। भारत के भीतर और बाहर भी जा मार काट हा रही थी। उमम भयभीत होना स्वाभाविक था। आखिर इन दिनों के समय हमारे समाज की बसी स्थिति हा जाती है। जम भूकम्प के समय गुफ्त्वाकषण की। जापमी की जान का कोई मूल्य नहीं रह जाता। घम के नाम पर हत्यायें हाती है, गवाहा-माखी मिल नहीं सकता। इसलिए अनालत चाहन पर भी न्याय नहीं कर सकती। पुलिस भी एतरफा सहानुभूति रखती, या कुछ करन में असमय हानी है। कलकत्ता में हम अगीपुर में बरिस्टर म्महागु कुमार आचाय के हम अतिथि हुए। मुख्य गहर से दूर होने पर भी मिलने-जुलनवाल आने रहे। २२ तारीख का डा० सुनीतिकुमार चटर्जी से मिले। उमी दिन जानाटय समिति ने अपने कुछ गीत और अभिनय कई तरह के गोरु-मीन और लोच-नृत्य उपस्थित किए। लावनी अभी तक महाराष्ट्र और हिंदी भाषी लागा की चीज समधी जाती थी, लेकिन यहाँ बगाल में जिस मुदर रीति में उमे स्वीकार लिया गया था उमसे मालूम हा रहा था कि हमारे जनक्य विंग लूगी के साथ एक जगह में दूसरी जगह अपनाई जा सकती है।

मिर्जा महमूद डरान में मरे अजारण मित्र थे। तेहरान के सान महीने

देश का चयन

वे निराम में उहोंने जा सहायता की थी उमका मैं सदा ऋणी रहूँगा ।
वेपथु नौड़ी व वहाँ पहुँचते ही मुने चारा आर जँधेरा ही जधेरा दिताई
पटा था, उनके कारण तेहरान मेरा पर मा बन गया था । मिर्जा महमूद
बलवत्ता ही वे रहन वाले थे । पाकिस्तान बन जान पर सद्गता था नि
वह अपन अस्पहानी बंधुआ की तरह वहाँ चले गए हा, ता भी जो पत मुचे
मालूम थे, उन पर मैं उह डूटनकी रागिगी । घुमकाड अपनी यात्रा
में पग पग पर दूमरे महदय जना की सहायता प्राप्त करता है । उमकी
इच्छारङ्गी है कि इन उपकारा व गिए निमा प्रकार म कुतनता प्रकट
करे । मुदिक्त है कृशालु एव वार के मिडके फिर नहीं मिलत । अपन इस
मित्र म मिलन की मर मन म बटी चाह थी । बहून दौड धूप बरन पर
यही पता गगा, कि वह फिर ईरान लौट गए । उमने बाद भी मैं बराबर
बागिग करता रहा, पत्र द्वारा उनने साथ सम्बन्ध स्थापित हो, पर वह
नहीं हा मना ।

२३ मिनम्बर का मैं ५० विधुगेयर भट्टाचाय ने मिलन गया ।
पुगा स्नह भूति मरक सस्वृन-पडिना व वह जाविन जागन प्रतिनिधि थे
जिनके गिए निद्या का सम्बन्ध मवस बना मन्वय है । अपन आचार म वह
पुराने दोष पटन हैं, निंतु विचारा म बिल्कुल आधुनिक । गौर गाय और
सत्य उनके गिए सर्वोपरि माय बन्तु है । महामहोपाध्याय उमी अष्टमिम
वात्मय म मिले, जस वह सदा मिलन रह । अमग वा मगन ग्रय 'याग-
चर्याभूमि' मुचे निगन मे प्राप्त हुआ था । उसे महामहापायाय सम्पादित
कर रहे थे । प्रेम बनी घीमी गनि से काम कर रहा था, और उनका गरीर
बहुत जोण हा चुका था । निराग म हाजर वह रह थे मैं तो इस काम को
पूरा नहीं कर सकूँगा, दूमे आपने गिए छोड जाऊँगा । मुचे इस बात का
ह्य है कि मन् ४७ म उनने गरीर की अवस्था देखकर जा गका हुइ थी,
वह ठीक नहीं घटा, १९५६ म भी व हमार बीच म है । 'योगचर्याभूमि'
म अत्र भी यह गगे हुए हैं, यद्यपि उनका गरीर केवल हाड और चमडा भर
रह गया है । व मीहाद्र प्रदर्शन करन के लिए सहे होन की कोशिश करते

देश का चक्कर

२१ मिनम्बर का सवा १२ बजे हमारी ट्रन हावडा पहुँची। उसी ट्रेन बरेली के एक इमाम साहब अपने परिवार के साथ चल रहे थे। भारत भीतर और बाहर भी जा मार पाट हा गयी थी उससे भयभीत होना स्वाभाविक था। आखिर इन दगों के समय हमारे समाज की वैसी स्थिति हो जाती है जस भूकम्प के समय गुरुत्वाकर्षण की। आदमी की जान का कोई मूल्य नहीं रह जाता। घम के नाम पर हत्याएँ हाती हैं गवाही साजी मिल नहीं सकती इसलिए अदाकत चाहने पर भी न्याय नहा कर सकती। पुलिस भी एक्तरफा सहानुभूति रखती, या कुठ करने में जसमय हाती है। कलकत्ता में हम अलीपुर में बरिस्टर स्नहागु कुमार आचार्य के हम अतिथि हुए। मुख्य गहर से दूर होने पर भी मिलने जल्दबाड़ी आत रहे। २२ तारीख को डा० मुनीतिकुमार चटर्जी से मिले। उमी दिन जननाटय समिति ने अपन कुठ गीत और अभिनय कई तरह के लोकगीत और लोक नृत्य उपस्थित किए। लावनी अभी तक महाराष्ट्र और हिंदी भाषी लोग की चीज समझी जाती थी, लेकिन यहाँ बंगाल में जिस सुन्दर रीति में उसे स्वीकार किया गया था उसे मालूम हो रहा था कि हमारी जनकला किंग धूम्रों के साथ एक जगह से दूसरी जगह अपनाइ जा सकती है। मिर्जा मद्रमूद इरान में मरे अकारण मिय थे। तेहरान के सात महीने

देग का चक्कर

मौवा यह पहली बार मिला था। वहाँ के वकील श्री हरिहर महापात्र का आतिथ्य प्राप्त हुआ। कटक वस्तुतः नगर सा नहीं मालूम हाता। वह एक बड़ा गाँव है। मराना की अधिकांश छतें फूम की हैं। टेने मेडो सड़क गाँव की सड़क-नी मालूम होती है। इस ग्रामीण वातावरण के साथ लागा के स्वभाव में भी ग्रामीण स्नह और सरलता दिग्गलाई पडती है। एक प्रदेश की राजधानी है, जहाँ प्रादेशिक सरकार के बड़े बड़े अधिकारी रहत है, किन्तु इस ग्रामीण वातावरण के साथ जनसाधारण से उनका उतना भेद नहीं मालूम होता, जितना दूसरी प्रादेशिक राजधानियां में। मैं यह ऊपर ऊपर ही से देखकर कह रहा हूँ। भुवनेश्वर में उडीसा की नई राजधानी बना लगी है। कटक सींग और चांदी की अपनी कलापूण चीजा के लिए बहुत प्रसिद्धि रखता है। इनकी बडी मांग हो सकती थी पर हमारी जनता आज त्रिम आर्थिक स्तर पर है, उसके कारण कलाकार यदि किसी तरह अपना जीवन निर्वाह कर सके, ता भी बहुत है। चाँदी के कलाकारों में मुझे मिगरेट रणो का एक डब्बा और एक लाल झडा प्रदान किया। उस समय अभी मिगरेट छोडन में कुछ महीना की देर थी नहीं ता सिगरेट की जगह कोई दूसरी चीज प्राप्त हुई होती। उसकी जाली का बारीक काम देखकर मन मुग्ध हो गया।

उडीसा के शिक्षा विभाग के डाइरेक्टर श्री त्रिपाठीजी से बानचीन हानी रही। रूस की शिक्षा प्रणाली श्रेष्ठ है लेकिन हमारी स्थिति में उन अपनाया कैसे जा सकता है ? भिगारी बाबू दस्तकारी की उन्नति के लिए बडा प्रयत्न कर रहे थे, पर उसकी पूरी उन्नति जिन कारणों पर निर्भर है, वह हमारे यहाँ मौजूद नहीं है। रवेनगा कालेज उडीसा का सबसे बडा और पुराना कालेज था, उसमें १४ सौ छात्र छात्राएँ पढत थे। वहा भी बालना पडा। साहित्य ममाज में उत्कल के विद्वानों के सामने सावित्र के बारे में भाषण दिया। मैं हिंदी में भाषण दे रहा था, लेकिन उससे श्रोनाओं को समझन में कठिनाई हुई ही, ऐसा नहीं मालूम होता था। वस्तुतः सुदूर दक्षिण की चार भाषाओं को छोडकर बाकी हमारी सारी भाषाएँ हिंदी के

थे मुझे दुःख होता था । महामहापाध्याय विधुशेखर भट्टाचार्य विद्वाना और शाध प्रेमिया के लिए आदर्श पुरुष हैं । खेद यही है कि उनके पान और शक्ति का पूरा उपयोग हमारा देश नहीं ले सका ।

२४ सितम्बर को हम पार्टी द्वारा स्थापित अस्पताल देखन गए । कलकत्ता के शिक्षित वर्ग की सहानुभूति वामपक्षी विचारधारा की आर है । वहाँ क तरफ डाक्टरों ने पार्टी का प्रभाव म जाकर अस्पताल खोलन दिया । अस्पताल तीन ही चार साल पहले खुला था, इतने ही मे उसने काफी उन्नति कर ली थी । चिकित्सा और सुश्रूषा का यहाँ अच्छा प्रबंध है । पार्टी के मन्बरा की तो सेवा हाती ही है बाहर क रोगिया की देख भाल की भी अच्छी व्यवस्था है । आजकल जबकि रुपये पदा करने के लाभ म अस्पताल और डाक्टरों का वर्तव अमहत्त्वपूर्ण दया जाता है, यह अस्पताल एक जाग मग्धा क रूप म मौजूद है । उमी दिन दोपहर को हम बगाऊ क महाकवि नजरुल इस्लाम का दखने गए । कवि की आयु उस समय ६६ वर्ष की थी । छ वर्ष पहले उनका मस्तिष्क सुन्न हो गया । तब से वह जीवन-मृत ह । उस मस्तिष्क न जिमने कभी जग्निप्राणा बजाइ थी, अब इस तरह जकमण्य हो गया है । सुन हा जान से उनका दुःख मुख का क्या अनुभव हा सकता है ? आज क समाज क लिए क्या यह शाभा की बात है कि उनकी पुस्तकें प्रकाशित कर लाग लाभ उठा रह हैं और कवि आर्थिक कठिनायों म जीवन बिता रह हैं । उनकी पत्नी प्रमोलादेवी भी एक ही दा साठ पहले पक्षाघात म पीडित हाकर चारपाई पकड चुकी हैं । दा पुत्र खनिन और मुन् यात्र मन पिता माता क काम दुस्तह जीवन म सहभागा हैं । उन घर का मुखी मजान हाता चाहिए था, लेकिन वहाँ चारा तरफ उदासी और निरीहता दिखाइ पता थी ।

कटक—कलकत्ता क व्यस्त प्राप्ताभ का समाप्त कर २५ सितम्बर को हम मद्रास भाग म कटक क लिए रवाना हए । ३ बजे के करीब कटक पहुँच । श्री गरुड पटनायक और दूसर मावी स्टेशन पर मौजूद गिरे । मैं कटक स्थान म ता कई बार गुजर चुका था लेकिन कटक म रहने का

मोसा यह पहला बार मिटा था। वहाँ के वकील श्री हरिहर महापात्र का आतिथ्य प्राप्त हुआ। बटक वस्तुतः नगर मा नहीं मालूम होता। वह एक बड़ा गाँव है। मवाना की अधिकांश छत्ते फूम की हैं। टेनी मनी मन्व गाँव की सड़क-भी मालूम हाती है। इस ग्रामीण वातावरण के साथ गंगा व स्वभाव म भी ग्रामीण स्नेह और सरगता लिखलाई पडती है। एक प्रदग की राजधानी है, जहाँ प्रादेशिक सरकार के बड़े-बड़े अधिकारी रहने हैं, किंतु इस ग्रामीण वातावरण के साथ जनसाधारण मे उनका उतना भेद नहीं मालूम हाता, जितना दूसरी प्रादेशिक राजधानिया म। मैं यह ऊपर ऊपर ही म देखकर कह रहा हूँ। मुवनवर म उडीसा की नई राजधानी बनन लगी है। बटक साग और चाँदी की अपनी बग्यपूण चीजा के लिए बन्धुन प्रसिद्धि रखता है। इनकी बडी माग हो सक्ती वा पर हमारी जनता आज जिन आर्थिक स्तर पर है उनके कारण बग्यकार यदि किसी तरह अपना जीवन निर्वाह कर सक, ता भी बहुत है। चाँदी के बलाका न मुझे मिगरेट रखने का एक डब्बा और एक लाल झडा प्रदान किया। उस समय अभी मिगरेट छोडन म कुठ महीना की दर थी, नही ता मिगरेट की जगह कोर दूसरी चीज प्राप्त हुई हाती। उसकी जाली का चारीक काम देखकर मन मुग्ध हा गया।

उडामा के गिगा विभाग के डाइरेक्टर श्री त्रिपाठीजी म बातचीत हाती रही। इस को गिक्षा प्रणाली श्रेष्ठ है लेकिन हमारी स्थिति म उन जपामाया कस जा सकता है ? भिगारी बाबू दम्नरारी की उन्नति के लिए बन्धु प्रयत्न कर रहे थे, पर उसकी पूरी उन्नति जिन कारणों पर निर्भर है, वह हमारे यहाँ मौजूद नही है। खेनगा कालेज उडीसा का सबसे बडा और पुराना कालेज था, उसम १४ सी छात्र छात्राएँ पडन थ। वहा भी बालना पण। साहित्य मभाज म उकल के विद्वाना न सामन सावियत के बार म भाषण लिया। मैं हिंदी मे भाषण दे रहा था, त्रिन उससे श्रानाजा का सम्बन्धन म चठिनाई हुई हा, एसा नही मालूम हाता था। वस्तुतः सुदूर दक्षिण की चार भाषाजा ता छोडकर बाकी हमारी मारी भाषाएँ हिन्दी व

पटना नजदीक है, कि मस्जिद-खुल हिन्दी समझन म लागा को दिखत नही हातो । ८ बज रात का मैं श्री कालीचरण पटनायक क नाट्य मंदिर स 'रक्त मिट्टी' नाटक देखन गया । वहाँ भाषा समझन म मुझे काई दिखत नही हुइ । यद्यपि वही लिपि मिलती तो समभवत उतनी आसान न हाती । उडिया अक्षर नागरी स मिलत जुलते हैं किन्तु आधी जगह धरनेवाली ऊपर की अधवत्त गिरागेया बग धम पैग कर देती है । इस नाटक का देखते वक्त भर मन म ख्यात हाता था कटक जागिर एक बडा मा गाँव ही है और यहाँ पर यह नाट्य मंच स्वावलम्बो हाकर बपों स चल रहा है । इसना श्रय कालीचरण बाबू का भी हाता चाहिए । जिहाने रग मंच क लिए अपने मार परिवार को बर्षित कर दिया था । नाट्यगाला की कोई भारी इमारत नही थी । दगगा क बठन क लिए फूम का छाया मडन था और रगमच भा उगी तरह फूम स छाया था । साज सज्जा दूसरे साधन भी अल्प-वय माध्य थे । हम नाट्यगाला का देखकर विश्वास हान लगा कि हिन्दी नाट्य क लिए नौ मन तन को गत लगाना बनार है । पटना बनारस लखनऊ बनपुर या दिल्ली म हिन्दी रगमच बनाने क लिए पहले लावा रुय की इमारत बनान का धाजना बनता है । यदि उमम हम सफल भी हा जाँ ता भी क्या सिफ उमम रगमच चिरजीवी हो सकता है ? वस्तुत सच्च कला-कार अपन सय फुट को मोटाकर करन के लिए यदि तयार हो ता बिना गारता की इमारत और सान मज्जा क श्री रगमच स्थापित हो सकता है यह दग उडिया रगमच क लगने म मुझ विश्वास हा गया । पुरप का रगमच पर उतरना उतना कम्बिन नही किन्तु नाट्यकता के दीमान ने अपने घर की नियाया का भी अभिनय क लिए तयार नियाया था य वड साहस का काम है । मैं कभी अभिनय जानागप और मगीत न कौगल सौम्य तथा माधुरी को लगनर मुग्ध हाता और कभी उडिया भाषा क बितन ही प्राचीन नियायाया को । जग नियायन्ति का प्रयाग । उडिया सगीत अपना खाम मन्त्र रखता है । मुस्लिम का स पहले उत्तर और दक्षिण सगीत म अवश्य न रहा हागा । शिखा गीत वन्त कुछ अपन शुद्ध रूप म आज भी मौजूद

देश का चक्कर

है जबकि उत्तरी मगोत ने मुस्लिम-वाल म विदेशी प्रभाव म अपना मुन्त्र विकास किया। उड़ीसा सदिया बाद मुस्लिम गामन म जाया जिनमे कारण वहाँ की कला और मगोत मुस्लिम प्रभाव म बहुत कम प्रभावित हुए। यहाँ का मगोत उत्तरी मगोत था।

कटक म एक ही नहीं दो-दो नाट्य-गालाएँ चलती थीं और दाना स्वाय लम्बी थीं। दूसरी नाट्य-गाला की कालीचरण बाबू क महारिया न म्यापित किया है।

उम समय उड़ीसा के मुख्य मंत्री श्री हरकृष्ण महताव और दूसर प्रभाव-गाली मंत्री श्री नित्यानन्द कानूनगा थे। उनसे भा वानें हुई। दग की आर्थिक समस्याएँ और उड़ीसा मे आदिवासीया का प्रश्न लकर साम तौर स विचार विमग हुआ। आदिवासीया की शिक्षा के लिए सो पाठ शालाएँ खालन की यानना थी, लेकिन उन समय तक दम खाली जा चुकी थी। मैंन माविषय का उदाहरण देने हुए कहा, जिवि दसर उनकी अपना भाषा का ही शिक्षा का माध्यम बनाया जाए तभी उनका म्यायी प्रभाव पड़ेगा। वैसे ता हमारा सारा देश ही दरिद्रता और अभाव का शिकार है पर उड़ीसा की स्थिति सबम अधिक दयनीय है। यहा क ननाजा का ध्यान उघर गया है पर मफयना का मुह दखन का नहीं मिल रहा था। मुन्त्र मंत्री न बनलाया, उपज को बतान के लिए हमन पचायती खेती भी आरम्भ कराइ, किन्तु उसक सचालन के लिए जिन अफमरा और दूसरा का रण रह पैसे का उला-उडाकर बैठ गए। अर माचन हैं, सरकारी नौकरा का अपना उन निर्वाचित रागा के ही हाथ म यह काम देना अच्छा है। अगर सारंगे भी, ता जनता ही के लाग तो। महताव नाक की मीव तर साचना नहीं जानते यह म्नी से मालूम है कि उहाने प्रवाहक विरुद्ध जाकर विनोबा के भूदान की व्ययता को मुन्त्रे तौर म घोषित किया। २७ मिनम्बर का टाउन हाल म अध्यापको की मभा हुई जहा मैं मोविषय शिक्षा प्रणाली पर बाला।

श्री जानवल्लभ महन्ती उड़ीसा के एक बूढ महापठिन हैं। मन्कून

और उत्कल दानों साहित्य के विद्वान् और प्रमी हैं। उन्होंने बहुत सा ताल पाण्डियों का संग्रह किया था। मुसलमानों के साथ कागज आन से पहले हमारे देश में स्थायी अभिलेखा पुस्तक को तालपत्र पर लिखा जाता था और पुर्जों आदि को भोज पत्र पर। उत्तर वाले ताल पर पत्र स्याही से लिखते थे और दक्षिण वाले सूय से ताल पर पत्र अक्षर कुरदकर उस पर बजली डाल देते थे। उत्तर दक्षिण की सीमा रेखा रेखा वही नहीं जा कि उत्तर दक्षिण की भाषाओं की। उड़ीसा भाषा के तौर पर यद्यपि उत्तर का अर्थ है किन्तु यहाँ तालपत्र पर सूय से लिखा जाता था। सूय में तालपत्र लिखने की प्रथा आज भी दक्षिण और उड़ीसा में प्रचलित है, यद्यपि छापे के कारण उसमें कमी पनी है। उड़िया भाषा यद्यपि उत्तरी भाषा है, किन्तु उसके कुछ उच्चारण दक्षिणी भाषाओं से मिलते हैं। इसका कारण भी है। मराठी और उड़िया भाषी लोग सबसे पीछे द्रविड भाषी से उत्तरी भाषा-भाषी बने।

बटक छाटा सा नगर होने पर भी सभाओं की भरमार रही। उसी दिन ब्राह्म समाज में प्रातः स्मरणीय राममोहन राय की बरसी के उपलक्ष्य में बालना पडा और टाउन हाल में श्री मेहताव की अध्यक्षता में हुई बड़ी सभा में सावित्र्य रूस के ऊपर।

बालासोर—उसी दिन रात को मैं महादेव भाई के साथ बालामार के लिए रवाना हुआ जहाँ गाड़ी अगले दिन छ बजे सवेरे पहुँची। यहाँ भी लिगरी कागज है जिसमें छात्र छात्राओं के सामने १० बजे ही भाषण हुआ गया। बालामार के साथ प्रातिविकारी काल की कई भव्य स्मृतियाँ बँधी हुई हैं। यही कुछ बीर प्रातिविकारियाँ ने अग्रजों की शक्ति से मुक्तकियाँ किया था और मरणोत्तर आहत प्रातिविकारी ने पुलिस के सवाल करने पर उत्तर दिया था मुझ शान्ति से मरने दो। वह शान्ति से मर गया। कितने ही वीरों ने अपने तरुण जीवन का उत्साह किया किन्तु क्या वे बुर्खानियाँ निष्पत्तियाँ? आज हम जो स्वतंत्रता मिली है उसमें सबसे बड़े कारण [यही] शान्तिवादी हैं। बालासोर ममुद्र तट से सात मील दूर एक बहुत स्वास्थ्य-

देश का चक्कर

कर जगह म बना है। सितम्बर क जन्म म चारा तरफ हरियाणे दिवाई देनी थी। छ घट म हमन कुछ जगह दापी और १२ बजे की ट्रेन पक्कर खटगपुर पहुँचे।

• वर्षा—खटगपुर म अय महान्य भाइ कलकत्ता क गिा खवाना हुए, और मैं वर्षा क लिए बम्बई म पक्का। भीड़ इतनी थी कि सब ड बगस—आनकल क फस्ट बगम—म जगह नहीं मिली। रात की यात्रा थी, माना भी था इसलिए गया पच्छीम रपय और रथ करके रात भर के लिए फस्ट बगम का आशय गिया। दिन म त्रिलानपुर पहुँचत-पहुँचत मक्कड बगस म फिर जगह मिल गद। २६ तारीख का अय मैं छत्तीसगढ क भीतर म चल रहा था। वर्षा का अत था इसलिए उस समय की नयना भिराम हरियाली को देखकर प्रवृत्ति का क्या अदाना लगाया जा सकता था। पर हरे हरे जगला मे ढंकी पहाडियाँ बनग रही थी कि भूमि उबरा है। जहाँ-तहाँ हरे टू पान क खेन लहरा रहे थे। हमारी ट्रेन नागपुर पहुँची। स्टेशन पर हजारों मुसलमान नर-नारी जमा थ। वह अपन का भरशिन ममझकर हैदराबाद जान के लिए यहाँ आए थ। अभी हैदराबाद अपन का मवतता ख्वतत्र मानता था। अंग्रेजा न जाने कवन उसे बैमा ही कर दिया था। लेकिन भारत क उदर म यह स्थिति कब तक रह सकती थी। गुजराती मौराष्ट्र मे जूनागढ के नवाब न पाकिस्तान म मिले की इच्छा प्रकट की थी और पाकिस्तान ने उसे स्वीकार कर भारत का युद्ध का नियंत्रण गिया था। देश की यह स्थिति कभी खतरनाक था। अंग्रेजा का गए अभी टेढ़ ही मजिन ता हुए थे हमारे लाग गामन और सेना के दब का बच्ची तरह सँभाल भी नहीं सक थे। इसी समय चारा तरफ आग लग गई थी। अंग्रेज सैनिक अपनर अभी बड़े बड़ पदा पर मौजूद थे। हिंदू राष्ट्र-वादिया न उनके गामन का हिंदुस्तान मे भगाया, इसलिए उनकी मत्तानु भूति पाकिस्तान के साथ हो ता क्या आदचय ? तब से अब (फरवरी १९४६) म जमीन आम्मान का अंतर है। भारत उस समय क भीषण

सूफान को मनुगल पार कर काफी जाग बना है। लेकिन हमारे राष्ट्र कण-धार अब भी अंग्रेज साम्राज्यवाद्या पर अविश्वास करने के लिए तैयार नहीं हैं, यद्यपि वह भारत सम्बन्धी हर महत्वपूर्ण अंतर्राष्ट्रीय प्रश्न के सम्बन्ध में अंग्रेजों का अपने विरुद्ध पाते हैं। हमारे उत्तरी सीमांत के नक्का भी मैं या कोई भारतीय लेखक लेना चाहें तो उसे सैनिक और राजनीतिक कारण बनाकर सर्वे डिपाटमण्ट देना स इकार करता है किंतु अंग्रेज अफसर उन्हें रिना स्टावट क पा जाते हैं।

गाम के ६ वज मैं वर्षों राष्ट्रभाषा प्रचार समिति में पहुँचा। समिति न जानदजी की देग रेग में अपने काय का बहुत विस्तार कर दिया था। वर्षों में बाहर पाँच एक जमीन लाने उस पर एक लाख क करीब का इमारत बन गई थी। टिप्पणी की हमारे स्तान दग का बड़ी जावदयकता है, और जावयक काय के लिए किया गया प्रयत्न दुगुना फलदायक होता है। तभी तो कुछ ही वर्षों पहले मामूली सी किराए की काठरी में आरम्भ हानर समिति का काम इतना आग बना। वर्षों में दो ही दिन मुच रहना था। पहला दिन तो समिति में ही मित्रा स बातचीत करने में गया। अगले दिन—

३० मिनम्बर—का यहाँ के दगनाय स्थाना का दगना। मगनवाटी गाधीगादी उद्योग धंधे का बना केंद्र है। दस्तकारी की चीजा का बला क तीर पर अपना बना महान है और गिशा तथा ममद्वि के अनुमार उसका बहुत बन्न का भी गुजादग है। पर गाधीवात् चाहता है, यह बाधुतिक उद्योग धंधा का स्थाप ले। क्या यह पापाण युग का विद्युत् युग से मुकाबिल नहा है? यहाँ के मद्यनय में बन्ना तरा न परान चरम रखे हुए थे। मद्राम का प्रनागम

मितिन्द्रा न एन अमुति एगगा जावातर नेत्रा था, जो उस युग की चीजा में गजता नहीं है।

विचिन-मा मानून ७१

चकिरयां भी थीं।

जिस उहाने ११३

दम्नकारा ३ वनें.

कागज

देग का चक्कर

बपड़े के मिला व मास्कि का यह प्रेम कुछ विचित्र-ना हो मालूम होना था।

बापहर बाद मेगाव गए। वर्षा में एक्के नहीं तांग हैं किन्तु घांटे मार भरियल थ। हम जा तांगा उम दिन मिला था उमका घाटा इनाम पान लायक था। बहुत माल पहले छपरा में राजापुर क महल की बलगाटी और हाथी से पाला पडा था। मैंन साचा था, वह समय मारन की मंगीनें हैं। यह तांगा नी बसा हा था। तीन चार मी पर अवस्थित गाधीजा क आश्रम में पहुचने में न जान कितना समय लगा। गाधीजी कितन ही समय में इस छोड गए थे। आश्रम में सब जगह बडी उदासी दाख पन्नी थी। तालीमो मघ, चर्या मघ अगर न हान ता और भी बुरी हालत हानी। वहा की गाला ही अच्छी हालत में दीख पनी। आश्रम में अभी कुछ लोग रहत थे, लेकिन दरौदीगार में हमरत बरस रही थी। लौटन बकन मामन हेतुमान टकरी पर माधु के स्थान का दगा। भरे मुह से अनायाम निरल गया—यह है रजिस्ट्री रिण और बेरजिस्ट्री किए पय ता भद। इधर रामा नद के पय की हजारा कुटिया में न एक यह मजे में मैकडा बपों में अपना बडा पहरा रही है और इधर मय्यापक व जीवन में ही मेवाप्राम का आश्रम ढड मड हा रहा है।

वसिक्त गिणा का भी यहाँ बन्द था, जिसमें १४ १५ विद्यार्थी पन्ने थे। प्रांतीय सरकार की छात्रवृत्ति मिल रही थी जिसे कारण मिल निरन प्रदेशा से ये तरुण आय हुए थे। अगले दिन राज्यपाल साहब इमका उद्घाटन करनवाले थ। पूव-बंगाल के एक तानन बनलाया—मुषे दा मान आए हुए, अब भाजनालय का सुपरिण्टेण्ट बना दिया गया है। वसिक्त ट्रेनिंग के प्रयाग क लिए आम पाम क गाँवा में लडके-लडकिया व वसिक्त विद्यालय ह। वसिक्त विद्यालय एक भारी पाखड भर हाना ता नी बाइ बान नहीं, किन्तु वह ता स्नाबलम्बी गिक्षा क नाम पर अधिक खचालू गिणा प्रणाली है। काम के साथ विद्या पढाना कितना महंगा है? आय दिन लडक-लडकियों का अपन घर से बपडा, भाजन सामग्री लाकर देना पडता

है। माँ बाप मनाते हैं यदि फीम दकर जबसिक विद्यालय में पठना होता, ता शिक्षा कही सस्ती रहती। हर महीने डेढ़-डेढ़ रुपये का खर्च हरेक माँ-बाप बर्नास्त नहीं कर सकते। गाधीजी के मुह से जा निकल जाये उस पर और मूढ़कर चलना इसी का यह परिणाम है। गाधीजी के चेला म कुमारणा जस अथगास्त्री, विनोबा जस भगत मथ्रूवाला जसे दासनिब थे जा सभी अपनी अपनी दिगा में नये प्रयाग कर रहे थे, और सभी अब आश्रम से बाहर थे। आश्रमवासियों को देखकर तो पिजटापालकी लेंगडी लूली गाएँ याद आती थी। प्यास लगी हुई थी मैंने कुछ से पानी पीना चाहा पर आश्रमवासी ने उसे न देकर क्लोरिन मिला जल दिया। स्वास्थ्य में कम से कम आश्रम अवश्य आधुनिक युग के नियमों का पालन करता था।

उस दिन दा भाषण देन पडे जिनमें मे एक सोशलिस्ट पार्टी की ओर से नहरू मदान में हुआ। सोशलिस्ट पार्टी की यह सभा प्रा० रजन क प्रभाव में हुई। तरुण रजन की कमठना का देखकर मैं बड़ा प्रभावित हुआ था। कुछ ही समय में वह अपनी प्रतिभा का जोहर लिखाने के लिए बड़े क्षेत्र में आ गए थे। उनकी लखनी बड़े अधिवारपूर्वक चल रही थी उनका शिक्षा बौगल अब राष्ट्र के काम आन लगा था। उस समय क्या मालूम था रजन बहूत जिनो तर अपनी प्रतिभा ग दग की सेवा नहीं कर पाएँगे, और उन्हें अवाल ही छोड़कर चला जाना पडेगा।



१ अक्तूबर को सबेरे हिन्दी नगर में ही वर्धा के सी से अधिक निश्चित पुरप आए दो घंटे तक उनका प्रश्न का उत्तर देना पडा। १ बजे मेकमरिया व्यापारिक कार्यालय में भाषण देना पडा और उमी दिन ३ घण्टर ४० मिनट पर टून पनडी। जबलपुर इटारसो में भी हाकर जाया जा सक्ता था किन्तु हमन गान्धियावाली लाइन पनडी। गान्धिया से छादी लाइन मिली। मारा राप्ता जगला और पहाडा का था। गाडी में बने हचनले लग रह थे। आनन्दी भी साथ थे।

बदेलपण्ड—जबलपुर में हमारी ट्रेन समय से पहले हा पहुँच गई थी,

देश का चक्कर

इसलिए स्टेशन पर कोई नहीं मिला। नया परिचय प्राप्त हुआ और हम ठेकेदार मलहात्राजी के साथ उनका घर पर नपियर टोन में ठहर गए। २ तारीख का बाकी समय वही बीता। ३ तारीख का महाबौगल विद्यालय के छात्रों के सामने बोलना पड़ा। ११० वष पहले यह विद्यालय अंग्रेजों ने स्थापित किया था। सावजनिक समाज में भाषण देना था, पर वर्षों के कारण वह नहीं हो सकी। ४ तारीख का नमदा का देगने के लिए चले। गांधी अपनी पत्नी सहित माधो नक्वी श्रीकृष्णदाम और आनंदजी भी थे। नमदा के बिनारे भेड़ा घाट पर पहुँचकर सगमरमर गिरा देखना चाहत थे, किंतु वर्षान्त में वहाँ नाव नहीं जाती थी इसलिए बहू ब्याल छोड़ना पड़ा। मोटर भी घाट से पहले ही पुल के पास छोड़नी पड़ी। नमदा चट्टानों पर से बह रही थी। भारत की सभी नदियाँ विवाहिता हैं केवल नमदा ही कुमारी है। एक जगह दिखलाकर श्रीकृष्णदामजी कहने लगे कि यहाँ ४०० फुट ऊँची चट्टान छिपी हुई है। भेड़ाघाट में बच्चे सगमरमर के बहुत तरह के खिलौने मिलते थे। लगूर और गरीके यहाँ के जंगल में बहुत हैं। पत्तों के समय मोटे गरीके मुफ्त पाने को मिल सकते थे। हम पास के चौमठयोगिनी मंदिर देगने गये। चारों तरफ गाल चहारदीवारी है, जिसके साथ कल्चुरी काल की बहुत-सी टूटी फटी मूर्तियाँ रखी हुई हैं। भोजवालीन तथा उसमें पीछे की मूर्तियाँ स कल्चुरी मूर्तियाँ अधिक सुंदर थी। मंदिर में नदी पर बड़े हरगौरी की मूर्ति थी। कल्चुरी पागुपन घम के माननेवाले थे। उस समय उत्तर में भी शैव घम अपने असली रूप में जीवित था और आजकल की तरह भस्म और रुद्रादा धारण तक ही वह समाप्त नहीं हो जाना था। एक गिर्वालिग को देखकर श्रीमती नक्वी ने उसके बारे में पूछा। हम इसीदेश में पैदा होत दृष्टे भी एक दूसरे की संस्कृति में मिलते अपरिचित हैं इसना यह उदाहरण था। गायद उद्दान गिन का नाम नहीं सुना था। हरगौरीवाले मंदिर की दाहिनी बगल में घुटने तक बूट धारण किये द्विभुज मूर्त की मूर्ति थी। कल ही मैं अपने भाषण में बतला चुका था, कि गवा के साथ मूर्त का प्रचार भारत में हुआ। इस तरह का बूट आज भी जाड़ों में हस के लोग

पहनते हैं। रूसी वस्तुतः उन्हीं गणों की सन्तान हैं जिनकी पूर्वी शाखा शत्रुघ्न से मजबूत होकर मध्य एशिया छोड़कर भारत की ओर आई। लौटते वक्त रास्ते में तेवर गाँव मिला। यही प्रतापी कण कल्चुरी की राजधानी त्रिपुरी थी।

गामका जबलपुर में एक सावजनिक और एक कांग्रेसी सभा में भाषण देना पड़ा। आनंदजी यहाँ से चल गए और मैं मलहाराजी के घर १० बजे रात को लौटा।

जबलपुर में तबक गाड़ी पकड़नी थी। ट्रेन से घंटे भर पहले तयार हो जाना मेरा सिद्धांत है। ४ बजे ही उठकर सामान संभाला सवा ५ बजे थुटपुटा ही था, कि मलहाराजी के साथ स्टेशन पर पहुँचा। गाड़ी देर से आई और दर से खुला। जब मन्तव्य स्थान कोंच (जिला जातौर) था। सेकंड क्लास के टिकट का २५ रुपया से कुछ अधिक लगा। हम कटनी और बीना में दो जगह गाड़ी बदलनी पड़ी। कटनी से जो गाड़ी मिली वह हरेक स्टेशन में खड़ी होनेवाली थी। पंजाब की मारकाट की खबरें सुनकर मुसलमानों में जातक छाया हुआ था। संधी और हिंदूसभाई केवल इसका प्रचार भर ही नहीं कर रहे थे बल्कि वह नेहत्या पर अपनी वीरता लिखाने से भी बाज नहीं आया। कम्युनिस्टा ने जबलपुर में इसका विरोध किया था जिस पर संधियों ने कइया का आहूत किया। पंजाब की खबरा का सुनकर हिंदू मुसलमाना के विरुद्ध सभी तरह की बातें सुनने के लिए तैयार थे। कांग्रेस वाले इस समय मौन थे। इसी कारण नागपुर में उस दिन चार हजार शरणार्थी मुसलमाना का स्टेशन पर हैदराबाद जान का ट्रेन की प्रतीक्षा करत देखा। जबलपुर से भी अपनी चोजा का मिट्टी के माल बेचकर बहुत से मुसलमान भाग सके हुए। दहा दमाह और सागर के स्टेशन में हमारी ट्रेन पर कई सौ मुसलमान नर नारी अपने बच्चों सहित चढ़े। मालूम हुआ, इन गहरा के दाहिना हिंदू मुसलमान भाग चुके हैं। संधी खबर उठा रहे थे भूपाल के अमुक गाँव में मुसलमाना न दा सौ हिंदुआ का मार डाला। लोग विश्वास करने के लिए तयार थे। उस दिन—५ अक्टूबर—को सागर में ८६

मुसलमान मारे गये थे। मालगुजार—जमींदार—अपन गाँवा स मुस्लिम विमाना को निकार बाहर करके धमवीरता का परिचय दे रह थे। मध्य प्रदेश की सरकार का लखवा-मा मार गया था। अज उमकी नीद जरा-जरा छुती थी, और गान्ति-स्वापना के प्रयत्न कर रही थी।

बीना म हमारी साठे तीन घट रेट ट्रेन गाम का साठे ५ बजे पहुँची। दूसरी गाडी १० बजे रात का मिली। झाँसी मे आगे की ट्रेन तयार थी। मेकड बगम का डिब्बा भीतर से खूब बन्द था, बहुत बहुत मुक्किल से छुल बाया। बतलाया गया आजकल ट्रेना मे छुरेवाजी ह। रती हैं धमवीर लोग आदमिया का मारकर या एसे ही चलती ट्रेन म फँक दन हैं।

बुदेखण्ड क एक बडे भाग का पुराना नाम दगाण कालिदास के ममय भी मगहर था, जा जवलपुर से कालपी तक फैला हुआ था। जमुना और नमदा यही बहती थी। दगाण का नाम अब भी वहाँ की घसान नदी म मौजूद है। कृषि और खनिज दोना मे प्राचीन दगाण (बुदेखण्ड) की भूमि समृद्ध है। नये मध्य प्रदेश म बुदेखण्ड के कितन ही टुकडा को मिला दिया गया, पर अब भी बाँदा, हमीरपुर जालौन चाँमी के जिले का उत्तर प्रदेश म ही रखा गया है। आज भी इन चारो जिला को मध्य प्रदेश के साथ मिलानर दगाण को एकराबद्ध किया जा सकता था, पर स्वानीय सस्कृतिया और भाषाभा का जमी पूछ कौन करता है? यमल मानव-दगाण म मालव अपनी बागी मिट्टी और खन्न के लिए प्रसिद्ध है। युगो मे कहा जाना रहा, मात्र म कभी अबा नहीं पडना। मेवा और बुदेखण्ड के लोग अकाल पडने पर मालवा का रास्ता लेते थे, केकिन कलयुग म किमी भी बात का ठिकाना नहीं मात्र म भी अकाल पडे, तो क्या अचरज? चाँमी मे एरब हाने हमारी ट्रेन एट पहुँची। एरब एरबच्छ के नाम स बुद्धका म भी एक प्रसिद्ध नगर था। आज भी उमकी घरती के भीतर प्राचान मस्कृति की बहुत सी सामग्री छिपी पडी है। अपने बुदखण्ड के निवास के समय मे यहा आया था। एट मे ६ बजे पहुँचकर दो घण्ट प्रतीक्षा करनी पडी, तब वाच की गान्ति आग खाना हुई। इस ट्रेन मे बगस था

वग का भेद नहीं है। पुराने जीवन की स्मृतियाँ जागृत हो रही थीं। इसी ट्रेन में प्रथम विश्व युद्ध के समय यात्रा करते समय मेरा तटस्थ गम खून उबल पड़ा था जबकि किसी अप्रेज अफसर के चपरासी ने जगह छोड़ने के लिए कहा था। आज वे अंग्रेज नहीं थे। काच में उतरकर अपने पुराने मित्र श्री पन्नालाल और श्यामलाल के घर पहुँचा। घुमक्कड़ी जीवन में अपना घर छाड़ने पर भी जगह जगह बहुत से अपने घर और परिवार मिले थे, जिनमें पन्नालाल परिवार भी था। वस्तुतः उन्हीं पुरानी स्मृतियों का जागृत करन के लिए मैं यहाँ आया था। पन्नालालजी के पिता स्वामी ब्रह्मानन्द से मिलना था जब वह ८५ वर्ष के हो चुके थे।

काँच—अगले दिन—७ अक्टूबर—स्कूल में व्याख्यान दिया फिर साढ़े ५ बजे यहाँ के गण्यमाय सज्जनों के साथ जलपान की दावत में शामिल हो ८ बजे रात तक गाँठी चलता रहा। स्वामी ब्रह्मानन्द का गान महेशपुरा यहाँ से दस मील पर है। गाँव में अनुकूलता न देख करके उनके दाना पुत्र महेशपुरा छोड़कर काँच के बस्व में आ गए। लेकिन स्वामी ब्रह्मानन्द को महेशपुरा न छोड़ा नहीं। वह वहीं रहते थे। शरीर अब अस्थि पजर मात्र रह गया है चलना डालना मुश्किल है। महेशपुरा में अपनी छाटी सी बुटिया थी जमी में रतत अपना भोजन आप पका लेते थे। उन्होंने अपने दादा को देखा, और अब परपाता को देख रहे थे, अर्थात् ६ पीढ़ी उनके सामने सज्जरी। उनके दोना पुत्रों के परिवार में आज १० व्यक्ति थे। गहाँई बन्धु अग्रवाल की तरह पीढ़ियाँ से निरामिष भाजी थे किंतु समय ने सज्जरी का उच्छेद दिया। उनके पौत्र भघातिथि अब जामिपहारी थे। स्वामी ब्रह्मानन्द तब थी रामदीन पहाड़िया थोड़ी सी हिंदा जानते थे और महेशपुरा में गतिपूर्वक बपड़े और लेन देन का व्यापार करते थे। इतनी कम शिक्षा और गहरा सतन दूर पर भी विचार पहुँच गये। रामदीन पहाड़िया आयममाजा हा, जाय समाज की शिक्षा को अपने जीवन में टालने की काँगि करन लगे। उन्होंने दूमान में दामक बार में एक बोली का निषम दृष्टा से पालन किया। पहले कुछ बठिनाई हुई लेकिन

देग का चक्कर

उसे पीछे लागो न जान लिया। जीवन मुखपूवक बीतने लगा। अपनी पत्नी और बहू को भी जनत पहनाया, और घर में स्त्रियाँ भी नियमपूवक हवन सध्या करने लगी। रामदीन पहाडिया अपन समय के शान्तिकारी थे। पर जात-पान की सीमा में बाहर नहीं मानते थे। उहान और उनके पुत्रान आयसमाज के लिए हजारों रुपये दान किये।

१६१६ में जब मैं महेगापुरा पहुँचा तब वह सन्यासी बन चुके थे। सन्यासी बनने पर भी घुमकरड़ी की प्रवृत्ति न हाने के कारण वह महेगापुरा को नहीं छोड़ते थे। आज अपनी चौबी पीड़ी में वह कितना परिवर्तन देख रहे थे? पुत्रा-पौत्रा को अण्डा साते देखकर धुन्न हो जाते थे, लेकिन बीन दादा अपन पात का अपने बानू में रख सक्ता है? स्वामी ब्रह्मानन्द चाय का हानिकारक समझते थे, स्वाम्य के ह्याल में बी और पैसे का ह्याल से भी। पोना के पाम चाय का सेट था और दिन में दो बार चाय पिय बिना उनका काम नहीं चलता था। सब के बारे में गिवायन करन पर एक पाने न कहा— 'यदि हम अधिक रख करते हैं, ता अधिक कमाते भी है। आपके युग में स्त्री के पाम दा माटी झोटी साडी काफी समझी जाती थी। हमारी स्त्रिया का देखें, हरेक का टक में एक दजन अच्छी-अच्छी साडियाँ है।' पुरानी पीड़ी के पाम कमवा क्या जवाब था? मैं स्वामीजी से कहा— 'कुलने श्री जरूरत नहीं, हरेक पीली का अपना जिम्मा लेना चाहिए। नई पीलिया हमारा इसी तरह परिवर्तन करती आई हैं।' चार पीड़ी को अपनी आँवों के सामने दखना जरूर बुद्धन पैला करना है लेकिन यह बुद्धिमानी नहीं है।

८ अक्तूबर को कोच के प्राचीन इतिहास की आर मरा ध्यान गया। काच, जमे हमारे देग में मैनडा नगर हैं, जा अपने समय में काफी महत्व रखते थे, लेकिन इनक इतिहास का कोई उल्लेख नहीं मिलता। काच का नाम ही बनला रहा था, कि यह मुस्लिम काठ का नहीं है। मसूत में गायद यह काच नगर रहा हो, पर कोच पक्षी का नाम पर किसी नगर के होने का पता नहीं लगता। पूछने पर बारहबन्वा म्यान का पता लगा

८ अक्टूबर का एक काफी जमात मरे साथ बहा पहुँची। बारहखम्बा के पास बड़ी माता का मन्दिर है जिसमें गुप्तका गीत या तुरत बाद की छठी या सातवीं सदी की पाषाण मूर्तियाँ हैं। सुन्दर छाती और भुजमूल गुप्त और पश्चात् गुप्तकाल की मूर्तियाँ की विशेषता है। वह यहाँ के प्रतिहारी की मूर्ति में दिखलाई पड़ी। एक छोटी बराह की मूर्ति भी इसी काल का बनलाई है। खण्डित हरगौरी बनलाई रह थ कि यहाँ पाशुपता का मन्दिर था। बारहखम्बा के किसी प्राचीन मन्दिर के खम्बा को लेकर बनाया गया जा गाय ११ वीं सदी में पास का तालाब पुराने मन्दिर का ही है। गाँव की माता के पास की मूर्तियाँ में एक जन मूर्ति थी। कोई बौद्ध मूर्ति देखने में नहीं जाइ पर पिछले नौ वर्षों में मूर्तियाँ की लूट मची हुई है। न जान कितनी मूर्तियाँ यहाँ में उठ गईं। काच नगर गुप्तकाल में बड़ा समृद्ध रहा होगा। यहाँ मुक्तिपति रायपाल नहीं तो विषयपति (जिलाधीश वृमारामात्म्य) जरूर रहता रहा होगा। दक्षिणापथ का जार जानवाला वणिक् मार्ग गाय ११ वीं सदी में जाना रहा, इस कारण यह धनधाय-सम्पन्न बस्ती रही होगी।

आज कोच की जागड़ी २० हजार थी। नगरपालिका थी जिसकी आमदनी एक लाख मात्रा थी। पिल्ले तीन साल में प्राइमरी शिक्षा निरुक्त रही और अब वह अनिवाय भी कर दी गई थी। नगरपालिका के सचिव वह रह थ जाँविक कठिनाइयाँ के कारण हम नगर के सुधार की कोई महत्वपूर्ण योजना अपन हाथ में नहीं ले सकत। उन पृष्ठन पर मैंने सावित्र की नगरपालिका का वणन किया तो उन्हें स्वप्न की बात मानूँगे हुए। हाँ २० हजार जागड़ीवाले सावित्र के किसी नगर की यह रणा घड़े ही हो सकती हैं। कर के बारे में पृष्ठन पर हमने बतलाया वहाँ का नगरपालिका का नगर के सार धरा का स्वामिनी है। यहाँ भी यदि सारे धर आपकी नगरपालिका में मिल जाए तो वह कितना धनी हो जाएगी?

काच में और उमर चौक में कितनी ही बार में यात्रायान दे चुका था, पर जिनके मामलें यात्रायान दिये उन में अब बहुत कम रहे गये थ। नई

देग का चक्कर

पीपी म पुस्तक। म गौर गणतन्त्र ही राष्ट्रजी का जानने घ। हर पीपी
म नये परिचय प्राप्त करने की जरूरत है।

६ अक्टूबर का वाक्य से बिना ली। विदा करने मामा ब्रह्मानंद रा
पड़े। अब फिर मिलन की आशा कमे ल मरती थी जा बिठ गय सो
हम साथ घूमा करते थे साथ स्वप्न दना करने थे—आयममाज का घर
घर म प्रचार करना है एग विदा म मके मदन का पहुंचाना है। स्वामी
ब्रह्मानंद अब भी आयममाजो से अब भी वेद इस्वर और ऋषि दयानंद
की गिना पर उत्तरी निष्ठा थी। उन २१ वर्षों म वहां मे वहाँ पहुंच गया।
हमारे विचारा म भारी भेद था, लेकिन स्नह अब भी बसा ही था। स्वामी
ब्रह्मानंदजी मे विदा हान मेरा दिग्भा भारी हा गया। जागौन जिला
वर्षों मेरी कमभूमि रहा— 'यहाँ नाथ मम पगपग जाहा।' पग-पग जोही
जगहा को देखन की तोष इच्छा गती है पर ममय वहाँ म लागे। अब
ममय की मायवी काम म नती गई जा मरती। श्री बनीमाधव निवारी
उमो ममय के मेर परिचिन हुए थे। एक ममय उहने स्वर्गजी आल्हा
बनाया था। वह छोटी पुष्पिका के रूप म उपा भी था। फिर उहने काप्रम
मे काम किया, जेल गय लेकिन यह सत्र उम समय हुआ, जम मरा मन्त्र
जालीन चित्रे मे दूट चुका था। उही के साथ मोटर पर मैं उरइ गया। घट
भर मे १९ मील पहुंच गय। मेरे गन के समय अभी घाटरा का प्रचार
नहीं हुआ था। सेना म हरा भरी फसल मडी दब हृदय उल्लसित हा गता
और गागे सेत दखर अवमन। जाजरल के जमान म टुम है, इसलिए
सेमा हाना ही चाहिए। उरद अब १० हजार मे दखर १० हजार का नगर
हा गया था, पानीयल भी लग गयी चित्तु मनी घरा म उमका लगना
तभी हा मक्ता था जम का नागरिक दरिद्र न हा, वहाँ के दा हार्द स्मूग
म एर डटर तग था। जालीनवाग म जम मारूम हुआ, ता वह भी मुने
लेन व लिए पहुंच। उनका निराग कर मैं बहुत दु गी हुआ। मचमुच उनसे
भी अगिन जागौन जाने की मेरी इच्छा थी। नाम को मचमुच समी

हुई। पण्डित जलपूराय गास्त्री सयोग से उरई पहुँचे हुए थे। वह प्रांतीय काग्रस के उप प्रधान और प्रांत के एक बड़े कांग्रेसी नेता थे। जाजमगढ़ जिले के होने से उनके साथ एक विंगप जातमीयता होनी स्वाभाविक थी। पहले उन्हें मैंने दुबला पतला देखा था जब माट हो गया थे। मैं कम्युनिस्ट था और वह कांग्रेसी दानो के विचारों में छत्तीस का सम्बन्ध था, लेकिन वैयक्तिक सम्बन्ध पर उसका क्या असर हो सकता था। ऐसे मधुर सम्बन्ध को आदमी का खाना नहीं चाहिए।

कलम घिसाई

१० जनवरी का पीन ६ बजे मर की गाड़ी घण्ट भर दर में आई। जिन कम्पायेंट में था, उमी में गोरखपुर निवासी एक मुसलमान मनि जफर भी था। वह निटों के दान में बड़े प्रभावित थे। आज की म्बिनि में दूसरे मुसलमानों की तरह वह भावुत गिन और निराग थे। वहन थे— मनुष्यता कहा है ?” जेनि वह रही वर ? वह रह ध— “भारत फिर परतन हागा, पाकिस्तान से लटाइ हागी दोना में से एक पराजित और अधीन हागर रहेगा।” उम समय की म्बिति दपकर वह इसी तरह मोच मरत थे। वह रहे थे— “युन प्रान्त की मरगर मुसलमानों की नीरगिया से निवार रही है बायनाट के कारण मुसलमान व्यापार भी नहीं कर मरने।” उनका यह भी कतना था कि हम हिंदू मुसलमान की वप नूना हटाकर यूरोपियन पागाक जपनानी चाहिए। वप भूसा के हटन से हिंदू मुसलमान का बाहर भेद मिट जाएगा, यह ठीक है मैंने कहा— वर खचौली हागा। क्या न हिंदुस्तानी पोगाक एन-सी दानो अपना में वानावरण में बाइ किसी पर विश्वास कम कर मरता था ? बलनी ट्रेना में छुरा मारकर निरीह मुसाफिर को ट्रेन में बाहर गिरा दिया जाता था। महीन भर की यात्रा में मैं इस भीषण साम्प्रदायिक म्बिनि का दया। बनारस, उनका और पटना में हिंदू मुसलमानों में हलका सा तनाव था,

यद्यपि सधी जार हिंदू सभाई अपनी कागिस म बाज नहीं आ रह थ । बलकत्ता म और भी हलरा तनाव था । कटक, बालासार बिल्कुल गात थे वर्धा म जरा जरा जोर जबपुर म ज्यादा तनाव देगा । दमोह और सागर म नूफान मचा हुआ था और काच तथा उरई म हठका मा तनाव ।

फीस बढान से विद्यार्थियो म क्षाभ मचा हुआ था । हमारे अधिकांग विद्यार्थियो की आर्थिक स्थिति बस्तुन इतनी बुरी है, कि वह पट काटकर बडी मुश्किल से पढते है । उस पर से जब फीस बढा दी जाती है ता वह क्या न उत्तेजित हा जाएँ । इस समय उहाने जगह जगह हडतालें और प्रश्न किए थे शिक्षा मंत्री श्री सम्पूर्णानंद क मकान क जगह का ताड दिया था । गिरफ्तारी शुरू हुई । इतना ही तक नहा, लाठी चरमन लगा, विद्यार्थियो पर घाडे दौडाय गए । यह सब अंग्रजा क वक्त की सरकार का ही अनुकरण था । एक लडका मारा गया बहुत से घायत हुए । जेल म बड विद्यार्थियो क साथ वही निष्ठुर वर्तव हुआ जसा कि अंग्रजा क सामन होता था । विद्यार्थी आन्दोलन उस समय सार प्रदेश म जार गोर सफा हुआ था ।

प्रयाग—बानपुर म ट्रेन बदलकर ८ बजे रात का मैं प्रयाग पहुचा । बफू नही था नही ता डा० बदरीनाथप्रसाद के बँगठ म पहुँचन म त्किवत हाती ।

अत्र प्रयाग म ४६ दिन रहकर कर्म का काम करता था । रूम म रहने मैंन मध्यरातियो क उपवासकार सदरहीन एनी क बड ग्रथ पठे थ । वह मुझ बस्तुन पसन्त जाण थे । उनम बसे हा समाज क महान् परिवर्तन का धान बनगई गई था जसा हमार यहाँ जब भा था । र्सलिए उपवास का हमार दंग क लिए विगप उपयाग भी था । अनिनप्राण म रहते हा मैंन एनी के दा बडे बडे उपयामा— 'दागुण और गुणामान' (जा दास थे)— का अनुशास कर डाला था । ताजिन फारमा स उदू म बरन म बहुत मे मूल गान का रगा जा मरता था, इसलिए मैंन अनुशास उदू म लिए । यहाँ आन पर मालूम हुआ उदू का प्रकाशन नहीं मिल सगगा । उदू-मुस्तवें जब

कलम घिमाई

जन्म वम प्रकाशित हान लगी हैं। मर हिंदी के प्रकाशित जार दन लग, कि ह जिंदा मे कर दू ता वह तुरन् छप जाएंगे। मैं सबसे पहल 'दागुदा' लग गया १२ अक्तूबर मे, और २५ अक्तूबर का उन समाप्त कर देया। जब ३१ का 'दागुदा' का पहला पूरा आया ता और भी प्रसन्नता हुई।

डा० बदरीनाथप्रसाद क यहा मैं बहुत आगम म था, लेकिन बहुत से लोग मिलन जुलन आया करने थे, और काम का बहुत-सा समय बातचीत म चला जाता था। मुझे एसी जगह चाहिए थी जहाँ मैं निर्विघ्न लिखने का काम कर सकूँ। यही माचकर १५ अक्तूबर का मैं दागागज म राय रामचरण क निजाम म चला गया। दागागज म परिचिता की कमी नहीं थी पर रायमाहब केवल मर रहन-भान-मीन का ही बहुत ध्यान नहीं रखन थे बल्कि इमक लिए भी मतक थे, कि निश्चित समय क जतिरिक्त और समय काइ मिलने न आए। अपन हाथ स लिखन का अभ्यास छूग ता नहीं था, पर दिन पर दिन मरा हम्नापर बिगन्ना गया था, स्वय लिखन म बचन मात्तूम हाता था। लिखने के लिए नागाजुनजी न अपनी सवागें अपिन की पर मुझे यह उचित नहीं मात्तूम हाता था। नागाजुन अब स्वय साहित्य मृजन कर रहे थ, उनकी अखनी का लोग लोहा मानन रग थ। उनमे लिपिक का काम लना मुझे ठीक नहीं मात्तूम हाता था पर अना ता मज बूरा थी। अक्तूबर का मध्य था, लेकिन पछे क बिना काम नहीं चलता था। मन्नाप था, जाग जलनी ही आ जाएगा।

दागागज म राय रामचरण न मर लिए जा निजाम निश्चित किया था, वह मचमुच तल्लानता का स्थान था। कोइ निवायन नहीं हा सकती थी और पागाना कुठ ठीक नहीं था, लेकिन उमका कारण मरा बहुत बाल तक माविषय म रहना था। दिन भर बिजली का पया चला करता, साथ और प्रात का तापमान अनुकूल हा जाता।

१८ अक्तूबर का रामलीला का धूमयाम थी। दधर बिनत ही माग ताक हिंदू मुसलमान बैमनम्य के कारण अंग्रेजा सरकार न प्रतिषेध लगा

दिए थे जिसके कारण रामलीला बंद रही। जंग्रेजा के जाने का यह गुम फलता मिला।

यहाँ आते काशी के आचार्य (द्वितीय खण्ड) के बौद्ध दर्शन का प्रश्न पत्र बनाना पड़ा। व्यस्त रहने के कारण यद्यपि समय निकालना मुश्किल था, लेकिन काशी की परीक्षाओं में बौद्ध दर्शन का सम्मिलित कराने में मेरा भी हाथ था इसलिए दो कार्रवाई कर सकता था। २० अक्टूबर का डा० उदयनारायण तिवारी और राय रामचरण अग्रवाल कार से बनारस जा रहे थे, रास्ते में कार उलट गई। सौभाग्य से चोट कम आई। जादमी का जीवन दरअसल हर समय अपना अन्त लिए चलता है। न जान किस समय भीषण दुर्घटना हो जाए। २१ तारीख का रामलीला की चौकिया निकली। गोम्बामी तुलसीदास के समय से पहले में रामलीला हानो आई है, पर कालबला के कारण किसी चीज का रूप एक मा नहीं रहने पाता। प्रयाग में रामलीला के जुद्धों के साथ चौकिया की परम्परा चल पत्नी है। हरेक मुहल्ला अपनी अपनी चौकिया का सजान में हाट लगाता है। चौकिया में केवल रामायण के दृश्य नहीं हाने बल्कि आधुनिक भाषा का यवन करन वाली मूर्तियाँ सज्जित का जाता है। जुलूस बनी काठी के सामने से निकला जिसके सामने ही उस काठी का फाटक था जिसमें मैं रहता था। यह कहने की आवश्यकता नहीं कि उसके दान का भाग में सवर्ण नहीं कर सका।

मेरे अनुज 'यामला' के पुत्र उदयनारायण मद्रिब पास करके दिल्ली में नौकरी करन लगे थे। २६ अक्टूबर को वह आए थालें मैं नौकरी से इस्तीफा दे लिया, जय पढ़ना चाहता हूँ प्राकमर बनना चाहता हूँ लखन हाना चाहता हूँ। मैं कहा सब की चिन्ता मत करा पढ़ा जोर साइम पढ़ा। अक्टूबर के जन में आगा ता नहीं थी कि कस साल वह एक० ए० की परीक्षा में बैठ सकेंगे लेकिन उस लिये कागिण करन के लिए वह दिया। प्रश्नना हुई, जब १ नवम्बर का उनकी फीस जमा हाकर फाम स्वीकृत हा गया। यन्त्रि पचाई न छोड हात ता कस मात वह बी० ए० में बटन, अर्थात् दो साल का नुस्सात हुआ था।

बल्लम घिसाई

२५ अक्टूबर को "दागुदा" समाप्त करने के बाद "सावियन भूमि" के दूसरे सम्बरण में हाथ लगाया था। एम तरह सारी पुस्तक का फिर से लिखकर पढ़ने से हथौड़ा करना था। रोज थोड़ा-सा समय मित्रा से मिलने जुलन के लिए रखा था और कुछ समय बाद रविभार को छुट्टी रखने का नियम भी मान लिया। उस दिन मित्रा से मिला मैं भा बाहर निरालता था। प० श्रीनारायण चतुर्वेदी द्वारा गज मुल्ल ही म रहत थे। २६ के रविवार का राबरे उनके यहाँ पहुँचा। चतुर्वेदीजी साहित्यकार और साहित्य प्रेमी ही नहीं हैं। बल्कि उनके यहाँ साहित्यकारों का दरबार लगा दिखाई पड़ता। साहित्य और साहित्यकारों की चर्चा ही वहाँ ज्यादा मुनाई देती। चिन्तने ही तरण और प्रौढ साहित्यकारों का चतुर्वेदीजी न प्रात्साहन और सहाय्य देकर आगे बढाया। जाठवी नवी गताब्दी के एक चतुर्वेदी ने पूर्वी बम्बोज में जानर बहुत सम्मान प्राप्त किया, राजा का दामाद बने। उन्होंने अपनी मथुरा का हजारों वेदपाठियों के स्वरा से गुजित बतलाया है। अब माथुर चतुर्वेदिया म वेदपाठों शायद ही कोई भिन्ने। बल्लम म सम्प्रदाय से आगे बढने वाले चतुर्वेदिया म गायद प० श्रीनारायण के पिता श्री द्वारका प्रसाद चतुर्वेदी ही है, जा रामानुज सम्प्रदाय म दीनित हो उत्तर के रामा गुजिया के नेताआ म मे ठे। पिता न सरस्वती की सेवा की योग्य पुत्र उनसे पीछे कैम रहना ? चतुर्वेदीजी का सायना व लिए पूरा समय दना मुक्ति व था। पर अपन सरकारा वतछ्य का भी वह चुम्ती के साथ निर्वाह करते थे, और मित्रा व लिए भी समय देन मे वडी मायची रहने थे। उसी दिन दापत्र बाद श्री महादवीजी के पाम भी गया। महादेवीजी अपना स्थान अपनी योग्यता से बनाया है। मैं निस्संकोच कह मवता हूँ कि पत प्रसाद निराला के बाद उम पीढी के सर्वोच्च कवियों म महादवीजी प्रथम हैं। सावधानी के साथ रचना करने म तो प्रसाद के बाद ही उनका नम्बर आता है। बातचीत म निरालाजी का जिक्र छिड गया। निरालाजी का चिन्तने लोग पागल समझते थे, और उनके विचार से उह रौंकी थे

ना चाहिए। मैं ऐसा नहीं समझता। मैं उन्हें चौरासी सिद्धा की कीटि म
ममज्ञता है जिनका जागत और स्वप्न का भेद मिट गया है। निराला कवि
तौर पर ही नहीं मानव क तौर पर भी बना है। इस समय वह
उत्पाव में थे इसलिए मुलाकात नहीं हो सकी।

उसी दिन 'सरस्वती' के भूतपूर्व सम्पादक प० देवीदत्त शुक्ल क दश
साथ गया। दिसम्बर १९४४ से ही उनकी आखें जाती रही तीन साल से
वह इसी स्थिति में था। जीवन भर साहित्य की सेवा करते जाज जिस तरह
का जीवन उन्हें बिताना पड़ रहा था उससे दुःख हो रहा था। मरे दोन
के लिए जाने में उन्हें आत्म मत्ताप हो सकता था, लेकिन इससे उनकी क्या
सहायता हो सकती थी? हमारे यहाँ मतरा शाब्द की प्रथा है 'गायद' वसी
लिए हम जीवित श्राद्ध करना नहीं जानते। जहाँ तक शुक्लजी का सम्बन्ध
था वह अपनी स्थिति से असातुष्ट नहीं मालूम होना थे। आखिर तीन साल
से यह इसी का अभ्यास कर रहे थे। द्विवेदीजी क बाद सबसे अधिक समय
तक 'सरस्वती' के कणधार प० देवीदत्त शुक्ल रहे। मुझे तो उनका और
भी अधिक कृति होना था, क्योंकि देर से जब मैं हिन्दा पत्रिका जा म लग्य
लियेन लगा तो सबसे पहले सम्बन्ध 'सरस्वती' से हुआ। शुक्ल से ही
शुक्लजी ने मर लया का स्वागत ही नहीं किया बल्कि औरों के लिए माग
करते रहे। यह उस समय की बात है, जबकि मैं पहली बार लया गया था।

हम से लग्येन हानर में भारत लौटा था। लग्येन म ही एन छोटी सा
सिन्तु 'गकिंगाला रडियो धरीद लिया था। गाम के बक्त नियमपूर्वक में
भारत और पाकिस्तान से प्रसारित जाने वाले समाचारों को सुनता। उस
बक्त कश्मीर को लेकर पाकिस्तान रडियो जहाद बाल हुए थे। जूनागढ
क नवाब न मजूर कर लिया इसलिए भारत न भीतर जूनागढ पाकिस्तान
का है कश्मीर क राजा क हस्ताक्षर करन से क्या होता है वहाँ के अधि-
काण लग मुसलमान हैं, इसलिए वह पाकिस्तान का है। रडियो प्रसार से
संतोष न करके पाकिस्तान न अपनी सना और प्रजा का भी कश्मीर पर
चढ़ दोन क लिए छात्र लिया जब २७ अक्टूबर का कश्मीर क राजा न

बलम घिसाई

भारत मघ म गामिल हान का निश्चय कर लिया। अत्र के २६ जक्वूर को गरदपूना पत्नी। गारदी पूणिमा वा हमारे यहाँ हमेगा नयनाभिराम माना जाता था। राजा लाग इम ममम वीमुदी महात्मन मनाने थे। गरद पूना को उस समय वीमुदी कहा जाता था। वीमुदी महोमव वा निपघ कर दन पर चाणक्य और चन्द्रगुप्त वा जो क्षणिक वैमनस्य हुआ था, उनका वपन विगाग न 'मृद्राराधम' नाग्य म किया है। अयाध्या म गरद पूना को लाग अत्र भी घूम घाम स मनात है, लेकिन वह अधिकतर पयर या हाड मौस के राम ऋमण-मीता की झाँकी दिखलाने तक ही सीमित रहती है। सार दग म गरद पूना वा निरभ्र जावाग हा यह आवश्यक नहीं है, लेकिन मुने ता उत्तरी भारत की रम पूणिमा के जितन भी स्मरण हैं, उनम जावाग निरभ्र ही मिग था। वीमुदी महोमव राजाजा वा ही नहीं, जनता वा भी और उनसे भी अधिक बलानारा वा उत्सव है। हिंदी-क्षेत्र मे उग दिन की फूल सी टिपनी चाँदनी वा एस ही जाने देना अपराध है। बबिया वा यह स्थाभाबिन महोत्सव है पर अभी उनका इम तरफ ध्यान नहीं गया है।

१ नवम्बर को दहरादून क एक मित्र के पत्र से मालूम हुआ हिंदी हित्य सम्मेलन के सभापति के लिए मेरा भी नाम लिया गया है। यह भी ता लगा, कि मेरे मित्रा न उसके लिए निवेदन पत्र भी छापकर मतदानाजा के पास भेजा है। कई साल पहले भी मेरा नाम सभापति के लिए लिया गया था। जब मुझे मालूम हुआ, तो बिहार के साहित्यनारा से मैने बतला दिया—मैं नहीं चाहता। लेकिन, तब काफी देर हा चुकी थी, जोर मेरा अभिप्राय सिर्फ बिहार तरनी वायकारी हो सका। मतदान हुए और कुछ ही बाटा की अधिकता से श्री जमनालाल बजाज सभापति चुन गए। उनकी पीठ पर गावीजी का बरहूस्त था, तत्र भी यदि मैंने बिहार क मित्रो का न रास हाता ता परिणाम दूसरा ही निकलता। इम समय मेरे मित्रा ने इसी-लिए चुपचाप निवेदन पत्र निजाला था, कि मालूम हान पर मैं विराध करता हूँ। उनका समय बीत चुका था। ३ नवम्बर को मैं सभापति चुन लिया गया।

इस साल सेठ गाविन्दाम को १४५ और मुझे १८० वोट मिले थे। उस वार भी एक सेठ ने मुकाबिला हुआ था और इस वार भी। अब अपने सम्मेलन को भी समय देना पड़ेगा इस कठिनाई का सामना करना था और मैंने लिखने के लिए काफी बड़ी याजना बना ली थी। इसी बीच सभापति का भाषण लिखन का भा भार जा पड़ा। मैं चाहता था कि 'सावियत भूमि' के बाद 'मधुर स्वप्न' उपनाम म हाथ लगाऊँ किन्तु उसका समय दा वप बाद आने वाला था।

फिल्मों में मेरा द्वेष नहीं है किन्तु भारतीय फिल्मों में बहुत से एम ही देखने को मिले, जिन्हें मैं कुछ ही मिनट देखने के बाद उठ जाता दमीलिए किसी फिल्म की जब तक जबदस्त सिफारिश न हो तब तक मैं यामलाह सरदर लन के लिए तयार नहीं हाना। ६ नवम्बर का मैं मिना के साथ मधुन देखने गया। गाविन्दाम की महान् कृति पर यह फ़िल्म बनाया गया था। सारी गुप्तकला इसकी पृष्ठभूमि में थी। इतिहास का वह जघकारावन युग भी नहीं है। इस पर कितना मुन्दर फ़िल्म बन सकती थी लेकिन दस वर मुझे कुछ नहीं लिखना पचा। दशहाराद में हर साल इ नी महीना में स्वदगी प्रदगती हुआ करती थी जा अब स्पन्शी भला क रूप में परिणत हा गई थी। पहले सालों में उसकी अधिन जनति हुई थी।

'सावियत भूमि' में अतिरिक्त सावियत मध्य एशिया पर एक छाया सा ग्रथ लिखना चाहा। एनी के उपनासा द्वारा सावियत मध्य एशिया के लाज जीवन में जा मगान् परिवर्तन जाए उनका जाना जा गकता था पर उसका पूरा तरह में समचन के लिए मोवियत मध्य एशिया के परिचय की आवश्यकता था। एसी सभी का दूर वग्न के लिए १० अक्टूबर का मैंने इस पुस्तक में हाथ लगाया। २२ अक्टूबर का मन पुस्तक को लिखनर समाप्त कर दिया। प्रकाशक न बहुत जागा दिलाई थी कि मैं इस तुरन्त छाग दूंगा पर तुरन्त का समय बनवा सत्रम लम्बा निकला।

मेरी तट्टरन्ती आमनौर में अन्ठी रहता रही इससे काम करन में बग मुभीता था इस कहन की आवश्यकता नहीं। लेकिन, किमी गरीर

बलम पिताई

घारी का मद्य निराग रहना सम्भव वहाँ ? डिमेंट्री (पचिंग) १९२४ २५
ई० म मेरी जन्ममायी हान वाली थी जिममे बाल बाल बचा। उमके बाद
जब वभी उससे जाने का पता लगना मैं सजग हा जाता। पट म कुछ गड
बटी जान पटी। कारण दून्ने क लिए बहुत माया पच्ची की जन्म नही
थी। मैं सवेर मे आधी रात तक बठकी करत लिगन पढने का काम गर
मे ले लिया था, और रमना तयार भी नही किया कि भाजन पचन क लिए
कुछ गरोर के लिलान डुगन की भी जन्मरत है। १२ जनवर को डिमेंट्री
गुरु हा गर। काम छाटकर दो दिन क लिए नेट जाता पर। बठे रनन का
मनलन था, बार-बार गीब के लिए जाता। दवा न डिमेंट्री का १५ अक्नू
वर तर दवा दिया। अब मभापति क भाषण के लियन की चिन्ता मिर पर
आ गई। १५ जनवर को पध्य की पिचटी गार उमम हाव लगाया।
अपन विषय म मैं गितना ही बपवाह या भरे मेजगान उनना ही उम पर
विशेष ध्यान देन थे। गान मे स्वादिष्ट और मुपुष्ट भाजन मित्र रहा।
उमके लिए मुने टहन की जन्मरत थी, जेनिन म उन घटो का बवाद जाना
समयता था। राय रामचरणजी वाप्रेसी ये यद्यपि छूमट विचारा नके
नही। उनका परिवार बहुत काल म सम्भ्रान्त धनी परिवार था। काफी
बडी जमादारी थी। बडी काठी का सारे प्रयाग मे बहुत सम्मान था। पर
रायनाहन भवित यता के लिए तयार थे। वह जानन थ समय गीध बदहन
बाला है, इसलिए पीछे की आर न देखकर आग की आर देयना चाहिए।
उनका साहित्य प्रेम ही नही, बल्कि उदार विचार भी मुख महा खीब
लाया था।

वृष्णचन्दर की कहानी और उम पर बन 'मराय क बाहर फिल्म
की बहुत तारोफ मुनकर मैं भी १६ जनवर का देखन गया। फिल्म बुरा
नही था जेनिन मुने यह ठीक नही लगा कि मराय के बाहर वाली मिला
रिन की नटकी सारी बुर्चानियाँ को करन क बाद भी 'याय का न पा मकी।
खेर 'याय दिलाता लेखक को अपनी कहानी म अभीष्ट भी नही था। वह
चाहता था, लग उमका प्रतिगोब नें।

डिमट्टी से मुक्त हान के बाद गौरीरिख सावधानी की आर थोडा सा खपाल गया था और १७ तारख का गंगा पार तक गाम के वक्त एक घटा टहलन गया। अत्र के पहला बार मैं गंगा का दारागज के पास बहते देखा। लोग कह रहे थे कुठ माना में गंगा मया नसी तरह दया दिखा रही है। टहलन में मैं बिल्कुल स्तन भी नहीं था। गाम के टहलन के समय जब काइ मिलन आ जाता तो बठ जाना पडता। उस सप्ताह कई मित्र मिलन आए जिनमें श्री बनीपुरी, नाटककार ५० लक्ष्मीनारायण मित्र डा० बदरीनाथप्रसाद और बहुत सालो बाद मिले बाबू महेश्वर प्रसाद नारायण सिंह। मङ्गलवार बाबू परसा (छपरा) में पदा हुए, किंतु उनका जीवन मुजफ्फरपुर का हुआ। उनके छोटे भाई चन्द्रवर प्रसाद नारायण सिंह अग्रजा के वक्त में उनकी नान के बाल थे और जब काग्रेसी नेता आ के। इसमें आश्चर्य करने की जरूरत नहीं जा हर उगते सूप के सामने दडवने करने के लिए तैयार होता है उससे दुनिया ताताचक्षी नहीं करती। या यह बट सत है अग्रजा के वक्त में काग्रेसी नेता उच्च वग से बचित थे और अत्र सम्पत्ति और सम्मान द्वारा वह उमी वग में सम्मिलित हा गए, इसलिए चन्द्रशेखर बाबू अत्र उनमें अपने वग के थे। मैं उनके प्रति जितना हा अच्छा भाव रखन में जममय था उतना ही महेश्वर बाबू के प्रति मेरा सद्भाव था। उनमें पिता बाबू बजनाथ प्रसाद नारायण सिंह को मैं परसा में देना था। परसा पुरान कुलीन भूमिहार ब्राह्मण जमींदारों का गढ है। अपना मामचीं या पजरावचीं के कारण उह राजा में एक हान में देर नहीं लगनी गकिन जनान और भावी सम्बन्ध पुरान धनी कुला में ही हान के कारण एक काफिर राजा बनन में दरी नहीं लगती। बजनाथ बाबू की स्थिति सराब हा गद थी। उनकी बहिन का ब्याह सुरमर के बडे जमींदार परिवार में हुआ था, जिसमें चन्द्रशेखरप्रसाद गान्त ल लिख गए। उस प्रकार उनका सितारा जग गया। उह शिक्षा का भा अच्छा मौका मिला, बुद्धि भी अच्छी मिली। उनके भाइया का भी अच्छी समुरालें मिली। इन तरह सब अच्छी स्थिति में थे। पर महेश्वर बाबू जम उचार उनमें दूमरे नहीं थे। रक्षिकार का

कलम घिसाई

महेश्वर बाबू ने अपने यहाँ चाय पीन या दाउन नो। छट्टी के दिन हान मे मैने स्वीकार किया। परमा व बाबुआ व यहाँ मुगज जगमा मे कम बडा पर्दा नही होना था, पर जाज देय रहा था बाबू जजनाय प्रमाद की पोती यह भी जानने गवन नही रह गई थी नि उनक यज वभी गतना कज पर्दा होना था। बाबू महेश्वर प्रसाद की घमणली भी आधुनिक मज्जि मालूम हाती थी। परिवतन क्या न हाता जज माने दग और दुनिया म उमकी बाज आई हुई है। महेश्वर बाबू पहले ही मे जान चुके थे कि जमी बारी के लिए बहुत दिना तज खैर नही मनाद जा मकती मज्जिए जीविका के दूसरे माधन दूढन चाहिए। प्रयाग म सिविल लानन म किसी अजज का एक बगुन बडा बगला था जिमम कई एकड की फूलजाती जोर बगीचा थे। सुदर फनीचर इतना अधिक था जिसे मजाने व लिए जगह नही थी। बगले म हजारो अज्जेजी पुस्तका का एक अच्छा सग्रह था। भारत छाडते समय अज्जेज अपनी चीजा का मिट्टी के माल बच रह के लेनिन उनके खरीदन के लिए लडाई के समय म खोरबाजारी से कराडा रुपया पदा बरने वाले सेठ ही ममय थे। जमींदार के पास उतना रुपया बहाँ ? इस बगले को महेश्वर बाबू न मरीद लिया। वह किनन ही साग तज इममे आवर रहने भी थे। इस साल (१९५६) पूछन पर मालूम हुआ कि उहान तीन-तीन जगहा म निवास स्थान रखना बुद्धिमानी की बात नही थी। देर प्रसन्नमिह बिहार के उन देगमकता मे हैं जिहने अपने सबस्य को दग की लडाइ के लिए अपण किया और पाय और विचार दानो मे हमेगा सजमे अगली पकिन म रहे। काप्रेसो से वह ममानवादी हुए और फिर कम्युनिस्ट। उनकी हिम्मत की दुग्मन भी दाद देन ह। सरकार से लोहा लेना उतना मुश्किल नही था जितना समाज से, और उहोने अपनी स्वर्गीया पत्नी को एक कमठ राष्ट्रसविका बनाकर रस वाम को पूरा किया। उसी दिन युनिवर्सिटी म विस्थापिया के सामन मुचे बालना पटा।

नाथे हुए काम जब पूरे हो चुके थे इसलिए बनारस तक थोड़ा धूम आन का विचार आया। २७ अक्टूबर को छोटी लाइन में चलकर सारनाथ पहुँचे। उस समय वापिकात्मव ही रहा था। जाड़ा का समय विन्सी बौद्ध यात्रियाँ के लिए बहुत अनुकूल होता है। बौद्धों का सबसे बड़ा मठ वनासी पूर्णिमा उस समय पड़ता है जबकि उत्तरी भारत में अमह्य गर्मी पड़ती है, लू लगन से कभी कभी लोग मर जाते हैं। यहाँ महास्थविर बाघानन्द से मिलकर बड़ी प्रसन्नता हुई। बौद्ध धर्म की जिनामा मेरे मन में जितना बल पैदा हुआ, उस समय सबसे पहले इन्हीं ने ही मुझे दिया था। उनके विषय प्रज्ञानन्द का इसी समय भिक्षु बनाया गया। प्रज्ञानन्द सिंहल में पैदा हुए। बचपन से ही महास्थविर के साथ रहते रहे। हरक तरफ को शिक्षा में जाय बनना चाहिए, और दूसरों को भी उसमें लिये प्रोत्साहित करना चाहिए। शिक्षा और परीक्षा का जट्ट सम्बन्ध नहीं है न परीक्षा शिक्षा की कसौटी है। हो उसमें लिये जादमी का महत्त्व करने के लिये मजबूर होना पड़ता है। इसलिए भी मैं उसमें प्रसन्न करता हूँ। महास्थविर का इस बात में मुझसे मतभेद था। उनका कहना था कि तर्क का उच्च शिक्षा दिलाने पर उन लूटे से बाधा नहीं जा सकती।

सारनाथ में ही किसी समय भिक्षुसंघ की स्थापना हुई थी, लेकिन इधर गतात्रियाँ तक वहाँ कोई भिक्षु नहीं बना। आमधार बनाना आसान है, क्योंकि एक भिक्षु भी बह कर सकता है लेकिन भिक्षु बनने के लिये संघ में आवश्यकता है जिसका कारण मध्यमण्डल में देस का है। जिस स्थान या तर में भिक्षु—दीक्षा—उपसम्पन्ना—दी जाती है उसका सामान्य बचन पहले में से वाक्यान्त भिक्षु संघ द्वारा होना चाहिए। भारत में बौद्ध धर्म का पुनर्गौरव हुआ, फिर ऐसी स्थिति पैदा हो गई जबकि सारनाथ में उपसम्पन्ना हो जा सकें।

उसी दिन लोपहर का नाम जमुन के पास बनारस चल आया। रात को गनिगोल लखन संघ की बैठक हुई। सुमन ने अपनी कविता सुनाई, साथी गणपाल हालदार भी बाल। रात दो को ३ बजे का गाँव परना और २६ के

बलम घिसाई

७ बजे मवेरे हम प्रयाग पहुँच गये। सम्मेलन व मभापति का भाषण करीब-करीब समाप्त हो गया था, लेकिन गापाङ्गन (छपरा) में हान वाली भाजपुरी सम्मेलन का मभापति होना भा म्बीवार कर लिया था। भाजपुरी मेरी मातृभाषा है, और हिंदी मेरी अपना भाषा, इसलिए मरा स्नेह दाना के प्रति एक-मा है।

१ दिसम्बर का रडिया में मुना कि कश्मीर में जा युद्ध छिटा है उममें आरतीय सना का कोटली में पीछे हटना पडा। जम्मू का काटली बस्वा हाटा व भीतर बसा हुआ है। उमें मैं १९२६ में दवा था—१९२६ में उमें समय भी हिंदू केवल बस्व व भीतर थे आमपाम के सारे गाव मुसलमाना व थे। आन की स्थिति में यही गनीमत थी कि काटली के हिंदू सही-सगामन निनाए जा सकें। ४ दिसम्बर का पना लगा कि ग्यु जम्मू में १० मील पर पहुँच गए हैं। घटनाएँ प्रयाग से बहुत दूर घट रही थी, लेकिन चिंता हम मरवा हा रही थी। चित्त बने भी सदा चल-चल ममुद्र है वह एना नहीं रह सकता हा रही थी। चित्त बने भी सदा चल-चल ममुद्र है वह एना जा जाना है। अस बचन का एन ही उपाय है मन का सदा काम में लगाए रखा जाए।

६ दिसम्बर की चिट्ठी से मालूम हुआ कि हिन्दी-अंग्रेजी का जा का श्रीमती दीना गाल्दमान को मैं लंदन से भेजा था, वह उनका मिल गया। मुझे इसकी बड़ी चिन्ता थी। मेरे पाम लंदन तक का जहाँ का टिकट और वहीं भुन सकन वाग चेक था। बिना विदशी मित्रों के मैं लेनिनप्राद से खाना हा रहा था। उस समय दीना ने जपन पास पडे कुछ डालर मुने दिय थे जिन्होंने स्टारहाम और हेसिकी में मरी बड़ी सहायता की थी। उमी के बढ़ते मैं पुस्तक भेजी थी। मिर से एक भार उतर गया मालूम हुआ। दीना मेरी द्वितीय स्न याना म हिंदी पड रही थी, और अब लेनिन-प्राद युनिवर्सिटी में अध्यापिका थी।

उस समय लागा की आर्थिक स्थिति बहुत दयनीय हा गद थी। चीजा का दाम कई गुना बढ़ गया था, और वह दुःख भा थी। कटोरे से मूल्य पर

अकुंग था, उधर गाधीजी और दूसरे हल्ला मचा रहे थे बट्टोल को हटाटना चाहिए। कटाल से २१ रुपय मन चीनी मिल रही थी। हटान के साथ ही उमका नाम ३५ रुपया मन हो गया। १४ रुपया मन सीगा सठा के पाकट म गया। चारबाजारी बडे जोर स चल रही थी जिसके लिए अफसरा का रिश्कत दना आवश्यक था। पुरानी परम्परा के कारण रिश्कत लन दन म बढा सकाथ था लेकिन, अब उसका बाध तेजा से टूटन लगा था।

८ अक्टूबर का भोजपुरी भाषाणा का समाप्त कर अगले दिन मैंने रोमनी भाषा पर भी एक लेख लिखा। रोमनी लागा का अग्रेजी म जिप्सी कहन है। काबुल स लेकर सारे यूरोप और पीछे अमेरिका मे भी काफी सख्या म यह घुमनू लाग फल हुए हैं। यह भारत से ही यह एव समय गय थे, किन यह बात वह जय भूल गण हैं। भाषा सम्बन्ध अनुसंधाना से हा इस तथ्य का पता लगा। इंग्लण्ड के रोमनी घुमनू जीवन जाड चुक हैं, रूस म भी अब वह स्थायी निवास ग्रहण कर रहे हैं। उनकी भाषा का हमारी भाषा से कितना नजदान का सम्बन्ध है इसी का दिखलान क लिए मैंने यह लेख लिखा।

१० का परिमल की गोष्ठी म गया। दूसरे कविया के अतिरिक्त पनजी और वच्चनजी न भी अपनी कविताएँ सुनाइ। इन गाण्डिया के रूप म हमारा मास्वृतिन जीवन एन नई दिशा की आर पग वना रहा है। इसना बडी आवश्यकता है। उमी तिन ५००० से कुछ हो अधिक् जामनी पर मैंने ट्वम ट्वम का हिमाव भजा। अभी तक इसकी जरूरत नहा पडी थी। आमदनी कवल पुस्तका की रायल्टी की थी और वह एकम टेक्स की मामा क भातर उना पहुँचतो थी। हिमाव देन वक्त, यह भी दिखाई देन लगा कि आमदनी का हिमाव रगना हागा और उसका ठीक रगन क लिए पम का किसी वक म डालना होगा। मालूम हुआ, कि रूस मे रहत जा जामनी हुई है, उस पर भी ट्वम देना हागा। नापरिन हान का यह आवश्यक भार है।

१८ दिसम्बर तक प्रयाग म रहन कलम चलाना रना। १२ का पट म

विर गडबडी गुरू हुई। मान आठ दिन बाद जब स्थान छाटना था इसलिए इस गडबडी को दूर करना आवश्यक था। ११ दिमम्बर का पट म मोठा-मोठा दद हान लगा, बसा हो जैसा १६४३ ४४ म वम्पई म हुआ था। वहाँ मोठा को पानी म डालकर पीन म दद कम हो जाता था उमी दना का मैने यहाँ भी इस्तमा करना गुरू किया। दद का न उम समय में ठीक मे समय मवा था, और न अब। मैं देने मामूली पट दद जानता था जबकि वस्तुतः यह टायपटीज की पूव सूचना थी। पत्रिया ग्रवि पट के भीतर सशिय रहत भोजन की गवरा का उपयुक्त बनान म अपना रम (इन्मुलिन) दान करती है। जब ग्रवि काम करना छोड़ देती है, ता इन्मुलिन मिलना बंद हा जाता है और भाजन गवरा रूप म परिणत हाकर बाहर जान क लिए मजबूर हाता है। पत्रिया ग्रवि क्या काम छोडती है, क्या निष्प्राण हा जाती है? गारीरिक् श्रम न करत और अधिन पुष्टिवारक भाजन करत से ही। यह तत्र उम समय मुझे समय म नही आया। समय म आन पर भी इमम सदह था कि मैं उम रात्र सजता। गायद स्थिति जब हाथ म बाहर हो गई थी। मैं कितन भाग नाले तो मे १६ दिमम्बर को लिया था— 'पट म जब-तब मोठा माठा दद रहता है, ता साडा मे दूर हाता है।'

"रामनी भापा" के बाद म्मी भापा के बारे म एक विस्तृत लेख लिखने का निश्चय किया जिसकी पहले भूमिना मात्र लिखी। १७ दिमम्बर को प्रगतिशील लेखक मध म अभिनन्दन लेने के लिए गया। पत, वचन, श्रीनाथ टाकुर, निमल आदि सभी प्रयाग के साहित्यकारा के दशन हुए। गोपालगज—१६ दिमम्बर का सत्र साडे ७ बजे छाटी लाइन की गाडी पकडी। दोपहर क। बनारस पहुँचे। गान्धी म बडी भीड हा गई। लाग स्वराज का मनलत्र समय रहे थ रेल मे वगभेद न रहने देना, लेकिन टिकट का पमा वग क अनुसार लिया जाता था। इस लिए मागारण लोगा को दाप ननी दिया जा सकता था। ऐसी हिम्मत करने वाले निश्चिन और अध निश्चिन सभी थे। साडे ७ बजे गाम को हम छपरा बचहरी स्टेशन पर पहुँची। कुछ देर बाद गोपालगज जानवाली गाडी मिली जा डेड बजे रात

का हरखुवा स्टेशन पर पहुँची। छपरा में भी स्टेशन पर कार्ड नहीं मिला लेकिन उससे कार्ड हज नहीं था क्योंकि हम जाग की गाड़ी पकड़नी थी। डेढ़ बज रात का हरखुवा में उतरकर अब क्या करें? मुमाफिरगान में बिस्तरा बिछाकर साय रहने के सिवा और काइ चारा नहीं था। सबसे दिक्कत यह हुई कि प्यास बुझान के लिए पानी नहीं मिला। २० तारीख का सबरा जाया। सबर भेजकर नगीना बाबू और महेंद्र शास्त्री का दुल वाया। वस्तुन दाप यहा क लोग का नहीं था। वह समझत थे, कि रात को हम छपरा में रह जाएंगे, और सबर बहा में चलेंगे। रात का प्यास ही नहीं रह बल्कि पेट में हाते मीठे मीठे दद का तबान क लिए माडा भी नहीं पी सक।

गापालगज मर लिए किसी समय घर-सा था। असहयोग क जमाने में न जान कितनी बार यहा व्याख्यान देता सारे सब डिवीजन में घूमता था। अब उस जमान का बीत चौथान गताली हा गइ। इसी बीच उस समय की पीढी बूढी हो गई या चल बसी। उसकी जगह नई पीढी जा गई। यहाँ अपन पुराने बहुत से सहकर्मिया से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। एकमा क मरे घनिष्ठ सहयोगी बाबू लक्ष्मीनारायणसिंह बाबू प्रभुनाथसिंह कटिया क बाबू महादेव राय छपरा के बाबू जलेश्वरप्रसाद, खुद गापालगज के बाबू झूलनसिंह और बाबा पांडुदास—जिन्हें हम महेंद्रसिंह कहा करत थे—मिले। छपरा के सबसे प्रथम एसेम्बली क सम्बर बननेवाले हरिजन नेता बसावन राम भी थे और छपरा के प्रथम हरिजन ग्रेजुएट और एम० ए० चंद्रिका प्रसाद राम भी। ३ बज से सम्मन्त्रन गुरू हुआ। महापति का और कुछ और भाषण हुए। इसके बाद भाजपुरी कविता पाठ गुरू हुआ। बाबू मुफ राम सिंह ने बिसराम क बिरह सुनाए। लग अपन औसुजा को राक नहीं सकत थे। सम्मलन में बंग उत्साह था अपनी मातृभाषा क प्रति प्रेम कृत्रिम नहीं हाना। अभा भाजपुरी का अपना स्थान पान में काफी देर है यह जरूर पता लग रहा था। जगल दिन भी सम्मलन का अधिकान हुआ। उन्नी दिन परगा क मर गुरूभाई वीर राघवदासजी मिलन जाए। उनके

कलम घिमाई

साय जानरी नगर व वापू मूरतमिह भी ये । पता लगा त्रि महन लक्ष्मण
 दामजी ने जयाघ्या म भा एक स्यान छान दिया है, जोर अब वह
 जघिवनर वही गहन हैं । मठ के कर्जे का काम करने की चिन्ता उनकी वभी
 नहीं थी । मूरतमिह न जानरी नगर चरन के लिए वहा और भिवान म
 भी मिथा का भी आन व लिए आग्रह था । वसनपुर म भी आगे भाजपुरा
 जिला मम्मलन हानवाला या जिनम जान के लिए महेंद्र गास्त्री का वलून
 जार था । पर अब समय की वमी की गिजायत हमारा व लिए थी । इम
 यात्रा म नागाजन साथ र ।

२१ नारीस का चद्रिकारामजी के यहाँ भाज था । चद्रिकाराम जब
 गिथा और मस्कृति म दूसर वग व हा गए थे—एम० ए० बी० ए०
 और एमम्बली क मम्बर थ । फिर उनक भोज मे वडी जानि व लाग भी
 दिा खाकर गामिल हा तो आचय क्या ? चद्रिका वापू न गायद मरी
 रचि का ध्यान करव बहुत अच्छी मछली तयार करवाई । भाजन व वापू
 हम स्टगन पहुँचे वहा से रात का छपरा पहुँचकर मवेर व लिए स्टगन व
 प्रनीशालय म टहर गए । यही भर भित्र हुमन मजहर मिल—हुमन मजहर
 हमार महान नेता मजहल्ल हक के एकमात्र जीविन पुत्र । अमवारी के
 किमान मत्याग्रह म भाग लेकर वह मेरे साथ जेल गए । अपन पिता की
 तरह ही वह बडे छत्र विचारा के थे । मजहल्ल हक का ता मनुष्य नहीं,
 मैं दबता मानता था, उनकी मधुर स्मृति मदा बनी रहती है । मैं वडी
 उत्सुकता के साथ हिंदू मुस्लिम दगा क बारे म पूछा यद्यपि उनका या
 उनके परिचितों का कोई हानि नहीं उठानी पडी, लेकिन वह अपनी म्थिति
 से निराग थे । तो भी यह सुनकर मुझे प्रमनता हुई कि उम निराशा म
 पडकर वह अपना घर छाडन के लिए तयार नहीं हुए । वह कालरात्रि था,
 लेकिन उसको भी एक दिन ममाप्त हाना ही था ।
 २२ को सबेरे ६ वजे प्रयाग की ट्रेन मिली । वने रल्यात्रा हमार दगा
 म बहुत कम मुखद होती है और इम समय तो वह पूरी जाफन थी । घोर
 धारे ट्रेन पश्चिम की आर बनी । रामन भर घूल पाँवनी पडी, ७ वजे रात

वा हरखुवा स्टेशन पर पहुँची। छपरा में भी स्टेशन पर कोई नहीं मिला, लेकिन उससे कार्गू हज नहीं था। क्योंकि हम जानकी गान्धी पत्रनाथी। डेन पत्र रात का हरखुवा में उतरकर अब क्या करें? मुगाफिरवान में बिस्तरा बिछाकर साथ रहने के सिवा और कोई धारा नहीं था। सबसे दिक्कत यह हुई कि, प्यास बुझाने के लिए पानी नहीं मिला। २० तारीख का सबेरा जाया। खबर भेजकर नगीना बाबू और मटेन्द्र गार्गी का दुलवाया। वस्तुतः दोष यहाँ के लोगों का नहीं था। वह समझते थे, कि रात को हम छपरा में रह जायेंगे, और सबर वहाँ से चलेंगे। रात का प्यास ही नहीं रह बल्कि पेट में हाने मीठे मीठे दूध को दवाने के लिए माँगा भी नहीं पी सका।

गापालगज मरे लिए किसी समय घर सा था। अमहयोग के जमाने में न जान कितनी बार यहाँ व्याख्यान देता सारे सब डिवीजन में घूमता था। अब उस जमाने का बीत बीयाँ गताल्नी हो गई। इसी बीच उस समय की पीढ़ी बूढ़ी हो गई या चल बसी। उसी जगह नई पीढ़ी जा गई। यहाँ अपने पुराने बहुत से सहकर्मियों से मिलने का मौका प्राप्त हुआ। एकमात्र के मरे घनिष्ठ सहयोगी बाबू लक्ष्मीनारायणसिंह बाबू प्रभुनाथसिंह बटिया, के बाबू महादेव राय छपरा के बाबू जलेश्वरप्रसाद खुद गापालगज के बाबू मूलनसिंह और बाबा बाबुदाम—जिन्हें हम महेंद्रसिंह कहा करते थे—मिले। छपरा के सबसे प्रथम एसम्बली के मन्वर बननेवाले हरिजन नेता बसावन राम भी थे और छपरा के प्रथम हरिजन ग्रजुएट और एम० ए० चन्द्रिका प्रसाद राम भी। ३ बजे से सम्मेलन शुरू हुआ। समापति का और कुछ और भाषण हुए। इसके बाद भाजपुरी कविता पाठ शुरू हुआ। बाबू मुखराम सिंह ने विमराम के विरह सुनाए। लगभग अपने जामुआ का राक नहीं सकत थे। सम्मेलन में बड़ा उत्साह था अपनी मातृभाषा के प्रति प्रेम वृत्ति नहीं हाना। अभी भाजपुरी का अपना स्थान पान में काफी दूर है यह जरूर पता लग रहा था। अगले दिन भी सम्मेलन का अधिवेशन हुआ। उसी दिन परना के मरे गुरुभारद्वी वीर राघवदासजी मिलने आए। उनके

कलम घिसाई

साथ जानकी नगर के बाबू मूरतसिंह भी थे। पता लगा कि महन्त लक्ष्मण दामजी न जयाध्या म भी एक स्थान छान दिया है और अत्र वह अविकतर वही रहने है। मठ के बजों का काम करने की चिन्ता उनकी कभी नहीं थी। मूरतसिंह न जानकी नगर चलने के लिए वहाँ और मिवान स भी मित्रा का भी आन के लिए आग्रह था। बसनपुर म भी आगे भाजपुरी जिला सम्मेलन होनेवाला था जिसम जान के लिए महेंद्र गास्त्री का बहुत जार था। पर जब समय की कमी की गिरायन हमेंगा क लिए थी। इस यात्रा म नागाजन साथ रह।

२१ तारीख को चन्द्रिकारामजी क यहाँ भाज था। चन्द्रिकाराम अत्र आया और सस्मृति म दूसर वग के हा गए थे—एम० ए० बी० एल० तीर एनेम्बली के मेम्बर थे। फिर उनका भाज म बढी जाति के लोग भी देल खोलकर गामिल हा, तो आश्चर्य क्या ? चन्द्रिका बाबू न गायद भेरी रुचि का ध्यान करते बहुत अच्छी मठली तैयार करवाई। भोजन के बाद हम स्टेशन पहुँचे वहाँ स रात का छपरा पहुँचकर मवेरे के लिए स्टेशन क प्रतीक्षालय म ठहर गए। यही मेरे मित्र हुसेन मजहर मिले—हुसेन मजहर हमारे महान नेता मजहरल हक के एकमात्र जीविन पुत्र। अमबारी के किसान-मत्याग्रह म भाग लेकर वह मेरे साथ जेल गए। अपन पिता की तरह ही वह बडे उदार विचारा के थे। मजहरल हक का तो मनुष्य नहीं, मैं देवता मानता था उनकी मधुर स्मृति सदा बनी रहती है। मैंने बडी उत्सुकता के साथ हिंदू मुस्लिम दगो क बारे मे पूछा यद्यपि उनका या उनके परिचितो को कोई हानि नहीं उठानी पडी, लेकिन वह अपनी स्थिति से निराग थे। तो भी यह सुनकर मुझे प्रसन्नता हुई कि उस निरागाम पटकर वह अपना घर छाडने के लिए तैयार नहीं हुए। वह बालरात्रि थी लेकिन उसको भी एक दिन समाप्त होना ही था।

२२ का सवेरे ६ बजे प्रयाग की ट्रेन मिली। बने रेलयात्रा हमार केग हुत कम सुखद होती है, और इस समय तो वह पूरी आफन थी। धीर : ट्रेन पश्चिम की जार बनी। रास्त भर धूल फाँकनी पडी ७ बजे रात

को हम दारागंज पहुँचे। सिर्फ एक दिन और ठहरकर हम बम्बई के लिए रवाना होना था। अगले दिन बम्बई के लिए लिखा गया भाषण भी छपकर चला आया। उसी दिन रेल का टिकट भी ले लिया। लम्बी यात्रा थी सेकंड क्लास में फिर उसी विपदा में न पडना हो, इसलिए फर्स्ट क्लास का टिकट लेना पडा जिसके लिए १०० रु० ६ आ० दना पडा। २६ तारीख की गाम को हम बम्बई के लिए रवाना हुए।

बम्बई में सम्मेलन

बम्बई—अपने कम्पाटमेंट में अकेला था। अभी वह स्थिति नहीं थी जबकि कम्पाटमेंट में अकेले सफर करना खतरे की बात थी। इसी ट्रेन में दूसरे डब्बा में प्रयाग के बहुत से माहित्यिक चल रहे थे। रात को चुपचाप सा जाना था। सबरे ट्रेन जबलपुर पहुँची। दोपहर का भोजन इटारसी में हुआ। नागाजुन साथ थे ही, दूसरे ही मित्रों से बातचीत करते हम आगे बढ़ रहे थे। इसी समय मैंने अपने पिछले माने तीन महीने का लेखा जोखा किया ता मालूम हुआ, प्रतिमान हजार रुपये खर्च हुआ है। इतना खर्च करना मेरी शक्ति से बाहर था। रायल्टी से अभी बारह हजार रुपये वार्षिक मिलने के लिए आधी गतात्री तक रहने की आवश्यकता थी। जब मेरे जसे स्थातिप्राप्त लेखकों की यह वार्षिक अवस्था थी तो दूसरों के बारे में क्या कहना ? लेखकों की इन स्थिति का दूर करने में बहुत देर थी।

२६ के ६ बजे शाम को हमारी ट्रेन बम्बई के विकटोरिया स्टेज पर पहुँची। मैं सम्मेलन-समापति था, इसलिए स्वागत के लिए काफी लोग आए थे। गायद अगले दिन जलूस भी निकाला जाता, लेकिन बम्बई में साम्प्रदायिक झगडा चल रहा था, छुरवाजियाँ हो रही थी। जलूस से बच जाने के लिए मुझे बड़ा सताप हुआ। ठहरने के लिए मलावार हिल पर श्री घनश्यामदास पोद्दार का निवास निश्चित किया गया था। यहाँ मेरे

को हम दारागज पहुँचे। सिर्फ एक दिन और ठहरकर हम बम्बई के लिए रवाना हाना था। अगले दिन बम्बई के लिए लिखा गया भापण भी छपकर चला जाया। उसी दिन रेल का टिकट भी ले लिया। लम्बी यात्रा थी, सेकंड क्लास में फिर उसी विपदा में न पडना ही, इसलिए फस्ट क्लास का टिकट लेना पडा, जिसके लिए १०० रु० ६ आ० दना पडा। २४ तारीख की शाम को हम बम्बई के लिए रवाना हुए।

बम्बई में सम्मेलन

बम्बई—अपने कम्पाटमट में जकेला था। अभी वह स्थिति नहीं थी जबकि कम्पाटमट में जकेले सफर करना खतरे की बात थी। इसी ट्रेन में दूसरे डब्बा में प्रयाग के बहुत से साहित्यिक चल रहे थे। रात का चुपचाप सा जाना था। सबरे टेन जबलपुर पहुँची। दोपहर का भाजन इटारसी में हुआ। नागाजुन साय थे ही, दूसरे ही मित्रों से बातचीत करते हम आगे बढ़ रहे थे। इसी समय मैं अपने पिछले साठे तीन महीने का लेखा-जोखा किया तो मालूम हुआ, प्रतिमास हजार रुपया खच हुआ है। इतना खच करना मेरी शक्ति से बाहर था। रायल्टी से अभी वारह हजार रुपये वार्षिक मिलन के लिए आधी गता-दो तक रहन की आवश्यकता थी। जब मरे जैसे रपातिप्राप्त लेखक की यह वार्षिक अवस्था थी तो दूसरों के बारे में क्या कहना ? लेखक की इस स्थिति को दूर करने में बहुत देर थी।

२६ के ६ बजे शाम का हमारी ट्रेन बम्बई के विकटोरिया स्टेशन पर पहुँची। मैं सम्मेलन-मभापति था, इसलिए स्वागत के लिए काफी लोग आए थे। गायद अगले दिन जलूम भी निाला जाता, लेकिन बम्बई में माप्रदायिक झगडा चल रहा था, छुरेवाजिया हो रही थी। जलूस से वच जान के लिए मुझे बडा सतोप हुआ। ठहरने के लिए मलावार हिल पर श्री घनश्यामदास पोद्दार का निवास निश्चित किया गया था। यहाँ मेरे

अतिरिक्त जीर भी बहुत से साहित्यिक अतिथि ठहरे हुए थे। एक रात्रि सवरा सामान बँटना उठना और साना था। पादरजों का भजन बंद जाने पर मरे लिए सदा खुला रहा, जीर उम में उन घरास मानता हूँ रहते आदमी का बड़ी जात्मीयता मालूम हानी है। धनदयामासजी में सादे मधुर स्वभाव के आदमी है। पर अधिक भोला होने से बहुत करोडो के व्यवसाय का कसे चला सकत। उमी दिन आनना भी गए। स्वतंत्रता के बाद हिन्दी साहित्य सम्मेलन का यह पहला अतिथि था इसलिए प्रतिनिधिया का सख्या पहल से बहुत अधिक थी। सभ का पद मने स्वीकार कर लिया था, ता उस हल्क दिने से उठाना चाहता था। मेरा ध्यान लिपि सुधार जीर पारिभाषिक शब्दों के नि- की बार विशेष तौर से था। लिपि सुधार की योजना में पहले भागक बार रख चुका था जिस इस भाषण द्वारा भी पण किया। पारिभाषिक शब्दों को बड़ा मानत हुए भी मैं उसे असमय नहीं समझता था।

२६ दिसम्बर का मैं पार्टी के केन्द्रीय जाफिस में गया। वहाँ के मित्रों ने मरे भाषण का काफी पाली था। हिन्दी उद्दू के बारे में जो मत मने नम प्रकट किया था और मुसलमानों की गताब्दिया की सांस्कृतिक बाय काट छाडकर सांस्कृतिक एतता का स्थापित करने में जागे बढन के लिए कहा था, उस पर मरे साथिया का विरोध था। वह चाहते थे मैं इस अंग को अपने भाषण में से निनाल दूँ। यदि उनसे पण यह सुचारु मर सामन होना, ता मैं उम हटा भी देता। मैं व्यक्तिव विचार से साधन विचार का बड़ा जीर अनुयासित को एक बन्ग आर जावन्मय गुण समझता हूँ। कम्युनिस्ट पार्टी के साथ मरा सम्बन्ध यद्यपि आठ ही बय पहुँ हुआ था लेकिन मैं उन उस समय से ही अपना समझता रहा। तबसे मर हृदय में राजनीतिक चेतना का उत्पन्न हान लगा। १९१७ के नवम्बर में मैं म बोलाचिन क्रांति हुई। उमर महान-दा महीन बाण ही उमका सपर भारत के अवसाग में मैं पती। तभी मैं मरे लिए बन्ग पार्टी समय अधिक धनका का भाजन बन गई तभी से साम्यवाद

मेरा अपना वाद हा गया । सयोग नही मिला, इसलिए पार्टी के भीतर आन म मुझे घीस बप लग । भीतर न हाने हुए भी मैं अपन को हमेगा पार्टी का समयता रहा । याडे से वयक्तिव विचारों के लिए मैं पार्टी का छाटना कस पमद करता ? उन समय पूरा नही मालूम था, ता भी मेरे हृदय मे बहुत उथल पुथल मची हुई थी । भाषण मे उन जन का निवाल्ना अब समव नही या जीर प्रतिवाद करना और भी बुरा था ।

बम्बई मे माम्प्रदायिक बाताबरण बहुत उग्र था । कितने ही मुसल्मान जीवन का जरक्षित ममझ गहर छाडकर चले गए थे । बम्बई के मुसल्मान सठ बहुत कम पाकिस्तान गए थे, हा, गरीब जरूर अधिक सख्या म गए थे । पर लासा लाग कसे जा सकत थे ।

२७ तारीख का स्थायी समिति (विषय निर्वाचनी) की बैठक हुई । सम्मेलन के लिए कुछ प्रस्ताव स्वीकार हुए । उसी दिन पहाल मे मस्कृत सम्मेलन भी हुआ जिसमे पण्डिता क भाषण मे यही मालूम हो रहा था, कि उनके लिए पुरानी दुनिया बसो ही बनी हुई है । साडे ११ बजे स मुद्रा सम्मेलन हुआ जिसमे महाराजा भरतपुर अपन यहाँ क मिले मिक्का का विषय तार मे दिखलान के लिए आए थे । मुद्रा-भम्भान मे दूमरी जगह आए थे । डा० जल्लकर वियना मे १९४६ के फरवरी मे मित्रे इन मिक्का पर बाटे । गुप्तकालीन १८०० सिक्के मिले थे, जिनमे स कुछ तो अद्वितीय थे । लेमिन, उन मिक्का का साधारण मिक्का समखा गया अर्थात् उसका मूल्य उतना ही, जितना साना उनमे मौजूद था । मिक्का के साथ खूब मनमानी हुई । पहले ता गाव वाला न ही उसमे स कुछ का खतम किया फिर रिया सत के अफमरा न हाय फेरा जा सिक्के प्रचकर मन्ताराज के पास आए उनमे स कितना का महाराज न जपन कृपापात्रा का बर्ग लिया जिहान उनक बटन बनवाए । बाहरी दुनिया के विद्वाना का खबर पहुँचने मे देर लगी । तब उनका मन्त्र मालूम हुआ जीर उनकी रक्षा के लिए कागिग की गई । भरतपुर के महाराजा यदि सौ बरम पहले के महाराजा हान, तो यह काई अमाधारण बात नही थी । लेमिन हमारे आजकल के राजा आधुनिक ढंग से

शिक्षा प्राप्त हैं, हर बात में अज्ञेयता का पदचिह्न पर चलते हैं। उन्हें डेढ़ हजार रुपये पहले का इन सिकका का महत्त्व मालूम नहीं यह यही बतलाता है कि उनका ऊपर सस्कृति का पुचारा बहुत ऊपर-ऊपर लगा है।

उस दिन रात्रि का भोजन श्री क० मा० मुंशी के यहाँ हुआ। मुंशीजी सम्मेलन का सभापति रह चुके थे और गुजराती के यास्वी साहित्यकार थे।

२८ का ३ वजे सम्मेलन का अधिवेशन शुरू हुआ। आठ दस हजार लोग पडाल में रहें होंगे। युक्त प्रात का महामंत्री प० गाविन्दवल्लभ पन्त ने ४५ मिनट भाषण देकर अधिवेशन का उद्घाटन किया, जिसमें उन्होंने हिंदी का जारदार समर्थन किया। स्वागताध्यक्ष श्री खेतान ने अपना भाषण पढ़ा। इसके बाद वहाँ उपस्थित सम्मेलन के भूतपूर्व सभापतिया— श्री विद्यागो हरि श्री माखनलाल चतुर्वेदी और श्री कहेयालाल मुंशी—ने मरा नाम सभापति लिए औपचारिक तौर पर प्रस्तावित किया। मरा भाषण लम्बा था लेकिन उसके कुछ अंशों का ही पत्कर मैंने ३० मिनट में समाप्त कर लिया। भाषण करने से पहले साथी अधिकारी ने पार्टी की ओर से फिर जोर देकर लिखा था कि मैं उलू-मम्बधी विचारा का बारे में कह दूँ यह पार्टी का विचार नहीं है। मैं उसी दिन साथी अधिकारी का लिखा कि पार्टी की इस नीति का साथ न होने का कारण मैं अपने को पार्टी में रहने लायक नहीं समझता पर मैं सदा पार्टी के साथ रखूँगा। एक तरह से इतना बड़ निणय का मैं उतावलेपन से किया। लेकिन, अब उस निणय को बदलने में क्यों की जरूरत थी। उस समय मैं समझना था, पार्टी वाल राष्ट्रीयता का बारे में हल्का त्रि स सोचत हैं और मनमाद की सकीणता को प्रथम न्त दूर भविष्य में हानि वाल प्रभावा का नहीं समय पात। पर ऐसा समझने में यदि त्रुटियाँ थी तो वह एक नहीं बहुत में मस्तिष्क के साधन का परिणाम थी। यदि गलती हो रही थी, तो पार्टी अपने तौरसे उस आगे सुधार लगी।

उसी दिन सबरे विषय निर्वाचिनी समिति का सामने मैं परिभाषा का निर्माण का काम में प्रस्ताव रखा। श्री पुरपात्तमदास टडनजी ने कहा यह काम तभी हो सकता है जब इसकी जिम्मेवारी में अपने ऊपर ले लूँ।

मैंने उम स्वीकार कर लिया, और आगे मैंने उमके लिए तत्परता से काम नही किया। दूसरी बाधाएँ न उपस्थित हो गई हानी तो इन पक्षियों के लिखन से पहले ही चार-पाँच लाख परिभाषाएँ बनकर हिन्दी और भारत की दूसरी भाषाएँ इस सम्प्रदाय में स्वावलम्बी हो जाती।

२६ दिसम्बर का राई बजे से खुला अधिवेशन हुआ जिसमें कई प्रस्ताव पाम हुए कई भाषण हुए। उमी दिन लान-गीत सम्मेलन हुआ लेकिन नकल लान-गीत वही अपना प्रभाव नहीं डाल सकता। अमली लोक-गीत का योग्य बलाकार द्वारा पत्र हाना अभी दूर की बात थी।

३० तारीख का श्री कमलापति त्रिपाठी की अध्यक्षता में समाजशास्त्र परिषद् हुई। त्रिपाठीजी गुरु माहित्यिक हिन्दी के सबभ्रष्ट बकनामा में से हैं और समाजशास्त्र में उनका अपना विषय है। उमी दिन अपराह्न में पदाधिकारियों के चुनाव हुए। डा० उष्यनारायण तिवारा सिर्फ दो वाटा के बहुमत से प्रधानमन्त्री चुने गए यह शुभ लक्षण नहीं था। दूसरे पदाधिकारियों के चुनावों में भी तनातनी दिखाई पड़ी। उस समय प्रयाग और प्रयागी का भेद माना जाता था। अप्रयागियों का यह गिनायत थी कि विकास पदाधिकारी प्रयाग के हात में हैं। लेकिन तजवें न बनला दिया था, बाहर रहने वाले पदाधिकारी पर्याप्त समय तक अपना कर्तव्य का पालन नहीं कर सकते। इससे अतिरिक्त युनिवर्सिटी और गर-युनिवर्सिटी का भेद ना लगा हो रहा था। युनिवर्सिटी में न रहने वाले माहित्यिक इस पक्ष में नहीं करते थे कि सभी बातों में युनिवर्सिटी प्राक्मर आगे रहे। बीज रूप से हाँ महा कुछ कुछ दारागजी और अदारागजी का भेद भाव भी था पर अभी प्रकाश और अप्रकाश का भेद प्रकट नहीं हुआ था, जिससे ही जन में सम्मेलन की नया को भँवर में फँसा दिया।

३१ दिसम्बर का सन् ४७ समाप्त हो रहा था। उस दिन सवेर के वक्त दान-परिषद् हुई, और ४ बजे दापहर में खुला अधिवेशन हुआ ८ बजे के बाद सम्मेलन समाप्त हो गया।

मठ धनश्यामनाम पोद्दार का सुन्दर आनिध्य हम मिला था, और साथ

हा उनके परिवार को नजदीक से देखने का मौका भी। पीढ़ी के बाद कम गुणात्मक परिवार होता है, इसका उदाहरण यह परिवार था। घनश्याम दासजी मारवाडी से अधिक गुजराती संघ से मालूम हात थे। विशेष समय ही पर वह मारवाडी पगड़ी पहनने की जरूरत समझत थे। सठानी हिंदी पढ़ी हुई थी जब घाघरा छोड़ माडीघारिणी हा गई थी। लटके लडकिया की शिक्षा पर काफी ध्यान दिया जा रहा था जिससे जगली पीढ़ी का बदम और आगे जाएगी दमम भदह नहीं। यद्यपि अब भी वह निरामिपाहारी है जिसका आगा लडका पर नहीं की जा सकती पर छूआछूत का उनका यहां कोई पता नहीं था। माहितियन अनियिया की सेवा में इतनी अधिक तरपरता बतगती थी कि सांस्कृतिक कनयक प्रति वह कितना बढ़े हुए हैं।

प्रयाग से हा पट में मोठा माठा एक हान लगा था वह यहां भा चल रहा था। उम्बू में एक हात समय में एण्डूज साल्ट भवन किया था जिससे कुछ दर के लिए एक देव जाता था। जब भी मैं एण्डूज साल्ट ल रहा था, और यह जानकर मानुष्ट था कि यह एक विशेष प्रकार का पट दद है। एक दिन तिमि ने पेगाब के स्थान में चीटिया का टेपकर पूछा—मिसे पेगाब में चानी जा रहा है। मुझका इनका कुछ मन्ह ही नहीं था। पर कुछ समय बाद समय पाया कि मैं ही उन मज का मरीज हूँ।

१९४७ के जन के साथ डायरेटोज भरो जीवनसगिनी हा गई। वष का लखा जागा करन पर मालूम हुआ 'सोवियन भूमि' (दूसरा संस्करण) 'सायियनमध्य एशिया' और 'दायुता' इन तीन पुस्तकों का लिख चुका हू। इनके साथ कुछ लस और लिमिन भाषण भा तयार हुए। जाकिर यह तीन महान की हा कमाई बुरा नहीं कहा जा सकती। अगले साल पुस्तकें लिपिन की भी याजना थी पर उसका भाय ही जब परिभाषा का काम में भी हाथ लगाना था 'सालिग तिनती पुस्तकें लिपिन मकूगा दूसरा कस निरचय कर सकता था? पर हमने भारत लीपिन का एक बड़ा कारण पुस्तकें लिपिन की आकाशा ही थी उनमें भी मध्य एशिया का इतिहास राग था जिसमें हाथ लगाने की अभी बात भी मैंने नया माची थी।

साहित्य-यात्रा

१९४८ का प्रथम दिन बम्बई में ही आया। सम्मेलन का काम समाप्त हो गया था। नव घण्टे का दिन बड़े अमंगल रूप में आरम्भ हुआ। ३१ का छान मघ ने अपना सम्मेलन करना चाहा। सरकार ने निषेधाज्ञा लगा दी। न मानने पर आसू लानवाली गम जोर गालिया चगाई गई। अहिंसा के सबसे ज्यादा ताल पीटनेवाली सरकार के लिए गाली वर्षा सबसे मामूली बात बन गई। हिन्दू मुस्लिम वैमनस्य को भड़कानेवाले लागा की कमी नहीं थी। छात्र सघ हमका विराधी था। चाहिए ता यह था कि उन्हें अपने प्रचार के लिए प्रोत्साहित किया जाता। कांग्रेस यदि साम्प्रदायिक वैमनस्य को रोकना चाहती थी, तो अपने सहायका की शक्ति को निबल नहीं करना चाहिए था। गांधी फिर अपने हाथ लटके लडकियों पर बरसाई जा रही थी, वह छात्र छात्राण घायल हुए। यह उस समय जब कि जम्मू में युद्ध छिटा हुआ था हैदराबाद कलेजे का काटा बना हुआ था, देश में रियासतों के प्रतिश्रियावादी राजा और उनके पिटठू अपनी सवतंत्र स्वतंत्रता का छोटने के लिए नैयार नहीं थे, देश जायिक तौर से अत्यन्त निबल था और उसकी सामरिक शक्ति की परीक्षा का यह समय था। किमान और मजूर अर्थात् जनता का सत्रस अधिक भाग्यम समय प्रिय होना चाहिए था। उनका नेता आर्यभिसी कांग्रेसी नेता से कम देशभक्ति नहीं थी। अंग्रेजों के हथकण्डे

जेल जीर गोली द्वारा स्वतंत्र भारत का सबल नहीं बनाया जा सका। सरकार एक जार सबको एक होने के लिए कहती और दूसरी तरफ आचरण इस तरह करती थी।

अब तब पश्चिमी पाकिस्तान विशेषकर पंजाब जीर पश्चिमोत्तर सीमात हिन्दुआ स पाली हा चुका था। घरबार छोड़े लाखा लोग सूखे पत्तों की तरह जहा-तहा डोल रहे थे। लटाइ क वक्त म अग्रेजो न बहुत से सनिक कम्प बनवा दिय थे जिहान इस समय बडा काम दिया। बम्बई म एम तीन बडे बडे केम्पा म दो म सिधी और एक म पजाबी रहते थे। सिधी सभी नगरावाल आफिमा ५ बलक, छोटे मोटे दूकानदार और मिस्त्री का ही काम कर सकत थे। तीना म मिलाकर १५ हजार नरनारी रहे हाग। अभी सहायता क बार म सरकारी नीति साफ नहीं हुइ थी, आगा रगी जाती थी, कि मारवाडी व्यापार मण्डल जीर दूमरे व्यापारी इस बोध का अपन ऊपर उठाएँगे। वे सहायता कर भी रहे थे लेकिन कितन दिना तक ? खान का प्रबन्ध बुरा नहीं था, लेकिन बहुत से लोग पक्की या टिन का छना के नीच नग ये। यदि बपा हुई ता वहाँ जागगे ? शिक्षा और चिकित्सा का प्रबन्ध बहुत अमत्तोपजनक था। नाना जगहा क एक सी बिपद् क मारे लाग जब चौथीम घना एक जगह रहन क लिए मजदूर हाग, तो आपस म झगडा भी हाता था। शिक्षा क लिए अवतनिक शिक्षिकाआ को नियुक्त किया गया था, लेकिन इस तरह की जगार बह कितन समय तक मन लगाकर कर सकता थी।

कश्मीर म पाकिस्तान साधे लड रहा है यह किमी स छिपा नहीं था किन पहल जगन इस मानन से इकार किया। भारत सरकार न समुत्तराष्ट्र मध स हमका गिनायत थी लेकिन समुत्तराष्ट्र सध ता अमेरिका और उमक पिन्टू इगलड की दुम भर रहा था। य दाना स्वय चाहत थे कि कश्मीर पाकिस्तान क हाथ म चला जाग इस प्रकार उनका सोवियत रूस की सामा पर ताल टाकने का मौका मिल।

रायपुर—२ तारीख को बलकता भल से हम रायपुर क लिए खाना

हुए। मन्वरे = बजे वर्धा में आनन्दजी उतर गये। उनका टिकट भी रायपुर तक का था, लेकिन इमम म'देह था कि वह वहा पहुँच सकेंगे। नागाजुनजी के साथ मैं आगे चला। आगे गादिया तक गाडी में बहुत भीड़ नहीं थी। फिर लाग अधिकाधिक चट्टन लग। छत्तीसगढ़ पहाड़ी दग है पर वहा माल में ५० इंच बपा हानी है, इसलिए पहाडा का हर जगता म टैरा गूना स्वाभाविक है। पहाडी जगता म बाघ डालकर समुद्र मी जलनिप्रिया का बनाना आसान है। फिर सिबाई हा नहीं, बिजली पैदा करना भी महज हा सकता है। छत्तीसगढ़ म य सुभीत है जोर षनम भी अधिक यहा खनिज पदार्थों का अखुट भण्डार है जिसके ही लिए भिलार्ड का लौह कारखाना बनन जा रहा था। छत्तीसगढ़ में जिला के अनिरिक्त १४ परमभट्टारक राजा भी थे अत जिनके अधिकारा का भारत सरकार न ले लिया था—उह वार्षिक पेंशन मिलेगी, और पदवी तथा सम्मान भी पूववत् बना रहगा। १ जनवरी से इन रियासता का मध्य प्रदेश क शासन में द दिया गया। उमी तरह उटीमावाली रियासतें उडीमा म विलीन कर दी गई। सरकेला और खरमवा का उडीमा म मिलान का बिहार की आर म विराघ हा रहा था पोछे उह बिहार का दे दिया गया जिस पर इमी मात्र उडीसा म विराघ की आग भडक उठी। यदि इन दाना रियासता क लागी की भापा उडिया है तो उह उडीमा का ही दना चाहिए था। केकिन भापा किसी प्रदेश के लागी की पारस्परिक मवम जबर्लम्त की का हमार राष्ट्र कणधार बिल्कुल तुच्छ समयन हैं। वह गोलिया से भूनकर, लागी के खून म हाय रगन क लिए तैयार हैं पर भापा पर जाधारित प्रदेश का बनान क लिए नहीं। छत्तीसगढ़ की जनमख्या ४५ लाख स ऊपर है। मध्य प्रदेश का यह पिछडा हुआ भाग है यद्यपि वहा क मुख्य-मन्त्री यही क हैं। पिछडे जोर उपक्षित हान में लागी म छत्तीसगढ़ क अलग प्रदेश हान की भावना स्वाभाविक है। भापा के अनुसार यहा हिन्दी बल्कि अवधि का एक रूप छत्तीसगड़ी वाली जानी है। यहा की भापा पर पटाम की भाजपुरी, बुदलो उडिया का जोर मराठी का कुछ प्रभाव हाना स्वाभाविक है।

रायपुर में हम छत्तासगढ़ के विद्यार्थी फेडरेशन में बुलाया था। जगल
 तिन ४ जनवरी का गतिार था। सवर ही से गोष्ठी शुरू हो गई जा गाम
 का मभा में जात समय ही टूनी। सोगलिसु भादया से खुलकर बातचीत हुई,
 विशेषकर सावियत के बारे में। कितन हा किसान कायकर्ता भी गोष्ठा में
 आए। पता लगा यहा की सरकार जमींदारों और मालगुजारा का हटाने
 की अभी बात भी नहीं साच रही है। रात का ८ बजे के करीब सभा शुरू
 हुई। बम्बई में सरकार ने जिस तरह छात्रों के साथ खूनी होली खेली थी,
 उसका कारण यदि उनका नेता वधन ने कांग्रेस सरकार से लाहा लेन की बात
 की ता बाद जाश्चय नहीं। कश्मीर और हैदराबाद का झगडा सामने दकर
 गह-युद्ध को रोकन की बरा आवश्यकता थी लेकिन ताली एक तरफ से
 बाडे ही पिटना है। मैं भी भाषण लिया।

रायपुर में हिंदी के महान् कवि पद्माकर की सताना से मिलकर बडी
 प्रमनता हुई। और इसन बनला लिया कि हिन्दी के निर्माण में छत्तीसगढ़
 —प्राचीन दक्षिण कोस—किसी ने पीछे नहीं रहा।

५ जनवरी के सवेर ५ बजे हम अब प्रयाग की ओर रवाना हुए।
 विलासपुर में गाडी बलनी पडी। यहा से कटनी तक अलण्ड पहाड और
 जगल चला गया है। जब तब न दस तब तक जातमी को क्या पता लगता
 है? यह सारा भूभाग हरा भरा और खनिज सम्पत्ति में भी अतिममद्ध
 है। यहाँ के सभी लोग पिछे हुए हैं जिनमें जनजातिया का सरया काफी
 है। जगल के टेर—जिसका अब है अधिक जामदनी—दूमरी जगह के
 ठेकदारों के हाथ में जात हैं और लोग का कुलीगिरी करत पट भरन और
 तन ढँकने की वागिग करनी पहना है।

रामन में कटना में भा वर्षा होती रही। तीन घटे बाद यहा से प्रयाग
 की ट्रेन मिलनवाला थी। स्टेशन से बाहर निकलकर दसा सख के दोना
 तरफ पजावा गरणारिया न अपनी छाती माटी दूकानें खोल रखी हैं। कुछ
 भात्रनाय भी थ। स्थानीय दूकानदार उनमें हाड लेन में असमथ थे
 क्याकि वह ज्याग स ज्याग नफा उठाना चाहत हैं, जबकि गरणारिया कम

स कम नरुं पर अपन सौं का बेंचन क लिए तयार थ । इस साल प्रयाग म जनकुम्भी हानवाला थी । दग म जनार का बढी रिल्लन थी । सरकार न धमकी मूचना दरर, लागा का न जान की मलाह ली थी । पर कौन मुनन क लिए तैयार था ? पढ यात्रिया का एक लिए तारह ने टून म जगह मिलना आमान नरी थी । रात क १० बजे एवमप्रस टन मिली जा सवर ५ बजे प्रयाग पहुची ।

प्रयाग—६ तारीख का निवामस्थान पर हो रह । लाला जीर एगर की चिटठी मिनी जिसम पमा का आवश्यकता भी बनाव गई थी । लेकिन, यहाँ क पसा का बहा मूल्य हा करा था ? बुलान की ता बान भी नही कर सकना था कनाकि दगर क पटन का जितना जच्छा प्रबन्ध वहाँ हा सकना था जितनी आसाना से बहा काम मिल सकना था उसका जमी यहा सपना भी नही देखा जा सकता था । इस समय भारत और पाकिस्तान का तना तना क्या कमीरम गुत्यमगुथा हा रही थी । पाकिस्तान बन्-बढकर धमकी दे रहा था । पटल न साफ गंगा म ललभारा—बन्धुडकी मत दा यनि लना हा ता मामन आ जाजा । लेकिन, पाकिस्तान जिन मुरब्बिया क बल्पर कू रह था, उह मजूर हा तमी ता आग कदम बना सकना था ।

यहा आने पर पता लगा नागाजुन का उटना गाभा योमार है । नागाजुन का स्वास्थ्य भी हमगा ही स कमजार है, जा गाभा का दाय नाग म मिला है । बिचारा धपों बीमारो म घुलना रहा है । ८ तारीख का नागा जुन घर क लिए रवाना हुए ।

लिखन का अम्याम घोर घोर छू गया अब बालकर लिखन म बहुत मुभीता मालूम हाता था । नागाजुन लिपिक का काम करत मुझे यह बहुत बुरा मालूम हाता था । मैं और अधिक समय तक उनक थम और समय को बबाद करन क लिए तैयार नही था । साम हा मुपेकिमीलिपिक की जम्हन थी । थी सत्यनारायण १९४४ म इस काम का बरी अच्छी तरह कर चुक थ लेकिन मालूम नही इस समय वह खाती थ या नही, ऊपर से उनकी छुजाछून क टपाल म यात्रा करन मे कठिनाई थी । साहित्य सम्मलन के

सभापति होने से मुझे इस साल के काफी भाग को यात्रा में बिताना था।

सम्मेलन का अब तक सबसे अधिक काम परीक्षा विभाग में रहा। सम्मेलन का मुख्य लक्ष्य जब तक प्रचार था तब तक यह बुरा नहीं था। परीक्षाओं द्वारा हिन्दी के गम्भीर अध्ययन का बहुत 'यापक' रूप में काम हुआ। पर अब परीक्षाओं पर निर्भर रहना ठीक नहीं। आखिर हिन्दी-क्षेत्र के विश्वविद्यालय भी अपनी परीक्षाओं द्वारा उम्र काम का कर रहे हैं। प्रकाशन और साहित्य सृजन को बचाने की आवश्यकता थी, उसी पर ज्यादा ध्यान देने की जरूरत थी। लेकिन परीक्षा पुस्तकों से जिनको लाभ था उनकी इस आरंभ दिलचस्पी नहीं थी।

६ जनवरी से १४ जनवरी तक के लिए मैं अब प्रयाग में बंद था। आत्म निरीक्षण करते मुझे मालूम हुआ कि जरा जरा बात में चिन्तन विकल हो जाता है। 'काजीजी दुबले गहर के जदेशे' के अनुसार विश्व में कहीं पर भी ममान जायश और जादशवादिया के ऊपर प्रहार या खतरा पदादान पर मन चिन्तित हो उठता। किसी भी अयुक्त काय या विचार का देखकर अन्तर उत्तेजित हो जाता—काय चाह सामाजिक दवाव है रुढ़ि है या और कोई बात।

प्रयाग के मामने यूसी में प्रभुदत्त ब्रह्मचारी एक बड़े सन्त हैं। धार्मिक प्रदान उनके यहाँ चरम सीमा पर पहुँचा था। सन्त लोग का मुझ से भी बहुत सम्पर्क रहा है और मैंने अच्छे सन्तों को हमेशा कामल स्वभाव का पाया। उम्र दिन उनकी बनाई—'गायद भागवता कथा—पुस्तक मिली, जिनमें २१५५वें पृष्ठ पर यह लिखा देखकर चकित हो गया—

धमहीन जा कुटिल करे निंदा हरिहर की।

गरम सडासा पकरि जीम विधवा नर की।'

ब्रह्मचारीजी कस मुँदर डग से सन्ता की परम्परा का निर्वाह कर रहे हैं? वांगमय पगम्बर प्रभुदत्तजी का जय! सरम भक्ति से काम नहीं चलन दग ब्रह्मचारी न गरम सडासा लन की प्रतिपा की। उनक पृष्ठ इसा तरह पथवी का वाप उतारत थ और जब वह स्वयं उसी पथ के पथिक

हैं। पर लाग हाथ में गरम महासी दग्वकर प्रह्लाचारो के पीछे नही भागेंगे वल्कि उस अगण्ड कीतन तथा पूजा-पागण्ड स जा कि उनर वदान्त क अनुसार विलकुठ मिथ्या चीज है।

जब मरे पार्टी से अलग हान की सूचना अग्नाराग म प्रकाशित हा चुकी थी। बहुता को बहुत दु ख हुआ और मुझे भी क्याकि पार्टी में जलग रह करख भी मैं पार्टी का छाड दूमर का नही हा मन्ता था। मैं वह भी जानता था कि इम विराजी पार्टी के विरुद्ध प्रचार का साधन बनाएंगे। कुछ यह भी कह रह थे, कि अर म जाना नही हा सकगा। मैं १९१७ म उसक जम के समय में ही माविगत म का मित्र और समयक रहा और सग रहूगा। साम्यवाट मग मरा जादक रहा और आग भा रहूगा। इसीलिए किमी पत्र म यह छात्रा दग्वकर मुझे आश्चय और क्षाम नही हुआ—क्या जाने राष्ट्रल जो का पार्टी म अग्न हाना सन्चा नही बाहरो दिखावा हो। मुझे उसक मच्चे न हान और बाहरो दिपावे में ही प्रसन्नता थी क्याकि पार्टी से अग्न हाकर मैं अपनी किमा महत्ताका ता का पूरा करने क लिए तयार नही था।

११ तारीख का रविवार था। उस दिन रात्रि भाजन श्रीनिवासजी क एक मित्र मुसलमान सज्जन के घर हुआ। श्रीनिवामजी का निरामिप भावन म परहज नही था, मरे लिए विगप तीर स सामिप भोजन तैयार किया गया था। मव्यवित्त मुसलमान उस समय और भी चिंतित थे किनन ही डरकर पाकिस्तान जा चुके थे। हमार मेजबान का मवित्य क लिए चिंतित होना स्वाभाविक था। पूछ रह थे—कसे हम अपनी भारत भक्ति का सतूत दें। हा, मच्चमुच ही यह बनलाना मुशकिल था। हरेक आत्मी हनुमानजी की तरह छाती फाडकर अपन हृदय म विराजती भक्ति का कम दिखा सकता है ? मैंन कहा—और लाग स जिममें भिन्नता न दिखाइ पडे, वही रास्ता अच्छा हागा। आखिर कितन लाखा इमाई भी हमार यहां हैं उनका ता इनकी चिंता नही है, क्योंकि वह भेस और रचि म अपन दूमर दग वासिया से भिन नही हैं। यद्यपि घम और अपना कुछ

आचार विचार भी है। उन्होंने ठीक ही कहा—इसमें तो समय लगगा। इसमें क्या तक है। लेकिन समय लगाने का मतलब एक पीढ़ी की देर है और आरम्भ करने के लिए समय लगाने की क्या बात है? इसके सिवाय दूसरा रास्ता भी तो नहीं है। एक शिक्षित भद्र मुसलमान हृदय आगका संभरा हुआ था। वह साचन लग, भारत के जनमात्राण से अपने को अलग रखना हमारी भूल है। उधर गांधीजी रेडियो पर बोल रहे थे—उदू और नागरी दाना जक्षर रह दाना भापाय भी बकरार रखी जायें, नहीं तो जन तन्नता सतम हो जाएगी। यह भाषा और लिपि का बिलगाव उसी बिलगाव का बाहरी प्रदशन था जाकि हिन्दू मुसलमान में पाया जाता है और जिसने कारण आज इस दिन का मुह देपना पडा।

इसी समय लखनऊ से निकलनेवाले दैनिक 'नवजीवन' के सम्पादक वनन का प्रस्ताव भरे सामने रखा गया लेकिन मैं उससे लिए कस तयार हो सकता था। लखनऊ में सारा क्या अधिक समय भी देना भरे लिए सम्भव नहीं था। पुस्तकें लिखना इधर उधर घूमने जाना था। साथ ही परिभाषा के काम की जिम्मेवारी मन अपने ऊपर ल ली थी। फिर 'नवजीवन' में सधी और हिन्दू सभाई मनावति रखनवाये भी सम्बन्धित थे तिनके साथ मेरी पटरी के म जमती ?

बम्बई में बहुमूत्रता का मैं दख चुका था। लागाने डायबेटोज (मधुमह) की आगका भी प्रकट की थी। लेकिन मैं परीक्षा कराने में अभी हिचकिचाता रहा। सन्ध की निवति आनि परीक्षा ही सहा सफती थी। यह तो मालूम हान लगा कि अब स्वाम्थ्य पूवयत् नहा रहगा लेकिन वह स्थिति आठ बष की सीमा पार करन के दान्नी उपस्थित हुइ। गारीरिक् स्वाम्थ्य कुछ भा रह लेकिन मानसिक् स्वाम्थ्य ता जीवन भर काम करने से ही बना रह सनता है। नई बीमारी थी मन में तरह-तरह के भाव पन्ना हान थे। मैंन डूल्कर दसा, मन के कित्सा जाने में मृत्यु का नय नहीं है। जीवन का पर्नाह करनी चाहिए मृत्यु—जभाव—के लिए चिन्ता करन की क्या जरूरत ?

१३ तारीख का आरा के था जबविविहारा सुमन जाए। वह विमान सभा क कर्मों रह जेल भी गए, लेकिन मजम विगण घान यह थी, कि उहाने भाजपुरी का मौखिक प्रचार न करके उसमे कहानिया और उपयास लिख। उनकी पाठुलिपिया दग्गी। भाषा बहुत मजी थी लोकाकिनया नी अच्छी तरह और काफी मन्या म इस्तमाल हुई थी। कहीं-नहा सडी वाला का हवा-सा प्रभाव भाषा पर उत्तर था। दाप था अनुप्रास और वक्त्र प्रदान का वाहुत्य तथा चित्रण का पर्याप्त मात्रा म जभाव। मैं उनके प्रयत्न का प्रशंसनीय मानता था।

जात्र हिंदू मुस्लिम एकता क लिए गाधीजों न अनगन गुरु किया। अनगन स एकता इस समय स्थापित हानवागी नहीं थी पर मका दबाव भारत सरकार पर इतना पडा, कि उनम गाधीजी क जीवन के उदये पाकिस्तान का ५५ करोड रुपया देना स्वीकार कर लिया। 'बूढ़े की हठ नयकर बाज है,' मई में १६ जनवरी का दिना म और यह भा, कि 'क्या जानकी बाजी लगाने गांधीवादी राजनीति पर चलन क लिए दगा का मनबूर किया जाएगा? अन्तर्राष्ट्रीय आर राष्ट्रीय राजनीति म गाधीवादी रास्ता का आत्मघात का रास्ता है।

१४ जनवरी का मकर-भरति का दिन था। उस दिन श्री विश्वम्भर नाथ पाडे अपने नाय मुचे भी मला ल गए। सूचना विभाग का प्रचार हा उठा था। मज म बहुत भीड थी, किन्तु कुम्भ नहीं, और छ साल बाद प्रयाग का कुम्भ कितना भयंकर हुआ, इस कहन की जम्हन नहीं। मेला म घुमा। बरागिया का मैदान बहुत बडा था मजिन वह अधिकतर ग्याली था, जा कि अथहीनता और प्रभाव का कमी का सबूत था। उनम पचायत जगता म बहुत तैयारी थी। अखाटा क अलग-अलग कर्त घेरे थे। एक हाथी और आदमिया क काना पर तीन जगत्गुरु चला रह थ। आग-पीछे नागा साधु थे। बाज भी घाडा पर बज रह थे। बरागी साधुजा का दनिष पर परन दव मुचे वडी प्रमनता हुई।

यात्रा (१५-२१ जनवरी)—नागाजून जा नहीं पाए गापर लगे

की सवीयन जोर सराब हा गई। पर साहित्याचार्य श्री बलभद्र ठाकुर साथ चलने के लिए तैयार रह। ठाकुर मोगाय साहित्यिक धुमकण्ड है, जो अत्यवसाय के बारे में यही कहना पर्याप्त होगा कि सम्स्कृत पंडित हात उहाने रूसी भाषा का मन लगाकर अध्ययन किया। पुश्किन की कप्तान की कथा का भी रूसी से सीधा हिन्दी में अनुवाद किया। एक प्रकाशक कुछ अग्रिम देकर उभे ले गए लेकिन नौ थप ही गए और वह जब भी नहीं प्रकाशित हुई। यदि उस समय वह पुस्तक जरूरी निकल गई होती तो ठाकुर मांगायन और भी कितने ही रूसी ग्रन्थरत्ना का हिन्दी में करके हिन्दी को समृद्ध किया जाता। इस बार मैं हिन्दी को हानि जहर उठानी पड़ी पर जाग उहाने अनेक रूसी उपन्यास हिन्दी का दिए, यह फायदा भी हुआ। उस दिन रात के सांठे ११ बजे हम बम्बई एक्सप्रेस सरवाना हुए। रात की यात्रा में सान के लिए जगह मिल जाए इन बहुत समझना चाहिए। पाकिस्तान के यात्री अब भी बरामर कुछ न कुछ जा रहे थे कुछ की तलाशी भी हा री थी। रात का ४ बजे के बाद ट्रेन खंडवा पहुँची। गाडी सांठे ७ बजे रात का मिलनेवाली थी इसलिए प्रतीक्षालय में डेरा डाल दिया। हमारे लिए निश्चिन्तता की बात यह भी थी कि इंदौर से श्री बीजनाथसिंह महागणन लेने को आ गए थे। गाम को भोजन के लिए बाहर गए। स्टेशन के पास ही दो सिनमाथे भाजनालय भी ४ पर सभी निरामियाहारा थे। एक पत्रापी गरणार्थी न चायखाने के साथ भाजनालय भी खोल रहा था। आमिप हा मा निरामिप इस समय गरणार्थी भोजनालय में खाना ही हम अच्छा समझते थे। जितनी घटी मर्यादा पश्चिमी पत्रापी से लागू थेपर हाकर आए यदि वास्तविक अर्थ में बहुपुरुषार्थी न हान तो देगे और उनक ऊपर कितनी मुसीबत जाता इस साचनम ना बिना हाती है। रात का ही २ बजे हम खंडवा से चलकर इंदौर पहुँचे।

इंदौर—१७ तारीख का मकर छाना-सा भाषण करके झंडा फहरान की रस्म अंग करना पड़ी। दापहर का कितना हा कम्युनिस्ट भाषा जाए, पार्टी में अलग हान के बारे में अफगाण करत रहे। छेडे बजे निश्चिन्त

फाउण्डेशन म जनरॉपीय गजनीनि के विषय पर भाषण दना था। छात्र-छात्राआ के अतिरिक्त दूसरे लोग भी थे। हिन्दी के अपन समय के अद्वितीय बक्ता प० माखनलाल चतुर्वेदी भी साथ थे। वहाँ सथी वैजनाथ अपने एकाउन्टेंट कार्यालय को दिखाने के गए। वहाँ भी कमिया के सामने बालना पडा। अभी हमार अफसर और स्टाफ के लोग बस्तुन बहुत कुछ निर्लिप्त हा दग का आगे बगान म अपनी शक्ति का उपयोग करना चाहने थ लेकिन जस जस ऊपर के बीभत्स नमून को उहाने देया, जैसे ही जमे बह भी उसी रग म रग गए।

मैं बस्तुतः साहित्य परिषद के अविचलन के लिए यहा आया था जो गाम को साठे ७ बजे से शुरू हुआ। आध घंटा दर स "श्रीमान्" जाये, यह कोई बहुत दर नहीं थी। दुबला पतला मरियल-भा शरीर और चहरे पर रिमो तरह की विगपता की छाप नहीं थी। यही हालकर के आधुनिक उत्तराधिकारी थ। सेठ हुकुमचंद स्वागताध्यक्ष थ। उहान स्वागत भाषण पडा फिर महाराजा ने उद्घाटन भाषण किया। इसके बाद मरा सभापति का भाषण हुआ राजा चलत बक्त मुलाभात करने का प्रान कहकर गए। स्वागत करनेवाला के कहने पर मैं उनसे कह दिया—मुझे मिलन की कोई इच्छा नहीं है, और आप भी चिन्ता न करें, वह अपन कह का भूल जाएंगे। जाने बक्त प्रतिहार न उच्च स्वर स महाराजा के पधारने की जो सूचना दी थी, वह मुझे निरा परिहाम मानूम हो रहा था। जब छत्रधारिणा का सूय डूब रहा था, उस समय क्या यह वेचकन की सहनाई नहीं थी ?

१८ तारीख का दिन भर भाषण ही भाषण हुए। सपेर ६ बजे साहित्य परिषद म प्रगतिवाद के सम्बन्ध में भाषण दिया, ११ बजे होलकर बालेज म भारत की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक एकता पर। वहाँ मे भोजन करने के लिए सेठ हुकुमचंद के घर पर गए। नवान शिक्षा से बचिन हाने पर भी सेठ जिन्दादिल मालूम हुए। उनक पुन पौत्र ता आधुनिकता के सूचक म बने हैं। इन्हीर का अपड मिला का के द्र बनान म सेठ हुकुमचंद का बडा हाथ था। वहाँ निरामिप विन्तु बहुत नफीस भाजन था। भोजन करनेवाला

की तबीयत जोर खराब हो गई। पर साहित्याचार्य श्री बलभद्र ठाकुर साथ चलने के लिए तैयार रह। ठाकुर मोशाय साहित्यिक धुमकण्ड है, जोर अध्ययनाय के बारे में यही कहना पर्याप्त होगा कि संस्कृत पंडित हात उंहाने रूसी भाषा का मन लगाकर अध्ययन किया। पुश्किन की 'कप्तान की कथा' का भी रूसी से सीधा हिन्दी में अनुवाद किया। एक प्रकाशक कुछ अग्रिम देकर उसे ले गए लेकिन नौ मेष हो गए और वह अब भी नहीं प्रकाशित हुई। यदि उस समय वह पुस्तक जरूरी निकल गई होती तो ठाकुर मांगाने और भी कितने ही रूसी प्रयत्नका का हिन्दी में करके हिन्दी को समृद्ध किया जाता। इस बारे में हिन्दी का शक्ति जरूर उठानी पड़ी पर आगे उंहाने अनेक रूसी उपयाम हिन्दी को दिए, यह फायदा भी हुआ। उस दिन रात के साठे ११ बजे हम बम्बई एक्सप्रेस से रवाना हुए। रात की यात्रा में साने के लिए जगह मिल जाए इस बहुत समझना चाहिए। पाकिस्तान के यात्री अब भी बराबर कुछ न कुछ जा रहे थे कुछ की तलाशी भी हो रही थी। रात का ४ बजे के बाद ट्रेन खडवा पहुँची। गाड़ी साठे ७ बजे रात को मिलनवाड़ी थी इसलिए प्रतीक्षालय में डेरा डाल दिया। हमारे लिए निश्चितता की बात यह भी थी कि इन्दौर से श्री बैजनाथमिह महागणक लेन को आ गए थे। गाम को भाजन के लिए बाहर गए। स्टेशन के पास ही दा सिनमाये भाजनालय भी ये पर सभी निरामिपाहारी थे। एक पञ्जाबी गणार्थी न चायखान के साथ भोजनालय भी खाल रखा था। आमिप हा या निरामिप इस समय गणार्थी भोजनालय में खाना ही हम अच्छा समझत थे। जितनी बत्ता सरया में पश्चिमी पञ्जाब से गणवेधर हाकर आए यदि वास्तविक अर्थ में वह पुष्पाधी न हाने, तो देग और उनके ऊपर जितनी मुसीबत आना इन साधन में न चिन्ता होनी है। रात को ही २ बजे हम खडवा में खलक इन्दौर पहुँच।

इन्दौर—१७ तारीख का सबर छोटा सा भाषण करके बड़ा फहरान की रम्म अक्ष करनी पड़ी। दोपहर का कितने हा कम्युनिस्ट माया आए पार्टी से अलग हा के बारे में अपमास करत रहे। डेढ़ बजे त्रिचिचयन

गान्धिम अन्तराष्ट्रीय राजनीति के विषय पर भाषण देना था। छात्र-छात्राओं व अनिश्चित दूसरे लोग भी थे। हिन्दी व अपने समय व अद्वितीय वक्ता प० भाग्यनलाल चतुर्वेदी भी भाग्य थे। वहाँ सश्री वजनाथ अपने एकाउन्टेन्ट कार्यालय को दिखलाने गये। वहाँ भी कमिया व सामने वालना पडा। अभी हमारे जफसर और स्टाफ के गगन वस्तुन बहुत कुछ निर्लिप्त हा दग का आग बद्धान म अपनी शक्ति का उपयोग करना चाहते थ लेकिन जैसे-जैसे ऊपर के वीभत्स नमून को उहाने दवा जस ही जस चह भी उमी रग म रग गए।

मे वस्तुत साहित्य परिषद् व अधिवेशन के लिए यहा आया था जो शाम का साडे ७ बजे म शुरू हुआ। आध घंटा दर स "श्रीमान् आय, यह नाई बहुत दर नहीं थी। दुबला पतला मरियलन्मा गरीर और चहरे पर किमी तरह की विशेषता की छाप नहीं थी। यहा हालकर व आधुनिक उत्तराधिकारी थ। मठ हुकुमचन्द स्वागतार्थ थ। उहान स्वागत भाषण पडा फिर महाराजा न उद्घाटन भाषण दिया। एक बाद मरा सभापति का भाषण हुआ राजा चलते वकन मुलाकान करन की बात कहकर गए। स्वागत करनेवाला व कहन पर मैंन उनसे कह दिया—मुझे मित्रन की कोई इच्छा नहीं है, और आप भी चिन्ता न करें, वह अपने कह का भूत जाएंगे। जान वकन प्रतिहार न उच्च स्वर स महाराजा के पधारने की जा सूचना दी थी वह मुझे निरा परिहाम मानूम हो रहा था। अब छत्रचारिया का मूय डूब रहा था, उस समय क्या यह वक्त्र का गहनाई नहीं की ?

१८ ताराख का दिन भर भाषण हा भाषण हुए। मगर ६ बजे साहित्य परिषद् म प्रगतिवाद् व सम्प्रदाय मे भाषण दिया, ११ बजे हाकर कालज म भारत की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक एकता पर। वहा म भाजन करन के लिए मठ हुकुमचन्द के घर पर गए। नवीन गिदा से वचिन हान पर भी सेठ जिन्नादिल मालूम हुए। उनका पुत्र पीत्र ता आधुनिकता के साथ म गे हैं। दूसरे का तपडे मित्र का वदर बनान म सेठ हुकुमचन्द का बडा हाथ था। वहाँ निरामिप किन्तु बहुत नफीस भरजन थ। भाजन करनेवाला

की तबीयत जोर खराब हो गई। पर, साहित्याचार्य श्री बलभद्र ठाकुर साथ चलने के लिए तैयार रहें। ठाकुर माशाय साहित्यिक धूमकण्ठ हैं, और जयवन्माय के बारे में यही कहना पर्याप्त होगा, कि सम्स्कृत पंडित हान उहानि रुसी भाषा का मन लगाने में व्ययन किया। पुश्किन की कप्तान की कथा का भी रुसी से सीधा हिन्दी में अनुवाद किया। एक प्रकाशक कुछ अग्रिम देकर उसे ले गए लेकिन नी बच हा गए और वह अब भी नहीं प्रकाशित हुई। यदि उस समय वह पुस्तक जल्दा निकल गई होती तो ठाकुर भोगायन और भी कितने ही रुसा प्रचरता का हिन्दी में करके हिन्दी का समृद्ध किया जाता। इस बार में हिन्दी को हानि जरूर उठानी पड़ी, पर आगे उहाने जनक रुसी उपयास हिन्दी को दिए, यह फायदा भी हुआ। उस दिन रात के साढ़े ११ बजे हम बम्बई एक्सप्रेस से खाना हुए। रात की यात्रा में सान के लिए जगह मिल जाए इस बहुत समझना चाहिए। पाकिस्तान के यात्री अब भी बराबर कुछ न कुछ जा रहे थे कुछ की तलाशी भी हो रही थी। रात का ४ बज के बाद ट्रेन खटवा पहुँची। गांधी साह्य ७ बजे रात का मिलनवाली थी इसलिए प्रतीक्षालय में डेरा डाल दिया। हमारे लिए निश्चितता की बात यह भी थी कि इन्डोर से श्री बैजनाथमिह महामण्य 'लेन को आ गए थे। गाम का भाजन के लिए बाहर गए। स्टेशन के पास ही दा सिमा ५ भाजनालय भी ५ पर सभी निरामिपाहारी थे। एक पजाबी शरणार्थी न चायखान के साथ भाजनालय भी खोल रहा था। आमिप हा या निरामिप इस समय शरणार्थी भोजनालय में खाना हा हम अच्छा समझत थे। जितना बड़ी सरया में पश्चिमीपजाब से लाग बघर हाकर आए यदि वास्तविक जथ में वह पुरुषार्थी न हान तो देश और उनक ऊपर कितना भुभीवत आनी इस सोचन में चिन्ता होना है। रात का ही २ बजे हम सडना से चलकर इन्दोर पहुँचे।

इन्दोर—१७ तारीख का सबर छाटा सा भाषण करके थका कहरान की रम्म अण करना पड़ी। दोपहर का कितना हा कम्मुनिस्ट साथी आए, पार्टी में अलग हान के बार में अफमाग करत रहे। ६ बजे किञ्चिदन

कालज मे अंतर्राष्ट्रीय राननीति के विषय पर भाषण देना था। छात्र छात्रावा के अनिरीकन दूमरे नाग भी थ। हिन्दी के अपन समय के अद्वितीय वक्ता ए० मायनलाल चतुर्वेदी भी साथ थे। वहा स श्री बजनाभ अपने एकाउन्टे कार्यालय को दिखलान ल गए। वहाँ भी वर्मिया न सामने चालना पडा। अभी हमार अफसर और स्टाफ के लोग वस्तुत बहुत कुछ निर्लिप्त हा दग का जागे बढ़ाने मे अपनी शक्ति का उपयोग करना चाहत थ लेकिन जैसे जस ऊपर के वी नत्स नमूने को उहाने देखा जम ही जमे वत् भा उसी रग म रग गए।

मैं वस्तुत साहित्य परिषद् के अधिवेशन क लिए यहा आया था, जा शाम को साढ़े ७ बजे से गुरू हुआ। आध घटा दर स "श्रीमान्" जाय, मह काई बहुत दर नहीं थी। दुनका पतला मरियल्ला सा शरीर और चेहर पर किसी तरह की बिगेपता की छाप नहीं थी। यही हालकर क आधुनिक उत्तराधिकारी थ। सेठ हुकुमचंद स्वागतार्थ थ। उहान स्वागत भाषण पडा फिर महाराजा ने उद्घाटन भाषण दिया। इसक बाद मरा सभापति का भाषण हुआ। राजा चलते वक्त मुलाकात करने की वान कहकर गए। स्वागत करनेवाला न कहन पर मैं उनसे कह दिया—मुझे मिलन की कोई इच्छा नहीं है, और आप भी चिन्ता न करें, वह अपने कह को भूत जाएँगे। जाने वक्त प्रतिहार न उच्च स्वर स महाराजा के पधारन की जा सूचना दी थी वह मुझे निरा परिहाम मानूम हो रण था। जब छत्रधारिया का सूय डूब रण था, उस समय क्या यह बेयजन की शरनाइ नहीं थी ?

१८ तारीख का दिन मर भाषण ही भाषण हुए। सजरे ६ बजे साहित्य परिषद म प्रगतिवाद के सम्बन्ध म भाषण दिया, ११ बजे होकर मालन म भारत की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक एकता पर। वहा स भाजन करन के लिए सेठ हुकुमचंद के घर पर गए। नवीन शिक्षा से वचित हाने पर भी सेठ जिदादिल मालूम हुए। उनका पुत्र पीत्र ता आधुनिकता के साथे म रण है। इंदौर का कपड मिलो का कदर बनान म सेठ हुकुमचंद का बडा हाथ था। वहाँ निरासिप किन्तु बहुत नफीम भाजन था। भाजन करनेवाला

की जमान भी काफी बड़ी थी। भाजन चादी के बड़े बड़े थाला और कटा-रिया म परोसा गया था। लक्ष्मी का चारों तरफ प्रकाश था।

४ बजे बाद गहर से बाहर महाराजा के निवास पर जाना ही पड़ा। पौन घंटे तक उनसे बातचीत हानी रही। इ दौर अभी विलीन नहीं हुआ था, तैनिन दबाव बहुत जा र का पड रहा था। आधुनिकता से परिचित और नवीन शिक्षा म दीक्षित महाराजा भवित यना को समझ रहे थे लेकिन साथ साथ जिनार को छोटा के लिए मन भी नही जा। यदि और राजाआ न अथन मूयवगी चन्द्रवशी पडे को बकरार खन के लिए खडग का अन्तेमा विद्या होता, ता वह भी हिम्मत करत। अकेले एसा साम्म करना बकार था। वह कहत रहे थे कि गसनका प्रजामण्डल के पतिनिधिमा न हाथ म द्तर क्या केवल बधानिक प्रमुल रहना अच्छा नही होगा या और काद्र दूसरा रास्ता लना चाहिए। मैं वमन सा ही बात कर रहा था, क्याकि हुमरी तरफ कोई बसी बौद्धिक विरोपता नही देख रहा था। मैंन कहा—जाकरना है उस समय स पहले और सुगी से करना चाहिए। जान पडता था राजा हर वकन नश म रहत थे। पत्ना जमरिक्न थी, जिगके साथ उमरी माँ भी मौजूद थी।

मऊ छावनी म भी आज ही प्राणाम था। वहाँ स दौडकर वहाँ की सभा म वाले देर हान से लग निराग हो गए थे। लौटकर साने ८ बजे शिक्षा परिपद म भाषण दन के बाद सवा नौ बजे निवाम पर पहुँचन की छुट्टी मिली।

इ दौर भी नया नगर नही है, क्याकि इन्द्रपुर म पुर का उर प्राण मुस्लिम काल—शाहन-अयभ्रम—के समय म हाता था। पर इन्द्रपुर नगर न होकर काइ गाँव भा हा मरता था। जा भी हा इमका ऐतिहासिक महत्त्व उतना नहा है जितना अजना देग की पुरानी राजधानिया माटिप मनि और अजयिनी वा। १६ तारीख का रात के ४ बजे ही माटर स हम माटिपमति (मन्जर) के लिए खाना हुए। भीधी सडक म जान पर बीस मोड पडता, पर बट कच्ची सडक थी, अगलिए हम पचास मोटवाला पक्की सडक स गए जिनम अधिक दूर तन आगरा बम्बईवाली सडक मिली।

आसपास पहाड़ और बाघा चीता के जगल थे, दो घाट भी पार करने पड़े। अभी अघेरा ही था जबकि हम माहिष्मति के दुग में पहुँचे। सबरा हाने ही नाव ले नमदा में घूमने चले। धारा गहरी और प्रायः उतनी ही चौड़ी थी, जितनी लेनिनग्राद की नवा। नीचे कुछ दूर पर सहस्रधार या जहाँ जमीन की ममतल भी चट्टानों पर पड़कर नमदा हजारों धारावाली बन गई थी। बहुत ही सुंदर दृश्य था। निम्नी समय समुद्र अबतों की यह राजधानी अब दूर फँस अपने घबसों के रूप में ही दिखाई पड़ती थी। एक शिवालय देखा। अन्तर के समय १६२२ ई० (१५६१ ई० म) पोरवाड बाग के किमी सेठ ने जिसका जीर्णोद्धार किया था। एक जगह खोह में इसा-पूष की कितनी इटें दोख पड़ी। माहिष्मति के सण्टहर जपन प्राचीन इतिहास का छिपाए हुए पड़े हैं, जिसे उद्घाटन अवश्य पदा होगा। दुग के नीचे। अहत्याबाइ का बनधाया घाट और मंदिर है। जिस बला का अब अवसान हो चुका है उनके देखने की साथ वहाँ पूरी हो सगती थी। महेश्वर की जावादी ६ हजार था। अब भी वहाँ एक ठाटा-सा बाजार है। नमदा के पार नीमाड जिला है जा बुद्ध के समय अल्लक देग के नाम से प्रसिद्ध था। यहाँ पुराने पठानी सिक्के बहुत मिलते हैं किंतु हिंदू काल के सिक्के भी मिलेंगे यदि नीचे तक खोदा जाए। बाजार में कुछ व्यापारान देना पडा, फिर लौटकर १२ बजे इंदौर पहुँच गए। भोजनोपरांत गिवाजीराव स्कू मेडिकल स्कूल मिशन कालेज की चिट्ठा समिति में भाषण देकर ८ बजे उज्जैन के लिए रवाना हा गए। मालव भूमि में हरी हरी फसल लहरा रही थी। कालिदास की इस प्रिय भूमि का दग्धते मेघदूत की पवित्रया याद आती थी। भाग में गेहसस मित्रा, जहाँ के कमल राज्य भी अब विलीन होने वाले थे। उज्जैन में सारे १ बजे पहुँचे। महाकाल का स्नान किया यद्यपि उतनी भाव भक्ति सन्ही जितना कि बाण वर्णित मन्साल का करता। डा० नागर का भा साप्तात्वार हुआ। उनकी पत्नी १६४३ की गगोत्री यात्रा में कितने ही दिना तक अपन हाथ का स्यादिष्ट भाग्य प्रदान कर वृत्तन कर चुकी थी। डा० नागर के कारण प्राकृतिक चिकित्सा का केन्द्र

उज्जयिनी में स्थापित हो गया था। जेंधरा हो गया था, जबकि सावजनिक सभा में डेढ़ घंटा भाषण देना पड़ा। उसी दिन रात को साढ़े १० बजे इन्दौर लौटे और तीन घंटे बाद रेलगाड़ी पकड़ी। बड़ी दौड़ धूप रही, और किसी चीज को अच्छी तरह देखने का मौका नहीं मिला।

२० तारीख को जेंधरा रहते ही रतलाम पहुँचे। और कुछ समय मोनकाल के लिए मिला गया। फिर चौक और हाइ स्कूल में भाषण दिए। मद्रसौर—प्राचीन दाणपुर—देखने की मेरी अत्यन्त उत्कण्ठ दृष्टि थी। कालिदास ने इस नगर की महिमा गाई थी फिर चूठा या सच्चा मस्वृति के पुत्र रतिदेव की राजधानी भी इसे बतलाया गया था जिस रतिदेव का कीर्ति चम्बल—(चामवाली चमणवती) नदी है। रतिदेव परम अतिथिसखी थे। अतिथिया के भाजन के लिए उनके यहाँ रोज हजारों गाएँ मारी जाती थी जिनके तान चमडेस गिरी बूंदों द्वारा इसी नदी का आरम्भ हुआ था। मद्रसौर के लिए जाने के लिए आए थे। लेकिन वहाँ जाना तभी संभव था जबकि कार से जाकर वहाँ का काम भुगतान आनेवाली ट्रेन से जाग जा सकता था। कार नहीं मिल सकती। मालवा देखने की उत्कण्ठ दृष्टि पूरी नहीं हुई इसलिए मकरप किया मालवा एक मामूले के लिए आना होगा और तब घूमना होगा। लेकिन यह संकल्प गायब बस भी पूरा नहीं होगा।

रतलाम में ही हम उदयपुर वाँ डेढ़ में बठ गए। उसी डेढ़ में दो महिलाओं के साथ एक जन डॉक्टर बसरियाजी (मेवाड़) के दशनाथ जा रहे थे। आधा रात का हम चित्तौड़ पहुँचे। कितने ही साहित्यप्रेमी फूल गाल और गुरुकुल वाँ नारगी लेकर आए। जाग्रह बहुत था उत्तरन का लेकिन १२ बजे रात को वहाँ भयानक फिरत। डेढ़ ही में सो गए। आग तबेर भाडला में पहुँचे। वहाँ तथा एक जगह और फूलमाग मिली। २१ तारीख का पौन ६ बजे हम उदयपुर पहुँचे गए। डा० माहनसिंह मेहता श्री रामगोपाल माहता श्री जनादनराय नागर आदि ने स्वागत किया। उदयपुर का दशनाथ महाराणा के अतिथि भवन—आनन्द भवन में था। १४ बजे पटना भी उदयपुर आया था। उस समय ही स्मृति फिर जागृत हो

आई। कहा वह पुराने ढंग की और सफाई में बहुत पिछड़ी हवेली और कहा यह स्वच्छ युरोपीय ढंग का भवन। सबरे जलपान करके मोटर से हम एकलिंग के लिए रवाना हुए। १३ मील का रास्ता पहाड़ा पहाट चला गया था जिस पार कराने में दो घंटे लगे। वड़ मंदिर हैं जिनमें सदा एक अधिक कलापूर्ण है, यद्यपि १२वीं शताब्दी में हमारी मूर्तिकला को जो महापाप लगा, उससे अच्छे भास्कर की वहाँ सम्भारना हो सकती थी। एकलिंग के िंग में एक मुख है अर्थात् एक मुखलिंग का ही यह सलेप है। यह पाशुपता का किमी समय गढ़ रहा, लेकिन आज तो पाशुपत—सच्चे शक—उत्तर से लुप्त हो चुके हैं, उनकी भव्य कीर्ति वास्तु और मूर्तिकला में ही हम खजुराहा और दूसरी जगहों में हमारे ढंग का समृद्ध कर रही है। ११ बजे तक मंदिर का फाटक नहीं खुला। हम देर तक ठहर नहीं सकते थे। लौटते वकन सड़क से कुछ हटकर अवस्थित साम-बहू के मंदिर में गए नागदा (नागहृद) सरावर के पास है। यहाँ जन और विष्णु के ध्वस्त प्राय मंदिर हैं। मुसलमानों के जनक वार इस भूमि पर प्रहार हुए थे, जिनकी साक्ष्य यहाँ की टूटी फूटी मूर्तियाँ भाँद रही थीं। यह मंदिर १२वीं शताब्दी के आसपास का है। साढ़े १२ बजे हम उदयपुर लौट आए।

भाजन के बाद ठाकुर माणायक साथ सिन्धी विद्यालय, हिन्दी विद्यापीठ, महिला मण्डल और बालिका विद्यालय देखने गए। हिन्दी विद्यापीठ बहुत अच्छा काम कर रहा था और जब विद्व विद्यापीठ के रूप में अपना काय कर रहा है।

रात को ७ बजे स्वाउटा के हात में सावजनिक सभा हुई। सभापति डा० मोहनसिंह थे। यह जानकर जनकुम लगता था कि एक ही सभा के कितने ही अंगा के जलग अलग अलग जलग अधिवेशन करके सभी जगह मरे प्राग्राम का रखा गया था। २२ तारीख को सबरे सम्कृति विश्वा सम्बन्धा सम्मेलन हुआ जिसमें प्राय तान घंटे मुझे ही बोलना पडा। मध्याह्न भाजन श्री माहताजी के यहाँ हुआ, फिर पत्रकार सम्मेलन हुआ उसक बाद विद्या भवन में गए। डा० माहनसिंह द्वारा १९३१ में स्थापित

यह सस्था अब बहुत बिगाल हो चुकी थी, जिसके साथ गिगु विद्यालय, मट्रिक तक का हाईस्कूल और एक् ट्रेनिंग कालेज था। जलपान डा० गमा के यहाँ हुआ जहाँ पचास से अधिक महमान थे। वहाँ से मोटर में जगली सूअरा के निवास-स्थान का देखने गए। इन सूअरा को गाम के वक्त अन्न खिलाया जाता है उस समय बड़ी सरया में आकर वह जमा हा जाते है, और त्यने में पालतू से मालूम होत ह।

७ बजे रात को स्काउट जाश्रम में मनोरंजन का प्रोग्राम रहा। गीत गाय गए नाटक भी हुआ। पुष्प का स्त्री पान बनना बना भद्दा मालूम हाना है लेकिन अभी इसक सिवा और चारा क्या था ? १० बजे रात को छट्टी लेकर विश्राम स्थान पर आए।

२३ तारोख का विद्यापीठ के कमिया का सम्मेलन हुआ जिसमें भाग लेने के बाद १० बजे हम जावर के लिए रवाना हुए। २४ मील का पहाड़ी रास्ता था जिसमें अन्तिम कितने ही मीला की मडक बटून सराब थी। जावर प्राचीन काल में भा भारी महत्व रखता था और अब भी उसके दिन लौटन वाक थे। यहाँ सास की गान है जिनमें मुगकाल और पीछे तक उनमें काम हाता रहा। पुरान समय में पहाड के ऊपर से कुण की तरह खोद कर धूननाली गिलाआ तक पहुँचा जाता था जय नीचे से वास्तु द्वारा ताड कर रास्ता बनाया गया था। सीमे के माय इन पत्थरा में जस्ता भी मिला है किमी त्रिसा धून में ताँबा और चाँदा की भी मात्रा है। अंग्रेज और स्तालियन वायवर्त्ता काम कर रहे थे। नलिनो रजन सरकार और दूसरे सठ र्मक स्वामी थे। यहाँ से चूना का लारी में और फिर रक पर गन्कर बगाल भेजा जाता था। कारखाना बन रहा था लेकिन वह घातु की सफाई का पूरा काम कर सक्ता इसमें मदद था। खाना के भीतर भा हम घुस। फिर वहाँ से उजडे नगर में गए। दा मर्त्तरा में लख मिले जिनमें से एक १२वा सदा रा था। उम समय र्म नगरी में लक्ष्मी की वर्षा हाती थी। फिर खाना में काम वाक गया और लक्ष्मी का खान मूक गया। आज यह नगर मुनगान स्पण्टर-मा है। यहाँ के आसपास के पहाड सीस-जस्ते से

भर हुए हैं। उनकी उपशा और कितन दिना तक की जा सकती है।

लौटकर बनवासी विद्यालय का दखते महाराणा मन्त्रेज म भाषण दना था। फिर प्रगतिशील लेखका म, और अत म सौ क करीब जतिथिया के साथ माहताजी के महा भाज म शामिल हुआ। उदयपुर म कायशीलता दिखाइ पडती थी, कायफता भी काफी थे, किन्तु सबका विकास किस जाह हागा इसका पता नहीं था। उदयपुर का भी विगिन हाता था और महा राणा सबसे पहले कदम उठाकर या के भागा हुए थे।

जाधपुर—उसी दिन गाम के माटे १ बज जाधपुर का गाडी पकटी। पिछगी बार आन बवन यह लादन नहीं बनी थी। मैं ममयता था पहे अजमेर जाना हागा और फिर आग क लिए दूसरी ट्रेन मिगगी। मबरा हा गया था अब हमारी गाडा मारवाड म चल रही थी। मैं उत्सुकता से मरुभूमि का बाठ दगन की कागिन कर रहा था लेकिन वह ता जमी बहुत दूर थी। २४ तारीख क मबर पीन ६ बज हम दाना जाधपुर पहुँचे। पहे ठरन का कही प्रबध करना था। प्रो० देवराज उपाध्याय का पन भी आ चुका था लेकिन ट्रेन का पता न रहन स हम ही उपाध्यायजी के घर को ढूढन क लिए निकलना पडा। एक घटा ढूढन म लगा। उपाध्याय जी आरा के रहन वाल और मेरे घनिष्ठ परिचित है। उनकी पहे पत्नी मेरे जेल के सहयागी मित्र थी पारसनाथ त्रिपाठी की पुत्री थी और वतमान पत्नी स्वनामधेय पण्डित रामावतार गामा की पुत्री। देवराजजा म्वय हिंदी साहित्य के गम्भीर विद्वान है, लखना म भी गकित है, किन्तु उनका आलस्य बहुत जसरता है। याम्य प्रतिभाएँ जब कायक्षेत्र म जान स हिच किचाती हैं ता अयाग्य लागा के आगे वन म उनका गिकायन कम हा सकती है? उपाध्यायजा कितन ही साला स अब काना से बहुत कम सुनत हैं, जिसके कारण अटचन भी है।

लाग आज गाम का मरे आन की प्रतीशा कर रह थे, केकिन मुमे तो जल्नी पडी हुई थी। परिभाषा की जिम्मवारी लेजर उसक बार म अभी मैं कुछ नहीं कर सका था। समिति की बटक म दर थी इसलिए बीच के

समय का मैंने इस यात्रा में बिताना चाहा था। इसी कारण ही आधी रात के साढ़ ६ बजे जायपुर का छोड़ देना था।

यंगवल्नमिह कालेज के अध्यापक से बातचीत हुई फिर यहाँ की एक सुन्दर महिला बाल निवृत्तन देखने गया। निवृत्तन में तीन बच्चे तक के ही बच्चे रहते हैं। डेढ़ सौ के करीब बच्चों का हाना ही बतलाना था कि इसरी उपयोगिता का गाय समझते हैं। बच्चा को किसी प्रकार का ताड़ना नहीं दी जाती सभी शिक्षा स्कूलों द्वारा दी जाती है। व्यवहार करने की श्रमता हाते ही बच्चे अपने हाथ में काम करने लगते हैं। मुझे यहाँ सावित्री की गिण्टागंगा का बच्चा म कहने के लिए कहा गया। कालेज के उन छात्राओं के सामने वालना पता जहाँ थाताआ की भारी सख्या उपस्थित थी। फिर यहाँ की दूसरी सख्या कुगलालय में गया जहाँ छठी से दसवीं तक के छात्र पढ़ते हैं। अधिकतर लड़के यहाँ रहते हैं। जायपुर पुराने रियासत के वहाँ के नवान सख्याओं को दायकर अधिकार के लिए आना पता हाना स्वाभाविक है। जायपुर के तरण महाराजा समय में शिक्षा लेने के लिए तयार नहीं थे और एक तरह जवन्तली उह विलयन के पक्ष में करना पडा। उस वक्त भी उह हाग नहीं जाइ थी और तिक्रम के लिए रास्ता ढूँढ रहे थे। वस्तुतः राजा में तनी बुद्धि भी नहा थी उह ना दरबारी जम नवाने के काम ही जाच रहे थे। पर मूय चन्द्रवग का जमाना लौटने वाला नहीं था।

२४ तारीख—अतार—का भी हम काफी व्यस्त रहे। मनेने माहित्य गिण्टा का गाँटा में गा। कुछ तरणा न अपनी कविताएँ मुनाद। आजकल जायपुर जत सिमा भा गहर में मौ-अचाम सिन्धी कविता का मिलना आश्चर्य माने नगा है पर उनमें बहुत कम ही कवि हान का अकुर जपत भीतर ते हैं। कुछ अपनी कमजारी का समझन बात भी है किन एसा की सा भी काफी है जा कभी यत् मानने के लिए तयार नहीं कि मैं उच्च का कवि नहा है। एसा हान पर भा मुँठ तरणा की कविताओं का तर निराग हान की जम्मत नगा थी।

जायपुर में आयोजित प० रामगदाय गमा रत्न हैं यह जानकर

मुझे मिलन की उच्छा हुई। पर इसी समय वही विवाह कराना था, जिसके लिए वह आकर चले गए थे। उसकी धर्मपत्नी और पुत्र और पुत्री न पिता की आर में स्वागत सम्भार और भाजन कराया। वहाँ न उपाध्यायजी के स्थान पर लोट आया। तब स २ बजे तब प्रश्नात्तर रूप में माण्टी चरती रहा फिर म्युनिमिपल हाल में भाषण दिया। ४ बजे एन और जगह भी भाषण की बात थी, किन्तु तयारी जल्दी-जल्दी में नहीं हो सकी और नियत समय में डेढ़ घण्टा बाद मुस्लिम स्कूल में हिन्दी भाषा के ऊपर जाकर वाला।

जाधपुर भी जगटाई च रहा था। बाल निकतन और कुगलाश्रम जैसा मस्यौरे बनला रही था कि वह अपन का आधुनिक युग के लिए तैयार कर रहा है। लगनवाल कायदनाआ का किमा साधन का अभाव नहीं रहता। साहित्यिक और राजनीतिक कायकताआ की यहा कमी नहा थी। एक दिन और रहन के लिए जार दिया जा रहा था लेकिन वैसा करन पर आग के प्राशाम दून जान। इसी समय का महागजा का प्रथम पुन हुआ था, जिस पर दा कराट रुपया उटाए गए। उदयपुर कहा अधिक प्रतिष्ठित मस्यान है लेकिन मामतवाद की जितनी आप जाधपुर में दीख पडी कमी वहाँ नहीं।

आगरा—रात के ६ बजे आनवाली गाडी ११ बजे आई। २६ का सत्ररा फुलेरा में हुआ। यहाँ गाडी बदला। दा पहल बाद वादीकूर्ड पहुँचे। सेकड कलाम में रिजव कर लेन के कारण फुलेरा तब मान के लिए जगह मिल गई। आग ता भीड़ के लिए कुछ पूठना ही नहीं। रायत में साभर स्टेगन मिला। साभर शील हिन्दुस्तान के बडे भाग का नमक देती है। शील जयपुर और जाधपुर की गामिलात है, किन्तु नमक बनान का साग प्रबन्ध के द्रीय सरकार के हाथ में है। इस समय वहा तान मौ धमिक काम करत ये जा मौसिम के समय हजार तन हो जात है। अकला साभर कस भारे देग का नमक द सकता है इसीलिए समुद्र का भी इस्तमाल किया जा रहा है। साभर की गावम्भरो दबी वतन प्रसिद्ध है। वह चौहाना की कुल्देवी

थी। पृथ्वीराज का वंश गाकम्भरी का चौहान कहा जाता था। शाकम्भरी पृथिवीराज का भा पुराना है यह इस नाम ही से मालूम होता है—गाकम्भरी गाका का भरण करने वाली। अपनास रहा मैं उतरकर वहाँ देख सुन नहीं सका।

बादोबूझ में ट्रेन बहुत दूर तक खड़ी रही, और ४ बजे बाद ही आग की गाटी मिली। इससे अच्छा हुआ होता यदि मारवाड़ जंक्शन में इसी आगरा जानवाली ट्रेन का पकड़ लिए होते फिर वहाँ से सीधे आगरा पहुँचते। हमारी ट्रेन आगरा के पास पहुँच गई उसी वक्त डब में एक एग्लो इंडियन परिवार समा रहा। वह आगरा में व्याहक लिए जा रहा था। अभी उनका बप जीरे भापाआ में भारतीयता बिल्कुल पसन्द नहीं थी। लेकिन स्त्रियाँ जा हिन्दी बोल रही थी, वह बिल्कुल गुढ़ थी। पहला जमाना होता तो उनका दिमाग भी अंग्रेजा से अधिक ही आसमान पर चढ़ा रहता लेकिन अब उनका भाव बदल गए हैं जीरे अधिक भद्र मालूम होता है। एग्लो इंडियना में जा अपने गारंपन में अंग्रेजा के बहुत नजदीक थे वह हजारों की संख्या में भारत छोड़कर जास्ट्रेलिया यूजीलण्ड या दूसरे गार उपनिवेशों में चले गए। यानी अपना बतमान स्थिति जीरे भावी आशका के कारण अमनुष्ट हैं किन्तु बाद रास्ता नहा दीया पड़ता।

सवा ६ बजे गाम को हमारा ट्रेन आगरा पहुँची। थी रतनगल मित्रल के यहाँ ठहर। धनी मानी होने हुए भा रतनलाल जी साहित्यिक रचि रतनवाले थे। इन्होंने दा पुस्तकालय खान हैं जिनमें एक मृतपुत्र राजेंद्र के नाम पर है। राजेंद्र बालक के द्वितीय बप के विद्यार्थी था पानी में डूबकर उसकी अगमय मृत्यु हो गई। उसी के नाम पर विद्वत् साहित्य के उत्तम ग्रंथों के अनुवाक की माला वह प्रकाशित करना चाहते थे। आगरा में तीन दिन का समय रखा था। २७ के गहर गीता मन्त्रि दायन का आग्रह किया। इसीसे आनन्द धन का किमी न सवा डेन लाग्य रूपय दिए। उसीसे उन्होंने नगर में बाहर यह मन्दिर स्थापित किया। गीता प्रचार के साथ साथ लाठ सवा भा यहाँ सम्मिलित कर दी गई थी। फिर हम मित्रल

गए जहाँ महान् अक्षर जपन जधू-स्वप्ना का स्वर नाया । मार भारत का एक जानि बनान का उमका स्वप्न अब पूरा हाक रहगा दमम क्या सदेह ? आगरा क काला का वर्षों आगरा म रहन भी मैं दख न पाया । नगर क बाहर जमुना क तट पर दम स्थान म हिन्दुजा क बहुत म मन्दिर हैं । पहर भी यहा मन्दिर रह हागे । खण्डित मूर्तिया का जल्दी म उल्दी जमुना म डालन की आवश्यकता मानी जाती है ता इतिहास की उन अनमात्र साम ग्रिया क मित्रन की क्या मभावना ? बहुत स धार्मिक म्थाना का दम गतादी के जारम्भ म मैं देखा था । उस समय उनमे जीवन जाग चहल-पहल थी, निमका अब अभाव-भा दीख पत्ता था । नूरजहा के मा-बाप की करर जमुना पार एतमादुद्दीन म है । इमारत छाटी किन्तु बहुत मुन्दर है ।

रान का रागय राधक क यहा साहित्यिक गाष्ठी हुई निमम जागरा क बहुत म साहित्यिक आए । मुये यह जानकर बड़ी प्रमन्नता हुई कि पिछले पाच माला म रागय आ साहित्य-क्षेत्र म बहुत आगे बड हैं । अच्छी अच्छी कविनाएँ लिखी कहानी उपयाम रच । रागय जी के लिए यह ता कहना बिल्कुल उचित नही होगा कि वह अहिन्दी-भाषी हैं । उनका खान दान भरे हा तमिलभाषी रहा हा, लेकिन उनका जनम-करम जागरा म ही हुआ था और गायद तमिल भाषा पर बह उनना अधिकार भी नही रखन, जितना हिन्दी पर ।

श्री रतनलालजी न अतिथि मवा पर ही जपन काय की स्तित्री नही ममथी बल्कि वह अधिकतर भर हा माय रह । पश्चिमी उत्तर-प्रदेश और हरियाणा क गहरा जोर कस्वा मे बहन से जैन गृन्थ परिवार हैं । रतन लाल जी भी जैन हैं । मरी धारणा है, सभी जन वस्निया म अनिवाय रूप म रहन वाले पुस्तक भण्डारा क ग्मन्लिविन ग्रथा म हिन्दी गद्य पद्य की पुराना रचनाआ क मित्रने की मभावना है उपभ्रग क भी जनात ग्रथ वहाँ हा मरन हैं । यहा क लक्ष्मा पुस्तकाग्य क साटे चार हजार ग्रथा मे स अधिकाग ह्मन्लिविन हैं । मुये उनके दखन की बड़ी टच्छा थी । मैं दखन गया, ता माटूम हुआ, कि पुस्तकालय की चाभा मौजूद नही है । सूचीपन

देखने से काम भी नहीं चल सकता था, क्योंकि सूचीपत्र बनानेवाले अपभ्रंश ग्रंथ का भी प्राकृत का समन्वय है। गरीब वाला क' अपने क्षेत्र भरठ और अम्बाला कमिश्नरी तथा बिजनौर जिले की जन वस्तियों के पुस्तक भण्डार से हिन्दी के प्राचीनतम गद्य पद्य के मिलन की सभावना है। बहुत संभव है वह खड़ी बोली के साहित्य का १३ वीं १४ वीं शताब्दी तक ले जाएँ। बौद्ध और जन लावभाषा को अपने धर्म के प्रचार का सबसे बड़ा माध्यम मानते रहे। पालि प्राकृत और अपभ्रंश की इतनी ग्रंथराशि जा मिली है, वह इसी प्रेम के कारण। अपभ्रंश के बाद जब खड़ी बोली बुर और कुरु-जागत के जिला में उपस्थित हुईं तो उन्होंने अवश्य उसमें भी धार्मिक ग्रंथ लिखे होंगे। यह काम मेरे लिए बड़ा जाकपक है लेकिन समय कहाँ से लाऊँ यह तो मासा नहीं वपों ठाव ठाव ग्राहक छानने की बात है।

उसी दिन—२८ जनवरी—दयालबाग और पास में द्वितीय ताजमहल बननेवाले राधास्वामी मन्दिर का भी दृश्य आया। १८ बजे आगरा के कालाजा की हिन्दी छात्र समितियाँ ने अभिनन्दन किया जिसमें मुझे भाषण देना पड़ा। फिर 'सैनिक कार्यालय में स्वागत हुआ जहाँ ५० श्री राम गर्मा ५० हरिणन्दर गर्मा और दूसरे के दर्शन हुए। शाम का ७ बजे नागरी प्रचारिणी की ओर से अभिनन्दन पत्र मिला। भाषण के बीच ही देवताआ । पसन्द नया आया और बूढ़े तेज हा गद जिससे बीच में ही उन बन्द र देना पड़ा।

२९ जनवरी का सवेरे ५० श्रीराम गर्मा और डा० मत्स्यद्र के यहाँ उपपान हुआ। फतेहपुर मिनरी जान का प्राप्राम था पटल तो जान पडा, ४ माटर बिना यात्रा स्वगिन करती पडेगी। पर १० बजे वह आ ही गई और ४५ मिनट में २८ मील की यात्रा करके हम जवहर की पुरी में पहुँच गए। रामलाल जी माय के और ठापुर मागाय तो बराबर ही साथ थे। घटे हम मिनरी के महला का घूम घूमकर दगल रहे। कला के साथ जाना का हट बनाने का भा पूरा ख्याल रखा गया है और इसी वजह से साढ़े तान सौ वष बाद भी ये इमारत अच्छी स्थिति में है। महला का

कोवारो पर पहले सुन्दर चित्र थे, जिनमें अवशेष अब बही ही रह गए हैं। सरोवर का महल एक पहाड़ी के ऊपर बना है। पास की निम्न भूमि का प्रायः बाँवकर किसी समय विनाश जलागम्य में परिणत कर दिया गया था, जहाँ बाँध के अभाव में अब फिर निम्न भूमि के खेतों को वर्ष में परिणत करा गया था। सोल्ह वर्ष तक सोवरी को अकबर की राजधानी बनाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। अनुवा यहाँ से सात मील पर है, जहाँ बाद में राणा सागा को हराया था। यह निर्णायक युद्ध था, और इसमें विजय प्राप्त कर भारत में मुगल वंश की स्थापना हुई। दीवानआम और दीवानेखास यहाँ भी हैं, यद्यपि इनमें बड़े आगरा के किले में और उनमें भी बड़े दिल्ली के लाल किले में हैं। रानिया के रनिवास हैं, जिनमें कुछ हिन्दू रानिया भी थी, और अकबर ने प्रास्तावित दिया था, कि वह अपने घर में ही रहें।

पास ही विनाश जामा मस्जिद है, जिसका दरवाजा अतिविशाल (बुल्द दरवाजा) है। भीतर शेख सलीम चिश्ती की समाधि है। समाधि को सगमर का जहाँगीर ने बनवाया। निस्सतान होने के कारण अकबर साधु फकीरो की बड़ी सेवा करता था। अनेको ने दुवा भी होगी, किन्तु शेख सलीम की लग गई। अकबर ने पुनरत्न प्राप्त किया, जिसका नाम शेख के नाम पर सलीम रखा। शेख सलीम की शीतल छाया के लिए ही अकबर ने दिल्ली छोड़कर सोवरी को राजधानी बनाया। पीछे उसे अनुकूल न पाकर आगरा का अपनी राजधानी बनाया।

४ बजे आगरा लौटे। यदि ८ घंटे पहले मोटर मिली हागी, तो १२ बजे ही हम लौट आते और भाजन करके उसी समय मथुरा के लिए प्रस्थान कर देते।

गांधीजी की वीरगति—साढ़े ५ बजे आगरा से हमने प्रस्थान किया, और पौन ७ बजे मथुरा पहुँच गए। सुख सचारक कम्पनी के स्वामी डा० विन्धपाल क घर पर ठहरें। रात के ६ बजे तक वही साहित्य गोष्ठी होती रही। यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई, कि यहाँ के साहित्यिका का तल काफी ऊँचा है। सुखसचारक कम्पनी के सस्थापक प० धेनपाल शर्मा थे,

खन से काम भी नहीं चल सकता था, क्याकि सूचीपत्र बनानेवाले अपभ्रंश तथा का भी प्राकृत का समझने है। खड़ी बोली के अपन क्षेत्र भरठ और म्वाला कमिश्नरी तथा विजनौर जिन्हे की जन बन्धिया के पुस्तक भण्डारा हिन्दी के प्राचीनतम गद्य पद्य के मिलने की संभावना है। बहुत संभव वह खड़ी बोली के साहित्य का १३ वीं १४ वीं शताब्दी तक के जाए। तीर्थ और जन लोकभाषा का अपने घम के प्रचार का सबसे बड़ा साधन मानते रहे। पालि प्राकृत और अपभ्रंश की इतनी ग्रथराशि जो मिली है, यह इसी प्रेम के कारण। अपभ्रंश के बाद जब खड़ी बोली पुर और कुरु-नागल के जिला में आ उपस्थित हुई, तो उहान अवश्य उसमें भाषात्मक अर्थ लिखे जाएंगे। यह काम भर लिए बड़ा जाकपक है लेकिन समय वहाँ से गऊ यह तो मामा नहीं चर्पों ठाँव ठाँव साक छानने की बात है।

उसी दिन—२८ जनवरी—न्यालवाग और पास में द्वितीय ताजमहल बनानेवाले राधास्वामी मन्दिर का भी दख आए। १४ बजे जागरा के कालेजा की हिन्दी छात्र समितिया ने अभिनन्दन किया जिसमें मुझे भाषण देना पड़ा। फिर सनिक कार्याग्य में स्वागत हुआ जहाँ ५० श्री राम शमा ५० हरिनाकर गर्मा और दूसरा के दान हुए। शाम का ७ बजे नागरी प्रचारिणी की आर स अभिनन्दन-पत्र मिला। भाषण के बाच ही देवताजा का पसन्द नहीं आया और यूँ तेज हो गई, जिससे बीच में ही उस बन्द कर देना पड़ा।

२९ जनवरी का सवेरे ५० श्रीराम गमा और डा० सत्यद्व के यहाँ चायपान हुआ। फतेहपुर मिकरी जाने का प्रोग्राम था पहलू ता जान पना, कि माटर गिना यात्रा स्वगित करनी पड़ेगी। पर १२ बजे वह आ ही गई और ४५ मिनट में २४ मील की यात्रा करके हम जववर की पुरी में पहुँच गए। कमलेश जी माय के और टापुर माणाय ता बराबर ही साथी थे। ३ घंटे हम गिरगा के महला की घूम घूमकर दखन रहे। कला के साथ मकाना का दृढ बनाने का भी पूरा ख्याल रखा गया है और इसी वजह से साठे ता सौ वर्ष बाद भी ये इमारत अच्छी स्थिति में है। महला की

दीवारा पर पहले सुन्दर चित्र थे, जिन्हे अवशेष अब वही ही रह गए हैं। मिक्ली का महल एक पहाड़ी के ऊपर बना है। पाम की निम्न भूमि का बाँध बाँधकर किसी समय विंगाल जलाशय में परिणत कर दिया गया था, जा कि बाँध के अभाव में अब फिर निम्न भूमि के खेतों के रूप में परिणत हो गया था। सोल्ह वर्ष तक सीकरी को अकबर की राजधानी बनाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मनुवा यहाँ से सात मील पर है जहाँ बाबर ने राणा सागा को हराया था। यह निर्णायक युद्ध था, और इसमें विजय प्राप्त कर भारत में मुगल वंश की स्थापना हुई। दीवानआम और दीवानेखास यहाँ भी हैं। यद्यपि इनसे बड़े आगरा के किले में और उनसे भी बड़े दिल्ली के लाल किले में हैं। रानिया के निवास हैं जिनमें कुछ हिन्दू रानिया भी थी और अकबर ने प्रस्तावित दिया था, कि वह अपने घर में ही रहें।

पास ही विंगाल जामा मस्जिद है, जिसका दरवाजा अतिविंगाल (बुलद दरवाजा) है। भीतर शेख सलीम चिश्ती की समाधि है। समाधि का संगमरमर का जहागीर ने बनवाया। निस्सतान हान के कारण अकबर साधु फकीरा की बड़ी सेवा करता था। उनको न दुवा ली होगी किन्तु शेख सलीम की लग गई। अकबर ने पुनरत्न प्राप्त किया, जिसका नाम शेख के नाम पर सलीम रखा। शेख सलीम की शीतल छाया के लिए ही अकबर ने दिल्ली छोड़कर सीकरी को राजधानी बनाया। पीछे उस अनुकूल ने पाकर आगरा को अपनी राजधानी बनाया।

४ बजे आगरा लौटे। यदि ४ घंटे पहले माटर मिली होगी तो १२ बजे ही हम लौट आते और भाजन करके उसी समय मथुरा के लिए प्रस्थान कर देते।

गांधीजी की धीरगति—सांठे ५ बजे आगरा ने हमने प्रस्थान किया, और पौन ७ बजे मथुरा पहुँच गए। सुख सचार्क कम्पनी के स्वामी डा० विन्वपाल के घर पर ठहरें। रात के ६ बजे तक वही साहित्य-गोष्ठी होती रही। यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई, कि यहाँ के साहित्यिका का तल काफी ऊँचा है। सुखसचार्क कम्पनी के सत्यापक प० क्षेत्रपाल शर्मा थे,

जै-होन दम्बादवी अपना जीपघालय और इस कम्पनी का शुरु किया। विनापन की शक्ति का उस समय अभी अमृतधारा व मालिक जैसे कुछ ही लोग जानते थे। अमृतधारा की सफलता पर बहूतों का सपनेह था कि यह कम्पनी पुराना हो गया है इसमें जाकपण नहीं अतएव सफलता की आशा नहीं। पर प० क्षत्रपाल ने दिखला दिया कि अतिशय रगत करे जा कोई। जनल प्रकट चन्दन से हार्द। सभी युग में और आजकल तो विनापन और विनापन की महिमा अपरम्पार है। विनापन के ढग हर युग में भिन्न भिन्न हैं। यह कोई अचम्भे की वान नहीं है। प्राचीन सत महात्माजा का विनापन उनके गिप्य और अनुचर किया करते थे। आधुनिक सत महात्माजा का भी प्रचार वह बड़े दत्त चित्त से करते हैं और उसके अतिरिक्त अपनी पुस्तिका पुस्तिकाओं में भी महात्मा जा प्रचार करने में निरत रहते हैं। व्यवसाय में सफलता का अर्थ है लक्ष्मी की सिद्धि अर्थात् द्रव्य की प्राप्ति। फिर द्रव्यण सर्वे वगा द्रव्य के वग में सभी है। द्रव्य की प्रचुरता से यदि प्रथम पीढा का नहीं तो अगली पीढा का शिक्षा-संस्कृति सबधी तल बहुत ऊँचा हो जाता और फिर साधारण स्थिति के अधे शिक्षित अथ ग्रामीण पिता माता के यहाँ पदा दृष्ट व्यक्ति भी उच्च वग में शामिल हो जाते हैं। मुद्रसचारक कम्पनी के स्वामा ही नगी बल्कि उनके सम्बन्धी सिक्किगबाद के मुरारालाल गर्मा और दूसरे बहूतों की मत्तानें इसके उदाहरण हैं।

२० ताराग का शुभकार का जविस्मरणीय दिन आया। सबेरे जल पान के बाद ६ बजे म्यूजियम पहुँचे। मधुग का म्यूजियम अपना विशेष महत्व रखता है। इसकी स्थापना का श्रेय प० राधाकृष्ण का सांस्कृतिक प्रेम है। कुपाण-बाल में ही मधुरा समृद्धि के चरम उत्तर पर पहुँचा। प्रायः सारे तान गन्तव्यीयाने वह कुपाणा और उनके महाराज्यपाला की राधानी रही। अगले पहल वह गूरमज जनपद की एक मामूली सा राजधानी बन रहा पर उस समय बहूत उन्नति करने का उमर लिए अवसर नहीं था यद्यपि व्यापार के चतुष्पथ पर हान से आग बदन की बहूत-सी सम्भाव

नाएँ थी। जक्वर ने यत्रि आगरा का लाभ न किया हाता और जिस लाभ म सिकरी से उसना नजदीक हाना भी एक कारण था ता मथुरा फिर एक वार कुपाणो की अपनी ममद्वि को दाहराती। जाज मथुरा का महातम कृष्ण की भूमि के कारण है। कुपाणा के समय उसे अपने बटप्पन के लिए इस महत्व की आवश्यकता नहीं थी। कनिष्क और हुविष्क का साम्राज्य सारे उत्तरी भारत मे मध्य एसिया म अराल समुद्र तक फग हुआ था। वाणिज्य अपने चरम उत्कप पर था। कनिष्क की कई राजधानिया थी जिनम कपिशा—काबुल पुष्पपुर पगावर और मथुरा मुख्य थी। अपनी राजधानिया को सुअलकृत करन का कुपाणा का व्यसन था। कनिष्क की मथुरा क्तिनी भय और सुदर रही हाणी इसकी कल्पना की जा सकती है, पर कल्पना स कही अधिक ठोम प्रमाण यह म्यूजियम है जहाँ पर कुपाण काल की सबसे अधिक और सुदर मूर्तिया सगहीत की गई है। धरती के भीतर वह इससे भी अधिक हैं, उसे बटने की आवश्यकता नहीं। क्तिनी हा मूर्तिया तो मथुरा क् भिन भिन स्थाना म अभी भी भिन भिन देवताआ के नाम से पूजी जा रही ह। उनसे भी अधिक को जमुना लाभ मिला है। सचमुच ही जमुना, गंगा, सरजू, गण्डक जादि म सक्टा वर्षों से खण्डित कि तु जद्भुन हजारो प्राचीन मूर्तिया का डाग जाता रहा है। क्या उनके मिलने की फिर कभी सम्भावना है? मिलने पर भी दत-नग केग की तरह स्वानभ्रष्ट हा बट अपन बहुत स ऐतिहासिक महत्व को खा चुकी हैं। मुये केदार की मुद्राआ के बारे मे जानकारी प्राप्त करन की इच्छा थी। यहा केदार की सुवण मुद्रा थी। केदार को कुछ इतिहासकार पीछे का कुपाण राजा मानते हैं और कुछ उस हेपताल श्वत हूण।

फिर हम बगलवन गए। गोविंदराज का मंदिर अजवर क समय म बना था, और गायद वह बना जपूण ही रहा। बदावन जमुना के उसी तरफ नहीं था, जिस तरफ कि मथुरा। पर लाठी क हाथो अत्र मनवा दिया गया है, कि यही बदावन है। भागवत् स मालूम है कि बगलवन जान म वसुदेव का जमुना पार करना पडा। परित्यक्न और विरमत बदावन का जाविष्कार

जिहोन देवादेखी अपना जीपघालय और इस कम्पनी को शुरू किया। विनापन की शक्ति का उस समय अभी जमूतधारा के मालिक जैसे कुछ ही लोग जानते थे। जमूतधारा की सफलता पर बहुतों को सन्देह था कि यह रास्ता पुराना ही गया है इसमें जाकपण नहीं अतएव सफलता की आशा नहीं। पर प० क्षेत्रपाल ने दिखला दिया कि अनिर्णय रगत् करे जा कोई। अनल प्रकट चन्दन से हाई। सभी युग में और जानलता विनाप तौर से विनापन की महिमा अपरम्पार है। विनापन के ढग हर युग में भिन्न भिन्न ह्य यह काइ अचम्भे की बात नहीं है। प्राचान सत महात्माजा का विनापन उनके गिप्य और अनुचर किया करत थे। आधुनिक सत महात्माजा का भी प्रचार वह बडे दत्त चित्त से करत है और उसके अतिरिक्त अपनी पुस्तको-पुस्तिकाआ से भी महात्मा लाग प्रचार करन में निरत रहते हैं। यद्यसाय में सफलता का अर्थ है लक्ष्मी की मिद्धि अर्थात् द्रय की प्राप्ति। फिर 'द्रव्यण सर्वे वगा द्रय क वग में सभी है। द्रय की प्रचुरता से यदि प्रथम पीढी का नहीं तो अगली पीढी का शिक्षा ससृष्टि सबधी तत्र बहुत ऊँचा हा जाता और फिर साधारण स्थिति के अध शिक्षित अध ग्रामीण पिता माता के यहाँ पदा हुए यकिन भी उच्च वग में शामिल हो जात हैं। सुनसचारक रम्पनी के स्वामी ही नहीं बल्कि उनका सम्बन्धी मित्र-दरावात के मुरारीलाल गार्गी और दूसरे बहुतों की सतानें इसके उत्पहरण हैं।

२० तारीख का गुनवार का जविस्मरणीय दिन आया। सबरे जल पान के बाद ६ बजे म्यूजियम पहुँचे। मयुग का म्यूजियम अपना विनाप मन्त्र रगता है। इसका स्थापना का श्रेय प० राधाकृष्ण का साम्वृत्तिक प्रेम है। कुपाण गाल में ही मथुरा समृद्धि के चरम उत्थप पर पहुँचा। प्राय गाँडे शान गनान्तिया तत्र वह कुपाणा और उनके महाराज्यपाला की राजधाना रहा। अगस पहलू के मूरमेन जनपद की एक मामूग सा राजधानी भल ही रही पर उस समय बहुत उन्नति करन का उसके लिए अवसर नहीं था, यद्यपि व्यापार के चतुष्पथ पर हान से आग वन्त की बहुतों सम्भाव

नाएँ थी। अक्बर ने यदि आगरा का लाभ न किया होता और जिम लाभ में मिकरी से उसका नजदीक हाना भी एक कारण था तो मथुरा फिर एक बार कुपाणा की जपनी ममद्वि को दाहराती। आज मथुरा का महातम वृष्ण की भूमि के कारण है। कुपाणा के समय उसे अपने बडप्पन के लिए दम महत्व की आवश्यकता नहीं थी। कनिष्क और हुविष्क का साम्राज्य सारे उत्तरी भारत में मध्य एशिया में अराल समुद्र तक फैला हुआ था। वाणिज्य अपने चरम उत्तर पर था। कनिष्क की कई राजधानियाँ थीं जिनमें कपिगा—काबुल पुष्पपुर पगावर और मथुरा मुख्य थीं। जपनी राजधानियाँ को सुजलकृत करने का कुपाणा का व्ययमान था। कनिष्क की मथुरा कितनी भव्य और सुन्दर रही होगी इसकी कल्पना की जा सकती है, पर कल्पना से कहीं अधिक ठोस प्रमाण यह म्यूजियम है जहाँ पर कुपाण काल की सबसे अधिक और सुन्दर मूर्तियाँ संग्रहीत की गई हैं। घरती के भीतर वह दससे भी अधिक है, उसे कहने की आवश्यकता नहीं। कितनी ही मूर्तियाँ तो मथुरा के भिन्न भिन्न स्थानों में अभी भी भिन्न भिन्न देवताओं के नाम से पूजी जा रही हैं। उनमें भी अधिक का जमुना लाभ मिला है। मचमुच ही जमुना गंगा, सरजू गण्डक आदि में सैकड़ों वर्षों से खण्डित किन्तु जद्भुत हजारों प्राचीन मूर्तियाँ को ढाँटा जाता रहा है। क्या उनके मिलने की फिर कभी सम्भावना है? मिलने पर भी दत्त-नव केश की तरह स्थान भ्रष्ट हा वह जपन वदुत से ऐतिहासिक महत्व को खो चुकी है। मुझे केदार की मुद्राओं के बारे में जानकारी प्राप्त करने की इच्छा थी। यहाँ केदार की सुवर्ण मुद्रा थी। केदार को कुछ इतिहासकार पीढ़ों का कुपाण राजा मानते हैं और कुछ उसे हफ्ताल श्वेत हूण।

फिर हम वदावन गए। गाबिंदराज का मंदिर अक्बर के समय में बना था, और शायद वह सदा अपूर्ण ही रहा। वदावन जमुना के उसी तरफ नहीं था, जिम तरफ कि मथुरा। पर लाठी के हाथों अब मनवा दिया गया है, कि यही वदावन है। भागवत् से मालूम है, कि वदावन जान में वसुदेव का जमुना पार करना पड़ा। परित्यक्त और विस्मृत वदावन का आविष्कार

जिहान दखादेखा अपना जीपघालय और इस कम्पना का शुरू किया। विनापन की शक्ति का उस समय अभी जमृतधारा के मालिक जस कुठ हा लोग जानते थे। जमृतधारा की सफलता पर गहना का सदेह था कि यह रास्ता पुराना हा गया है इसमें आकर्षण नहीं अतएव सफलता की जागा नहीं। पर प० क्षेत्रपाल ने दिखला दिया, कि अतिशय रगड करे जा कोई। जनल प्रकट चन्दन से होई।' सभी युग में और आजकल ता विनापन तौर से विनापन का महिमा अपरम्पार है। विनापन के टग हर युग में भिन्न भिन्न हा यह कोई जचम्भे की बात नहीं है। प्राचीन सत महात्माजा का विनापन उनके गिण्य और अनुचर किया करते थे। आधुनिक सत महात्माजा का भा प्रचार वह बडे दत्त चित्त से करते हैं और उनके अनिरिक्त अपनी पुस्तका पुस्तिकाआ से भी महात्मा लाग प्रचार करने में निरत रहते हैं। यवमाय में सफलता का अर्थ है लक्ष्मी की सिद्धि अर्थात् द्रव्य की प्राप्ति। फिर 'द्रव्यण सर्वे वगा द्रव्य के वग में सभी है। द्रव्य की प्रचुरता से यदि प्रथम पीण का नती ता जगली पाडी का शिक्षा-संस्कृति सबकी तल गहुत ऊंचा हा जाता और फिर साधारण स्थिति के अधे शिक्षित अधे ग्रामीण पिता माता के यहाँ पदा हुए व्यक्ति भी उच्च वग में शामिल हा जाते हैं। सुसंचारक कम्पनी के स्वामी ही नहीं बलिन उनमें सम्बन्धी सिन्दराबाद के मुरारीलाल गर्मा और दूसरे गहुता का सताने इसमें उत्साहरण है।

३० तारीख का शुक्रवार का अविस्मरणीय दिन जाया। सबेरे जल पान के बाद ६ बजे म्यूजियम पहुँचे। मयुरा का म्यूजियम अपना विशेष महत्व रखता है। इसकी स्थापना का श्रेय प० राधाकृष्ण का सांस्कृतिक प्रेम है। कुपाण-यात्रा में हा मथुरा समृद्धि के चरम उत्थप पर पहुँचा। प्रायः सत तीन गतात्रिया तर बह कुपाणा और उनके महाराज्यपाला की राजधानी रनी। सस पहले बह मूरगन जनपद का एक मामूली भी राजधानी भल ही रही पर उन समय बहून उन्नति करने का उत्सन लिए अग्रर नहीं था यद्यपि सपार के चतुष्पथ पर हान से आग बहन की बहून-सा सम्भाव

नाएँ थी। अकबर ने यत्रि जागरा का लाभ न किया हाता और जिम लोभ म मिकरी से उसका नजदीक हाता भी एक कारण था ता मथुरा फिर एक बार कुपाणो की अपनी ममद्वि को दाहराती। जाज मथुरा का महातम कृष्ण का भूमि के कारण है। कुपाणा के समय उसे अपन वटपन क लिए इम मन्त्व की आवश्यकता नहीं थी। कनिष्क और हुविष्क का साम्राज्य सारे उत्तरी भारत मे मध्य एमिया म जराल समुद्र तक फला हुआ था। वाणिज्य अपन चरम उत्कृष पर था। कनिष्क की कई राजधानिया थी जिनम कपिशा—काबु पुष्पपुर पगावर और मथुरा मुख्य थी। अपनी राजधानिया को सुअलकृत करने का कुपाणा का व्यमन था। कनिष्क की मथुरा नितनी भव्य और सुन्दर रही होगी, इसकी कल्पना की जा सकती है, पर कल्पना से कही अधिक ठाम प्रमाण यह म्यूजियम है जहा पर कुपाण का ही सत्रमे अधिक और सुन्दर मूर्तिया सगहीत की गई है। घरती क भीतर वह इमसे भी अधिक हैं, इसे कहने की आवश्यकता नहीं। नितनी हा मूर्तिया तो मथुरा के भिन भिन स्थाना मे अभी भी भिन भिन देवताआ क नाम से पूजी जा रही हैं। उनम भी अधिक को जमुना लाभ मिला है। सचमुच ही जमुना गगा सरजू गण्डक जादि म सैन्डा कर्पो स खण्डित नितु अद्भुत हजार। प्राचीन मूर्तिया का डाग जाना रहा है। क्या उनके मिलने की फिर कभी सम्भावना है? मिलने पर भी दन-नख-केश की तरह स्थानभ्रष्ट हा वह अपन बहुत स ऐतिहासिक महत्व को खा चुकी है। मुने केदार की मुद्रा-जा क बार मे जानकारी प्राप्त करने की इच्छा था। यहा केदार की सुवण मुद्रा थी। केदार को कुछ इतिहासकार पीछे का कुपाण राजा मानते हैं और कुछ उम हफ्ताल श्वेत हूण।

फिर हम बदावन गए। गाविंदरान का मंदिर अकबर क समय म बना था और गायक वह मन्त्र अपूण ही रहा। बदावन जमुना के उसी तरफ नहीं था, जिस तरफ त्रि मथुरा। पर लाठी क हाथा अब मनवा लिया गया है, कि यही बदावन है। भागवत म मालूम है, कि बदावन जान म बसुन्व का जमुना पार करना पन्। परित्यक्त और विस्मृत बदावन का जाविष्कार

गौडिया (बगाल के) वप्पवा ने किया। अब वहाँ बगालिन भिन्नमगिनें भरी पडी था जिमका कारण पूर्वी-बगाल से भारी तादाद में गरणार्थिया का आना भी था। बृदावन गुरुकुल को देखा डेढ़ सौ के करीब विद्यार्थी मरी दृष्टि में पर्याप्त नहीं थे। अब ता गुरुकुल की शिक्षा बहुत बाता में युनिवर्सिटी की शिक्षा जसी ही है। इसलिए अभिभावक का कोई एतराज नहीं हाना चाहिए। जाजकल के जमान में १६ रुपया मासिक से लडका का कस भरण-पोषण हा सकता है, इसलिए घी-दूध का १० रुपया और कपडे का भी कुछ बन्दुन ज्यादा नहीं है। यहा के स्नातक का कई विषया में सीधे आगरा युनिवर्सिटी के एम० ए० में बठन का अधिकार है। पर कवल कला से दग का उद्धार नहीं हा सकता उसक लिए साइन्स और टेकनालाजीकी आवश्यकता है। गुरुकुल का ऐसी सस्या में परिणत करन के लिए बहुत भारी धन की आवश्यकता हागी।

रास्त में बिडला का गीता मंदिर दखा। सोमट और इट क अधिकतर कलाहीन टाँचा का खडा करक हमार सठ अपनी सुरचिका परिचय देते हैं। यहाँ मंदिर का चित्रा से भी जलकृत किया गया है और कुछ सगमरमर का भी काम है। नगर से बाहर हाने का यह मतलब नहीं कि विनापन से दूर रहन की वागिंग का गइ है। आखिर मह मथुरा से बृदावन जान वाली सडक पर है जिस पर से होकर हरेक यात्री का गुजरना पडता है। यह अविनापन युक्त विनापन का अच्छा नमूना है। दीवारा के चित्रा को देखने से यह तो मानना हा पड़ेगा कि सौ पचास वष पहले से इम विषय में हमारी रुचि आगे बनी है। यदि देग क सवश्रष्ठ चित्रकारा से सहायता ली गई हाती ता वह और भी सुंदर हाती पर फिर सभ का सवाल उठ खडा हाता।

मध्याह्न भोजन करक फिर हम मथुरा के टीला की राक छानन निरल। इनमें कितनी ही चीजें मिली हैं और अभी भा वह बहुत भारी सस्या में अन्वहित हैं। एक कालेज में नापण दकर हम चाय धीन क लिए सुगमचारक कम्पनी में गए। चाय समाप्त हा रहा थी। हम मन्दापाइ हाल

मे भाषण देने के लिए निकल रहे थे, उसी समय जो खबर सुनन म आई, उस पर काना का विश्वास नहीं। बाजार मे रडिया के सामने खडे हुए, फिर काना का विश्वास करन के मिवा जोर कोई चारा नहीं था। कुछ कुछ मिनट पर रेडिया बराबर ओहरा रहा है गाधीजी को किसी हिंदू आत साथी न आज दिल्ली म मार डाला। भला यह विश्वास करन की बात थी। गाधीजी अजातगानु थे वह किसी का अनिष्ट नहीं चाहत थे। उनके भी शत्रु पदा हो सकते है ? और सा भी हिंदू सम्यता और सस्कृति क अभिमान करते वाले लोग म ? पर महाराष्ट्र को कलक लगाने वाले, ब्राह्मणा के मुख को काला करन वाले नाथूराम गोडसे ने यह काम किया था। बुद्ध के बाद क्या भारत मे कोई इतना महान् व्यक्ति पैदा हुआ ? हमारे देश की परम्परा न हमेशा विचार-महिष्णुता को जगाकर रखा। बुद्ध अनीश्वरवादी थे जात पान जोर कितनी ही दूमरी रडिया क जबदस्त शत्रु थे स्पष्टवक्ता थे और गावी की तरह प्रियभाषी भी। ऐस ही और भी कितने ही महा पुरुष दन धरती म पदा हुए। लोग ने विचारा का विरोध विचार मे किया तलवार जोर गोली का सहारा कभी नहीं लिया। अरम गोडसे न न जाने क्या नमस्कर ऐमा किया। लेकिन, गोडसे को बुरा भला कहना ठीक भी नहीं है जबकि हम जानत है कि प्रभुता का हथियान के लिए उतावले उच्च जाति के कितन ही लोग गोडसे के पीछे थे, जा फिर से पशवासाही स्थापित करन का स्वप्न देख रहे थे। लेकिन, यह स्वप्न कभी पूरा नहीं होगा। अंग्रेजा न पजे से निकलकर कुछ उच्च जाति क तानाशाहा के हाथ म भारत अपन भविष्य को नहीं दे सकता। यहि यह सम्भव हाता तो अंग्रेजा क जाने के बाद भारत मे दस बीस मूयबश चन्द्रवग राज्य जहर स्थापित हो गए हात। भारतीय जनता यदि खुलकर अपने भावों को साफ-साफ नहीं बतला सकती तो उमरा यह मतलब नहीं, कि उसरु मन म कुछ है ही नहीं, और एरा गरा नत्थु खरा जिधर चाहेगा उधर उस वहा ले जायगा। बहुजन हित जिस ओर है, उसी आर भारतीय जनता और उसका देश जाएगा। नदिया की धारा सरल रमा मे नहीं बहती, उसी तरह जनता की धारा भी सरल

रेखा से अपने गन्तव्य स्थान पर नहीं पहुँचती पर उसकी एक दिशा हाती है, जिम ही ओर उसे जाना है ।

जिम सभा म मुझे भाषण देना था, जब वह शोक-सभा के रूप म परिणत हो गया । सभा म उपस्थित लोग ही नहीं सारे मथुरावासी स्तब्ध हो गए । ७८ साल की आयु को गांधीजी न अपन महान् काय म ही बिताया । देग की आज्ञा ही उनके जीवन का सर्वोपरि लक्ष्य था । उन साडे पाँच ही महीन पहले पूरा हात उतारन अपनी जान दे लिया था । उनकी सबसे बडी साध पूरी हो गई थी । बढ तो ये ही और गरीर स दुबले पतले भी । जाततायी और उसके पापका का दा चार बप और प्रतीक्षा करने म क्या हो जाता । जहाँ तक गांधीजी का सम्बन्ध है उनका जीवन यागस्वी रहा और मृत्यु भी । कायर जाततायी के कम पर बिचार करत हुए मुन उसी समय एक हिंदू नेता की बात याद आइ— ऐस नहीं मानग ता हम जवाहरलाल का मारेंगे, मंत्रिया को मारेंगे । हा, उहनि गांधीजी क मारन की बात नहीं की थी ।

सम्मेलन मे कार्य

३१ जनवरी को जलपान के बाद मोटर अड्डे पर गए, कि बस पकड कर आगरा जाएँ। आगरा लौटने के खयाल ही से हम यहा आए थे, इस लिए अपनी कुछ चीजें वही छोड आए थे। पर आज सारा भारत गाव मना रहा था, सभी जगह हड़ताल थी, बसें बन्द थी, एक्के और तागे भी नहीं मिल सकते थे। आगरा हाजर लौटने का खयाल हमन छोड दिया। छाटी लाइन से हायरम पहुँचे और वहा से बड़ी लाइन की गाणी पकडी। दिल्ली जान वाला गाडिया म इस समय बड़ी भीड थी लटक भर जा रह थे। जान पटना था रेल की सगारी उनके लिए मुफ्त कर दी गई है। हमे उधर जाना भी नहीं था। बलवत्ता मल दो घटा लट था, सेकड क्लास भी भरा हुआ था। किसी तरह बठन क लिए जगह मिली। आज गाधीजी की दाह-क्रिया लिहगे म हाने वाली थी, जिसके उपलक्ष्य म इटावा के पाम ट्रेन दस मिनट के लिए खची हा गई। उस समय राजघाट मे गाधीजा के शरीर का अस्मात्त किया गया हागा। आम जाने पर डब्ब म आग लग गई किंतु डाक्टर उसे घसीटकर १० मील फौफूद ले गया। लाग परेगान थे ऊपर स खतरे की जजीर काम नहीं कर रही थी। मौभाग्य से आग सुलगती भर रही उसने प्रचण्ड रूप धारण नहीं किया, नहीं ता कितनो की बलि हाती। फौफूद मे बलावन प्रवामी सेठ सेठानी आकर ट्रेन मे चले। सेठ का हाथ बरा

वर गोमुखी म या राधेश्याम क भक्त थे, अलण्ड माला फेर रहे थे, हरि कीर्तन के नी बने प्रमी थे । अब कलकत्ता जा रहे थे । उनके भक्तिभाव से हम कुछ लेना दना नहीं था, लेकिन यह देखकर बुरा जरूर लगा कि मिट्टी से हाथ धा धाकर उहाने सारा पाखाना खराब कर दिया । हमारे यहाँ व्यक्तिव शुद्धता सबसे ऊपर मानी जाती है चाहे दूसरा का उससे कितना ही अनिष्ट हा । यह मिट्टी से हाथ धोना ही था ता नीचे पड़ी मिट्टी को भी धो दना चाहिए था पर वह मिट्टी ता पाखाने म पड चुकी थी, उसको धाने से घर्मात्मा सठ अशुद्ध हा जान ।

कानपुर म कुछ आदमी उतर डब म कुछ आराम हुआ । पीन ११ बजे ट्रेन प्रयाग पहुँची और हम भारद्वाज क पास श्रीनिवासजी क घर पर पहुँच । प० बलभद्र ठाकुर के साथ रहने स मारी यात्रा बडे सुख के साथ बीती ।

प्रयाग—सत्रह दिन की ढाक प्रतीक्षा कर रही थी । सभी पत्रा का जवाब देना गकिन स बाहर था । पर बहुता का जवाब दिए । अगले दिन रविवार (१ फरवरी) सम्मन् की स्थायी समिति की बैठक हान वाली थी, इसीलिए मुझे जल्नी-जल्नी म प्रयाग जाना पडा था । स्थायी समिति म उम दिन गाधीजी का नृणस हत्या क बारे म सिर्फ 'गोव' प्रस्ताव पाम हुआ और ८ फरवरी क लिए बैठक स्थगित कर दी गई । नवजावन ' क सम्पादक हान क लिए जाग्रह किया जा रहा था । आज मैं श्री सीताराम गुटे का जवाब न दिया—मैं उस स्वीकार करन क लिए तयार नहीं ।

जगह जगह स बुलाव आ रहे थे पर मेरे सामने मुख्य काम था निमाण म लगना । बन्धुत्व की परीक्षा और चिकित्सा मानासिक गुरु नहा की थी लेकिन दिन रात म पत्रह सात्रह बार पगाव जाना शरा की चाज थी । मित्र लोग और भी अधिर गमित थे । माग क मध्य तर उगवा प्रभाव तजी म पन्ता दिगार्द पडा । यजन घट जान स ता प्रमनना हुई क्याकि प्रपत्न तरफ नी मैं उसम सफ नही हुआ था जब पट अपन आप कम हा गया था । मानूम था कि गारीरिक थम का अभाव हा इमता कारण है ।

मैं समझता था, कि टहलना सबसे अच्छा व्यायाम है, और गायद पहाडा म जाकर घूमन म इसमे लाभ होगा। यदि इन विषय म गम्भीर होता ता इसी समय घूमना शुरू कर देता, लेकिन समय का लोभ था। घूमन की जगह कुछ काम कर लेना अच्छा। वस्तुतः जब उससे कुछ हान वाला भी नहीं था यह आगे व तजर्जों से मालूम हुआ कि 'चिडिया खेत चुग गई थी'। पत्रिया ग्रन्थि अपने काम स विश्राम ले चुकी थी।

४ फरवरी को जब भी माघ मेला था। महादेव भाई के साथ हम भी सगम की जार घूमन गए। गारखपुर जिल की एक बुढिया अपने माथिमो स छूट गई थी। उसे अपने जिल का भी नाम नहीं मालूम था गाव का भला प्रयाग म कौन जानता। लेकिन बोली स पता लग ही रहा था कि वह किस जिले की है। मैंने उसके जिले के आदमिया के पास पहुंचा दिया। यह सौभाग्य हा था, नहीं तो भारत के किमी दूर स्थान म भटकने पर उसे कितना मुश्किल हाता। साधुओ व डेरा म अब भी घम घ्रनि हो रही थी। अब भी सक्डो की पगत भोजन के लिए बठी थी अब भी श्रद्धालु भक्तो की कमी नहीं थी। स्वामी विद्वदानन्द अपने साथ गया पार झूसी मे ले गए। वहाँ उहाने एक कस्तान को आश्रम म बदल दिया था दा एक पक्की कोठरिया बनवा कर बडे बडे स्वप्न देख रह थ। कभठ जीव है। १९१३ म बरेली जिले के रामनगर गाव म पैदा हुए। पिता कज छाड गए थे जिसे हटाने व लिए दिल्ली म नीकरी करने लग। फिर घूमन निकले तय से घूमते ही रहें। स्त्री मर गई और लडकी का ब्याह कर दिया। सुभीता यह भी हुआ कि पहले जायसमाजी बने फिर कांग्रेस की ओर रित्चे और १९४२ म बरेली के रेकाड घर जलान मे हाथ बँटाया। रेकाड जिसमे हमारे भी बहन स एतिहासिक रेकाड रखे हुए थे। इतिहास लिखने मे इनकी जत्यत जावश्यकता थी। पर उस समय इतना विवेक किमको ? अंग्रेजा का रेकाड घर है, उसम आग लगा दो। गढमुक्तेश्वर म भी पहुँचे और वहा हिंदू घम रक्षा के लिए खडग धारण किया। झूसी म गया तट पर भी उम व्रत का पालन किया। मन म वात बैठ जानी चाहिए, फिर -

काम करने के लिए ता वह थकना नहीं जानते। अनीश्वरवादा है किन्तु आदावादी है रक्तपाणि है किन्तु स्वाध्याय। सवा करन की पुन है लेकिन अनुशासन के फदे म गायद ही भैस सके। पुरान समय मे झूसी एव नगर था जिमका नाम प्रतिष्ठान था प्रयाग उस समय तपस्विन्या का जगल था। झूसी के टीलो म बहुत सी ऐतिहासिक सामग्री छिपी हुई है। उनकी कुटिया व पास क टीले म ही गुप्तवालीन इटें दली। सर करन म श्री महादेव साहा भी भाय थे।

गाधीजी की हत्या के मम्बाय म पीछे और भी बाता का पता लगा। पडयत्र म शामिल होने वाला म स एव ने बम्बई क प्राफेसर डा० जगनीचन्द्र जन म अपन मनमूव का बतलाया था। डा० जन न बहुत व्यग्रता के साथ कम सूचना का बम्बई क मन्त्रिया तक पहुँचाने की कागिंग की जोर चाहा कि अधिक सावधाना करती जाए। लेकिन मन्त्रिया का उमकी पर्वाह कहीं ? या पर्वाह थी ता मुम्ती को इतनी जल्दी त्याग कर सकत थे। अब राष्ट्रीय स्वय सघ क नेताआ की गिरफ्तारियाँ हा रही थी। सघ की अंतिम चौकडी पेशवा राज्य का स्वप्न दम रही थी। जाट और राजपूत का थप्पा उठाए दूसर नेता भी मदान म उनरे टुए थे। मठ लाग लूट मक्ता लूट क फर म थे। जजब हालत थी। इस हत्या म नेताआ की जीवें खुली जरूर। २८ फरवरी का जवाहरलालजा १२ तारीख क गाधीजी क अस्थि विसर्जन की तैयारी दमन आए थे। जानद भवन की सडक पर बन्दुन भीट थी और चारा तरफ पुलिस पल्लन का पहरा बटा हुआ था।

६ फरवरी का श्री पणि मुपजी म भेट हुई। दम माठ पहर वह मरे गाय निरत गा व उम समय जल्द बपनाइ जवान थ। जिमके कारण मुगल कुछ मरमुगल भा हा गया था। अब वह विवाहित के एक बच्चा के बाप नी। जवाबन्दी जीवन का गम्भीर घनातो है। अगल दिन उनक घर चाय पीन गया। उम मनमुगाव का कर्षे पता ना नही था। ममय भी भाग चिक्किमक हाता है।

८ फरवरी का साहित्य सम्मेलन की स्थायी समिति की बठक थी।

भिन्न भिन्न समितियों का चुनाव गान्तिपूर्ण हुआ, यह जानकर प्रमत्तता हुई कुछ मनभेद अवश्य लिखाई पड़े। परिभाषा निर्माण का भार मुझे दिया गया। दारागंज इण्टर कालेज के प्रिंसिपल श्री चौधरी और यूनिवर्सिटी क्लब का सत्यप्रकाश के साथ उप समिति बनी। नागरी प्रचारिणी और नागपुर के विद्यार्थियों का भी सम्मिलित करने का निश्चय लिया गया। डा० रघुवीर नागपुर में परिभाषा का निर्माण का काम कर रहे थे। उनका निर्माण का ढंग ऐसा था जिसमें सहमत होना भारत के किसी भी विद्वान के लिए सम्भव नहीं था। उनकी धारणा थी कि संस्कृत में २० उपसर्ग २००० धातु और ३०० के करीब प्रत्यय हैं इनके घटाव-बढ़ान में हम अथवा जल जल गठन बना सकते हैं, और उन्हें एक एक अंग्रेजी शब्द के लिए इस्तेमाल करके उन वस्तुओं के साथ चिपका सकते हैं। इस तरीके का हमारा पहा या कही भी इस्तेमाल नहीं किया गया। एक शब्द सवया अनान होने अनात में अनान का परिचय अति दुष्कर है, यह सभी जानते हैं। भारत में ढाढ़ हजार वर्ष में परिभाषा बनती आई है, उसके परिणामस्वरूप भिन्न भिन्न विषयों के दस हजार से अधिक पारिभाषिक शब्द हमारे पास मौजूद हैं। उनमें अधिकतर बातें ही अनान के परिचय कराने की कोशिश की गई है, और कभी कभी बहुप्रचलित विदेशी शब्दों का लन में भी आनाकानी नहीं की गई। उदाहरणार्थ कर्त, ग्रीक शब्द है यह जिस अर्थ का प्रतिपादन करता है, वह मध्य विदुस प्रकट नहीं हो सकता था इसलिए विदेशी शब्दों का ही हमारे पूवजा न ल लिया। कर्त, के द्रत, कर्त्रीकरण जादि इसके रूपा का देखकर कौन कह सकता है, कि यह संस्कृत का शब्द नहीं है। मरी यही धारणा रही, कि हम नए शब्दों को बात में अनान की प्रक्रिया में गठना चाहिए और बहुप्रचलित विदेशी शब्दों का भी स्वीकार करने से परहेज नहीं करना चाहिए।

१० फरवरी का चित्रकार सगलजी अपनी चित्रालय लिखान के लिए ले गए। मगीत चित्र और कविता में मेरा अपना दृष्टिकोण है कि यह प्रवृत्ति के अधिक से अधिक नजदीक रहना चाहिए। उनका भरत में काइ

हृज वही लेकिन बुनियाद घरता पर रत्नी चाहिए। संगीत के नाम पर उस्तादा की गलाबाजी से मुझे बड़ी चिढ़ है। उसी तरह चित्र के नाम पर लिक्कारिया भी मुझे बिल्कुल पसन्द नहीं है। चाहे इन लिक्कारियों के साथ बड़ बड़े लागा का नाम जान्पर रीव डालन की कागिश की जाए। सगलजी के सुन्दर चित्र मुझे पसन्द आए क्योंकि उनमें प्रकृति के साथ साथ रहन की कागिश ही गई थी। गुप्तवाल को चित्रकला और मूर्तिकला इसीलिए महान् है कि उस कल्पना और यथाथ के सम्मिश्रण से बनाया गया है। उन्म मसिया (गान प्रकाशक) कविता का विगड़े गायरा की कृति बनलाया जाता है। मैं समझता हूँ, कि प्रकृति का सवथा उत्कलघन करने वाली चित्र मूर्ति कविता मला भी उसी तरह विगड़े कलाकारा का काम है।

मन पर जान की मरी उत्कठा इसलिए भी हुआ करती थी कि प्रयाग में नाना स्थानों में जाए हुए घुमकटा में गायद काई मरा भी पुराना परिचित निकल जाए। इसी विचार में ११ फरवरी का भाजनापरात हम सगम पर गए। 'जिन दूना तिन पाइयाँ का वात सच्चो निकनी। एक युग के गान भागवताचार्य से मुग्धान हुई। तीस वष तो जरूर बीत थे। उस समय वह तन्मय थे और जब बड़े। लेकिन कमठता अब भी उनमें बसा ही था। फिर खान् कर मिठ। कितनी ही वाता में हम समानधर्मी थे यद्यपि हमारे कायक्षेत्र जल्प अलग है और एक दूसरे से भी दूतने दूर जाकर रहने लगें कि आज तीस वष बाद मुग्धान हुई। रामानदी—बगगी—मता में घुमकटा तथा दूसरे कितने ही गुणध परन्तु विद्या का उनमें अभाव था। गस्त्रीय तीर में उनकी नाव कमजार था। ५० भागवद्व्यास नम कमी को दर करन का बान्ग उठाया और रामानदी का उनके उचित स्थान पर गठान का प्रयत्न किया। रामानदी रामानुज या किमी भी दूसरे धार्मिक दुधारक और विचारक से कम नहीं थे, बल्कि कह सकते हैं कि दूसरे लीर में फकीर थे जब कि रामानदी नमम की माँग लेगते हुए नया रास्ता देवाला। ममा प्रयाग के एक धातण परिवार में वह पैदा हुए। फिर घुम करन करन रामानुनिया के प्रभाव में आकर साधु हो गए। एक आर

कट्टरपथिया के कारण दम घुटत वातावरण म बाहर निकलना चाहत थ, और वह साथ हा हिंदू धम और मस्जिद का नीताजी हवा म गना चाहत थे । दूसरा आर मुस्लिम गामका क प्रभाव स जिम हीन अवस्था म हिंदू पढे हुए व उसकी भी चिकित्सा करना चाहत थ । उहात माचा—जात पात के बाधना का ढीला करना हागा, छुआछूत म बाहर निकलना हागा, कूपमडूकता दूर करनी हागी जोर उद्धार क लिए पण्डिता आर मामता ही नही, बल्कि जनना और उसकी भाषा का महारा लेना हागा । उहात इन विचारा का काय रूप म परिणत किया । रामानंद क गिष्य ब्राह्मण स चमार तक सभी जातियो क व । कबोर न अपन गुण का नाम उज्ज्वल किया । रविदाम न बतला दिया कि जम काई चीज नही है गुड विचारवाले महापुरुष चमार क घर म भी पदा हा मकत ह । छुआछूत को जितना दूर तक उहाने हटाया था वह पीछे वहाँ नही रह सकी । ता भी वही जानिया का सहभाज कम नही था, जोर सहपक्ति म ता बल्कि प्राय सभी जातिया के माधुआ का सम्मिलित किया गया । कहावत है कि माधुआ की पक्ति म पत्तला का अभाव दखकर तुम्हीनाम किमी साधु की पनहा लेकर पीति म जा बठे । उहाने ममज्ञा था माधु की पनही से बढकर पवित्र कौन दूसरी चीज हा सकती है । कूपमडूकता दूर करन म रामानंद की शिक्षा न कितना काम किया, यह इसीम मातूम हागा कि तब से हजारों बंरागी देग और देग क बाहर भी कुछ दूर तक मना धूमकवडी करते रह । इसके फलस्वरूप भारत क कोने कान म ही नही बल्कि अफगानिस्तान म भी बंरागिया की कुटियाएँ बन गई जहाँ जाने जानवाये धूमकवड चार दिन अच्छी तरह घर की तरह विधाम कर सकत हैं । यद्यपि भाजन क छुआछूत में बरागी उत्तन नही आग बडे जितन कि सयासी और उदामी, ता भी रामानुजी काल्हू क बल यहा पदा नही हा पाए । जनना की भाषा का रामानं न स्वय अपनाकर कुठ लिखा जरूर था, लेकिन वह अधिकतर पद थ जिनकी भाषा पुरानी थी, और वह अधिकतर कण्ठस्थ रखे गए थे । इसके कारण रामानंद की यह अनमाल कृतिया पूरे रूप म हमार गामने

नहीं आ पाई। लेकिन रामानंद न ही हम तुम्हारी वास्तु, उन्हीं की परम्परा में अग्रदास और दूसरे मत थे। सचमुच रामानंद का काम महान् था इतना महान् कि लोग उमरा जभी टीन से मूल्यांकन नहीं कर सक। प० भागवतनाम (जब प० भगवताचार्य) ने उसी रामानंद के चण्डे को उठाया था। उस समय पहल-पहल स्वामी भगवताचार्य ने जब गेरआ कपड़ा पहना तो बरागिया में खलबली मच गई। वह समझते थे कि गेरआ कपड़ा तो मन्दासिया की चीज है। अब भी उत्तम गेरआ कपड़ा पहननेवाले कम नहीं हैं लेकिन अब उमरा उन्हीं की नहीं है। स्वामी भगवताचार्य का अब उनमें बहुत सम्मान है। एक दूसरे से दूर रहने पर भी पुस्तकों और कभी कभी पत्रों द्वारा हम एक दूसरे की गतिविधि का परिचय रखते थे। हम प्रसन्नता हाती थी, कि दाना ही अपने साथ मत्सर रह। प० भगवताचार्य ने संस्कृत में तीन भागों में गांधीजी की जीवनी लिखी है और भी रितनी ही पुस्तक लिखी है। उस समय वह सन्ना की मडली में बठ हुए थे। बाल गिरार पर माटे झाटे भगवत कपड़े को देखकर बाई जान नहीं सकता था कि यह इतना तेजस्वी पुरुष है, यदि उसकी नजर उनकी चमकती आँखा पर न पड़ती। उन्होंने स्वागत करने हुए उपस्थित सत्ता से मेरा परिचय कराया और कुछ कहने के लिए कहा। बाई घुमकट सन्नासिया से बड़े बड़े घुमकट का पत्र करनेवाले उस मण्डली के प्रति सम्मान लिखाए बिना कम रह सकता था। उस समय की कुछ बातें याद आ गई जब कि मैं निद्वन्द्व ही के भातर घूमना था पहल-पहल घुमकट का पत्र का उन्हीं के पास कर साया था। उन्हीं के साथ न घन बना और तुल्य पत्रों का भय की ने प्रम की चान बना दिया। घन भर बने प्रितान के बाल हम गगा पार तमा हमसे व स्थान पर गय। स्वामी मन्सुरूपजी और दूसरे सन्ना से था और दूसरे विषया पर बातचीत हानी रहा। कुछ तरण माधु मिठाना देकर बने प्रमसना हुद हम स्थाल में कि यह मन्सुरूप के गम्भीर डित्त का म नष्ट न होने देंगे। मन्सुरूप घुमकट डा० मगलदय नास्त्री से रहा गई। चौदह वष में प्रमाणवातिकभाष्य छपने की प्रताशा कर रहा

था। निम्नलिखित परिश्रम जोर प्रेम से उत्तारकर मैं लाया था। कई दरवाजा का दस्त, आंगा हा हा करके भी वह प्रेम का मुह नहीं दल सका। डा० मगन्दासजी दय न वासी सम्भृत कालेज से छपान की बात की तो मुझे बहुत हृष हुआ यद्यपि दूध के जेठे का जैसे छाछ भी फूँक फूँक कर पीना पता है मैं सहसा विश्वास करने के लिए तैयार नहीं हो सकता था, कि "प्रमाणवातिकभाष्य" की नया पार हो जाएगी। मचमुच ही अभी उस और कई घर देखने थे और अन्त में सान वष बाद पापमवाल सम्मान ने उसे प्रकाशित करने का पुण्य काय किया।

१२ फरवरी का गांधीजी का त्रिवेणी में अस्थि विमजन हानवाला था। त्रिवेणी में भी अस्थि विमजन को क्या महत्व दिया गया? न गांधीजी की समाधि धार्मिक मायता थी न जवाहरलाल जैसे शक्ति ही नेताओं की हो सकती थी। अस्थि विमजन दिल्ली की जमुना में भी हो सकता था। गायद दिल्ली में इस कृत्य का सम्पादन करने में सम्मान का जपूण रूप में ताहराना भर होता और यहाँ उसके लिए एक नया स्थान मिल रहा था। गांधीजी का अस्थियाँ दंग के भिन्न भिन्न भागों में बाँटकर विसर्जित की गईं, लेकिन उनके विसर्जन का विगम समाराह जवाहरलाल की जमनगरी प्रयाग में ही हुआ। लोग जान गये कि भीड़ अपार होगी। रास्ता निश्चित था। हम भी रिजेंट सिनमा के पास की एक काठी में ६ बजे ही जाकर बैठ गए। कितनी ही लाग और भी पहले से सड़क के किनारे बटपर के बाहर विछावना बिछाकर बैठे हुए थे। अस्थि का विगम ट्रेन में दिल्ली से लाया गया था। ६ बजे जलूम निकलनेवाला था उसमें छेड़ घटे की देर थी। सड़क पर दस दस हाथ के फामले पर सनिक तैयार थे। सड़क के किनारे के मकानों की छता पर भी लागा की भीड़ थी। गांधीजी का गव नहीं था। उसके लिए जा भाव पदा होता, यह अस्थि के लिए नहीं हो सकता था। इसीलिए जलूस में जानवाँ मालूम हो रहे थे मले में जा रहे हैं। वही बात दंगरी में भी अधिकांश में देखा जाती थी। जलूस में जवाहरलाल पैदल चल रहे थे। बल्लभभाई और ५० गाविन्दवल्लभ पत्र के लिए पैदल चलना समक

नहीं था। और भी कितने ही लाग गाडिया पर थे। एक लोरी पर अर्ध गीता पाठ हा रहा था जिसमें बाबा राघवदासजी भी सम्मिलित थे। पीन ११ बजे जलूस हमारे सामने से गुजरा।

नजरबन्दी के दिना में मैंने सिगरेट पीना साखा था। १९४० से १९४१ तक पीता रहा। क्यों पीता था? देखादेखी ही कह सकती हूँ या समय काटने के लिए। लिखने बन्द तो मैं कभी सिगरेट नहीं पी सकता था। यह लाभ जरूर था कि इसका द्वारा मित्रों का स्वागत सत्कार हा सकता था। मेरे मित्रों का कहना था कि इसमें रस जाता है। मुझे वह रस कभी नहीं मिला अच्छे से अच्छे सिगरेट का पीकर भी वही बात देखी। किना किसी का कहना था पचास सिगरेट के एक पूरे डिब्बे का पीन पर विस एक म रस आएगा। लेकिन वह मेरी गक्ति से बाहर की बात थी। ईरान में सिगरेट पीता रहा रस के जपन पच्चीस भास में उन बिल्कुल छाड़ लिया। लन्दन से फिर यह बला पीछे पड गई जहाज में श्रष्ट सिगरेटों के बट्टन मस्त दाम पर मिलते देखकर मिश्रमण्डली का उससे सत्कार करने का ख्याल आया। अब वह मुझे दिल्ली का लड्डू मालूम हा रहा था—गो खाय वह भी पछनाए, जा न खाए वह भी। मैं उस छाड़ना चाहता था और आज इस पुण्य दिन मैंने उस छाड़ दिया।

लखनऊ—उसी दिन रात का लखनऊ के लिए रवाना हा गया। साट पहले हा से रिजब थी नहीं तो प्रयाग से लौटनेवाली भीड़ के कारण जगह नहीं मिलता। सवरे साट ७ बजे लखनऊ पहुँच रिमाल्टार बाग में श्री बाघानन्द महास्यविर के यहाँ ठहरा। काफी दिना बाद मैं यहाँ आया था। महास्यविर का तरीर अब दुबल हा चला था। ७५ बष के हो गए थे, ऐतिन बान करने में जब जाग आता, तो उनका वही तजस्विता देखने लायक हाता। बिहार की भूमि में अब मरान बने चुने थे। पिछले मदान से बीम रपया मामिक तिराया भी मिगता था। महास्यविर का इसकी चिन्ता थी कि कब बिहार का काम पाछे भी ठीक से चलता रहेगा। कुछ ता उनका पढने का बन्त गीव था और उतना ही सप्रह का भी। इस

प्रकार त्रिहार मे एक काफी बडा पुस्तक भण्डार जमा हा गया । महास्थविर जब भी मुयमे मिलत भावोद्रेक म सजल-नेत्र हुए बिना नही रहते थे ।

चायपान म वाद केसरबाग म म्यूजियम देखने गय । उत्तर प्रदेश का यह सबसे बडा संग्रहालय है । मुझे "मधुर स्वप्न" उपयास लिखन की धुन थी । उपयास उस काल का था, जब कि पाचवी छठी गताब्दी म हफ्ताल (स्वैत हूण) उत्तरी भारत के बहुत से भाग अफगानिस्तान और मध्य एसिया क ग्रासक थे । मैं उनके इतिहास की कुछ गुत्थिया व सुलचाने म लगा हुआ था । म्यूजियम मे केदार के निकक थे । जिह लघु कुपाण भी कहा जाता है । उधर कुछ लाग केदार को हफ्ताला (स्वैत हूण) का नता मानत हैं । हफ्ताल हूण नही थे इमम ता काई सदह नही ।

१४ फरवरी का यगपाल जी से मिलने गया । वह इस समय दुगा भाभी व यहां रहत थे । वहा म फिर नरेन्द्रजी के यहा गये तो मालूम हुआ कि वह बाहर चले गए है । तीन घटा रिक्शा लवर म्यूजियम गोमती कम्पनी बाग आदि की सैर करत रहे । सवा १२ बजे नरेन्द्रजी के यहा पहुच और दो घट तक उनसे बातचीत होती रही । गाम्नीय वाता के अतिरिक्त परिभाषाओं व वारे म विरोध तौर से हमने विचार विनिमय किया । उह जागा थी, कि मैं कुछ दिना टहहूंगा, किन्तु जब समय कम और काम ज्यादा थे ।

बरेली —उसी दिन बरेली जाने का विचार था, लेकिन अगले दिन गनिवार को पजाब एक्सप्रेस म मुश्किल से जगह मिली । डब्बा मे पलटन और पुलिम के अफसर भरे थे । तीन सज्जन बात करने मे होड लगाये हुए थ । अपने राम ता मारी यात्रा म ऐसे बटे रहे जिससे लोगो को भ्रम हा सकता था, कि यह जादमी गूगा है । बात करने की कोई जरूरत भी नही थी । बिडकी से बाहर हरे भरे खेतो का देखता, कही कही ऊख भी खडी थी । इस लाइन म सफर करने पर सडीला की मिठाई हमेशा आकषण की चीज हानी है । यद्यपि अब वही लड्डू नही हाते ता भी नाम का गुण कुछ जरूर दिग्वाई पडता है । बरेली ट्रेन लेट पहुँची । स्टेशन पर प्रा०

रामाश्रय मिश्र कितने जोर अध्यापको तथा विद्यार्थियों के साथ जब फूट माला गल म डालकर उतारने लगे तो डब्बे के साथियों को आश्चर्य हाना ही चाहिए। उह क्या मालूम, यह गूग की तरह बठा आदमी कौन है। मिश्रजी के साथ हम उनके निवास पर गए। परिवार म पाच स तानें दो स्त्री पुरुष और अघी माता आठ प्राणी थे, और कमानेवाला सिफ एक आदमी। शिक्षित परिवार का भार वहन करना हमारे यहाँ कितना मुश्किल है इसका अन्त कब हागा ?

१६ तारीख को मवेर ६ बजे में रिक्शा लेकर अक्ले ही चल पडा। बरेली म मरे घुमवकूडी जीवन के बहुत म परिचित स्थान थ। १९१० म पहल पहल इस नगर म आया था तभी से एक मधुर स्मृति बराबर मन म बनी रहती है। आज उन स्थानो को फिर देखने की इच्छा की। बरेली सिटी स्टेशन के सामन अम्बाप्रसाद गार्ह की घमगाला म गया, जिनम १९१० के उत्तराखण्ड की यात्रा स लौटकर कुछ दिना ठहरा था। जब भी वह थमी ही थी। पीछे बाग भी बसा ही था, आंगन कुछ कम साफ मालूम हाता था। बगल वाली बट घमगाला भी मौजूद है जिसम कापाय बस्त्र धारी प० खुनीलाल शास्त्री बाधि प्राप्ति का प्रयत्न कर रहे थ।

वहाँ स निकलकर छोटी लाइन के साथ की सडक से रिक्शा आगे बला। एक मयामी मठ म गया। माच रहा था यहाँ कोई खण्डित मूर्ति मिला थी जिसस बरलीक इतिहास पर कुछ प्रकाश पडेगा। पर कोइ नही मिली। पूछन पर अलखनाथ चम्पनराय की बगिया आदि स्थानो के नाम मालूम हुए। एक धैरागी स्थान म गय। वहाँ हकौल चल रहा था जिसम दो पस म एक गिलास गन का रस मिल जाता था। मैंन तीन गिलाम रस पिया, ६ पस दिय। महतजी का ही बर बान्हू था, उहाने पसा लन स इन्वार कर दिया। धूमत हुए भरवनाथ मन्दिर म गय। १९१० क फकरडीपन और सतीवता का यहाँ कुछ कुछ परिचय मिया। कफड और गौज का विलम चल रही थी और भाँग छनन की बान हा रही थी। नाया का मन्दिर हाणे क कारण मैंने पुस्तका क बार म पूछा ता मारव पय की कुछ

छपी साधारण-भी पुस्तकें दिखलाई । अपनी परम्परा का ज्ञान जब बड़े बड़े नायकपयिया का नहीं है ता यहाँ उसकी क्या आगा हा मन्ती थी ? हा, यह जानकर प्रसन्नता हुई कि घुमककटी का वातावरण यहाँ कुछ दिखाई दे रहा था । छोटे से स्थान के आंगन म कई मूर्तिया मौजूद थी ।

मध्याह्न भाजन क समय में मिथजी के घर पर लौट आया । ४ बजे तक यही गांठी चलती रही, फिर बगली कालज गया । इस कालेज की स्थापना १८३७ म—महाविद्राह से बीस साल पहले—हुइ थी । इस समय इसमें १३०० के करीब छात्र थे । कालेज के अधिकारिया म दकियानुमी वूला का प्रभुव है । उत्तर पचाल (स्टहल्यण्ड) उत्तर प्रदेश क सबसे कम जाग्रत स्थाना म हैं । वूढो म जान न हा, पर जवाना मे क्यो नहीं, यह समय म नहीं आता । हर जगह शिक्षित मध्य वग द्वारा राजनीतिक और सामाजिक जागृति आई है । यहा का वह वग अधिकतर मुस्लिम भद्र वग था और वह राष्ट्रीय भावना से दूर हट कर विदगी शासका की मुखई हासिल करने की कागिण करता था । क्या यह कारण हो सकता है ? कालेज म पहले फाटा, और फिर चायपान हुआ । इसके बाद विद्यार्थियो और अध्यापको के मामन कुछ कविताएँ पत्ने गइ कुछ भाषण हुए और अत म मैंने साहित्य और हिंदी के मविष्य पर भाषण दिया ।

१७ को दापहर तक निवासस्थान पर ही साहित्यिका की गांठी जमी रहा । भाजनापरांत २ बजे निकले ।

केन्द्रीय जेठ मे ७०० के करीब बदी थ । हाथ का कताई, हाथ की बुनाई पर ज्याला जोर दिया गया था । बदिमा का जब अपन परिश्रम का काई बदला नहीं मिलता, ता उह काम करने की क्या प्रेरणा हाने लगी ? हाँ एक नई बात देखी कि अब रसाईघर मे पत्तर क कोयले क तन्दूर थ जिन पर राटियाँ पलाई जाती थी । इननी तेज आच के तन्दूर म हाथ मुह चुलसने स बचाने का काद बचाव नहीं था । जेल की रोटिया कच्ची हाना थी य बसी नहीं थी । वहाँ स पाम हा लटक बदिमा का जेलखाना था, जिनम सी स ऊपर बदी थे । यहाँ हरक की अपन काम का पारित्यमिक

मिलता था इसलिए उनकी काम करने में रुचि थी। सारा काम हाथ से होता था, अर्थात् उपज बहुत निम्न तल पर हो रही थी, तो भी हरक लडका बीस पच्चीस रुपया मासिक कमा लेता था। यहाँ कपड़ा बुनने सीने का काम जूता खिलौना कुर्सी मेज आदि का काम कराया जाता था।

बरेली में बन्द्रीय भारत का सबसे बड़ा पशु अनुसंधान प्रतिष्ठान है जिसका प्रबंध सरकार के हाथ में है। गहर से बाहर यह विशाल संस्था बहुत दूर तक फैली है। यहाँ पशुओं का खाने का विश्लेषण होता है और कसे पुष्टिहीन तणा को अधिक पुष्टिकारक बनाया जा सकता इसका तजर्बा किया जाता है। वृत्तिम गर्भाधान का भी प्रयोग होता है। यत्र द्वारा बीज-निक्षेप करने से एक साठ बीस गाया के लिए और अधिक प्रबंध हो, तो दो सौ गाया के लिए पर्याप्त होता है। विशालकाय साँड़ छोटी जाति के गाया के उपयुक्त भी नहीं है। सतत लेकिन इस विधि से कोई हानि नहीं है। एक छोटी पहाड़ी गाय और गहरीवाल साँड़ की आठ मास की सुन्दर बछिया का दूदा जिसने सामने उसकी माँ छोटी मालूम होती थी। बहुत ता नहीं थे, कि इस तरह से प्रसव के वक्त कोई दिक्कत होती है। पर पूर्वी बंगाल और आसाम के सीमांत पर जना भसा से ग्रामीण भसा की मन्ताना के प्रसव के समय प्रसव के बड़े हान से अधिक सरपस में भसा के मरने की बात सुनी जाती है। वहाँ जंगली अर्ना भसें स्वजातीय ग्रामीण भसा के घुण्ड में आ जाया करती हैं।

लौटकर नाम का चाय डा० दयामस्वरूप सत्यव्रत के यहाँ पीनी थी। डाक्टर साहब पुराने आयसमाजा आदर्शवादी पुरुष हैं। अपने सारे परिवार को आयसमाज के माँच में ढालने की कोशिश की है यद्यपि उपहासास्पद रीति से नहीं। टोन हाल में पहुँचकर वहाँ भाषण देना पड़ा। जहाँ बरेली के गण्यमान्य नागरिक मौजूद थे। अगले दिन (१८ फरवरी) सबरे की चाय श्री रामजागरण सम्मेलन के यहाँ हुई। सबसनाजी कवि जी अध्यापन रहे। कवि अर्थ भी हैं, लेकिन अध्यापकी छोट बवालत करने लग और अच्छे चमके। लेकिन कविता का प्रेम उनके हृदय से नहीं गया।

की देखादेखी बरेली के तरुण कवि निरवारदेव भी कालत म चले गये ।
 तल-लकड़ी का प्रवच यदि स्वतंत्र रीति से हा सके, तो साहित्यकार
 लिए इससे बढ़कर और कौन बात हो सकती है ? बरेली का मरा जहाँ
 अनुभव रहा, बहुत जच्छा रहा । बहुत से योग्य साहित्यकर्मी यहाँ
 । प्रो० भोलानाथ गमा ता गुण्डी के लाल निवले । उनकी एकाध
 तिया को पहले भी मैं देण चुका था । लेकिन, उनके बारे मे इतना जानने
 मौका इसी समय मिला । प० भोलानाथजी बरेली कालेज म सस्कृत के
 प्रोफेसर हैं । गोयधे की प्रसिद्ध कविता "फौस्ट" क एक भाग के जमन से
 हिन्दी मे अनुवाद का मैं देण चुका था । लेकिन, यह जानकर मुझे
 आश्चर्य और खेद भी हुआ, कि वह ग्रीक भाषा के भी विद्वान् हैं ।
 आश्चर्य इसलिए, कि ग्रीक के प्रथरत्नी का सीधे हिन्दी म करनवाला एक
 विद्वान् मिल गया जो ग्रीक के साथ सस्कृत का भी पण्डित है । आश्चर्य
 इसलिए कि अब तक इनको लोगो न पहचाना क्या नहीं, और खेद इसलिए
 कि उनके ज्ञान का कोई उपयोग नहीं लिया जा रहा है । शर्माजी न प्लातोन
 (प्लेटो) क प्रसिद्ध ग्रथ 'पोलितेइया' (रिपब्लिक) का हिन्दी म अनुवाद
 किया था पर प्रकाशित करनवाला कोई मिल नहीं रहा था । मैंने उनसे
 कहा कि इसे सम्मेलन द्वारा प्रकाशित कराऊँगा, और ग्रीक मनीषिया की
 महान् कृतिया को हिन्दी म ला देने को आप अपन जीवन का लक्ष्य बनाइय ।
 यदि अरिस्तातिल (अरस्तू) के सभी ग्रथा को आप हिन्दी म ला सकें, ता
 हमार साहित्य पर यह इतना बडा उपकार होगा, जिसके लिए वह हमसा
 आपका कृतन हागा । उन्होंने पुस्तको के अभाव की शिकायत की । प्रयाग
 म आने पर मैंने यह बात आचार्य क्षेत्रेगचन्द्र चट्टोपाध्याय मे कही । उनके
 पाम लातिन अनुवाद के साथ ग्राक साहित्यकारो म अरिस्तातिल और
 प्लातान के करीब करीब सारे ग्रथ लातिन अनुवाद के साथ दो शताब्दी
 पहले क छपे मौजूद थे । यह समाचार सुनकर वह भी मेरी तरह अत्यन्त
 प्रसन्न हुए और कहा, इन ग्रथा के भरे पुस्तकालय म रहने का कोई फायदा
 नहीं, इनसे शर्माजी काम लें । मैंने उन ग्रथा को सम्मेलन का प्रदान करवा

वहा से अच्छी जिल्द बंधवाकर गर्माजी के पास भेज दिया। मेर जोर दन पर सम्मलन न 'पोलितइया' को आदम नगर के नाम से काफी देर बाद छाप दिया। प० भोलानाथ अपने काम में दिलोजान से जुट गये। उन्होंने अरिस्तातिल के महान् ग्रन्थ "राजनीति" का अनुवाद अगले ही माल समाप्त कर डाला। उतने से ही उनको सतोप नहीं हुआ और इंग्लैण्ड और अमेरिका में ग्रीक ग्रन्थ रत्ना के जो नवीनतम संस्करण निकल रहे थे, उनका भी उन्होंने उपयोग किया। १९५० के आरम्भ में ग्रन्थ छपने के लिए तैयार हो चुका था और आज ६ वर्ष तक उसने प्रेस का मुह नहीं देखा। छ साल हमने खो दिया। यदि उनके ग्रन्थ तुरन्त छपने लग होते तो सम्भवतः अरिस्तातिल के अधिकांश ग्रन्थों का वह हिंदी में ला चुके होते। यह उपेक्षा अत्यन्त सेन्जनक है। हिंदी में गतिरोध बड़ा है इसे देखना है तो यहाँ दलिए। सञ्चित और ग्रीस का एक साथ विद्वान् और हिंदी पर पूरा अधिकार रखनेवाला व्यक्ति हर रोज नहीं मिल सकता और हमने उसकी प्रतिभा से लाभ उठाने का यत्न ही नहीं किया।

प्रयाग—पंजाब मेल एक घटा लेट रहा। उप बवन की गाड़िया के लिए यह कोई असाधारण बात नहीं थी। बेटिकटवाला की भरमार थी, इसलिए उन्हें दण्ड देने के लिए ट्रेना में मजिस्ट्रेट सफर करते थे जिसके कारण बेटिकटवाला की बर्गी हुई थी और हम आराम में बैठने की जगह मिल गई थी। आकाश में बादल छाये हुए थे लेकिन फरवरी में वर्षा श्रुतु तो नहीं होनी इसलिए बूँदें एवाध ही बर्गी गिरती थीं। २ बज के बाद लखनऊ पहुँचे और रिक्शा लेकर राम भवन गये। यहीं दुगा भाभा रहा करती थी। यशपाल भी यन्नी थे। भाभी न बच्चा के लिए एक पाठशाला खोल रवा थी। हम कालविन तालुकरा स्कूल देखन गये। अबध तालुकरा दारा का प्रप्रेण है लासो की आमदनीवाल दजना राजा महाराजा नवाब की उपाधिया ३ भूपित अराजा के अनन्य भक्त तालुकरा के पुत्र यहाँ पढ़ने थे। यह स्कूल इतना बड़ा है जिसका सामन मुनिर्वसिटी भी छाटी मालूम होनी है जहाँ तक भूमि का सम्बन्ध है। किड गाटन में लेकर १२ वा

श्रेणी तक यहाँ पढ़ाई होनी थी। १५० तालुकादार पुत्र उस समय यहाँ पढ़ रहे थे। अंग्रेजों ने जनमाधारण से अलग रखकर उन्हें शिक्षा के साथ साथ राजभक्ति का पाठ पढ़ाने का यहाँ प्रयत्न किया था। राजकुमारा और नवाबजादा जो जिस तरह रमना चाहिए उसी तरह उन्हें रखा जाता था। इसे देखकर मरा ग्या ताड़ुकरारी उठन की आर गया। उसी समय पर एक तालुकरार तर्ण न कहा— अभी उत्तर उठन म पाच छ साल लगेंगे।' गायद ऐसा कहन में बह गलती पर नहीं था और उसने अभिभावकाने उस समय का पूरा फायदा उठाया। तालुकादारी खरीदन के लिए अब कौसा बवबूफ तैयार होना? पर, जमीन परती जगल की बदावस्ती से उहोने खूब रपया पदा किया, कितना ही ने टेक्टर के साथ फाम बनाने का प्रयत्न किया गहरो में जायतादें ली। इन सबक कारण तालुकादारा की स्थिति बँसी दयनीय नहीं हान पाई जसी कि छोटे जमींदारा की। तालुकादार स्कूल अब ताड़ुकरारी के तीर पर नहीं रह सकता था यह ता निश्चय था। लेकिन उसे इजीनियरिंग या टेक्नीकल कालेज के रूप में परिणत करने का ह्याल अभी तक किसी का नहीं था।

पता लगा, उदयगकर का कलात्मक फिल्म 'कल्पना' आया हुआ है। हम भी देखने के लिए गए। देखकर निराग हो मैंने साचा—मवनता के भ्रम न इस समाप्त कर लिया। उदयगकर ने कलाकार उदयन को फिल्म की कथा का आधार बनाया, और कलाकार के लम्बे जीवन का छोटी-छोटी घाँकियों में चित्रित करना चाहा। वह याकी इतनी कम थी, कि जब तक उसमें आत्मी कुछ निष्कष निकाल उसमें पहले ही वह सतम हा जाती। फिल्म साधारण जनता के लिए तो लिखा ही नहीं गया था, यदि मेरे जैसे दगाक भी उसे नहीं पसंद कर पाय ता उसकी असफरता निश्चित थी। यदि उन्होंने नवीन उदयन की कथा का माह छोटे नृत्य तथा संगीत के छोटी-छोटी भूमिकाओं के साथ पग किया हाता तो जरूर जनप्रिय होत और आर्थिक दृष्टि से भी बहूत सफर रहता। इस असफरता को देखकर मुने बहुत खेद हुआ क्यकि मैं उदयगकर की कला का प्रयासक हूँ।

१६ का डा० अहमद और हाजरा बेगम से मिलने गया। य कितने भले और ईमानदार दम्पती हैं। आँधी थाप या तूफान वह अपन लक्ष्य पर जटल रहकर आगे बढ़ रहे हैं। हाजरा न ल दन म माटेसरी की शिक्षा बहुत पहले जाकर ली थी आजकल वह एक माटेसरी स्कूठ म पढा रही हैं। भोजन के बाद श्रीमती दुर्गादेवी क माटेसरी स्कूठ को भी देखन गया। इन स्कूला की अपनी उपयोगिता है तभी तो लाग अधिक खच करके अपने बच्चा का इनम पढाने क लिए भेजत ह। लकिन मुझे तो गीशमहल म पलत मध्य-वग के इन राजकुमार और राजकुमारिया की शिक्षा दीक्षा का देग के लिए कोई महत्व नहीं मालूम हाना। साधारण बालका स अलग रख कर एन कृत्रिम वातावरण म बच्चा का पढाना उनम साधारण सागरिक के भाव का नहीं पदा कर सकता। वह अवश्य सनमजिले महल की छन पर खडे होकर नीचे रंगती जनता को देखेंगे। लकिन इसका दाप हम हाजरा और दुगा भाभी को नहीं दने। ऐसी शिक्षा की मध्य वग को आवश्यकता है जिमका उपयोग वह अपने तौर से करना चाहन है। उमी दिन इसा बला धारन बालज की छात्राभा क बीच घटा भर ऋगी शिक्षा के बारे म बालना पडा। यह मिन्नरिया का बालज है और अब नय वातावरण स अपने को प्रभावित करन की कोशिश कर रहा है। छात्राए बीच-बीच म हँस भी रही थीं जिसस मालूम हाना था उनका मनोरजन भी हो रहा है। जानबुद्धि क बार म ता सा दह ही नहीं।

गाम क यक्त प्रगतिशील लक्षना की गाँठी हुई। कम्युनिस्ट मुझे अब अपन स अलग समझत थ इसलिए उनन प्रश्नात्तर भी उसी के अनुकूल हान थ। मुझे उतासा बटमुस्लापन अच्छा नहा लगना था, और यह और भी नि वह रामग्राह अपन का दूसरा दाग बहिष्कृत रहन का प्रयत्न करत हैं। मरी धारणा है क्रांतिकारा स अपन भीतर अपन अस्मित्व को अगुण बनाय रखन हुए भी दूसरा म भूल मिल जान को वाशिश करनी चाहिए वस ही जस स्वस्थ गरार म हृदिस्था। यनि विरोधी उनको अलग अलग कर पाएँगे ता जसफूठ करन म कामयान हंगि। हिंदी के राजभाषा और राष्ट्र

भाषा हान पर मुसलमानों के ऊपर जुल्म होगा उनकी सम्स्कृति का विनाश होगा यही रटन लगाय था। लेकिन हिन्दीभाषी प्रान्ता में हिन्दी के रान-भाषा हान में अब कोई सन्देह नहीं रह गया था। उनका कहना था— मरकार के करन में उन कुछ नहीं समझना चाहिए, लेकिन हम पांच माल में कांग्रेसी मरकार का स्थान दूसरा होगा, यह साचनवाल दया के ही पात्र थे।

प्रयाग—उसी दिन रात के ११ बजे प्रयाग जानवागी ट्रेन पकड़ी और सात-साने अगले दिन मवेर प्रयाग पहुच गया। माघ मल के कारण हैजा फैल गया था, दासों आदमी मर चुक थे, बड़े जार गार से हैजे का टीका लगाया जा रहा था। कुछ ता ध्यान दसका रखना ही चाहिए स्वयं गिकार न हाकर यदि हैजा फैलान में महायक बना जाए, तो यह और भी बुरा है। पर मुने इसकी पवाह नहीं थी। उस दिन प्रमचल, ममयनाय गुप्त और कुछ और लालका की पुस्तकें पटना रहा। सामग्राह विश्वाम कर लिया था, कि “प्रमाणवार्तिन भाष्य” अब छप ही जाएगा, इसलिए उसे प्रम के लिए तयार करन लगा। गर्मिया में पहाड पर जाना होगा, यह निश्चय ही था कभी-कभी कुल्लू का भी हजाल आना। डा० जाज रायचिक के पुन से मागूम हुआ कि अभी भी सडक ठूठी हुई है और कितनी ही जगह पर पैदल जाना पटना है। पुस्तका के बकमा का उठाए पैदल चलन के बगडा का कौन माल लेगा, इसलिए किसी दूसरी जगह जान का स्थाल करना होगा। रल में पर छिल गया था जो अभी सूखा नहीं था। डायवेटीज ता इभी ममय राग बननी है नहीं ता यदि जरूरत में अधिक बजन न घट तो उसकी पवाह नहीं करनी चाहिए। २२ फरवरी का अनवार था। उस दिन गाम का घूमन हुए रमूगवाड साहित्यकार समद भवन में पहुँचा। गगा के किनार ऊँची जगह पर बहुत सुंदर स्थान है। पर, एकान्त प्रमी कवि या यागा के लिए यह उपमागी हा सकती है। लेकिन, समा ता गगाजल और स्वच्छ हवा परजी नहीं सकन। यदि पुस्तका की आवश्यकता हुई तो मौलों दूर गहर में नाइए यदि जीवन की दूसरी चाजा की आवश्यकता पनी ता

मित्र गायलघाट गए। उनिद्रता का इस बदन आधिक्य था, जिसके साथ-साथ दिमाग भी गरम था। लेकिन कुछ भी हा उनका मोजाय मदा उनके पाम रहता है। इस समय तुलसी रामायण का हिंदी मकरण की धुन सवार थी। कुछ दर तक बातचीत हुई। उन्होंने अपन इस नय प्रयत्न क कुछ नमूना का दिखलाया। सम्मेलन न हिन्दी क महानू कविया क कविता सग्रह उही के द्वारा करान का प्रयत्न किया था और इस सम्बन्ध क कुछ ग्रन्थ निजल भी थे। निरालाजी क कहन पर उन्होंने भी एक सग्रह करीब करीब तयार कर लिया था। कुछ रुपया मागन पर लागान कायद-जानून की बात करनी शुरू की ता उन्होंने अपन सग्रह का दन स इकार कर लिया। भला एमे पुरूप क मामन कायद-जानून की बात करनी चाहिए। एक बार इकार कर देन पर भर प्रयत्न का भी क्या जरती काई अमर हा मरना था? यहा स नागरी प्रचारिणी श्रीचंद विद्यापीठ दगानानंद आयुर्वेद विद्यालय, कामाखल पुस्तकालय हान स्वामा मत्यस्वरूपजी के पास उदामी विद्यालय म गया। इस में साधुआ का जादग विद्यापीठ कहता है, जिसका जय यहनही कि उसकी स्थिति बराबर ही एक तरह की रह सकेगी। विद्यार्थी थोडे मे थ पर समा उच्च कक्षाआ के। कितने ही उनम किमी विषय के आचाय हा चुके थे। खान रहन का बहुत अच्छा प्रबन्ध था। टेढ़ घटे तक उनसे बातचीत हाती रहा। भविष्य क बार म वह चिन्तित थ लेकिन मैंन बतला दिया, कि साधु विद्वाना की चिन्ता करन की विल्कुल आवश्यकता नहा। संस्कृत के गम्भीर पांडित्य के साथ साथ जाधुनिक अनुभवान के ढग का भी उह कुछ अपनाना चाहिय। जिम जनतात्रिकता और साम्यवाद क आदग की तरफ आज दुनिया का झुकाव है उसका किसी न किमी रूप म भारत मे यदि किमी न कायम रखा, ता वह साधु ही ह। आर्थिक कठिनाई की वह दान नहीं बनलाये बल्कि कहन थ कि कितने ही धनसम्पन्न मठा के लिए योग्य उत्तराधिकारी नही मिल रह है हमारे यहा बराबर माग आती रहती है।

२७ को हम फिर भोजनापरालन निकल। रास्ते म प्रायाचाय प०

महान्द्र शास्त्रास भेंट की फिर ५० जयचन्दजी के यहा गये। सुमित्राजी रग्न थी। उनका स्वास्थ्य सदा ही से अच्छा नही रहा है, और ऊपर से काम करने की जादत है। वहा स विश्वविद्यालय म अपन आदि पथ प्रदशक गुरु मौलवी महेन्द्रप्रसाद के पास पहुँचे। जायु का प्रभाव शरीर पर पडना जहुरी है। ब्याह करने का फल चार भवानिया थी। पत्नी कब भी चल बसी थी। चारा म सिफ एक कल्याणी का व्याह हा पाया था औरो की चिता पिता का होनी ही चाहिए। कल्याणी न वद मध्यमा मे नाम लिखाया है। लम्बिन ब्राह्मण वेदपाठी स्वर सहित वेद कायस्थ और सो भी स्त्री का कस पडा जा सकता था। उसन पढान से डकार कर दिया। मालूम हाता था २०वी गतादी क आचा वीतन पर भी अभी इन कूपमडूका का कुछ होश नही आया। आजकल इसका आदालन चल रहा था। अन्त म भविनव्यता क सामन उह सिर चुकाना हा पडेगा अपनी जडता का प्रद गान चाह वह कुछ दिन और कर लें। २८ का भी भिन भिन जगहा पर घूमन और मिलन जुलन म विताया। परिभाषा क बारे मे विश्वविद्यालय क अध्यापका स इस समय कोई बातचीत नही कर सका। रास्ते म बाबू श्रीनिवासजी स मुलाकात हा गइ। कितन साला पहल नालंदा म उनका दगन हुआ था। डा० भगवानदास क भाई बाबू गोविन्ददास बहुत विद्या व्यसनी थे और उनका पुस्तका का संग्रह काफी म बहुत अच्छा माना जाता था। उही क यह मुपुत्र थे। वह नागरी लिपि मुधार क प्रयत्न म लगे हुए थे। उनम उसी विषय पर बातचीत होती रही। लम्बिन बतमान लिपि को छात्रर किमी नवीन या प्राचीन रूप को जपानन की याजना मफल हागी इस पर मुने विश्वास नही था। यह अगाक ग्राह्मी क क के ऊपर नागरी की तरह पाई लगाकर उसे क का रूप दान चाहते थ। बातचीत करत ५० जयचन्दजी क पास गए। ५० जयचन्दजी हमार इतिहासना म गम्भीर चतना और गवषणा रग्न वाले पुरप है। यदि वह केवल एकमुरा हाने, तो और भी अधिक काम कर पाए हान। लेकिन दूमरी कल्पनाए उननी एव मुरा रहने कम दे सकनी थी? आजकल वह प्रजागन और ग्रय प्रणयन के

बड़े बड़े स्वप्न देख रहे थे समय रह थे । जल्दी ही इन पुस्तक के बड़े-बड़े सस्करण निकलने लगेंगे, भारत की सारी भाषाओं में वह अनुवाद होकर कोने-कोने में फल जाएंगे । लाखों नहीं तो हजारों का वारा-वारा होगा । स्वप्न देखना बुरा नहीं है क्योंकि कितने ही स्वप्न सत्य निकलकर आगे चलने का रास्ता खोलते हैं, परन्तु इस समय मुझे तो ऐसी कोई सभावना नहीं मालूम होती थी ।

सेवा उपवन में जान पर बापू गिबप्रसाद गुप्त की सौम्य मूर्ति याद आने लगी । कितनी उदारता और महानुभूति उनके हृदय में थी । उग्र राजनीतिज्ञों और कायकताओं एवं साहित्यकारों के लिए वह कितनी प्रसन्नता के साथ सहायता करने के लिए तैयार रहते । तारीफ यह कि उसके लिखावट की कोई काँगिस नहीं करते । तिब्बत के जाने के बाद से लौटने के बाद उनके साथ मेरा अधिक सम्पर्क बढ़ा था । जब वहाँ से पुस्तक के लाने का सवाल पड़ा हुआ, तो उन्होंने आचार्य नरेन्द्रजी के कहने पर वहाँ मरे रहने का प्रवचन किया था । मैंने लका से जा गए इसलिए मुझे उनकी आर्थिक सहायता लेने की जरूरत नहीं पड़ी । लका में चीनी त्रिपिटक की जरूरत हुई । उस समय जापान में उसका बहुत उत्तम थका सस्करण प्रकाशित हुआ था । उसके लिए डेढ़ हजार रुपये उन्होंने भिजवा दिए । वह त्रिपिटक अब विद्यापीठ में था । लेकिन आर्थिक सहायता में उदारता उनके व्यक्तित्व की पूरी परिचायक नहीं है । वह बड़े प्रेम के साथ मेरे कार्यों की आरंभ करते थे । १९३८ में सारनाथ में रहकर मैं कुछ लिख रहा था । उस समय वह मिलने आए थे । लौटते वक्त हिंदू मुस्लिम बगड़े का गिबार हुआ । किसी मुसलमान को रास्ता में पटा देकर वह विह्वल हो गए और उसके बचाने के प्रयत्न में लगे । उस पुरुष से 'नूय उपवन' को देखकर मेरे हृदय में एक टाम हानी स्वाभाविक थी । अब मेधा उपवन के स्वामी उनके दौहित्र्य थी सत्येंद्र और उनके अनुज थे । सत्येंद्र आज" और नान मण्डल को और उन्नत बनाने में तत्पर थे । जिनो और मानो टाइप के बिना आज कल किमी देग की मुद्रण कला आगे नहीं बढ़ सकती । हमारे नामरी को

छापन में पाच सौ क करीब टाइपो की आवश्यकता होती है। उन्होंने और प० पराडकरजी ने मोचकर एक यात्रा निकाली थी जिसके द्वारा १२५ टाइपो की ही जरूरत पड़ती। इसमें सबसे अच्छी बात यह थी कि प्रचलित नागरी में बहुत कम छेड़खानी की गई थी और उसका सौंदर्य को घटन नहीं दिया था। मैं भी लिपि मुधार का पक्षपाती था। इसके बारे में काफी देर तक बातचीत होती रही। पराडकरजी दुबले पतले गायद पहले में ही थे, लेकिन डायटोज़ का गिदार था। मैं भी उसी पक्ष का पक्षीक था और पुराने तर्जुमेकारों से लाभ उठान की कागिग करना चाहता था। पर अन्त में मुझ प० ब्रजमाहा व्यास की बात हा मन्ची जची—इसुलिन का नियमपूर्वक ला जीर खान पीने में परहेज मत करो। मात्रा का परहेज तो मैंने जरूर आवश्यक समझा किन्तु बाकी व्यास सूत्र निराबाध भावित हुआ।

परिभाषा-निर्माण के काम में

प्रयाग—२६ को मैं प्रयाग में था और भोजनापरांत उन्नीस दिन चट्टोपाध्यायजी के निवास पर चला गया। मेरे लिए एक जलम काठरा थी। यहां अपने काम की पुस्तकों को सुरक्षित सजा सजता था लेकिन पगाव की दिक्कत जरूर था। उसी दिन सम्मेलन की कई समितियों की बैठकें में शामिल हान सम्मेलन भवन गया। परिभाषिक शब्दों के निर्माण के सम्बन्ध में वा महीन हो गए और अभी तक कुछ नहीं हुआ था। मुझे सबसे बड़ा डर था बदनाम हान का। मैं किसी काम का जिम्मा लेकर फिसलडडी नहीं रहना चाहता हूँ। लेकिन क्या करता? उप-समिति के सहकारियों का फुगत नहीं थी।

१ माच से मैंने एना की कृति "भुलामान" का 'जा दास थे' के नाम में हिंदी अनुवाद करना शुरू किया। उद्दू अनुवाद हम से हो करके लाया था लेकिन उसका कोई प्रकाशक नहीं मिला। श्री तारीणिंग झा श्रीगणेश का काम करन लगे। यह ता निश्चय ही था, कि एकांत साधना निभ नहीं सकेगी तो भी मिलन जुलने वाला स काम स काम बातचीत करने का नियम रखा। उसी दिन गाम को पहला स वीरे द्रकुमार सिंह आए, और वचन ले लिया, कि 'जा दास थे' का प्रकाशन मैं करूंगा। परिभाषा कार्य के कारण मैं बहुत चिंतित था। डा० भव्यप्रकाश मे मित्र। उद्दू भय था, कि सम्मे

लन अपनी अलग टनसाल खोलना चाहता है। मैंने कहा, हम अपने अपने काम का बाट लेना चाहिए और एक दूसरे के काम में सम्मति और सहायता देना चाहिए। उस समय प्रयाग विश्वविद्यालय और काशी नागरी प्रचारिणी मभा में भी इस सम्बन्ध में साक्षात्कार हो रहा था। कल की बात प्य नहीं गई। आज डा० बीरेन्द्रवर्मा और डा० माताप्रसाद आए। उनमें उम्मीदवार में और भी बातचीत हुई। उनमें मालूम हुआ कि विश्वविद्यालय परिषद् कुछ काशाक बनाने का विचार रखती है जिनमें विज्ञान का काम बितना ही तयार भी हो गया है। कला-सम्बन्धी परिभाषा को भी वह लना चाहते थे। राजकीय कामों के लिए नागरी प्रचारिणी काम कर रही थी। बाबा तीन का साहित्य सम्मेलन ले सजना था। साहित्य सम्मेलन के लेने का यह मतलब तो था नहीं कि उसमें विश्वविद्यालय के विद्वानों का काम नहीं रहता। आगे मुख्य तौर से यह काम तो उनका ही था।

३ मार्च का राय रामचरण की पुत्री के प्याह में गए। गताश्रिया पुराने बड़े रईम की लडकी का गादी हो रही थी। फिर पुगनी परम्परा एकदण्ड छोड़ी कन जा सजती थी? ता भी वारात में सौ सवा सौ आदमिया का ही आना शुभ लक्षण था। भोज में सबड़ा जाए।

अन्तर्राष्ट्रीय दुनिया में एला जमरिक्न गुट पाकिस्तान का अपने पाकट में रखने की कागिरी कर रही थी और कश्मीर के सम्बन्ध में छिपकर सहायता भी दे रहा था। मचूरिया (चीन) में चीनी मुक्ति सना सफलता प्राप्त कर रनी थी। अमरिका इस फूटी आवा भी देख नहीं सकता था। वह तटस्थ नहीं था बल्कि अमेरिक्न सना भेजना छाडकर सब तरह से सहायता दे रहा था। भूगोल पर लाल रंग पश्चिम से पूव की आर बढ़ रहा था। दूने देखकर बनी प्रसन्नता हो रही थी।

अभी ईगल और लाला के पत्र आ रहे थे। उन्हें आगा थी कि दा वप रिताकर मैं फिर कम लौट जाऊंगा। कितना घोर निराशा होगी जब उन्हें अगली बात मालूम होगी। अभी समय मालूम हुआ कि बाबू मुरली मनाहर प्रसाद ने 'सचलाइट' में स्तुतिपाद दिया। सचलाइट को पदा करन

और उसे जीवित रखने के लिए उन्होंने उसे अपने खून से भींचा था। जिस समय उसमें घाटा ही घाटा होता था, उस समय राष्ट्रीयता के पक्षपाती इस पत्र को मुरली बाबू ने अस्त हाने नहीं दिया। फिर धैर्यग्राह पत्रा का हियान लगे और 'सचलाइट' उनके हाथ में चला गया। अब कलम नहीं थली का उस पर एकाधिपत्य था। थली ने कलम का अपनी उगली पर नचाना चाहा, मुरली बाबू इसके लिए तैयार नहीं हुए, और अब उनका खून का सींचा बड़ा पीसा दूसरे के हाथ में चला गया।

कभी-कभी स्याल आता था टहलाने के रूप में थोड़ा शारीरिक व्यायाम कहें लेकिन मनमाराम कह रहे थे—हिमालय में चलना ही है वही नियमपूत्र टहला जाएगा। यह तो अब मान्य मान लिया था, कि मधुमह—डायग्राज—शारीरिक श्रम न करके पुष्टिकारक भाजन करने का ही दण्ड है। पक्रिया शक्ति कुछ दिना तक इन्मुलिन की कमी का पूरा करने के लिए जी तोड़कर कागिण करती है फिर स्वयं दम तार देता है। बुद्ध क्या चक्रमण—टहलाने—के पक्षपाती थे, अत्र इसका महत्व मान्य माना गया था। पूर्व में लाल रंग मन्वुरिशा की तरफ बर रहा था, तो उधर पश्चिम में चेजास्लावाकिया में भी कामपक्ष में अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया था। इंगलड और अमेरिका परगान थे लेकिन यह भी नहीं हिम्मत हानी थी कि दक्कल देकर तीमरा विश्व मुद्ध छेड़ें।

विश्वविद्यालय की हिन्दी परिषद् के सुन्दर काम का और भी पता लगा। सादस की परिभाषा यह छपवा रही थी। अथ्यास्त्र, व्यापार इतिहास, राजनीति भूगोल, दान, कानून, भाषाविज्ञान व्याकरण, गिम्ना काव्य, गणित, ज्योतिष रसायन भौतिकी वनस्पति, प्राणिशास्त्र कृषि की श्रार भी पग बना रहा थी। मुझे अच्छा लगा कि सम्मेलन और हिन्दी परिषद् मित्रकर काम करें। ७ मार्च का रविवार का विज्ञान का दिन था। उस दिन महिला छात्रालय में व्याख्यान देना पडा। स्वयं लखक और मुक्तभागी होने से मैं लेखिका की कठिनाइयाँ जानता हूँ, और अपने समानवर्माजा का प्रोत्साहन और सहयता देना भी अपना कर्तव्य समझता हूँ। ऐसा करते

कभी-कभी खल और प्रकाशक के पत्रों में भी फेंक जाऊँ, ता काइ आश्चर्य नहीं फिर वह सिरदद का कारण हा सकता है। जादमी अपन अविवेक से फसता है, फिर दुनिया भर को दोष देता फिरता है। मैं मनसाराम को कहा— यार तुम ऐस भगडा म न पटा करा। बाजी का सहर के अदेस स दुखल हान की जरूरत नहीं।

कई दिनास मकतप विमल्य हान हान ८ माच की गाम का था तारिणीगजा के साथ टहलन निरला। दागगज की जोर के बाघ के नीचे फसल काटकर रखी जा रही था। जयने फसल अच्छी थी। विहार में जगाज के दाम के गिरन की खबर जाइ थी सांच रहा था यह फसल अच्छी हान हा के कारण हागा। जगाज का चाग्याजारा करन बाग बहुत हाय हाय कर रहे थ। ताके का जय लश भी गही रह गया था। माच के पढ़ते ही गप्पाह में तना परिवतन। मिफ रात का कुछ दर कमल लने की तरत पत्नी थी। जब ध्यान था पण्ड पर भागने की तैयारा करन की जोर। बनौर ही जाना ठीक मालम दना वा लकिन अपना पहली बनौर यात्रा में बाथा के लिए आत्मी न मिलन का बग तयस तजबा था। जगल दिन भा गाम वा टहलन निरल। डा० बलगनाथ प्रमाइ के यहा गए। लदमीदेरी न बतगया स्वाम्थ्य जच्छा था। यह सुनकर प्रमानता होनी ही चाहिए। माचना था गायन मिगरण छात्रन का बरदान है या भोजन में समय करने का तकिन तय तय हर दो घट वाग पगाय करन जाना आवयय था, तब तय लिन वा तमरला कस हा मक्नी थी? चट्टापाध्यायजी भरा बहुत ध्यान रखन के तना अधिक नि बाजे वकन सकाय हा लगता था। वह अद्भुत पुरुष है। उनकी विद्या जोर विद्याप्रम के प्रति मेरी भारी श्रद्धा है। किंतु अपन इस ध्यान वा वह तयना द्वारा उपयोग नहीं करन तमसा मैं बराबर जलाहना रता था। वे धर्म के अनुष्ठाना में त्रिलुल पुराणपथी पण्डित मातूम हान लकिन अनुमधान में कटटर जाधुनि दष्टि वाग नामिनक। सांगी उनकी प्रतिभा के लिए सान में सुगंध का काम देती है विद्या के वे प्रम निरागी हैं। माना के अनन्य भवन हैं। ऐसी माना, जिम उच्च शणी

के एक मित्र चुटैल कहते हैं म भी परहज नहीं करते, लड़के चट्टापाध्यायजी इस मुनन के लिए तैयार नहीं। माता का काद भी फर्मादिस हा उस पूरा करता व अपना कन्य समझते हैं। माता की भक्ति पर हा उतान एक युग तक अपनी पत्नी का छोटे गया। उनकी एकमात्र पुत्री का बेटा दु गद जन्म हुआ जो बचारी पिता के दान की लालमा लेकर ही चल बसी, तब उनकी आज मुली। इस समय पड़िताइन अपने मायक गई हुई थी। ब्राह्मण समाज कुछ दिना के लिए घर गया था, एक ब्राह्मणी भाजन बनाने जाती थी। कुठ ही साला म नड जातिक समस्याआ न एक नई प्रया चलवा दी है। बनन माँवन वाला कई घरा म समय बाचनर वारी वारी स बनन माँवनी है। एक जगह माँवन पर पचास तीय रुपया दना पन्ना, निमक लिए बहन कम परिवार तयार होत। वह पाँच पाँच मान मान रुपय ठकर जब काम का करन उगी हैं। उन्ही तरह भाजन बनाने वाली भी कई घर म भाजन बनाती हैं। उह बेनन भर दना पन्ना, भाजन नहीं। इनसे मात्र वित्त लागा का बाधा कम या आर माय हा काम करन वाल भी घाट म नहीं व।

अब मन कितने रोग म बीड रहा था। उमर सदाहरित देवदारा के घन जगत् या आन थ वहीं एक कुटिया बनाना हागी जार चिनी के ही पाम बना डाक मिशन का मुभाना रहेगा। रेल स मँकडा माल दूर निवृत्त का सीमा के पाम का यह निवास पसन्द करन म हिचकिचाहट भी हाता था। फिर आदमी दूर कितना ही हा जाएँ उमके जमनाप के कारण बाहरी दुनिया के साथ सम्बन्ध भा हात हैं। कभी-कभी ता अलग-अलग रहन पर भी चित्त की स्थिति गाडी के पहिये का तरह ऊपर नीचे हाती रहती है। जाम्मा के जितने अधिक सम्बन्ध हात है, उतने ही उसका हा विपाद भी। हाप को आदमी स्वाभाविक समझ लता है और विपाद का अनभाष्ट समथ उसका कई गुना बढाने अनुभव करता है।

११ तारीख का मच्छरा के मार में परेगान था गाम स हा ममहरी के भीतर पुनना मुद्रिकल था। गर्मी बढ चनी थी। भाजन पर मयम था

मिच छोड़ दी थी, घी तेल का नाममात्र ही इस्तेमाल था। कभी कभी मटठा मिल जाता था। गाम का ६ बजे एक घंटा घूमने जाता था। गर्मी और मच्छरा के मारे रात को लिटाने का काम छोड़ दिया था। रात का स्नान करने पर भी गर्मी सत्राण कहा ?

५० भालानाथ ने 'पोलिटइया' का अनुवाद भेजा था जा १५ माच का मुधे मिल गया। अगले दिन ५० बलदेव उपाध्याय आय। आचार विचार म ता चट्टापाध्यायजी के दूसरे सस्करण थ और दोना म पटती भी खूब थी। पूजारी ता हैं ही साथ ही स्वयंपाकी भी, लकिन चट्टापाध्यायजी स इनम बडा भेद है—यह अपन पान से दूमरा का लाभवित बरन क लिए अपनी लेखनी का खूब चलात हैं और सस्कृत वाड मय का सुत्तर वृत्तियो का हिदी वालों के लिए सुम्भ कर रहे हैं। उनका 'भारतीय दान' का तीसरा सस्करण छप गया है जा बतलाता है कि गम्भीर विषया के पढने की जर भी हिदीमाला की रचि है।

१७ माच का सर्दी लौट-सी आई रात को कम्बल आढना पटा। उस हटाकर रग लिया था।

यह गियासता के विलयन और वहाँ की प्रजा के जवदेस्त आदालत का समय था। १७ तारोख को पता लगा अल्बर भरतपुर, करौली को मिलाकर मत्स्य राज्य की रघापना कर दी गई है विध्य प्रदेश म बुंदेलखण्ड की रियासतें और रीवाँ शामिल हा गइ। रीवाँ की नाजबरदारी क लिए वहाँ की सरकार को अलग करक राजा का राजप्रमुख बनाया गया। धौलीगाहा के ममथक मरदार पटल मुकुटधारिया का एकदम लुप्त करन म अनिष्ट समंते, मा साचत थ कि कुछ काम हम कर रह है और आग का काम समय करेगा। रामपुर नुत्तर रियासत के ही तिनर-जंग म हम गर्मिया म जान वाल थ। वहाँ भी प्रजा म अमन्ताप हान की मत्तर आद। पत्रा म पढ़ा जनता ने पुत्तम की बहूक छान ली। अभी हम दा महीन बाद जाना था तय तन और यातें भा साफ हा जानवाली थी।

१८ त्रि की तियाई क बात् १८ माच का जो टाय थे' समाप्त कर

दिया। ताजिक से उद्गू म अनुवाद करने में एक महीना लगा था। अपने मौलिक ऐतिहासिक उपन्यास 'मधुर स्वप्न' का स्थाल बार बार आता था पर अभी हाथ लगाने में मन हिचकिचाता था। इस उपन्यास के लिप्यन्तन के लिए ईरान और रूस में मैं काफी सामग्री एकत्रित की थी। 'मध्य-एशिया का इतिहास' के लिए भारी परिणाम में नाट और मना किताबें रूस से लाया था। इन दोनों किताबों में हाथ लगाने के लिए मैं बेकरार था। और इसे कनौर के प्रवास पर छोड़ रहा था। सोच रहा था— 'बही गर्मिया में काम करने के लिए कुटिया रह भाट सम्बन्धी अनुमधान हों, बौद्ध प्रथा के सम्पन्न आदि का भी काम चले। तिब्बत से जिन मस्कृत प्रथा के फाटा मैं लाया था उनमें ज्ञानश्री के तकगाम्त्र-सम्बन्धी प्रथा का स्थाल मेरे मन में बारम्बार आता था, अद्यपि 'प्रमाणवातिकभाष्य' अभी प्रकाशक के बिना या ही पड़ा था, ता भी स्थाल आता, पटना में दो सप्ताह रह कर यति ज्ञानश्री के प्रथा का उतार सजता ता अच्छा होता।

१८ मार्च का परिभाषा उप-समिति की बैठक हुई। सिर्फ डा० सत्य-प्रसाद ही आ सकें। हमने साल भर में ६० हजार परिभाषाओं के बनाने पर विचार किया। २१ के रविवार को स्याई समिति की बैठक हुई लेकिन परिभाषा निर्माण का याजना आगे नहीं बढ़ी। टण्डनजी ने बतलाया सबसे पहले राजकीय परिभाषाओं का काम लेना चाहिये। वह युक्त-प्रत्यय की एसेम्बली के स्पीकर थे, उन्हें परिभाषाओं के अभाव में अच्छे पट रही थी। परिभाषा निर्माण के लिए तीन हजार रुपये भी मंजूर हुए। हमने माचा था कुछ हजार में काम चल जायगा, लेकिन अन्त में 'गासन काग' में १५ हजार गट लेने पड़े। पत्र पर जान से पहले इस काम को रतम करना था अर्थात् हमारे पास मुद्रिकल से डेढ़ महीने थे। पर मुझे विश्वास था हम इस काम को कर लेंगे। काम करने में सहायक की आवश्यकता थी। चट्टापाध्यायजी से श्री विद्यानिवास मिश्र की प्रतिभा के बारे में सुन चुका था। विद्यानिवास के बुलाने के लिए पत्र लिखने को कहा। श्री प्रभाकर माचवे ने भी सहायता देने की इच्छा प्रकट की थी। इन दो सहाय

पण्डिता जी रित्तन ही और सहायका की सहायता से यह काम जासानी से हा सकता था। मैं जब समझने लगा कि इस काम के लिए सम्मेलन-भवन की सत्यनारायण कुटीर में रहना ही अच्छा होगा।

१९ मार्च का मालूम हुआ हैदराबाद में सघष जारी हो गया। इतिहाद मुस्लिमों को छोटा पाकिस्तान बनाना चाहती थी। निजाम उसके विरुद्ध जान की हिम्मत कस कर सकता था लेकिन जूनागढ़ का उठाहरण उसके सामने था। जूनागढ़ नवाब ने पाकिस्तान में मिलना चाहा और जत में स्वयं देना छोड़कर पाकिस्तान भागना पथा। लाग निजाम के निरकुश शासन को बर्दाश्त करत करत तग जा गए थे। लेकिन हैदराबाद के सम्बंध में आखीरी निणय करने में भारत सरकार हिचकिचा रही थी। उस अपनी और अपनी जनता की शक्ति का पता नहीं था, और अमरिना तथा इंग्लड की लाल-लाठ जागें भय पथा करने में समर्थ थी।

२० तारीख का दाँता की पीडा ने हटने का नाम नहीं लिया। तन के डाक्टर के पास गए। मालूम हुआ दाँता में छेद नहीं है उसका एनमल गराव हो गया है जिमी के कारण अधिक गरम या ठण्डा पानी पीने में पीडा होता थी। उन्होंने बतलाया कि दाँता का साफ कराना है और दाहिनी ओर की निचली अंतिम दाँत का निकालवाना है। दाँत की पीडा को साथ लेकर सुदूर पन्नाहा में जाना अच्छा नहीं इसलिए उह ठीक कराने का निश्चय कर लिया। २० मार्च का एक दाँत डाक्टर ने निकाल लिया। धूय करने की मूर्ई लगाइ गई। उग ममय दण नहीं हुआ पर पीछे नाम तथ जाना रहा। डाक्टर ने बाकी दाँता का भी साफ कर दिया।

२१ मार्च को सम्मेलन में वाय मिति और फिर स्थाई समिति की बैठक हुई। पाणिभाषित गला की यात्रा का तनी त्तिर्ई दस्वर मैं व्यग्र था। किसी काम का लेकर उसके पूरा कराने में मुस्ती त्तिगाना मरी दृष्टि में अगम्य अपराध है, और मैं एत तरह में अगन सार वायों का समेट कर त्ती में जुटने के लिए त्तिमार था। एनीने लघु उपवास यताम (अगाय) के अनुवाद का काम तो या ही ले गया था। वह पाँच छ तिन स

अधिक का काम भी नहीं था। टण्डनजी उतन ही हीलमदाल चलनेवाले थे जिनका मैं मैं चुस्त। मैं दौड़ लगाना चाहता था और वह चीटी में भी सुस्त चाल से रेगना चाहते थे। मैं बुझला उठता था। लेकिन राजकाज की परिभाषाओं के निर्माण में जल्दी हानि में वह भी सहमत थे।

२५ और २६ मार्च को हाली थी। हाली का हूडदग पत्ले ही स गुम् हा गया था। अतनी मँहगी हान पर भी लवटियाँ कम जगह जगह इतनी मात्रा में जमा कर ली गई थी यह साचने की बात थी। कांग्रेसवाला न गाँधीजी के गोर में ट्रम साठ होली न मनान की आवाज निकाली थी लेकिन हर तरफ से दुग्गी लागू का दुख भूलन के निम्नी क्षण को निषिद्ध करना ही नहीं लागा न जाया नहीं मानी।

२५ मार्च से मैं परिभाषा के सम्बन्ध की सामग्री जमा करने में लगा। ग्वाँटिपर साम न हिली में अन्त ही कानून की पुस्तक छपवाई थी। उह मँगवाया। प्रयाग की कमीटी पर कसी तज्ज जादमा द्वारा गद्दी परिभाषाएँ बहुत अच्छी हानी है। पर ऐमे तज्जों की गति भयकर रूप से घीमी है इस लिए हम केवल उसका आश्रय नहीं ले सकते थे।

२५ मार्च को पता लगा सागलिस्ट कांग्रेस से अलग हो गए। कम्युनिस्ट बहुत पहले अलग किए गए थे, और अब सागलिस्टा न भी कांग्रेस का छोड़ा। कांग्रेस के नेताओं में नाच से ऊपर तर इतनी गन्त्या जा गई थी कि सागलिस्टा को मालूम हुआ यह डूबती नैया है, इससे बूढ़ पटना ही अच्छा है। किन्तु असस वह कांग्रेस का स्थान भ्रष्ट नहीं कर सकन। उसके लिए लाभ के भीतर यह विश्वास पदा करना होगा, कि कांग्रेस के कंधे का भार दूसरे गाय उठाने के लिए तैयार हैं। यह तभी हो सकता था जब कि सभी वासपक्षी दल अपना समुक्त मार्चा बनाया। कहने की आवश्यकता नहीं, कि कांग्रेस के बाद जा दल अधिक शक्तिशाली है उनमें कम्युनिस्ट पार्टी का नाम सबसे प्रथम जाता है। और सागलिस्ट तो कम्युनिस्ट नाम में भी वैसे ही भटकने हैं, जैसे लाल रंग से गुमैठ साड। देग व हा कम्युनिस्टा का नहीं, बलिन बाहर के भी कम्युनिस्ट या कम्युनिस्ट प्रभावित

देश का वह फूटी आखी दखना नहीं चाहते। नाई यह विश्वास नहीं करेगा, कि एक चना भाड फोड देगा। सोगलिस्टा वं स्वग के भूतल पर आने के लिए युगा प्रतीक्षा करने की आवश्यकता है जिसके लिए जनता तैयार नहीं हो सकती। वह अपनी इस नीति में कांग्रेस वं ही पक्ष का समर्थन करत हैं क्योंकि दूसरे कार्यकारी नतत्व वं अभाव में लाग कांग्रेस की अवहलना कस करेगे? कांग्रेस वं लिए यह भी जरूरी नहीं है, कि सभी लोग उसका सक्रिय समर्थन करें। यदि बहुजन उदासीन रहे, तो अपने स्वाथ के लिए कांग्रेस वं साथ चिपके लोग उसे जिताने में सफल हाने।

भाई रामगापाल वं मेरे साथ एक तरह का स्वप्न देखने वार थे। हमारा स्नह और घनिष्ठता असाधारण थी। अफसास अकाल ही वह प्लेग के गिचार हुए। उसी निशानी दयाशकर रह। वह २७ को मिल। बी०ए० पाम करन महोवा में भूगोल वं अस्थायी अध्यापक थे। एम०ए० या एल०टी० करके आग बढना चाहत थे। ऐसे तरण का यदि सहायता न दी जाए तो किसका दी जाए? लेकिन आजकल सिफारिश का जमाना है। सिफारिश भी वसे ही आदमिया की लगती है जा उच्च पदाधिकारी के किसी काम में साधन हाने वाला हा। मेरे भीतर वह योग्यता नहीं जिसका अर्थ था जबान घाली जाती। जिससे मैं बचना चाहता था। तब भी कुछ तो करना ही था लगा ता तार नहीं ता तुक्का ही महा।

२७ मार्च का पसीना आने लगा था, और पहाड पर जाना था मई में। कैसे तिन बीतगा? कुल्हू मथी चन्द्रनातजी का पत्र आया, अब के साल यहाँ आँ रि-तु वहाँ जान में सबसे बडा बाधा थी रास्त की। अभी माटर सडक दुम्स नहीं हुई थी। एक आनपण था डा० जाज रायरिन का रि-तु यह भी रिदग चल जानवाल् थ। मैं इन समय कुल्हू जान में असमर्थता प्रगट की।

राजापुर — २८ के रविवार का दापहर को साहित्यिका की एक मडगी गाम्बामी तुगादाग वं जमम्यान राजापुर वं गिण वग पर खाना हुई। अभी सरकारी राडवेज की बनें नहीं चल रही थी। हमारी यस्त भरी हुई

थी। डा० उदयनारायण निवारो, प० वाचस्पति पाठक, निमूलजी, श्री रामवहारी गुल साय थे। डाइ घट म हम जमुना क किनारे पहुँचे। रास्ते क कुछ गाँवा म प्यग फग हुआ था, लग घग म बाहर झापडिया म थ। फमल कट चुकी थी। स्वनाम भारत के दहान म नी पहल की मीनि वही नगा भूवा मूनिषा दीप पड रही थी। दापहर का तपती हुई गर्मी थी। जमुना क किनार दामाजला पक्की घमगाग थी। यही योडा जल्पान जीर विधाम हुआ। फिर पदल नाव की आर बडे। बालू तपी थी, मिर भिजा रहा था। नाव म उस पार पहुँचे। तुलसीदास का मंदिर इस गताब्दी क आरम्भ म कुछ उल्लेख पुरपा न चदा करक बनवाया था। जमुना उसके नीचे की जमीन का काट रहा थी गाँव भी बगता जा रहा था। रास्त म एक ऐस ही पत्थर का रग रुगकर सकटमोचन हनुमान बना दिया गया था। पर राजापुर अवाचीन स्थान नहीं है। रास्ते में चार मुहवाला मुखलिय मिला, जा वतग रहा था कि मैं गुप्तकाल (चौथी-पाँचवी ईसवी) क आस-पाम का हूँ। फिर एक जगह नृप करनी बीस भुजावाली गणेश की मूर्ति मिली, उमन बनलाया ११वी १२वी शताब्दी म मैं आज की स्थिति से बेहतर अवस्था म था। यह ता घरती क ऊपर ऊपर दिखाई देनेवाली पुरा तात्विक सामग्री थी, भीतर न जान कितनी चीजें मिलेंगी। राजापुर जमुना का एक मट्ठवाली घाट है जो एक चलते बणिक-गम पर अवस्थित है। घाट की आमदनी तुलसीदास के स्मारक का मिला करता थी जा १८४१ म ४००० रुपय बापिक थी। गाँव म मकान अधिकतर कच्चे हैं। पक्क मकाना का नी निचला भाग मिट्टी का है। राजापुर म मानम की एक पुरानी हस्तलिखित पायो है, जिसे गास्वामीजी के अपने हाथ की लिगी बनलाया जाता है। रामु, फगु आदि क अत के उकार बतलान थ, कि पुरानी प्रति है पर रामायण क श्लोक मे ग के स्थान म तीन बार स का आना बतला रहा था कि यह गास्वामीजी के हाथ की लिगी पुस्तक नहीं है मकनी। राजापुर म एक छोटा-सा बाजार है। स्मारक की रक्षा के

और बढ़ि के सम्बन्ध में एक सभा हुई और फिर हम वहाँ से उसी दिन प्रयाग लौट आए ।

गर्मों में वही बाहर जान जान का प्रोग्राम रखना भारी कबाहुट का बात थी । पर श्री जगदीशचन्द माधुर १ जून २० २१ अप्रैल के वैशाली उत्सव में सभापति बनने के लिए स्वयं जानर निमन्त्रण लिया, तो मर लिए इन्तार करना मुश्किल हो गया । सभापति बनना ही नहीं था, बल्कि वैशाली पर एक भाषण भी तैयार करना था और भारत के परम यशस्वी तथा ऐतिहासिक इस गणराज्य के ऊपर काफी प्रकाश डालना था । बंगाली चाह जाऊँ कि दार्जिलिंग जिला का ही गणराज्य था, पर अयेस उमसे भी छोटा था । गाम्बामोजी ने कहा है— रविमडल दखत लघु लागा । उदय तामु त्रिभुवन तम भागा । 'स्वेच्छाचारिता के घनाघकार में लिच्छविया का यह गण प्रकाश स्तम्भ था ।

सत्यनारायण कुटीर—परिभाषा के काम में कई जानमिया से नहा यता लनी थी और न जान किस समय कौन सी पुस्तकालय से मगाना पड़े इस खयाल में ३१ मार्च को मैं सम्मेलन भवन की सत्यनारायणकुटीर में चला गया । टण्डनजी ने कुछ मामूली दान के लिए कहा था । उनका पाग लखनऊ आन्धी जाकर माली हान लौगा । मुझे क्षण भ्रम की फिर थी और उनका लिए तो अपना प्रतीक्षा में सो दना कोई बात नहा थी । मैं तार और चिट्ठी भजकर बत लिया कि यदि ऐसा हुआ तो मुझे काम से हट जाना पडेगा । पहले के नौ हजार का जमा था उनमें बन्त-म वकार के ध ता ती पाँच हजार अर्थात् नौ लाख मिल सकते थे । हमने मक्लद लिया कि अप्रैल के अन्त तक दस हजार गठना का काम तयार करके टण्डनजी को दिया जाए । कुटीर में आने पर भाजन का ममस्सा मामन जाद गिमका प्रबन्ध श्री श्रीनियामजा ने अपना यहाँ से कर दिया । गर्मों के लिए बिजली का पगारा रान दिन चलने के लिए तयार था । लखन उताम ११ जून-नव गम्भ हना आती थी । पगारा गमय गिमका से रजनी की चिट्ठी 'सहार के बारे में सम्मति लिखने के लिए आई । मैं उनमें रामपुर बुगहर के बार में

पूछ ताठ की। उतान लिया, रामपुर व रामन म दूर तक बस जानी है। साथ जान के लिए जायमी का भी प्रयत्न जागगा। २० वष पन्ने के तजर्वे पर पूरा विश्वास नहीं किया जा सकता था। अब उस राजा सूचना से क नीर का जाना पक्का हो गया।

२ अप्रैल का सूचना मिली कि लडा म भर मित्र नि दु पन्नागक का दहान हो गया। १८ वष पहल वह गम्भीर प्रकृति के जादमा जम्भ मागूम हान थे लकिन उनकी प्रतिभा का पता उम समय नहीं आगा था। पीछे ता वह एक मिद्धह्म लेखक मानिन हुए और विद्यालयार विचार के दृष्टमन्भ मान गए। इस प्रिय विचार का वामपक्षी विचारधारा का कद्र बनान म उनका विशेष हाथ था। एक पुरुष का इतना जल्दी उठ जाना बड़े अपयोग की बात थी।

बलिधा—२ अप्रैल का डा० उष्यनारायण तिवारी के साथ बलिधा में साहित्य सम्मेलन के लिए जाना पडा। गर्मी का दिन था मा भी छाटी लाइन की यात्रा। हम साडे ७ राज गाम की चले। गापी चार घट लट बनारस तक ही आ गई। इजना का पुराना हाना भी कारण था और काम क्षमता भी कम थी। अक्षमता को निवारण सिर्फ नेत्र के धार म काम की जाए जसकि सरकार के एक एक पुर्जे म वह दखी जानी है। सरकारी धन चलान के लिए निगुन चौगुन अफसर और कसक रख लिए गए हैं लकिन काम काइ भी ठीक से नहीं जाता। रल के सेक्टर कलम के डर का शवन से मालूम हो रहा था कि एक हुए किमा खानदानी धनिक का नमरा है। पन्ना उतटा हुआ, गदे गल और बुरा हावत म, पाखान का कमाड टूटा हुआ, निम सिफ पनात्र के लिए ही मुस्लिम से इस्नमात्र किया जा सकता था। हाथ धान का बमिन नगरद और न म पानी नहीं। सभी जगह आणता सभी जगह अम्बच्छता।

४ अप्रैल ३ घटा लट हा ११ बजे दिन को हम बलिधा पहुँचे। काफी गर्मी थी। जिला-वाड के मक्रेटने श्री ग्याममुन्दर उपाध्याय के घर पर टहरे। पुराने ढग का बगला था, जिसकी छत काफी ऊँची और मानी थी

जिसमें गर्मी कुछ कम मालूम होती थी। ३ बजे से सम्मेलन शुरू होने वाला था लेकिन तब तो गर्मी बहुत होती। अच्छा ही हुआ जा वह साढ़े ५ बजे शुरू हुआ। लिखित भाषण तैयार करने के लिए समय कहा था, मैंने मौखिक ही भाषण दिया।

जाजकल जिला बाड के चुनाव की धूल थी। सभापति और सत्स्य सभा चुन जानेवाले थे। जिले के सबप्रिय तरुण तारकेश्वर पाडे काग्रेस की ओर से जिला बाड के लिए खड़े होनेवाले थे। प्रातः ने भी इन्हे मान लिया था। लेकिन जात पात तरा घुरा हा। ऊपर पहुँचकर दूसरे को टिकट दिलवा दिया गया। तारकेश्वर काग्रेस के विरुद्ध खड़े होने के लिए नहीं तयार हो सकते थे, पर किसी सोशलिस्ट का कैसे रोका जा सकता था ?

बलिया बस्तुन गहर नहीं एक बड़ा सा गाँव है। गंगा नानिदूर बहती है और धार को कोई बाँध नहीं है, गाँव बिल्कुल गंगा पर निर्भर है। पानी और बिजली का भी कोई प्रबंध नहीं है। किसी समय भी पागमाने का इतना कुप्रबंध हमारे देश में नहीं रहा होगा। लेकिन यह सिर्फ बलिया की बात नहीं है। टीम जा यहाँ सरजू (छाटी) बही जाती है बलिया के पास बहती है बस्तुन बलिया के कटन का डर सरजू से हा है। अगले दिन नामल स्क्रूट में व्याख्यान देने गए। यहाँ बलिया और गाजीपुर सेना जिला के अध्यापक प्रशिक्षण के लिए आए थे। गाम का चलता पुस्तकालय में गए। पुस्तकें तान ही हजार थी जिनका उपयोग बहुत अच्छी तरह किया जाता था। वह बराबर घूमती रहती थी। पुस्तकालय में अपना मकान भी बना लिया आगा है वह तजी से बना। ६ बजे से भोजपुरी सम्मेलन प्रारम्भ हुआ। डा० रामविचार पाडे की भाजपुरी कविताएँ बड़ी अच्छी लगीं। वह अष्टाग आयुर्वेद विद्यालय कलकत्ता के स्नातक हैं। यद्यपि आयुर्वेद के लिए आवश्यकता नहीं थी ता भी प्राइवेट पढ़ने की लगन के कारण उहान बी० ए० और एम० ए० पास कर लिया। कुछ और तस्मात् ने भी अपना कशिनाएँ मुनाई। इस समय बार बार चिन्मू पाडे की गलत आती थी। सम्मेलन में भोजपुरी प्रान्त निर्माण का प्रस्ताव पास

किया। तीन करोड़ भोजपुरी भाषी दो दो प्रान्ता में बटे रह, और उनकी भाषा की कोई उत्तर न हो, यह दुःख की बात थी। लेकिन आजकल जनता और उनकी भाषा की पुछ भला दिल्ली के दरवाजा के दरवार में हो सकती थी? पर जनता का दिन लौटेगा जरूर।

६ बजे तक सम्मेलन में रहते हम प्रसन्न मन थे। उसी समय तार मिला, डा० उदयनारायण की लड़की कलावती का देहांत हो गया। जब हम चले थे, तब ऐसी कोई सम्भावना नहीं थी। कलावती और लीलावती दोनों यमल कन्याएँ थीं। दोनों ही शरीर से दुबल जरूर थी, पर इसकी सजा किसे हो सकती थी?

रात को ही गाड़ी पकड़ी और अगले दिन ६ अप्रैल का रात ८ बजे हम रामबाग (प्रयाग शहर) स्टेशन पर पहुँच गए। सत्यनारायण कुटीर में पहुँचे। त्रिपाठी और ठाकुर पहले ही काम में लगे हुए थे। आज विद्या निवास भी आ गया। यह मालूम होने में देर नहीं लगी, कि विद्यानिवास प्रतिभाशाली होने के साथ साथ बहुत महनती तरण हैं। वह यूनिवर्सिटी की हरेक परीक्षा में प्रथम श्रेणी और प्रथम तम्बर में आते रहे, सभी विषयों में अच्छे से मस्कुन में भाग्यशाली बन चुके थे। जहाँ तक हमारे काम का सम्बन्ध था वह उसके लिए सबसे उपयुक्त व्यक्ति थे। उनकी तीक्ष्ण स्मरण शक्ति और भी भारी सहायक थी। गोरखपुर जिले के सरजू पारिया के पक्की-कुल के थे। पक्की त्रिना मास मछली खाए नी हो सकता है यह बात यदि उनको देखने से पहले कोई कहता तो मैं विश्वास नहीं करता। सरजूपारिया में यह सबसे उच्चकुलीन माने जाते हैं। पक्की अपने बरतन भाँडे का भी दूसरे को नहीं देते, और न दूसरे का छुआ कच्चा पका खाते। पक्की ब्याह भी पक्की में ही कर सकते हैं। अपक्की (दुग्ध) के साथ ब्याह करन से जाति से बहिष्कृत कर लिए जाते हैं। इस बहिष्कार के फल स्वरूप अत्र पकितया के कुछ ही मी परिवार रह गए हैं जिनके भीतर ब्याह गोत्र छाडकर बहुत नजदीक सम्बन्धियाँ में होता है। त्रिद्यानिवासजी को अपने खाने पीने का भी इतिजाम करना था जिसके लिए वह किसी को

माय लाए थे। दूध फल म छूत नही मानत यह अच्छी बात थी। सरजू पारिया म पक्की का रवाज काइ जलग थलग या आकस्मिक घटना नही था। १०वीं ११वीं गतांगी म इम तरह के प्रयत्न करीब कराब सार उत्तर भारत म हुए। गहडवार गाबिन्दच न बनौजिया म पकुटले जीर सरजू पारिया म पक्का तयार किए उनक लिए बधी बनी जागारें उस गत पर दी कि वे जपन गान गान जीर सम्बन्ध प्रवहार म दूसरा स जलग रहकर जानिगत का मजबूत करें। उन समय बहुत स कुलान बनाय गए हाग जो मर्यादन्त क माथ आर्यियन स्यात क बटवार क कारण दरिद्र हान गए और कुशानता क आचार का पालन करना सम्भव नही हा मना, जिसन कारण उनम बहुत स पक्की स टूटनर साधारण ब्राह्मणो म सम्मिलित हाते गए। इमी समय क जानपाम भिक्षिया म श्रानिय ब्राह्मणा जीर बगाल म कुशीन ब्राह्मणा का सष्टि हुई। धार्मिक रूटिया और विचारा म विद्यानिवास जा जपन गुरु ५० चट्टापाध्याय जस ही है पर धनानिव अनुसंधान म वह उपा का तरह दृष्टिमाण रखने समी मुये जागा थी। आठ बप पढ़के उनकी लगनी न जपना जीतर नहा लियगया था लेकिन सम्भावनाए उग समय ना थी। जय ता विद्यानिवास हिन्दी क एक मुत्तर निरवकार हैं।

उम समय सरदार कम्पुनिस्टा के दमन करन म लगी हुई थी। यद्यपि पार्टी का सिफ बगाल म गररानुनी बनाया गया था लेकिन गिरपनारियाँ जगापुय हा रहा थी। काई भी रव टुधटना या दूसरा बगी बात हा उम हाट कम्पुनिस्टा का काम बतगारन मीधे प्रहार कर लिया जाता था। समाजवादी नहरू जब गाम गय रग गए थीर गायन जमलिया का खुग करन क गिण फामिस्टा का रास्ता अपनाया जा रहा था। नरू वस्तुन उस समय कबड गरदार पटल क भापू त बटनर कुछ नही थे। मारी गकिन और बुडा पत्र क हाय म थी जा प्रगतिगोल विचारधारा का मुनन क लिए भी तयार नही थ। उपा क थलागाह उनका पाकर फूट नहीं गमान थे और उस समय जा सुरास्यो बना तजी स बनी उनका मुम्न स्यात बंन पर पटल क

वाग्नेय के सूत्रधार उस वकन सरदार बल्लभ भाई पटेल थे। चारा तरफ उही की तूनी वाल रही थी। वह किसी भी प्रगतिशील बदम का उठान के लिए तयार नहीं थे। रियानता के तकियकरण और हैदराबाद के बार में जा काम उहान हुना स किया है उसी अवस्य प्रणमा करनी पड़ेगी। वह ममधत थे कि दंग की गरामा दूर करने के लिए हमारे लोपी पूजीपति जार जमगिवा मलामत रह। जमगिवा मल्लू नहीं था जा ति तन्व्य भारत के लिए अपनी देली छात्र दता। वह पाकिस्तान और हिन्दु स्तान दाना का नवान के लिए तैयार था, और मिफ नाच भर के लिए कुछ डीकर फेर मक्ता था।

सत्यनारायण कुटीर में काम घण्टे में हान लगा। बहुत माल पड़ेले प० लक्ष्मीनारायण मिश्र न अपन कणवध के कुछ भागा का सुनाया था। अभी उहान उम आरम्भ हो किया था। ८ अप्रैल का उगत उमके स्थितन हा और जा सुनाए। मैं ता उतावग था कि इतन सुन्दर और स्त्रतन काय का जल्दा स जल्दा पूण हातर प्रकाशित हाना चाहिए, लेकिन कवि ता मना निरकुण हान आए हैं। उन पवित्रता के लिखन के समय भी जभा उसका थाटा-मा जा वाकी ही है। प्रणमा करत हुए मैं उस दिन भी जार नर रहा। सब छात्रकेर इस समाप्त कर लीजिए।

१० अप्रैल का नौरात्रि का वन आरम्भ हुआ। श्री श्रीनिवासजी के यहाँ अनाहार और उनक बडे भाइ के यहा फलाहार चला। हम दाना म गामिल थे। उस समय फल खान का मन करता था, पर यहा के खरबूज तिर फाक थे।

११ अप्रैल का मून परीक्षा करान पर मासूम हुआ, कि चीनी काफा है लेकिन अभी इ सुलिन के लेन के प्रतिबन्ध स मैं बघना नहीं चाहता था।

सम्मलन की नया लम्बे पस्टम बन रही थी इसी समय नहीं, पायद कुछ समय पहले स ही। टण्णजी ही उमका नइ दिना द सत्रत थे पर वट एण्डिन का बात का एक साल स पहले निणय नहीं कर मयत थे। सम्मलन की परीक्षा अब बहुत बडी परीक्षा थी, जिमम आधे छात्र के करोब

विद्यार्थी बैठते थे। जहाँ गुड होता है वहाँ चीटिया भी आ जाती हैं, जीर सम्मेलन की अवस्था कुछ वैसी सी हानी जा रही थी। मैं तो समझता था, सम्मेलन का प्रचार युग समाप्त करके अथ उच्च माहित्यिक अवदमी का रूप लेना चाहिए। सम्मानार्थ प्रतिबन्ध सभापति का चुनाव और अधिवक्ता भी हो, पर पदाधिकारियों का चुनाव तीन वर्ष बाद हो जिसमें एक बार के आगे पदाधिकारी अपनी योजनाओं का कुछ पूरा कर सकें। उस साहित्य मृजन में अपनी शक्ति लगानी चाहिए और महान् कवियों की पहलू प्रथा बलियाँ प्रकाशित कर देनी चाहिए, फिर विद्वत् साहित्य के अनमूल्य ग्रन्थों का हिन्दी में लाना चाहिए।

स्वामी सत्यानन्द स १३ अप्रैल का भट हुआ। बलदेव चौधरी का नाम स वह मरे घनिष्ठ मित्र जीर वित्त ही स्वप्ना का साथी रहें। आजमगढ़ में उन्होंने हरिजन गुरुकुल खोला और हरिजन उत्थान के लिए उन्होंने अपना जीवन लगा लिया। इसके लिए उन्होंने अपने समाज की परवाह नहीं की। उनका आग्रह था मैं कुछ दिना आकर गुरुकुल में रहूँ, लेकिन किसको पता था कि दिन इनमें मट्टे हो जाएँगे। अगले दिन गर्मी की वृद्धि चित्त का विकल कर रही थी लेकिन मकल्प कर लिया था— 'इस काम का तो यहाँ प्रिताना ही है।' काम का भोजन विद्यावती और उनके पति दुबरी दूरे का यहाँ हुआ। विद्यावती बलदेव चौधरी की पुत्रा हैं। चौधरी की चली हानी तो सभी बच्चे हिन्दी मिडिल स्कूल आग न बन्द होत। पर बच्चा का बूआ महाश्वी का वरदहस्त मिला था, इसलिए सभी एम० ए० हान में सफल हुए।

१४ अप्रैल का गर्मी की वृद्धि चित्त का विकल कर रही थी लेकिन मकल्प कर लिया था— 'इस काम का तो यही प्रिताना है।'।

अगले दिन प्रिजली का रक्तन के कारण कुछ घटे के लिए पत्ता बन्द हो गया। फिर क्या पूछना है। मातूम हुआ, कि जीवन पथे का सहायक बन रहा था।

विद्यानिगमजी बड़ी तत्परता में और बहुत अच्छा काम कर रहे थे।

उनका बतनिक काम करने में हिचकिचाहट थी। कभी कोई कह हो सकता था। पर उनकी आर्थिक स्थिति ऐसी नहीं थी, कि अर्धतनिक काम कर सकने। शामन 'गद्दका' के तैयार होकर टाटप हा जान के बाद भारत के और प्रान्ता के तजना के पास जाकर उमक बारे में परामसा लेना था। था प्रभाकर माचवे न सहयोग देने का लिखा था यह बड़ी प्रसन्नता की बात थी।

कवि गील कानपुर के लिए बचन ले चुके थे, १६ को ३ बजे रात्रि की गाड़ी में हम कानपुर चले। गर्मी में चलना तो पसन्द नहीं था, लेकिन क्या करत। रात का तीस बजे श्री ललितमोहन अवस्थी के निवास पर राम-मोहन बट्टरा में गए। शीलजी माय थे, इसलिए रास्ता पूछन की जरूरत नहीं थी। सँकरी मडक थी, जिस पर बीच-बीच में गाएँ लेटी थीं, लाग गर्मी से बचन के लिए आम्मान के नीचे चारपाइया पर पड़े थे। अगले दिन आइस्ट बच कालेज में भावजनिक सभा हुई। छुट्टी के कारण विद्यार्थी नहीं थे, इसलिए भीड़ जितनी हानी चाहिए थी उतनी नहीं हुई लेकिन सभ्या का कमी का धाताआ के वग न सन्तुष्ट कर लिया। मुझे कुछ अमन्योप ता हा सकता था, क्योंकि मेरे प्रिय ता नरुण हैं। प्रबन्धक कह रहे थे, काप्रेस और प्रताप वाला न बाधा उपस्थित की। समा से मैं श्री गणेशाकर विद्यार्थी के घर पर गया। उनका ज्येष्ठ सुपुत्र श्री हरिशाकर विद्यार्थी मिले। आजकल के कानपुर इन्ड्रूमन्ट ट्रस्ट के अध्यक्ष थे। कानपुर में सचमुच ही बहुत इन्ड्रूमन्ट—सुधार—करन की आवश्यकता थी। सौ ही वष पहले ता गंगा के किनार इस गावडे में लखनऊ के नवाब पर अकुण रसन के लिए अग्रजा न अपना फौजा कम्पू (कम्प) बनाया, जो कम्पू से कानपुर बन गया। उस समय किसका आगा थी, कि सौ वष बाद यह १३ १४ लाख आबादी का गहर हा जाएगा। इसलिए अग्रसाची हानर गहर को बाकायदा बसाने की आर ध्यान नहीं रखा गया, और गाली जमीन में जिसकी जहा इच्छा हुई उसमें वहाँ अपने लिए मकान बना लिया। ये सँकरी सबके सँकरी गलियाँ जसी हैं, जिनमें—मनीराम की बीमा जैमा में—माटर चलाने में झाइवरी

का क्या चढ़न वाले का भी दिल कांपता है। गहर से बाहर समझकर बगला का बनाया गया था, लेकिन अब वे भी गहर के भीतर आ गए। ५० हजार से ऊपर शरणार्थी भी यहां बस गए। नए मकान बराबर बनते जा रहे थे, ता भी उनकी बसी थी। व्यापार में शरणार्थियों से दूसरे बनिये जब होड़ नहीं लगा सकते, तो तरह-तरह से दोष निकालने लगते हैं—'वे नकली चीज देते हैं उनका आचार विचार शिथिल है। स्त्रियाँ नगी नहाती हैं आदि-आदि। देश काल के अनुसार आचार विचार में अंतर हाता ही है। पश्चिमा उत्तर प्रदेश वाले ब्राह्मण मछली मास का नाम सुनने के लिए भी तयार नहा हैं और पूव वाले मूछ पर ताव देकर उसका सेवन करते हैं। स्त्रियाँ पजाब ही में नगी नहीं नहातीं हमारे यहाँ भी नहाती हैं। हाँ, इतना अंतर जरूर है कि यहाँ वे पुष्पा की नजर बचाकर नहाती हैं।

१८ का दिन भर कानपुर ही में रहना था। मुझे फाटो का गौक है। यात्री और यात्रा सम्बन्धी लेखक होने से मुझे फाटा का महत्व मालूम हुआ, और एक बार इस सचौले गौक में जब आदमी पड गया ता कितना ही हाथ रोक्न पर भा खचना पड ही जाता है। मेरे पास सावियत से लाया फे कमरा था, जिसका नगटिव बहुत छोटा एक फिल्म में २६ होता था और बिना इलाज गिय उसका काइ महत्व नहीं था। यहाँ चित्रा स्टूडियो में एक रिपलवम कमरा (अगॉपलेवम) ३३५ रुपये साडे १० आन में सरीद लिया। कुछ समय ता रहा था कि इससे काम नहीं चलेगा। मुझे और महंगा कमरा लना पडेगा। पर सामन दगबर लाभ का सवरण नहीं कर सका। दापहर का भाजन श्री पुरपात्तम कपूर के यहाँ हुआ जहाँ प्रिसिपल हीरालाल खन्नाजी भी मिले। और भी कई मित्र आए। इसी घर में कम्युनिस्ट सनाप कपूर का जन्म हुआ। सन्तोष ने अपनी सारी जवानी कानपुर के मजदूरा की सेवा और सगठन में लगा दी। आज तब भी उनका एक पैर बराबर जल ही में रहना है। वह अपन उद्देश्य और स्वप्न में अदम्य हैं। दोन्नों को इस बात का बहुत दुःख हुआ कि कम्युनिमिपल्टी ने मुझे मान पत्र नहीं दिया? यह क्या समयत नहीं था, कि मेरा रास्ता किस ओर का

है और म्युनिमिपन्टी का मानपत्र जिस आर। भाजनापरान्त बुद्धपुरी में श्री मधार्थीजी के विद्यालय में गये। बहुत दिना बाद श्री सतरामजी से भी वही भेंट हा गई। तरुण चेहरा अब बूढ़ा हा गया था। बीच के समय देखने का मौना नहीं मिला नहीं तो परिवर्तन इतना हुआ नहीं मालूम हाता। मधार्थीजी पहल बुद्ध क नाम से आकृष्ट हुए थे और अपन साथ बुद्ध का भी आयसमाजी बनाना चाहत थे, लेकिन अब वह काफी आगे बढ़े थे। नवावपुरा में श्री छैलविहारी कटक न गिगिता की एक छाटी-सी बैठक हिन्दी प्रचारिणी सभा में की। कटकजी जल्पान कराना चाहत थे लेकिन हम चकन ता एक एक मिनट का बहुत मूल्य था। वहाँ से गरणायिया की बम्ती में एक सिनमा में चायपान के लिए मिन लग ले गए, फिर नागरी प्रचारिणी सभा में। प० लक्ष्मीधर वाजपेयी सभा के अध्यक्ष थे। वाजपेयीजी का सारा जीवन हिन्दी की सेवा में गग रहा था। उन्होंने पत्र-सम्पादन किय, पुस्तकें लिखा प्रकाशन किये। भर लिए ता सब से बड़ी बात यह थी कि हिन्दी साहित्यकारा में सबसे पुराने और पहल इन्ही का आगरा में मैंन थदा बनत दृष्टि से दन्ता। भाषण के बाद कानपुर के महामेठ श्री रामरत्न गुप्त के साथ पत्रकारा से भेंट और भाजन दाना काम करना था। इस प्रकार वह सारा दिन कानपुर में अत्यन्त व्यस्त रहा। कानपुर में मरे लिए ता यह परम्परा-सी बन गई है, कितना हा बचने पर भी दिन में चार-पाँच सभाया में जाकर बालना मामूनी बात थी। १० बजे रात की गाड़ी पकड़कर १ बजे प्रयाग पहुँच छाटी लाइन (ओ० टी० आर०) पकड़ी।

वैशाली में (१९४८)

छोटी लाइन की गाड़ी में चढ़ने पर दिल गरियार बल बन जाता था। बनारस तक गाड़ी खूब जोर से चली फिर छक्का बन गई। भीड़ थी पर सेक्ड क्लास में उतनी नहीं थी। बलिया और छपरा के आसपास थैली-विभाग हट ही जाता है लठियल छागा की भूमि है टिकट क्लकटर भी अपनी चीज का सस्ती नहीं समझते। मानपुर में पहुंचने पर मालूम हुआ, गाड़ी दो घंटा रुक है। अब टिकट में दो ही आदमी रह गए और सोने का मौका मिला। ३ बजे रात को मुजफ्फरपुर पहुंचे। उस रात का कहीं जाना-आना मुश्किल हाता लेकिन मश्रूटरी मौजूद थे। नींद अभी पूरी नहीं हुई थी, जाकर सा गया। बिजली के पखे व नीचे पड़ा था लेकिन सामन मधुर नाथ दग्वर मधुर बस घब घरत। मालूम होता था गुच्छे-वे गुच्छे बनकर मिर पर धावा बाल रहे थे। आसिर सिर का भी ढाँकना पना।

हमार मजबान श्री दिग्विजयसिंह थे। इनके दादा बाबू लगदमिह एक मामूली चपरागी थे। फिर अपने अध्यवसाय से लास्ता रूपय बमाए लेकिन मरीची में पले हान पर भी रपया उनका अपना सबक नहीं बना सया। उन्होंने मुजफ्फरपुर में गिगा क प्रचार क लिए लाया लिया और उमी में प्रियम भूमिहार बालज बना। अक्षजा का नाम रपया पर बालज की

इस सहायता हानी है, इसलिए यह नाम रपया गया।

(जब उसका नाम लगेटसिंह कालेज है) । किंतु दादा के बचपन की गरीबी का नाम सुनकर उह उनका क्या परिचय मिल सकता है । कालेज म नव सस्कृति केंद्र म जाकर डेढ़ घंटा वाचना पटा । दापहर को भारतन कर त्रिग्विजय वावू क घर पर रह गय, और ४ बजे उरी के माय मोटर म बंगाली की पुनीन भूमि क लिए रवाना हुए । भारत के लिए उसका स्थान वसा ही है, जैसा युरोप क लिए अयेंस का । आखिर हमारा भी ध्येय गण राय ही है । श्री जगदीशचन्द्र मायुर (आई० सी० एम०) जब यहा सब द्वितीयनल आफिमर थ, ता उनका स्थान बंगाली की ओर आकृष्ट हुआ और उहनि न ही भूला बंगाली का लागा क सामन जन का प्रयत्न किया । बंगाली को आज्ञात्त वमाड कहन हैं । पुराना बंगाली क अवगण कालहुआ बनिया, बमात् आदि कितन ही गावा म फले हुए हैं । सरकारी और गैर-सरकारी सभा लाग बंगाली महोत्सव की तैयारी म लगे हुए थे । अत्रल का गर्मिया का महोत्सव मभाजा क लिए अनुकूल ना नहीं है पर इसी ऋतु म बंगाली म श्रमण महावीर का जन्म हुआ था । कृषि विभाग और मह्याग समिति की प्रदानी हो रही था तम्बू पडे हुए थ दापहर क वक्त इन तम्बुआ क भीतर रहन वाले की कमी गति बननी हागी ? पर मुझे यह स्थाल नहीं था कि उनके लिए गर्मिया म पहाड का रहना अस्वाभाविक आर यहाँ रहना स्वाभाविक था ।

जरा धूप कभ हान पर हम घूमन क लिए निकले । कालहुआ म अगात् स्तम्भ दखन गय । यद्यपि वह माधु की कुटिया क आगन म पत्त गया है लेकिन उसका ऊपरी भाग बहुते देर स दिक्वाइ पडना है । अगोक न बंगाली क महान का दिखलान के लिए इस स्तम्भ का स्थापित किया था । गायद यही महावन कूटागारगाला म जहा भगवान् बुद्ध अक्सर आकर रहा करते थे । बाहर ११वीं १२वीं शताब्दी की मुकुटकारी बुद्ध प्रतिमा थी जिमक दायत ने उस पर मुत्वा दिया था—'दय धर्मोय प्रवरमहायानियापिन करणिकाच्छाट माणिक्य-मुत्तस्य ।' जिमस मालूम हुआ कि इस मूर्ति के बनवानाले कायस्य उच्छाट थ, जिमके पिता का नाम माणिक था । करणिक

वैशाली में (१९४८)

छोटी लाइन की गाड़ी में चढ़ने पर दिल गरियार बल बन जाता था। बनारस तक गाड़ी झूब जोर से चली, फिर छक्का बन गई। भीड़ थी पर सेक्ड क्लास में उतनी नहीं थी। बलिया और छपरा के आसपास श्रेणी विभाग हट ही जाता है लटपल लागी की भूमि है टिकट बलकटर भी अपनी चीजों को सस्ती नहीं समझते। सानपुर में पहुँचने पर मालूम हुआ, गाड़ी का घटा लट है। अब टिकटों में दो ही आदमी रह गए और सोने का मौना मिला। ३ बजे रात को मुजफ्फरपुर पहुँचे। उस रात का कहीं जाना आना मुश्किल हाता लेकिन सन्नेरी मौजूद थे। नीचे अभी पूरी नहीं हुई थी, जाकर सो गया। बिजली के पखे के नीचे पड़ा था लेकिन सामन मधुर रास्य दयकर मच्छर के स घब घरते। मातूम हाता था गुच्छे-के गुच्छे बनकर सिर पर घावा बाँध रहे थे। आसिर सिर को भी ढाँकना पड़ा।

हमार मेजबान श्री दिग्विजयसिंह थे। इनके दादा वानू लण्टसिंह एक मामूली चपरामी थे। फिर अपने अध्यक्षता से लाखा रुपय कमाए लेकिन गरीबी में पल हान पर भी रुपया उनको अपना सबक नहीं बना सता। उहाँन मुजफ्फरपुर में शिक्षा के प्रचार के लिए लाखा रुपिया और उमी में प्रियम भूमिहार कॉलेज बना। अग्रेजा का नाम रखन पर कॉलेज की स्थापना और बढि में सहायता हानी है, इसलिए यह नाम रखा गया।

(अब उसका नाम लार्गर्टासिंह कालेज है) । किंतु दादा के बचपन की गरीबी का नाम मुनकर उह उनका क्या परिचय मिल सकता है । कालेज म नव सस्त्रुति बन्धन म जाकर डेड घटा वालना पटा । दापहर का भाजन कर त्रिभिवनय बाबू क घर पर रह गय और ४ बजे उन्ही के साथ माटर स बंगाली की पुनान भूमि क लिए रवाना हुए । भारत क लिए उसका स्थान बंमा ही है जसा युरोप क लिए अर्थेस का । आगिर हमारा भी ध्यय गण राज्य ही है । श्री जगतीशचन्द्र मायुर (आई० सी० एम०) जब यहाँ मद्र डिक्शननल आफिमर वे ता उनका ध्यान बंगाली की आर आवृष्ट हुआ, जोर उहोंने न ही भूलो बंगाली का लंगा क सामने लान का प्रयत्न किया । बंगाली को आजकल बमाड कहन है । पुरानी बंगाली क अक्षेप बान्हुआ बनिया बमाड आदि किनन हा गाँवा म फैल हुए है । सरकारी और गैर-सरकारी मनी लाग बंगाली मन्गत्मव की तैयारी म लग हुए थ । जपन् का गर्मिया का महीना सभाजा के लिए अनुकूल ता नही है पर इमी कन्नु म बंगाली म श्रमण महावीर का जन्म हुआ था । कृषि विभाग और महयाग समिति की प्रदानी हा रही थी तम्बू पने हुए थे, पोपहर क वक्त इन तम्बुओ के नातर रहन वाले की नैसी गति बनती हागी / पर मुझे यह स्थान नही था कि उनके लिए गर्मियो म पहाड का रहना अम्बानाबिक और यहाँ रहना म्बानाबिक था ।

जरा धूप कम होने पर हम घुमन क लिए निकले । कालहुजा म अगाक स्तम्भ दखन गय । यद्यपि वह माघु की कुटिया क आगत म पड गया है किन उसका ऊपरी भाग बहुत दर से दिक्वाई पन्ता है । अगाक न बंगाली के महत्व का दिग्गलान के लिए इस स्तम्भ को म्यापित किया था । गायद यही महावन कूटागारगाला थे जहाँ भगवान् बुद्ध अवसर आकर रहा करते थ । बाहर ११वीं शतकी गलाली की मुकुटगारी बुद्ध प्रतिमा थी जिमने दामन न उस पर खुन्वा किया था—' देय धम्मोय प्रवरमहायानिययायित करणिकाच्छाट माणिक्य-मुत्तस्म । ' जिमम मालूम हुआ कि इस मूर्ति के बनवानवाले कायन्व उच्छाट थे, जिसक पिता का नाम माणिक था । करणिक-

या करनन कायस्थ आज भी तिरहुत में होते हैं। यद्यपि भोजपुरा भूभाग—जा
वैशाली से कुछ ही मील पर बहती गण्डक के दूसरे पार से गुजरता
है—में रहनेवाले कायस्थ थोड़ास्तब मुक्ति (प्रवेश) के निवासी हैं। वैशाली
अपने बुद्ध भक्त कायस्थों के लिए मशहूर है। उसने सम्वृति के दिग्गज
पंडित बौद्ध आचार्यों को भी पदा किया। कायस्थ ५० गयाधर यही के थे,
जिन्हें सम्वृत के ग्रंथों के अनुवाद के लिए तिब्बत बुलाया गया।

बाल्हूआ से चक्ररामदास और बनिया गाँव में गया। ये भाव पुराने
ध्वसावशेषों पर बसे हैं। बनिया के श्री विजलीसिंह अधिक पढ़े लिखे नहीं
थे लेकिन उनका पुरानी चीजाँ के जमा करन का गीत था। काफी चीजों
के एकत्रित हो जान पर गुणग्राहकों का उनका दशन के लिए पहुँचना स्वाभा-
विक है। विजलीसिंह के घर पर बड़े बड़े लागा के आने से गाँव वाला में से
कुछ को ईर्ष्या हानी भी स्वाभाविक है। वह उस समय मौजूद नहीं थे।
हमारी जीप लौट आइ, और भोजन करके हम फिर वहाँ पहुँचे। उनके
संग्रह में कितने ही मौयकालीन और कुपाणरालीन सिक्के थे। मिट्टी
को पुरानी मूर्तियाँ तथा और भी कितनी ही चीजें उन्होंने अपने खपडल के
घर में सजा रखी हैं। उनका यह प्रेम सराहनीय था किन्तु पुरानी
सामग्री के लिए यह स्थान सुरक्षित नहीं समझा जा सकता। एमी
महत्वपूर्ण सामग्री का व्यक्ति के हाथ में रहना भी मैं ठीक नहीं मानता।
यह जरूरी नहीं कि भक्त का सन्तान भी भक्त हो इसलिए पीछे इन
चीजाँ के तितर पितर हो जान का डर था। विजलीसिंह अब भी अपने
काम में लग हुए थे। जनवरी (१९५६) में मुझे आया सुनकर वह
पटना आए और बराबर साथ रहने लगे। जब मैं बलवत्ता जान लगा तब
भी वह स्थान पर मौजूद थे। मैं उनके चहरे का भी भूट गया था, और
नाम का भी। अबपर ऐसा होता है, कि नाम और चहर दोनों को एक साथ
में याद रहा कर सकता किन्तु अलग अलग याद कर सकता हूँ। लेकिन
इस समय दाना नहीं याद आ रहा है। विजलीसिंह नम्रगत हंगे, मैं उन्हें पह-
चान रहा हूँ। चाहे पहचान भी न पाऊँ ता भी चाहे समय के परिचित

पुरप के सामने भी बसा व्यवहार करना मेरा स्वभाव नहीं है, जिससे उसके हृदय पर ठेस पहुँचे। यदि विजलीमिह ने अपना परिचय दे दिया होता कि मैं वही आदमी हूँ, जिसने बनिया म पुराना विक् बस्तुआ का सग्रह कर रखा है, तो मुझे बड़ी प्रसन्नता हाती, और पिछले आठ बप क उनक काम क बारे म पूछता और सुनता। मैं सारे समय उँह पहचान नहीं सका। मेरे दास्त बहन लग यह आदमी खुफिया पुलिस का है। मैंन उनस यह तो कह दिया—“पुलिस ऐस सीधे-सादे आदमी से मेरे बारे म अपना काम नहीं ले सकती।’ हाँ, पुलिस स्वतंत्र भारत म भी मेरे पीछे बसे ही परेगान है जम अंग्रेजा क समय म। मुझे पीछे अफसाम हुआ, जब मालूम हुआ कि वह सीधे सादे व्यक्ति विजलीमिह ही थ।

बनिया म और जगहा पर भी सेतो मे कभी कभी कुइयाँ निकल जाती हैं। मे कुइयाँ वृत्ताकार एक इट स बनी होती है। आजकल ऐसी ईटा के बनान का यहाँ रवाज नहीं है। लेकिन छपरा गोरखपुर, बस्ती के तीन जिलो को पार कर चौथे गोंडा जिले म यदि हम जायें, तो आज भी ऐसी ईटें बना और फकाकर लोग कुइयाँ तैयार करते हैं। ये सस्ता पडती हैं। मामूली खच के पाने क लिए काफी भी हाती हैं। एक जगह पास पास तीन कुइया थी। लागा को समझ म नहीं जा रहा था, कि इतने पास पास कुइया के बनान की क्या जरूरत थी। लेकिन ये कुइयाँ ता थी नहीं ये तो सडाम को कुइयाँ जर्थात् गूथकूप थ। उम समय सामाजिक म्वास्थ्य और नागरिक सफाई का आर लागा का ज्यादा ध्यान था इसलिए हर घर म गूथकूप क रहन की आवश्यकता थी। वहा क लोगों का यह समझाने म बहुत दिक्कत भी नहीं हुई क्योंकि गूथकूप का ढक्कन तीन टुकडा म टुक वहा मौजूद था। इसके बीच मे एक बित्ते का गोला छेँ था, पावदान भी बना था और आग छोटा छट पेंगाव गिरने के लिए था। लागा को यह विचारम हा गया, लेकिन वह कुइया समझकर उसका पानी पी रह थ। मैंन कहा, इसकी पर्याप्त न खाजिए। कुछ ही महीन म पारखाना गाभा के फूल का रूप ले लेगा क्या उसे

अभय समझा जाता है ? और य गृध्ररूप तो आज स सहस्राब्दी पहल इस्ते माल किय जाते होंगे ।

२१ को भी सजरे हम पुरानी बंगाली की परित्रमा म निवल । बावन पावर पर एक शिला म गणग और सप्तमातका की मूर्तियाँ खुदी हुई दती । पास ही म बुद्ध फिर छठ तीथवर पद्मप्रभु सिहना अवलोकितेश्वर हर गौरी और विष्णु की मूर्तियाँ थी । इनम विष्णु की मूर्ति सबसे पुरानी थी बाकी ११वीं १२वीं सदी की थी । अवलोकितेश्वर की खण्डित मूर्ति बड़ी ही सुन्दर थी । वहाँ स दक्षिण भगवानपुर रती गय । बंगाली क लिच्छ विया की एर शाखा पात थी जिस पालि म नाती नात या नत्ती भी कहा जाता है । तीथवर महावीर का बंगालिक और पातपुत्र (पालि नात पुत्र) कहा गया है । उनक बंगाली म उत्पन्न और पातु मनान हाने म काई मदेह नहीं लकिन अभी बहुत से जन इस मानन म आना कानी कर रह हैं । बीच म एन भूमि म जना क उच्छिन हा जान और पीछे स्थाना का मनमाना प्राचीन नाम एर ताथ बना लेने क बाद इनक लिए यह द्विचक्रिचाहट स्वामाविक है । भगवानपुर रती का अर्थ है रति पगन का भगवानपुर । भगवानपुर नाम क नितन ही गाँव है इमलिए यह विगपण लगाना पडा । रति नति या पात का हा विगण हुआ एय है । आजकल भी इस पगन म जयरिया भूमिहार वन्त वनी सत्या म रहत हैं । यह लिच्छवियों की उगी पातु पाता की सन्तान हैं पात स ही जयरिया गण बना । महावीर भी कायप गात्रा थ और यह भी कायप गात्री हैं । पात लग धानिय थ और या अपन का भूमिहार ब्राह्मण कहत हैं, यह भेद जरूर है जिसका समाधान मुक्ति नहीं है । यहाँ काई विगप चिह नह । मित्र हागा भी ता जमीन क बहुत नीच हागा । बगाठ क पाम स्तूप दगा जिसने ऊपर आजकल बगर बना हूद है । यह पायन उमो स्थान पर है जहाँ बंगाली का पचिमी द्वार था और जहाँ म हा बुद्ध अन्तिम बार कुसिनाग की आर जात वत निवल थ । जलपान क बाद महावीर जयना क उपरग म हाती जन गभा म भाषण दिया फिर जाय पर चलना धूप म निवल पडे । यम्मन छारा की

वाग म चार पाच हाथ नीचे अर्थात् १२ १३ सौ साल पहल (गुप्त काठे) की एक चार मुखा वाला विहार मुर्तिलिग देमा । वह गुप्त काल से पहल का हागा । गायन यही बंगाली के पूव द्वार क बाहर चल्य रहा हागा । चल्य उस समय पृथ्वी चौनरे को कहते थ और वह बौद्धा क ही नही, दूसरा के भी हान थ ।

गाम क साठे ५ बजे विहार क राज्यपाल अणे माह्य आए । नीचे थी लाट्टिपोकर टोक स काम नही कर रण था, इसलिए मुनाई देना मुक्किल था । लाट्टिमाह्य भाषण देकर थोडी दर माद कर गाए । मैने भी अपना बगारी पर लिखा भाषण दिया । कितन हा प्रस्ताव पास हुए । उस समय वानधीत हा रही थी कि बशाग म प्राकृत का एक गायपाठ या इन्स्टीट्यूट कायम किया जाए । विहार न पाछे दरभंगा म मस्कृत इन्स्टीट्यूट नालगा म पालि इन्स्टीट्यूट और बंगाली म प्राकृत इन्स्टीट्यूट कायम किया । उन काना स्थाना म दरभंगा ही एमा है जहा अनुसंधान क लिए काफी सामग्री मौजूद है । वहा शहर है । एक अच्छा-खामा डिग्री कागज है और महाराजा की बहुत बडा निजी लाइब्रेरी भी है । बाकी दानो स्थानो म हरेक चीज का बगवस्त स्वयं करना पडेगा । लावा की इमारतें खडी करनी हागी, फिर एक बडे पुस्तकालय का तैयार करना पडेगा, और सबसे बडी दिक्कत यह कि सैकडा छानो और शावकताआ का वहा लापर रखना आमान नही हागा । खैर, इन स्थाना का अपना महत्व है । नालगा को भुलवाया नही जा सकता, पर वहाँ कबल पाठि इन्स्टीट्यूट कायम करना टोर नही है । बौद्ध बाइ मम और बौद्ध जगत् की भाषाओ के अध्ययन का वहाँ केन्द्र बनाना चाहिए । बंगाली मे जन बाइमम ही नही, राजनाति और गणराज्या के इतिहास क अनुसंधान केन्द्र बनाना चाहिए । दरभंगा म मिथिला इन्स्टीट्यूट रहे ।

प्रयाग—बंगाला से ११ बजे रान की चलकर १ बजे की ट्रेन पकडी । छपरा पहुँचने सबेरा हो गया । गर्मी बहुत मालूम हो रही थी, पमे स लू की लपट निकल रही थी । इधर यह गर्मी थी, जो कह रही थी जल्दी भाग

जाआ उधर आमा म टिकारे (करियाँ) घूम घूमकर कह रहे थे— 'हम कुछ ही दिना म बडे पीले और मीठे हा जाएँगे। पके आमा से वचित क्या हाने जा रहे हा ?' एक बार आम चाचकर नीच रखना चाहता था दूसरी बार गर्मी भगानर पहाड पर पहुचाना चाहती थी। और पहाड पर भी हम अब के साल बनौर जा रहे थ, जहाँ पके आम किनी तरह भा सही सलामत नही पहुच सनत। त्रिग्विजय बाबू ने बहुत अच्छे आमा का टाकरा रेल द्वारा गिमला भजा। वह समझने थे, मैं गिमला ही न आसपास कही रहता हूँ। बिल्टो गिमला से आठव-सबे तिन ढाक द्वारा चिनी पहुची। उम वक्त मैं यही मनाने लगा था अगर रेल से किसी ने घुराकर टाकर को सा लिया हागा ता बहुत अच्छा।

प्यास बहुत मना रही थी। भाजन करना मुश्किल था। माड ७ बजे शाम का प्रयाग पहुचनर मत्यनारायण कुटीर म चला आया। टाइप करने का काम कागज क लिए रुना हुआ है यह जानकर बड़ी क्षुभलाहट पदा हुई। टण्डनजी पर भी प्राय आ रहा था बड दीघ सूनी अनिच्छयात्मक वक्ति क पुग्प हैं। रुकिन काम का ता घाट पर पहुचाना ही था। सुनीति बाबू ने सरकारी कामा म व्यवहाय परिभापाए बनाई थी। इसम पदाधिकारिया और कार्यालया क नामा की ही सूची थी किन्तु निर्माण का ढंग बना अच्छा था। हमने उनम से बटुता का स्वीकार कर लिया। जो गड अकारात्कि प्रम म लग गय थ अब उह अग्रजी और हिन्दी म टाइप कराना था। इसम भी हमने कुछ आर्गमिया का ग्या लिया। र्नी समय सम्मलन क कमचारिया न बनन-बडि क लिए माँग री। आपिर वह जानत थ कि सरकार भी ५० ५५ हजार की सहायता देन जा रहा है। फिर उनरा ही येतन क्या कम रहे ? २३ ताराग को हमन लिए भा कगलाहट हुई कि चन्द्रप्रताप क कारण हमार माथ काम करन वाल लग त्रिवणी स्नान करने चल गए। विद्यानिवासजी जान ताकर काम कर रहे थ। हमारी याजना क अनुमार उह याग क तिलान क लिए कर्तव्यता, कटक और नागपुर जाना जरुरी था। मैं चाहता था पहाड क लिए प्रस्थान करन से पहले

के आ जाने तो जागे का दिना निर्देग मामन ही कर दिया जाता । लेकिन अभी टाइपिस्टा का ही बार्डे ठीकठान नहीं हा रहा था ।

बीच म कुछ जिना अनुपस्थित रहने क कारण कुछ कामों का दुबारा करना पडा । विद्यानिवासजी सस्कृत का माह नहीं छाड मके और उहनि बहुत स सस्कृत गद दिए । हमारा काम लागा का भाषा सिखलाना नहीं था बलिन जितन गब्दा का हिन्दी म प्रचार है, उही से नय गल्पा का गप्ता था । तीन दिन का काम बढ गया । खैर, पहल पहल एसा हाना स्वाभाविक था । २५ तारीख का माचवेजी भी आ गए । वह भा विद्या निवासजी की ही तरह मुस्तैद थ । यदि विद्यानिवासजी दाहिने हटना चाहत थे, ता यह उह खीचकर बीच म रखन म समय थ । उस दिन ताप मान ११० डिग्री तक पहुचा । पता गरम हवा दन लगा ।

२६ को बनारस स रायकृष्णदास पधार । वह विनीपतीर स दखना चाहते थे, कि हम उसी काम को नहो दाहरा रह हैं, जिन नागरी प्रचारिणा मभा कर रही है । सम्मेलन और नागरी प्रचारिणी मभा की प्रतिद्विदिता से मुये कुछ लेना दना नहीं था । मैंने उह परिभाषा समिति का प्रस्ताव दिगला कर बतलाया कि हमारे काम एक दूसरे के पूरक हाने चाहिए । रायसाहब न मुझे इमुलिन लने का मलाह दी । दा चार मूर्ई लन क त्रिए तो मैं तयार था लेकिन अभी प्रतिदिन मूर्ई को चुमाने से भागता था । यह भी मन के किमो बाने म आगा थी— 'गामद दवहिभालय कृपा कर बर्ष प्रतिदिन दा घटा टहलना है ही ।' पत्रिषा-ग्रथि के पत्तान लेने स गरार मे क्या परि-वतन हाना है यह कुछ कुछ दिलाद दन लगा । प्यास और पंसाव दाना एक साथ जार करले मुह का स्वाद बुरा रहता, चमडा रूखा तथा मन म एर तरह की त्रिकलता मालूम हाता । डा० रवि वर्मा न पगाव देखकर बतलाया कि चीनी बहुत अधिक है । द बजे इमुलिन की मूर्ई ली । ३ घटे बाद ११ बजे रात का मुह क स्वाद म अतर मालूम होन लगा । फिर भी साध रहा था, इजेकान बडी बुरी बला है मूर्ई का गरम पानी म उबाल कर साफ रखना हागा, फिर इजेकान का सारा सामान—इमुलिन स्थि-

रिट रुई सूई चिमटा आदि—सब पान रखना होगा। साफ दिग्दर्श देन लगा कि यह सारा तरददुद अकल कंधे पर उठाया नहीं जा सकता, पर जयकी वार ता हिमालय अनेले ही जान का निश्चय किया।

२८ तारीख का गाम-सवेर दाना समय इसुलिन का इन्जक्शन लिया। शाम का सवेर स दून परिमाण म।

२८ का तिब्बत की कुछ बातें मालूम हुई। पता लगा सरकार और सरा बिहार क भिक्षुआ म झगडा हा गया। सरा म शिक्षित रडिग लामा तरह्व दलाइ लामा क मरन के बाद तिब्बत क रिजेक्ट हुए थे। मेर मित्र गंग तन् दर उनक अध्यापक रह। तन दर जब सेरा के एक विभाग के खम्बा (डोन) थे। वह बडे ही प्रतिभाशाली विद्वान् थ। बाह्य मगालिया का अपनी भूमि का छाडकर २५ ३० वष स सरा म पहले विद्यार्थी और फिर अध्यापक रहे। यह जानकर उठा दु प हुआ कि इन बगडे म मुष्टडे साधुगा न नग तन् दरका मार डाला। उनकी सवनामुखी विद्या का उपयोग जब हानेवाला था। इनका बहुमुख्य जीवन इतनी जल्दी समाप्त हो गया। मर दूमर मित्र और साथी गंग म-दुम् छामके (सधधमवधन) क वार म पता लगा कि प्रगतिशील चिन्तार वाली अपनी पुस्तक क छपवाने क लिए उह जेल म बंद कर दिया गया है कितना ही वार काडे लगाय गए। धमवधन के कुण्डचिन्तार थ उत्तम कवि और साथ ही दान के पंडित थ। मर माय रहन का प्रभाव पटन म उनके विचार भी मावमवादा हा गए। नवीन तिब्बत का उनम बहुत आगा हा सक्ता थो लकिन वह भी नमय म पहले ही चल बसे। गंगे धमकीर्ति मर माय का वार भारत आ चुक थ। व काल क पाग क मगाल थ। वह आजकल तिब्बती काग बना रह थ। मैं प्रयाग म था और ये गाकजनप घटनाएँ हिमालय पार मुद्दर लहासा म घट रण था। पर मालूम जाना था क मर सामन हा हा रही हैं। मरा चित्त बटन गिन था।

अब मैं टायपरीटिग ती वार स अधिक उपशा करन के लिए तयार नहीं था। ६० यूनिट इसुलिन का इन्जक्शन देन पर पगाज की चाना रती।

२६ तारीख का दिन मंगलवार इजेक्शन लिया। डा० ग्रिफिन ने इन्फ्लुएन्जा, पनिसिटीन, पिचकारी गरम करन का चम्मच और दूधरी सारी चीजें जमा कर दीं। सब पर १०६ रुपये खर्च आया। डाक्टर ने अपनी फीस लेने में इन्वार कर दिया। मैं एमो जगह जा रहा था जहाँ इजेक्शन देने वाला कोई नहीं मिलता इसलिए ३० अप्रैल का अपन हाथ से इजेक्शन लिया।

उसी दिन काग प्राय समाप्त हो गया। टाइपिस्ट अंग्रेजी और हिन्दी में गणना का टाइप करन मलग हुए थे। विद्यानिवासजी भी घर आकर लौट आए। किम निदान्त के अनुसार हम परिनापात्रा का निर्माण कर रहे हैं इस पर एक लख भी तयार किया।

२ मई को रविवार था। आज मम्मलन काय-मिति की बैठक हुई। "गसन गब्दकाग" का दम्बर विश्वास हो गया, और समिति ने विज्ञान का परिभाषात्रा के लिए भी पाच हजार रुपये मजूर किए। अगले दिन मुझे हिमालय के लिए रवाना होना था। बालदजी का बहुत आग्रह था कि मैं किसी का अपन साथ ले जाऊँ, किन्तु मुझे चिन्ता जाना था, वहाँ की यात्रा में कई कठिनाइयाँ आ सकती थीं जिनका सामना करन के लिए हरकत आदमी तयार नहीं हो सकता था। इसलिए मैं प्रयाग में अपन साथ किसी का ले जाना पसन्द नहीं किया। तबना विश्वास हो गया था, कि गिमला से कोई आत्मी मिल जाएगा। हाँ, यह बन्दोवस्त इसी यात्रा के लिए था। अब तो मालूम होन लगा था कि किसी आदमी का साथ रखना होगा, जो लिख भी सके और इजेक्शन भी ले सके।

किन्नर देश में

३ मई का साँचे ८ बजे मैं कालका मल से प्रयाग से रवाना हुआ। जितन ही मित्र मिलन आए। दवाइया का एक पासल घर पर ही छोड़ गए। कई चाजा को साथ रखन म एसा हाता ही है। उम पामल म मूत्र परीक्षा की दवाई थी। हमारे डोरे म दा बगाली मज्जन थे जितम एक दिल्ली और दूसरे कालका तक क साथी थे। थागा ही दर म हम चिरपरिचित स हा गय। साथ म एक अंग्रेज भी चल रहे थे। यह बीस साल से दार्जिलिंग क चायबगाना क प्रबन्धन थे। चायबगान भी ता अब अंग्रेजों के हाथ स निकल रह थ। उत्तरी ईरान म चाय क बगीचे बनाव जा रहे थे। अब वह उही क लिए वहाँ बुलाए गए थे। वह चायबगान क कुलिया का सादगी की बड़ी प्रणामा करत थ। क्या न प्रणामा करत, जब कि वह बिना कान पाछ हिलाय उनर द्शारे पर हर वक्त काम करन के लिए तयार रहते थे। 'बन्माग' बन्मुनिस्ता स उनका जस्टर गिवायत थी बयाकि वह कुलिया को भन्का रह थ। दामा क युग म मनुष्य का पशु की तरह काम करना स्वामिया को स्वाभाविक मानूम हाता था। आज नी करोगा का मात्र पदा करननाले चायबगान क कुला आधे पट रहकर काम करें, तभी वह भल मालूम हान हैं।

१० बजे म ६ बजे तक चन्ती हुई ट्रेन में भी बड़ी गर्मी रही। राना रान का मन नहीं बिया। ८ बजे बाद हम दिल्ली पहुँच। दा घट स अधिच

गाड़ी रूकी रही। सीट रिजव थी, चार सीटें थीं और चार ही आदमी थे। इसलिए रात का सोना आराम रहा, और दिन में गप्पें मसमस करके बीते मालूम नहीं हुआ।

शिमला—४ मई की रात हम काठमा पहुँच गये थे। छाटी गाड़ी पकड़नी थी। दा सूटकेसा और बिस्तरे को लगेज में भेज दिया बाकी सामान साथ रखा था। चंडीगढ़ आया। यही पूर्वी पंजाब की राजधानी बनना जा रही थी। यह प्रयत्न मुहम्मद तुगलक के दौलताबाद बसाने से भी बदतर था। आखिर दौलताबाद में पहले ही से देवगिरि जैसा नगर मौजूद था और यहाँ जगल में राजधानी बसाना जा रही थी। जालंधर प्राचीन काल में भी एक बड़ी राजधानी था। आज भी एक बड़ा गहरा, और उसमें कुछ ही मोल पर कपुरबला के महल मौजूद थे। पंजाब की राजधानी होने के लिए वह सबसे उपयुक्त था, लेकिन सभ्यता के कौन। मालूम हुआ, कि एक मंत्री की यहाँ बहुत सारी जमीन थी वह राजधानी के नाम पर लाखों रुपये में बिक गई। (चंडीगढ़ की राजधानी अब सरकारी तौर से उद्घाटित हो गई है लेकिन, पंजाबी भाषा के छोड़कर पर वैसे इस नगर के सौभाग्य को पंजाबी भाषा किसी समय भी छीन सकती है)।

छाटी लार्न का डब्बा और इजन भी छाटा था। ट्रेन छोटे-छोटे पहिया से बालक की तरह घीरे घीरे ऊपर साँप सी टढ़ी मंडी चढ़ रही थी। रास्त में पहलाड के भीतर रिनती ही सुरंगें मिली। चार हजार फुट की ऊँचाई पर पहुँचने के बाद गर्मी से छुट्टी मिली। यहाँ गेहूँ अब पक्का रहे थे। दोपहर के करीब शिमला पहुँच गये। स्टेशन पर प्रो० लाजपतराय नय्यर अपनी वहिन रजनीश्री के साथ मौजूद थे। जीप पर चढ़कर ऊपर पहुँच, और थोड़ी-सी चढ़ाई को पदल पार करना पड़ा। फर्रुखाब बंगल पर पहुँचने में काफी थका घट हुई। मकान बड़े सुरम्य हरे भरे स्थान में था। सफाई और गाँति चार्जे आर विराज रही थी। रेल के लम्बे मकान के बाद स्नान करना अनिवार्य है। स्नान किया, लेकिन पट खराब था, दूध भी था और कई पतले दस्त और एक क भी हुई। ६ बजे रात को छुट्टी मिली। आज खाना नहीं खाया।

प्रा० नय्यर पंजाब सरकार के प्रचार विभाग के डायरेक्टर जेनरल (महानिरीक्षक) थे। उन्होंने कुछ फिल्मों दिखवाई जिनमें उनके कला के कुछ दृश्य थे, पर पेट के दर्द के मारे मन नहीं लग रहा था।

उस दिन गाम को गिमरा को प्रधान सड़क—माल—पर टहलाने गये थे। पंजाबी ललनाएँ मारे भारत में आयुनिक्ता में अब्बल रहती हैं। वे माल का पैरिस की फगनवाली सड़क बना रही थी। परिम और भारत के फगना का यहाँ बहुत विचित्र समिथण था। एक तबी न चित्रवण सी पनली साडी और ब्लाउज पहनते वक्त यह ध्यान रखा था कि उदर का सौदय ढँकने न पाए। यदि स्वस्थ और सुंदर होता तो गुप्तकाल की मूर्ति में सुंदर मालूम हानो लकिन थी वह बिल्कुल चुडैंग। गाम को माल पर ता मातूम हाना था कि सौन्दर्य और वपभूया की प्रदगनी हा रही है। य पहाडी नहीं पंजाबी तरुणियाँ थी। तरुण पीडी पिछली पीडी का बहुत पीछे छाड गई थी। एक गडरी अपने भाई न वह रही था— मैं अपन मित्र के पास जा रही हूँ। भाई न जवाब दिया— तुम्हारा मित्र तरुण अयुध है ना ? बीमबा सदी के मध्य में ही यदि यह रखा जा रहा है ना आगे वहाँ तक पहुँचेंगे इसे कहना मुश्किल है।

किन्नर देश की यात्रा का विस्तृत वर्णन मैं 'किन्नर देश में' पर पुरा है, जो कि 'हिमाचल प्रदेश' में भी लिखा गया है इसलिए उन सब बातों का यहाँ दोहराना उचित नहीं। यहाँ सप्तेष में ही कुछ वर्णन करना होगा। गिमरा में मैं ४ से १२ मई तक रहा। प्रा० राजपतराय का महमान हाजर। वह पंजाब में हमें ही मुझे दिल के महमाननवाज मातूम हुए। प्रा० नय्यर में य गुण और भी अधिक थे। उनकी पत्नी भी हर तरह मुझ काई तरुण न हा, इसका ध्यान रखती र्हा। यहाँ आकर इंगुनिन का नियमपूर्वक जेना मीने गुरु नहीं किया। भाजन में भी गयम नहीं कर पाया। जाग जान की घुन थी। पदल चलने का कभी-कभी हिम्मत करता था लकिन बड़ा म माँग पूनी दस कर घोने की आवश्यकता थी। स्वनाथ भारत में अब २२ रिपागता को मित्रार हिमाचल प्रदेश बना

दिया गया था जिसके चीफ-कमिश्नर मर पुरान परिचित थी एन० सी० मेहता थे। बने भी उनसे मिलता किन्तु अब तो उनके प्रदेश म कई महीना के लिए जा रहा था इसलिए जरूरी था। टेलीफोन लिया। महताजी अनु पस्त्रित थे अपना नम्बर दे दिया, और साचा यत्र टेलीफोन आषगा ना मिलन चलेंगे। टेलीफोन आया और ७ मर्दे का हिमाचल मरवार क सचि वालय म उनम मिलन गया। सचिवालय जिस इमारत म था, उमका नाम हिमालयघाम रखा गया था। महताजी मिठ और प्रस्त ज्ञान पर भी उसका प्रमाण नहीं किया। कुछ बातें दृष्ट, उन्हे क्क कि फल उत्पादन और सडको का निर्माण यह सबम पहले करना है। कनौर म अगूर क बगीचे हैं जिसम जीप द्वारा बह आ मक मडका का एसा बदायम्न करना हागा। यह भी कहा कि हम लाग लाग-बला की प्रदानी म एक मण्डली बाहर भेजना चाहत हैं उमक लिए ध्यान रखेंगे। मेर लिए सबसे बडा काम यह हुआ, कि उन्हे रामपुर क उच्चाधिकारी का पत्र लिख दिया, कि घाडे भार चाहक और डाक बंगला आदि का प्रबंध कर दें तथा टाणदार म १३ तारीख का एक घाडा और दा कुली तयार रह।

८ तारीख का मरे दबला क साथी ठाकुर गाविर्दसिह मिले। उनक साथ कनौर (सिपलो) क ठाकुर गापाचंद नगी भी थे, जा इलाहावाद म एल० एल० बी० क द्वितीय बप क छात्र थे। तासरे पुम्प गाग निवामा नेगी ठाकुरमन बी० एस सी०, एल एल० बी० थे। नगी ठाकुरसिह कृषि के ग्रेजुयट थे नौमना म बले गए थे, और अब हिमाचल क लिए कुछ करना चाहन थे। मालूम हुआ, कि चिनी का कमिश्नरी घर अब भी खाली पडा है, उसक एक भाग म अस्पताल है। नेगीजी ने अपन परिचितता का कई चिटिठया लिख दी।

उसी दिन वालीगली म गया। उसकी स्थापना १८१५ म उसी समय हुई थी, जब कि हिमालय के भारताय पहला न अंग्रेजा न नेपालिया से छीना था। बंगाली सबम पहले पश्चिमी मन्त्रता क सम्पक म आय। उनक भा कुछ लाग आधुनिकता म किता समय तरपट दौड़े, लकिन वह समय बहून

पहले बीन बुझा। जय उनम लाधुनिक्ता आधुनिक सजा वेप भूपा भी है पर गम्भीरता के साथ।

गिमला घूम फिरकर दगा। उसने दूर के बगला में भी गए। कुफरो में बनभाज भी किया। १२ मई के सत्रा ५ बजे रेम्नरां में पजाव के मथिया न चाय पार्टी ली जिसमें डा० गापीचन्द मुख्य में ली तथा दूसरे मन्त्रा भी आये। उसी दिन दापन्द को प० भगवतत्तजी मिले। अब भी वह उमी तरह स्वाध्यायगोल हैं और आय समाज के वैन हो पगपाती भी। कालि दाम और समुद्रगुप्त को वह इमवी सन् के आरम्भ में ले जाना चाहत हैं और बुद्ध का ईसा पूर्व ७वीं सदा में। विचार भेद कितना ही है किंतु हमारा बसा ही मधुन मन्वच या जैसा १९१६ में। ४२ वर्षों का उन पर कोई प्रभाव नहीं है यह जन्म दिव्या की बात थी। लाहौर में वह गतिपूर्वक मोड टोन में अपन घर में रहा करते थे। निश्चल जावन था, देश का बंटवारा हुआ। ६ अगस्त (१९४७) को परिवार-महित चले आय। कष्ट का जीवन है। घरबार नहीं। लडवा मध्य एसिया स्पूडियम में काम कर रहा है पत्नी अमृतमर के एक विद्यालय में अध्यापिका हा गई थी यही सन्नाप की बात है।

१३ मई का साढ़ ७ बजे बस में हम रवाना हुए। २६ मील पर नाग कण्डा तर बस जाती थी जो ६००० फुट की ऊंचाई पर है। यहाँ में रामपुर ३२ मील था। लेकिन, हमारे लिए घाडा ठाणादार में आने वाला था। गयाग में रामपुर हाई स्कूल के हेडमास्टर प० दीनरामजी भी इसी बस में आये थे। सामान के लिये पांच रुपये में गन्धक किया और स्वयं ११ मील की यात्रा पदचरण परन के लिए चले पडा। पहले घण्टे में गन्धार चार मील रही फिर कुछ मुश्न तब मील के पास पहुँचने पर एक घण्टा मिल गया। ठाणादार में डाक बगले में ठहर। निम्न में भारतीय प्रतिनिधि श्री दबीरामजी स्टाक के पुत्र, था प्रीतमगिट और पुरान परिचित डा० जगरानमिन् साथ मिल। बिन्दुल अपना में आ गया। रामपुर से आये घाडे गन्धर मोडू थ।

अगले दिन ६ बजे चलने से पहले रामसाहब देवदासजी परींठे और फल लेकर आये। रात को पेट ठीक नहीं था इसलिए आज उपवास करने की माची थी। फल ल लिए। नौला और निरत हात शाम हान से पहले ही रामपुर पहुँच गया। डाकबँगला नगर से दूर था। हमने बड़ी प्रसन्नता से स्त्रीकार किया जब यहाँ के उच्चाधिकारी सरदार साहब ने अपने बगले में रहने के लिए कहा। बक्वटा में रैव्यू अफसर थे। घर उजड़ने के बाद इधर चले आये। और अब इस काम पर थे। रामन में एक जगह घाड़े ने पत्थर से गिरा दिया चार जगह घाव हो गया। इन्सुलिन लेना जरूरी था। हमारे मजबान सूई दान में दक्ष निकले। १५, १६ का रामपुर में ही बिताया। रामन के लिए कुछ चीजें खरीदी, चिनी के बारे में कुछ जानकारी प्राप्त की। रामपुर का राजा अभी लडका था, राजमाता दु सा थी। इस दिन के लिए कभी मोचा नहीं था। अब उनकी कोइ पूछ नहीं थी। राजा के घोड़े और खच्चरों का भी सरकारी बनाया जा रहा था। तोगाखाने में लाखा आभूषण रहे हूँगे लेकिन सब पर लगाकर ठंड गए, जो दो चार हजार के प उर रानी को दे देन में क्या आपत्ति थी? बचारी अपने दु सा का वजन करने अपने को रोक नहीं सकी और उसकी आँसू में आसू आ गया।

१७ तारीख का सबेरे साढ़े ६ बजे आगे के लिए रवाना हुए। सामान के लिए दो सरकारी खच्चर मिले थे। सवारी के घाड़े की पीठ बटी थी, म् एक मील जान पर मालूम हुआ, उसे लौटा दिया। नौ मील पर गौरा के डाकबँगले में दोपहर के लिए ठहर गया। माच में अखबारों में रामपुर बुगटर में प्रजा के विद्रोह के बारे में पता था। गौरा का डाकबँगला भी उस समय विद्रोह का एक मुख्य स्थान था। मास्टर अनुलाल और ५० सत्यदत्त प्रजा के नेता थे। रियासत वाले अपनी पुरानी चाल चलना चाहते थे। सराहन में अनुलाल का गिरफ्तार करके गौरा के डाकबँगले में लाया गया। गिरफ्तार करनेवाली पुलिस म्बय गिरफ्तार हो गई। अगले गियामत में जज, पुलिस के अफसर तथा दजन से अधिक मिपाहिया न गाली चलाकर काम बनाना चाहा, लेकिन उह आत्मसमर्पण करना पना। कितन ही तिन तक

रामपुर में प्रजा का राज्य रहा। मास्टर जनुलाल और प० सत्यदेवके मतत्व ही के कारण लूट पाट नहीं हुई। अतः में भारत सरकार ने पुलिस भेजी और बिना गाली खलाय ही गति स्थपित हो गई।

आज २१ मील चलकर गिमला से ११वें मील पर अवस्थित सराहन के डाकबंगल में पहुँचे। सारी यात्रा पदल हुई थी, इसलिये थकावट थी और जत की तान चार मील की बढ़ाई ता बहुत ही कठिन मालूम हुई। बंगल पर पहुँचते पहुँचते चूर चूर हो गये थे। अध्यापक माहनलालजा का पहला हीनेगीजी का चिट्ठी मिल चुकी थी। उन्होंने जाराम का सारा प्रपञ्च किया, जोर २० रुपये पर अगले पड़ाव के लिए एक घोड़ा भी कर दिया।

माइम दौलतराम का पहला ही खाना कर लिया। घोड़ा दखन में बड़ा रोबदार और मजबूत था। हमने साचा था यह चलने में हवा से बातें करेगा पर वह बसा साबित नहीं हुआ। गोलिडग नाला पार कर मैं एक दूरान में बंठा था। पास के खेत में खम्बा लगा का तम्बू पड़ा हुआ था। खम्बा तिवगी खानाबगान हैं जा जाल में मानसरावर प्रदेश और गमिया में दिल्ली और दूसरे भारत के गहरा में घूमा करते हैं। तिव्वती में बात करने पर मेरा आर उसका आक्षेपण हुआ। उसने चाय पीने के लिए बुलाया। चाय पीने से भी बन्दर मुझे तिव्वत और खम्बा लगा के द्वार में जानकारा प्राप्त करने की इच्छा थी। तरण का बौद्ध धर्म में अनुराग था ब्राह्मण धर्म का वह शूठा धर्म समझता था। उसकी जानकारी काफी थी। उसने कम्युनिस्ट पार्टी का भी नाम सुना था। गायद यह मालूम नहीं था कि दो माल बन्द तिव्वत में कम्युनिस्ट पार्टी की दुन्दुभि बजन लगगा। वह चाहता था भाट में भी गरीबा का गायण बन्द हाना चाहिये। उस दिन २३ मील चलकर साढ़े ५ बजे नकार पहुँच गए। चारा आर दूधदारा के गयन बन की छटा थी। इधर के जगल के बजरवेंटर का कार्यालय यही रहता है। बजरवेंटर तिव्वत माह्य जालदार के रहने वाले थे। चाय पिलाकर उन्होंने जगल माग गजिया का घाग तिव्वतिया। जमा फल काई नहीं उपार था। नगा टाकुरनिट न चिट्ठी यहाँ भी तिव्वती थी और बाबू

अमीचन्द न बड़ी मन्द की। सबर की चाय डिप्पन साह्य के यहाँ थी किन्नर पगी के बाबू अमीचन्द साथ साथ चले। अगला डानवेंगला बगपू म था जिमक जरा ही नीचे सतलुज को पार करने के लिए लोह का पुल था। रास्ता उनगई का था इमलिय छोटा रहने पर भी उसका कोई काम नहीं था। डानवेंगले पर ८ बजे हा पहुँच गये। सडक क इस्पक्टर श्री लक्ष्मीनन्द बडे प्रेम से मिले। चार घण्टा विश्राम करन क बाद अत्र वह साथी बन गए। उन्होंने अपना घोडा और एक जादमा रागी तक क लिए द लिया। बंगनू पुल सवा पाच हजार फुट की ऊँचाई पर है। हम किन्नरी सद जगह म थ यह आसानी से मालूम हो सक्ता है। आगे कुछ दूर सतलुज का साधा राक देन वाला पहाड आ गया। इमकी ताडने म मनलुज का लाग्ना बप लग हंगे। पानी का रास्ता ता निकल आया लेकिन बादलो का रास्ता उनना खुल्ल नहीं है। चार मील जाने पर बाबू लक्ष्मीनन्द को छाड दिया। कुछ देर समतल-सी जगह म चलने के बाद तीन माल का कडा चढाई आई। धाँगी दफन म कमजार मालूम हाती थी, लेकिन उसन पार कर दिया। १२५व मील पर उटनी क डानवेंगल म विश्राम किया। यहा बाआ का मूल का अभाव बहुत खटकता था। हमन उनकी बार स एक दरखास्त लिख दी। अब हम ठेठ किन्नर देश मे ये। आजकल यहाँ का जीवन किन्तना महंगा था, यह दमास मालूम हा जाएगा कि दाना खन्धरा क रात का खान क लिय ६ रुपय की घाम खरीदना पनी जाता सत्रा रुपया सर था जा भी मुल्म नहीं था।

२० मई का जलपान करके सवेर खाना हुए। जहाँ नहा चडाइ पर घाड की सवारी करते, अधिन्तर पैदल चलते रागी पहुँच। रागी स चार मील पहल जाडे म बक क सैलाय ने बुरी तरह मे मन्क का ताड दिया था। बरास्त गीजार-सा लडी चगाई पर चटना पडा। यदि उतराई हाती तो मेरी ता हिम्मत नहा हाती, टुक जान का डर था। रागा म नगी सतागदास स मुलाकान हुई। मैलाय ने डानवेंगले का तोड मरोडकर बन्त दूर फेंक दिया था। जगल विभाग की मुसैदो के कारण यहाँ बहुत जगहा

पर अच्छे ढेवदार वन लग गये हैं, और वना की रक्षा भी हुई है। रागी गांव में सब घुमानी, अग्राट अगूर व बहुत से बाग हैं। यहाँ का काला छाटा अगूर गतालिया से मगहूर रहा है। प्राचीनकाल में कन्नौज के राजाओं को भी यहाँ में लाल गराव जाना हागी। गुजर प्रतिहारों के समय तिनर देग अवश्य कायदु ज साम्राज्य के भीतर था।

चिनी—उसी दिन ५ बजे चिनी पहुँचकर जमलान के डाकवागल में टहरे। कितने ही दिनों की इकट्ठा डाक मिली। उसीके पागयण में बहुत सा समय लग गया। जब ७ अगस्त तक के लिए चिनी घर हा गया। गाव में ६० के करीब घर हैं। मिन्लि स्कूल है, जिसमें प्रधानाध्यापक पास्ट-मास्टर भी हैं। यहाँ तहमाल भी है, तहमीलदार और स्कूठ के अध्यापक लागा से परिषद हुआ। वे हर तरह से मेरी गहायता करने के लिए तैयार थे। अब मुझे मालूम हुआ, खान पान का प्रबंध अपने जिम्मे लेना बडे गिरदल का कारण हागा। यह चिनी दूर हागइ, जब अगल दिन पुण्यसागर साय रहने के लिए अवस्मान् जा गये। यह तिनर हैं। कितने लागा में अधिनाग लाग बौद्ध हैं। वे साधु हागर अब सानम् ग्वन्छा थे जिसका ही अनुवाद मैंने पुण्यसागर किया। यह छठे दर्जे तक पडे थे लेकिन पलाइ उदू में की थी। यन्ति हिंदा में हागी तो हम दाना का ज्यादा पायण रहता। फिर भी मरे साय रहने रहत के हिंदी काफा पत्न लग गये। भाजन के बारे में अब मैं निश्चित रह गवता था। उम समय साग मन्त्री का बडा अभाव था लेकिन खान की चाजे दूतान में मिल गवती थी। कुछ चीजा की तिनत्रत जरूर थी लेकिन भूस रहने की नौबत गही थी।

२१ मइ का दापन्त बाद स्कूट में गए। यह बस्ता में मयस ऊँची जगठ पर अरमियत है जहाँ तिनग समय चीना टारम (ठावुर) का टुग था। अनगइ पयरा की दीवारें बनी थीं। दीवारा का पना नहीं है पत्यर जरूर मिलन हैं और मिट्टी न डक हुए। पुरान अरगेप के भीतर क्या छिपा है यह जानने की इच्छा प्रबल हाता स्थानातित है। पर तिनगमा का पूर्ण तना आगान नहीं है। बहुत पीछे मैंने रहस्य जानने की वागिग का औ

जहा-तहा कुछ खुदवाया, पर उसम पत्थर जीर जली लकड़ी मिणी। यह दुग वैसा ही रहा होगा जसा यहाँ खबरग और कामरुम अर्थात् बहुत कुछ वर्गाकार २० २५ हाथ लम्बी चौड़ी तथा छ मजिला सन मजिला इमारत, जिमम लकड़ी का भी कुछ कुछ उपयोग है। धानुम लोह का सिफ एक वान का फल मिला। दुग की एक तरफ चीनी गाव है जीर दूसरी तरफ कुछ नीचे हट कर तहमील और दूसरा सरकारी इमारतें। दुग की एक आर पहाड के लिए असाधारण काफी लम्बा चौडा एन खेत है जो चिनी के दबता का है। स्कूल म डेढ सौ के करीब लडके पढने थे। दूर दूर गावा के लडके गरीबी के कारण तब तक यहा पढने के लिए नही आ सकत, जब तब कि उह आर्थिक सहायना न मिठे। घुला जीर ऊंचा हान से यह स्थान सद है, इसलिए नीचे जपसाकृत कुछ गरम जगह म जाने वाला था। डाक छाने के एन बार माडे सात सौ रुपय से अधिन जमा नही किया जा सकता, इसलिए दो बार म रुपया को जमा किया।

जगलात के डाक बगले म हम रह सकते थे किन्तु वह मुख्यत जगलात के अफसरो के लिए है, इसलिए हम किसी दूसरी जगह रहना चाहत थे। रैजर श्री दबदत्त गर्मा अमतसर के निवासी तम्ण और मिलनसार थे, वह अपनी नवपरिणीता पत्नी जीर बहिन के साथ बंगले के पास के क्वाटर म रहने थे। हमार यहा पसा देने वाण जतिथि के रखा का इतिजाम नही, स्वतन्त्र प्रबन्ध करना तो आवश्यक था। वहा से कुछ फाग हट कर सडक के ऊपर मिन्तारिया के मकान का देगन गए। सामने की इमारत अस्पताल क लिए थी, जिसम वपों स कोण डाक्टर नही था और कम्पाडर टाकुरसिंह ही डाक्टर का काम करत थे। सबसे पीछे की काठरिया म टाकुरसिंह का परिवार रहता था और बीच म अच्छे गामे तीन चार कमरा की एक इमारत खाली पडी थी। इसी को हमन पसाण किया। अगरे दिन सामान लाने म जादमिया के मिलने म दिक्कत हुई, सयाग से वैशाख पूर्णिमा को बुद्ध-पूजा के लिए बहुत सी माधुनियाँ जमा हुई थी, उहाने खुशी से हमारा सामान मिशनरा बंगले मे पहुँचा दिया। किसी समय वहाँ जमन मिशनरी

रहने थे फिर सान्त्वान आर्मी बाल जाय । उस समय यहाँ का फल और फूल का बाग बनी अच्छी हालत में था । माला अब भी था किन्तु बाग को काड़ देवन वाला नहीं था । वना में गाला नहीं । १६०६ में मैं यहाँ गूँज बरी साईं थी जा अब उच्छिन्न हो गई थी । नामपातो हाथेण्ड में मगाकर लगाई गई था अब भी उमम वल्ले-वडे फल आत हैं । कितन गौरव से हम बगाचे का लगाया गया हागा किन्तु अब यह बिन्दुल तनम हो रहा था ।

२० मई का सहनालगर मानराम दौर परम लीये । पुरान नव धुबानी और अत्रराणा के साथ कुछ साथ भी ल आया । रियानन के नौकर थे धव राय हुए थे कि अब नई उत्कार रगना था नहीं । चीफ-कमिन्तर की सिफारिशो चिट्ठी जा गई थी इसलिए चाहत थी कि उनके बारे में मैं निरा रितान करूँ । मैंने कहा कि सबन वना सिफारिश यह हागा कि यहाँ के फल तनिन-नम्पति दम्नकारी आदि क बार में पूरी तानकारा पैदा करके चाफ-कमिन्तर साहय व पास भजे ।

पुन्नागर क जान मे भरी तीन चौदाइ चिन्ता दूर हो गई । यह त्रिलकुल मयाग था जा वह आ गया । मरा जनन पहल का परिचय नहा था, लेकिन नाम गायत वह जानन था । स्वाम्भ्य की जार ख्यात पहल गया । २३ मई का मून-यरीणा का ता मालूम हुआ धानी धानी है । पानमेल्डिम की गालियाँ तान रहे तमुन्नि का मूँ लन का आग पर छाड दिया । दून जोर धी की पहल में जागा का ता मकतो था किन्तु व भी यहाँ दुल्भ थे । सर्तो एक कम्बल जोर एक जल्डी में अधिक की नहीं था । २४ मई में हमन दा घटा धूमना शुरू कर दिया ।

चिना में डाक हर दूसरे दिन जाता था किन्तु रास्ता सराब हान तथा कुप्रबन्ध के कारण उसका समय निश्चिन नहीं था ।

अब चिनी में आगा करने थे मधुर स्वप्न को लिख डालेंगे, लेकिन उसका समय माल भर बाद आने वाला था । हा उसकी सामग्री पत्न रहे । कनौर के लाक गीता की आर नी ध्यान गया । व अनिश्चनर प्रेम सौन्दय यति जद्भुत काय या दयना आदि के बारे में हाग हैं और हर आह के

गाय गीता की तरह इनकी आयु भी ज्यादा नहीं होती। एक बार नूपान की तरह वे निक्कल कर मारे किन्नर देग को गुजा देते हैं, फिर दूर जान गद्द की तरह क्षाण हात नष्ट हो जाने है। गायद देवताजा के गीता की आयु ज्यादा हाती है। मैंने क्या रहत किन्ने ही गीत जमा किए। जा किन्नर देग मे छप है। वहा रहते भिन्न भिन्न तम्ह क लाग मिलने आते थे। चम्पा निवासी नेपाली रामानन्द ने गिप्प परमानन्द चेतन धार पाच वष म किन्नर देग म डटे थे। पक्कट, पहाटी म पूव घूमे थे। घूमते घामते यहाँ पहुँचे, जोर किन्नरिया के फेर म पड गए। अब सम्मान भी नही रहा है, केकिन किन्नर म सुरा बहुत मुलभ, उहे ता बिना दाम के मिल जाती थी। इसलिए सुरा-मुदरी छोडें तभी ता किन्नर देग से निकलें। परमानन्द चेतन कामार स तपाठ तक क पहाडा को छान हुए हैं। दस बारह हजार पृट की ऊँचाई उनक गिग कुछ नहीं हैं। दूसरे घुमक्कड अम्दा के मिले। वह एग युग तिबत मे बिता चुके थे। अब तिबत और भारत उनके परो क बीच था। ऊपर की यात्रा म स्क म एक और मगाल भिन्नु मिले। तीस वष पहले गायक कम्पुनिरट प्रान्ति क कारण देग छोडनर वह त्हासा के डेगुग मठ म आय। वहा कुछ दिन पढ़ने लिखन के बाद फिर भारत और तिबत चक्कर म लग गय थ। इस चक्कर से केवल घुमक्कडी की लालसा ही पूरी नहा होती, बल्कि तीथयात्री हान स जीविका भी चलन लगती है। चौथे घुमक्कड नेपाली रमाचाय ने जो तातादि के रामानुजी जगद्गुरु क गिप्प थे। वह पूर्वी नेपाल के घनकुटा म पैदा हुए, फिर वसा जीविना की तगग म पहुँच। जन म घुमक्कडी ने पीछा किया, और घूमने हुए मद्रास की तरफ जाकर रामानुजी माधु बने। वहा क तितन ही परिचिन स्थाना क बार म बनलान थे। वह आजकल अधिकतर मोन—काम—म रहा करते थे, और लाग उह मोनेराला कहा करत थे, जिमका अथ है मोने वा फकीर। उनके पैर म हमेगा ही चक्कर बँधा रहना। बहुत बीहट भागों मे वह एक दो नहीं पाँच पाँच बार कलाग मानसरावर गय। १९७३ म मैं काठमाण्डू गया ता वहाँ भी किन्नर देग म पहागा को बूदते-भाँदते पहुँचे थे। उनका

पाठशालाओं की धुन है। अधिकारी भी प्रसन्नता से सहायता करते हैं।

सान की दिक्कत त्रिलकुल दूर नहीं हुई थी और सबसे ज्यादा त्रिक्कत थी साग और तेमनकी की। १ जून तहसीलदार साहब ने कुछ सूया भांग भेज दिया और पुष्पमागर ने हांगियार गृहपत्नी की तरह थाड़ा थाण करके दस दिन तक उसे चलाया। अब कुछ हरा साग मिलने लगा, फलाक मिलने में अभी एक महीने से ज्यादा का खर थी। सब इन्स्पेक्टर बाबू लक्ष्मीनंद ने भी भजा लेकिन दाम लाने से इन्कार किया। यह भी जाफत थी। बस घी का खर्च भी ज्यादा नहीं था। रातों चुपकने नहीं थे और तलन का काम तल से भी चल जाता था। ३ जून की रात का हल्का सा ज्वर आया। पेट जब-तब गडगड हो जाता करता था। मात्रा से भाजन करने की जरूरत बहुत ध्यान देने की जरूरत थी।

किसी जगह के पुराने स्थानों का पता लगाना था, ता दंग के जानकार आदमी से उन स्थानों के बारे में पूछें जिनका पौराणिक कथाओं में सम्बन्ध जाड़ा गया हो। खर पहाड़ में सभी प्राचीन स्थानों को पाण्डवा का अनात निवास माना जाता है। ब्रह्मचारी परमानन्द ने उनके बारे में बतलाया कि सतलुज के इस पार है बोठी कश्मार रासग लबरग वनम् म्पू, डुबलिंग टशीगग, सामग नाको और सतलुज पार मारग ठगी चारग और रस्ता उपत्यका में सामला और कामरु।

किन्तु देव के देवता ने मिट्टी पत्थर के हैं और न निष्क्रिय निर्जीव। वे विमानों पर ही साने और विमानों पर ही टक्कन के त्रिण निकलते हैं। विमान छोटी सी खुली पालकी जसा होता है, जिसके भीतर से चार पांच हाथ लम्बी भुज की सीधी बल्ली डाली जाती है जो सिंग्रग की तरह इंगार पर लचकती है। इसी विमान के बाच में लकड़ी की कमधिया में कुछ ऊंची सी जगह बना ली जाती है जिस पर रोगी बपड़ा बांध कर चादा या गगा जमुनी चेहर चिपका दिये जाते हैं। यही दबना है। गाव के दुख सुख और हरेक काम में देवता को राय लाना जरूरी है। देवता कभी किसी के सिर पर जा करके बातें करता है, कभी चिट्ठी डालने पर अपना निणय देता है पर

विपन्न देग मे

सबसे अधिक चाहता व व धे पर चढ़कर विमान के हिलने के मनेन मे रात करता है। यदि विमान पूठन वांछे व सामन की आर बुका तो उमरा अथ हाँ है यदि दूसरी आर बुका ता नही। यदि ऊपर-नीच उठता ता बटून अच्छा और अत्यधिक उछता ता देवता नाराज है। चिनी व दवता का नाम नरेनम (नारायण) है। दवता काफी घनाड्य हान है गाव के मग्न जच्छा खेत उनका हाना है। हमने अलावा वह जत्र चाहता है, तब नय कर वमूल करता है। खुशी म दान-दक्षिणा जा मिलती है मा अलग। दवता व अपन ममय-ममय पर उमव हुआ करत है जिनम दवता की आमदनी पूडे-पूनी और दूसर पक्वाना का वनाजर प्रसाद वांटन म सच गनी है। वभी-वभी देवता वनमाज के लिए भी जाता है उम समय दा वाहना व अनिर्गुत वाजे वाले जीर अमिब-घवा की पूरी पलटन साथ-साथ चलनी है। चिनी म चोलिया (हरिजना) का अपना अलग विष्णु मंदिर है, जिनम दमू गू (निवती देवता, बुद्ध मूर्तिया) क हान की सभावना है जिन व कृछ सालो बाद भडार म निकाले जाने हं। य घातु की मूर्तियाँ हैं और पुरानी परिपाटी के अनुसार इन पर हस्तग्य भी हाना चाहिए।

अडा यद्यपि अति मुल्भ नही था, ता भी मिल जाता था। ४ जून को पतते दम्न आए पवित्र का सद्दह हा गया। दम्न का कम करन के लिए चारपा पर पड जाना आवश्यक मानूम हुआ। इम ममय पुम्नन न पत्कर जीवन पर ही दृष्टि पटन गी— जीवन निम्मार ता नही है यद्यपि उसका आममान पर नही उठाना चाहिए। जीवन पथ के प्रग्यान के लिए उपयुक्त प्रथा की आवश्यकता है। और ममानयमा लेखक क हान पर वे बडे महायत्र हा सक्त है। जतान क्या सचमुच स्वप्न है? नही उसकी स्मृति सुपद हानी है हाँ, वभी कभा दु खद भी हानी है। यह बात स्वप्न व वार म नही है। और वतमान समय म ता भागी जाना वस्तु ठाम चौज है। वय किनक तौर से एक आदमी का मन वभी अवमाद म पड जाता है निगागा छा जाता है, किन्तु हमने सबक जीवन का मूल्याकन नही करना चाहिए। तरपाइ म आदमी के पाम बटून समय हाना है और बटुनायन के कारण

जादमा उमक सच म मित-वपिता भी नही कर पाता । यत्र करता, ता उसे और भी अनुभव हाता, और साहस यात्राए कर मरता । पर क्या यत्र अपने अनुभव स कोई एक जीवन प्रयाग बना द ता दूगर उमका उपयोग करग ही ? पूरो तौर स तो नही ता भी उसस कुछ वा कल्याण जरूर हागा । बाईस साठ पहल में यहाँ एक टा दिन रहा था । जाज पहली आधा माम हा गया । मरे भीतर क्या अंतर है ? उम समय एक तरह साहस यात्रा करन निकला था । कश्मीर क रास्त लहाय गया था फिर तिवन क पश्चिमा भाग म घुमकर यहाँ आ निकला । अपरिचित देग था जीव भाषा भी अपरिचित थी । साधन एक तरह शरीर मात्र था । पर साथ ही नरणाई का उमग था । जाज भी उमगे कभी-कभी उठतो हैं फिर सुरत रपाउ आता है—पूरा करने के समय पर भी ध्यान दा ।

जगल दिन (५ जून) भी लटा रहा । मन लगाने क लिए वादरल पत्रन लगा । मूमा की पाँचा पुस्तकें (ती रत) और यांगुआ की पुस्तक ममाप्त कर डाले । यह यदूनी जाति का एक तरह का इतिहास है । यहूदी मसा पोतामिया से निकल पहल फिलस्तीन गए फिर फिलस्तीन क विजेता मिशिया क हाथ म पडकर उनक देग म करवाणी करत रत । यादूज का ही नाम इमराइल था जिसक कारण यहूदिया का बनीराइल कहा हैं । यादूज का ही पुत्र युमुफ मिस्र गया था । फिर उसक परिवार क लोप भी वहाँ पहुच । न जान कितना पीरिया तन वहा सुग दुख भागते रत लकिन व सदा फिन्स्तीन का स्वप्न दपते रत । मूमा और उमके भाई हारन न उह निकालकर फिन्स्तान पहुँचाया । मूमा राजनीतिन था, यादवा नहीं । यांगुआ यादवा वा जा यहूदिया का शरणता बना । कवीरगाही समाज वा । युद्ध बराबर हात रहत थे । युद्ध म स्त्रिया बच्चा को मारा स भी वे वाज नही आत थ तासतौर स बयस्क स्त्रिया का जरा भा दया दिगलान क लिए तयार नही थ । यहूनी मूर्ति पूजा क सदन विरोधी थ । मूर्ति बनाने के लिए अधिक जनत सस्कृति की आवश्यकता है । उनका बयस्क स्त्रिया से सदा डर रहता था कि वे यहोवा की पूजा छोटकर मूर्तिया की पूजा

विघ्नर देग मे

करने लगेंगी। मूर्तियों और देवनाआ को ध्वज करना वे पुण्य का काम समझते थे। इस बात का इस्लाम न उही म मोखा। मेरे लिए मूमा की पाचो पुस्तकें पढन म और भी दिलचस्प थी क्यकि उनम यहूज और उमके बठन की आक किन्नर के देवता और देव (विमान) जसी ही मातूम होती थी। जब यन्वा यहूदी पैगम्बरा म बात करता ता मुझे यहाक देवता का अपने ज्यष्ठ कमचारी मे वान करन की बात याद जाती थी।

६ जून का पहले की तरह पांच मील टह्रन गए। बहुत थकावट और कमजारी मालूम हुई। पट अब भी साफ नहीं था। दिन म दहा सत्तू ग्याया, और गाम को सत्तू का निरामिप सूप पिया। प्याम जिनिक लगती थी यद्यपि पेगाव अधिक बार नहीं जाना पडता था इसलिए पशाव म चीनी के अधिक हान का सदेह नहीं था। ५५ से ऊपर का था उसका प्रभाव होना ही चाहिए। यदि मधुमह नहीं हाता ता किसी दूमरे रूप म निबलता आती। पाचन गकिन का कमी और पट का साफ न हाना भी गायद उसी का लक्षण हो। ता भी समय रखना आवश्यक था, ताकि इस जीवन से अधिक से अधिक काम लिया जा सके। मैं अनुभव करने लगा, एक स्थायी सहयात्री अत्यावश्यक है, जो लिखन का काम कर। आदमी ता मिल सकता है किन्तु स्थायी रहेगा, इसमे सदेह है। साथ ही मधुमह के लिए दन्मुलिन की सूई देनवाला हा, तो और अच्छा। ६ जून का लिखा था— 'प्रतिवप दा हजार पृष्ठ लिखने की योजना रहनी चाहिए। काम न हो ता जीने का फल क्या। चिनी म रहते परिभाषा क काम की आर ध्यान लगा रहता था। बापी दिनो बाद विद्यानिवास और माचवैजी की चिट्ठियाँ कलकत्ते से आइ। सुनीत वानू न हमारे काम की प्रशंसा की और काम म सहयोग देन के लिए चिट्ठी लिखी। "शामन गदवोग" टाइप कर लिया गया था लेकिन प्रेम म भेजन से पहले उमे एक बार देख लेना जरूरी था। इतने दूर दाना का बुलाना जामान नहीं था इसलिए सोचा, कि जुलाई के अंत म बाटगढ उतर चलें। अभी गर्मी बहुत हागी इसलिए नीचे उतरना ठीक नहीं है वही बुला एक माम रररर प्रेस-बापी का मंगोपन कर डालें।

तिब्बत के सीमात पर

किनर दग म वर्षा के बहुत कम हाने स यात्रा करन म कोई कठिनाई नहीं थी। हमन किनर क छारपर अवस्थित भारत क अन्तिम गाँव नमग्या तक की यात्रा का कर लेना अच्छा समया। १२ जून का यात्रा क लिए आवश्यक सामान का पुण्यसागर बाँधने लगे। तहसीलदार क एक चपरामी न साथ दिया और उसक लिए ऐसे आत्मी का चुना, जा रास्ते म जान्मी और घोड़े का प्रबन्ध आसानी से कर सक। १३ तारीख का सबरे अभी पेट मे कुछ गडबडी थी ही इसलिए थाना दही खाकर चल पडे। यहाँ से घोडा नहीं लिया, क्यकि अगला पडाव पगी छ ही मील पर था, जो हमारे राजाना के टहलन से एक ही मील दूर था। दा भारवाहक सामान लेकर चले। प्राय समतल तिब्बत हिन्दुस्तान सडक थी जा शिमला से तिब्बत की सीमा तक जाती थी। जपोजो ने इस पश्चिमी तिब्बत पर हाथ साफ करने की नियत स बनवाया था और इसीलिए इधर की सीमा का अपने नक्शा म अनिश्चित रला था। सडक हरे भरे जगला से जा रही थी जिनम दवदार और नवजा (चिलगोजा) के दररन थे। दवदार की बाहरी छाल सूखी पपडी-जमी हाती है और नवजा की हरी। पेड, डालियाँ और पत्ते दाना क सुन्दर होत हैं पत्तियाँ बारहा महीने हरी रहनी हैं। छाल के सौन्दय म नवजा बढ़कर है। नवजा के ही फला म से चिलगाजा निकलता है इस

बत के सीमात पर

पर वह यहाँ जधिक मूल्यवान समया जाए ता ग्राइ आदचय नही ।
 पगी गिमला से १४४ मील ६ फलाग पर है । अत मे ही थोडी सी
 बटाई मिली । थोडा विश्राम करके फिर आदमी लिए । जादमी को मजूरी
 दो आना प्रतिमील नियत है, अगले पडाव रारग तक १२ आना देना
 चाहिए था, लेकिन मैंन एक एन रुपया दिया । घोडेवाला ८ मील क लिए
 ४ रुपया मागता था । और दया जतलाते एक रुपया छोडने का बहा ।
 मैंने घोगा नही लिया । सिफ एक जगह अधिक् चढाई थी नही तो समतल
 सी ही जमीन थी । आज १४ मील पैदल चला था, इसलिए रारग पहुँचते
 पहुँचते थक गया । पगी और रारग दाना गाँवा के छाग पानी पानी पुकार
 रहे थे, जोर पास के खडडो मे बहुत सा पानी बकार बह रहा था । दूर से
 नहर द्वारा पानी लाना उनके बम की बात नही थी ।

१४ जून को गाँव के भीतर मदिना को देखने गए । वसे चिनी मे भी
 बौद्ध धम का प्रभाव है, लेकिन रारग तो बिल्कुल बौद्ध गाँव है । एक मदिना
 मे चौरासी सिद्धा के चित्र दीवार पर हाल म अकित चित्र थे । कुछ देर मे
 घोडा भी आ गया और उसपर मवार हाकर जगी चले, जो यहाँ से ७ मील
 के करीब थी । जगी बहुत पुरानी वस्ती है गाँव भी बडा है । सामने
 सतलज पार मोरग गाँव है वहाँ का "पाण्डवो" का किला दिखलाई दे रहा
 था, जो एक छोटी टेकरी पर था । कनौर म बड़ भापाएँ बोली जाती हैं
 यहाँ की भाषा भिन्न थी, लेकिन चिनी मे बोली जानेवाली हमकद भाषा
 सब जगह चलती है ।

लिप्पा (८६०० फुट) — लिप्पा सडक से कुछ हटकर है लेकिन हमने
 उसके वारेम जा वानें सुनी थी इसके कारण वहाँ जाना आवश्यक जान पडा ।
 घाडे और दो भारवाहक मिल गए । तीन मील हिन्दुस्तान तिब्बत सडक
 से चले, फिर वाइ आर का रास्ता लिया । चढाई पहले दो मील की आई
 जोर माग भी कठिन था । सबसे बुरी बात तब हाती थी, जब तीन्नी डलुआ
 धरती पर जाना पडता था डर लगता था कि पर फिसला और न जाने
 वहाँ पहुँचे । पवन की यात्रा वही अच्छी तरह कर सकत हैं जा पड पर

तिब्बत के सीमात पर

किनर दग म वर्षा क बहुत कम हाने स यात्रा करन म काई कठिनाई नहा थी। हमन किनर क छारपर अवस्थित भारत क जन्तिम गाँव नमूग्या तक की यात्रा का कर लेना अच्छा समझा। १२ जून का यात्रा क लिए आवश्यक सामान को पुण्यसागर बाँधन लगे। तहसील्दार क एक चपरासी ने साथ दिया और उसक लिए गेस आदमी का चुना, जो रास्ते म आगमो और घाडे का प्रबन्ध आसानी स कर सके। १३ तारीख का सबेर अभी पट मे कुछ गडबगी थी ही इमलिण थाडा दही खाकर चल पडे। यहाँ से घोडा नही लिया, क्योंकि अगला पडाज पगी छ ही मील पर था जा हमारे रोजाना क टहलन से एक ही मील दूर था। दा भारवाहक सामान लेकर चले। प्राय समतल तिब्बत हिन्दुस्तान सडक थी जा गिमला से तिब्बत की सीमा तक जाती थी। जप्रेजो ने इसे पश्चिमी तिब्बत पर हाथ साफ करने की नियत से बनवाया था और इसीलिए इपर की सीमा को अपने नक्शा म अनिश्चित रखा था। सडक हरे भरे जगला से जा रही थी, जिनम देवदार और नवजा (चिलगाजा) के दरस्त थे। देवदार की बाहरी छात्र सूखी पपडी जसी हाती है और नवजा की हरी। पेड, डालियाँ और पत्ते दाना के सुंदर हात हैं पत्तियाँ बारहा महीन हरी रहती हैं। छाल क सौंदय म नवजा बढकर है। नवजा क ही फला म से चिलगोजा निकलता है इस

तिब्बत के सीमात पर

प्रकार वह यहाँ अधिक मूल्यवान समया जाए ता गड आदचय नहीं। पगी गिमला से १४४ मी० ६ फर्लांग पर है। अत मे हा थोडी चढाइ मिली। थोडा विथाम बरके फिर आदमी लिए। आदमी को म दा आना प्रतिमील नियत है अगले पडाव रारग तन १२ आना देना चाहिए था, लेकिन मैं एक एन रुपया दिया। घोड़ेवाला ८ मील के लिए ४ रुपया मागता था। और दया जतलात एक रुपया छाटने को कहा। मैंने थोटा नहीं लिया। सिफ एक जगह अधिक चढाई थी, नहीं तो समतल भी ही जमीन थी। आज १८ मील पैदल चला या इसलिए रारग पहुँचते पहुँचते थक गया। पगी और रारग दानो गाँवो के लोग पानी पानी पुकार रहे थे, और पास के खड्डो मे बहुत सा पानी बेकार बह रहा था। दूर से

दूर द्वारा पानी लाना उनके बस की बात नहीं थी। १४ जून को गाँव के भीतर मंदिरों को देखने गए। वसे चिनी म भी बौद्ध धम का प्रभाव है लेकिन रारग तो बिल्कुल बौद्ध गाँव है। एक मंदिर म चौरामो सिद्धा के चित्र दीवार पर हाल म अंकित चित्र थे। कुछ देर म थोडा भी आ गया और उसपर सवार होकर जगी चले, जो यहाँ से ७ मील के करीब थी। जगी बहुत पुरानी बस्ती है गाँव भी बडा है। सामन सतलज पार मोरग गाँव है वहाँ का "पाण्डवो" का किला दिखलाई दे रहा था, जो एक छोटी टेकरी पर था। कनौर मे कई भापाएँ वाली जाती हैं यहाँ की भापा भिन थी, लेकिन चिनी मे बोली जानेवाली हमकद भापा सब जगह चलती है।

लिप्पा (८६०० फुट)—लिप्पा सडरू से कुछ हटकर है लेकिन हमने उमके बारमे जा वानें मुनी थी, इसके कारण वहाँ जाना आवश्यक जान पडा। घाडे और दो भारवाहक मिल गए। तीन मील हिंदुस्तान तिब्बत सडक से चले, फिर राइ आर का रास्ता लिया। चढाई पहले दो मील की आई, और माग भी बठिन था। सबसे बुरी बात तब हाती थी, जब तीन्नी दलुआ घरती पर जाना पडता था डर लगता था, कि पर फिसल और न जाने कहाँ पहुँचे। पवन की मात्रा वही अच्छी तरह कर सन्ते हैं जा पेड पर

सच्चा चढ़ना जानत हैं और जिनका शरार हल्का है। इन दानो कमिया साथ साथ अब जायु का बाप भी मरे ऊपर था। खर जब चल पया, पीछे लौटना तो नही हा सजता था। आगिर पहाड की एक बाहा पर हुँचे जहाँ से सामन लिप्पा का बना गाँव दिगलाइ पन रहा था। जगलात का क्वाटर पीछे छूटा लकडी क पुल से एक नदी पार की जा अपथाकृत ली थी। फिर छाटी धार के पुल पर से गुजरे। यहाँ बटून-भी पनचक्रिया लगी थी। दरराम ज्यातिपी लिप्पा के रहनेवाल थे जिनका पचाग पहास जोर तिअन तक चलना है। उनक लख सानम् डुबग्य जगवाना के लेए आए और अपन साथ गुम्वा (विहार) म ल गग जिम त्रि उनके बाप बनवाया था। चलाई कठिन थी, पर मैं घाडे पर चढनर गया। गुम्वा गाँव क ऊपर धीच म है जिमक ऊपर भी घर हैं। एक बडी गाला म आसन ग्या जिसम मत्रेय (भावो बुद्ध) की मूर्ति थी। पहिल बगी प्रसनता हुई तो पछताव म बदल गई जब रात का पिस्मुआ न नीद हराम कर दा। शरनाथ मंदिर की दीवारा पर जापानी चिनवारा न बुद्ध क जीवन मन्त्रधी चिन बनाये थे जिनके काड सुठम थे। उही को देखकर लदाखी चित्रकार न यहाँ की दीवारा का चित्रित किया था जो बुरा नही था। न्हासा का कजूर ग्रय मग्रह रखा हुआ था, और तरगी का बहत्सग्रह तजूर प्राजकल रास्त म था। नीच गाव से बाहर एक जोर भी कजूरगाला थी, जेसम कजूर की पाथियाँ रखी हुई थी। उस दिन विनाप उत्सव था। पहले मुस्तका की पीठ पर रखे स्त्री-पुस्पा ने जलूस निकाला और अंत म कजूर गाला के पास नर नारी नत्य करने लगे। मन्दिर स शराब की सदाब्रत बँट रही थी। नाचना क्या हाथ मे हाथ मिलाय टहलना था। एक जार सेनया की पाती थी और दूसरी ओर पुस्पो की।

१६ जून का भी मैं लिप्पा म रहा। कनौर क सबम घनी बगोलालजी लिप्पा के रहनेवाले यहाँ के जेलदार थे। कुछ पीढिया से उनक घर म कनौर के बाहर की पहाडी स्थिया से ब्याह करने का रवाज था क्योंकि वे उच्च कुलीना समची जाती थी लाक नत्य म वे भी बल शामिल हुई थी। उप-

तिम्बत के सीमात पर

त्यका के देखने से मालूम होता, कि पहले यहा वस्ती अधिन थी बहुत पुराने
 खेता के निगान मिलने थे, मामन पश्चिमवाली ढाल म देवदार के जटा क
 कुछे मिलन हैं, जब वह ढलान बिन्कुल नगी है। ऊपर एक किला है जिसम
 ओपल के पत्थर पाये जान हैं चाबूत बूटने ही के वाम नही जाती, वरिक्
 किमी समय उसीसे आटा पासा जाता था। इसी तरफ से जाने पर चार दिन
 म आदमी स्पिनी पहुच सकता है। पुरान जमाने म स्पितीवाल और मौका
 पडने पर यहाँ वाले भी लूटमार करने जाया करते थे—एक दिन के रास्त
 पर अमरौंग मे पनचकनी के पत्थर मिलते हैं। आश्रमणकारियों के आने की
 सूचना जगह-जगह आग जलाकर दी जाती थी। पूछने पर पता लगा, कि
 यहाँ पर भी खैराम्बग—(मुगलमानी ब्रह्म) मिलती हैं। यहा के लोग यह
 भूत गय हैं, कि मुसलमान ही नही वरिक् कभी उनके पूवज भी मुदों को बज्रा
 मे गाटा करते थे। पुरान मवाना की अनगढ पत्थरो की दीवारें भी कभी-
 कभी निकल आती थी। गुम्बा बनान वक्त तीन मिटटी के बरतन निकले थ।
 आजकल लिप्पा म न मिटटी के बरतन बनत हैं न उनका घ्यरहार हाता
 है। आठ माल पहले नम्बरदार के काठे पर दबता की कोठरी म अमाव-
 घानी म आग लग गई फलस्वरूप सारा गाव नष्ट हा गया। इन पुरान
 गाँव म प्राचीन काल की कितनी वस्तुएँ मिल सकती थी, लेकिन मराना
 म लकडी की बहुतायत हान से एमी आग जब-तब लग ही जाती है। फिर
 से मवान बनान के लिए पनीराम न खेत मे नीव खोदनी गुरू की। वहा
 नतक घर निकल आया। पट्ट दीवार मालूम हुई। एजान के लोभ मे खादने
 पर घर निकल आया, जिसकी दीवार म नीचे उतरने के लिए पत्थर की
 खुडिडियाँ थीं। घर ऊपर सपत्थर सलैका था। मेरी उल्लुवता बढ गई जब
 मालूम हुआ कि हाल ही म पानी की कूप बनान वक्त एक बज्र म नर
 कवाल निरला था। बनार पानी पडने मे बहुत कुछ गल गया था खापनी
 भी टूने हुए थी लेकिन वह दीघकपाल थी, अयाव् आन के लागा की तरह
 आयत कपाल नही। क्या यहाँ गम लोग रहते थे ? कनीर लाग अपने का
 खासिया भी कहत हैं, पर इनकी भाषा निरान बग की है। उमी बग की,

१६२

जिमकी भाषा के अन्वय चम्बा से आताम न नागा जा तब के मार हिमालय में मिलन है, और जिस विद्वान् मान रमर कहते हैं। वन्य म वाइ चीज नहीं मिला। म नए राड मरान की जोर चलन की साचन ग्या। उम समय मवान मान्त्रिक एक वाम का अद्यगा कटारा जोर एक मिट्टी का कुतुप आया जा उसी वन्य म मिल घे। गायद कोई जेवर भी रहा हा लकिन पजीराम उससे इन्वार करते थे। कटारा जजर हा गया था जोर कुतुप का मुह इतना संकरा था, कि मेरा अगूठा भी उसमें नहीं जा गाता था। इसमें गराम रख जोर कटार म भाजन रखकर मुदें क गाथ गाडा गया था इसमें गदह नहीं।

१७ जून का प्रातराज जलदार वगीलाल के यहाँ किया। चार भाइया म एक भाई मर गया। वगीलालजी स्वयं मातव दर्जे तक पण हुए हैं। मयला भाई आठव दर्जे तक पणकर घर का काम कर रहा था सबसे छोटा रामपुर के हाई स्कूल म नवें दर्जे म पढ रहा था। लक्ष्मी व साय सरस्वती की भी आराधना करना यह घर चाहता है यह इमी का प्रमाण था। माँ के बानो हाथ गले साने से पाल हा रह थे। वह भी बाबी (नीचे की पहाड़ी) और बहू भा बाबी थी। इनका घर बहुत पुराना है लेकिन रात का एसे समय जाग प्रचण्ड हु कि वागज पत्र मूर्तियाँ और पाथियाँ तक जग गइ किसी तरह लाग अपना प्राण रर भागन मे सफल हुए।

वनम्—लिप्पा से वनम् की ओर वन। जा आठ-नी मीठ से अधिक दूर नहीं है, लकिन चढ़ाई बहुत सस्त है। कहीं-कहीं सादियाँ हैं जिन पर घाडे पर चकर नहीं चला जा सकता इसलिए बहुत कुछ पैदल ही चलना पडा। उतराई भी इतनी बडी थी, कि घाडे का रस्नमात्र नहीं हा सता। डाडे पर पहुँच कर वहा से लवरग जोर वनम् के गाँव दिखलाइ दे रह थे लेकिन वह काफी दूर थे। उतराई ही उतराई थी। अभी देवदार थे, लकिन उतन घन नहीं थे। लखन का जय है गुरु या गमा का महल। सान मजिला २० हाथ चौडा २५ हाथ लम्बा यहाँ का दुग तो किसी ठाकुर का महल बनलाया जाता है। दीवार म छिल पत्थरा और लकडी

तख्त के सीमात पर

की मुद्दर जोड़ाई भीतर बैठकर तीर मारने के लिए छेद बने हुए थे। ऊपर की मजिल गिर रही थी। लोग का महा के ठाकुर की बहुत क्षीण स्मृति है। मध्य कान् में लूट पाट करन के लिए निरतियों जीर वन्नौरा म होड लगी रहती थी। उस समय आवश्यकता पडने पर लोग इस दुग में गरण लेते थे। दुग के पास ही सक्कनगू देवमन्दिर है जा पत्थर का बना है। ओपग सिंह का खानदान बहुत पुराना है लेकिन अत्र निस्मत्तान है। वन्नौर में पाडव विवाह का रवाज है जिसक कारण जनसख्या घटन नहीं पाती और लडाई या निस्मत्तानना से उसके घटन की सम्भावना रहती है। लबराग में ६५ परिवार थे, पहलू इससे अधिक रहेंगे। प्राय दो मील उतर कर हम मडन मिल गइ और फिर कुछ दूर चलकर वनम् का डाकबॅंगला मिला। वनम् १० ००० फुट से ६४७० फुट ऊँचाई पर तथा गिमला से १७० मील ३ फाग पर अवस्थित है। यहाँ भी स छे रो पग (मुसलमानी कब्रा) के होन का पता लगा। सडक बनाने और घेत खोदने म कई कवाल मिले थे लेकिन लागा न उहे मुसलमाना का समवा। उन्हें क्या मालूम था कि इन कवालो स उनके और उनके पूवजा के इतिहास पर बडा प्रनाग पड सक्ता है। कजूर देवालय म भारतीय ग्रथा के दोना बृहत् सग्रह—कजूर और तजूर—तिब्बनी भाषा म रचे हुए थे। वक्ति के लिए एक खेत भी है जिसकी आमदनी से मवान की मरम्मत तथा साल भर म एक बार पाठ करनवाने भिक्षुजा को भाजन मिलता है। वाम् का देवता डबला बहुत धनी और गक्तिगाली है। लौने यात्रा में मैं २६ जून का वनम् का अच्छी तरह देवा। उस समय नम्बरदार की जघ्यक्षता म डबला स वातचीत हुई थी, जा काफी रोचक थी। देवताआ क जनाचार का देवताओ की ही मदद स हटाया जा सक्ता है। चिनी क नीचे कोठी की देवी मार वन्नौर की महा महिम दवी है। वह सक्डा बकरा की बलि लिया करती है बुद्ध क घम का नहीं मानती। चिरकुमारी हान स उसम बहुत शोध है। मैं उम दिन डबला देवना म लसी नियन से वात करनी चाहा कि डबला और दवी का दगाह हा जाए, और बौद्ध पति का पत्नी पर प्रभाव पडे। मैं हिन्दी म बहता था

और नम्बरदार अगरजीत उम बनौर भाषा म डबला म कह रह वे । नम्बरदार न कहा, कि हमार दवता हिन्नी समझत हैं । मैं भी जानता था, कि वह दुनिया की सभी भाषाओं का समझते हैं । लेकिन देवता व सामन कोई एसा गान न निकल जाए, जिससे नाराज होने का डर हो, इसलिए मैं नम्बरदार का ही दुभाषिया बनाया । मेर कह अनुसार नम्बरदार न पूछा—आप काठी की दवीम ब्याह करेगे ना ?

डबला न सिर को दाना तरफ जार स हिन्नाया जिसका अर्थ था मुझे गादी नहीं करनी है ।

नम्बरदार—गादी करन म हज क्या है मनुष्या की तरह दवता भी ब्याह करत हैं । क्या आप बिल्युट इन्कार करत हैं ?

फिर मिर हिन्ना अथान् नहीं ।

नम्बरदार—ता किमन माय कोठी की चण्डिका देवी की गादी हा ? वह बहुत बड़ी दवी है उसके बराबर का कोई दवता नहीं है न चिनी का न ख्वागी का न पगा का न रारग का न जगी का न लिप्पा का और न लबरग का ? क्या चिनी व नरेन स गाना करनी चाहिए ?

—नहीं सगा सम्बन्धी है गाने नहीं हा सकती ।

नम्बरदार—डम्बरसाहज चिनी व दवता नारायण स नहीं, ता क्या सुगरा व भ्रम मनमिर स हानी चाहिए ?

—नहीं, वह भी सम्बन्धी है ।

नम्बरदार—और वामन व बन्दीनाथ म । वह भी राज का माफीदार है और दत्री भी माफीदार है ।

—हाँ हा सन्ता है खुग हानर उछलकर डबला न प्रसन्नता प्रकट की ।

नम्बरदार व और पूछन पर डबला न चण्डिका व ब्याह की आगा दियाई पर जसा कि पीछे देवी म पूछन पर मालूम हुआ वह एस वचन म पडन व लिए तयार नहीं है । नम्बरदार माय हा डबला सन्ता व महामात्रा

तिब्बत के सीमांत पर

हैं। पूछने पर डबला ने आमदनी खच का हिसाब मांगा, और कहा कि दो साल से हिसाब नहीं हुआ है।

कनमू तिब्बत के एक प्रसिद्ध लामा लोचवा गिन् घेन्-जङपो—(रत्न द्र अनुवादक का) गद्दी स्थान है। रत्नभद्र ११वीं शताब्दिया में हुए थे। तिब्बत के सबग बड़े पण्डितों में थे। सरखुन के बहुत से गम्भीर ग्रंथों का अनुवाद उन्होंने तिब्बती में किया था। तिब्बत में जब महापुराणों के अवतार मानने की परिपाटी चल गई, और हरक बिहार की गद्दी पर अवतार महत् स्वीकार किये गए लडका नो बठायी जाने लगा, तो इस लोचवा का भी अवतार पदा हुआ। लोचवा को गुम्बा पिछली मतबें उपेक्षित सी दिखाई पड़ता थी, किन्तु अबकी वह अच्छी हालत में थी। वहाँ कुछ भिक्षु भी मिले जिनमें से कितने ही तिब्बत में पठकर आए थे।

स्पू (६००० फुट)—१८ जून का हम बनौर के दूसरे महाग्राम मुग नमू का देखने की लालसा से चले। कनमू के आगे कुछ ही दूर पर अब चूक्षी का अभाव हो गया। तिब्बत जैसे नगे पहाड़ थे। रास्ता अधिक्तर समतल था। सिफ श्याशो खड्ड के पास दो मील उतराई आई। धूप बहुत थी और पहा सुगंध मालूम भी नहीं होती थी। खड्ड पर लोह का पुल था। यहाँ जा नदी बह रही थी, वह भी स्थिती के सीमाती पवनों से आ रही थी। पुल पार हो नदी के बाएँ किनारे ऊपर की तरफ बदन लग। यह सडक गई थी। लाग और अधिक्तर स्थिया मडक की मरम्मत कर रहे थे। दो मील के बरीब जाने पर श्यागा गाव मिला। यहीं पर भारवाहन और घाडा बदलना था। घाडा अच्छा नहीं मिला। सवार हान के समय जमना भडकते देवकर चले ना ह्याल छोडना पडा। एक मील पर जाने पर मालूम हुआ, कि रास्ता बेमरम्मत और रोमाचकारी है। मैं शरीर से भी निवृत्त था। सुग नमूवाले बड़ी प्रतीक्षा कर रहे थे, लेकिन वहाँ जाने का ह्याल छोड मैं लौटकर रात के लिए श्यागा के बिस्ट अमरनाथ के घर पर ठहर गया। वह पहल का बहुत घनी और प्रभावशाली घर था। मुग-नमू के ऊपर म्यापोग म इनवा और भी अच्छा घर था। अमरनाथ के पिता

चरनदास पितामह इन्द्रदास और प्रपितामह नतागम थे। नारायण १८३४ ई० में कानियम की लड़ाई सीमा में पय प्रयाग थे। इन्द्रदास राजा के प्रभावशाली अमात्य थे। उनके समय ही हम घर की मटना श्रीवाँडी हुई। बीस साल पहले तक हालत बुरा नहीं हुई थी, फिर घर में पागल लोग लगे। दादा भाई मरे चुन थे। ममानचन्द ग्यापान में शल्ला (पागल) हार पना है और अमरनाथ यहाँ। अमरनाथ की आयु उस समय ४८ साल की थी, घर में कोई शक्तान नहीं था। पति-पत्नी माना तीन प्राणा थे। जन भी खान भर के लिए सम्पत्ति थी लेकिन लोग जहाँ नहीं लूट पाते थे। अब यह बग उच्छिन्न हान बाग है। कद पाटिया से पाडव विवाह हान के कारण घर बड़े नहीं, आग के लिए ग्यागा के विस्त का नाम लनबाला काई नहीं रहेगा। उस घर के दरो-दीवार से हसरत बरस रही थी। अमरनाथ बड़े चाव में बातें करते थे। कभी अकल की और कभी अशकल का। इस साल बर्फ बहुत पडी थी इसलिए बगड से जान वाली छागी खडड में काफी पाना था नहीं ता यह सूख जाया करती है। विस्ट का घर ही नहीं, बल्कि सारा गाँव श्रीहीन था।

१६ जून का भारवाहका की प्रतीक्षा किये बिना मैं चल पटा। चपरामी उनका प्रबन्ध करके साथ जा चलने के लिए था ही पुण्यसागर भी साथ थे। रास्ता खडड के पुल तक पहला ही था उसका बाग कुछ समतल भूमि से सडक चली। एक डाडा पार करने के लिए नदी की धार छाडकर चढाई चढनी पडी। फिर बगले का जार बनाई रही। स्पू बडा गाव है। इसमें बहुत से टाल है। गिमला से यह १८८६ मील पर अवस्थित है। इसका स्पू नाम क्या पडा? कुछ लाग बतला रहे थे, कि यह फुग का जपभंग है खुन्न फुग का जय है कनार की गुहा। यहाँ के लागो की बाली तिबती है। अब तक हिन्दी से ही मैं काम चलाता था, जिसके सम्बन्ध वाले बनौर पुरपो में सभी नहीं थे और स्त्रियाँ ता कनौरी छोड दूमरी जानती ही नहीं। अब किसी के साथ बात करन में दुभाषिया की जरूरत नहीं थी, सबकी मातृभाषा तिबती थी। यद्यपि स्पू अतिम गान नहीं है किन्तु इसका

तिब्बत के सीमात पर

विगाज जोर हरे भरे खेतों तथा बड़े गाव को देखकर मोरावियन (जमन) मिशनरिया ने इसी का १८८३ ई० में अपना प्रचार केंद्र चुना। रेस्प दम्पती पहले आए और यही मरे। उस ज़ोर भी कितने ही मिशनरिया न लोग की दृष्टि के अनुसार सवा बरत अपने प्राण छोटे। यह देखकर दुःख हा रहा था कि उनकी कर्मों अब लुप्त हो चुकी है जोर उन पर क पत्थर बिगने पड़े हैं।

उम समय श्यांग म दघर की सडय नहीं बनी थी। वह १९०७ ई० में बनी। टाकबंगला १९१३ ई० में मिशनरिया न एक छोटा मा गिर्जा बनाया था जो ज़रूत हो चुका है। मिशनरी बार्ड का काम जानते थे उहान बडरगिरी के साथ-साथ मोजा-स्वटर बुनना और गिखा प्रचार का भी काम किया। आज गाव की सभी स्त्रियाँ स्वेटर मोजा बुनती है यह उही की कृपा है। जमन पादरी माकम ने—जा अच्छा बडइ भी था—यहा कइ बडे कमरा का एक बंगला बनाया जा अब भी अच्छी हातत म था यद्यपि उमने गीसे टूट रह वे। उमके रूने मिडल स्कूल क लिए इमारत बनान की जरूरत नहीं होगी पर अभी तो यहा कोई स्कूल नहीं था। स्पू के लोग सभी बौद्ध है। यहा कइ बौद्ध मंदिर हैं। लाचा लावड (अनुवादक दवालय) म बुद्ध के साथ सारिपुत्र मोद्गलपायन की भी मूर्तियाँ हैं। एक मिटटी के अबलोकितेश्वर एक लवडी की वाधिमत्व प्रतिमा भी है। लागा का म्थी पुरूप का बार्ड श्यांग नहीं और वे वाधिमत्व का द्यत तारा मानत थ। मन्त्र गतादिया पुराना है। जष्टमाह्मिना प्रनापालिना की हाय की म्थि पाथी क चित्र भारतीय बलम क मालूम हात हैं। गाव का दूमरा मन्त्र लोगज है जिमम कराडा 'आ मणि पद्मे हुम्' मन्त्र लिखे वागजा से भरी बलनामार विगाज मानी है। थड्डागु समय-ममय पर बहा जाकर मानो का घुमाने पुष्य लाभ करत हैं। कलिप्पाग के पादरी यच्चिन् स्पू म ही पदा हुए। उन नत्रविहीन भाई उम समय मानी बला रह थे, ज़र मैं मंदिर का देवन गया था। मानी क पीछे दा पुरानी बोधिसत्व मूर्तिया थीं, जिनकी बनावट भारतीय मानूम हानो थी जवान् के सात जाठ सौ बप

पुरानी हागी। यहाँ पर भी खसा की समाधियाँ मिट्टी के बतना के साथ मिलती हैं लेकिन उनका कोई निश्चित स्थान नहीं, इसलिए फरमादा पर खान करके निकाला नहीं जा सकता। नम्बरदार दबीचन्द अब नम्बरदारों से मुअत्तल थे। वे तिर्यत में काफी घूमे हुए हैं। तूची के साथ परिचय तिर्यत में गए थे। उनकी इस बात पर तो विश्वास ही सकता था, कि तूची ने वहाँ से बहुत सी हस्तलिखित पुस्तक उचित अनुचित ढंग से प्राप्त की, लेकिन यह विश्वास करने के लिए मन तैयार नहीं था कि अधिक वाय के कारण चित्रा को काटकर निकाल के पुरानी पोशिया का आग का भेंट कर दिया गया। कब्र से निकला हाथ का बना एक मिट्टी का कुतुप मिला जिसको और लिप्पा की चोजा को भी मैंने चीफ-कमिश्नर साहब को किसी म्यूजियम में रखने के लिए दे दिया।

स्पू के लागे का अब भी विश्वास था कि देश पर अंग्रेजा का ही शासन है। जब नोट और डाकघाना के टिकट अंग्रेजा के चल रहे थे तो य सीधे माने लागे कि विश्वास करते कि अंग्रेज अब नहीं रहे। पगी का देवता नक इतना मूढ़ था, कि वह इस बात का मानने के लिए तैयार नहीं था। सयाग से इसी समय स्वदगी टिकट मर पास पहुँच गया था, उसका भेजकर देवता का मनवाने की मैंने कोशिश की थी। देवता के मानने ही पर ता भक्त मान सकते हैं।

२१ तारीख का भी हम स्पू ही में रहे। मिशनरिया के समय यहाँ डाक खाना भी था। स्कूल का उसके बाद भी गिरते ही साला तक रहा, जिसे लटका की कमी के कारण तोड़ दिया गया। यहाँ के लागे का मातृभाषा में पढ़ाया जाता तो लड़कों की कमी नहीं हो सकती। हिन्दी में पढ़ाने की कोशिश की जाय तो दो तीन साल में उनका पल्ले क्या पड़ेगा? पहले दो साल का यहाँ और इसके आसपास के तिर्यतों भाषी इलाके में तिर्यती भाषा को ही माध्यम बनाना चाहिए। इस उपत्यका में स्पू डब्लिंग नम्ब्या, खब टशीगम में तिर्यती बोली जाती है और पास के पहाड़ के परले पार

हगरग के चागा, नाका, मर्गलिंग लिया, चुलिंग आदि गाँव भी तिब्बती भाषी हैं।

नमूग्या (२८०० फुट)—स्पू मे आठ मील पर मतलुज के बाएँ भारत का अंतिम गाँव नमूग्या है। यहाँ से दो मील और आगे यान्ती गिमला से १६६ मील पर एक सूया-सा नाला है, जो तिब्बत और भारत की सीमा—अब चीन और भारत की सीमा—है। केबिन नमूग्या से आगे तिब्बत के प्रथम गाँव शिपकी मे मतलुज के किनारे किनारे नहीं जाया जा सकता, उसके लिए शिपकी का टाटा पार करना पड़ता है। २२ तारीख का हम स्पू मे रवाना हुए और दोपहर के करीब नमूग्या पहुँच गए। रास्ता अच्छा था मकारी के लिए घाटा भी था। तो उस सूखी-माखी पबलमाला नमूग्या इन्द्रपुरी का एक दुग्डा मालूम होता था। गाँव के आसपास की भूमि हरि याली म ढँकी थी, खेतों मे हरे हर नग जो लगे थे। खूबानी (चुली) अंगुरोट के दरख हर पत्ता से ढक थे। यहाँ भी कुछ अंगूर की बलें थी, जा और भी बढ़ाई जा सकती थी और वर्षा के अत्यंत कम होने से अंगूर बहुत मीठा होता है, इस कहन की आवश्यकता नहीं। फूलने पर यहाँ भी खसों की समाधियों के हाने की बात मालूम हुई। लोग न बतलाया, इन समाधियों म बरतन जरूर मिलते हैं। बरतन मिलने का मतलब ही है ये मुसलमानों की कब्रें नहीं हैं हाँकि लोग वमा ही विश्वास रखते हैं। गाँव से बाहर एक स्थान पर खुदाबाबा, तो सड़ी हड्डी निकली। गाँव कुछ ही साल पहिले जाय मे जल गया था। उसके साथ किनती हा ऐतिहासिक चीजें भी जली होगी। एक परिवार क देव-भवन म नेपाल की धनी धातु की तीन अच्छी मूर्तियाँ मिली। हस्तलिखित घोढ़ ग्रंथ प्रायः प्रत्येक परिवार म मिल जात है और उनकी पुष्पिका म दाता और राजा का नाम भी लिखा जाता है, जिससे यहाँ के इतिहास पर प्रकाश पड़ता है। नमूग्या मीस घरा का गाँव है। पाण्ड्य विवाह ने जन-वृद्धि का निरोध किया, नहीं तो और भी परिवार हात।

नमूग्यावाला के दिल म कजावा का भय अभी भूला नहीं था। मध्य

वित्त और धनी वज्राज बालाकिश्रित में अमनष्ट हा जपनी जमभूमि छाडकर सिंगव्याग (चीना तुकिस्तान) में चले आए। वहाँ भी ठीक ठिकाना न लगन पर लूनत भारत निगन में घुम। पश्चिमा निवत की कुछ गुम्याआ का भी उहांन लून। उनक नमग्या की तरफ घनन की गरर आ घुकी थी। नमग्या क तीम परिवार अधिकतर निहत्थ या पलान वागे बहूरा क माय कमे उन हथियाकबल गूलारा का मुवाबिला कर गवने थ। कई दिन रान ता गेगा की नीद हगम न गई थी। अन म वज्राज घर न जाकर गदान की तरफ मुग गा दम प्रवार सबट दूर हुआ। नमग्या क लंगा का अभी क्या मागूम था, कि उनक आग के गावा की जली ही तन नया भविष्य हान वाली है। गिष्वा क गग भी वही बोनी बागत है जा नमग्या के नी घम का मानन है जिस नमग्या वागे। उन समय गना क लिए गनाइ देह्ला दूर अस्त की बात थी। उनका यह भी नहीं पना था कि नम समय चीन म दनामुर मद्राम मबा हुआ है और माग ही भर म अमुरराज चाग बाद गज का चीन स भागना पडेगा। माआ क नवृव म नया चान जनम रहा है जा साल बीतन-बीतन निवत का भी नेतत्व करगा। उन समय दो मील पर अवस्थित सूखा नाला चीन और भारत गणराज्य की सीमा बन जाएगा। फिर तिबत प्रगति म सरपट दौडन लगेगा और भारत का छपन अपनी पुगना गति स घिसटता रहगा। कुछ ही समय बाद नमग्यानाल आश्चय म सुनगे और आल मल के दायग कि उस पार माटर दौड रहा है, हवाई जहाज उर रह है हजारो तनड जमीन टक्कर मे जुनपर तरर तरह के अनाज और साग-तरकारी मे लहलहा रही है। सदिया पिठना दग कुछ ही साल म बहुत आग बड जाएगा निरक्षरता नष्ट हा जाएगी। मल और गदे रहन वाल तिबती कपडे और शरीर स साफ मुथरे दिवाई पटन लगने और चान थाड क उनहु मपपाल मग्रा त पुरुष दीगन लगेंग।

२३ जून का सवेर ही दूध रोगी खाकर हम चल दिए। साडे ७ मील क रास्ते म पाँच मील पदल चल। हल्की उतराड म सवारी का जरूरत नहीं थी। रास्त म विश्राम करन की भी जरूरत नहीं पडी और ६ बजे स्पू पहुँच

तिब्बत के सीमात पर

गए। स्फू और दूमरे भी इधर के डाकबगड़े मर-सपाटा करन प्रकृति का खानद लूटन वाले अप्रेज सलानिया के लिए बन थे। उन बगला म धप्रेजी की काफी पस्तक थी। जा भी मैलानी नई पुस्तक पत्कर उनम करता बह उमे बगल म रख जाना। मभी पुस्तकें सुरभिन ह यह नहीं कहा जा सकता। मैं स्फू लौकर फिर दा दिन ठहर गया, इसम म कुठ ममय पुम्नका व पन्ने म नी लगाया। डिक्केन का उपवास 'मार्टिन चूजेत्वेट' का समाप्त किया, एकाघ जगह कुठ चुमत वाक्य मिले, नहा ता का चमत्कार नहीं था। इधर के जोगा का बनारे जोग जाड या सदा बहते ह। जा का मनलव जाट है। वह नाम क्या दिया गया? सद्गता का जय बफानी गग है जो यथाव ही है।

२५ जून का सबर चले। श्यागा के पुल तक पदल ही आए। फिर घोडे पर चक्कर मारा १६ मील का रास्ता पूरा करके दोपहर के कुठ बाद बनम के डाकबगले म पहुँचे। जान पर कुठ बूगवांसी हुई ठडक व गइ। रेंजर श्री देवदत्त गर्मा आज ही मुगतम स आए थे। वह लिप्पा मे कडे-कडे सुग नम गए थ जिसका जय है अजपयने—ववरिया के रामन गए थे। मैदानी जादमिया व लिए यह वडी हिम्मत की बात थी। गमाजी बडे मुस्तिद आदमी और हर तरह की तकलीफ उठान के लिए तयार थे। उनके पाम से पाच दिन पहल—२० जून का—'टिपून' अखबार मिला। जगड़े दिन बनम ही म रह। उमा दिन डबला दवना से बातचीत हुई थी।

२७ का सबरे जलपान के बाद फिर नाचे की आर बने। नम्बरदार अगरजीत का घाटा कमजार था। रिकाम भी टूट गइ और जीन नी जवाब देन वाली थी। दा हा मील चक्कर गए, फिर लिप्पा खड्ड पर नाकर जने लौटा दिया। दापहर मे पहेले जगी पहुच। भारवाहक और घाटा तयार था। भारवाहका का भेजकर भाजन व बाद म भी चल पने। घाटा बठने लगा दा मोर का मवारी व बाद उस भी लौटा लिया। राग म गाँव व बाहर की उमी मनी म ठहरे, जिसमे पिठगा बार ठहर थे। प्राय नी प्चार पृट की ऊँचाइ पर नी मक्खिया व मागे जापन थी। मैं मैन्ना माह्य का

कतोर क बारे म कुछ सिफारिशें लिख भेजी थी। उन्होंने अपन जवाब म लिखा कि फला की बागवानी को बढान की ओर हम ध्यान दे रहे हैं। चिनी क लिए डाक्टर भजेंग। तिव्वती पढाई का भी शीघ्र प्रबन्ध करना चाहत हैं। मन उह दूसरी चिट्ठी लिखी, जिमम जमी, अक्पा रारग के लगाना की पानी की तकलीफ की ओर ध्यान दिलाया और यह भी कि यहाँ पानी की नहरें आसाना स निकाली जा सकता हैं।

२८ का सबर चले। पगी म थाडी दर ठहरे। यहाँ भी किसी को घडे म हड्डी मिली थी। यह जिनासा की चीज थी। फिर चलकर १२ बज चिनी पहुँच गए।

फिर चिनी में

हम सालहू दिन बाद चिनी लोटे थे। इसी बीच कितना परिवर्तन हो रहा था। खूबानी के दरख्त अब पीले फला में लदे हुए थे। वह खूब खाई जान लगी थी। खूबानी बनौर के गरीबा का सबम बना महारा है। कच्ची और खट्टी खूबानी का चटनी बनाकर खान हैं। पवन पर उसम पट भग्न की कागिन करत हैं। छना पर पाले पत्र सूगन हुए दूर से गाँवा का एक अजन रग दत हैं। मैं ऊपर जाती मन्त्र से नीचे के गाँवों की इन पीले छना का अर्थ नहीं जान पाया। पूछन पर पुण्यमागर न रहस्य बतलाया। खूबाना का बाटला म भरदार रख देत हैं। चाडे म अनाज क माय यही गरीबा का प्रधान भाजन हाता है। बनौर म खूबानी के पड यदि वन्दुनायन से हा, ता अचरज क्या ? हा, अच्छी किमिम की खूबाना नहीं पैदा करत और सदा स अपने यहा लगाई जाती जान वो ही बगान हैं।

मेहताजी न अपन एक पत्र में लिखा था, कि अत्र रामपुर-मुंगहर और आस-नाम के कई इलाका का मिलाकर उसका नाम महामू त्रिग पत्र गया है। तहसील से मातूम टुजा, कि सरदार बलदबर्मिह गमपुर से चने गए। महामू त्रिग क छिप्टा कमिदनर पण्डित करतारकृष्ण बनाय गए हैं। कई और पुरान रिपामती नौकरा को पञ्जन दे दी गद है। इन परिवर्तनता में

म पहाड़ पर चला जाना चाहिए और नवम्बर व जारम्भ म ही वहाँ से नाचे उतग्न का नाम लना चाहिए । यस पाँच महीन स अधिव मदान व लिए दना चाहिए तभी कुछ काम किया जा सकता है तभी शरीर का स्वस्थ रखा जा सकता है । मरे कम्पाटमट म चार आदमी थ । सुन्दरलाल गोमाइ लाहौर म वकील थ, छ हजार महीन की आमदनी और हार्नकोट व जज बनन की जागा भी थी । पाकिस्तान ने सब पर पानी फेर दिया । दा हजार अब भी बमा लेत है । घर मवान गया लकिन रहन का काम किसी तरह चल हा जाता है । पच्छीम हजार रुपय का पुस्तकालय था, जिसम स तीन चौथाई पुस्तको का इमलिन मगा पाण नि जफरल्ला स उनकी दोस्ती थी । दूसरे थे गाहजादा मिजाज व कोई सठ कुमार जो सदा मोटर और माटर व पुर्जों की बातें करने थ । तीसरे सज्जन कुछ हममुख थे, जा बानपुर म उतर गए । इस समय जमुना गंगा घाघरा की बान स युक्त प्रात म हाहाकार मचा हुआ था । बान या मूगा, युक्त प्रात व किसी न किसी हिम्स का हर साल घेरे रखता है । जान के नुकसान स बन्जर मुसी बत है जीविका व नाग की । इसी दवा तभी हो सकती है, यदि फमला का अनिवाय बामा हा । अच्छी फसल व समय सरकार कुछ प्रतिगत ल ले, और फसल बिगडन पर बीमा की हुई मात्रा म अनाज का दे दे । ४ तारीख को प्रयाग पहुँचकर थानिवासजी व यहाँ ठहरा ।

५ का रविवार था । सरकारी कार्यालय म काम करने बाला की मुविधा व लिए सम्मेलन की समिनिया गी बठकें अवसर रविवार का ही हुआ करती है । इस समय उस दिन ११ बज न काय समिति की बठक हुई । सम्मन्त नियमावली व सगाधन का काय हो रहा था । नियमावली के सगाधन का काम और पहल से चल रहा है । यदि टण्डनजी न जरा कम दीघसूत्रता स काम लिया होता तो गायद नियमावली काफी पहल स्वीकृत हा गइ हाता और फिर गुट व चींटा से भुगतन की नीयत न जाती और न सम्मेलन दल दल म पडा होता । सगाधन रखा गया कि सम्मेलन व प्रधान और प्रधान मंत्री तीन-तीन साल व लिए चुने जाँँ और वही

मन्त्रिमण्डल बनाएँ। दिल्ली में सम्मेलन भवन बनाने के लिए सरकार पाँच लाख रुपये इस गल पर दे रही थी, कि सम्मेलन भी पाँच लाख और जमा कर ले। यह कोई मुश्किल नहीं था, लेकिन उसमें भी आगिरी निणय टण्डनजी के हाथ में था। सत्र जगह कुछ ही दूर जाने पर रास्ता रुक जाना। टण्डनजी उच्च आदेश पर चलने वाले हैं उनका नियति पर मदेह नहीं किया जा सकता था। पर किसी किसी काम को घड़िया और मिनटा में निश्चय करने से ही काम चलता है और वह सालों में भी निणय पर नहीं पहुँचना चाहत।

उसी दिन कुमारी केम्प से मुलाकात हुई। वह युगास्त्राविया की नागरिका और उस समय इलाहाबाद युनिवर्सिटी में एम. ए. पढ़ा रही थी। युगास्त्राविया की भाषा और एम. ए. भाषा का बहुत नजदीक का सम्बन्ध है। जैंगेजी भी उनकी मातृभाषा मदन रही, इसलिए उनका जैमा अध्यापक आसानो से नहीं मिल सकता था। लेकिन, उनका अपना विषय था पुरातन जीव नृत्य, जिसके लिए यहाँ काम का सुभौता नहीं था, यह उनके सामने बड़ी अडचन थी।

इस समय बाढ़ आई हुई थी। १९१६ की बाढ़ की तरह से भी पानी ऊपर बढ़ गया था। जो मौरिया गंगा में पानी ले जाने के लिए बनी थी, अब वे पानी लाने वाली ही गद्द, यदि उन्हें खुला रखा जाता। लोग शक्ति थे। ८ तारीख का तो बल्कि आस्यवेत्त महिला कालेज में छाटी-सी नदी बह रही थी जमुना क्षुद्र नदी की तरह इतरा रही थी। ९ तारीख का दाना बहने जब उतरने लगी तो लाना की जान में जान आई।

‘गासन गलकाग’ को प्रेम में दे दिया गया था, और चौगाई कम्पोज भी हुआ था। जो कुछ घटाना-बढ़ाना था, वह प्रफ में करता था। सबसे पहले इसी काम का पूरा करना था। अभी ‘किन्तर दंगम’ का कुछ हिस्सा लिप्यन का बाकी था और ‘आज की राजनीति’ और ‘धुमकन’ नामक ता दिमाग से बागज पर उतरे भी नहीं थे, उनके लिए भी प्रकाशक की भाग थी। ९ मिनम्बर का ‘गासन गलकाग’ के पहले फाम का छापन भी

आता दहा। उस दिन पचास अधिक हॉली मालूम हुई। हिमालय क नियमपूर्वक चलकरमा या कोई असर नहीं हुआ ? मैं निराश नहीं हुआ और अगले दिन सत्ता ६ मीटर राज टहलने का नियम बना लिया और इतना या कुछ कम वइ महीना तक नियमपूर्वक घूमता रहा। बनारस से दुखद खबर मिली रामकृष्णदास का घर गिर गया। आजकल घर बनाना आसान नहीं है और उनका ग्यानदानो घर बड़ा भय था पास म गंगा का घाटा लिखाइ पड़ती थी। उसी दिन मालूम हुआ हैदराबाद ७ वार म भारत सरकार कुछ करन क लिए तैयार है। १३ तारीख का पता लगा, कि भारताय नना गालापुर धजवाडा मनमान और चाला—चार जगहा से हैदरावाद म घुमी है जिनम दक्षिण (बजवाडा और पश्चिम गालापुर) मे मुख्य आक्रमण हा रहा है। गालापुर म बह गइ मौ मात्र जागे वन घुकी है। सचालक जेनरल राजर्द्रमिह के एक कम्यूनिक मे साफ था कि भारत सरकार निजाम को बकरार रखना चाहती है। यही क्या, बहता बहून पीछे तक यह भी चाहती रही कि हैदरावाद म पडे महाराष्ट्र कर्नाटक और आंध्र क हिम्स सग अपने स्वाभाविक गधुआ से अलग रने जाण। रिजवी के इस्लामी रजानारा (स्वय मजका) ने हैदरावाद म नद कर दी थी। वहाँ दूसरा पाकिस्तान कायम हा गया था। हजारो सिद्ध परिवार अपन का अरशिन समझकर गियामत से बाहर चल गए ५। लकिन, रजाकार आधुनिक बना का मुकाबिला कसे कर सकत थे / अगले दिन की खबर म भी यहा पता लगा कि बहुत प्रतिरोध नहीं हा रहा है। १७ मितम्बर की शाम का ८ बजे निजाम न अधानता स्वीकार की और पांच ही दिना म हैदरा बाल काण्ड खत्म हो गया। हैदरावाद म कोई कारवाइ की जाए इसके लिए पटेल ने ही दृत्ता दिखाई। नहरू अपना सक्कता म हमगा हिच किचान रह। यह भी क्या जाता है कि साजाओं को बदन का हुकम दिया जा चुका था, उमी दिन आधा रात का अप्रज प्रधान सनापति न सरकार को बनलाया, कि एसा करन पर पाकिस्तान हमला कर देगा और दिल्ली, अहमदाबाद और बम्बई का पाकिस्तानी हवाई जहाज ध्वस्त कर देगे।

लिपि के दबताआ म धबराहट हा गइ थी लकिन अब ता तोर हाथ से निकल चुका था ।

प्रयाग म रहने विद्याधिया और तरणा क सगठना क विमान विसी काम म भाग लेना आवश्यक ठहरा । १२ सितम्बर का कायस्थ पाठशाळा के छात्र मध का उद्घाटन करन गए । अगले दिन गाम का इडो सावियत सामायटी का उद्घाटन और भाषण दना पडा ।

बहुत दिना म मैं जा र दे रहा था कि उदू की जमून्य निधिया का नागरी अक्षरा म लाना चाहिए । मर मभापति हान क समय मम्मन म ऐसी १६ पाधिया क निकालन का निश्चय भी हा गया था लकिन काइ उमके लिए जाग नहीं आया । गायजी ने उर कविता पर एन बहुत मुद्दर पुस्तक 'गर आ गायरी' लिखी, जिमकी भूमिका मुझे लिखन क लिए कहा । मुझे एसा करन म उठा प्रसन्नता हुइ क्याकि गायजी का उदू काव्य का गभीर जान और लिपिन की गकिन ऐसी था जिसक द्वारा हिंदी पाठका का उदू कविता क समपन म आसानी हाती । काफी बडी पस्तक ग-जन प्रस म बडी मुद्दर छषा । हिंदी बाल उदू कविता क प्रेमा है यह म्ना म मातूम हागा, कि पुस्तक का प्रथम मस्करण एक साल म ही खत्म हा गया जोर फिर उत्माहित हाकर गायजी न कइ भागा म 'गर आ सुपन' का प्रका गिन करके उदू कविता क बहुत बडे भाग का लिपि पाठका क लिए मुल्भ कर दिया । यह सन्ताप की बात है लेकिन मैं इसका पर्याप्त नहीं समपता । उदू का सारा मूयवान गद्य आर पद्य साहित्य नागरी जधारा म छपना चाहिए । उर भाषा क लिए नागरी लिपि भी अपनी लिपि हा जानी चाहिए । उर हमारी भाषा है, उदू का साहित्य हमारा है उर क महान कवि और लेखक हमार अपने हाड मास है । उर लिपि म पुस्तका क प्रका गन म अब बहुत कमी हो गई है, उस लिपि क पढन बाल भी कम हात जा रहे हैं । एसा अवस्था म उदू-साहित्य नागरी म जल्पा जाना और भी आवश्यक है । इसका यह मतलब नहीं, कि उदू-साहित्य का उर लिपि का

वापसाट करना चाहिए। हाँ, उदू व प्रचार म उदू लिपि को बाधा व रूप म सामने नही आना चाहिए।

पगार मे चीनी व बदन मे अब उमकी तरफ उपधा नही की जा सकनी थी। उसका चिकित्सा व लिण बइ तजर्वे कर मवा था, आयुर्वेदिक दवाइयाँ भी खाई थी। ३० मिनम्बर को एक सप्ताह क ठिए मैंन निरन भाजन करन वा निश्चय कर लिया और अण्डा मास मछनी तथा फल यही भोजन म रते। मैं इस फणहार कहता था। जीर सचमुच ही यदि फल के अतिरिक्त दूध वा भी फणहार माना जा सकता है ता इमका क्या नही। सवेरे आध सेर दूध श्रीनिवासजी व यहाँ म जा जाता था। मास वा मछली बिना पानी के चढा लिए जाते। पक्कर उनम स्वय काफी सूष पैदा हा जाता। नमक के अतिरिक्त और कोई ममाग या नाममिक चाज साथ मे लना नही चाहता था, लकिन मछनी की गंध का दवान व लिए प्याज और कुछ चीजा क डालने को जरूरत थी। टडनजी वैसे बडे भवन राधा स्वामी हैं लेकिन उनका भरे ऊपर त्रिोप स्नेह या अनुपह कष्टिए व भी चाहने थे कि मरा स्वास्थ्य अच्छा रहे, ताकि मैं अच्छी तरह काम कर सकू। एक दिन उन्हनि किसी दूसरे परिचित रोगी का उदाहरण दत हुए बत लाया भी था कि वे मास त्याग करते थ। इस भाजन के नियम स कुछ ही समय लेने स लाभ मालूम हुआ और पेशाब कम हाा लगी। टहलना भी मैंन पूर्ववत जारी रखा ता भी २५ अक्नूबर को चिनी आने मे काई रुकावट न देखकर जान पडा—इसुलिन लेना ही चाहिए। लेकिन, नियमपूर्वक इसुलिन लन में अभी दो घण की देर थी जब सब तरफ से भटककर और सतर म पडकर दस लिया, कि इसुलिन छा 'नाया पया विद्यन ज्यनाय'।

बहुत साला बाद ७६ की गाम वा आय समाज म हिंदी दिवस क सम्बध म व्याख्यान देना पडा। मैंने साचा था इतन साला म यहाँ भी परिवतन हुआ होगा, लकिन वह धम क्या यदि उस पर काल वा प्रभाव पडे ? सभा के बाद अब भी यही 'हू दयामय हम सवा को गूढ़ताई दाजिए'

की तुकबंदी गाई जा रही थी। मदन बण आश्चर्य यह हुआ कि अपने को आयसमाजी कहलान वाले एक सज्जन न फलित जातिम पर छोटा बसने व लिए मुझमें विवाह करना चाहा।

इधर "गामन गणका" की छपाई चल रही थी, उधर आग व परिभाषा के काम व बाग म भी हम तैयार हो रहे थे। विद्यानिवासजी और माववजा बलबन्ता कटक नागपुर आदि म नाकर बहा व अधिवारी विद्वाना से मिल आए थे। मदन हमार बाग को बहुत पसन्द किया था। साइम की परिभाषा के बनान व लिए एक मास्म और भाषा दाता व जानकार योग्य आदमा की तलाश थी। डा० महादेव साहा न थी मुनेशचन्द्र मेन गुप्त का पता दिया। व माइम व एम० एम-सी० थ मन्वृत और एसी तथा मुराष की जोर भी किननी थी भाषाका व जच्छ जानकार थे। वे इम काम व लिए उपयुक्त थे जोर बैस ही भाविन भी हुए। बहुत बाता म थे विद्यानिवास जम ही थे। प्रयाग विश्वविद्यालय क दान व अध्यापक डा० विश्वनाथ नरवणे दान की परिभाषा की जिम्मेवारी उन व लिए तैयार थे।

अपना आर्थिक स्थिति की जार ख्याल करना जरूरी था क्योंकि सम्मेलन म पसा लेकर मैं काम करना नहीं चाहता था। इस साल ४१०० रुपए के करीब कित्तव महल म रायली मिली थी, जा अकेले रहन पर भी भरे लिए अपयाप्त थी। कभी इतनी रकम का मैं बहुत काफी समपना लकिन इम वक्त ता दमम काम चलना मुश्किल था।

अगली गर्मिया म फिर बड़ी भागना था, और वहाँ भी गच की जम्हूरत थी। साथ म एक सहायक की आवश्यकता तो अनिवाय मालूम हाना थी। पुष्पमागर का जान पटना कम था, कि उनमे काम नहीं चल सकता था। चन्द्रकांतजी गिमला म साथ रहे। उनका आग्रह था कि मैं कुल्लू चले। कुल्लू म नगर मुझे बहुत पसन्द था। डा० राज रामरिक् का सभला (पूना) से पत्र आया जिमम उन्होंने लिखा था, कि हम नगर व अपन निवास उर स्वतंत्र हो बचना नहीं चाहते, किन्तु काम की सुभीते की दृष्टि न कल्पिपोंग

या सिक्कम म रहना चाहत हैं। नगर का खब भी ज्यादा था। फिर बिना जन क समय मुमकिनता का जा निमम हत्या हुई थी उसस भी उनक परिवार का दुख पहुँचा था। इस समय ता लद्दाख पर पाकिस्तान क आक्रमण स कुल्लू और लाहुल चाल भी चिन्तित हा गए थ।

२६ मितम्बर ता वायसमिति का बैठक म और याना क साथ यह भी म्बीकृत हुआ कि सम्मान क अवसर पर 'वादे मारम्' का राष्ट्रगीत के तौर पर गाया जाए। भारत सरकार दस तथा 'जन मन गण अधिनायक' दाना का राष्ट्रगीत मानती है। जन मन गण विमो नता क लिए सम्बाधित गीत है वह अनता या देग क लिए गना है गायद नताओ क अह की उसस त्रुष्टि हाती है इसीलिए उस राष्ट्रगात बना दिया गया। दिल्ली म सम्मान भवन बनान क बारे म बैठक म बात भी नहीं हा सबी, और दो दर्जों क नताओ म पपट हा पनी।

बिनार दग म अब प्रस म था। लिंगी पुम्तन अगर तुरत छपन लग जाए, ता लखकी की बड़ी प्रसन्नता होनी है। लिन म गर्मी का ता पखे मे विमो तरह भवान थ लकिन रात का कोई उपाय नहीं था। बिजलों के दीपक पर हजारों गम्भ टूट पडत थ, और काम करना मुश्किल हो जाता था।

इसी समय दलाहाबाद म अक्याम की कहानी 'सरदारजी' पर वाबेला मचा था। प्रादेशिक सरकार मुकद्दमा चला रही था। हिन्दू मुस्लिम झगडे म जा बबरता दिललाई गई थी, उसका घणन करने हुए एक सरदार (सिक्य) की मुसलमान के बचान के लिए अद्भुत आत्माहति का इसम चित्रण था। पन्ल भाग म कुछ अप्रिय सय कह गए थ जिसका लेकर सिकवाने वाबेला मचाया, और सरकार को यह मुकद्दमा चलाना पडा। अंत मे लखक का छुटकारा हो गया, पर यह ता मालूम हा गया कि लखक का पय कृपाण की धार है।

कुछ ही दिना बाद मैं फिर सम्मेलन भवन म सत्यनारायण कुटार म रहने लगा। काम करने का सुभोता यहा हो सकता था। नियमपूर्वक टह

लता था। ३ अक्टूबर का साहित्य ससद् भवन में रसूलाबाद गया। महादवी जी की यह सस्था गंगा के किनारे बहुत अच्छे स्थान पर है लेकिन आर्थिक चिन्ता में पीड़ित लखनऊ शहर से दूर इस सस्था का लाभ कैसे उठा सकता है? आज से पचास वर्ष बाद इसका महत्व बहुत बड़ा हो सकता है लेकिन आजकल तो वह सिर्फ तमाशे की चीज ही है।

किनती ही पुस्तकें मैं केवल अपनी इच्छा पर ही लिखता हूँ। कभी कभी ऐसी पुस्तक भी लिखनी पड़ती है जिसमें मित्रों का वाध्य करना भी सहायक होता है। यद्यपि लिखता हूँ तब भी वसी ही पुस्तक में जिसमें मेरा रुचि हाती है। डा० धीरेन्द्र वर्मा ने इधर कई बार हिन्दुस्तानी एनेडमी के लिए एक भाषण तैयार करने के लिए कहा। मैंने 'बौद्ध संस्कृति' पर वचन दे दिया। उस समय नहीं मालूम था कि मुझ इतनी बड़ी पुस्तक लिखनी पड़ेगी और दुर्लभ समय में से भी कई महीने निकालकर उस दिन पढ़ने फिर पुस्तक छपकर तैयार हो जाने पर भी फरवरी १९५६ तक उसका पाठाना के हाथ में पहुँचने की नौबत आएगी।

टाइप के सुधार की ओर भी मेरा मन दौड़ रहा था। मैं सोच रहा था यदि ऊपर-नीचे की पाइया का बगल में रख दिया जाए तो हिन्दी के छोटे आकार के टाइप भी देखने में काफी बड़े और माट मालूम होंगे। आजकल दस प्वाइंट के शरीर वाले टाइप का आकार वस्तुतः ६ प्वाइंट के बराबर होता है। इसी त्रिकत के कारण ६ प्वाइंट के टाइप हिन्दी में ढाल नहीं जा सकते। मैंने यह बात प्रयाग के एक टाइप फौट्री के स्वामी का बतलाव और उन्होंने उस तरह का टाइप ढाल भी दिया। मैं चाहता था अपनी एक दो पुस्तक इस टाइप में छपवाऊँ। अक्षरों के आकार में तो कोई अन्तर था नहीं, इसलिए पढ़ने में त्रिकत नहीं हो सकती थी। सुधार हुए टाइप में मरी किसी पुस्तक का आनन्दजी छापने वाले थे। पीछे सब नितर विनर हो गया और टाइप बन के बन रह गए। ४ अक्टूबर की रात का भिन्नसार तक पन्ने की सहायता लनी पड़ी। भाजन में अगले दिन का डायरी के अनुसार — सुबह आठ सर मुद्द दूध श्रीनिवासजी के यहाँ से जा जाना है और शाम

को यहाँ मंगा लेते हैं। आध सेर मछली या मास जोर सवा सर सब या दूमरे पर—जिनका किलोरी परिणाम है साने १६०० जा अपर्याप्त है। यदि पाव भर माम और बनाए, ता ६०० किलारी जोर बढ़कर २२००, २३०० किलोरी होकर पर्याप्त होगा।

‘गासन गव्दकोश’ म तुरत हाथ लगाना टडनजी क कारण हुआ था। उघर मैंन सविधान क मनीदे क हिंदी अनुवाद को जब दया तो माथा ठनका। यह ता हिन्दी क किसी दुश्मन का ही काम हो सना था। यह अनुवाद नहीं किया गया था बल्कि नई भाषा लागी क ऊपर थापी गई थी। मैंन उसका थोडा अनुवाद करके दिखलाया ता टडनजा और दूमरे मिना का जाग्रह हुआ कि सविधान क अंग्रेजी मसौद का पूरा अनुवाद पर दिया जाए जोर उस छाप भी दिया जाए, ताकि सविधान मभा की अगली महत्वपूर्ण बंठक म उस लागी म वितरण करके बतलाया जा सक कि यह हिन्दी का कसूर नहीं है जा कि उस तरह का अनुवाद सरकार की ओर स नियुक्त समिति न किया है। डा० रघुवीर सवाई गिवायत नहीं हा सकती थी वे अपन पल्लवग्राही पाठित्य क बल पर टांग अटा सकत थे। श्री घनदयामासिंह गुप्त हिंदा क बडे प्रमी और सहृदय पुरुष थे। व चाहत थ कि हमारे स्वतंत्र दल म अंग्रेजी का प्रभुत्व हट जोर हिंदा उसका स्थान ले। एस काय म सहायता देन क लिए उ ह किसी विगपन की जरूरत थी और भूले भटके डा० रघुवीर किसी तरह नामपुर पहुँच गए। लकिन आश्चय होता था कि इस पर श्री हरिभाऊ उपाध्याय श्री कमलापति त्रिपाठी और डा० नगेन्द्र न क्या ध्यान नहा दिया। १०३ धाराजा के अनुवाद का दखने क बाद टडनजी न कहा सबका अनुवाद कर डालना चाहिए। मैं और विद्यानिवासजी उसम जुट गए। अनुवाद करत समय रघुवीरी प्रक्रिया का और नजदीक से दखन का मौका मिला और उस पर मैंन एक व्यगात्मक लेख भी लिख डाला।

दरभगा—दरभगा म आरियटल का फस हा रही थी। प्रयाग स भी डा० वावूगम सकसना, डा० उत्यनारायण निवारी जा रह थ। उघर

मुजफ्फरपुर में बिहार प्रांतीय हिंदी साहित्य सम्मेलन हो रहा था, उसका भी आयोजन था इसलिए १५ अक्टूबर का साढ़ ७ बजे रामबाग स्टेशन से छाटा लाइन द्वारा मैं रवाना हुआ। सड़क क्लाम की अवस्था कम से कम ट्रम ट्रेन में सुधरी मालूम होती थी। अच्छा इन्वा लगा हुआ था। बनारस गाजीपुर बलिया छपरा में भीड़ जकूर रहा, और छपरा बलिया में दमन से मानूम हो रहा था, कि अब भी पुगन जमान की तरह ही बड़ी सफ्या में लाग मजूरी करने के लिए बगाल की जा जा रह हैं। पहले वे पूर्वो बगाल क क्षता में जाकर काम किया करते थे लेकिन अब ता व पाकिस्तान में हैं। थम मारा माग फिर रहा है, और उसमें समुचित काम लेने की व्यवस्था नहीं है। गारोख और मानसिक थम की यह बकारी ही हमारी दरिद्रता का कारण है।

रात का २ बजे ट्रेन मुजफ्फरपुर पहुँची। था रामगारी प्रसादजी बाबू उमाशंकरजी और श्री देवदत्त गाम्त्री से स्टेशन ही पर मुलाकात हुई। रात का सबसे पहला काम सान का था। सबरे मिश्रो से मुलाकात होती रही। अमह्मदग क टिना में काश्म की सरगमिया क समय मुजफ्फरपुर न जाने कितनी बार आता-जाता रहा। लेकिन २०-२५ वष में तो नई पीढ़ी आ जाती है, और पुगने परिचित चेहर विरल हो जात हैं। अधिवगन के समय मुजफ्फरपुर नगरपालिका ने मुझे अभिनदन-पत्र प्रदान किया। ३ बजे ही अधिवगन में शामिल हुआ। अभिनदन के उत्तर में मुझे भी एक घटा बालना पया। इस समय टायरटोज का मन पर भा प्रभाव पड रहा था, मालूम होता था, उस कुछ नगे में बाल रहा हूँ। साथ ही अनकुम भी लगता था। अरअसत मुझे पहू ही समझना चाहिए था, कि टायरटोज का एक-मात्र उपचार है नियमपूर्वक राज इ-मुलिन लेना। फिर मानसिक गारो-रिख मार क्षाम मिट जाते हैं।

नागानुनजा और नलिनविलाचन गार्मा भी ७ बजे गाम की उमी ट्रेन में अरभगा का जा रह था। नलिनजी अपने डाक्टर के निबध के बारे में बातचीत करन रह। पीछे जम युनिवर्सिटिया क निबध टक मर हो

गए तो बहुता न उमका म्याल छोड दिया और नलिनजी नी गिधिल हो गए। उनसे भी ज्यादा मैं साचा करता था कि अपना काल व जद्भुत विद्वान् प० रामावनार गमा की सस्कृत और हिन्दी कृतिया का पुस्तकाकार बन छापा जाए। उनका सम्बृत वाग तो प्रवाग म वित्कुल आया ही नहीं और डर था कनी स्वदेह जरा का प्राप्त न हो जाए। नलिनजी को बह मूर्ति भी मुथ यात् है जबकि दा-नोन धप व वच्च ध और बनारस म गर्माजी जाधी घाता नीचे और जाधी घानी ऊपर किए उनका कथ पर करके गगा स्नान का जान समम लागा की जिजासाआ का तपन करन व न्निदर तक सत्क व किनार खडे ध। गर्माजी व निवच आर पुम्नके अव प्रकाशित ग रहे है यह थडे हप का बात है।

रात क १२ बजे दरभगा पहुच। महाराजा दरभगा क लालबाग के अतिथि भवन म ठहराया गया। डा० बाबूराम नवसता और डा० निवारी और बहत से विद्वाना क साथ खेमा म टिक हुए थ। डा० अमरनाथ पा एक तरह इस सम्मेलन क निमन्त्रणकर्ता ये प्रवच मारा डा० उमग मिथ के ऊपर था। अपनी मातभाया भाजपुरी का पक्षपातो हान से मैं नी चाहता था कि उसका उचित स्थान मिल। भाजपुरी प्रारम्भिक शिक्षा का माध्यम हा, उसम सान्त्विका निर्माण हा। कुछ दर तक वह यायाया की भा भाया हा। पर डा० उमग मिथ और कितन ही और मविली ब्राह्मण इनन मे न-तुष्ट नहीं है। वह हिन्दी क विरोध का मातभाया नक्ति का एक अग मानते व। उनक रयालगरीफ म भारत की राष्ट्रभाया हिन्दी नहीं सम्बृत होनी चाहिए। कितना क तक का मुनकर ता मुग याद जाता था 'गास्था प्यदी-यापि भवन्ति सूर्वा (काफस क वागत पया म या तो अग्रजा का प्रयाग किया गया था या सस्कृत का। हिन्दी विद्वेषमूलक मविली का सम धन कुछ बूटे और विगडे दिमाग का ही स्वप्न है। मैविल प्रतिभा पिटारी म बन्द हान के लिए तयार नहा हा मवतो। उस सारे भारत क रगमच पर अपना जोहर दिखलाना है। सस्कृत म आज तक उसका स्थान अद्वितीय रहा है। कुछ ही दिना म जर मविली तम्णा क दिमाग का ताला टूटा तो

वे आई० सी० एस० में भी अपनी सफलता दिखाने लगे। हिंदी में नागाजुन ने गद्य पद्य दोनों में अपना विशेष स्थान प्राप्त किया है, और दूसरे तर्षण भी आगे बढ़ रहे हैं। तर्षण पीढ़ी 'पुनर्मूयकोभव' मानन के लिए तयार नहीं हो सकती यह निश्चित है। मधिली साहित्य में सुंदर उपासक लिख जा रहे हैं। हरिमोहन ठाकुर की व्यगात्मक कृतियाँ मधिली में ही नहीं, हिंदी में भी बहुत जादरक साथ पढ़ी जा रही हैं। जाग के मैथिल विद्वान् अपनी मातृभाषा और हिंदी दाता की सेवा करन का वे भागी हाने हम सन्दर्भ नहीं।

काँग्रेस के साथ कई और सम्मेलन हुए। १७ अक्टूबर को हिंदी का सम्मेलन हुआ। ५० भाषनलाक चतुर्वेदी का भाषण बडा ही सुंदर था। चतुर्वेदीजी जमा हिंदी का सुवक्ता इस वक्ता कई नहीं है, वह हिंदी के सर्वश्रेष्ठ वक्ता है। हर एक काँस और वाक्य चुन हुए गठे हुए बडे लालित्य के साथ उनके मुह से निकलते हैं। सचमुच मालूम जाता है मानी कर रहे हैं, मालूम होता है अच्छा तरह लिखे हुए भाषण का बाद सुन्दर पठन वाला पढ़ रहा है। मुम जत्र जब चतुर्वेदीजी का भाषण को सुनने का अवसर मिला तब तब स्पष्ट आया, कि इन भाषणा के कुछ रेकाड रहन चाहिये ताकि आतवाणी पीढियाँ भी देख, कि उनका पूर्वजा में एक इस तरह का अद्भुत दामनी पदा हुआ था। कविता का जियाय तीर स नया चुनाया गया था। हिंदी का प्रासात्न दना काँस के प्रपंचका का स्पष्ट भी नहीं था। ता भी नागाजुन जी ने अपनी कुछ सुंदर और चुभती हुई कविताएँ सुनाई।

अपन बिहार के राजनीतिक जीवन में हर जिले में कितन ही कविता के घनिष्ठ सम्पर्क में मुझे आन का मौका मिला था। कभी प्रचार के लिए एधर उधर जान पर कभी प्राणैगिन काँग्रेस कमेटी की बैठका में और कभी बर्षों या महाना जेलों में निरंतर साथ रहन समय। कभी परिचितता में मैं एक कविता मराय में हम समय बीमार थे। उठ जब मालूम हुआ ता मिलन के लिए बुलाया। मैं गया अब वह बड्ड हा चुन थे, और उस पर रगा भी। कुछ तरह तन बातें हाती रहा। पुराने परिचित ने मित्र बनी

प्रसन्नता हुई। अफमास है, उस समय नाम लिय नहीं सवा और अब याद नहीं आता।

रायपुर बाट पण्डाल खाला था। इस समय ससृष्ट के पण्डिता न अपनी सभा करनी शुरू का। काफ़ेस के लिए समय नजरदाक आ रहा था ता भी पण्डिता का सभा सारम हान का नाम नहीं लता था। डा० उमश मिश्र का बहुत बचनी हानी था चाण्डिए, लेकिन उहान पालिसी स काम नही लिया। फिर क्या था। पण्डित उवल पडे और उनका जगुवाइ करत के लिए आरा जिल के एर गम्वाघाग लम्बी चौडी मूर्ति मच पर आकर सम्कृत म प्रब धका की घजिजवाँ उतारत लगी। मैं घोले हा देर पट्ट पण्डाल स बाहर चला आया था। लागा का कुछ मूच नही रहा था इसा समय किमा न मरा नाम लिया मुच वही बुलाया गया। उनेजित पण्डित मण्डली का गान्त करत म मैं समय हाऊगा इस पर सहसा मुने भी विश्वास नही था। लेकिन पण्डित मण्डली मुझे अपना मानती थी मरी बात मुने के लिए तयार थी। मच पर जाकर लम्बी चौडा मूर्ति स मैन भाजपुग म कहा— 'सार देग के विद्वाना के सामन हम लागा की भद् हो जाएगी इसलिए बात का आगे नही बडाना चाहिए।' पण्डिता को भी उनकी बाता का कुछ जारदार समयन करके और भद् होन का डर दियाकर गान्त किया। पण्डाल काफेस के लिए खाली हा गया। इस बात का उल्लख करत डा० अमरनाथ झा ने कहा था कि उमशजा म कुछ त्वातदानी स्वभाव है जिसके कारण रात त्तिन एक करके सवा म लगे रहन पर भी एसी चूक हा गई। प० उमश मिश्र प० गिवकुमार गार्स्त्री के बाद उनके गिष्य तथा उही की तरह अपने समय के ससृष्ट पण्डित-चक्रवर्ती प० जयदेव मिश्र के सुपुत्र हैं। डा० गगा नाथ झा (प० अमरनाथ झा के पिता) प० जयदेव मिश्र के गिष्य थे इस त्तिने अपन गुम्पुत्र पर बहुत स्नह रखत थे। महामहागाध्याय जयदेव मिश्र भी जल्दी उत्तजित हा जात थे इसका मुच पता नही। लेकिन कुछ कमिया के कारण डा० उमश मिश्र के गुणा का नही भुलाया जा सक्ता। उनकी

संस्कृत भाषा और उसकी मस्कृति से घनिष्ठ प्रेम है। हा वह सौ माल पहले की दृष्टि से ही उसका देखत हैं।

डायबटीज के लिए चिन्ता बनी रहती, मुह का स्वाद और बार-बार पेशाब का होना ही कबाहुत का कारण नहीं था, बल्कि मन भी प्रगान्त रह कर काम नहीं कर सकता था। कभी साचता शरीर का वजन भी इसम कारण है। क्या ही अच्छा होता यदि १५ पौण्ड घट जाता। डायबटीज चार के लिए यह क्या मुश्किल है? और आजकल (१९५६ म) तो वह दिन भी देखना पड़ रहा है जबकि गरीर का वजन उनना (१५२ पौण्ड) ही हो गया है, जितना हाना चाहिए था। काफ़्लेम म आन का एक यह भी प्रतीत भन था, कि परिभाषाओं और हिन्दी के बार में भिन्न भिन्न प्रदग्ग में आए हुए विद्वानों में बातचीत करेंगे। हिन्दी विराधता केवल तमिलनाडु की चीज है और उसकी जड़ में भी वस्तुतः ब्राह्मण और अब्राह्मण का सवाल है। अब्राह्मण ६० फीसदी में ऊपर है, तो भी वहाँ के घन विद्या के सर्वोत्तम ब्राह्मण गताश्रिया में हाते आए हैं उसी का बदल अब वहाँ का बहुजन ले रहा था। ब्राह्मण विद्वान् भी तमिल पक्ष का अब्राह्मणों की तरह अपना नाम के लिए मजबूर हैं। ट्रावनकोर और आन्ध्र के प्रतिनिधि हिन्दी और परिभाषाओं के बार में हमारी हा तरह उत्साह दिखला रहे थे यद्यपि अंग्रेजी का मोह अभी बहुता के पीछे हाथ घोकर पटा हुआ था। मुझे तो समय में नहीं आता था, कि कैसे वाइ सोच-समय ग्यनवाला आदमी मान सकता है कि अंग्रेजी हमारे दग में अनिश्चित बाल तक अपने प्रभुत्व को बनाए रखेगी। हम दग ही रह हैं, कि नई पीढ़ी अंग्रेजी का याग्यता में दिन पर दिन पिछटती जा रहा है। आज (१९५६ म) तो नवयुवकों में वहाँ गुड अंग्रेजी बाल समय मक्ता है जिसकी शिक्षा के बटा और युरोपियन स्कूलों में हुई है। यह निश्चय ही है कि इस गताब्दा के अन्त तक ऐम लंगा की भी सस्था बहुत कम हो जाएगी। यदि अगली पीढ़िया अंग्रेजी को अपने कंधे पर उठान के लिए तैयार नहीं हैं तो सठियाए बूग का चिल्लाना क्या बेकार नहीं है!

१८ अक्तूबर का ठाढ़ बजे का प्रेम समाप्त हुई। मैंने इसमें परिभाषा सम्बन्धी जपन लेख को पढ़ा था और अन्तिम त्ति नाटक रूप का बहाना भी कुछ वाला था। उस त्ति गाम को हिंदी महारथिया व स्वागत व लिए टौनहाल में मभा डूइ जिममें मस्त्रुन व राष्ट्रभाषा बनाने व प्रयत्न पर वालन हुए मन कथा—हमारी भाषाओं व उपजीवक की तरह मस्त्रुन का स्थान सथा बना रहगा। ऐतिहासिक, जब वेनी के समय में माना का मिहासन का लाभ छाडना हा अच्छा हागा। मिथिला विश्वविद्यालय की स्थापना का भी मैंने समयन किया और बनलाया कि जमीनदारी प्रथा व हट जान व वार यहा की वस्तु सी इमारतें वपन की मिल जाएगी। प्रभगा में महा राजा का निजी पुस्तकालय है जा पुस्तका की मख्या में बहुत बरा नहीं कहा जा सकता लेकिन उममें भारी परिमाण में वस्तु अच्छी-अच्छी पुस्तक संप्रहीत है। छथा हुई पुस्तका में ऐसी भी बहुत हैं जो ईस्ट इण्डिया कम्पना के जारम्भित त्तिना में लगे या विदेश में मुद्रित हुई थी।

१९ अक्तूबर को सबेरे हम लागी का विद्यापति व पद सुनन का मौका मिला। हिंदी और बंगाली कई विद्वान् मथिल कठ में मथिल काकिल की कविताभाषा सुनना चाहत थे। हमारा प्रबन्ध महाराजाक जनक राजाप्रह्लादुर विश्वेश्वर सिंह व यहाँ किया गया। दरवारी गुनिया न उम उम्तानी तराफ से सुनाया जिस हम कही भी सुन सजत थे। हम तो लानकठ में उम सुनना चाहत थे। फिर इन दरवारी गुनिया में इतना बहूदापन हा सकता है, इसका हम कभी ख्याल भी नहीं था। सुननवाला में महिला विदुषा भी थी, और वह गुनी विद्यापति व नाम में विपरीत रति का पद सुना रह थी। किसी तरह जल्दी जल्दी वना से हम भाग।

गाम को ५ बजे स्टेशन पहुँच। प्रयाग व लिए यही डवा लग गया था इसलिए हम अब निश्चित थे। जगत् दिन (२० अक्तूबर का) हमारी गाणी चल रही थी। डा० उमंग मिश्र की जगती पीनी उनके हाथ में नहीं रहगी, और तीसरी पीनी ता बिरकुल विद्राह करेगी इसमें सन्देह नहीं। लेकिन, अभी व अपने पुत्रा पर लागी व हाथ अपने गान पान व नियम को चला

हृत्थ । तीना पुत्र भूष चल् रह थ रेल म छुआछुन जोर जान पान का वही
 अनानन नियम पालन करना चाहिण चाह चौरीम घट ला दन करोन
 रखना पते । जोर म सब उम परम जमदिग्य पगान क लिए तिस पर
 उनका गात्र ही पूरा विश्वास है । मुझे ममस्नीपुर म स्टान म मुद्धर
 स्वाष्टि वनी दुं मछरियां प्पफाम पर विकती योग पती । ना मैन नमषा
 मचमुच ना मिथिला भव्य का एक काना है । तिसी मैथिल न इनर बारे म
 कहा था कि जमून वही दूसरी जमून नहीं बल्कि प्रूमा दय मव ग्गास्त्र-
 निचारणा जम्बीरनागपरिपूरितमभ्यगडे । नीव क रम म वनी मछ
 रिया का मण्ड तिनना स्वाष्टि जाना है कम मौभागवान ती जानने हैं ।
 आर सकलगाम्त्र क महापण्डित हान क गान भी ग्राह्यग ना एम है ना
 पुराना जाय प्रया का अपनाए हण कागी हो या कती मम्य और मान क
 भाजन म परहज नती ररत । पश्चिम क स्पेच्छा म जान पर कभी-कभी
 उन्हें अपन परमप्रिय श्राद्ध का छात्रा पटना है और उनक रिया दग लीट
 कर प्रापश्चित करनक बाए जब जम्बीर-नीर परिपूरित मल्क-वल्क मिगता
 है ता वह अपन का हुनाय मममत है । मथिया क साहस ती गान कदा न
 ती जाण । मम्य कच्छा और बराह दन तीना जन्ताग का उब्र क चट
 कर गण शनि मचित्य नगवान नारमिह वपुदधो । (तीन जन्तारा के जा
 जान म टरन विष्णु न नरगिह का जवतार लिया ।) यति निन्मात्र का
 अवतार रिया जाता, ता भा स्वग्धन नहीं थी । मै ग्य रया था तीना
 तरणा का मुं चावाम घट क दन क कारण मूना हुआ था ।

प्रयाग—२० ताराग का प्रयाग पहुँचर ४ नवम्बर तन क लिए निर
 में परिभाषा क काम म जुट गया भजन म फगाराग हा गया और जैमा
 कि मैन कता मर फगार का मतलब था अन्न का मवधा याग । मम
 दूध, माम मछा और फल नम्मिन्ति थे । रात ५ ० नीर का टपना
 ना हान लगा ।

२२ अवनूबर का थापनजा न अपना विवाह जानि और कम क बदन
 का ताण्डर विद्या । उनकी पती ताहगइवी वनागम को मुनि रिया छेकूट

महिला हैं। यह तत्पर आचरण रहा था कि पतिकुलमता रूप जीर उल्लाम था। गिवरानादेवी अपनी बहू को फिर आँसू पर बठा रहा थी पर मातृकुलमता और मनाप छाया हुआ था—किस मुस्लिम बच्चा काफिर बनने के लिए काफिर के घर जागगी। काल जब पहलपहल प्रहार करता है तो भले के लिए हान पर भी बहू प्रिय नहीं मालूम होता। लेकिन, काल ही उम मह्य और प्रिय भी बना देता है। मामाजिब याना में पीछे रहनेवाले हिन्दू आग बड रहे हैं तब भते दिना का आगा होती है। मने हसत हुए कहा—बनी बहू का भा गीसिल म अहिन्दू निर्वाचन क्षेत्र से भेज देना चाहिए। आज प्रेमचन्द्रा ज्ञान ना वह भी गिवरानाजी की तरह ही पुत्र और बहू को बड रूप से जागीवाद दते।

२३ अक्तूबर को थी राजद्र बाबू के पत्र में मालूम हुआ कि वह भी सविधान के रघुवीरी अनुवाद में मत्पुष्ट नहीं हैं।

२४ अक्तूबर का प्यास और पेगाब बहुत ज्यादा हो गई मालूम हान लगा, चक्रमण और भाजन नियंत्रण में डायबटाज का नहीं भगाया जा सकता, दसुलिन लना हो पया। यद्यपि मैं डेढ़ घंटे राज घम आया करता था, लेकिन १६ घंटे की निरंतर बठकी होनी था। ८ बजे मबेरे में रात के १२ बजे तक बम खान के लिए कुछ मिनट रज बठा काम में ही लगा रहता था। मरे पत्र का राजेन्द्र बाबू ने थी घनश्यामसिंह गुप्त के पास भी भेज दिया था। उसमें कुछ बच्चा बात भी थी। लेकिन गुप्तजी नघ्रता की मूर्ति है। उनका अपना निजी आप्रह या स्वाय भा रघुवीरा प्रणाली से नहीं है। उन्होंने मिलकर काम करने के लिए कहा और पीछे हम लागे ने बहुत स्नेह के साथ मिलकर काम किया।

२० अक्तूबर को गायन मन्त्रों को छप गया और अगले दिन सी कापिया का जिल्द ना बर गइ। उसी दिन सम्मेलन के कार्यालय के नए भवन की नींव मुझ डालनी पडा और टडनजी ने सम्मेलन प्रेस का उद्घाटन किया। प्रेम के लिए मैं रहूँ उमुक्त था। परिभाषा का काम तभी तक से और तजा से चल सकता था जब प्रस पूरा सहयोग देने के लिए तैयार हा।

बाहर के प्रेसों में काम मतापजनक नहीं होता था। उस समय प्रेस के लिए जो दोमजिला इमारत बनी थी उस लोग काफी लेबिन में नाकाफी समझता था। परिभाषा के कामों का छापन के लिए नागरी और जपेजी दोनों टाइप चाहिए और छपाई में अच्छी ज्ञानी चाहिए तभी वह दूसरे प्रान्ता के विद्वानों पर प्रभाव डाल सकती थी। सभी प्रांतों के भिन्न भिन्न विषयों के पण्डितों में परिभाषा के काम में मुझे महायत्न लेनी थी। यदि वह अपने काम का जल्दी और सुंदर रूप में छपा देखें, तो और भी उत्साह के साथ सहयोग देंगे। टडनजी न पटल बाबू का माना टाइप मशीन खरीदने के लिए कह रहा था। छठे छमाह का याद आता, तो वह पूछ दन। पटल बाबू कहते—“बाबूजी बहुत कुछ ही गया है।” मैं इससे असंतुष्ट था। उस समय माना टाइप मशीन का मिलना जाना नहीं था यह ठीक है और यह भी कि चारबाजारी से ही काम जल्दी बन सकता था। पर मैं समझता था, यदि कोशिश की जाए, तो सम्मेलन जैसी समस्या के लिए उसका मिलना मुश्किल नहीं होगा। ऐसा ही हुआ भी। मैंने कलकत्ता की अपनी एक यात्रा में बातचीत की। मर तरण मिश्र श्री परमानंद पाट्टार न कम्पनी के एजेंट से बातचीत की। किसी के लिए खाइ हुई मशीन को कुछ गतें पूरी नहीं हो रही थी एजेंट ने उस मशीन का दावा स्वीकार कर लिया। मैंने सम्मेलन और राष्ट्रभाषा प्रचार समिति दोनों का लिखा तुरंत काम देकर मशीन उठा लाएँ। दोनों ही तुरंत तैयार हुए। मशीन सम्मेलन में चली आई। मैं समझन लगा हमारे परिभाषा के काम में बहुत जल्दी होगा, लेकिन आपत्ती बात मना पाड़े ही हुआ करती है।

श्री विद्वानिवास मिश्र बड़ी तत्परता से काम कर रहे थे उनका ध्यान तथा स्मरण कि हमारे काम के लिए बहुत ही उपयोगी सिद्ध हुई। किन्तु बीच-बीच में उनका मन उचट जाता था बहुत लेबर काम करने पर जब कोई टीका टिप्पणी कर देता तो वह विरक्त हो जाते। फिर समय बुरा कर टीका करता। इस समय मविधान सभा में राष्ट्र-भाषा हिन्दी का सवाल पैदा था। मौलाना आजाद उसके सख्त विरोधी थे, नहूँ भी उनका समर्थक

थ। राजद्र बाबू रियान मभा क अध्यक्ष थ, और उनम जनता भारतीयता थी कि वह अंग्रेजी का कभा समयन नही कर सरत थे, और जिन्ही के ता वह मन्त्र पक्षपाना रह। अपन बहुव्यस्त जीवन म समय निरालकर वह हिंदी म जिवन भी थ, लकिन गुलकर ता इस विवाह म भाग नही ल सकन थ। मरठार वल्लभभाइ पटेल भी हिन्दी क पत्र म होते, अगर हिंदी और जयजा म एक क चुनना हाता। लकिन सविधान-मभा म हिंदी हिन्दुस्तानी का मवाल छेड दिया गया था और हिन्दुस्तानी क द्वारा उर्दू भाषा लिपि का भी राष्ट्रभाषा बनान का प्रयत्न हा रहा था।

परिभाषा क काम क लिए २१ जनवरी कौ बैठक म १० हजार रुपया खच करन का निश्चय हुआ, जपयुक्त जादमिया का रुपय की बात थी। श्री भावदत्त रामा पञ्जाब विश्वविद्यालय क प्रास्त्री और मम० म० व। विस्वा पिन हाकर आनकल प्रयाग म थ। एम जादमी का नाम पढ़ मिलना चाहिए। यह टटनजा की और मरा भी गय ग। उह परीक्षा रर मुस्तदा और अभिज्ञता देखकर डॉ० मौ स्पय मामिक नन का भी निश्चय कर लिया गया। माचवजी भी समय दन क लिए रह रह थ, लकिन अभी निश्चय नही हा सका था कयाकि वह रडिया की नौनरी म थे। महकमियो का प्राप्त करना सबन जरूरी था। इसा बीच जिन्ही जान की जम्हूत पड गइ। सविधान-मभा क इसा अधिवेशन म राष्ट्रभाषा क शर म तिणय हाा वाला था।

दिल्ली—४ नवम्बर का ६ बज रात की गाणी स श्री नमस्वर उपा ध्याय क साथ मैं दिल्ली क लिए रवाना हुआ। अगल दिन मवने गाडी इलाका क पास जा रहा थी। टुटन म बम्पाटमट क तान सहयात्रा उतर गए और जागरा क उनीठ श्री बनबारालाल चतुर्वेणी तथा दिल्ली क श्री गुरुत्तजा नए सहयात्री बन। भाजन का समय था और मैं था फला हारा। मुमलमान माम बच रहा था मन कुठ दान ले लिए। एक ता मास और दूसर मुमलमान का चतुर्वेणीजी घण्टाकर दूसर बम्पाट म जान के लिए तैयार हा गए। फिर न जान कया स्व गए। मरा नाम वह जानत थे।

फिर ता घुल घुलकर वानें शान लगी। मैं कहा—चतुर्वेदा मधुरा व चीने ता गका व पुरोहित थे, और स्वयं भा अग्निस्तर गव थ। उस समय तो यज्ञ मास का दूसरे मास भा उनकी रमाइ म राज बना करत थ।

२ बड़े गाड़ी दिल्ली पहुँचा। १० श्रीनारायण चतुर्वेदीजी स्टेज पर आए थ। उनक साथ उनके निवास पर गए। पश्चिमी पाकिस्तान स उजड कर आए लाखा गरणार्थी अब भी दिल्ली म बमरोसामान पड़े थे। वस्तुन यदि व पुरुषार्थी न शान और अपनी मन्द थाप करन क लिए तैयार न हात, ता उह और दग को बड़े बुरे दिन दगने पडत। मैं माचता था कि यत्ति वही इतना बड़ी सरया पूर्वी बगाल म आती ता क्या हालत जानी।

उस दिन (५ नवम्बर) गाम का घूमन हुए मध्य एसिया म्यूजियम म गया। इस समय डा० वायुद्वारण अग्रवाल यही थे। डा० अग्रवाल जम सुधाय पुष्प को दिल्ली जपन पाम नहीं रग सकी इसम दिल्ली का ही दाप है। लिल्ली का खुगामदी तरबारी ही पसंद जात हैं, रहा जामसम्मान रखनवाल पण्डित ता कम गुजारा हा सकता है? अग्रवाला भी वहाँ नहीं टिक सक। पीछे डा० माताचंद को भी तल्प-नरवा हुआ, और वह भी बम्बई गैट गए। सपहालय म उस समय थी कृष्णदेवी थे। कृष्णदेवी बिहार गरीफ के रहन वाले थे और पटना म विद्यार्थी रहते समय म ही मेर परिचित थे। तबिन, अब ता उस १२ १४ साल बीत चुके थे। पुरानो पीढ़ी का साला का मूल्य समयता चाटिए और 'घर पाछिनी नाव' की कभा कारिग नरी करना चाटिए। मैं इसक लिए बहुत मावधान रहता हूँ। चाडे दिन हुए एक प्राकमर से पटना म मैंन जब आप करके सम्बाधन किया ता वह कहन लगे—'हमें जापका तुम ही अच्छा लगता है।' पर मैं जानता हूँ कि तुम कहना काल की उन्शा करना है।

उमा शान म कुछ तम्बू पड़े थ जिनम कितन ही पश्चिमी पत्राव स आए हमारे भाई एक बरसात बिना चुक थ। १० भगवद्भक्तजा भी यहाँ थ। उनक पुत्र सामभवा म्यूजियम म काम कर रह थ। कितना ही दर तक उनस जानचीन जानी रही। परिभाषा व काम का आवश्यक्ता का वह सम

झने थे। वह एक अपने मित्र इजीनियर के पास भी ले गए। इजीनियर भाया की विशेष धान्यता न रखने हुए भी इसका समझते थे कि हम अपनी भाया में ही गान विधान को पढ़ना होगा। उन्होंने अपने महकमे के सम्बन्ध की कुछ परिभाषाएँ तय करवाई और इस लालसा में ५० नष्ट का दिखलाना चाहा, कि वह उनके लिए साधुवाद देंगे—किन्तु उमकी उल्टी माड को आगे बढ़ने में कितनी कठिनाइयाँ का सामना करना पड़ेगा यह मामलूम हो रहा था।

६ नवम्बर को सवेरे जौर नाम दोना वक्त श्री घनश्यामसिंह गुप्त में परिभाषाओं के बनाने में सम्मिलित म किन्तु बाना का ख्याल रखना चाहिए, इसके बारे में बात हुई। हम दोना ही एक राय थी परिभाषाएँ परिचित शान्त में बनाई जाएँ और जनसाधारण तक पहुँचें। प्रसिद्ध शान्त का वाय काट न किया जाए। लेकिन गुप्तजी अपने रघुवीरी अनुवाद का बानूनी बारीकियाँ के ख्याल में अधिक उपयुक्त समझते थे। पर, जब फिर म अनुवाद करने का अवसर आया तो उन्होंने उस जाग्रह का छाड दिया।

उसी दिन बौद्ध विहार में जान पर एक भूतपूर्व इजीनियर भिष्णु में भेंट हुई जो दिल्ली के पास क एक गाँव में सहयोगी खेती में सहयोग दे रहे थे वह सरकारी प्रबंध में सतुष्ट नहीं थे। पाँच मी एकड़ साते में रखकर हरेक परिवार का साडे सात एकड़ जमीन दे दी गई। भला दा नाव पर पैर एकड़ में जुड़ेगा फिर साते के खेती की साज-खबर लेगा। याजना तो अस फल होने ही को थी फिर कहा जाएगा, कि यह तरीका भारत की प्रकृति के अनुकूल नहीं। लेकिन अगर हम अपनी भूमि में पूरी मात्रा में जन्म उप जाना है तो साइस का सहारा लेकर ही हा सनता है और साइस का सहारा तभी लिया जा सकता है जब छोटे छोटे कोला का हटाकर विगाड खेत बनाए जाएँ और सब लोग मिलकर काम करें।

७ नवम्बर का रविवार के दिन श्री विद्यागी हरिजा के साथ १० बजे

धूमने के लिए निकल। कुतुब गए। कुछ दमरा सा ही मालम हाता था। गायक इसका कारण दर से आना है। कुतुब के पास के पुराने मंदिर के अवशेष दंगे लोहे गहड़स्तम्भ पर राजा चन्द्र के अभिलेख का पढ़ा, फिर पुरानी दिल्ली में सब्जी मण्डी हान लौटे। अब सब्जी मण्डी में एक भी मुसलमान नहीं है। उनके घर में गणेशजी हिंदू बस गए हैं। पर यह स्थान था जहाँ पिछले साल मुसलमानों ने डटकर मना का मुनाबिला किया था। अगले दिन श्री हरभगवान्जी अपनी पुत्री गायत्री के साथ मिलन आए। ताहीर में बड़ी साथ से उद्धान वृष्णनगर में अपना घर बनाया था। तभी पाइ के मघप के बाद अब कुछ निश्चित सा जीवन बिनाने लग था, इसी वक्त तूफान आया आर नौड उजड़ गया। लड़की बौद्ध धर्म में अनुराग रखती थी, और पालि पढ़ना चाहती थी। मैं दो चार दिन पढ़ा लिया पर इतन से काम थोड़े हो जा सकता था। बौद्ध विहार में भिक्षु पालि के पण्डित थे उनसे सहायता लेने की बात कही।

७ नवम्बर को हिंदी दिवस की सभा हरिजन निवास में हो रही थी। मैं भी गया। सभामें ठक्कर बापा भी आए। ८० वर्ष के तप हुए तपस्वी के दशन से किसका प्रसन्नता न हाती? सबसे अधिक उपीडित और दलित लोगों का उठान में ही इन्होंने अपना सारा जीवन लगा दिया। इज्जतियर थे, दुनिया जिसका सफलता कहती है, उसका रास्ता लिए हान, ता उनका जीवन दूसरा हो जाता। लेकिन, फिर वह ठक्कर बापा नहीं हो सकते थे। उनका समय समीप है, पर बट बालू की लकीर की तरह हगि।

उसी दिन मवा ५ बज गाम का दौड़ा दौड़ी करन माटर से भरठ गए। व्याख्यान दिया, और उसी रात को साडे १२ बज लौट आए। आजकल के नए यानामात के साधना न यात्राआ का कितना आमान कर दिया है। यह ता मोटर थी, विमान स ता और भी दूर का सजता है।

अगले दिन गहर में आवधीर दल द्वारा सगठित सभा में समापति बनकर हम बालना पडा। सभा हिंदी के सम्बन्ध में थी, नहीं ता मुझे वहाँ जाने की जरूरत नहीं रहता। सभा में आने का एक मकामे बहा लभ यह

हुआ कि १८ वष बाद डा० अनतराम भट्ट म मुलाकान हो गई। अगवार म पढवर वह वहाँ जाए। डा० भट्ट से सत्रसे पीछे मुलाकान १९३० म लका मे हुइ थी जब कि मैं उह प्रास्ताहित करके जमनी भेजा था। तब से वह बराबर जमनी म रह और दग क स्वतंत्र हान की बात सुनवर बडे उल्हाह के साथ जमी अभी लौट थे। उनके माहम जोर पान का मैं बहुत प्रामग हूँ चाहता था इसका उपयोग हा। उह जागा थी दिल्ली म उनके याग्य कोई काम मिल जाएगा, दसोलिए वह यहाँ पडे हुए थे। उसी दिन डा० मत्य नारायणसिंह स भी भेंट हा गद। वह वर्गिन म लौटे थे। सोवियत और साम्यवाद स उनकी सहानुभूति बराबर रही लेकिन इपर शायद अपन क्षेत्र म घूमने म बाधा उपस्थित करन क कारण वह सोवियत अधिकारिया से बहुत स्प्ट हो गए थे वसी ही बातें कर रह थ। बुद्धिजीवी अपनी बौद्धिक तराजू से हरेक चीज का तौलना है और बहुजनोय लाभ की बातें भूल जाता है। अगऽ दिन डा० भट्ट म दो तीन घंटे बात हानी रही। इतन ही दिना म वह उत्र गए व और भारत आने के त्रिए पछता रहे थे। वह सम्वृत के विद्वान् थे वमी ही मनावक्ति रखते थे केकिन युराप गए, ता सभी बात म युरोपियन हो गए। वहाँ की व्यवस्था और नियमित जीवन उह बहुत पमद था, यहाँ वह अनियमित-अव्यवस्थित जीवन देख रह थे। वहा हरेक चीज म सफाई और स्वच्छता थी और यहाँ उसका अभाव था। पालियामट भवन की सीढिया और बोना म भी लाग पान की पीव घूमन और सिगरेट क टुकडा को फेंकने से बाज नही आत। भट्ट अपने को पानी स बाहर की मछली सा अनुभव करत थे। उवा जान की सोच रह थ। मैंने वहा परिभाषा का काम यदि पमद हा, ता उमका प्रबच हो सकता है, पर बेतन याग्यतानुमार नही मिल सकता।

१० नवम्बर को हम दिल्ली स प्रयाग चल आए। ट्रेन म इ-दोर मेडि कल कात्रेज म अनाटोमी के अध्यापक डा० सिंह मिले। वह अपन विषय क शब्दा का सप्रह कर दन का तयार थे यद्यपि पीछ थी सनगुप्त न इते स्वय किया, और डा० सिंह की सहायता की जरूरत नही पडा।

राष्ट्रभाषा की जड़ोजहद

प्रमाण—दृषि विनायन-सम्बन्धा परिभाषाओं की हमें आवश्यकता थी। ११ नवम्बर का जब नता क दृषि काण्ड म ध्याप्यान दन का नियमण आया ना में वहाँ बड़ी खुशी स गया। यह अमरिकन मित्रिया की मस्या थी। जध्यापका म कितन ही अमरिकन थे। उहाने पारिभाषिक गद्या क सग्रह म सत्याता दन की इच्छा प्रकट की और पीछे पशुपालन क गदा का दिया भी। लेकिन, हमारी प्रकाशन-सम्बन्धी व्यवस्था इतनी महजह थी कि उनम लाभ नहीं उठा सन।

शृगवेरपुर—१२ नवम्बर को आनापुर जाना पडा। २१ मील माटर स गए। साथ म कई माहितिक मित्र थ। सबसे जधिक यात्रा का प्रणामन था शृगवेरपुर (सिंगरौर) का दयता। १८वा सदी क महावैपाकरण नामक मठ का कुछ रपलिया की सहायता करव कारण दनवाल यहाँ क स्वामी राम का नाम जम विद्वान न अमर कर दिया है— शृगवेरपुराधी गद् राम ता लघजीवक। अब दा सौ वष बाल उम राम क वग का पता लगान पर भी मालूम नहीं हुआ। आनापुर म ४ मील पर गगा क किनार सिंगरौर का विंगाल ध्वमावरोप है। बाल्माकि रामायण म शृगवेरपुर का नाम आया है। उसम नगर की प्राचीनता की तब तक पुष्टि नहीं हा सकना जब तक कि महाँ की वस्तुएँ वहाँ का मागो न दें, और साक्ष्य को यहाँ कमा

नहीं थी। ४ इंच मोटी, १३ इंच चौड़ी और १८ इंच लम्बा इटें बतला रहा था कि मीथकाल जोर उससे पहले भी यहाँ पर नगर मौजूद था। गुग्गुलु की एक पुराने मूर्ति का तादवी के मन्दिरम सिंगीरिस के नाम से पूजा जाता है। गृगवेरपुर को लालबुझक्का न सिंगीरिसीपुर बनाने की कोशिश की है और इसीलिए सिंगीरिस की पत्नी तथा राम की बहिन गाता का मन्दिर खड़ा किया गया है। हा सकता है पास की स्त्री मूर्ति भी गुग्गुलीन है। नीचे गड में एक बूटघारी मूर्ति और मुत्तलिंग (मुखयुक्त गिर्बलिंग) दखा। मूर्ति चागाघारी भी हैं। य दाना मूर्तियाँ चौथी सदी की हा सकती हैं। ११वीं १२वीं शताब्दी की तो यहाँ कई मूर्तियाँ हैं। जान पडता है, मुस्लिम शासनकाल के आरम्भ में यह नगर ध्वस्त किया गया। बहुत पीछे यहाँ राम नामक कोई जागीरदार था जिसे नागा भट का आश्रय मिया। आजकल संस्कृत पाठशाला भी चल रही है। काल उसने अनुकूल हागा या नहीं, यह भविष्य बतलाएगा।

यहा प्रयाग जनपद साहित्य सम्मेलन का प्रथम अधिवेशन हानवाला था। उसीका सभापति बनकर मुझे जाना पडा। काफी आदमी मौजूद थे, और अधिवेशन समाप्त कर सवा ७ बजे चल हम रात का प्रयाग पहुच गए।

सारनाथ—नवम्बर में सारनाथ का वार्षिक उत्सव हुआ करता है। आसपास रहने पर मैं वहाँ जरूर पहुच जाया करता था, जिसमें एक लोभ यह भी था, कि देश विदेश के कितने मित्रों से मुलाकात हो जाती। इसी लिए १३ नवम्बर को सबेरे साढ़े ७ बजे मैं छोटी लाइन से सारनाथ के लिए रवाना हुआ। खेता में रबी की फसल उग रही थी। दो ही महीने पहले बाढ़ के मार हाहाकार मचा हुआ था और अब उसका कोई प्रभाव नहीं मालूम होता था। बनारस में एकान्ती मले से लौटनेवाले यात्रियों की भीड़ बल गड। सिकरोड में ही डबा भर गया था और अलईपुर में तो सड़क बलास में भी तिल रखन की जगह नहीं रही। हम छावनी में ही फस्ट क्लास में बैठ गए यह अच्छा किया। डबा की छता पर भी लाग जा बठे थे लेकिन आगे बड़ी लाइन के पुल से सिर टकरा जाता इसलिए जबदस्ती

उह उत्तरवाधा गया। १ बजे नागनाथ पहुँचे। स्टेशन से सारनाथ घाम बहुत दूर नहीं है, लेकिन मामान के लिए एकका आर कुली मिलन में बरा बर दिक्कत का सामना उठाना पन्ता है। जाकर घमगाणा में ठहर। गाम को बर्मी घमगाणा में कितिमा बाबा से मिलन गए। अब चेहरे पर बुगपा छा चुका था। उनका तरुण चेहरा ही मैं कुछ माग्य पहले देख रहा था। निसिमा बाबा ने अपन गुर महास्यविर चन्द्रमणि (कुणीनारा) का तरह भागत में ही बौद्ध पुनजागरण में अपना सारा जीवन लगा लिया। आजकल बर्मी यात्री कम आ रहे हैं जिसके कारण आर्थिक कठिनाइया भी हा रहा हैं।

सारनाथ में घूमते समय उस पुरख की स्मृति जाए बिना कैसे रह सकता थी जिसने 'बहुजन हिनाय विचरण करन का उपदग दन बहुजन का नारा बुन्द किया था और जिस नागाजुन ने अप्रतिम बुद्ध कहते हुए उनका पना दृष्टि प्रनीत्यसमुत्पाद और मध्यमा प्रतिपद् (मध्यम-मार्ग) की महिमा गाई थी।

आनन्दा भी यहाँ थे और काश्यपजी भी। भिनु जगदीश काश्यप इस समय कुछ भिनुपन में उदासीन हा चले थे और चौबरे की गह वर्गर किनारा के कपडे पहन थे। मैंने उह समयाया—भिनु वप की न छाँके उनके जरिए आप बहुत-सा सांस्कृतिक काम कर सक्ते हैं। क्षणिक आवग था पीछे वह टोत्र हो गए।

१४ नवम्बर का १० गुरुमेवक सिंह उपाध्याय से मेट हुई। गायद यह पहली हा मुलाक़ात थी। वह ७० साल के थे। जब मैं उनके जन्म कस्व निजामाबाद में पढ़ना था, तब वह डिप्टी-कलेक्टर थे और विद्या के कार में निवृत्त लिखने पर मैं और मेरे मायी बराबर उनका उदाहरण दिया करत थे। उपाध्यायजी हरिऔषजी के अनुज हैं। सरकारा मन्त्रा में रहकर इन्होंने बड़ी यास्पता से काम किया था, और कितने ही दिना तक सहकार विभाग का सचालन इनके हाथ में था। जबकाग प्राप्त करके जब वह निजामाबाद में नहीं रहते थे? फिर एम ग्रामा या महाग्रामा के जाग बहन की क्या आगा

हो सकती है ? अविन सस्कृत पुरुष को मासृत्तिक जीवन के साथ-साथ
अपन बच्चा की शिक्षा आदि का भी ख्याल रखना पड़ता है और उसकी
अनुकूलता बनारस जैसे गहर ही म हा सकती है ।

एक गताब्दी से अधिक हा गए जब मे बाघ गया मन्दिर को बौद्धों के
हाथ म आन की उद्दाजहृद गुरू हुई । अंग्रेजी गामनवाल म राजेन्द्र बाबू
की अध्यक्षता म इसने लिए म ममिति भो बनी थी, जिसन सिफारिश की
थी, कि मन्दिर का प्रबन्ध बौद्धों के हाथ हाता चाहिए । दोबानी मामल से
बचने के लिए समिति न बाघ गया व महत को भी प्रबन्ध ममिति मे रखन
की बात कहा थी । अंग्रेज नहीं चाहन थ कि बाघ गया मन्दिर जम एमिया
के बद्ध देगा व बन्द्रीभूत स्थान का इम तरह प्रबन्ध हा । स्मन्त्र भारत म
इस सवाल का फिर उठना स्वाभाविक था लेकिन बिहार सरकार न जो
कानून का मसौदा वेग किया था उसम इम बात का पूरा ध्यान रखा गया
था कि प्रबन्ध ममिति म बौद्धों का प्रभाव अधिक न हान पाए । इसीलिए
नौ सदस्या म से चार को ही बौद्ध रखा चार हिन्दू और एक गया जिल का
क्लकटर यदि वह हिन्दू हा ता । यह मरासर बौद्धों के ऊपर सदेह प्रकट
करन की बात थी । सारनाथ म इमके विरुद्ध प्रस्ताव पाम हुआ और कहा
गया, कि प्रबन्ध समिति म एक दो स अधिक हिन्दू नहीं होने चाहिए, और
उसे सिफ भारतीय बौद्धों के लिए नहीं बल्कि विश्व भर के बौद्धों के लिए
खाल दना चाहिए । यह जानकर प्रमनता हुई कि सारनाथ का महावाधि
स्कूल अब एफ० ए० तक मजूर कर लिया गया था ।

गोरखपुर—गारखपुर आन के लिए श्री विश्वानिवामजी का बहुत
आग्रह था । १५ नवम्बर को साडे १० बजे मैंने उधर जानेवाली गाडी
पकड़ी । अगले दिन दा घंटे लेट हाकर ट्रेन नौ बज गारखपुर पहुँची । बिद्या
निवासजी के पिता श्री प्रसिद्धनारायण मिश्र (बकील) के यहाँ ही ठहरे ।
नीचे लडकिया का एन स्कूल था जिसम किमो का महसूस नहीं हुआ, कि
इने खाइने की भी जरूरत है । गारखपुर आन पर श्री महावीरप्रसाद पाद्दार
से मिल बिना कमे रहा जा सनता था ? एक बडी दु खद घटना हुई थी,

जिनका प्रभाव मेरे हृदय पर भी पड़ा था। उनका ज्येष्ठ पुत्र आनन्द ने आत्महत्या कर ली थी। बड़ा ही होनहार तरुण था। पढ़ने में भी अच्छा रहता, और ऊँचे ऊँचे सपने देखा करता था। एम० ए० कर लिया था। मैं रूम में था, मुझमें कुछ पुस्तिका के बारे में पूछा था। किसी तरुणी में प्रेम था जो अपनी जाति और धर्म की नहीं थी। दाना के मिश्रण में बाधा हुई और दानो ने आत्महत्या का निश्चय कर लिया। आनन्द कर बठा लेकिन तरुणी की हिम्मत नहीं हुई। माता पिता पर कसौ बीती, इसे कहा की आवश्यकता नहीं।

इधर कितने ही सालों में बुद्ध निर्माण स्थान बसया नहीं जा पाया था इसलिए १८ फी ६ वज्र कमया के लिए रवाना हुआ। चंदा बाबा अब ७३ साल के हो गए थे। सबसे पहले १९१६ में उनका दान किया था। बुद्ध हो गए हैं किन्तु अब भी स्वस्थ हैं। बुद्ध स्कूल अब उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बन गया है। उसके लिए इमारत भी पक्की तैयार हो गई है। कुशीनारा में एक और घमणाला और मन्दिर की बद्धि हुई, जिसे विठ्ठला ने बनवाया। छोटी सी प्राइमरी पाठशाला चन्द्रमणि बाबा के नाम से बाधम हुई थी, वह भी अब पक्की हो गई है। बौद्ध मठ की दश और नई इमारत तैयार हो गई थी। पहले से बहुत परिवर्तन मालूम हुआ। गतात्थियो तक विस्मृत गृह्य बुद्ध अब फिर अपनी जन्मभूमि में लौट रहे हैं नई पीढ़ी दिल खालकर उनका स्वागत कर रही है।

१७ और १८ को गारखपुर के कई सस्थाओं में भाषण दिये। सेंट एंड्रयू कालेज की संस्कृत परिषद का उद्घाटन भाषण भी देना पड़ा। ए० गौरीगकर मिथ—देव के पुरान राष्ट्रीय कर्मी—से मिलकर बड़ी प्रमन्नता हुई। अब जीवन की सध्या जा गई है। सत्रमे बड़ा म्वप्न देव की स्वतंत्रता चरिताय हा गया, पर जनता के लिए कुछ नहीं हा रहा है यह जानकर उह रोद हा रहा था।

चाराणसी—१६ को रात की १० वजे की गाड़ी से चन्द्रर अगले दिन साडे ८ वजे बनारस पहुंचा। अब के छ दिन गृह्य यहाँ के प्राक्मारा

से परिभाषा निर्माण में सहाय्य देन की प्रेरणा के लिए आया था। स्टेशन में रिकिंगा करके नवावपुरा में पण्डित जयचन्द्र विद्यालवार के यहाँ पहुँचा। प० जयचन्द्र जी जस इतिहास के गम्भीर पण्डित की आर्थिक स्थिति हमेशा अनिश्चित रही जिसको सबसे अधिक भागना पड़ता उनकी पत्नी मुमित्रा देवी शास्त्रिणी का। लेकिन, चाहे जिस स्थिति में भी हो शास्त्रिणी जी को चिन्तित मैंने कभी नहीं देखा और अतिथि सत्कार के लिए वह मुस्कुराते हुए हर वक्त तैयार रही। जलपान करने के बाद काम पर निकला। भारतीय पानपीठ में 'यायाचाय प० महेन्द्र शास्त्री नहीं हैं। संठा की छाया बड़ी विरल हाती है। रास्ते में वृद्ध प० गिवविनायक मिश्र वृद्ध मिल गए और अपने साथ अपने दासव्य जीपघालया में ले गये जिसे नगवा में उतारने दस भक्त बाबू गिवप्रसाद गुप्त के नाम से खाल रखा है। वृद्ध है लेकिन अब भी उनकी कमठता नहीं गई है। कांग्रेस की गतिविधियों से असंतुष्ट होना स्वाभाविक है। मैंने कहा— निरास होना की जरूरत नहीं। इसे तरुणा पर छोड़ दीजिये। वहाँ से अस्मी पर जगन्नाथ मंदिर में गये। वहाँ मेरे बालमित्र दशरथ पाण्डे के जिनके साथ १९१० या १९११ में दो दिन चार दिन की घुमककड़ी मैंने की थी। उस वक्त आयु १८ साल से ज्यादा नहीं थी और अब मुह में एक भी दाँत नहीं। सार बाल सफ़्त हो गया। जगन्नाथ मंदिर के भीतर नरसिंह का मंदिर है जिसके पुजारी उडिया साधु भी उस समय तरुण थे। अब वह भी पके आम हो चुके थे। यद्यपि दशरथ जी जितने घिस नहीं। दिल में आया चलें अपने विद्यार्थी जीवन की एक स्मरणीय जगह मोतीराम के बगीचे को भी देख जाए। उसकी अवस्था देख कर मन का बहुत खेद हुआ। इसका यह अर्थ नहीं कि मैं मोतीराम के बगीचे में किसी तरह के परिवर्तन को देखना नहीं चाहता था किन्तु जिन तरह का परिवर्तन हुआ था वह बुरा था। बगीचे को खरीदकर सठ गौरी शंकर गायकवाड़ अपने नाम से पाठशाला बनवाने की तयारी कर रहे थे। किनारे की चहारलीवारियाँ प्रायः सभी टूट गई थीं। सबसे अफसोस की — थी कि अपने समय के काफी के महान पण्डित के भी मुस्कृत्य

ब्रह्मचारी मंगनी राम के निवास का बड़ा काइ चिह्न बाकी नहीं रखा गया था। मंगनीराम विद्वान् थे, और वेष्णु की साक्षात् मूर्ति, त्याग के लिए क्या कहना ? इसीलिए पण्डित चक्रवर्ती शिवकुमार गार्गी भी गुणपूर्णिमा के दिन उनकी पूजा करने के लिए आते। उनसे दिवावा छू नहीं गया था। जिस कुटिया में रहते थे वह पहले ही से पक्की बनी हुई थी। दा तरफ काठरिया बीच में दाठान और बाहर चौका सा पक्का चबूतरा—यह नक्का अब भी मेरे मानस-मण्डल पर अंकित है। दा छोट छोट गण्डक टुकड़ा से गरीर ढेक चबूतरे पर टहलते मंगनीराम की मूर्ति में नहीं भूठ सकता। भास्करानन्द बिल्कुल ढागी थे, उनमें विद्या भी वैसी नहीं थी किन्तु नग्न रहने के कारण उन्हें आसमान पर चढ़ाया गया और घाटी हाँ दूर पर उनकी सगमर की समाधि उसी समय बन चुकी थी। यदि किसी ब्रह्मनिष्ठ पुरुष का स्मारक कागी में हाना चाहिए था तो वह मंगनीराम ब्रह्मचारी थे। अगर उनकी कुटिया का मानव हाथा न गिराया नहीं था तो सौ बरस और चल सकती थी। लेकिन, सठ न मंगनाराम की मधुर स्मृति का लुप्त करके स्वयं अमर बनना चाहा यह अक्षमतव्य अपराध है। जहाँ तक मंगनीराम ब्रह्मचारी का सम्बन्ध है उन्हें नाम का बिल्कुल भूख नहीं था। जीवन में भी जानकार लोग ही इस गुदड़ी के लाल का पहचानते थे। मरने के बाद वह किसी तरह की यादगार की आकाशा नहा रख सकते थे। लेकिन वेष्णु की दुहाई देनेवाले किस मज की दवा हैं ?

मर रहेते समय मंगनीराम बगीचे में विद्यार्थिया और सत्यामिया के लिए तीन या चार क्षत्र चलते थे, जिनमें ६० ७० आदमिया का भाजन मिलता था। अब उन क्षेत्रों की इमारतें धराशाया हो चुकी थीं। पन्ने दजन से अधिक विद्यार्थी रहते थे अब किसी का पता नहीं। बगीचे में सैकड़ा नीबू के पेड़ और कुछ बड़े वृक्ष भी थे जिनमें सत्यामिया में भी टण्डक रहनी थी। बीचबीच टिन के नीचे ऊँचा पक्का चबूतरा था वह भी अब नहीं रहा। गकर तरण थे। बिरकन हाकर कागीवास करने के लिए चल जाय थे। पुरानी निगानी के रूप में मिले। अब आँखा से सूझता नहीं था। बहुत याद

दिलान पर वह मुझे पहचान पाया। दो बद्ध सयामी भी वहा थे। स्वामी अद्भुत आश्रम से मैं वानचौत करता रहा। उनका यात्रा है एक दण्डी स्वामी के भतीजे वामाली को एक दूसरा विद्यार्थी बहुरात्र कनी ल गया था। वनमाली मरे ही जिले क रहनवाले थे और बहरान का अवग जिम पर लगाया गया वह मैं ही था। हम दाना म स्नह था। जब मैं कागी स बँरागी साधु बनन क लिए परमा चल गया ता वनमाली का मन भी उचट गया और वह भी परसा पहुच गया। म उस समय दक्षिणी पथ की लम्बी यात्रा पर निकला हुआ था। मेरी अनुपस्थिति म वह वरदराज पास बन गया। कितन ही साला तक वरदराज और मैं कभी माथ और कभी जलग-अलग पर हृदय म एक दूसरे क नजगीर रहत रह। असह्याग का जमाना आया और उस समय पाँच छ वर्षों के लिए मैं छपरा का स्थायी निवास बन गया। किन्तु अब वरदराज वहाँ से गायब हो चुक ५। उनस मिलन की बहुत कागिगी की और आज भी अपन बालमित्र क मिलने की बड़ी लालमा है। गीहाटी ग्राफ़ेस म बहुत पता लगाया। केकिन असफल रहा। सुना था, वह आमास म चले गया और फिर साधु से गहम्य रत गया। जस भी हो मित्र के मिलन की जावाशा थी।

बगोचे की दीवार क सहारे—जहाँ पहले बगोचे का एर दरवाजा था अब भी वह घरीदे सी पक्की कोठरियाँ मौजूद थी जिनमे चक्रपाणि ब्रह्म चारी और कुछ विद्यार्थी रहा करत थे। छत के ऊपर मैं कितनी ही बार पुस्तक धोखाई करता था। उस समय दीवारा क सहार जगह जगह छाती छाटी कुटियाँ बनी हुई थी जिनको दक्कन से प्राचीन आश्रम याद जान ५। लेकिन, आज सत्र लुप्त था। स्वामी जदनाश्रम और उनके माथी दण्डी उस पुराने सत्तार क लुटन से असतुष्ट थ। पर इतना सताप जरूर था, कि सठ ३ उनके खान पीन का प्रबन्ध कर दिया था। दाना इतन बद्ध थे, कि अधिक दिना तक उनक रहन का जागा नहीं थी।

हिंदू विश्वविद्यालय म गया। प्रो० ललित विहार सिंह रघुवागे गली के पक्षपाती नहीं थे, पर साथ ही अन्तर्राष्ट्रीयता के नाम पर अग्रजी परि

भाषाआ क भारी समयक थे । प्रा० फूलदेव सहाय और डा० ब्रजमाहन अपनी परिभाषाएँ चाहन व लकिन डा० रघुवीर की पैली नय गब्दा के बनान का आसान कर दती थी दमलिए उमी तरफ चुके हुए थे । मचमुच ह्यो उमम आसानी थी—उममगों प्रत्यया और घातुओ का गणित के अनु-मार जोड घटाकर अगवा गब्ग का बनाना । लकिन जिनके लिए ये गब्द बनाये जान बाल थ उनको दिक्कता का भी ख्याल करना जरूरी था जिमे समयन क लिए डा० रघुवीर और उनक साथी तयार नकी ये । अमली राम्ना दाना र घोष म था ।

२० नवम्बर का फिर निकले । बगालीटाला, दयास्वमय, कचोती गली मणिकर्णिका, सित्रिया घाट नन्दनमाहु की गरी गोदौलिया सभी अपनो पुरानी जगहा का दमन फिर । फिर विद्यानिवाम जी क साथ हिन्दू विश्व-विद्यालय की आर चले । भिनगा की काठी म प० गुरमचक सिंह उपाध्याय का रहता जानकर उनस भी थडी देर मिल लिया । बद्धा की मन्त्रसे बधी पूजा ह उनम मिलकर कुछ मोठी बातें और पुराना स्मृतिया भुनना तथा मुता दना । विश्वविद्यालय म प्रा० फूलदेव सहाय ने ग्मायन मन्त्रघो प्लास्तिक आदि की परिभाषाआ को ग्ना स्वाकार किया । डा० दयास्वम्प खनिज और घातु-मन्त्र-ग्री परिभाषाआ का भार उठान के लिए तैयार थे । डा० पन्त विमान चालन ग्मन क लिए तैयार थे । डा० राजनाथ भूगभ और घातु ग्मन म सहायता दन का मनद्ध हुए यह मालूम हुआ पर उन समय बह मिल नहा सक । इजीनियरिंग काउज के प्रिन्सिपल मेनागुप्त यत्र ग्मन और बिजली इजीनियरिंग क लिए विद्वाम दिला रह र । डा० घोडवालक बहुत बान-याया हान म विश्वास ता नकी पटना था किंतु आगा थी अपन टबनालाती कालेज से परिभाषाआ का कुछ काम करा देगे । डा० गाडवाल गिगा क लिए कितन हा समय तर जापान और जमनी मे भी रह थे, दमलिए भली प्रकार जानन थ, कि अग्रेजी परिभाषाएँ अन्तराष्ट्रीय नही हैं यदि अन्तराष्ट्रा म जापान और जमनी भी जा सकन है । प्रिन्सिपल मेनागुप्त र बहून माह दिखलाया था । हिन्दू विश्वविद्यालय के

विद्वाना से मिलन पर साफ मातूम हान लगा कि वाम पहल कठिन जरूर होगा किंतु अंत में इस पूरा हान में दिक्कत नग होगी। मैं समझता था कि मैं विद्वाना से गंगा का सग्रह कराना एक मास में सम्पादक विभाग का देखकर अवशिष्ट गंगा के प्रतिगच्छ दना एक मास सम्पादन मंडल द्वारा सगाधन किया जाना टाईप करके दो मास परामर्श के लिए सग्राहक विद्वान और भारत की दूसरी भाषाओं के तज्ज पण्डितों के पास राय के लिए भेजना और अंत में एक मास लगाकर अंतिम सगाधन करके प्रेम के लिए पुस्तक नया कर देना। छपाई में एक मास लगने का रख देन पर कुल आठ मास का काम था। बहुत से विषयों का काम एक साथ चल सकता था इसलिए आठ मास के भीतर कई विषयों की परिभाषाएँ छपकर प्रकाशित हो सकती थीं। मर ह्याल से सारा चार पाँच लाख की परिभाषाओं को बनाने में चार पाँच वर्ष में अधिक नहीं लगते। यदि परिभाषा निर्माण का काम रुक गया होता तो १९५२-५३ तक हिन्दी और भारत की सभी भाषाएँ परिभाषाओं के अभाव से मुक्त हो जातीं। सम्मेलन का भीतरी सगहा उतनी बाधा नहीं पहुँचा सकता था जितना परिभाषाओं के छापने में उबा देनेवाली सुस्ती। किन्तु मुझे से मैं विद्वानों को समय और धन देकर गच्छा के सग्रह के लिए कहना जब कि मैं देख रहा था कि उनके छापने की काई आगा नहीं है।

२१ नवम्बर का डा० मगलदेश गाम्त्री से मिला। उन्होंने भी हमारी यात्रना का पसन्द किया। उस समय कांगा में संस्कृत विश्वविद्यालय बनाने की बात चल रही थी। डा० सम्पूर्णानन्द कांगी में इन कृति और कीर्ति के समयक थे जिसके लिए योजना बनाने के वास्तु डा० मगलदेश का कहा गया था। मुझे था यह चकार का सफेद हाथी मालूम होता था। आखिर हिन्दू विश्वविद्यालय में संस्कृत विभाग है हाँ, उसी को और मजबूत करना चाहिए था और राजकीय संस्कृत कॉलेज का उसी का अंग बना देना चाहिए था। संस्कृत के विद्याविषय की सख्या ता दिन पर दिन कम जाती जा रही थी, फिर हम लख जोड़े नामवाली सस्था में पढ़नेवाले बच्चा में आणेंगे ? यदि सामान्य

मफे हाथी का वाधना ही है और अतः वह बध ना गया है ता यहा सस्कृत की पढाइ म तेम परिवतन करन चाहिए कि बिद्यार्थी ३ मास नही ६ मास पढे, और अपन-अपन विषया की गम्भीरता रखते हुए कुछ ऐसे भी विषय ले जिनस यहा क रनातको का सरकारी नौकरिया म प्रवेश पाने की महापता हा । आज सस्कृत के लिए सबसे बडी समस्या है—कसे उसके गम्भीर पाण्डित्य की रक्षा की जाय । पुरान महाविद्धान महाप्रस्थान करत जा रहे है और उनका रान लेनवाले बहुत कम पय पैदा हो रहे हैं । क्या हम महान क्षति का सस्कृत विश्वविद्यालय राक सकता है ? मरी समन म इसका दूसरा रास्ता ही है ।

उस दिन विश्वविद्यालय म कृपि कालज क प्रिंसिपल लूथरा मे मिले । पुराने युग के नौकरशाह, लाल फीतागाही क अनय भक्त हैं । उहाने मलाह दी, उप कुलपति एक परिपत्र निकाल करके हम लोग के पास भेज दें तो यह काम आसानी स हा सनता है । उप कुलपति प० गोविन्द मालवीय से परिपत्र निकलवाना मुश्किल नही था लेकिन परिपत्र निकालने पर फिर मवाल हागा प्राफेसर लाग इस काम क लिए अपनी ड्यूटी का समय देंगे, और उनके अपन काम का हरज हागा । मैं चाहता था, इस काम को ड्यूटी से अतिरिक्त मानकर किया जाए ।

उम दिन साँठे ६ बजे गाम को हरिश्चन्द्र कालेज म व्याख्यान देना था । व्याख्यान का एक लाभ तो मुझे हाता है तन्हा से मिलन का मौका, जिही के ऊपर दंग का अविष्य निभर है, और दूसरा यह था कि पत्रा म निकल जाने स हितमित्रा का पता लग जाता और उनसे मुलाकात हा जाती ।

२० तारीय को दाँत क दद से हाठ मूज फए थे भाजन की भी मचि थी । काम क लिए मैं थी भगवद्दत्त शमा और थी विद्यानिवामजी को विश्वविद्यालय भेजा । प्रिंसिपल लूथरा म ही भेंट हो मकी, और उन्हाने फिर परिपत्र की बात की । बडे साला सति चन से लाया 'प्रमाणवातिक भाष्य' कई दरवाजे घूमकर ना कीडा का मय्य हान क लिए रखा हुआ था । आवाय महेन्द्र गारुत्री का जागा थी गायद पानपीठ उसे छाप दे । ब ले

अध्यापक प० सीताराम श्रानिम उहा के गिप्य थ । निजामाबाद म जीर भी गिशा बढी परन्तु उसमे निजामाबाद का वाई फायदा नही हुआ । गिशा प्राप्त कर जीविका के लिए लागा का बाहर जाना पडा जीर वट किसी बडे गहर म जाकर बस गए ।

विश्वविद्यालय म इजीनियरिंग कालज के प्रिंसिपल श्री मेनगुप्त न बुलाया था । उनसे और बातचीत हुई और विजली तथा यात्रिक इजा नियरिंग की परिभाषाआ का उह देना स्वीकार किया । भिक्षु जगन्नाथ वाश्यप उस समय विश्वविद्यालय म ही पालि पना रह थ । उहान परि भाषा का काम चुस्ती स हो इसका देखभाउवा जिम्मा अपन ऊपर लिया । सब मिलाकर बनारस की यह यात्रा बडी उत्साहवधक रही । मन्त्रि पीछे गाडी आगे नही बडी ता इसका दाप उनके ऊपर नही था ।

विद्यानिवामजी को कल आने क लिए छाड प० भगवद्दत्त गर्मा क साथ रात को मैं प्रयाग के लिए रवाना हो गया ।

प्रयाग—आते ही इन्कम-टेक्स जफमर का हुकुम मिला । विदेग म रहने समय मेरी आय का ब्यौरा मांगा था । भुझे लेनिनग्राद क प्राफेसर क तौर पर साडे चार हजार रुबल मासिक मिलता था । यदि सरकारी विनि-मय का लिया जाता ता दा हजार रुपय से यह अधिक होता था । पर वहाँ की चीजा क मूल्य को देखा जाए ता कितनी ही चीजें यहाँ स बीस-तीस गुनी महंगी थी । किस तरह हिसाब किया जाए ? विदेग म अपनी अमिन्नी क लिए यदि देग की दा-चार साल की आमदनी को इन्कम-टेक्स म दे लिया जाए ता इसका अर्थ है भूखे मरना । इन्कम-टेक्स का यह थगडा कई साल म तय हुआ ।

हिंदी के छाटे टाइपा के प्रयोग म सबसे बडी दिक्कत थी उसकी ऊपर नीचे की पाइपा जिसके कारण हमारे अक्षरों का आकार दूना हानि पर भा मोटाई आधी हाता है । मैंन उसके बारे म कुछ सावा था, इमे मैं बनला आया हूँ । कलाग टाइप फाउंडी क मालिक न अपने मिस्त्री मुल्तान स एसे टाइप का बनवाना स्वीकार किया जिसम मानाएँ ऊपर नीचे न हाकर

आगे पीछे हा। अन मे यह टाडप बनार नैयार भौ हुआ लेकिन वह काम भ नही आया।

२८ नवम्बर का प्रयाग म सरदार बल्लभभाद पटल क आगमन की घूम थी। बल्लभभाई काप्रेस आन्दोलन म बडे मनानी व, गा-चीजी का उन पर वसीम विश्वास था। भारत के स्वतंत्र हान पर रियासता क पगडे मिटान म उहने बडी दडता का परिचय दिया था और हैरावाद की समस्या का हल करता उही का काम था। लेकिन वह धैर्यगही क समयक और हर तरह क प्रगतिगील विचारो का बठारना स दमन करन क पक्षपाती थे। वह आज क भारत की समस्याआ का न समझ पान थे न उसके मुलज्ञान की हिम्मत रखत थ। सारे भारत म प्रगतिगील विचार धारा का प्रभाव ता नही है इसलिए काप्रेसी नेता और वगीगाह उनके स्वागत म अपनी पलकों का विछान क लिए तैयार थ। पटल क रहत नहरू सिफ उनक गड्यथ थ। पटल स्वय वक्ता नही थे, इसलिए उह एम व्यक्ति की जरूरत थी।

मामूली-सी बात म कमे दान का बतगड बन जाना है, टमका उगह रण २६ नवम्बर की एक घटना है। श्रीनिवासजा क छोट लडक नीलू का नौकर घुमान ले गया। उस बक्त प्रयाग म हल्ला मचा हुआ था, कि गहर मे लकटसुधवा घूम रह हैं, जा लकड़ी सुधाकर बहाग वरके बच्चा का उछा ले जाते हैं। किसी न नौकर के साथ नीलू का जाने नहीं दया था। हल्ला मच गया। लाग इधर उधर बतहासा दोटान लग। अंत मे जब नौकर के साथ नीलू सही-सलामत धाया ता लागी की जान म जान भाई।

बानपुर—में परिभाषाकी घुन म था। उनारस के बाद बानपुर क विभाषा मे स मदद लेन क लिए २६ नवम्बर का कापुर पहुँचा और प्रो० बालमुकु सुज के पाम टहरा। अगले दिन उनरे और थी ललिनमाहन अवस्थी क साथ श्रुति कालज पहुँचा। प्रो० मरणा हिती परिभाषाआ के महत्व को समझा क लिए तयार नहीं थ, और समझाने पर भी निराशा-वाद की बातें करत रहे। लेकिन डा० जयनारायण मिह काय करन के

लिण तयार थे । चम स्कूल क प्रधानाध्यापक न भी अपने विषय की परिभाषा का देना स्वीकार किया । परिभाषाओं का टाइप करके उसकी कई कॉपियाँ की जावश्यकता थी ताकि भारत के भिन्न भिन्न प्रांतों क विभाषणा क पास उनका भेजा जा सक । इसके लिए डुप्लिकेटर मशीन क लिए बातचीत चल रही थी । यहाँ वह सँयार मिली और मैंने २६०० रुपये में सम्मलन के लिए उस खरिदवा दिया ।

१ दिसम्बर को टेक्सटाइल (वयन) इन्स्टीट्यूट में गया । वहाँ के तीन अध्यापक—अग्निहाजी वल्ला और चक्रवर्ती ने वयन सम्बन्धी परिभाषा का देना जिम्मा लिया और यह भी कहा कि जनवरी क अन्त तक हम इस काम का पूरा कर देंगे । वस्तुतः जिस विद्वान् में हम मिलते, वह परिभाषा क महत्त्व को समझना और हम सहायता देने क लिए बटिबद्ध हो जाता । मैं जानता था यह प्रेम की बेगार है । विद्वाना का अपने निजी समय का इमक लिए अर्पित करना पड़ेगा । हारकोट बटलर टेक्नोलाजिकल इन्स्टीट्यूट में चीनी और तेल सम्बन्धी परिभाषाओं का काम श्री श्रीशचन्द्र कौशल क निरीक्षण में हान लगा । कौशलजी टेक्नालोजी क बी० एस सा० थे, यद्यपि उद्दान जीविका के लिए इन्वम टेक्स क मुकद्दमा की पैरवी का काम ल लिया, और उसमें सफलता प्राप्त करते-करते एल एल० बा० हाकर क्वील भी बन गए । वह उन पुरपा में थ जा परिभाषाओं क धारे में सबसे अधिक तत्पर और उनकी तयारी क लिए अघोर थ ।

और दिन भी व्याख्यान देते पड़े थ किन्तु २ दिसम्बर को ता व्याख्यानो का ताता लग गया । मारवाडी काया विद्यालय में ११ वजे व्याख्यान दिया, फिर संस्कृत महाविद्यालय गुरुसहाय खमी स्कूल और नाइस्ट चच स्कूल में भाषण देकर श्री कलाशचन्द्र कपूर के यहाँ भाजन किया । थमजीवी पत्रकार सध और प्रताप कार्यालय में भी बालना पडा । गाम को कलाश बाबू के यहाँ भाजन करते भी एक गांठी हा गई ।

३ तारीख का ज्यान्ततर जहाँ नहीं घूमने का काम हुआ । गंगा क किनारे सतापाट पर गए, जहाँ अग्नेज स्त्री बच्चा का हत्याकाण्ड हुआ था ।

मंदिर १८५७ में भी वहाँ मौजूद था। फिर कम्पनी बाग में उस कुएँ को देखा जिमके भीतर सैकड़ों अंग्रेज नर-नारिया को मरा या अघमरा करके डाल दिया गया बनलाया जाना है, और जिसे पत्थर के अच्छे स्मारक का रूप दे दिया गया था। इस कुएँ का १६ अगस्त १९४७ से पहल भारतीयों का दखन क लिए नहीं खोला गया था। अब खुला था, और स्मारक की इमारत मौजूद थी।

उस दिन का प्रानराग और मध्याह्न भाजन श्री पुरुषोत्तम कपूर के यहाँ हुआ। इधर मैं विवाह प्रथा और उनके गीता को जमा करन क लिए कई महिलाओं से कहा था। पुरुषोत्तमजी की घमपत्नी विमलाजी से भी मैं नज कर देना चाहा कहत रहा, दस में से एक काई ता उनक लिए तैयार हो जाएगा। विमलाजी ने उत्तर प्रदेश में पीड़िया से आ बसे पजाबी" खत्रिया का विवाह प्रथा और गीता को जमा भी कर दिया पर वह अघूरा रहन से प्रकाशित नहीं हो सका। एक दर्जन महिलाओं में से सिफ एक डा० किरणकुमारी गुप्ता ही एमी निकली जिन्होंने 'कदीमी अग्रवाल' विवाह प्रथा पर एक सुंदर पुस्तक लिखकर प्रकाशित करवाई।

दिल्ली—उसी दिन सांठे १० बज करकता मेल पकटकर ६ बने दिल्ली पहुँचा। अब कितन ही समय क लिए दिल्ली में मेरी टिकान थी चंद्रगुप्त विद्यालंकार के यहाँ हाथी थी। दिल्ली में विद्यालंकार की पत्नी श्रीमती स्वणलता और दूसरे तन्मय-नरणिषा न मिलकर एक नाट्य मण्डली स्थापित की थी यह स्तुत्य प्रयत्न था। कानपुर में मैं मित्रा से कहता रहा, कि १३ १४ लाख आवादी की इस महानगरी में हिन्दी का रगमच न होना खटकता है।

४ दिसम्बर का इम्पोरियल कृषि अनुसन्धान दखन गया। पहल यह सम्मया पूगा (मुजफ्फरपुर) में थी। जब भूकम्प से वहाँ की इमारतें ध्वस्त हो गई, ता उन यहाँ लाया गया। डा० उपानाथ चटर्जी और श्री बाबूराम पालिवाल में परिभाषा का क मद्रह के बार में बानचान हुई और दाना न काम करन की र्शि प्रकट की। बहुत दिना बाद ५ दिसम्बर का १० ईश्वर

चन्द्रजी से भेंट हुई। गायद १९१६ था जबकि ईश्वरचन्द्रजी बनारस में पढ़ते थे और कितने ही दिना तक मैं उनका अतिथि था। वह सस्वृत वे, विनोदकर मीमांसा आदि दाना के गम्भीर विद्वान् हैं। जाजबल अपन पुत्रा के साथ दिल्ली में रहते थे। मैंने चाहा, कि वह भी परिभाषा के काम में आ जाए लेकिन पुत्रा का छोड़कर वह यहाँ से नहीं जा सकने थे। प्रयाग में कोई ऐसा प्रवचन नहीं किया जा सकता था। गंगादत्त गान्धी मिले। उन्होंने काम करने और चलान की इच्छा प्रकट की। डा० सत्यनाम भारद्वाज दिल्ली में काम नाक और कठकी बीमारियाँ के विनोदन साथ ही हिन्दी के प्रेमी हैं। अपनी बड़ी हुई प्रेक्टिस में से समय निकालना बड़ा मुश्किल था लेकिन उन्होंने अपने विषय की परिभाषा पर सालों काम किया पर उसका उपयोग नहीं लिया जा सका।

५ तारीख इतवार के दिन चन्द्रगुप्तजी के यहाँ ही साहित्य गाँधी हुई। यह चलती फिरती गाँधी मुख बहुत पसंद आई। गाँधी में जनद्वी, नवीन श्री सियारामारण गुप्त अनेक और उनके मन्त्रकवि ज्ञान आदि आए थे। कवियाँ ने अपनी कविता सुनाई दूसरों ने भाषण दिये और कुछ वार्तालाप हुए। राजद्वेषक तरुण मद्रासी थे जो अंग्रेजों में ही लिखते हैं। वह भी बोले। किसी भी तरुण का अपनी भाषा छोड़कर पराई भाषा में लिखने का प्रयत्न करना मैं अच्छा नहीं समझता। यदि प्रतिभा है तो अपने साहित्य में उस स्थान मिलगा। अंग्रेजों में जब माइकल मधुमदन दत्त, सराजिनी नायडू तारदत्त को नहीं पूछा गया तो दूसरा का कौन पूछना है ?

इधर कितने ही दिना से दिमाग में खिचड़ी सी पक रही थी, और आज की राजनीति पुस्तक द्वारा देश की समस्याओं को रखना चाहता था। इसी समय उसको भी सामग्री जमा करने और अगले साल गमिया में उस लिखन की साधन मंगा। हमारी सरकार कितनी सुस्त और गतिशून्य है इस देखकर कुपन होती थी। मैं पानिस्तान भाग गए मुसलमानों की सख्खा माटर दिल्ली ही में एक जगह रखी हुई थी। सारी बरसात और सारी गर्मी उन्होंने यही देखी। उनका कौड़ी के तीन हान में क्या दर थी ?

क्या उनका नीलाम कर रुपया जमा नहीं किया जा सकता था इससे उनका उपयोग भी होता, और पीछे दावेदार को रुपया मिल जाता। क्या उनका नाश राष्ट्र की सम्पत्ति का नाश नहीं था ? नौकरगाही सचमुच काठ की मंगीत है उससे क्या आशा हा सकती है।

उम समय अपनी लिखी हुई पुस्तका के प्रकाशित होने म देर देखकर मन म आने लगा कि पुस्तका का पत्रिका के रूप म प्रकाशित करें। पत्रिका क रूप मे ता नहीं पर तीन पुस्तको को प्रकाशित करके प्रकाशन का भी बडवा भीठा तजर्बा पीछे कर लिया। मुझे तो यही लगा कि लेखक को इसम नहीं पटना चाहिए। यह एक स्वतंत्र व्यवसाय है, जो पूजी क साथ-साथ आत्मो का पूरा समय लेना चाहता है।

६ दिसम्बर को पुराने सेक्रेटेरियट म पब्लिकेशन डिवीजन देखन गए, जहाँ स 'जाबकल' "विश्व दान" तथा दूमरी और भी कितनी ही पत्र-पत्रिकाएँ निकला करती हैं। युद्ध के समय अंग्रेजा ने ही इस विभाग की स्थापना की थी, जिसका ध्येय था पत्रिकाआ-पुस्तिकाआ द्वारा प्रचार करना। उस समय भारतीय ही नहीं रूसी और चीनी भाषाआ म भी पत्रिकाएँ निकला करती था। प्रेस म अब भी रूसी और चीनी टाइप थे। मरे मित्रा ने रूसी स्वयं शिक्षक लिखन के लिए कई बार कहा था, जिमके लिए बडो दिक्कत थी रूसी टाइप का न मिलना। यहाँ रूसी टाइप थे पर उनका काई उपयाग नहीं हा रहा था और न कम्पाजिटर मिलने वाला था। नायद ही वह बाहर की पुस्तक को छापना पसंद करत।

वहा मे हरिजन निवास म राष्ट्रभाषा समिति की बठक म पहुँचे। एक वार तो उलटी दिगा की बस पकड ली, और दो मोल जाने पर जब पता लगा ता उम छाडकर दूमरी बस पकडी, जा बिगडकर कुछ दर के लिए खडी हो गई। चली भी ता उससे घुर्झा निकलन लगा। आग का डर था गर दूमरी बस पकडकर हरिजन निवास पहुँचे। राष्ट्रभाषा समिति का सालाना बजट अब पाँच लाख का था। डेढ लाख अब के साल मवाना पर और ३५ हजार प्रेस पर खच करना था। प्रान्तीय समितिया का भी हजार

रूपसे सहायता न दे दो थे। राष्ट्रभाषा हिंदी की हमारे देश का आवश्यकता है इसका ज्वलंत प्रमाण यह बजट था। उसी दिन डा० मानीचंद ने पश्चिम भारत चित्रकला के विषय में मैजिक लाइट्स पर सारगर्भित व्याख्यान सिधिया भवन के पास एक स्थान में दिया। मैं उसका सभापति था जिसके कारण जतन में मुझे बाल्ता पना।

७ दिसम्बर का १० भगवद्दत्तजी मुझ भारत सरकार के सिचन विभाग के प्रमुख इंजीनियर मोसला माह्य के यहाँ गए। रास्ते में उन्होंने कहा कि बल नेहरूजी इनके यहाँ आए थे, इन लोगों ने जब अपने हिंदी परिभाषा निर्माण के नमूना को दिखलाया तो हम अनधिकार चपटा रखकर उठोने बहुत पत्रकारों और अंग्रेजी रखने पर ही आर दिया। बचारा का उत्साह सारा ठण्डा हो गया। मासराजी मिल पर अब बल ही घडा पडे पानी का असर द्रतनी जदी के म दूर हा मकता है ?

मुझे दिल्ली का वायुमंडल दमघाट्ट-सा जान पड़ता था। वहाँ के इन्दा आश्रित्यता की हर हरजत से नफरत होती थी। ईसाई न हान साडो घानी में भी एग्ला दुडियन मनावस्ति के लाग पना हा मकत है, यह इनके देखने से मालूम हाता है। अधिकतर ता घल्कि धोती पर नाक भी मिक्वात्त और कोट पैट, टाई-बालर लगाकर पूरे साहेब बनन का स्वाग रचन हैं। लिफाफा अधिक रखना तरक्की के लिए और रात्र रात्र के लिए भी आवश्यक था। इसी कारण आय से अधिक व्यय करना पड़ता था जिसके लिए मननेन प्रनारेण धन कमान की कागिग करते हैं। फिर इस वग में आचारिक पनन घोखाघडी व्यभिचार जागि क्या न फँले ? इन इन्दा आश्रित्यता की जड न जनता में है, न इतिहास में इनके लिए स्थान है। भारतीय संस्कृति का नाम समय असमय ले लेना यह जरूरी समझत है। इन्हें अंग्रेजी चाहिए हिंदी या दूसरी प्रादेशिक भाषा नहीं। ये अंग्रेजी के कृपमडूक है। इन्हें अंग्रेजी से बाहर की विशाल दुनिया का कोई पना नहीं। अंग्रेजी राज्य में इनका प्रेम है अंग्रेजी रीति रिवाज का ये मर्वोत्कृष्ट मानते हैं। ब्रिटिश विराधिया के ये विरोधी है, अंग्रेजी के जान का इन्हें बहुत सेद है। अंग्रेजी

पढ़ने में दस पाँच साल लगाने के लिए तयार हैं लेकिन हिंदी साहित्य को बिना पढ़े ही जानना चाहते हैं। भारतीय जनता से य उसी तरह भयभीत हैं जैसे कि अंग्रेज थे। इन्हें भारतीय हित की कोई परवाह नहीं। इस सारे बग को नेहरू का संरक्षण मिला हुआ है, इसलिए इन्हें दूसरे की क्या परवाह हो सकती है ?

उसी दिन डा० अनंतराम भट्ट से मुलाकात हुई। अभी तक सफल नहीं हुए। किसी सरकारी नौकरी की तलाश में थे। लेकिन सरकार में योग्यता की थोड़ी जरूरत है, वहाँ तो सिफारिश चाहिए। अब भी निराश नहीं हुए थे। मैं भी चाहता था कि यदि दिल्ली में उन्हें काम मिल जाय तो वह उनके लिए अच्छा होगा। यहाँ रहते वह हमारे परिभाषा के काम में भी सहायता कर सकते थे। जिस हाटल में रह रहे थे, उसका मातृसी बज हा गया था, जिसके लिए चिंतित थे।

कृषि प्रतिष्ठान में उस दिन फिर गए। इटोमोलोजिस्ट सत्यसाधन मुखोपाध्याय और मकालाजिस्ट श्री राय चौधरी ने बहुत अच्छी तरह बातचीत की, किंतु परिभाषा के निर्माण में उनकी विशेष रूचि नहीं थी। हा उन्होंने बतलाया, कि अमरिका में छोटे परिभाषाओं के विशेष गणकोश मौजूद हैं। हमारा काम उससे कुछ हो सकता था, पर हम अपनी परिभाषाओं की कसौटी विशेषज्ञ विद्वानों को बनाना चाहते थे।

भैरठ—अपनी साहित्य सम्मेलन भरठ में हो रहा था जिसके सभापति सेठ गाविंद दास हुए थे। मरा काय काल बीत रहा था। ७ तारीख का माटर से चलकर हम ६ बजे शाम का प्रा० धर्मेश्वर शास्त्री के यहाँ पहुँचे जहाँ हम ठहरना था।

८ दिसम्बर को सबेरे गढ़मुक्तेश्वरवाली सड़क के ऊपर टपलने निकले। सड़क पर बड़े पैचनवाले गहर की आर जा रहे थे। उनकी बातचीत में गौर से सुनना लगा। हिन्दी व्याख्यान इन्हीं की भाषा है। जमुना के दाना तरफ फँसे हुए और कुदजागल देग की वह जनभाषा है इसलिए बीरवी भाषा की जिनामा उठनी स्वाभाविक थी। नितन ही समय में मोचता था,

प्रमचन्द का कुह देग म पदा हाना चाहिए था, ताकि वह अपनी अन्तमोल कृतिमा द्वारा बोल-बाल को हिन्दी बँसा हानी ह। इस नमूने पेश करत। उपलेवाले एक दूसरे स बात कर रत थ। मैंने पूछा— 'घर से उपल ला रह हा?' जवाब मिला— 'नहीं जी माल के अत हैं। पीछे रडकी म भूमिया खडा में बटे एक दम बप का लडवा क्या करत हो' पूछन पर बाबा— 'खवाडी कर।' और दूसरा लटवा अपन बाप स बोल रहा था— 'साक्के जाना।

कौरवी बाली बड़ी मधुर और लचकीली है। यह जानकर अफमास होता था कि जहाँ और भापाया क हजारों गीत और कहानियाँ जमा करके प्रकाशित कर दो गई हैं वहाँ कौरवी क बारे म कौरव भी उदासीन है।

उस दिन कुमार आश्रम म भा गये। पहले वह किराये क बगीचे म था जब कि मर मित्र श्री बलदेव चौम न उमे स्थापित किया था अब वह अपनी भूमि म है, और उसम कालेजा तथा खूलो म पलनवाल ३० ३२ हरिजन विद्यार्थी रहते है।

३ बजे (८ दिमम्बर) स्थायी समिति की बैठक हुई। बहुत बुरा लगा, जब देखा कि मम्मलन नियमावली के सगावन क काम का टडनजी ने फिर खटाइ म डलवा दिया। अब अगले अधिवेशन तक सगोरन हाना रहेगा। लेकिन १९४६ म भा यही डोलम-डाल तरीका रहेगा इसम स देह नगी। सभी कामा म डील हो जाता है अगर सस्या के रिभी एक काम म लील पडती है। परिभाषा क काम मे दिलोजान स पडा था लेकिन अब हिचकिचाने लगा था कि इसे जाग बगार्ये या नही। जिन विद्वाना स मैं परिभाषा-मग्रह का काम करले क लिए कह रहा था जागिर उनका भी ख्याल हाना भरे लिए जरूरी था। सत्याग्रह क जमान म टडनजी का नाम लगा न क फूजनदास रख दिया था। सचमुच ही किसी बात क बारे म यह समय पर निणय नही कर सकते। स्थायी समिति विषय निर्वाचिणा समिति क रूप म बदलकर रात्र क साँ ८ बज बठी। प० बालकृष्ण 'गमा नवीन' ने प्रस्ताव रखा कि हमारे विश्वविद्यालया की शिक्षा का माध्यम हिन्दी हानी चाहिए। यह

बड़ा अदूरदर्शितापूर्ण प्रस्ताव था। हिंदी वाल अपन घर म बठे नही समझ पात कि दूसरे प्रदेशा की भाषा वाल लाग़ा का अपनी भाषा के साथ बैसा ही घनिष्ट प्रेम है, जैसा हमारा हिंदी क साथ। ब्रह्मजी भी उसी बाढ़ म बह गए, टडनजी वाल नही लेकिन मन ही मन आशीर्वाद द रह थ। ये लाग़ ममयत थे कि हिंदी इस प्रकार दग के केद्रीकरण का भारी साधन हा जाणगा। लेकिन क्या कोई बंगाली कल्कत्ता विश्वविद्यालय म बंगला निकालकर हिंदी का बैठान के लिए तैयार होगा? उत्कल विश्वविद्यालय म उडिया नही हिंदी क माध्यम बनन को क्या कोई उडियाभाषी पसंद करेगा। तमिल, तलगू, मलयालम, कन्नड, मराठी आदि क क्षेत्रा म भी ऐसे किसी काम का धार विराध हागा अगाति मच जाएगी। इस सबसे हिंदी का ही जनिष्ट हागा, लाग़ हिंदी क गानु बन जाएग। मैंन यही बातें कहत हुए प्रस्ताव का भारी विराध किया। किंतु वहा स बह पास हा गया।

१२ दिसम्बर तक सम्मेलन का अधिवेशन चलता रहा। टडनजी सम्मेलन क सस्थापक और प्राण हैं किंतु उसके भीतर कमजोरिया के आन का कारण भी उनकी दीघसूत्रता ही रही है। यदि पहले ही अनुकूल परिस्थिति म नइ नियमावली बनकर सम्मेलन का नय तरह स सगठन हो गया हाता तो गायन उम बह दिन दमन नही पडत जा आज देखन पड रह हैं। खुले अधिवेशन म जब विश्वविद्यालया क हिंदी माध्यम हान का प्रस्ताव आया ता मैंन उसका बडा विराध किया, और अन्त म प्रस्ताव का लौटा लिया गया। यदि प्रस्ताव पास हा जाता ता मुझे उसी समय परिभाषा के काम स हट जाना पडता, क्योंकि अहिंदीभाषिया से मैं कैसे सहायग के लिए बन्न सकता था?

मरठ-सम्मेलन म भाजन का बडी सुन्दर व्यवस्था थी। सारा काम मित्रया ने अपन हाथ म ले रखा था। भाजन के प्रबन्धको देखकर ता अनियि प्रणमा करत नही शकत थे। सभी चीजें कायदे के साथ समय पर मिल जाता थी। मरठ कमिश्नरी युक्त प्रात म आय समाज का गड थी। यहाँ सबसे पहल और सबसे ज्यादा आय समाज का प्रचार हुआ थी जिसक

कारण स्त्रियां में शिक्षा बनी। आय भाषा तब सीमित स्तुनवाली महिलाओं की लडाकियाँ हाई स्कूल तक पहुँची और पानियाँ काग्रेस में चली गई। आज की तरफ़ा अपनी दादियाँ से बहुत आगे हैं आधुनिक रूप में दिखाई पड़ती हैं। उनकी माताओं ने काग्रेस में भाग लिया और जनता के नस्ल की शिक्षा प्राप्त की। सम्मेलन के मण्डप का तिहाई भाग स्त्रियाँ से भरा रहता था।

वर्ष के प्रथम मन्त्री प० बलभद्र मिश्र चुन गए जिनके लिए मैं भी अपना दावा दिया। उसी दिन (१२ दिसम्बर) की रात को कवि सम्मेलन हुआ। पिछली रात के कवि सम्मेलन में कुछ गड़बड़ी हो गई थी इसलिए मुझे आज का सभापति बनाया गया। मैं बिना पहले दली कविता पढ़ने की इजाजत नहीं दी। शान्तिपूर्वक सम्मेलन होकर ११ १२ बजे रात को समाप्त हो गया। 'जबल और मुकुल' की कविताएँ बहुत पसन्द की गई। सभापति को ही श्रय नहीं मिलना चाहिए बल्कि जनता का विवेक भी इसमें सहायक हुआ जो जनधिकारों का दुग्धागत करने के लिए तैयार थे।

हड़की—परिभाषा की तलाश में फिर १३ दिसम्बर का मरठ में खाना हुआ। वन पकड़ी। वह मुजफ्फरनगर में कुछ मिनटों के लिए खड़ी हुई। १९१६ या १९१७ में कुछ समय तक मैं मुजफ्फरनगर में रहा था। उस समय वह शहर नहीं एक बम्बाना मात्र ही था। लेकिन तब से अब ३२ वर्ष बीत चुके हैं जिसका जबर उत्तर प्रान्त के किसी शहर या कस्बे पर न पड़े यह नहीं हो सकता था। पश्चिमी पञ्जाब से उजड़कर आए हमारे दंग भाई ने पश्चिमी यू० पी० के सभी शहरों में घूमने लग हैं। मरठ में वह कई हजार हैं देहगढ़ में तो उनकी संख्या ५० हजार से भी ज्यादा है। मुजफ्फरनगर में भी हजारों की संख्या में वन हैं और इसके कारण नगरों की कामाफुट हो गई है। इच्छा तो करती थी कि पुराने परिवर्तन स्थानों की स्मृति फिर नई कर लें लेकिन समय कहाँ था? अपना समय ब्यर्थता से मिलने का सभावना भी नहीं थी।

सवा ११ बजे रुडकी पहुँच गए और ३ बजे वहाँ के इंजीनियरिंग कॉलेज के विद्वाना में मिग्न गए। अत्र ता यह इंजीनियरिंग विश्वविद्यालय है। टामसन इंजीनियरिंग कॉलेज के रूप में इसकी स्थापना १८८७ में— आज में १०१ वर्ष पढ़ा—हुई थी। यहाँ अध्यापक में मरा काई परिचित नहीं था। विद्यार्थियों में वामुदेव पाटे मिल गए। वामुदेव की स्मृति उची दुःखद है। वह पत्न में हमारा तज रहे और अपनी कक्षा में प्रथम हान रहे। इलाहाबाद में एम० एम०-सी० प्रीवियस गायद कर चुकथ किन्तु उसमें अधिक उपयोगिता इंजीनियर की थी, इसलिए वह यहाँ दाखिल हो गए। अपने पिता श्री गणेश पाटे में साहित्य प्रेम उन्हें वरामत में मिला था। परिभाषा के काम उन्होंने बना तत्परता से भाग लेना शुरू किया था। इंजीनियर होना के लिए बड़ी बना उमरों लेकर कायनेत्र में प्रविष्ट हुए लेकिन जीप की दुर्घटना में उनका दहान्त हो गया, और अपनी विद्या तथा योग्यता से देश का कोई उपकार नहीं कर सक। वह भाषाय इंजीनियर नहीं थे, न बसा रहना चाहत थे। आज की स्थिति में योग्य व्यक्तियों को काम करने में कितना अडचन है इसका तजवा उह हो रहा था किन्तु वह निराग नहीं थे।

वामुदेव न हमारी बड़ी महायता की। उनका द्वारा औरा में भी परिचय हुआ। प्रिन्सिपल नृपद्रनाथ चक्रवर्ती से बातचीत हुई। उन्होंने हमारा काम से सहमति प्रकट की। अध्यापक में उनका उत्साहता नहीं देखा लेकिन उम्मीद थी कि कुछ काम देख लेने पर वह भी हाथ बटान के लिए तैयार होंगे। ६ बजे विद्यार्थियों के सामने मुझे बालना पना। मैंने बतलाया कि देश का आर्थिक उद्धार इंजीनियर टकनागियन और माडमवत्ता ही कर सकते हैं, जिनमें भा इंजीनियरिंग की जिम्मेवारी सबसे अधिक है। इस समय वहाँ दा-मौ विद्यार्थी पढ़ रहे थे। मैं समझना था, कि नव निर्माण के लिए हम हजारों नहीं लावा इंजीनियरों की जरूरत होगी जिनका पदा करने में उनकी का सबसे अधिक हाथ बटाना चाहिए। उनकी में दा-मौ नहीं हजार विद्यार्थी आयाती में पढ़ सकते हैं। उनकी प्रयोगशाला और

यत्रगालाभा का और भी अधिक उपयोग किया जा सकता है। क्या नहीं यहाँ तान गिफ्ट में प्याई हा इजीनियरिंग कालेज में भारत जीर प्रयाग गालाए मवम अधिक व्ययमाध्य चीज हैं जिनका तिगुना उपयोग उनर ही खच में हा सता था। पर पीछे जब मुझे बालाबा गया कि इना पास फर्नवाल इजीनियरा सभा कितना को काम नहीं मिलना ता प्रुन घववा लगा, और अपनी बवका का गहनाई पर अफमाम हुआ। हमार यहाँ जब तक सभी आयाजना का गव-दूमरे में सम्बद्ध नहीं हागी तब तक प्रगति की यही स्थिति रहगी वही विपत्ता की जखरन हापो और वही बड़ बजार रहग। जरूरत क अनुसार समय पर उनका तयार नहीं किया जाणगा, और याजनाए टाग पड जाएंगी। रुकी कालेज बडे ही उपयुक्त म्यान पर है यहाँ चार हजार विद्यार्थिया क रहन का म्यान बनाया जा सकता है। पहल किसी समय भारत का यह एकमात्र इजीनियरिंग कालेज था पर अब भारत में प्राय हर बने प्रांत में इजीनियरिंग कालेज खुल गए हैं। यहाँ के विद्यार्थिया में सजस अधिक हिन्दीभाषी थ इसलिए हिन्दी क माध्यम द्वारा उनकी प्याई आसानी में हो सता थी।

जगल दिन (१४ दिमम्बर) का टक्कन क लिए हम गया की महानहर क किनारे किनारे दूर तक गए। उन पुल का भी दवा जिसक नीच सालागी नदा और ऊपर नहर बहती है। बाए महिवड गाँव मिला विचित्र नाम बनला रहा था यह पुराने कुन्देग का गाँव है—महिपवाट या महा वाट अथवा महावट हा सकता है। नाम स आकृष्ट हा आगा हुई कि यहाँ काई पुरानी चीज मिलेगी। लेकिन जितनी अधिक पुगनी चीज है वह उनती ही अधिक पृथरा क नीच हागी। गाँव में मुसलमान भी हैं और हिंदू भी। स्थान राजपूत थ। मुसलमान मिठाई(मली) बना रह थ।

आज कालेज क मयहलाल्य और प्रयागगालाभा का अच्छी तरह देसन का मौका मिला। प्रा० गरते न बनलाया कि अध्यापक चाहिए, जिनक मित्रन में काई त्किवन नहीं। हम एक हजार विद्यार्थिया को यहाँ पडा सकते हैं। हाँ याग्य अध्यापना क मिलन में सुभीता सभी ह गा, जरकि

वेतन का ग्रेड चार सौ सौ रुपया तक कर दिया जाय। वह और प्रो० जयकृष्णजी हमारी सहायता के लिए तैयार थे। उस दिन चाय पार्टी हुई और विद्याधिया ने निव ब और कविताएँ पढ़ी। सभी ग्रेजुएट थे यहाँ की तीन साल की पढाइ म कितन ही अतिम कक्षा म थे। तम्णाम बहुत उत्साह देखा। शाम को डा० हरूप कुलथ्रेष्ठ के यहाँ गए। उनसे कितनी ही धर तक बातचीत हाती रही। उनकी सुशिक्षिता सुपुत्री न कुरथ्रेष्ठा की विवाह प्रथा के बारे म कुछ करने का विश्वास दिलाया था पर काम आगे नही बढ सका।

देहरादून—१५ दिसम्बर को डाक की बस पकटी और देहरादून चले। रुडकी सहारनपुर जिले मे है, जिसकी उत्तरी सीमा पर सिवालिक पहाड है। सिवालिक के उम पार देहरादून शहर और उसका जिला है। सिवालिक सवा लाय समादलन का अपभ्र ग है। यह सवा लाय पहाड हिमालय की जड म ह लकिन आयु म उससे पुरान और प्रकृति म उससे भिन है। यहा वह हिमालय स काफी हटकर है, और दाना पवत श्रेणिया दून (द्राणि) बनाती है, जिमको ही देहरा गहर से जाटकर देहरा दून कहा जाना है। सिवालिक की ऊँचाई बहुत ज्यादा नही है, लेकिन पवत पार तो करना ही पढता है। पहाड को जहा-तहा पार नही किया जा सकता। सहस्राब्दिया स देखन हुए आदमिया न मुगम रास्त निवाल लिए हैं जिनसे हाकर लोग आवा-बाही करते हैं। सिवालिक म भी ऐसे रास्ते हैं। यहाँ का तरह सभी जगह हिमालय और सिवालिक का फामला दून नही बनाता। गंगा और जमुना के बीच इस सिवालिक की काइ चाटी तीन हजार फुट से ऊँची नही है, और ममूरी से देखने पर तो यह सिक्कुल कीडे मकोडे सा मालूम हाता है। गायद इसीलिए पुरान समय म इम कीटागिरि कहत थे। रुडकी और सहारनपुर से आनवाली सटक मोहना ढाडे स सिवालिक को पार करती है। रुडकी से देहरादून २५ मील है। पहाडी म राजा जी के नाम स एक रक्षित प्राणिलण्ड है जिसम जानवर का गिकार करना मना है। किसी समय जब सिवालिक दाना तरफ घन जगला मे ढँका था

ता मर्त हाथी जोर बाध रहा करत थे । पर अब ता बाध ही कभी कभी दिखाई पडन हैं ।

दहरादून म सनिक स्कूल है । यहाँ एस आगा मे आए थे कि सनिक परिभाषा का सग्रह करन के लिए लागे का कह । यह ता भातूम हो था कि यह काम तब तक काई सनिक अपसर अपन हाथ म ले नही सकता जब तक सरकार का ओर स उसकी प्रेरणा न आए । और उसके लिए आजकल के दिल्ली के देवताआ स काई जागा ही नही हा सकती थी । रामराय दरबार म गए । महंत रामदास का नाम बहुत मुन रखा था । अब उनके उत्तराधिकारी महंत श्री इन्द्रेन्द्रदास थे, जा इलाहाबाद विद्व विद्यालय के एम० ए० और श्री विद्यानिवाम मिश्र के सहपाठी रह चुके थे । महंतजी बड़े प्रेम से मिले । अपन मायल जानर मिन्ट्री एकाडमी, फारेस्ट रिसर्च इन्स्टीट्यूट मर्वे जाय इण्डिया के कार्यालया का दिखलाया । एकाडमी म आजकल छुट्टिया थी लेकिन मजर ए० एम० चटर्जी न सनिक परिभाषा का बार म कुछ आगा दिलाई । फारेस्ट रिसर्च इन्स्टीट्यूट म श्री जगदम्बाप्रसाद का नाम बनलाया गया पर वह वहा मौजूद नहा थे । मर्वे म इस बात म किसी को लिखसपी नही थी । ऊपर स हुकुम जाए तो चीटी की चाल से चलन के लिए तयार थे । नाम का प० गया प्रसाद चुकन जोर सतत निहालमिह म मिलने गए पर दानो ही अनुपस्थित थे । दहरादून की यात्रा से कोई काम नहा बना । हाँ आगे देहरादून के साथ जो घनिष्टता बढ़नेवाली थी उसका श्रीगणेश एस समय जरूर हो गया । दहरादून म पहल किराी समय १६ हजार मुसलमान रहते थे, अब दान्तीन हजार भी मुश्किल मे रह गए । कणपुरा सारा मुसलमाना का माहल्ला था जिमम एक या दो बूढ़े बच रह थे । वह भाग नही सकत थे और लागे न भी उन पर दया दिखलाइ इसलिए रह गए । अब कणपुरा पश्चिमात्तर सामा के हिन्दुआ का माहल्ला है, वहाँ पश्चिमी पजाबी बाली जाता है । गरणधिया का सग्या ५० हजार बतलाइ जा रही थी । व्यापार और दूकानें उनके हाथ म थी । पुगने व्यापारिया न अपनी दूकाना का

मुहमांगा दाम मिलत दख लालच म वच दिया, और अब हसरत से दखते हैं। जा बहुत तरह की अच्छी और सस्ती चीजें देने क लिए तैयार हा उस दूकान पर ग्राहक कयो न जाएंगे ?

लखनऊ—१६ दिसम्बर की सवा ५ बजे की गाडी मे दहरादून से चल और अगले दिन सवेरे ७ बजे लखनऊ पहुँच गए। स्टेशन स सीधे महाशयविर बोथानद के पास रिसालदार बाग क बिहार म पहुँचे। बहुत लट गए थे, लेकिन बोलत अब भी थे उसी तरह जीवत के साथ। ऊँत पर पहुँचकर कयो निरागा हो ? मत्यु मे क्या डरा जाए ? मत्यु ता अभाव रूप है जीवन म प्रतिकूल परिस्थिति म डरन का कारण भी हा सक्ता है। लखनऊ मे विगेष कर चिकित्सा-सम्बन्धी परिभाषाजा क लिए मेडिकल कालज के अध्यापको से मिलना था। यहा के काम की जिम्मेवारी श्री पुत्तनलाल विद्यार्थी न लेना स्वीकार किया। वह रिटायर हा चुके थे, और हिंदी प्रेम के कारण कुछ करना चाहते थे। उनके घर पर गये लेकिन विद्यार्थीजी मौजूद नहीं थे। नानिदूर मेडिकल कालज था। वहा डा० मुरशचंद्र कपूर स भेंट हुई। वह कानपुर क श्री कलाश कपूर के मुपुत्र हैं। तरण और उत्साही हैं और परिभाषा के महत्व का भी सम्यत हैं। उनके साथ डा० मालवीय और डा० प्रकाशचंद्र गुप्त से मिले। डा० मुरद्रनाथ गुप्त न सबसे अधिक उत्साह दिखलाया। पीछे मालवीयजा न ता जीव रसायन का काम तैयार करके दिया और वह प्रकाशित भी हा गया। एक डाक्टर मुनन क लिए तैयार नहीं थे कि मेडिकल साइंस की शिक्षा हिंदी माध्यम मे हो। वह खुल्लाकर वाल—कम-से-कम इम साइंस का बरवाद न कीजिय। उनके खयाल से अंग्रेजी छाड डूमरी भाषा म मेडिकल साइंस का पढना उसे बरवाद करना है। लेकिन क्या किया जाए ? दुनिया क बहुत से बडे बडे देश इम बरवादी के बाम म लग हुए हैं। जापान म अँग्रेजी म मेडिकल मादन्म नहीं पनाया जाना रूस, जमनी, फाम इताने भी साइंस का बरवाद करने का उतारू हैं। लखनऊ क मेडिकल कालेज क कई अध्यापक काम करन क लिए तयार

थे, यदि वह कर नहीं सब, तो उसमें सम्मेलन का दोष है, जा उनस काम नहीं ल सवा ।

मडिरल कालेज से फिर विद्यार्थीजी के यहाँ गए और वह हमारी प्रतीक्षा हजरतगज म कर रहे थे । उनसे मुलाक़ात हुई । अग़ते दिन १८ दिसम्बर को सां ८ बजे ही उनके साथ निकले । डा० सुरन्द्रनाथ गुप्त ने डायबेटीज की बात मुत्तर मेरे खून की परीक्षा की, पर उसमें चानी नहीं मिली । उस दिन डा० र० न० मिश्र, डा० यानिक और ७० माथुर म भी मिले । यानिक और माथुर साहब ने अपने विषया की परिभाषा का कर वरो तक पेना स्वीकार कर लिया और तबाजा करन के लिए विद्यार्थीजी वहाँ मौजूद ही थे । लपनऊ के काम से बड़ी प्रगनता हुई ।

उसी दिन रात को ट्रेन पकटकर १६ को सबरे ही प्रयाग पहुँच गए । डा० बदरीनाथ प्रसाद के यहाँ ठहर । अभी उजाला नहीं हुआ था, इसलिए फाटन नहीं खुला था । मुझे बाहर ही कुछ देर प्रतीक्षा करनी पड़ी । प्रयाग में मम्मलन कार्यालय में जाकर काम का देय मुन लेना था । इनवार को छुनी थी लेकिन प० भगवदत्त शर्मा अपने काम म लगे हुए थे । अग़ते दिन प्रधान मंत्री प० बलभद्र मिश्र से मिले और उनमें काम के बारे में बात चीन हुई । अत्र कलवता जाना था ।

कलकत्ता—२० दिसम्बर को दिल्ली मेल को सवा ८ बजे पकटना था । सेकंड क्लास में वहाँ खड़े होने की भी जगह नहीं थी और रात भी बितानी थी । प्रथम श्रेणी का टिकट बदलनाया । साथी मुमाक़िर एक फौजी डाक्टर थे । उनकी बदली हुई थी इसलिए सारे घर के सामान को लगन के तौर पर कम्पाटमेंट में भर लिए जा रहे थे पर उनके कारण हमारे सान में कोई बिघ्न नहीं हुआ । अगल दिन पौन १२ बजे दोपहर का हावडा स्टेशन पर पहुँचे । श्री मोहनसिंह मँगर के साथ ५० विवकानन्द स्ट्रीट के राम भवन में श्री रामस्वर टाटिया के यहाँ जाकर ठहरे । उस दिन कुछ मित्रा से मिलना जुलना भर रहा । अब ३० दिसम्बर तक के लिए यहीं ठहरना था ।

वृत्त दुलभ था लेकिन हम राज सबरे विल के

मैदान में टक्कर के लिए ले जाने वाली बार मिल जाती थी। विक्टोरिया स्मारक और उसके आस-पास चहलकदमी करते थे। एक बप से ऊपर अंग्रेजों को गए हा गए थे, लेकिन उनकी मारी बराबर का टोन व लिए हमारा राष्ट्र बणघार तैयार थे। फाट विलियम का पलामी गट अब भी हमारी पलामी की पराजय को अक्षुण्ण रखे था। मैदान की मूर्तिया उसी तरह अपनी जगहा पर विराजमान थी। दिल्ली के देवताओं का उनमें कोई ग्लानि नहीं थी, पर हमारी जनता पहले ही उस उनमें से कितना का नामकरण कर चुकी थी। औरतों के लिए सन् १७ के विद्रोह के यास्वी वीर कुबेरमिह थे।

उस दिन १२ वजे मुनीति बाबू से जाकर मिले। हमारे परिभाषाओं के काम का उन्होंने दख लिया था। दो घट तक बानधीत जाती रही। यद्यपि वह अग्रणी का कायम रखन के पक्ष में थे पर ता भी अपनी भाषाओं के प्रति दया लिखाना चाहत। यही राय डा० सत्येंद्र वाम की भी थी जिनमें मैं अगले दिन मिला। वह हमारे देश के चाटी के साइमवेत्ताओं में से हैं, सादर व गम्भीर गवेषक भी हैं। लखनऊ के डा० चन्द्रोत्तर तो साइन्स के लिए हिंदी का नाम भी मुनना नहीं चाहत थे। डा० बास मानभाषाओं पर दया करत के लिए तैयार थे, क्योंकि उनके द्वारा विज्ञान का प्रचार साधारण लोगों में हो सकता है। इसके लिए बल्कि बंगला में नान विज्ञान पत्रिका निकाल रहे थे।

२२ तारीख का आ बारदरास गुप्त से मिले। वह अपने साथ एक बृद्ध बड़ा साहित्य प्रेमी दम्पती से मिलान के लिए गे गए, और फिर यादवपुर के इंजीनियरिंग कालेज में भी गये। २४ तारीख का फिर उनमें मिलन का मौका व्यापारियों के सम्मेलन में मिला। औरदर बाबू न बगाटिया की कल्मधिमाई की मनावृत्ति का छोड़कर उद्योग धंधे में काम रखा और उसमें जम गए थे। सांस्कृतिक प्रेम बगाटी निमित्त में जाना आवश्यक है इसलिए वह अपने का सिर्फ पैसा बमान तक ही सीमित नहीं रखना चाहत थे। उन्होंने उसी समय बाल्याया था कि जापान के एक बौद्ध बिहार में

नेताजी की जस्थियाँ मैंन दखी हैं और उनक निघन क वारे म मुझे स दह नहीं है ।

श्री सुरंगचन्द्र सनगुप्त स पहल ही स पत्र द्वारा सम्बन्ध स्थापित हो गया था, और वह प्रत्यक्षगारोर (अनाटामी) की परिभाषाआ क मद्रह मे डट गए व । उहान यह भी बतलाया कि यहाँ क बगाली विद्वाना स सहायता प्राप्त करन म हम कोई दिक्कत नहीं हागी । दरअमल परिभाषा का जा काम हम कर रहे व वह कवल हिन्दी भाषा का नहीं था । अममिया, बंगला उडिया तमू, तमिल मलयालम कनड मराठी गुजराती, पञ्जाबी नेपाली ही उहा बलि मिहलो, बर्मी स्पामी और कम्बाजी के लिए भी यह काम हा रहा था । इसलिए मालम जाने पर सभी जगह से सहायता मिलगी इमम स दह नहा मुझे रिश्ताम था यदि हम जाये दजन अच्छे पारिभाषिक का प्रकाशित करव लिखला मने ता हमार काम मे सभी जगह म सहायता मिलन लगी ।

कलकत्ता बंगाल की राजनीतिक हा नहा सांस्कृतिक राजधानी भी है । बगभाषी सत्रम पहल यूरोप और जाधुनित्र युग म सम्पक म आए, उहाने सबसे पहल जाना कि हमार उल मुक्ति और जाग बढने का वही एक रास्ता है जिस यूरोप न अपनाया है । यूरोपीय मन्त्रि और ज्ञान विज्ञान का गम्भीर अध्ययन पिछले गताली म उत्तराघ म ही यहाँ क मनापिया ने करना शुरू किया और उसस बहुत कुछ लिया जसकि हिन्दीवाल पन्नास वष स भा अधिक पिठडे रट गए । अस वान का प्रभाव बगभाषी समाज पर पटा है । साहित्य और मन्त्रि क प्रति उनका अनुराम देखकर ईर्ष्या हाती है । हमारे यहा आज भी अभी हिन्दी रगमच का कही पता नहीं है । बगाल म वह दगाबिया स बलि गताली म अपनी जट जमा चुना है और ऐसा कि मिनेमा भा उस उपाट नहा सका । ग्य यात्रा म मुझे श्रीराम और रटार क दा रगमचा म जान का मौका मिला । २३ का गिगिर भाट्टी द्वारा अभिनीत सादरल मधुसूदन नाटक देखन गया । दगा की मन्था बनग रही थी, कि लागा का नाटका स प्रेम है । अभिनय भी अच्छा था । साधना

का कमी थी और आजकल ता उसकी कमी सभी देगा म देखा जाती है सिवाय सोवियत रूस के, जहाँ सरकार सहायता दान म ज़रा भी सकाच नहीं करती और जनता नाटको के देखने के लिए दूट पडती है। अगले दिन स्टार म 'गोलकुण्डा नाटक देखा। कलक नाटक म गम्भीरता थी किंतु गति की कमी। आज के नाटक म गति अधिक थी, किंतु गम्भीरता कम। इसलिए इस नाटक मे मनोरजन का अंग भी अधिक था।

उस दिन बीरानेर क एक जोतिसी हस्त सामुद्रिक (हस्तरेखा) का चमत्कार दिखाने के लिए आये। बनला रहे थे कि जायुर्वेद मे जो चीजें मालूम होती है वह हस्तरेखा से भी देखी जा सकती हैं। मेरे पास ऐसी फजल बातों के लिए समय नहीं था नम्रता से किसी तरह पिट छुटाया।

२५ तारीख को था मुरोचन्द्र सनगुप्त क घर भाजन करने के लिए टाकुरिया जाना पटा। उसकी एक अलग छोटी सी नगरपालिका है। कलकत्ता क उपनगर म ऐसी और भी नगरपालिकाएँ हैं जिनको कलकत्ता म ही सम्मिलित हा जाना चाहिए। सुरंग बाबू चार भाइया म सबसे बड़े हैं इसलिए घर क सरदार वही ह। यद्यपि उंहाने रसायन म एम० एस सा० को लेकिन वह जमाधारण रुचि के पुरप हैं। उनके विषय स सस्कृत ग्रीक, लानिन, रूसी स क्या सम्बन्ध है और फलित जोतिस म भाषापच्चो करना क्या पमाद किया जब उससे पमा नहीं कमाना है ? पर जमाधारण प्रतिभाभा म कुछ वेतुकी बातें हुआ ही करती हैं। उनका पुस्तका का बहुत गौक है और अपनी कमाइ म से वह बराबर उह खरीदते ही रहत है। रूसी की भी बहुत-सी पुस्तकें उनक यन्ग दस्तों। पिता नहीं है और माना क वह जनय भवन हैं। जविवहित रहत भा घर भर की आर्थिक चिन्ता वह अपने मिर पर टात हैं।

गार्तनिकेतन— बौद्ध मन्त्रि क लिखन के लिए कुछ समय गार्तनिकेतन जाकर रहता था इसलिए २७ का हम वहा पहुँच। ५० हजारो प्रसादद्विवदा और गार्तनिकेतु क साथ हिंदी भवन म गये। भाजन के बात चाना भवन दला यहा काफी चान-मन्त्रि पुत्रकेंधी। फिर विश्व

भारती के पुस्तकालय में गये, पीने दो लाख पुस्तकें हमारे कम ही विद्व विद्यालया में हैं। बहुततर भारत तथा भारत के सम्प्रदायों की पुस्तकें का भण्डार तो यहाँ बहुत विद्याल है। चार्ल्स साल पहले प्रथम बार लका जान हुए मैं यहाँ जाया था। उस समय से अब भारी परिवर्तन हो गया है। रान का छोटी-सी गाण्टी में भाषण देना पना। अगले दिन गवर ६ बज सबर की गाडी पर पहुँचान के लिए द्विवेदीजी गानि भिक्षु श्री प्रह्लाद प्रधान और रामकिशरजी स्टेनन तन आय। इन्टर में बठ। डरा में बहुत जगह गाने पडी हुई थी।

११ बज के बाद गाडी म्याल पहुँची। गगा का पुत्र उम पात्र करना पना अर्थात् उम रामन दिल्ली की टून म्याल पहुँच मक्ती है।

२८ तारीख का युगांतर कलत्र में मुरारनाजी जीर दूगरा के निमंत्रण पर गय। अयेजा के समय में यह भय भवन किसी कलत्र का था। उनसे कलत्र कारखाना का बनवाले मारवाडी घन-कुवरा का अब इस भाँ समालना था। इमारत बहुत ही सुन्दर था, जीर मफाई और व्यवस्था का क्या कहना? इस कलत्र के मन्वर कहा जा सकता है जा पत्नी गहित जान के लिए तयार हैं। मारवाडी सटा के लिए इसमें एक पीडा पहल भले दिक्कत रहती, लेकिन अब तो वह मारवाणी ही मिटन जा रह ह। हाँ भाजन सारा फल हारा था पर नफीस और अच्छे छुर कापी तथा बक्षना के साथ। एक पीनी की दर है फिर यहाँ वही बानावरण आ जायगा जिसका अम्यास इस भवन का एक पीनी पहल था।

२९ दिमम्बर का बगाल एमियाटिक साम्राज्य के हाथ में भारताय ससृष्टि पर भाषण देना था। जयान्त ससृष्टि मघवाला ने इसका प्रबन्ध किया था। मर विचार सभी माठ कम हो मरने हैं। लोग न कभी जाना का भी घय में सुना।

बहा से युगांतर कलत्र की जार में न्यि भाग में शामिल हान के लिए धाज भी गात्र ३ बज नाम का त्रिदुम्नान कलत्र में जाना पना। आज वहाँ कलत्र में भद्रपूरुष अपनी पत्निया के साथ जाय थ। पना तात्न में श्री मुरार

राष्ट्रमाया की जहोजहद

काजी मारवाडी समाज के नेता हुए थे। उस समय उन्हें बहुत-सी दिक्कतें उठानी पड़ी थी, पर अब उन्हें चारा और सफलता दिखाई पड़ रही थी। मान में जाधी दजन महिलाएँ थी।

३० दिसम्बर का सत्र टट्टलने के लिए घुडदौट के मदान में जाकर फिर टालीगज में पचीसियाजी व यहाँ जलपान करने गये। पचीसियाजी थी घनश्यामदास बिटला के साठ है, उनकी पत्नी और सोमानी दुहिता सरस्वती बहनें हैं। किसी ज्यातिसे ने भाख दिया था कि ब्या के भाग्य में सोभाग्य विरोधी दुष्ट ग्रह है। उममें बचन के लिए पिता ने एन विल्कुल साधारण सी स्थिति के लडके से अपनी पुत्री का ब्याह कर दिया, लेकिन कराडपति ससुरकुल दामाद का ऐसी स्थिति में बने रख सक्ता था। सर स्वनीजी लक्ष्मी का साथ लिए पतिकुल में आइ। उनका सम्मान हाना ही चाहिये। स्त्री जब आर्थिक तौर से स्वतंत्र हा ता उमकी पूछ सब जगह होनी है। सरस्वतीजी के ब्याह व पंद्रह साल बाद तक सतान नही हुई लेकिन यह बहाना दूसरा ब्याह करन के लिए पर्याप्त नही हो सका। अब उनका साठे तीन बप का एन बहुत ही सुदर, स्वस्थ और समझदार पुत्र था। गहर से बाहर पचीसिया दम्पनी का यह अपना बगला था। कार हान पर दस-बारह मील की दूरी बाई चीज नही। बच्च का एक अग्रज महिला डेढ़ घट तक सँभालती हैं। उममें अपने दादा परदादा के पिछडेपन की बही गध भी नही रह गई है। पचीमियाजी के पडास में एक रसी इजीनियर कानिलाफ—कानैली—रहत थे, जो जारगाही जेनरल कानि लाफ के ही काई मन्ब-बी थे, और बालाबिक प्राति के समय भाग आय थे। जहाँ-नहीं नटकन यहाँ अब जम गये थे और आर्थिक तौर से बहुत बच्छी हालत में थे। पचीसियाजी हम उनसे मिलान के लिए ले गये। इजीनियर साहब के लिए बालोबिक शतान थे, उनका राज्य में काई गुण नही थे—इहान लावा बच्चा का मार डाला। हाल में ही पाल्ड से भागकर आये एन दूसरे सज्जन भी वही मौजूद थे, जा हर बात में कानैली व समथक

थे । लग सोवियत रूस का बलनाम करने के लिए माला मे दुनिया के बाने बाने में प्रचार कर रहे हैं ।

उस दिन रात के साढ़े ७ बजे बगोय हिन्दी परिषद में गाड़ी थी । मैं भी बाला और उस्ताद जलाउद्दीन ने सितार सुनाकर मुग्ध किया । मुझे अफसास था कि जल्दी जल्दा हावड़ा पहुँचकर पञ्जाब में पकना है ।

१९४८ की अंतिम तारीख रखनाक में बीती । मेकड बलाय में जगह काफी थी । और जब वही सड़क बलाम फस्ट कठाल में बलनेवाला था । फिर इटर का सेकड कहा जायगा ।

नये वर्ष का आरम्भ

सन्तान—१ जनवरी का भी लखनऊ म रहा। उन दिन गाम को गहर म निकसे, ता देखा पत्रा क विरोध मस्वरण त्रिक रह है। कश्मीर म पाकिस्तान क साथ टिपी टुई लडाइ चल रही थी और हर था कि वह किमी समय खुली लडाई म न बदल जाण। अचानक आक्रमण करके पाकिस्तान १ काम बनाना चाण था। भारत का अभी उनकी आगा नही थी। लेकिन जब भारतय सेनाएँ कश्मीर म रक्षा क लिए पहुँच ग और जाजीरा पार कर हमारे टैंक न अममन्न को मभव कर दिया, यही नहीं, बल्कि लद्दाख की तरफ म वन्ती हूद हमारी मना गिलगित की बार घावा बालन लगी ता पाकिस्तान और उमक भुरद्विया का मुल्य परकत क लिए तैयार हाने म हा गरियन मालूम हुई। भारत और पाकिस्तान न अब हथियार राकबर बान करना स्वीकार किया। यही बाने पत्रा क विरोध मस्वरणा म छपी थी, इसक अनुमार पुनाछ मोरपुर, मुजफ्फराबाद और गितगित पाकिस्तान क हाथ म रहण। सभेप म जा भूमि जिसक हाथ म है वह उमके हाथ म रह जाएगी।

लखनऊ क मित्रा न बनलाया, कि पिछली बार जब मैं यहाँ से बला गया था ता खुफिया पुलिम के इन्सपेक्टर बनी मरगमी स मेरी खात्र लगा रह थे। भारत का स्वतंत्र हुए एक ला म ऊपर हुए, पर मी०

आइ० डा० क पास मरी फाइल ता बैसा ही मौजू है इसलिए उन्हें क्या नहीं परेशाना जाता। अब ता य पुरानी फाइल गई रिपार्टों स जीर माटी हाना जाएगी क्याकि अंग्रेजा क जाने क बाद भी देश का जिस रास्ते ल जाया जा रहा है उसस हमारी जनता को जा दु त हा रहा है, उमे चुपचाप बर्दाश्त करना मरी शक्ति स बाहर है।

सीतापुर—सीतापुर म हिंदी साहित्य का एक सम्मेलन हा रहा था। मुझमे उमम चलन का जाग्रह हुआ और लखनऊ क प्रसिद्ध बद्य तथा राष्ट्रकर्मी प० गिवरामजी अपनी माटर म २ जनवरी का ल चले। बद्य जी म प्राचीनता और नवीनता का विचित्र मिश्रण है। सफल बद्य हैं स्वयं अपनी माटर चलात हैं। आज पचीसा बप हा गए उहाने अपने शरीर का जग स अपवित्र नही किया। प्राकृतिक जीवन का उहाने अपने ऊपर तजबा रिया। पसीन जीर बन्दू का शरीर स अलग करने क लिए जल क अतिशक्ति और भी उपाय हैं। कमलिए उनके पास बठन से यह नही मालूम हाता था कि उनका शरीर चिरबाल मे जल-स्पर्श विरत है। लखनऊ स सीतापुर ५२ मील है जीर मडक अधिकतर सीमट की है। राप्न म कमालपुर मिला वहाँ एक बृद्ध सस्कृत पण्डित से थोड़ी दर बातचीत हानी रही। फिर चलकर पोने २ बजे हम सीतापुर पहुँच गए। बादगाही जमान म हमारे जिला का सरकार कहा जाता था। बनी सरकारा म स किमी किसी के अंग्रेजी काल म एक क दो जिले भी हा गए हैं। अठवर क प्रधानमंत्री अनुल फजल रचित 'जाइने अकवरी' म मुगल-शास्राज्य की सरकारा का नाम दिया हुआ है। सीतापुर उस समय खराबाद सरकार म था। अंग्रेजी जमाने म सातापुर का जिला बना दिया गया जीर रल आदि क सुभीत क कारण सातापुर खराबाद का पीछे छाटकर आग बढ गया। शहर की आवासी ४० हजार के करीब है। लडकिया का इन्टर कालज अब डिग्री कालज हानवाला था। उसम एक हजार लडकियाँ (पाँचवें दर्जे तक एक हजार और आगे पाँच सौ) लडकियाँ पढ रही थीं। यह बनला रहा था कि यहाँ क नाग

रिका का स्त्री शिक्षा की जाय विशेष ध्यान है। साहित्यिक रुचि भी यहाँ के लोगों में है।

मुझे जिले के डिप्टी कलेक्टर रा० न० चतुर्वेदी के पास ठहराया गया। चतुर्वेदी जी काय प्रेमी और स्वयं भी कवि है और कटरता के पक्षपाती नहीं हैं यह तो इसीसे मालूम है, कि पुराने आर्इ० सी० एस० सर जगदीश प्रसाद की कथा इनसे ब्याही है।

उसी दिन नगर में सभा के लिए जलूम निकला, जिसमें सभापति होने के कारण मुझे भी जाना पड़ा। ४ बजे सभा शुरू हुई। स्वागताध्यक्ष व भाषण के बाद मैं एक घंटा बोला। भाषण लिखकर रान का अवसर नहीं था क्योंकि उसी दिन मुझे सभापति होने के लिए कहा गया था। रात का कवि सम्मेलन हुआ जिसमें बशीर शुकल की चुभती और मुत्त कविताओं का रसास्वादन बड़े प्रेम से लोगों ने किया। बशीर जी की जब्दी कविताओं को हमारे भाषा-क्षेत्र में भी बहुत पसंद किया जाता, और यहाँ तो जब्दी का अपना क्षेत्र था। कहीं भी कवि-सम्मेलन में जान पर उनकी कविताओं को बार-बार सुनाने का आग्रह होता है। वह बिल्कुल स्वाभाविक कवि है और आज की विपत्तियों में जमी यातना लोग भाग रहे हैं उसके भुक्तभोगी और प्रत्यक्षदर्शी हैं। उनके कामल हृदय का यह सह्य नहीं जाता और वही वेदना उनके मुह से फूट निकलती है। गुब्बारा की कविताएँ बहुत-सी लिखी और लिखी पड़ी हैं, जिनका उनके सामने प्रकाशित हो जाना अत्यावश्यक है पर इस जघन नगरी में कौन पूछता है? कवि सम्मेलन में चतुर्वेदी जी ने भी अपनी कविता सुनाई।

यही मेरे फुफ्फेरे भाद रमण के पुत्र चन्द्रभूषण पाडे से भेंट हुई। वह लिखक का मटबल है। रमण मरी सगी बूआ के और मर प्रथम मस्कृत १५० महादेव पाडेय के पुत्र हैं। उनकी स्वर्गीया प्रथम पत्नी चन्द्रभूषण का छाडकर मर गई थी। चन्द्रभूषण का अपन ननिहाल की जगह मिली थी। जा काफी थी। समय में नहीं आया, कि उस छाडकर उह नौफरी

की क्या फिर पड़ी ? यह भी मालूम हुआ कि बाप बेटे में मूल नहीं है। समाज के बाहरी खाल के भीतर इस तरह की बात जाजबल अधिवाधिका मिलें तो अजरज की बात नहीं है।

३ जनवरी का जलपान के बाद हरगांव गए। हरगांव में बिडला की चीनी मिल है जिसमें चीनी के साथ स्प्रिट, स्टाच भी बनाया जाता है। मिल बहुत विंगल है। मिल के प्रधान मंचालक के यहाँ हा भोजन हुआ। बात के दौरान उन्होंने बतलाया कि हमने ऊँच की साईं का कागज बनाने के लिए अपनी मरलपुरवाला मिल में भेजा था और कागज अच्छा बना था। पीछे बिडला के दूसरे अफसर ने बतलाया, कि कागज में थोड़ा-सा दोष रह जाता है, जिससे दूर करने का अभी कोई उपाय नहीं है। सबसे बड़ी बात तो यह है कि सीतापुर में उद्योगों के मरलपुर में कागज बनाने के लिए साद भोजना बहुत व्ययसाय है। यदि यहाँ कागज बनाने की मिल खोली जाए तो एक मिल की साईं से क्या बननेवाला है ? फिर साईं का बहुत से मिठवाय इधन की तरह पाक दते हैं यह भी एक दिक्कत है। अग्रजा के जमाने में सिर्फ अग्रजा की ही कुछ मिलों को अल्लाह मद्यगार बनाने की आना थी। अब उसके लिए छूट कर दी गई है। चीनी से निकल बहुता-भा सीरा बेकार जाता था जो अल्लाह बनकर चौथाई मात्रा में पट्टाल में मिलाकर माटरा में इस्तेमाल किया जा सकता है। हमारा देश पट्टाल में दरिद्र है इसलिए इस तरह एक चौथाई की वचत कम नहीं आता। मिल के स्वामी बिडला आन वाले थे। यहाँ की सभी सस्थाएँ उनसे दान माँगने की तयारी कर रही थीं।

हरगांव में सातवीं से ग्यारहवीं गतान्ती की दूटी फूटी मूर्तियाँ मिली एक पाँच फण का नाम लाल पत्थर का था। क्या बुपाण-का में भी यह स्थान विनोपना रखना था ? हरगांव क्या मौखरी इरिवर्मा से कोई सम्बन्ध रखना है।

कानपुर के कम्युनिस्ट नेता और मजदूरों में जिन्दगी लगा देनेवाले

कर्मों मायी मनमिह यूमुफ यहा पर नजरबंद हैं, जब यह मालूम हुआ, ता मैं उनस मिलन गया। बात-बात म नजरबंद करक म्पत-त्रता का अपहरण करा आजकल क जमान म जप्रेडा क समय म भी आसान हा गया है। जयेड अपन विराधिया के साथ जा क्ग बनाव कर्ते थ आज भी उमम दिलाई करन का सरकार वदास्त नही करनी। और बाता म चाह चीटी की गति हा, लकिन दमन म वह बडी चुम्न है।

नोममार मिमरिख—भारत का एक परम पुनीत तीर नमिस्वारण्य मीनापुर जिम् म ही है। एम स्थान पर पुरातात्विक अवशेष भी हो सकत ह यह सावकर मरी इच्छा वहा जान की हुई। ४ जनवरी का पौन १० वज चतुर्वेत्तो जा अपन साथ ७ चये। मिमरिख पहा मिल। ३६ वष पन्ल भा म नोममार मिमरिख हात उत्तराखण्ड गया था। उम समय का स्मति बन्त क्षीण रह गई से। ता भी इतना याद रा मिमरिख म एक तालाब है जिम बहुत पुनात माना जाता है। तागर अब भा था और सार तीथ उनी के भिनार थ। पुराना चीजा क दून्न म ग्यारहवीं बरहवी मदा का मूर्तियां मिली दा एक उमम पहा की भा। और भी मूर्तियां मिलनी, लकिन पिछ्ठा सी माग् म मूर्तिया को दा ल जान म लाग व्यस्त है, एसी चीजा क व्यापारिया न ता पिछ्ठे पचास मात्र म गजब टाया है। दजीचि मन्त्रि क मस्वापक नाननाथ गिरि गाहजहापुर म आण थ। और भा बातें मानूम हा मरनी थी जा सभी एतिहासिक महत्व की नही हा सकता पर कुछ काम का भी गती हैं। चार-पाँच माल और आग त्तन पर नोममार का चत्रतीथ मिग्। चत्रतीथ गाल गहरा रूप हे, जिमना थाग्-सा पाना ऊपर मे बराबर निवल्ता रहता। एम बहनगाल कुना की कमी नहा है। मरादन नाम की छोटी-सा नदा इसी जिले क एक कुणें पर निकल्ती है। क्या है, कि एक चमार तण्णो तरनी जठ क मजबूर करन पर तागव म जठ न पा कुणें पर गई। उमय पाम रम्पी नही थी। सार तण्ण का ताग्वर उमन दानी निकालना चाहा लकिन वह पानी तक पहुँच नही रहा था। दर

करत तब जठ गया। लज्जा के मारे नरनी कृष्ण में बृष्ण पड़ी। उसकी कुर्वाणी से कुएँ का भी दिल पसीजा और उमक मुह में पानी निकल कर बहने लगा। हिमालय की तराई में ऐसा बहुत जगहा पर देखा जाता है बरसात के धरती में सोखे जठ का तिनना ही भाग कुओ के मुह से बाहर निकलने लगता है।

लौटते समय रामकोट के बड़े डीह को देखा सण्डित भूमियाँ इसकी प्राचीनता का बतलाती थी। बड़ी बड़ी इट्टें भी है पर उम तिन देवने में नहीं आई।

गाम को जिन्हे के अधिगारिया के माय चाय पान और परिचय का मौका मिला और रात को बग प्रदान। १ बजे तक चलता रहा। दशक १० हजार रहे हमें अर्थात् नगर की जनता का चौथाई भाग इसमें दिलचस्पी ले रहा था।

६ जनवरी को सबेर ओडल जाना था। ओडल पुराना स्थान और एक अच्छा कस्बा है। लेकिन मोटर आने में देर हो रास्ते में बिगडने वाली हुई इसलिए वहाँ जाने का ख्याल छोड़ना पडा। श्री रुपनारायण चतुर्वेदी अच्छे कवि और साहित्य प्रमी हैं। पत्नी भी गिभिता हैं। तीन लडके और तीन लडकियाँ हैं। आजकाल के मध्यवित्त परिवार में आधे दजन सन्तान अपने और माता पिता का कठिनाइया पदा करत हैं।

सांतापुर १३ लाख आबादी का जिला है, जिसमें चार तहसीले हैं। खराबाद कस उजडा और सीतापुर कस बमा यह बतला चुक है। जिले में किसानों की आमदनी का नया रास्ता निकलना। यहा मूंगफली बहुत पैदा हानी है जो निर्यात का एक बड़ा साधन है। गन्ने के सद्युपयोग के लिए ता मिलें खटी हा बड़ लेकिन मूंगफली अभी प्रावृत्तिक रूप में हा बाहर जाती है किसी न तेल निकालने के उद्योग की आरंभ अभी ध्यान नहीं दिया है।

गोन ५ बजे रेल से चला। पुराना ट्रक्टर क्लबस सक्ड बन चुका है, और फस्ट क्लब को लाइनर सक्ड क्लब को फस्ट क्लब बना दिया

गया था। टेन म बड़ी भीड़ थी, सैकड़ों लोग पायदान पर लटक रहे थे। ८ बजे लखनऊ पहुँचे। उम्मीद तो कम थी लेकिन प्रयाग वाली गाड़ी म ऊपर की साट (सेकंड क्लास) रिजर्व हा सकी इसलिए सोत हुए रात की यात्रा हुई। नींद एसी आई कि प्रयाग म जागर ही खुली।

प्रयाग—पौ फरवरी ही मैं श्रीनिवासजी क घर पर पहुँचा और मबरे घूमने क लिए त्रिवेणी तक गया। परिभाषा निर्माण के काय को कसे आगे बढाया जाय, इसकी ज़दी चिन्ता थी। दिल्ली से आन वाले तरफ न आ सक, और न उनका पत्र हो आया। डा० भट्ट अभी द्विविधा म थे। एक तरह अभी सहायक क आन का का निर्दय नहो था। इसी बीच मैं "बौद्ध संस्कृति" पर हिन्दुस्तानी एकडमी म भाषण करना स्वीकार कर लिया था, जिसे पुस्तक के रूप म भी लिखना था। लिखन के लिए ११ १६ साल का मट्रिक पास एक यादव तरफ (लखन) मिला। उसका अभी पढ़न का समय था, उसे इस तरह काम म लगाकर जाने का रास्ता राकना मुझे खटकता था। पर उस काई काम नहीं मिल रहा था इसलिए तब तक क लिए रख लेता ही मैं पसंद किया। इस साल और विभापनर २० दिना सदी बहुत बनी हुई थी। दिल्ली म वह ३० डिग्री तक पहुँच गई थी। बफ जमन म चार ही डिग्री की ता कमर थी। मैं साच रहा था यह सदी का तापमान भी कमी बला है? अगर हमारे यहाँ का आमत तापमान चार ही पाँच डिग्री कम हो जाय, तो सबरे तालाब जमे मिलगे नदिया क किनार बफ की सफेद मगज़ी दिखाई पड़ेगी सारे वृष पत्ता का गिरा कर नग हा जाएँगे, सड़ी फल घुलस जाएगी और जाड़ा राकन क प्रबंध म अममय लाग्या जादमी मर जाएंग, पशुजा आर पक्षिया का ता बान हा क्या? त्रिवेणी तट पर माघ मेला क यात्रा थ। उस समय एक महीन के लिए यहाँ हर सा जगल म मगल हा जाता ह। अगले दिन डा० उदयनारायण निवारा और नागाजुन जा क माघ फिर टर्न जाए। मले की तयारी हा रही थी। अभी तक पेगाव-नागान की समस्या हमार मला की हल नहीं हा मकी

करत दस जेठ आया। राज्या के मारे नरैनी कुएँ म बूट पडी। उसकी कुयानी से कुएँ का भी दिक् पसीजा और उसक मुह स पानी निकल कर बहन लगा। हिमालय की तराई म ऐसा बहुत जगहा पर देखा जाता है बरसात क घरती म सोखे जल का कितना ही भाग कुओ के मुह से बाहर निकलन लगता है।

लौटन समय रामकाट क बडे डीह को दगा खण्डित मूर्तियाँ इमकी प्राचीनता का बतलाती थी। बढी बडी इटें भी हैं पर उम दिन दग्ने म नगी जाई।

गाम को जिल क अधिकारिया के साथ चाय पान और परिचय का मौना मिंग, जोर रात को बला प्रदर्शन। १ बजे तर चलता रहा। दगक १० हजार रहे हाग, अर्थात् नगर की जनता का चौथाई भाग इसमें दिलबस्ती के रहा या।

६ जनवरी का सबेर जाऊ जाना था। जोइल पुराना स्थान और एक अच्छा कम्बा है। लेकिन माटर जान म दर हा रास्ते म बिगडने वाली हुई इसलिए वहाँ जाने का स्थाल छाडना पना। श्री रूपनारायण चतुर्वेदी अच्छे कवि और साहित्य प्रेमी हैं। पत्नी भी गिणितता हैं। तीन लडक और तीन लडकियाँ हैं। जाजकल के मध्यवित्त परिवार म आधे दजन सन्तान अपन और माना पिता का बटिनाइयाँ पदा करने हैं।

सीतापुर १३ लाख आबादी का जिला है, जिसमे चार तहसिलें हैं। चैराबाद कस उजडा और भीतापुर कमे बसा यह बतना चुक है। जिले म किसाना की आमदनी का नया रास्ता निकला। यहाँ मूगफली बहुत पना हाता है जा निर्यात का एक बना साधन है। गने के सदुपयोग क लिए ता मिलें खडी हा गद, लेकिन मूगफली अभी प्राकृतिक रूप में हा बाहर जाती है, किसान क हल निफागने के उद्योग की ओर अभी ध्यान नहा दिया है।

पीन ५ बजे ग्ल म चक। पुराना इटर कलाम मेर-ड बन चुका है और फस्ट कलाम का ताडरर सक-ड कलाम का फस्ट कलाम बना दिया

गया था। तेन म बहा भीड़ थी मैंकटा लग पापदान पर लप्य रह थे।
 ८ बजे लखनऊ पहुच। उम्मीद ता कम थी, लेकिन प्रयाग वाग गांगी
 म ऊपर की सीट (मकड कगम) रिजब हा मकी, समिणमान हुए रात
 की यात्रा हुद। नीच गमा आई कि प्रयाग म जाकर ही खुगे।

प्रयाग—पी फटन ही मैं श्रीनिवासजी क घर पर पहुँचा और सरद
 घूमन क लिए त्रिवणा तक गया। परिभाषा निमाण के काय का कम
 आग बनाया जाय इससी बढी चिन्ता थी। जिन्गी म आन बाये तरण
 न आ सक, और न उनका पत्र ही आया। डा० नट्ट अभी द्वित्रिषा म
 थे। एक तरह अभी महापद के जान का बाद निदरय नगी था। इसी
 बीच मैं 'श्रीद-मस्कृति' पर हिंदुस्माना एकेडमी म भाषण रगना स्त्री-
 वार कर लिया था, जिस पुस्तक क रूप म भी लिखना था। जिम्न क
 लिए १४ १६ मान का मद्रिय पास एक यात्रक तरण (गन्त) मिया।
 उसका अभा पदन का समय था, उस म तरण काम म रगाकर श्रम
 का राग्ना राक्ता मुझे खटखता था। पर उस बाद काम नगी मिग रग
 था इसलिये तब तक क लिए रख रेशा ही मैं पमग लिया। टन माग
 और विगपरर इन दिना मदीं बहून बनी हुई था। जिन्गी में ३०
 दिना तक पहुँच गई थी। वफ जमन म चार गे दिना का ना उमर
 थी। मैं साब रहा था यह सर्दी का तापमान भा बँसा क्या है? अगर
 हमारे यहा का जौमन तापमान चार हा पाँच डिग्री कम हा जाय, ना
 सबर तालात्र जमे मिलगे नलिया ५ दिनार वफ की मरुत मगरी दिगाई
 पड़ेगी, मार वृष पत्ता का गिरा कर नग हा जाएँगे, मग फमग मृगम
 जाग्यो जीर जाय राक्न क प्रकय म अममय जालों आग्ना मर
 जाएँगे ९गुआ आर पक्षिषा की ता गन हा क्या? त्रिवणी-नर पर माय
 मेग के माथो ५। म समय एर मगत क लिए यनी ३० माग ३०ग
 म मगल हा जाना ह। अगे जि हा० गगनागग त्रिवाग आर
 नागाजुन जी क साथ फिर टगन आण। मर का त्रयागि हा ३० थी।
 अना तक वगाव-पापाने की समस्या हमार मग की उर नगी हा मग

है। पढ़ता एसी जगहा का यद्यपि सध्या म प्रबन्ध नही किया जाता और फिर हमार पबित्रता प्रेमो दान व लागा की सावजिन सफाई की आर ध्यान हो नही है।

यद्यपि हमार पाम दो चार हजार रुपय स ज्यादा नही था किन्तु बक म रक्मे रुपय के दार म खयाल आता था कही रुपय का मूल्य बुरी तरह स न गिर जाय और मध्या म हजार रुपय का चौथा भी मूल्य न रह जाए। जाखिर लडाई के पढ़ का एक रुपया अब चवनी स भी कम का रह गया था।

सारनाथ—८ जनवरी क सवर ७ बजे छाती लान की गाटी पकडा। छाती लाइन म भी १ जनवरी म पुराने फस्ट क्लास रा सतम करव बाका का पहला दूसरा और तीसरा दर्जा बना दिया गया था। ट्रेन म बहुत भीड नही थी। लान दमा टन म चलन वाग था, लकिन किसा कारण गाटी छूट गई। इतर अपने हाथ म लिपु का जम्पास कम हा गया था और जा मे लिपुता था वर लागा व पत्र गपक भी नही हाता था इसलिए लिपु की जरूरत थी। सारनाथ म जाकर बौद्ध मस्कृति लिपुता था मलिग लिपिक र छूट जान से चिन्ता हुई। १२ बज सारनाथ पहुँच गया। यहाँ क जरिगा भिपु सारिपुत मागलान का धानुआ व म्वागन क लिए कलकत्ता चर गए थ। धमगाला व एक कमरे म ठहर गया। स्वामी सच्चिदानंद भी आजकल तीन सप्ताह म यही ठहर हुए थ। पहिल पत्र १९३३ इ० म उनस मिला था वह मस्त्र र गम्भीर विद्वान् और उदार विचारा क थ। जावन का निचि रूप म चरने क लिग जात्रो का कुछ और कामा का भी हाथ म रना हाता है नहा ता सारी समय म चिन्ताए पछाटा लगनी है विगपकर जावन का सध्या म ता उनका वग और भी बड जाना है। स्वामी सच्चिदानंद न न लिखन का काम सभाला न पत्र का ही। इस समय उह निरागा ही निरागा दिखलाई

पढती थी। कभी-कभी उत्तरकाणा में जाकर स्वामी रामनोथ का अनुकरण करने का बात करती थी।

८ तारीख को सबरे कुहरा पड़ रहा था जब कि रल के साथ साथ मैं टहलन गया। लीटकर दखा लल्लन जा गया था। टेन डूट गई थी दूसरी टेन पकड़ कर १० बजे रात को ही सारनाथ स्टेगन पहुँच गया था। खर, आज स पुस्तक लिखवाना शुरू किया। उस समय निश्चय किया था कि दो सप्ताह यही रहकर लिखवाने का काम करूँ, जोर फिर एक मास के लिए गतिनिकेतन चला जाऊँ। अपक्षित पुस्तका की मुविधा बहा ज्यादा थी। लल्लन पीरे घीरे लिखता था तो सुपाठय रहता जल्दी करने पर दुष्पाठय हा जाता।

१० तारीख का सबर टहलन लाट भैरव की तरफ गया। लाट भरत बनारस के उत्तरी छार पर जाजकल मुमलमानी कत्रा जोर दर गाहा के रूप में परिवर्तित होकर मौजूद है। महमूद गजनवी ने ११वीं शताब्दी में जब बनारस का लूटा था, तो उस समय नगरी का मुख्य भाग यहा था यह नैरव भी तभा क है। जमीन के ऊपर पुरानी चीजें क्या मिलती किन्तु नीचे उनके मिलन की उतुत सम्भावना है। सारनाथ से सीधे लाट भैरव हाकर चौक जान का रास्ता है जो उस समय अखिलतर कच्चा सत्क के रूप में था। वरणा के किनारे पगम्बरपुर गाव है। पुरान समय में का जोर नाम रहा हागा जिस बदल कर मुमल मानी नाम में दिया गया। यहा ७वीं ८वीं सदी की स्त्री जोर पुष्प मूर्तिया एक सुन्दर प्रस्तर स्तम्भ पर खुदी देखी जा शिवालय के सामने सडा है। जाग वरणा में अस्थाया पुल है जिनके पाम कभी स्थायी पुल था यह उमक जबगप में मालूम हाता है। अब सारनाथ के साथ इस भू भाग का भाग्य फिर जम रहा है। बुद्ध जयन्ता की २४वीं शताब्दी मनान के लिए जा तयारी हुई, उमम वरणा पर पुल भी बना। इस पर से गहर से मांगी पक्की सत्क सारनाथ जा रही है। रास्ता खुल जान पर इधर नए मकान भी बनन लगेंगे। पर आजकल के जमान में वही

गहर हटना के साथ आग बल सकता है जहाँ उद्योग धंधे बढ़ रहे हैं वनारस में ऐसी वाइ बात नहीं देखी जाती। पुराने घनी नागरिक गहर से बाहर बगीचे वाले मकानों और बगला के गीकीन थे लेकिन जमादारी के उठ जाते तथा दूसरी कठिनाइयाँ—जैसे गहर में बाहर बगला में रहना जरूरी होना—के कारण जिनके ऐसे बगले हैं वह भी उन्हें बचकर पिण्ड छोड़ने के लिए तैयार हैं। ता भी इस मंडल के कारण गहर और सारनाथ मकानों की पकित से मिल जाएंगे इसकी सम्भावना जरूर है। वरणा में नीचे का आर गाड़ी दूर पर रेल के पुल को दंग कर करूँ कथा याद जाइ—उम समय ठेकेदारों ने सारनाथ में पत्थर का टूटी फूटी मूर्तियाँ और रम्भा का सुग्ग देकर छक्का में उठवा कर पुल की नाव में फेंकवा लिया था जो मित्तनी ही ऐतिहासिक वाता का अपने साथ लिए वहाँ पुल के पथ के नीचे डूबी हुई है।

वरणा पार हा हम एक पुराने तागाव पर पहुँचे जिनके किनारे एक मस्जिद के हात में लाट भैरव हैं। हिंदू अब भी जब-जब यहाँ पूजा के लिए आते हैं। पहल यह पगड़े को जड़ रहा। गायन कीलिए उमक चारा तरफ लाह का कटघरा बना दिया गया है। मस्जिद के घनी यह कहना मुश्किल है पर मस्जिद ताड़कर उल्टी गई थी यह उमकी दीवारों में जहाँ-तहाँ गग अलकृत उत्कीण पत्थर बतला रहे थे। दीवारों और आंगन में पड़े पत्थरों में कुछ मूर्तियाँ भी जरूर मिली। पैगम्बर पुर से अल्हपुर तक मुसलमानों की वस्तियाँ हैं और जुलाह हैं। सारे दंग के लिए कपडा मुहैया करना जिस जाति का काम था उसकी सम्प्राप्त अधिक हा इसमें क्या सन्देह? और वनारस जपन सुन्दर कपडा के लिए युगा में प्रसिद्ध रहा है। बुद्ध के समय यहाँ के वारिक मूनी कपडा की दंग-दंगातर में स्याति थी और पीछे जपन राम जीर उम खाब के लिए भारत में बाहर बाहर भी प्रसिद्ध हुआ। इन कपडों के बनाने वाले यही जुलाह ता थे। मुसलमानों जात्रमण की पहल जड़ गताली में ही जान पड़ता है उत्तर भारत के सारे तत्तुवाय मुसलमान

वनर जुलाहा के नाम से प्रसिद्ध हो गए। महमूद गजनवी के आक्रमण के समय सारनाथ में लेकर यहाँ तक का यह भाग बहुत घना बसा हुआ था और उस समय उज्जैन के बाद फिर इसका दिन नहीं लौट। यह जानकर बड़ा खुशी हुई कि यहाँ मुसलमानों के साथ पंजाब का सा संबंध नहीं हुआ नहीं ता एक भी मुसलमान देखने के लिए जायें तरसनी।

११ सारनाथ का सार की ६ माल की टहलाइ गाजीपुर मठ पर थी। उस भूमि में प्राचीन इतिहास की परिचायक सामग्री जगह-जगह अतर्हित है इसीलिए मैं रास्ता बदल-बदल कर टहना शुरू किया था। कुछ दूर जान पर कुछ इनाक भट्टे और कितने ही उद्यानगृह थे। धनिक काशीनामिया के उपवन उपनगर में हान ही चाहिए। प्राचीन काल में इमका और भी शीक था। भर विद्यार्थी जीवन के समय में लोग अकसर उद्यान भाज करन के लिए अपनी या दूसरे की धगीचिया में चले जाया करते थे। दूधिया भग छतता, कडे पर गहूँ के आट की बाटी पतला हडिया में एक पानी में दाल पकती। एक कर विदाण हा गई बाटिया का घी में डुबा दिया जाता। फिर मित्र लाग बैठकर भाजन करत। अब जावन उनना निश्चिन्त नहीं रहा इसलिए यदि उद्यानगृह शहीन थे ता कोई ताज्जुब नहीं। हालांकि तब में अब आने-जान का और अधिक सुभीता है। मात्र में दस मील पहुँचना भी बीस पचीस मिनट का काम है। और जान मठक से दक्षिण थोडा हटकर एक ऊँची जगह देखी। यहाँ कोई स्तूप रहा हागा, लेकिन विशेष जानन के लिए उसकी खुदाई की जरूरत थी।

सारनाथ में जाडा में दग दगान्तरा के बौद्ध यात्री आया करते हैं। लवा और निध्वन के यात्रिया से मिलन की मरी आकांक्षा रहा करनी थी। पुराना मधुन स्मृतिया का इस तरह जागृत किया जा सकता था। हमारे यहाँ का गर्मियाँ और बरमान भी दुस्मन् हान हैं, इसलिए दूसरे दगा के यात्री बगान् पूणिमा के महापव का लालच हान पर भी नहीं आत।

आज चाग आरजा स्थिति में दग रहा था उसमें बुद्ध का उपदेश

आदीप्त पर्याय" याद आ रहा था। सभी चीजें आनीप्त हैं, जल रही हैं। पुराना ढाँचा जलकर ढह रहा है यह बुरा नहीं, पर नए का नीब पडती नहीं दिखलाई देती यह चिंता की बात थी। १२ तारीख का मालूम हुआ, आज से पंद्रह दिन के लिए महाबाधि हाई स्क्वैड बन कर दिया गया। ग्राम पंचायत के चुनाव कराने के लिए वाटरो की सूची पटवारिया ने जो तयार की थी उनके सहायन का काम अध्यापक का दिया गया है। १० से ४ बजे तक राज यह इस काम के लिए गाँवा में जाया करता थे। मुझे यह सुनकर अचरज होता था, १० से ४ बजे का ता यह समय है जब कि किसान घर से अनुपस्थित रह अपने सेतो में काम करते हैं। ता क्या सगी घन की रस्म ही पूरी होगी। आजकल रबी की सिंचाई का समय था, जिसमें जरा सा चुप हाने पर किसान को साल भर पछताना पडता है। बनारस के पास हान से गाँव के बहून से जोग दूध ली बडा या दूसरी चीजें बचने खरीदने के लिए गहर चले जाते हैं। इसी समय यह भी पता लगा कि दालदा से घी बनाने का उद्योग यहाँ के गाँवा में बडे जोर शोर से चल रहा है। दालदा का वह भस के दूध में डाल दते हैं, फिर कुछ उससे घी और मक्खन तयार होकर बनारस बिकने जाता है। दालदा खान से परहज करके दालदा से घी के नाम पर खान वाले लोगो को बुद्धि पर मुझे तरस आता था। उनकी बुद्धि पर और भी, जा दालदा प्रद करवाने के लिए कानून बनवाना चाहते हैं। दालदा में विटामिन का कमी हो सकती है, लेकिन वह जहर नहीं है। आल्मी के लिए स्निग्ध वस्तु की आवश्यकता हाता है जिसकी पूर्ति इससे हाती है विटामिन की कमी टमाटर या दूसरी चीजें खाकर पूरी की जा सकती है। यदि घी दालदा के भाव होता, ता कौन उस नहीं खाता। घी में आधे दाम में मिलने वाली यह वस्तु मध्य चण के लोगो को बनी सहायता कर रही है। आज जिस तरह चाय जतिथि सत्वार का एक सम्ना और मुदर साधन है उसी तरह दालदा भी है।

पटवारिया ने जमा मन में आया वसी थोटर सूची बनाकर तयार कर दी थी। सित्रिया के वाट का फाई महत्व नहीं था इसलिए उनका नाम के

दज करने में बड़ी गड़बड़ी की गई थी। गड़बड़ी तो बड़ी जात वालों की घावली से भी हुई थी। शिक्षा उही में कुछ है और वही पचायत के महत्व को कुछ जानते भी हैं। वह जानते थे, कि गाव में कहीं कहीं दो तिहाई तक छोटी जाति के लोग बसते हैं। पचायता में यदि वह अपनी सख्या के अनुसार चुनकर आए तो बड़ी जाति वालों की युगा से स्थापित तानाशाही चली जाएगी। पटवारी भी बड़ी जाति—ब्राह्मण, क्षत्री, लाला—के थे। नाम क्या लिखा जा रहा है, इसका अर्थ एसा उलटा समझाया गया कि लोगो में जासका उठ खड़ी हुई। कोई कहता, कण्टार में कपड़ा मिलने के लिए नाम लिखा जा रहा है ता विचारे बहने—“बड़े लोग कटाल का कपड़ा पाएंगे, हमें क्या मिलेगा।” यद्यपि मान्टर लोग पचायत के कुछ गुणा को समझाने की कागिश करते थे लेकिन लोगो की उदासी हटती नहीं थी। अब कुछ छोटी जाति के पढ़े लिखे पचायत के महत्व का समझाने लगे थे, वह भी घूमकर समझाने लगे। कुछ दिनों बाद हवा का रूख पलटा और छोटी जात वाले भी पचायत के लिए खड़े होने लगे। उस समय पचायत के निर्वाचन होने तक एसी हवा बदल गई थी, जसी उससे पहले कभी नहीं देखी गई। बड़ी और छोटी जातियां क सीधे दो दल हो गए थे। बड़ी जाति में ब्राह्मण, क्षत्री लाला (वनिया या कायस्थ) और भूमिहार थे और छोटी जातियां में छून अछून सारे लोग। शताब्दिया बाद पढ़े पढ़ल समाज में इस तरह की स्पष्ट दरार आला के सामन दिखाई पडन लगी। एक तरफ घन अधिकार के स्वामी—गोपक—थे, और दूसरी तरफ उनसे वचित गोपित। आज भी यह दरार मिटी नहीं है, लेकिन जिनक पास घन और प्रभुता है वह भिन्न भिन्न तरह से लागा की आंखा में धूल चोकन हैं और गापिता के नेताओ को खरीदकर अपना काम बनाने हैं। आग्विर बहुजन के अपन हां लोग तो गोपका के सनिन बनकर अपन भाइया का हजारों वर्षों से गुगाम रगत आए हैं।

सागर—सागर विश्वविद्यालय में साहित्यिक समाराहम आनेके लिए निमन्त्रण आया। वन होता, ता काम छाडकर एक सप्ताह का छून बन के

लिए मैं तैयार न हुआ पर विश्वविद्यालय के अध्यापकों से परिभाषा-निर्माण में सहायता की आशा थी इसलिए मैंने स्वीकार कर लिया। २० पहर वाज की छाटी लाइन से प्रयाण पहुँचा। फिर वहाँ से साने के लालच सागर के लिए प्रथम श्रेणी का टिकट बटवाया। ट्रेना में मकर मक्राति के लिए आगा की भीड़ थी। रात भर चक्कर / बज सवेरे कम्पनी पहुँचा। आग जाने वाली ट्रेन दा ही थी, पौन ११ बज तक यही प्रतीक्षा करनी थी। स्टेशन सबाहर दगा सडक के पाना तरफ कारणादियो ने चाय मिठाई और दूधरी दूकानें खाल रखी हैं। लल्लन भी माय था लकिन अभी वह माँ के आँचल से बधा लडका था। इधर उधर गया नहीं था यात्रा में बच्चा था। गैर बीना की ट्रेन मिली और हम उससे रवाना होकर पौन ४ बजे सागर पहुँचे। सागर कम्बा है विश्वविद्यालय स्टेशन में तीन मील पर है। युद्ध के समय अंग्रेजा न सेना के लिए यहाँ बहुत में अस्थायी बरकें बनवाई थीं उनके लोभ के कारण भी विश्वविद्यालय वहाँ स्थापित किया गया। लकिन, ये मकान कितन दिना तक ठहरेंगे और यदि इसी लोभ के कारण और भा मकान यहाँ बनाने लगे तो इसका अर्थ है जगह पसंद करन में बुद्धि से काम नहीं लिया गया। विश्वविद्यालय में उस समय सात सौ छात्र छात्राण पढ रहे थे। छात्रावास का प्रबंध नहीं था इसलिए बाहर से विद्यार्थी यहाँ बस जा सकते थे? हम प्रो० नन्ददुलार बाजपेयी जो क यहाँ ठहरे।

१४ जनवरी के सवेरे तीन मील उस जगह तक जवल्पुर वाली मडक पर टहलने गए, जहाँ न कानपुर और दमोह की सडकें बज्ग होती हैं। पहले ही चालीस घरा का एक छोटा सा गाँव बहेरिया मिला। बजरग (महावीर) के स्थान पर १०वीं गता की की एक छोटी सी पत्थर की मूर्ति मिली। वहाँ छोटा सा गिर्वाणि और कुछ बडा मा नादिया श्री मौजूद था। पत्थर की मूर्ति द्विभुज थी, और उसका कटि में ऊपर का ही भाग बचा था। एक श्वेली छाती पर और दूसरा खडगधारी की तरह ऊपर उठी थी। दावद यह पुरयमूर्ति श्रय मुद्रा में हा। लेख भी था जिसमें कवल स पढा

जाना था। इसका अर्थ हुआ, बहरिया गांव कम से कम दसवीं सप्ती में मंजूर था।

बाई बजे हिंदी परिपद का और रात का सात ७ बजे छान सप का भी उद्घाटन करते हुए मुझे भाषण देना पड़ा।

उस दिन शाम को सागर की बस्ती की ओर गए। कचहरी के पास विशाल सरावर है जिसके ही नाम पर बस्ती का नाम सागर पड़ा। इस सागर का किसन खुदवाया, इसका पता नहीं। इसे अपौरुषेय मानना चाहिए। सरोवर काफी पुराना है और किनारे पर मिट्टी पड़ने से पानी सूखता गया है। तोपखाना अफमरा के भोजनालय के बगल के हाल में चार नये बने स्तूपों में चिपकाई गई पत्थर की मूर्तियां देखीं। इसमें एक (इना पूव प्रथम शताब्दी) से बारहवीं शताब्दी तक की मूर्तियां थीं। सागर दशाण के केंद्र में अवस्थित है। समुद्रतल से दस हजार फुट से भी ऊंचा हान के कारण यहां की गर्मी असह्य नहीं है। यहाँ रू नहीं चलती। स्वाम्थ्य की दृष्टि से यह स्थान बहुत अच्छा है। विश्वविद्यालय का महा अभी अस्थायी तौर से ही रखा गया है। उसे परिया पहाड़ी पर ले जाना चाहते हैं, जहाँ प्राकृतिक सौन्दर्य भी अच्छा है और पानी की चिंता भी नहीं है।

उस दिन विश्वविद्यालय के वनस्पति उद्यान, भूगर्भास्त्रीय प्रयोगशाला और दूसरी चीजें देखीं। नया नया विश्वविद्यालय खुला था जिसके लिए श्री हरिसिंह गौड़ ने अपनी कई कराइ की सम्पत्ति दी थी। अपनी कमाई का इसमें अच्छा उपयोग और क्या हो सकता था? हरिसिंह का जन्म यही हुआ था, इसलिए उनकी आकांक्षा थी, कि वह विश्वविद्यालय उनकी जन्मभूमि में ही बने। सागर विश्वविद्यालय केवल शिक्षालय ही नहीं है बल्कि मध्य प्रदेश के हिदाभापी भाग की शिक्षा मस्थाया का परीक्षा लय भी है। १५ तारीख को समावतन मन्वार हुआ, जिसमें भाषण के लिए बन्दीय मन्त्री श्री जयरामदास दीनराम जाएं। बिरकुल अंग्रेजी बान्ता करण था, लेकिन जयरामदास हिंदी में गले। अंग्रेजी का जरा भी नीचे उतारना बूटे हरिसिंह का वर्णन नहीं हो सकता था लेकिन, करें क्या ?

विश्वविद्यालय वाले भी इनने बड़े दाता का नाराज करना नहीं चाहत थे। जयरामदास जी के भाषण में इस ज्वलन जूट की (पाट) सती के लिए प्रसन्नता और उनकी उन्नति के लिए सुझाव बतलाये गए। थोड़ा इसे आश्चर्य से सुन रहे थे। सागर एसी जगह है जहाँ न जूट की सती होती है, और न उसके विक्रम की कोई गुंजाइश है। लेकिन मंत्री को इसका दाप क्या दिया जाए? बराबर ही उन्हें कहीं न कहीं सभाशा में उद्घाटन, समावतन सस्कार या किसी दूसरे समारोह में बालन के लिए बहा जाता है। वह अपने देह का वहाँ किसी तरह पहुँचा सकता है लेकिन सभी जगह के लिए भाषण तैयार करने लगे तब तो हो गया। किसी ने भाषण तैयार कर दे दिया होगा, और वह यहाँ पढ़ लिया गया। और भी मंत्रियों को ऐसा करते देखा गया है। उत्तर प्रदेश के मुख्य मंत्री न तो एक बार हमीरपुर के भाषण को शासी में और क्षामी के भाषण को हमीरपुर में पढ़ दिया जिसे सुनकर लागा को बड़ा आश्चर्य हुआ। उसी दिन शाम का नगर में एक सांस्कृतिक सभा में बान्ना पडा और हिंदी परिषद ने मुख और पत्र रचिाकर शुक्ल का मान पत्र लिए।

इधर से दो ही ट्रेनें जाती हैं इसलिए बड़ी मुश्किल से भाग पीडकर रात सां ११ बजे की ट्रेन पकची। रास्ते में तीन घंटे लट थी, इसलिए प्रयाग जान वाली ट्रेन के मिलान से निराश हो गए। १६ तारीख का ६ बजे हम कटनी पहुँचे। सारे दिन के लिए कटनी में पड़े रहने के सिवा और कोई चारा नहीं था। कटनी हमारे श्रेय के अद्भुत इतिहासवेत्ता और पुरातत्त्वज्ञ डा० हीरालाल की जन्मभूमि है। उन्होंने कितनी ही बार मुझे यहाँ आने के लिए निमंत्रित किया था। डा० जायसवाल और डा० हीरालाल समाजधर्मा थे। समाज था जादाना एक ही विरादरी के रत्न थे। उनके जीवन में मैं उनके घर नहीं जा सका। अब इस अवसर से लाभ उठाकर मैंने वहाँ जाना जरूरी समझा। कलचुरी इतिहास के वह अद्भुत ममज्ञ थे। अपमान विवह अपनी पानराशि का कागज पर उतार रही सन। उनका पुस्तकालय देखा। हीरालाल जी के भतीजे अब उनके स्वामी हैं। वह भी रोचक रहे थे।

और मैं भी जा र दिया, कि इन पुस्तक का सागर विश्वविद्यालय में जाना चाहिए, जहाँ इनका सदुपयोग हो सकता है और जहाँ ही इनकी और इसके संग्रहक के नाम की रक्षा हो सकती है। लोगों को मालूम हुआ तो साहित्य प्रेमियों की गाड़ी जमा हो गई, जिसमें बोलना पड़ा। अतः मैं रात को सावजनिक सभा में बाटा। कितनी बार कटनी से गुजरा लेकिन कटनी शहर को देखने का अत्रकी बार ही मौका मिला। यहाँ पास में सीमेट क वारखान थे, और भी औद्योगिक सम्भावनाएँ हैं। बीना प्रयाग जबलपुर विलामपुर की रेलवे लाइना का जक्शन हाने से इसे यातायात के बहुत सुभीते प्राप्त हैं।

१७ जनवरी को सुबेर ६ बजे पहुँचकर श्रीनिवासजी व यहाँ गए। आज ही सारनाथ चला जाना था। कल स्थायी समिति की बैठक हुई। सम्मेलन में दल बनी कुठ उग्र रूप ले रही थी, अधिकारान्ध दल पैसे से लाभ उठाना चाहता था। ५० बलभद्र मिश्र बडे खर और बडे जादमी थे वन उन पर ही आगा थी। परिभाषा कोश के काम में भी अडचन की सभावना थी, लेकिन भावी का ख्याल करके अभी से हाथ पर छोड देना मैंने पसन्द नहीं किया, और निश्चय किया, कि जब तक काम चल सकता है तब तक निभाएँगे।

शाम की ६ बजे की गाडी पकड़ी। नाटकवार ५० लक्ष्मीनारायण मिश्र भी उमी ट्रेन से चल रहे थे। उनका महाकाव्य 'सेनापति कण और आग' बटा था। ट्रेन में उमक कितने ही स्थल उठाने सुनाए। बहुत अच्छे लग। गिरायन थी ता यहाँ कि हम मिश्रजी जल्दी समाप्त क्या नहीं कर देते। सारनाथ ११ बजे रात का पहुँच। इस समय सामान उतारना वाला जान्मी कहाँ में मिलना? अपने सामान का उठाकर घण्टाला तक पहुँचाना आमान नहीं था। किसी तरह शस्त्र की छावनी के दरवाजे तक पहुँचे, वही चक्करे के बाहर सा गया। १८ का सपरे लल्लन को भेनवर आत्मा बुलवाया, तब सामान लेकर टहरन के बासे पर पहुँचे। लल्लन को चिट्ठी मिली मा बीमार थी, वह चला गया। जब फिर लिपिक की समस्या उठ खनी हुई।

श्री अवधप्रहारीसिंह सुमन ने आने की दृष्टा प्रकट की थी, उहा को आने के लिए चिट्ठी लिख दो। इस बीच मैं महाशयि ममा पुस्तकालय से अपक्षित पुस्तकें लेकर देकर रहे। स्वामी मन्चिदानन्दजी से भी बात होती रहती। उनके निराशावाद को जवानी हटाया उही ने सनता था, लेकिन तो भी कागिग करता था। वह अपने से भी अधिक दुनिया में निराग थे। कह रहे थे घम पर अब किसी का श्रद्धा उहा है। सबनकारी बचना देखी जाता है। उह फिर थी, कसे जल्दी जीवन समाप्त हा जाए। मैं ना समझता हूँ, फिर हाना चाहिए जीवन को जीवन समाप्ति की क्या फिर? अबकि धाम पचायतो क चुनाव के शारे में जा बात सुनने में आइ, उससे मालूम हुआ, कि हवा पलटी हुई है। कम से कम गहर के पास वागे इन गाँवा में पिछडे लोगो में कुछ आत्म चेतना आ गई है। एक गाँव क ११ पचा में ४ अछूता में सध (अछूता के लिए पहले ही ग सोन रिजव थी) बाकी सात में से भी छून-अछून दोना शोपित एक जसो वाणा बाल रह थे।

२० जावरी को सगर सुमन जी आ गए। लिखन का काम फिर शुरू हा गया और पहले से भी अच्छी तरह।

बक्सर—बक्सर में जिला हिंदी सम्मेलन हा रहा था, जिसका मभा पति बनकर मुझे जाना था। २१ तारीख का एक में चलकर बनारस छावनी में २ बजे टिन की ट्रेन पकड़ी और हम नाना साठ ८ बजे के कराव बक्सर पहुँच गए। सुमनजी इसी जिले क रहन वाले थे। मैं बक्सर में तो बार अपनी जल यात्रा के सम्बंध में जाया था जिससे २६ बप हो चुके थे। उस समय रेखा की यात्रा सुगम नहीं थी, पागकर तीसर दर्जे की। पहल दर्जे में भी एक पुराने सठ सफर कर रहे थे जो सारा घर लादकर चल रहे थे। सामान क भारे वहाँ हिलने डालन का अवकाश नहीं था। हम सम्मेलन से एक दिन पहले पहुँच चुके थे। अभी पण्डाल भा तयार नहीं हुआ था। २६ बप पहले हूँ गया कायम का याद भान गी। वहाँ भी पण्डाल बनन में एमी हा तिलाई हुई थी और एक बार पर लगा था गायन मच का चबूतरा बन ही न पाए। महाराजकुमार लुगाकर सिंह सम्मेलन क वर्ता

घता थे, उनका पता ही नहीं था। हमे उसी दिन आना चाहिए था। खैर, जाकर डाकबगले में ठहर गया। बक्सर में भी एक गिरा पड़ा पुराना दुग है, जिसके पास दूर तक पुरानी आबादी के अवशेष हैं। साथ में सुमन जी और दूसरे भी थे। पुराने अवगण में जगह जगह कुछ मंदिर और कुछ ढहते से मकान थे। चरित्रवन क्या नाम पड़ा लग इसे चितरथवन (स्वर्गोद्यान) बतलाते हैं। इधर आचारिया के भी कुछ स्थान हैं। उत्तर को तो बरागियो ने सभाला था, फिर यह रामानुजी आचारी कहा स आ घमके ? सूयपुरा के राजा और डोमाराय के मंदिर जमींदारी उठने के पहले ही ढहने लगे थे अभी न जाने किन किन को ढहना होगा। गंगा के किनारे किनारे नाव से चले। जगह-जगह एक मेखला वाली कुड़ियो को दिखाकर हमारे साथी बतला रहे थे विश्वामिन ऋषि के जिस यज्ञ की रक्षा के लिए राम लक्ष्मण आए थे उस यज्ञ के यही कुण्ड हैं। मेरे लिए हमी रोकना मुश्किल हो गया था। दजनों कुड़ियो की यज्ञ के लिए क्या आवश्यकता थी ? मैंने बतलाया कि यह यज्ञ-रूप नहीं, गूथरूप हैं। उस समय के लोग हममे ज्यादा सफाईपसंद थे, इसलिए पास पडोस को गंधान कर अपन घर के भीतर इही सडासो में पाखाना फिरा करते थे। थोता बडे ह्ताण हुए। विश्वामिन के यज्ञ की बडी मेहनत से तैयार की गई निगानी दूसरी ही साबित हुई।

२२ तारीख को टहलते दो मील पूर्वोत्तर कतकौलिया गए। यही पर अंग्रेज बम्पनी न पलासी के युद्ध के सात वष बाद दूसरा निर्णायक युद्ध जीता था जिसका स्मारक यहाँ खटा था। स्मारक पर लिखा था—“जब नवाब बजीर शुजाउद्दौला के ऊपर मेजर हक्टर मनरो के बक्सर के युद्ध में विजय का स्मारक, जो कि इस मदान में २३ अक्टूबर १७६४ को लड़ी गई, और जिसके द्वारा अंग्रेजो ने अन्तत बंगाल बिहार और उड़ीसा की दीवानी प्राप्त की।” (To commemorate the victory of Major Hector Munrow over Shuja u-daulo Nawab Wazir of Oudh in the battle of Buxar fought on this field on 23rd October 1764 A D by which the Diwani of Bengal, Bihar and Orissa was finally won for the British)

स्मारक के चारा आर अंग्रेजी, हिंदी उदू और बगला म यह लेख लिखा हुआ है। इस स्मारक पर १५ अगस्त १९४७ का अंग्रेजों के जान, जनता के युद्ध और कुबेरगिह के पराधम की बातें लिखी जा सकती हैं। हमारे ठहरने के बगले के नानिदूर अंग्रेजा का पुराना बद्रस्तान था, जिनमें १७५४ ई० तक की पुरानी बच्चें थी। चौकीदार को ४२ रुपया महोना मिलता था मुर्तों की रखवाली के लिए कितने दिना तक चौकीदार यहाँ रखा जाएगा ?

३ बजे स सम्मला आरम्भ हुआ। बाबू दुर्गाकर जी ने अध्यक्षीय भाषण दिया और मैंने सभापति का मौखिक भाषण। रात को संगीत-मडली का आयोजन था बलारस के प्रख्यात नवलावादक कठे महाराज का तबला सुनकर बड़ी प्रसन्नता हुई। उस्तादी कलाबाजिया स मुझे बिड है इसलिए उसका रस नहीं ल सका। बक्सर म बानरा के मार लोगो का नाक म दम था। कई साल पहले किसी सबडिवीजनल अफसर ने कहा था कि बानरा को यहाँ से हटाना चाहिए। उस समय धम धुरघरा न हनुमानजी की सेना के साथ ऐस अत्याचार के हान को पसंद नहीं किया और विराध के डर से अफसर ने ख्याल छोड दिया। तब स मूद दर मूद के साथ बानरा की सख्या बनी है। अब बक्सर गठर से उनकी आवादी कम नहीं है। खपडैलें सारी बंदरो के मार टूट चुकी हैं। पहले रात को बंदर पट पर हुबक के सोए रहते थे, अब वह रात को भोजन की खाज म निकलते हैं। जरा सी गफलत हुई कि गूधा आटा या जा भी हाथ लगा उस ल भागने हैं। कई छाट बच्चा को उहान काटा भी है। पास-पडोस के गाँव वाले किसाना की फमल को खरियत नहीं थी। कितन ही सेता के बीज को ही घह धुनकर खा जान और जमन पर हनुमानजी की सारी पलटन वहा डेरा डाल देती। मैंने अपन भाषण म बानर यन करन की बात की। इहू मिफ एक जगह से दूसरी जगह छाडन से काम नहीं चलेगा, बल्कि पूरा बानरमध ही बचने का एक मात्र रास्ता है। जान पडता है, पुरान धम धुरघरा का कोर् नामलेबा नी नहा रह गया है नहीं ता बानर-यन के विराध म आवाज तो उठती।

सवेरे षं बक्न किरतपुरा की आर टहलने गए । सुमनजी भी साथ थे । सुमनजी राजनीतिक कर्मी और भोजपुरी के श्रयकार हैं । किरतपुरा म सक्खार भूमिहार करते हैं, वह अपन को फतेहाबाद स आया बतलाते हैं । भूमिहार एक ऐतिहासिक जाति है, इनकी परम्पराओ से इतिहास पर प्रकाश पड सकता है । लेकिन वहाँ ता विसी के जीवन भर का काम है । एक एक गाव म जाकर उनके उद्गम-स्थान और पुरानी मौखिक परम्पराओ को जमा करना पडेगा, और हजारों पृष्ठ लिख जाने पर कुछ ऐतिहासिक तत्व निकलेंगे ।

२३ जनवरी इतवार का दिन सम्मेलना की धूम का था । क्वानी-सम्मेलन, राजनीति इतिहास सम्मेलन गाहाबाद भाजपुरी-सम्मेलन, कवि-सम्मेलन सभी हाते रह । भोजपुरी सम्मेलन का उद्घाटन मुझे करना पना, और सभापति परभट्टसराय थे । डा० उल्यनारायण तिवारी भी चले । कविया म बाहर से आने वाले थी बच्चनजी और विस्मिल दलाहाबादी विनोप तौर से उल्लेखनीय थे । दूसरे कविया न अपनी कविताएँ पढी, चार घटे तक सम्मेलन रहा । बच्चनजी की कविताओ का मैं बहुत प्रशंसक हूँ सबप्राह्य भाषा मे कविता करना जानते हैं । वह संस्कृत से लदी हुई भाषा के मौल म नही पडे, यह बडी प्रशंसनीय बात है । संस्कृत लाने और तुक जाउन से अच्छी कविता नही होनी । विस्मिलजी के शर बडे फडकत हुए थे, और उनके कहने का ढग और भी अच्छा था । मुने ता उसम ईरानिया के अपन फारसी गजला के पढने का ढग भासित हाता था—विम्मिठ गायद कभी फारसी क मुगायरे म शामिल नही हुए हाग, ईरान जाने की ता बात हो क्या । विस्मिलजी का निमंत्रण अब भी इतजारा कर रहा है । निरालाजी ने अपन माँम पाचन की कला का एक स अधिन बार प्रयोग मेरे लिए किया था । विस्मिलजी जब तारीफ करन थे तो मुह मे पानी भर आना था । सभी खान वाठे माँम की पहचान नही रगत । बकरे का मास खास-खास जगह का विनोप महत्व रगता है, फिर उसके पकान म भी विनोप विधान है । विम्मिलजी ने कहा कि एक दिन आइए मैं गाँव बनाकर

खिलाऊंगा। तब से इलाहाबाद पच्चीसा मंते गयी, महीना रहा लेकिन कभी नदिया-नाव सयाग नहीं वा, कि मैं विस्मिल के हाथ का गोश्त खाता।

बक्सर के सम्मेलन पर कम पसा नहीं रख किया गया था, लेकिन कहा कोई व्यवस्था नहीं थी। भोजन समय पर नहीं मिलता था, जो मिलता था, वह भी एमा ही बसा। अंत म ता हृद कर दी गई। १२ बजे तक कवि सम्मेलन होता रहा। अतिथियो का स्टेशन पर जाकर गाड़ी पकडनी थी लेकिन कोई खोज खबर लेने वाला नहीं था। यह ऐसी उपेक्षा थी, कि उनम से कोई फिर बक्सर आने का नाम नहीं ले रहा था। दिन म छुट्टी हाती ता एक्का भी खोजने पर मिल जाता सामान ले जाने वाले आदमी भी मिल जाते लेकिन जाधी रात का क्या किया जा सकता था। मैं इसकी तुलना मरठ से कर रहा था। भाजन का कितना सुंदर प्रबंध महिलाओ न किया था। विस्मिल ने अपन गुरु ब्रह्म नारवी की बात दोहराते हुए कहा—कि सात आदमिण की अंत म बुरी गति हाती है जिनम कविता पड चुके कवि और विदा हुए बराती भी शामिल हैं। लेकिन मैं समझता हूँ, कि उस दिन के कारण बक्सर के प्रति यह भाव नहीं रखना चाहिए। आखिर बक्सर की वही पीढा सदा नहीं रहेगी। क्या हरेक पीढी पहली के पीढी क दुगुणा को दोती है ?

सारनाथ— रात को सभी कवि और दूसरे अतिथि स्टेशन पर बड़े ट्रेन की प्रतीक्षा करते खटटे मिटठे श दो मे बक्सर सम्मेलन की आलोचना कर रहे थे। वही समय रात हा का ट्रेन मिल गई। उनारस छावनी म रिक्शा किया और सुमनजी के साथ मैं ६ बजे से पहले ही सारनाथ पहुँच गया। पटना और लिखना ही काम था। सुमनजी बड़े मुस्तद थ। हर वक्त काम म जुटने के लिए तयार थे लिखत भी साफ थे और हिंदी की योग्यता के कारण गलती करन क लिए बहुत गुजाश्न नहीं थी। मैं अब 'बौद्ध संस्कृति' के पूरा करन के लिए निश्चित था।

इस समय चीन म जो घटनाएँ घट रही थी उसके बारे म सभी जगह

भारी चर्चा थी। चीन में कम्युनिस्ट आग काई शोक का भगाने में सफल हो चुके थे। साफ मालूम हो रहा था, चीन भी रूस के रास्त पर जान वाला है। उम समय तक जनसंख्या ४० ४५ करोड़ बतलाई जाती थी, जो सुव्यवस्थित जनगणना के बाद ६० करोड़ सिद्ध हुई। इतनी बिगाड़ जनता कम्युनिज्म के पथ पर जाए, इससे दुनिया भर के प्रतिगामियों की नींद हराम न हो। यह कम हो सकता था? किन्तु ही समझत हैं—कि कम्युनिज्म (साम्यवाद) का छाड़ मुक्ति का और काई रास्ता नहीं है। बट मेरी तरह नवीन चीन का स्वागत करने के लिये तैयार थे। जो अपने स्वार्थों के कारण विरोधी थे, वे हर तरफ हाथ पर मारते प्रवाह को रोकना चाहते थे, लेकिन क्या टिडडी गिरते आसमान का अपने पैरों पर रोक सकती है? इन दाना के बाद एक नौसंग बग रहा था—इंडोचीन और वमा को भी अधिक दिना तक कम्युनिस्ट बनने से नहीं रोक जा सकता। फिर भारत के भाग्य में भी वही है। भारत के कणधार अंतरराष्ट्रीय राजनीति की फिकर में डुबके हैं, और गृह के भीतर उनके पाम सिर्फ दमन एकमात्र हथियार है। हैदराबाद में हजारों किसानों के लडका के खून से वे हाथ रग रहे थे। दंग की आर्थिक समस्याओं के सामने, मालूम होता है उन्हें लडका मार गया था। हरेक नेता अपने और अपने बंधु मित्रों का घर भरने में लगा हुआ था। सठ इन लूट में सबसे आगे हैं, जिनको हर तरह से खुश रखने की कागिरी हमारे नेता कर रहे थे। इन लूट का परिणाम आर्थिक मकड़ के भयंकर भँवर में जनता का पडना ही था। वह भूक रहे अपने असंतोष के खून के आँसुओं को पी रहा थी। अनाज की समस्या सबसे बनी थी किसी जगह जान पर पहल इसका ओर ध्यान जाता था और किसी का महमान बनना रचिकर नहीं मान्य होता था। क्या अन्न की समस्या को हल नहीं किया जा सकता? आज सात वष बाद भी वह समस्या हल हुई नहीं कही जा सकती। बाहर में अन्न अब नाममात्र का मँगाया जाता है, पर उमका मन यह नहीं है, कि सबका गरोर यात्रा के लिए आवश्यक अन्न मिल रहा है। हमारे आँधे लाग आधा पट खान और भूखा रहने के लिए तैयार हैं,

खिलाऊंगा। तब से इलाहाबाद पच्चीसा मतव गया महीना रहा, लेकिन कभी नदिया-नाव सयाग नहीं बना, कि मैं विस्मिल क हाथ का गो त खाता।

बक्सर के सम्मेलन पर कम पसा रही खच किया गया था, लेकिन वही कोई व्यवस्था नहीं था। भोजन समय पर नहीं मिलता था, जो मिलता था वह भी ऐसा ही बँसा। अंत म तो हृद कर दी गई। १२ बजे तक कवि सम्मेलन होता रहा। अतिथियों को स्टेशन पर जाकर गाड़ी पकानी थी लेकिन कोई खोज खबर लेने वाला नहीं था। यह ऐसी उपेक्षा थी, कि उनम से कोई फिर बक्सर आन का नाम नहीं ले रहा था। दिन म छुट्टी होती, ता एक्का भी राजने पर मिल जाता सामान ले जाने वाले आदमी भी मिल जाते, क्विन आधी रात को क्या किया जा सकता था। मैं इसकी तुलना मेरठ से कर रहा था। भोजन का कितना मुदर प्रबध महिलाओ न किया था। विस्मिल न अपन गुरु गुरु नारवी की बात दोहराते हुए कहा—कि सात आदमिणे की अंत म बुरी गति होती है जिनम कविता पढ चुके कवि और विदा हुए बराती भी शामिल हैं। लेकिन मैं समझता हूँ, कि उस दिन के कारण बक्सर क प्रति यह भाव नहीं रखना चाहिए। आगिर बक्सर की वही पीढी सदा नहीं रहेगी। क्या हरेक पीढी पहली के पीढी के दुगुणा को ढोती है ?

सारनाथ— रात को सभी कवि और दूसरे अतिथि स्टेशन पर बठ ट्रेन की प्रतीक्षा करते पटटे मिटठे ग दा मे बक्सर सम्मेलन की आलोचना कर रहे थे। इसी समय रात ही को ट्रेन मिल गई। बनारस छावनी म रिकशा किया और सुमनजा के साथ मैं ६ बजे से पहले ही सारनाथ पहुँच गया। पठना और लिखना ही काम था। सुमनजी बड़े मुस्तद थे। हर वक्त काम म जुटन क लिए तैयार थ लिखत भी साफ थे और हिन्दी की याग्यता के कारण गलती करन के लिए बन्त गुजाइग नहीं थी। मैं अब 'बौद्ध ससृति' के पूरा करने के लिए निश्चित था।

इस समय चीन म जो घटनाएँ घट रही थी, उसके बारे म सभी जगह

नारी चर्चा थी। चीन में कम्युनिस्ट व्याग काई शैव को भगाने में सफल हो चुके थे। साफ मालूम हा रहा था चीन भी रम के रास्त पर जान वाला है। उस समय तक जनसंख्या ४० ४५ कराड बतलाई जाती थी, जा सुव्यवस्थित जनगणना के बाद ६० करोड सिद्ध हुई। इतनी विंगाल जनता कम्युनिज्म क पथ पर जाए, इससे दुनिया भर के प्रतिगामिया की नींद हराम न हा यह कस हा सकता था ? कितने ही समवत हैं—कि कम्युनिज्म (साम्यवाद) को छाड मुक्ति का और कोई रास्ता नहीं है। वह मरी तरह नवीन चीन का स्वागत करने के लिए तैयार थे। जो अपन स्वार्थों के कारण विराधी थ, वे हर तरफ हाथ-पैर मारते प्रवाह को राकना चाहत थे, लेकिन क्या टिडडो गिरते आममान को अपन पैरा पर राक सकती है ? इन दाना के बाद एक तीसरा बग रहा था—इडाचीन और बर्मा को भी अधिक दिना तक कम्युनिस्ट बनने से नहीं राका जा सकता। फिर भारत के भाग्य में भी बही है। भारत के कणधार अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति की फिकर में दुबले हैं और राष्ट्र के भीतर उनके पास सिफ दमन एकमात्र हथियार है। हैदरा बाद में हजारा किसानों के लडका क खून से वे हाथ रग रह थे। देग की आधिक समस्याओं क सामने मालूम हाता है उन्हें लकवा मार गया था। हरक नेता अपन और अपने वधु मित्रों का घर भरन म लगा हुआ था। सेठ इम लूट में सबसे आगे हैं, जिनका हर तरह से खुग रखन की कागिण हमारे नेता कर रह थे। इस लूट का परिणाम आधिक सकट के भयकर भँवर में जनता का पटना ही था। वह मूक रह अपन असताप के खून क आँसुओं को पी रही थी। अनाज की समस्या सबसे बडी थी किसी जगह जान पर पहले इसकी ओर ध्यान जाना था और किन्हीं का महमान बनना रचिकर नहीं मालूम हाता था। क्या अन्न की समस्या को हल नहीं किया जा सकता ? आज सात बष बाद भी वह समस्या हल हुई नहीं कही जा सकता। बाहर से अन्न अब नाममात्र का भँगाया जाता है, पर उसका मत रब यह नहीं है, कि सबको गरीर यात्रा के लिए आवश्यक अन्न मिल रहा है। हमारे आधे लाग आधा पट खाने और भूखा रहन के लिए तयार हैं,

इसीलिए यह झूठी 'अनमस्वावलम्बन की बात है।'

२६ जनवरी को १६ १७ वर्ष बाद सिंहल भिक्षु भदन्त देवानन्द म्यकिर मिले। अब बहुत बढ हा गए थे। वह मुझसे मस्कृत पढने वाल उन विद्यार्थिया म थे जा नियमपूर्वक समय देते थे, अपन पठन म भी और मुझे पालि पढाने म भी। भारत की तीययात्रा के लिए अकेल निकल थ। अपनी मातृभाषा सिंहली, पालि और मस्कृत क अतिरिक्त बढून थोडे से हिंदी के गण जानत थे, उही के सहारे बलवत्ता स सारनाथ पहुंच गए। सिंहल म यद्यपि लाखा भारतीय रहत है, लकिन सभी तमिल भाषाभाषी हैं इसलिए उनके सम्पर्क स हिंदी जानने का सुभीता नहीं है। उत्तरी भारत के मजूर बलवत्ता उम्बई तन छाए हुए हैं, द्वीपान्तरा म भी लागा की सरथा म चल गए हैं, पर पडौस क मद्रास के सस्त तमिलभाषी मजदूर सबडो वर्षों स वहाँ आते रहें इसलिए उत्तरभारतीयों की गति बढा नहीं हुई।

२७ जनवरी की सरेर टह्रन क लिए हम लमही-ल्लाम की आर गए जा सारनाथ स दा ढाई मीठ पश्चिम है। लाला (कायस्था) की बस्ती हान स इसको लमह-ल्लान भी कहते हैं। अमर क्याकार प्रमचन्द की यह जन्मभूमि है। यद्यपि वाम क सुभीत क लिए वह बनारस म रहते थे, लकिन अपनी लमगी स उनका बडा प्रेम था। इसलिए दामजिला मवान बनवाया था। अब छठ छमाहे कभी कभी गिवरानी लेवी जा आती है। अमृत और श्रीपति क बार म ता लोग गिनायत करते थे कि वह कभी नहीं आत। गाँवा म पदा दुग योग्य पुरुष इसी तरह अपन गावा का त्याग कर चल जात हैं लकिन कर क्या। हमार गाँवा म सास्त्रनिक जीवन वितान का काइ साधन नहीं है, और नगरा म उस प्रकार का सुभीता है। प्रेमचन्द जी के दाना मुपुत्रा का जब बनारस स भी वाम नहीं चला तो प्रकाशन की आसानी देखकर वे प्रयाग चले गए। गिवरानी जी अत्र भी बनारस हा म रहती हैं। लमही पुराना गाँव मालूम हाता है, यह उसके विचित्र नाम स भी पता चलता है और वहाँ पर १०वी ११वी गलागनी

की एक छोटी सी खण्डित स्त्री मूर्ति का मिर भी इसी को बतला रहा था, जो कि अत्र पटना म्यूजियम में है लौटते वक्त बड़हरवा थावा ने नाम से खड़ी एक गुप्तकालीन छाटी सी बुद्ध मूर्ति देखी। सारनाथ के जामपास से वप पहले सफ़ाई मूर्तियाँ रही हागी। अब कही कही उनमें से कुछ बच रही है। लम्ही के पान मढवा गाव है, यह भी अपने नाम से प्राचीनता का चतलाता है।

उसो दिन ल्हासा के जेनरल गोगाड अपनी पत्नी पुत्र, बहिन भाजे और परिचारका के साथ सारनाथ आए। चीन में चाङ कार्ड शक का सफाया हा रहा था। यह निश्चित ही था, कि तिब्बत भी चीनी गणराज्य का अभिन अग वनेगा। चाङ कार्ड शक के रहते यदि चीन ऐसा करता, तो पश्चिमी साम्राज्यवादिया को कोई उज्ज न होता। लेकिन, कम्युनिस्ट चीन आ जाए इसे अमेरिका और इंग्लड वर्दाशत करने के लिए तैयार नहीं थे। उन्होंने अपने आदमी अब भी वहा बठा रखे थे, जो अब भारत क भीतर से ही हाकर जा सकत थे। तिब्बत के भा जागीरदार और धनिक कम्युनिज्म के साथ रहन के लिए तैयार नहीं थे, इसलिए वहा क कुछ प्रभावगाली स्त्रोगा का प्रतिनिधि मण्डल अमेरिका और इंग्लड दोहाई देन क लिए गया था। जेनरल गोगाड इसी प्रतिनिधि मण्डल के सलस्य थे। अमेरिका, इंग्लड फ्राम हाकर जब वे बम्बई में उतर, तो उनके स्वागत के लिए सारा घर गया हुआ था। गागाड-परिवार तिब्बत का सबसे धनी और मजमे पुराना सामत परिवार है। उनके पिता अब भी जीवित थे यद्यपि स्वच्छाचार को रखकर बाद में पत्नी ने घर से दूध की मक्खी की तरह निकाल लिया था। जेनरल गागाड का बडा भाइ ल्हासा सरकार के चार मंत्रिया में सबसे प्रभावगाली मंत्री था, सबसे छाटा भाई भिक्षु था। ल्हासा की यात्रावा में यह परिवार हमें मेरी सहायना के लिए तैयार रहता यह कहन की जरूरत नहीं, कि इस परिवार से मरी धनिष्ठता थी। ल्हासा गहर के केन्द्र में उनका लम्बा चीन और बहुत ऊचा प्रासाद है। ल्हासा निवास में स्नान के लिए मैं प्रति सप्ताह उनके यहाँ जाया करता था। पन्द्रह वप बाद मैं

उनसे मिल रहा था बहुत-सी बातें जाननी सुनना थी।

पश्चिमी साम्राज्यवादी बहुत चिन्तित थे, और चाहत थे कि किसी तरह तिब्बत चीन में विलीन न हो। पर चाहत से क्या होता है? चाहत मात्र से चीनी भुक्ति सना का निरत में आना दूर थोड़े ही सकता था? तिब्बत के पास न कोई शिक्षित सेना थी, न गिनत लायन हथियार और न पैस ही। पश्चिमी साम्राज्यवादी पैसा और हथियार देने के लिए तैयार थे लेकिन उनको इस्तेमाल कौन करता? और यह सहायता भी तिब्बत तभी पहुँच सकती था, जब भारत सहमत होता। पश्चिमी साम्राज्यवादी विभाजन इंग्लैंड अब भी समझता था कि भारत हमारे प्रभाव में है, वह हमारे बान मानेगा। इसलिए हमारे नेताओं को बहुत ऊँचा नोचा समझाता रहा— तिब्बत में जो विभागाधिकार हमें प्राप्त किए हैं उन्हें हमें तुम्हें दे दिया है। यह सब सौ वर्षों की प्रमाणा है हमें आगामी स कम्युनिस्टों के हाथ में न जाने दो। तुम्हारे ऊपर कोई आर्थिक बाधा नहीं पड़ेगी। पैसे और हथियार हम देते हैं आदमी तुम दो। लेकिन भारतीय नेता क्या भाँग खाए हुए थे कि आधे आसमान पर टंग इस प्रोग्राम में अपने बाद-मिया का भेजकर बटवाने। जितनी सना भेजते उममें दून तिगुन मजदूरा का सामान डान में लगाना पड़ता। दस बीस हजार सना से वहाँ कुछ काम भी नहीं बनता। चार-पाँचों तक की गला की सेना जिसके सामने धूप में मकखन की तरह बिला गई वहाँ घाड़ी की भारतीय सेना क्या कर पाती? इस वारे में भारत की बरगी में तिब्बतों प्रतिनिधि मण्डल को बहुत गिकायत थी, पर जनरल गागाइ भारत की स्थिति को अच्छी तरह समझने थे।

मरे मित्रों का धमकाने के वारे में मैं ममयता था कि वह अपने प्रगतिशील विचारों के लिए अब भी रहामा के जेल में पड़े हैं। जनरल ने बतलाया— वह अब जेल से बाहर हैं। हाँ उन्हें रहामा से बाहर जान की आना नहीं है। वह तिब्बत का इतिहास लिखने में लग हुए हैं। मैं जनरल का समझाया कि यह साहित्यकार चित्रकार और दार्शनिक अद्भुत विद्वान् है। ऐसा जमा इस समय तिब्बत में दूसरा नहीं है।

कम्युनिस्ट तिब्बत में आए बिना नहीं रहेंगे और यह अपने विचारों के कारण मुखिया में होगा। इसलिए अपने साथ के रयाल से भी इसके साथ जाप लागो को अच्छा बताव करना चाहिए।

आज के चीन में कम्युनिस्टों के नानार्निंग के चार मील पर पहुँचने की बात मालूम हुई और यह भी चाइ काइ शेक के कोमितांग के भगोडे का तन में पहुँच रहे हैं। चीन की भूमि पर अब चाइ काइ शेक के दिन इने-गिने रह गए थे। अमेरिका में पानी की तरह करोड़ों नहीं अरबों डालर बहाए डालर ही नहीं अपना जेनरल भी दिए। अब स्वयं मदान में कूदने के सिवा चाइ काइ शेक को बचाने का चाइ रास्ता नहीं था। और उसके लिए अमेरिका तैयार नहीं था। दुनिया की जोको के यह सरलाज यह कह कर अपने मन को समझाते थे—चीनी कम्युनिस्ट मास्को के हाथ में नहीं नाचेंगे हो सकता है दोनों में भारी वैमनस्य पदा हो जाय।

अगले दिन जेनरल गांगड से कहने लगे—“चीन में कम्युनिस्टों की सफलता से मैं हम चिन्ता है, न देपु के भिक्षुओं की।” चिन्ता न हो, यह बात नहीं हा सकती लेकिन वह भवितव्यता के सामने सिर चुकाने के लिए तैयार थे।

उसी दिन सिंहल के मेरे सुपरिचित डा० अधिकारम् आए। बड़े मेधावी पालि के तरण विद्वान् थे। लन्दन युनिवर्सिटी से डाक्टर हाकर सीलान के किसी कालेज में प्रिंसिपल थे। अच्छे विद्वान् थे लेकिन बुद्धिवादी न होकर भावुकता में बह जानेवाले आदर्शवादी पुरुष थे। लन्दन में रहते एक बार हालण्ड में एनी बर्मेट के बनाए जगन्गुद कृष्णमूर्ति के सम्मेलन में गए और कृष्ण जी के उपदेश में बड़े प्रभावित हुए थे। सत्रह वष बाद आज भी कृष्ण में बसी ही श्रद्धा देखकर मैं तो कहने लगा—“धय है यह श्रद्धा क्या सालह सालों में दाना की बद्धि एक ही समान हुई।” डा० अधिकारम् अब पढ़ाने का भा नाम छाड़ चुक थे, उन्होंने अपनी भाषा (मिहनी) में सादर पर पुस्तक लिखने का काम हाथ में लिया था। इसमें मैं पूरी तौर से सहमत था। हम हिन्दी में मारे ज्ञान विज्ञान का लाना चाहते हैं, ताकि

हमारी जनता उस आसानी से और जल्दी परिचित हो, उसी तरह सिंहल में सिंहली भाषा में भी काम करने की जरूरत है। मेरे समय में तो भारत से भी अधिक वहाँ अंग्रेजी का बोलबाला था, लेकिन जिन समय (२१ फरवरी १९५६) मैं इन पत्रिकाओं को लिख रहा हूँ उस समय वहाँ का भाषण दल सिंहली को ही थी लका में सर्वोत्तम भाषा बनाने के लिए तुला हुआ है। डॉ० अधिकारम का अपना काम के लिए अब अधिक सुभीता होगा इसमें शक नहीं। सिंहल में रहते भी अधिकारम से मेरी मुलाकात होती रहती थी, और लंदन में १९३२ में रहते वक्त तो हम एक ही मकान में रहते थे।

इसी दिन एक शिक्षित पागल आ गया। पहले उसकी बात प्रकृतिस्य जैसी मालूम होती थी। उसने एक रुपया माँगा, दे दिया, वह फिर ऐसी बातें करने लगा जिससे मालूम हो गया कि दिमाग हाथ से बेहाथ हो गया है। हटने का नाम नहीं लता था। सचमुच एक आदमी दिमाग के विकृत हान से कितना विद्रुप हो जाता है, उसका मूल्य कितना तुच्छ और वह लोगों पर कितना भार हो जाता है। बलो भसा का नाक में नाथ डालकर काबू बरतें हैं घोंड़ के मुँह में लगाने उस बाबू रखने में सहायक हाती है। विनालकाय हाथी के लिए भा महावन के हाथ में अकुश होता है पर, आदमी के लिए अपनी बुद्धि छोड़कर नियंत्रण का कोई दूसरा साधन नहीं है।

३१ जनवरी तक मैं सारनाथ में रहा। राज सवरे भिन्न भिन्न दिशाओं में ६ मील टहलने के लिए चला जाता था। एक दिन पहाड़िया की ओर घूमने गए। इसे आडाधार भी कहते हैं अर्थात् असुरा न बड़े बड़े टीकरा में किसी काम के लिए मिट्टी ढोई, एक ओटा (टाकरा) वहीं पर झाड़ दिया, जिससे इतना विनाल टोला बन गया। यहाँ नीचे के खेतों में कृपाण काल की इटें दाख पड़ी।

अन्तिम दिन महेशजी आए। उनसे पहले ही से पत्र-व्यवहार था। और वह मेरे साथ रह कर लिखने के साथ कुछ सोचना चाहते थे। सुमनजी के

जाने से पहले आए होते, ता रह जात । जब तब वह स्वयं न हटें, तब तक मैं उह हठाना पसन्द नहीं करता था । महेश घर न लौटन का कुछ प्रतिज्ञा सी कर जाए थे । क्या करना चाहिए यह पूछन पर मैंने कहा, या ता क्या के खाने हुए अपना अध्ययन जारी रखता । यदि इससे वचना चाहत हा तो साधु हा जाआ । कठिनाइया की परीक्षाआ की भट्टी म जो नहीं तपा, वह पक्का नहीं हो सकता । महेश के लिए बनारस वाले मित्रो के पास कुछ परिचय पत्र लिय दिए । उस समय तो वह साधु बनन के लिए भी कुछ कुछ तैयार हो गए थे लेकिन पीछे वह रास्ता उन्हें अच्छा नहीं मालूम हुआ ।

द्वितीय विश्वयुद्ध म सारनाथ के आसपास क गाँव पक्क कोठा और इट क मकाना वाल हा गए थे । यहाँ की रेशमी साठियाँ और जरी क काम की बड़ी माँग थी । देश म भी युद्ध क कारण आर्द्र पसे की बाढ ने हमारी लान्नाआ क लिए इनकी जरूरत पैदा की थी, और विदेशी भी कुतूहलवश उनकी माग करते थे । काम करनेवाला को मूह माँगा दाम मिल रहा था । कोशरिया ने साग-सब्जी बोना छाडा और चुनाई स्वीकार की । जिसके पास थाडी भी पूजी थी, उसन कुछ दिना गहर म सीखकर अपने घर मे करघे बैठा दिए । दस बारह वय क लडक काम साखन और डारा उठान क लिए बनारस के कारीगरा के पाम चठे जात, जो उहे १४ १५ रुपया मासिक दे दिया करते । अब यह रोजगार ठडा पड गया था, और नये बने काठा की खरिमत नहीं थी ।

सारनाथ म रहत 'बौद्ध सस्कृति' का प्राय दा तिहाई मैंन लिख डाला, बाकी एक तिहाई को गान्धिनिकेतन म लिखना था । उस समय यही मालूम था, लेकिन शान्तिनिकेतन जान पर पुस्तक और बड गई ।

१ फरवरी की गाम का हम प्रयाग पहुचे । तीसर दिन कमल पचमी थी, मगम स्नान क लिए लागा की भारी भीड थी । रेल म बहुत से बटिकट यात्रा करनेवाले चड जाने थे । अब टिकट कलक्टरा की सहायता बना दी गई और साथ म पकड़कर सजा देन के लिए मनिस्ट्रेट भी चलत थे । अगर

यह प्रयत्न नहीं हुआ होता तो पहले दर्जे में भी शायद जगह न मिलती। इधर एक और भी भार मिर पर आ गया था। जीवन-यात्रा का दूसरा भाग प्रेम में था, और उसके काफी पत्ने मुद्रण या प्रकाशक की कृपा से लुप्त हो गए थे। लुप्त प्रयत्न को फिर से लिखना देखने के लिए सबसे बड़ी मुसीबत की बात है। लेकिन, क्या करता ?

डा० बदरीनाथ प्रसाद के यहाँ सीवान डी० ए० घी० स्कूल के सस्थापक और हेडमास्टर दाढ़ी बाबा मिले। उनका जीवन सचमुच त्याग और तपस्या का जीवन रहा। उन्हीं के अदम्य उत्साह से सीवान (छपरा) में दयानन्द स्कूल खुला और बढ़त हुए डिग्री कालेज बन गया।

फोटोग्राफी काम की चीज भी है और बड़ा सर्चिला गीब भी। आय को फ्लेक्स हम खरीद चुके थे। रूस से लाया लायका' (फ्लेक्स) लगे गया था, इसलिए उसी तरह के केमरे का ख्याल दिमाग में चक्कर बाटा करता था। श्री कृष्ण प्रसाद दर ने जब कहा कि कौडका लायका हमारे पास है यदि लेना चाहें तो ले लीजिए, मैं और कीमती केमरा लेना चाहता हूँ। मैंने पाँच सौ रुपये में उस खरीद लिया। सात वर्ष भरे पास रहते हो गया लेकिन उसका बहुत कम ही इस्तमाल मैंने किया। खरीदन के बाद जब इलाहाबाद में दूतन पर भी उसके लिए फिल्म नहीं मिली और यही बात पलने में हुई ना मुझे अपनी गलती मालूम होने लगी।

३ फरवरी को डा० बदरीनाथ प्रसाद की बड़ी लड़की इन्दुप्रभा का ब्याह था। इसीलिए मैं विनोद और स प्रयाग में आकर ठहरा था। डा० बदरीनाथ प्रसाद जाजमगढ़ जिले के कस्बा मुहमदाबाद के रहने वाले हैं। मेरा भी पितृग्राम मुहमदाबाद तहसील ही में है इसलिए हमारा घर का सा सम्बन्ध था। वारान में १८ आदमी थे। घर भरठ का रहनेवाला एक हीनहार मेघावी सादर का विद्यार्थी था। उस समय भी वह एम० एम सी० हो चुका था और आगे उसने नुकलियर (नाभिकणीय) भौतिकशास्त्र में डाक्टर की उपाधि ले अपन विषय में अनुसंधान का काम किया। बरानिया से घरानिया का अधिव हाना स्नाभाविक था, मुहमदाबाद के ता

सारे परिवार के लोग चले आये थे। पहली लक्ष्मी का ब्याह था इसलिए उसे बड़े उत्साह के साथ किया गया। आगन में मण्डप सजा कर उसे सजाया गया था। दोनों ओर के परिवार जायसमाज से प्रभावित थे, लेकिन मुन्शरक समाज में कलापक्ष की बड़ी जवहेलना होती है। उसी की पूर्ति के लिए कमकाण्ड में कुछ बातें बला दी गई थी।

पटना—४ परवरी को सम्मेलन भवन में जाकर परिभाषा निर्माण की गतिविधि देखी। डा० नखाने दान परिभाषा का काम करीब करीब समाप्त कर चुके थे और अंग्रेजी शब्दा के कितने ही प्रतिपाद भी बना लिए थे। उसी दिन प्रयाग से पटना के लिए रवाना हुए। सुमनजी साथ थे। पानी बरस रहा था। हम भोगते भोगते गाड़ी बदलनी पड़ी। ५ तारीख का ५ बजे मवेरे भी वर्षा हो रही थी। १० बजे हम पटना पहुँचे। रिक्शा लेकर दाना बीरेंद्र बाबू का दूतन निकले, लेकिन वह घर पर नहीं था। सयाग से पाम ही में प्रा० दवेन्द्रनाथ शर्मा का घर निकल आया। सार कपड़े करीब-करीब भोग चुके थे। देवेन्द्र जी के यहाँ हम ठहरे। देवेन्द्र छपरा के रहनवाले, वहाँ के एक बहुत बड़े संस्कृत पण्डित के पुत्र तथा मेरे घनिष्ठ मित्र प० गारखनाथ त्रिवेदी के दामाद थे। वह अपने पिता के योग्य पुत्र थे। संस्कृत के माहित्याचाय तथा माहित्य में विशेष योग्यता रखनवाले थे। सभी संस्कृत के पण्डित जानते थे, कि आजकल इज्जत पसे में है, और पैसा बमाना हाता लका का अंग्रेजी पढानी चाहिए। देवेन्द्रजी ने अपने कुछ रेडियो-नाटक सुनाए। बादम्बरा की “पारिजात मजरी” लेकर उहाने बहुत सुन्दर एकाकी लिखा था, जिसमें बाण क काव्य-सौंदर्य की बहुत अच्छी तरह रक्षा की गई थी। ग्राहजादा सलीम (जहागोर) द्वारा अबुल फाल-वध” भी बहुत मार्मिक नाटक था। उनकी लेखनी में शक्ति है गाना के मूल्यांकन में मूर्खम निणय की प्रतिभा अमाधारण है। संस्कृत के विद्वान् होने से वह संस्कृत के गाना का अनुचित मूल्यांकन करने के लिए नहीं करते।

गाम के वकन पटना के कवि और साहित्यकार केसरी, नवलकिंगोर

और मलिनजी से बातचीत होती रही। ६ तारीख को पटना नगर के गांधी सरोवर पर बिहार हितवी सभा की ओर से नगर-साहित्य सम्मेलन का वार्षिकोत्सव हुआ। उत्सव का उद्घाटन मुझे करना पड़ा। इसमें कवियों ने कविता, कहानीकारों ने कहानियाँ पढ़ीं। पटना एकान्तत हिंदी की नगरी है, इसलिए यदि वहाँ के तरुणा म इनका उत्साह लेखा जाए तो स्वाभाविक ही है। नगर के घनी घोंरी भी इस बारे में चुस्त हैं। अभी अंग्रेजों का गए डेढ़ वर्ष भी नहीं हुए हैं कि उन्होंने सड़को का अंग्रेजी नाम हटाकर उनकी जगह भारतीय नाम रख दिए। पटना को प्रधान सड़क अब अंगोक राजपथ है, जो गंगा के समानान्तर और समीप पटना नगर से बाकीपुर के छार तक चली गई है। मंगल राड अब गुरु गोविंद पथ है। सिक्खों के दाम गुरु गुरु गोविंद पटना में ही पदा हुए थे इसलिए पटना को अपने सुपुत्र का सम्मान करना ही चाहिए। अगले दिन १० बजे सीनेट हाल में एम० ए० के छात्रों के सामने राजनीति पर भाषण दिया। विद्या यिया की स्वच्छंदता में बूटे और सरकार अमनुष्ट हैं। पटना के कालेजा को तो इसके लिए बढ़ कर दिया गया था और सरसका से यह लिखकर देने के लिए कह रहे थे कि लडक अनुशासन को मानेंगे। अंग्रेजों का समय की बातें इनका जल्दी दाहराई जाएँगी इसकी आशा नहीं थी।

७ फरवरी को ६ बजे गाम को हमने दिल्ली स्याल्दह एक्सप्रेस पकड़ी। हमारे पहले दर्जे का कम्पाटमेन्ट में ही अक्ला था। सुमनजी दूसरे डब्बे में बैठे थे। रात भर की यात्रा थी। ट्रेन हावडा से स्याल्दह पहुँचती थी और इस लाइन पर गान्धिनिकेतन का स्टेशन बोलपुर पड़ता था, इसलिए हमारे लिए यह ट्रेन अनुपूल था। अगले दिन साढ़े ७ बजे गाड़ी चालू पहुँच गई।

शान्तिनिकेतन मे

स्टेशन से हम सीधे शान्तिनिकेतन पहुँचे, और पढ़ने काम की फिकर मे पड़े। शांतिनिकेतन मे बहतर भारत के सम्बन्ध मे जितनी पुस्तकें हैं, उतनी बल्कला यूनिवर्सिटी को छोड़कर भारत मे और कहीं नहीं मिलेंगी। तो भी इन पुस्तका को पर्याप्त नडा कहा जा सकता। अब हम २५ तारीख तक के लिए ५० हजार प्रसाद द्विवेदी के अतिथि थे। द्विवेदीजी क साथ दलनी घनिष्टता के साथ रहने का मड पहला अवसर था, रविन उसका यह अर्थ नहीं कि मेरी इससे पहले उनके साथ कम घनिष्टता थी। मैं उनकी विद्या, ऐलनी और निणय शक्ति का भारी प्रशंसक हूँ। वहा करता था हिने के साहित्यकार जब ऐसी गम्भीरता प्राप्त करेंगे, तब हिदी तजी मे आगे बढ़गी। द्विवेदीजी क परिवार के सभी लडके-लडकियां मरे मनारजन और महायता के लिए तैयार रहत थ। द्विवेदी स्वयं मरजूपारी कुल्बलक हैं बाँह उठा उठा कर जिनक लिए ऋषिया न कहा, 'तुम्ह मछली माम खाना चाहिण,' और वह आज ऋषि वाक्य के विभ्रंज जाएँ, यह कोई अच्छी बात है? पर अगली पीला फिर ऋषिया के राम्ते पर खली आई है, यह दखकर बडो प्रसन्नता हुद। 'नामासा मधुपर्क मवति' (बिना माम के पूय अतिथि का सेवा नहीं की जा सकती) ऋषिया की इस वाक्य मे द्विवेदीजी सहमत थे। बगाल मे माम सज्जान बगाली दण से बनाई मछली

जच्छी लगता है। मैं वहाँ उसी तों तर्जोह द रहा था। ऐस समापवर्मा बंधुजा के साथ इतना कम रहन का मौका क्या मिलता है मुने ना यही गिवायन थी।

गमिया के जान म अत्र बहुत दर नहीं थी। दिमाग म यही बात चक्कर काटती थी कि अब क साल बिचर जाएँ। डा० भगवानसिंह का निमंत्रण अनी के लिए था। बंगाल के एक जचल म हान क वारण कलिम्पांग भी अपनी ओर खीचन लगा था। ६ तारीख को डायरी म मैंने लिखा था—

गमियो म कलिम्पोंग जाया जाय । कलिम्पांग दिना पाकिम्पान जाए भी जा सकत हैं । वहाँ गायन नगरवासिया को भी समय देना पड़े किन्तु लाभ होगा—घरपारी हान क पाप से बच जाएंगे। धर्मोदय सभा का भवान है।—अनी म रहने पर मिट्टी क तऊ नौकर चाकर तथा पुस्तका की रक्षा का चिन्ता से भी मक्त हा जाएंगे। तिब्बती-गम्बुन का भी कुछ काम होगा। जना म जा एक जगह घर बनाकर बमन का मैंने घरपारी हाना कहा था लेकिन असल्ये अद्य म यह बात कलिम्पांग म ही हुई।

उम समय मिट्टी का तेल एक समस्या थी वह दुर्लभ था। गानि निकेतन म उसकी आवश्यकता नहीं थी। यदि १२ बजे रात क त्राण पढन लिखन का काम न हो। अब टहन्ते का नियम रोज सबेरे पूरा होने लगा। हम पाँच छ माल चूने जाया करत यं। १० तारीख का श्रीनिकेतन से एक मोल जीर आग तन गए। सुमनजी साथ रहने थे कभी-कभी दूसर विद्यार्थी भी साथ हा जात थ। १६ फरवरी का अत्रय तनी की जार गए। एक गलाबनी पहन यह नती रहन गहरी की, और बनी-बग नावें इसम हाकर आती थी। समुद्र क पास बालू मिट्टी क भर जाने से नती का मुह बन्द हा गया और फिर गारी धार पट गइ। नदी भी अत्र सग्ल्या हा गइ त्रिगके कारण जर्न एक आर यातायान का एक सस्ता साधन हाथ स जाता रहा वहाँ मलेरिया का प्रकाप भी बड गया।

साचा था कि दम घन्ग लिखन और छ घटा पुस्तका का पडकर सामग्री एवत्रिन करने का काम किया जाए। १० तारीख का मालूम हुआ,

गांधीजी के हत्यारे गौटमे को फांसी की भजा हुई, और दूसरे कितना का कड़ी सजाएँ हुईं। गौडस ता वस्तुतः दूसरा क हाथ का हथियार बना था। वह दूसरो की पेशवा बनन की जानाँथा का बलिदान बना। पेशवा जब छे सौ साल पहल भारत की समस्या को हल करन म सफल रही हुए और और इसी के कारण रसातल गए तो क्या अब पेशवा का पुन स्थापित किया जा सकता है ? हिन्दीभाषी क्षेत्र मे गहर के उच्च जाति के लोगा मे बहुत जगह जा प्रसार हुआ है उसका कारण पहले ता मुस्लिम लीग के बढ़ते हुए प्रभाव के विरोध के कारण था और अब कांग्रेस के प्रति अमनोप ही उसका सबल रह गया है।

१२ फरवरी की रात को भाजन प्रा० तायूगान के यहा हुआ। वह वर्षों म विश्वभारती म चीनी पढाते हैं और चीन तथा भारत क प्राचीन सम्बन्ध को हल करन का व्रत लिय हुए है। उनका परिवार इस समय चीन गया हुआ था जिस लाने के लिए वह जान वाल ये। चीना भवन म चीनी और चीन मन्वन्धी दूसरो भाषाया की पुस्तका का बहुत अच्छा संग्रह है। प्रा० तायू के प्रयत्न से बहुत अधिक लोग चीनी साहित्य म प्रगति नही कर सके, इसका कारण चीनी अक्षरा की कठिनाई है। जिस भाषा की पुस्तका के पढन के लिए पाँच-छ हजार अक्षरा का जानना जत्यावश्यक हा, उसमे कैसे आत्मी की रुचि और प्रगति हा सजती है? मैंन स्वय चार पाच सौ अक्षरा का सीखने-सीखते हिम्मत हार दी थी। सम्भव है यदि चीन म रहता ता आग बल जाता। लेकिन चीन की इस वणमाला म एक बडा लाभ यह है कि यदि हम अक्षरा क अर्थ का मस्कृत म समजने हा ता बहुत कुछ उसी तरह पल सकत हैं जमे जका के सबता से श्री शांति भिक्षु न तिथनी और चीनी म काफी प्रगति की है। यह खुशी की बात थी। मैं अपन नियम के अनुसार इतवार का छट्टा मनाया करता था, जा शांतिनिकेतन म बुधवार का होती थी, इसलिए अब मुझे भी वही क नियम का पालन करना चाहिए था। गर्मी बढ गई और उमक साथ-साथ मच्छरा की भरमार हा गई। मसहरी क भीतर लिखना-पढना जासान काम नही है पर

किसी तरह गुजारा करना पड़ता था। एक दिन अपने और मुमनजा के लिए कुरत, चादर तोलिया के कपड़े लिए। दर्जी ने कुत्तों को चार दिन में सीकर देन के लिए कह दिया। मेंहणा हान पर भी हमारा देग दूमरे देगा स अब भी सस्ता है।

१५ फरवरी का ५० हजारोप्रसाद द्विवेणी के लखनऊ से डाक्टर उपाधि पान के उपलक्ष में सभा हुई। गान्तिनिकेतन की इस सभा से मैं बहुत प्रभावित हुआ। उसे न आधुनिक कहना चाहिए और न प्राचीन अथवा वह दाना की कितनी ही बेकार की रुढ़िया से मुक्त थी। एक कलापूर्ण ढंग से सुन्दर चौक पूरा गया था जिस पर आम्रमजरी के भाय मिट्टी का सुन्दर कला रक्ता गया था। उसमें जरा-सा हटकर एक पतला लम्बा सा तरत पडा था, जिसके ऊपर पुराधा (सभापति) और दा एक और व्यक्ति बठे थे। सभा का आरम्भ और समाप्ति गवनाद स हुई। आचार्य क्षितिसेन पुराधा थे। बीच बीच में भाषण के साथ-साथ मधुर संगीत भी हाता था। इस एक सभा में ही रवीन्द्र का महत्ता साफ दिखाई पडती थी। सबसेमूर्खीन सांस्कृतिक प्रगति कस की जा सकती है इसका उदाहरण उन्होंने विश्वभारती के रूप में रक्खा था। मुझे इस बात का अफसाम रहा कि निर्मात्रित होने पर भी महाकवि के जीवन में मैं यहा नहीं आ सका। और न जबसर मिलन पर भी उनके दगन कर पाया।

गान्तिनिकेतन की खादनी मुझे बहुत प्रखर और सुन्दर मालूम हाती थी। गायद वहाँ के वातावरण से बहुत प्रभावित हान के कारण तथा महा कवि के सामने उपस्थित न होन के अपराध के खयाल में यह बात थी। रात भर पक्षिया के मनोहारी कलरव के बारे में क्या कहा जाए? कायला ने तो अलण्ड व्रत ल रक्खा था। यह सद मुक्त की चिडिया यहाँ गर्मी में मरन क्या आती है? आम्रवानन में इस वक्त चारा आर मजरी ही मजरी दिखाई देती थी जिसके पास जान से उसकी मधुर गंध मचमुच ही मन को मस्त कर देती थी।

मैं बौद्ध-मस्त्रुति के लिखन में तमय था। पुस्तकाध्ययन तथा

बृहत्तर भारत के गम्भीर विद्वान् श्री प्रभातकुमार मुखोपाध्याय मेरी हर तरह की सहायता करने के लिए तयार थे। ता भी परिभाषा निमाण की आर मे मेरा ध्यान हटा नही था। बनारस युनिवर्सिटी के प्राफेसर राम चरणजी ने जब अपन पत्र मे बतलाया कि काय सम्बन्धी (ग्लाम टक्नालाजी के) पारिभाषिक गान्त जमा हा गए, ता बड़ी खुशी हुई।

प्रयाग और पटना मे अभी जाडा खतम नही हुआ था लेकिन यहा ता जाने के साथ ही वह विदा हा चुका था। शान्तिनिकेतन के वातावरण मे 'बौद्ध-संस्कृति' लिखन के समय मुझे खयाल आया अब हमार दूसर चार घाम बनन चाहिएँ, जिसमे उत्तर मे तुंगहाग, पूर्व मे अकारवाट दक्षिण मे वाराणसिपुर और पश्चिम मे वामियान हा। फिर ६८ ताय भी बनाने हागे, जा सभी भारतीय संस्कृति मे प्रभावित दगा मे बिखर रहें। श्रद्धालु भारतीय इन तीर्थों और धामा के दरस-परस के लिए जाएँ।

हम मलेरिया की भूमि के नजदोक थे, मच्छरा का प्रहार चल ही रहा था, इसलिए २२ फरवरी को यदि बुखार थाकने के लिए आया, ता अन हानी बात नही थी। मैं कुनन की दा टिकिया उस थमा दीं, साका, देखें वह इतन से तृप्त हा जाता है या कल फिर आता है। दरअमल उम वक्त बुखार या किसी चीज का स्वागत का समय नही था। ८ बजे मबरे मे ठेकर १२ बजे रात तक बीच के दा घंट छाडकर १६ घंटा जुता हुआ था। मुझे मुमनजा का भी बहुत धयवाद दना चाहिएँ, जा कंध-म-कंगा मिला कर डट हुए थे। बेल की जानी मे यदि एक गरियार निकल जाए, ता काम नही बनता। लिखी हुई कापिया का शान्तिजी दाहरात भाषा के दुवाग भाजन और हैडिंग आदि का सुभाव दन जाने थे।

२३ तारीख का कला भवन के नए घर मे बने भित्तिचित्रा का दखन गए। कविगुरु का आश्रम कविता और कला के लिए विशेष तीर मे महत्व रखता है। कला का प्रेम मेरा गायद गम्भीर नही था, इमालिएँ इस पवित्र स्थान के देवता रष्ट हा गए थे। एक चित्र का दखन के लिए मैं मेज पर चला, उतरन लगा, ता दवताआ न घोर मे स्टूल का टंगा कर दिया और मैं

लिए दिए जमान पर गिर पडा। पर, दबना अपन रोप को केवल मजाक स ही पूरा करना चाहने थे। इसलिए गिफ तीन चार जगह चमडा छिला और दा जगह खून की बूँदें टपनी। सचमुच वह स्थान इतना मकरा था, और नीच जमी चीजे थी, उसम जचानन गिरन पर मरा सिर फूट सस्ता था। हडडी भी टूट सस्ता थी। कविगुरु के सम्पर्क मे आकर यहाँ के श्रेयता इतन धूर नहीं हा ससने थे। यहाँ से उनम कवि न मानवता का प्रचार किया था फिर दसका पत्र क्या न हाता ? नातिनिवेतन म रहने जिस तरह मे अपन काय म व्यस्त था उसम कारण दिल खालकर सभी चीजा का देखना मुशकल था। पर मैंने उधर से अपनी आँखें मूँद नहीं रखी थी। प्रभात बाबू क प्रति कृतनता प्रकट करन क लिए मैंने कहा, यह पुस्तक आपको ही अर्पित करु गा। प्रभात बाबू ने अपने अमुद्रित बहुत म लेख मुने इस्तमाल करन क लिए लिए जिहान मध्य एशिया के बार म बहुत सी जानकारी प्रदान की।

२४ फरवरी की शाम को जाद्यश्रेणी (१२ वष तब क बच्चा) की सभा देखी। इसम भाषण निबन्ध कहानी, स्वरचित पररचित कविता का पाठ हुआ। काफी बडी श्रावृ-मण्डली थी। बच्चा न गीत भी गाए नस्य भी किए। हृष प्रकट करन के लिए ताली पीटने की जगह नातिनिवेतन मे 'साधु साधु' कहा जाता। प्राचीनकाल म भी ऐसा ही किया जाता था इसीस साधुवाद का द हमार यहाँ चला। धर्मवाद भी प्राचीनकाल म हृष और कृतनता प्रकट करन के लिए 'धर्म धर्म' क भावोदक का ही परिचायक था जिसक अर्थ को हम पूरी तरह न समझकर 'धर्म धर्म' बर्न की जगह धर्मवाद कहन हैं। नातिनिवेतन म चतुरस मानवता की शिक्षा दन का प्रयत्न हा रहा है। यहाँ प्राचीनता है पर मूढता नहीं नवी नता है किन्तु छिछलापन नहीं, कला है किन्तु कामुकता नहीं, स्वतन्त्रता है किन्तु उच्छृङ्खलता नहा। इही भावा का लेकर मैं २५ फरवरी का यहाँ से बिदा हुआ।

वर्धा—उस दिन सात बज सवेरे बालपुर स्टेशन गया। कवीन्द्र क एक

मान पुत्र रथाद्र बाबू भा उमों टून मे जान वाले थ । व्ट दर म पहुँचे और सामान न चढ़ पाया । रलवे क एक साधारण नीकर न कहा— जिसक कारण सब कुछ है, उसका सामान छूट कम जागया । सबमुच ही गाजी खडी रही । बालपुर की महिमा रथीद्र क पिता न ही ता स्थापिन की थी, फिर उनक लिए क्या इनना भी नहीं किया जाता । उना दिव्य म रथीद्र चाबू अपनी पत्नी प्रतिमात्री क साथ चले । गातिनिकतन म रहत भी मैं उनम मिलन नहा जा सका था इमके लिए खुद प्रकट करना जरूरी था । मैं कबाद्र क ही बद्ध विद्या क दखन का आती था, जब उनक पुत्र और बधू का भा बद्ध दख रहा था । कमे एक पीपी दूमरी पीडी का चुपचाप पलानुकरण करतो है ? मुचे उस समय स्याल आता था, विद्व भारती म रथीद्र कलकत्ता विश्वविद्यालय म श्यामाप्रसाद मुखर्जी हिंदू विश्व विद्यालय म गाविन्द मालवीय इम तरह पिता के स्थान पर पुत्र का स्थान ग्रहण करता क्या हा रहा है ? क्या हमारे नेग की अपनी यह कारी बीमारी है । माधुआ क महीं विशेषकर प्राचानकाल क नान्द्या त्रिशमालि आदि क विद्यापीठा म याग्य गुरु क स्थान पर याग्य गिप्य बटन थ और यह मभव नी बा । किन्तु याग्य पिता का पुत्र भी याग्य हो यह काइ नियम नहीं है । मैं यह नहा कहता, कि तीना अपने पिता की याग्य सन्तान नहीं हैं, पर यह प्रथा मुचे मटवता थी । कलकत्ता पट्टचकर फिर हावहा म वर्षों क लिए ट्रेन पत्रहनी थी । नीड बटुत थी । सुमनजी का भा जगह मिल गई और ४ बजे गाम को हम वर्ग स रवाना हुए । २६ के मवर गाडी विलासपुर मे छटी थी । और मैं समय रहा था, विलासपुर से रापपुर पहल आग्या । गर छतामगट का हरी भरा पहाडी भूमि से हान टूम पश्चिम की आर बटने लगे । ४ बजे नागपुर और ६ बजे वर्ग पहुच गए । गष्ट भापा प्रचार समिति का सम्मलन हा रहा था जिसक ही लिए आतद जी क आयत् पर मैं आया था । हिन्ग नगर म पहुँचन पर दया सभा चल रहा है । विनाबा नागरा क पग म बाटे और मस्कृत क गत्य का लेना भा व्ट अच्छा समझन थ । मश्रूवाला गाधारा क दानिक है । दानिक की दान

यदि स्पष्ट हा ता वह दार्शनिक ही क्या ? हिंदी हिंदुस्तानी, नागरी उर्दू के सम्बन्ध में उनका कहना था हम नेहरू का मध्यम्य मान लें। मुझ भला कम पसंद जाना, जिस बान में नेहरू का ज्ञान नहीं के बराबर है और जिमें विषय में उनका निष्णय पहले ही से मालूम है उसे यह काम किस सोपा जाए ? हाल में नेहरू जीर राजद्र बाबू के कुछ लख प्रकाशित हुए थे जिससे लिपि और भाषा सम्बन्धी मतभेद के कम होने का संकेत मिल रहा था। वस्तुतः अब संविधान में हिंदी का मायता देने की बात तय सी हा गयी थी जिसके कारण भी कुछ विचारा में परिवर्तन होना ही चाहिए था। सम्मेलन में २५० प्रतिनिधि आए थे जिनमें डम्फर (मणिपुर) से भाव नगर (सौराष्ट्र) तक के राष्ट्रभाषा के कार्यकर्ता भी थे। राष्ट्रभाषा प्रचार समिति प्रतिवष जागे बरता जा रही है। दखा और भी कितने ही नए मकान बन गए हैं। १३ एकड़ भूमि समिति के पास है एक दोमजिला जीर कितने हा एकमजिला मकान तयार हो गए है। प्रेस भी बढ़ा है किन्तु उतन से मुझ सताप नहीं था। मैं तो समझता था आग चलकर प्रकाशन और प्रचार का मुख्य स्थान देना हागा। समिति प्रांतीय साहित्य जीर विश्व साहित्य के अनमोर् ग्रंथा को हिंदी में लाकर बहुत बटा काम कर सकती है।

प्रयाग—२८ का ही ट्रेन पकड़ी। अगले दिन १ मार्च का सवेरे वह इटारमी में थी। हम उमी पसिजर में साढे ११ बजे जबलपुर पहुंच। बल कुछ हल्का-सा ज्वर था किन्तु आज बिल्बुल नहीं था। दाँत में दद हा रहा था गायद उसके कारण बुखार आया। बनारस से ली दाँत की दवा बडी उपयोगी सिद्ध हुई। दाँत के दद में भोजन के लिए मन क्यों करता ? रेस्तारा कार में भारतीय भाजन केवल निरामिष मिलता था।

रात के १० बजे कल्कत्ता मेल प्रयाग पहुंचा और सांटे १० बजे हम डा० वरनीनाथ प्रसाद के यहाँ पहुँच गए। प्रयाग में अब २ अप्रैल तक के लिए अर्थात् एक महीना तक जमकर परिभाषा का काम दखना और बौद्ध संस्कृति का दाहरान उसक कितने ही अंगों का हिंदुस्तानी एक्डमी की सभाओं में पढ़ना था।

२ तारीख को टहलन गए ता दवा किले का पडा खुना हुआ है । मालूम हुआ सरोजिनी दही का दहात हा गया । सरोजिनी न देश की सेवा की, स्वतंत्रता का स्वप्न देखा और अब स्वतंत्र भारत म मरी ।

इन्कम-टेक्स जफसर ने मिररर पैदा कर दिया । हमारे जैसा की आम दनी हा कितनी थी और उनका भी उतना ही परेगात किया जाता है, जितना चोरबाजारी कराडपति मेठा का । सबसे बड़ी समस्या थी रुम म अपने प्रवास के समय की आमदनी पर टेक्स दना ।

डा० बदरीनाथ प्रसाद इधर कुछ दिना से प्रयाग विश्वविद्यालय म अमृतुष्ट थ । गणित म बहू भारत के आघे दजन सबभेष्ट विद्वाना म स है जब याग्यता म उनस कम लाग निकडम के बल पर आगे बढा दिए जाएँ ता मन म विरक्ति जानी स्वाभाविक थी । पटना विश्वविद्यालय न उहें बलाया और वह वहाँ जान के लिए अब तयार थ । यद्यपि वहाँ सर्वोच्च स्थान मिला था, लेकिन दरबारी वातावरण था । मंत्रिया और दूसरा ब दरबार म हाजिरी दना बढी बाव के बस की बात नहीं थी, इसी कारण पोछे वह वहाँ ठहर नहीं सक, और फिर प्रयाग लौट आए ।

कल्पियाग जाना ही निश्चय हुआ । अनो जान के स्थाल मे हम गिमला म अपनी बिननी हा चीजें छोड आए थे उहे अब नागाजुन जी का भेजकर मगाना था ।

पचायतों का चुनाव—उत्तर प्रदेश म वालिग मताधिकार के अनुमार ग्राम-पचायत का चुनाव हुआ था । पूर्वी जिला म चहल-पहल नहीं, बन्वि कहना चाहिए बडा जाति वाले बडे सक्ट म पड गए । थी रामनाथ त्रिवेणी ने अपने गाँव टुमौरी (गाजीपुर) के तीन गावा के चुनाव के बारे म कह रहे थे—३६ मम्बरो मे ४ ब्राह्मण और १ भूमिहार केवल ५ ही बडी जाति के आ पाए, बाका सभा नाह जाति के हैं । घाडा लगनवाला कानू भुलइ साहू सभापति बन गया, भूमिहार उनके नीचे उप-सभापति कम बन ? महीने भर समझौता करने का कार्गण होती रही । बाटा का सत्या मालूम हा थी । वोटदान का क्या परिणाम हागा, यह भी स्पष्ट था । बडी जात

वाला के पास पैसा था और नाहा के पास उसका जमाव । हरक पंच का जमानत जमा करनी थी, बचार कहा मे लाए । कानून बनानेवाले जान-बूझकर इस तिकड़म को रकम हुए थे । भुलाई साहु ने १२ के लिए ६० रुपया जमा कर दिए । बड़ी जात वाले धमकी देन लगे—तुमसे हम खेत नहीं कटवाएंगे, हल नहीं जुतवाएंगे तुम्हें खलिहान रखन के लिए जमीन नहीं दग । तुम किस रास्ते चलाग हम अपने रास्त म चउने नहीं देंग । उप सभापति वामुदव राय चुन गए, जो कि बहुजन के पक्ष म थे । अदालती पंचा म एक ब्राह्मण और एक भूमिहार बामी तीन नाह जाति के चुने गए । उनके पंडाम के डेटावर गाँव म बड़ी जात वाला न गुम्म म जाकर चुनाव का वायवाट कर दिया । प० गणेश पाडे ने अपन बलिया जिले की बात बडे करण शक्ती म बतलाई— नाह जाति मारह जतिया वज नेवहा सब जगह उठ खडे हुए च । ग्राम सभाया के चुनाव म उही की जीत हुई । डा० उदयनारायण तिवारी अपने गाव की खबर उतनी गात्र-पूण नहा बतला रहे थे । वहा उनके अनुज तथा हाइ स्कूल के अध्यापक विश्वनाथ तिवारी ग्राम-सभा के सभापति बन शायद अदालती सरपंच भा वही बन । गणेश पाडे को बडा मुश्किल मे जपन यहा के राजपूत सूबदार मेजर का सभापति बनान म सफलता मिली । बनी जात वाला का चार हजार बप से भगवान् की बार स अधिकार पट्टा मिला था । मैंने कहा— अत्र वह अधिकार पट्टा जाली साबित हो रहा है । इस तरह से असफूठ हान के बाद अब बड़ी जात वाल और तरह के तिकड़म रचन म लग हुए थे । कभी कहने थे सरकार पंचायती कानून का ताड डालन वाली है । कभी कहते कल्कटर और जिला-बोर्ड के सभापति सेक्रेटरी नियुक्त करेंगे इस लिए जब भी हमारी बात रहेगी । यह भी मालूम हुआ कि लागा न बूडा का नहीं, बल्कि तरुणा का अधिक पंच चुना । मैंने गणेश पाडे जी से पूछा— बनी जाति की स्त्रिया ने ता पदे स निक्लनर वोट नहा दिया होगा । उन्हने कहा—लाकर वाट न निलवाते, ता क्या करत ? नाह जातवाला

म ता पदा नहीं था, वह खुले मुह आकर घाट दे देता, फिर तो रही-सही आगा भी चली जाती ।

परिभाषा के काम मे श्री सेनगुप्त का आना निश्चित सा था । ६ माच का डा० अट्ट का भी पत्र आया । दिल्ली म उनक कोइ प्रबन्ध नहीं हुआ, इसलिए वह जाने का तयार हैं ।

१० माच को मर अनुज श्यामलाल अपन बृद्ध मित्र डीहा व जावू पल्लघारी सिंह के साथ आण । पल्लघारी बाबू उस इलाके के ७५ माल के एक सम्मानित पुरख । पुराने जमान को उहाने दगा था जत्र नए जमान का भी देख रह थे । पोती की गाली बरनो थी । लटका यही यूनिवर्सिटी म पढ रहा था उमे ही तबन क लिए आए थे । श्यामलाल से आजमगढ जिर की पचायता के बार म कुछ मालूम हुआ । वह बहुत वर्षों स भग्पच होत जाण थ । पुराने युग क लिए बह दान्य चकिन थ । मिडल पास म और मुकदमे बाजी म नाम भी गिरला हुआ था । जत्र नए चुनाव म मभाषनि गाव का ही भर तरण हुआ । मैंन उनम एक बार कहा था—अपन मनदूरा की भूना न रहन दन क लिए गर्मी म परती पडे खेता का मुफ्त चीना वान क लिए द दा । पर यह ता नानजबेकार जाणशवाश की बात थी । मिचाई क लिए उहाने लावर लाह का रेट्ट लगवाया था—बाप न पहल पहल गाव म बिदगी ऊब लगाइ थी । पहल-पहल परवर काटहू की जगह पर लाह का कोटहू लाए, फिर बटा अगर रेट्ट मा नद चीज लाए, ता अचरत्र की बात नहीं । पर काइ अब अकले समृद्ध हान की आगा कर ता उसका माग अकटन नहीं रह मरता । आतिर सिचाई क लिए रेट्ट गाव स दूर क कुए पर लगाया गया था जरा मा वही स हटन मे लाग रेट्ट का बिगाड दन । उनक यहा ३५ पचा म सिफ ७ बटी जात के चुने गण थे । बाबू पल्लघारी सिंह कह रह थे नाह जानि के पाम राज-काज चलाने क लिए बूब कहा से आणी ? श्यामलाल जो राम न रह थे—छाटी जान चाण गासन-यत्र को सबर कर देंगे ।

यह ता बचार गात्र क लाग थे । डा० जमरनाथ या जमे जानकार

लाग भी जब वयस्क मनाधिकार खतर की चाज बतला रहे थे, ता कहना पडेगा—“गिंग यापक तम (बग-स्वाध, तेरा बडा गक हा) ।

१०, २० और २१ तारीख को तीन दिन 'बाद्ध मस्कृति' परमैन भाषण दिए । उस समय एक तरह का दिमाग म खुमार-सा मालूम हाता था, जो कि डायमटीज के कारण ही था पर मैं इस अभी पूरी तौर त समझ नहीं पाया था । मतलब था रोज नियमपूर्वक इ सुलिन लना ।

अबके साल की भी हाली (१५ मार्च) यही पडी । रग डालने का काम लडका ने एक दिन पहले ही से शुरू कर दिया था । सेनगुप्त की भी चिट्ठी आ गई कि मैं १८ तारीख को प्रयाग पहुंच रहा हूँ । सम्मेलन अभी इस वक बारे म २० तारीख को फयला करने वाला था । सुमनजी आगे काम करने मे अयमय थ । महंजी कागी म साधु बनन व बारे म साध रह थ, इस लिए उह आन के लिए लिख दिया । १६ तारीख का गिमला स सामान लेने व लिए नागाजुनजी चल गए । २० की स्याई समिति की बैठक म परिभाषा-योग के सम्बन्ध म बातें हुई, और मुख्य महायका का तीन सौ रुपया मामिक सफर म सेव ड क्लास का टिकट और दस रुपया राज भत्ता देने का निश्चय हुआ । डा० भट्ट का पत्र कही गुम हा गया इसलिए उनका पना नहीं मालूम था, कि सूचित कर सकू । उनक पत्र आन की उत्सुकता म रहा ।

२२ का नागाजुनजी गिमला म सामान ले जाए । कलिम्पाग मे भिक्षु महानाम और श्री मणि हृष ज्याति का लिख दिया कि हम ३ अप्रैल को यहाँ म चल रहे है । कलिम्पाग रवाना हान स कानपुर और लखनऊ म जा काम द जाए थ, उनक वार म जानन के लिए सेनगुप्त जी का २५ को भेज दिया । श्री मणि हृष ज्याति क पत्र स मालूम हुआ कि उनक पिता साहु भाजुरल और भिक्षु महानाम कलिम्पाग म है, कटिहार म गाढी नक्सलवारी तक ही जाता है । अभा आसाम का जाहन वाली लाइन तयार नहीं है । लेकिन नक्सलवारी म सामान क लिए उनकी माटर आइ रहगी । डा० भट्ट की भी चिट्ठी आ गई वह आन क लिए लैया थ ।

२८ नारोख का अनुज से भी बढ़कर मरे प्रिय यामेगदत्त पाडे आए । छ ही बप पहले उह मैं अपनी जन्मभूमि म दखा था । मुयसे कुछ महीन छोट थ, लेकिन अब बूढे और दुबले पतल हा गए थे । कहा वह बचपन और तरणाई का शरीर और कहा यह तीला-ढांग ढाचा । बहुत देर तक बाने होना रहो । पचायत क चुनाव म छाटी जातिया के जागे बढने से वह भी निराग थे । उनके गाव बछवल म भी "नाहो का ही बालबाला था । उनम गिक्षा नही है लूट पाट का आदन है । कैमे वडा पार हागा । उनक अपने घर म चचेरे भाइ विभूति अपा सग भाइया स न पटन के कारण इनक साथ रहत थे । हमारे यहा हल म भसा जातना बुरा समझा जाना था—' भैसा जाने लोहिया खाय" लक्ष्मी क नाग का सीधा उपाय माना जाना था लेकिन अब बँल बडे भैहो हा गए, इमलिए भैसा जाता जान लगा । कह रहे थे, अब ब्राह्मणा का हल भी जोनन के लिए मजबूर हाना पडेगा ।

२९ का सैनगुण आए । सबम अच्छा काम वानपुर म कौगल जो न किया था । कौगलजी का उमकी लगन भी थी । लखनऊ मे थाडा-सा काम हुआ था । उसी दिन महानारायण भी चले आए । १ अप्रल को डा० भट्ट भी पहुँच गए । अब हमारे तीना माथी प्रयाग म थे । परिभाषा-सबधी पुस्तका का सम्मलन पुस्तकालय स और दूसरी जगहा म जमा किया जान लगा । छोट-बड १६ टुक हमार साथ थे । २ अप्रल को ६ बक्का का बुक करा आए, ३ अप्रल का हम कलिम्पाग जान क लिए तैयार थे । मुझे गर्मी परगाम कर रही थी, और डायबटीज म मिल्कर वह दिन म एक तरह का सुमार पग किए रहनी थी ।

कौलिम्पोंग में

३ अप्रैल का श्री लक्ष्मीदेवी न चारा मूर्तिया का उलपान कराया और हम अपने सामान के साथ उठे फटे रामबाग स्टेशन पर टाटो लाइन पर इन गए। सामान लद गया। मोटों रिजब थी इसलिए उनकी दिक्कत नहीं थी। बस से मित्र मित्र आए। दारागज स्टेशन पर डा० उदयनारायण निवारों जा गए। गाड़ी बनी। बनारस में भोजन कर लिया, बलिया में आगे बसुलहा स्टेशन में अंधेरा हो गया। पहरे ही से माडूम था इसलिए छपरा स्टेशन पर घुपनाथ जी भोजन के साथ जाए, कुछ देर तक बातचीत होती रहा। वह रह थ अब सार परिवार का साथ रखा मुश्किल हो गया। संयुक्त परिवार में गुण भी हैं और दाप भी। गुण यही है कि जिमना नाम न मिले उमका भी गुजारा हुआ जाना है, पर यदि सभी पर से परे मिलाकर चलने के लिए तयार न हो ना अच्छे भी हो जाते हैं। उमका चरना मुश्किल भी है। वह साम्यवाद चाहता है जब कि आधुनिक सामाजिक व्यवस्था हरक व्यक्ति को दूसरे का छाटकर जाग बूझने का प्रेरणा देती है। पुराने समय में चला आया कानून भी अमरुम संयुक्त परिवार का पक्ष पाली नहीं है अगर ऐसा होता तो उम चाहिए था कि एक परिवार में पैदा होने वाले सभी बच्चा को बापा के सम्बन्ध का ख्याल न करके घर की सम्पत्ति में बराबर का हक मिलेलाता है। एक भाई के पांच लड़के और

दूनर का एक हाना है, एक की माँ समयन लगती है कि मरा ता आगे का टक है, और यह पाँच जमम सखा रह हैं।

बहुत दिना तक इनक परिवार म एक साथ काम चला आया था। घूपनाथ जी के चचेरे भाइ और घर क मुखिया बाबू देवनारायण सिंह घर भर क बच्चा पर एक-भी हस्ति रखत थे, घूपनाथ जी का भी ब्रमा ही स्थाल था, और उनक जीर भाइया का भी। पर अगली पीढ़ी का निभना मुखियन था।

१० बजे क जासपाम हमारी टून मुजफ्फरपुर पहुँची। यहाँ म घरम हल्ला गुन हा गया। गायद नेहू जी आए थे। फिर क्या? आसपाम क कई मौल के दानायीं मुपन म रल म चडकर आए थ, जब वह लौट रहे थ। फिराया नही दना है भा जैना टा पट्टा दर्जा बसा हा तीसरा दना। हमारे टून भी भर गल और भुक्कल से अपने बठन भर की जगह हमारे पाम रही। डर लग रहा था सामान म स किमा चाज का उठाए नाई चल न पड। मचमुच ही एक आत्मा चप्पल पहन कर चलन लगा। नजर प गद टाक दिया, नही ना वह चला हा गया था। सिफ डब्र के नीतर ही लाग भर रही थे बन्नि छता परभी ल हुए थ। आखिर स्प्रिग इतन बाचें क लिए बाा नही था। जाग जातर मन जबाब द दिया आर गाडा बडो मुदिर मे ममस्तीपुर पहुँच सकी। बम्बून हमारे ही इत्र का ऐसा हाना था उमे काट लिया गया। सामान निकालतर प्लेटफाम पर बैठ गए। साचा था प्रयाग स बत्कर आगम स मापे कटिहार पहुँच जाएग, लकिन नपा मपचार म फँस गई। ४ अप्रेज का भवरा हुआ। जल्दी ही त्याग का पना लग गया, और कितन ही परिचित आ मि। रल क दरगाा बाबू रामावता नारायण ने घर चलन क लिए बहुत आपह किया, लकिन हमारे कहन पर बही उहाने आनिष्य किया। इसम गर नही कि अगर उहाने सगपना न का हली, तो गार्गपुर क एकमप्रेस के पट्ट दर्जे म भी जगह न मिन्ती भाड बटून ज्यादा था। बराना म कुछ भोड रुम हुई, बगूमगव मे वह छोट गई। यहा कटिहार निवासा आ महावीरप्रसाद माव-

डिया और श्री विश्वनाथ गमा वकील हमारे डब्बे में आए। परिचय हुआ, कटिहार भी अनात स्थान नहीं रह गया। मावडियाजी अपने घर लें गए। आगे की गाड़ी १० बजे रात का मिलने वाली थी। मावडिया जी व यहाँ भोजन हुआ और कुछ देर तक गाण्ठी भी। उनकी तल जोर आटे की जमना मिल है। मकान भी पास है। मारवाड छाड़कर मनस्वी कार्याधी लोग कहीं कहीं तक फल गए हैं जोर वतमान पीने का ता मारवाड भी परलेग मालूम होता है।

रात का ट्रेन पकड़ने पहुँच। कटिहार में ता मालूम होता है, बारहा महीन ही भीड़ रहा करती है। पहले दर्जे में भी जगह मिल जान पर हम अपने भाग्य को सराहना पटा। रला की व्यवस्था अभी बहुत गड़बड़ थी। डब्बे पुराने हो गए थे, जोर लोग भी रेलवे की सम्पत्ति का बरबाद करने में आनन्द अनुभव करते हैं। बिजली के लट्टू और स्विच गायब कर देते हैं। हमारे डब्बे में अधेरा गुप्प था। किशनगज में ३ बजे रात का हमारी ट्रेन पहुँची। किशनगज अच्छा बड़ा व्यापारिक कस्बा, और पूर्णिया जिन्हे व पूर्वी भाग का सदर मुकाम है इसी को बगाल में मिलान पर लोग में भारी उत्तेजना फली थी। भीड़ कुछ कम हुई। रात को वर्षा हो रहा थी जिससे जमीन भीग गई थी। किशनगज से नकमलवाडी की लाइन वस्तुतः दार्जिलिंग हिमालयन रेलवे की थी जिसका ही काम लायक बना दिया गया था। कटिहार से आसाम जाने वाली रेल पाकिस्तान में पड़ गई थी, इसलिए उधर से रेल का यातायात रुक गया था। आसाम से जाइन व लिए सिलिगुड़ी हावर रेल बन रही थी, जिस कुछ महीने बाद हमन लौटते वक्त इम्नेमाल चिया। गाड़ी भी धीमा धीमी चल रही थी, ५ अप्रैल को हम वहाँ पौन ११ बजे पहुँचे।

भिक्षु अनिरुद्ध स्टेगन पर माटर लिए मौजूद थे। कलिम्पांग पहुँचने के लिए हम निश्चिन्त थे। शक में खवाए छ बकना में एक बकना ताड दिया गया था। रेलवे वाले किमी चीज की कपो पवाह करने लगे और रेलवे कम्पनी काइ गारटी देन के लिए तैयार नहीं। माटर पर सामान

रखवाया, हम चारो आदमी बठ गए। रास्ते मे रेलवे सडक पर काम होते देखा। गामडोगरा का हवाई अड्डा सडक से दाहिनी ओर छूटा, जहा रोज कलकत्ता और आसाम से विमान आने जाते रहते हैं। रेल की सडक बनाने वाला मे पजाबी मिस्त्री काफी सरया म थे। सिलिगुडी पहुँचते पहुँचते अब चाय के बडे बडे बगीचे आ गए। भदान म भी चाय हानी है और परिमाण मे प्रति एकड बहुत अधिक, पर मूल्य उमका उतना नही मिलता, जितना दार्जिलिंग के पहाडो की चाय का।

सिलिगुडी मे पीने पाच रुपए म चारा आदमियो का भोजन हुआ जिनमसे एक ही निरामिय भेजे थे। इमे सस्ता ही कहना चाहिए। इस शहर का तिबत जाते आने कई बार मैं देख चुका था। अब की ११ वष बाद आया था। देग क विभाजन के कारण शरणागिया का रेल भी आ गया, फिर सिलिगुडी की जनमख्या क्या न बढ़ जाए? कलिम्पोग जाने वाली सडक पर दूर दूर तक दूकाने, माटर मरम्मत के मिस्त्रीवाने और छोटी माटी फक्करिया बन गई थी। पहले सिलिगुडी गाम का बैठते थे, और सोय सोय सवेरे कलकत्ता पहुँच जाते थे। अब सिलिगुडी से कुछ ही मील पर पाकिस्तान की सीमा थी इसलिए इस लाइन मे जाना बिदेग से हाकर जाना था, तो भी अभी जाने जाने म रुकावट नहीं थी।

कलिम्पोग—पीन ४ बजे हम कलिम्पोग पहुँच गए। वही पहाडी पक्की सडक थी, जिमे कई बार हमन देखा था, और उसम कोई परिवर्तन नही था। बाजार से पहले ही घमोंदिय बिहार आया। यहाँ के थडालु बोद्धा—जिनम थी मणिहृष योति का विनेष हाय था—ने एक बगने का खरीदकर उमे बिहार का रूप दे लिया। यहाँ हमारे रहन का प्रबन्ध था। तीन चार भिक्षु पहले स रहते थे, और अब हम चार और अभ्यागत आ गए। बकम मभाल लिए गए, किताबें उपयोग क लायक सजा दा गईं। अपने काम म अगले हा दिन से लग गए। अगले दिन से ही टहलने का भी हमने नियम पूरा करना शुरू लिया, और उम दिन दूरवीन तक प्राय पाच मील की चहलचरमी हुइ। सडक पर माटरा के आन का निषेध नहीं है

लेकिन आवादी व विरल होने व कारण व कम आती हैं। उस दिन हम तोता न रमायन की परिभाषाओं व निर्माण पर बातचीत की, और तत्वा तथा प्रत्ययों व बार में कुछ निश्चय किए।

उसी दिन बुधवार का कलिम्पोंग की हार्न थी। गनीचर का भी वह लगा करती हूँ। दार्जिलिंग और कलिम्पोंग में हाटा का यह रिवाज किसानों और गरीबों दोना की दृष्टि से जल्दा है। जहाँ ऐसा नहीं है वहाँ बिचबई किसानों से मिट्टी व माल साग सञ्जी खरीदकर मनमाने दाम पर ग्राहकों का बचत है। गाम का कुछ बूढ़ावाणी हुई। बंगाल की खाड़ी नजदीक है डर लगा वषा न कहा छुआनी ता नहा की थी। दार्जिलिंग अग्रजों के हाथ में आने से पहले मिक्किम वाला व हाथ से गारखा व हाथ में चला गया था। गारखा का हरानेर ही नेपाल से पूर्व में यह इलाका और नेपाल में पश्चिम जल्पांग जिले से लेकर सनलुज तक की हिमाचल भूमि का अग्रजों ने किया। उस समय दार्जिलिंग जिले की आगदी बहुत कम थी। किरात जाति में सम्बंध रखने वाले गन्वा लोग यहाँ के निवासी थे। नेपाल में जनसंख्या का दबाव अधिक था, इसलिए वहाँ के रहनेवाले आगे पटोस व इन पहाड़ों की तरफ बचने के तिसम अग्रजों ने भी प्रोत्साहन दिया। ऐसा क्या न करके क्योंकि नेपालियों की वारता का देखकर वह उनके सामरिक महत्व का समझने लगें और समय बीतते-बीतते अग्रजों का भाड़े की सेना में नेपालियों की काफी संख्या हो गई। पिछली शताब्दी के अंत में ही दार्जिलिंग नेपालीभाषी हो गया था, आज तो भाषा और जाति के तौर पर उस नेपाल का एक टुकड़ा बनना चाहिए। पहले सभी नेपाली जनपद कुत्ती या किसान थे, अब उनमें भी कुछ गिम्पिन हो गए हैं। दर की निद्रा व बाद जाँच मलकर जब व दबने हैं तो मालूम होता है अपनी अजित भूमि में उह कुत्ती विमान से जाग बचने का रास्ता नहीं है। पट्टे ही से गिम्पिन में जाग बड़े हुए प्रगाला हैं वह समा नीजरिया का समाग हुए हैं और चाय व चगाच अग्रजों के हाथ में हैं। जायिक और सांस्कृतिक रूप से पिछली कुछ जातियाँ जिन अपनी अवस्था से असंतुष्ट होकर उस बहनर

बनाने न लिए जहाजतद करता है तो इस उन्ने प्रतिद्वन्द्वी नीचे दर्जे की प्राणीयता भाषीयता जातीयता सकीणता आदि नाम दकर बन्गाम करत हैं। लेकिन जिस भावना का जापार ठास आर्थिक हाना है वह प्रचार क फूर मे महा उडाई जा सकता। बिगपनर आजकन जब कि लागा का कुठ जनताधिक अधिकार प्राप्त ह और वन् अपन अमनीष का त्रिवला मन्त हैं। दार्जिलिंग की कांग्रेस कमती बगान प्राताय कांग्रेस बमेनी की गाथा है, और वह उसा क इगार पर चलनी है। जब कुर्वाणी बगन का जमाता था, तत्र बमनस्य हान की गजाशु नही थी, किन्तु अत्र काग्रम स्वतंत्र भारत क लाभ को भागोदार है, इसलिए अपन स्वायी क लिए गागा म छाना पपटी हानी स्वाभाविक थी। दार्जिलिंग की नेपाली जनता—जनभाषरण—का विद्रोम कांग्रेस पर नही था, और अग्रेजा न पहल हो स राष्ट्रीयता क विरुद्ध गारवा-लीग को प्रासाहन दना गुरु किया था। अत्र गारवा-लीग और काग्रम का यहा द्वन्द्व था। अभी-अभी एम म्वली का चुनाव हुआ था जिसमे गामसी उम्मीदवार का हगकर गारवा-लीग का आत्मी चुन लिया गया।

कलिम्पाग मे टङ्गन्दा दूरवीन की आर ही अच्छा मालूम हाना था क्याकि उपर सडक प्राय सूना रहता। साथ म काद एक दा आदमा जन्म रहत। कभी महग हात, कभी अनिरुद्ध और कभी छपरा जिल का काद तरण मा प्रोड। कलिम्पाग अंतर्राष्ट्रिय और अन्नप्रान्ताय नगर है। नगर की बुनियात १६०४ म पडा जब कि ल्हासा भन्नी गइ अग्रेजी मना क लिए रमद भेजन का यह अडडा बना। उमी समय रसल क िण कम्मरियट म काम करत वाल ठेगार-दूकानदार यहाँ पहुँच। उनका मन्त्र भारन की तत्कालीन राजधाना कल्कत्ता स था, दसलिए मारवाडिया का पहल पहुँच जाना स्वाभाविक था। आज कन-बडी दूराने मारवाडिया क हाथ म हैं। उनक बाद क दूकानदार नेपाल स आए नवार हैं जिनम म कुठ की गाथाले निब्वन म नी हैं। उनक बाद दूमर नेपाला दूकानदार आन हैं। कुछ निब्वनी और चीनी दूकानदार भा हैं पर जवितनर वह गान-मीन की

दुकानें बरते हैं। उनके व्यापारी दा-तीन ति-बती मेठ भी है। इनके अति-रिक्त काफी सख्या भाजपुरिया की है जा छपरा बलिया और आरा जिला के रहने वाले हैं। इनम से कुछ छोटी छोटी दुकानें बरते हैं पान बीटी वाले भी दही म स है दा चार ने सस्ते जेवरा की दुकानें भी सोल रखत हैं और एकाध ही ऐसे हैं जा प्रथम श्रेणी क व्यापारिया की पब्लि म पहुच चुके हैं। मर लिए भाजपुरी अपने ही थे। उनम स काई न काइ सवर की चहलकदमी म गामि रहता।

प्रत्यक्ष शारीर (अनाटामी) के नौ हजार गज सेनगुप्त जमा कर लाए थे। दूसर विषया के भी बहुत से गज जमा थे, या उनके काग मौजूद थे। गदा का अक्षरादि क्रम म लगान के लिए उहे काडों पर लिखना आवश्यक था इसलिए हमे कितन ही लिपिका की आवश्यकता थी। कल्मिया हिमालय म ईसाई धर्म प्रचार करन का बडा अडडा था और मिन्नरिया न कटर-वालेज लडकिया का हाई स्कूल गारे और जयगारे लडका की शिक्षा के लिए छात्रालय सहित ग्रहेम्म होम्म और काबेट कायम कर रखे हैं। इनके कारण शिक्षा का यहाँ काफी प्रचार हुआ है। पर दजना मैट्रिक पास लडक-लडकिया बेजार हैं लडक-लडकिया प्राय सभी नेपाली भाषाभाषी थे पर इससे हम अडचन नहीं थी। नेपाली भाषा हिंदी से बहुत नजदीक है वह नागरी अक्षर म लिखी जाती है और सभी शिक्षित नेपाली हिंदी समझ लेने हैं। हमन कुछ लडके लडकिया को इस काम म लगा दिया।

६ अप्रैल का हम दूरबीन की परिक्रमा करते जरा एक तरफ बढ गए। वहाँ एक मुदर छाटा-सा बगना— बुनर बिना—मिला। पता लगा कि सो अफ्रेज न इमे अपन लिए बनवाया था और अज दार्जिलिंग क अधिकाग बगला की तरह यह त्रिककर किमा मारवाडी सेठ के हाथ म चला गया है। इम बगले पर मैं ता मुग्य हा गया। नीमट की छोटी छन के नाचे लम्बी पानी म कई कमरे थे। पीछे की आर नी कोठरिया का एक कमरा थी। कमरे बहुत साफ थ और पर्नीचर भी साफ सुधर तथा बहुत

अधिक नही थे। सत्रमुच आदमी म कितना अह है। यहा भीनर जात्र आदमी खा नही जाता है, उसका अपना व्यक्तित्व बरिष बडा मालूम होता है। गावदे यह भी कारण था इस बगल की मनाहारिता का। वम बना भी ऐसी जगह था जहा मे सुद्ध हिमालय और उमने नोचे की हरी भरी पवत श्रेणिया निखाईं दती थी। कहा जा रहा था, ३० ३५ हजार का बिका है। और उम समय अभी मालिक इस दाम स नोचे उतरनवाले नही थ। इस लिए इस लकर मर यहा रहन का सबाल नही हा सकता था।

आज मरा ५६ था मात्र पूरा हुआ ५७ वें म मैन कर्म रक्खा। पिता और पितामह म कोई इस उमर तक नहीं पहुँचा था इस बिषय म मैं अपनी दा पीढ़िया से आग था। माता यद्यपि और भी कम उमर म मरी लेकिन उनका कुल दीघजीविया का था।

१० ताराख का टहंत बकन एक पूरी जमात साथ चल रही थी। वान सत्रक क पामि के अग्रेंजा क बगला पर हा रही थी। अग्रेंजा ने जान मे पहच ही अपन बगला का बच डाला, जिहने नही बचा पीढ़े मिट्टी के माल बचकर पछनाए। बगले क खरीदनवात्र अधिनर मारवाडी मठ हैं। किराय पर आजकल बह लग नही रह थे और मालिक सात्र म एक-दा महीन म अधिक यहा जाकर नही रहत। एक बगले को दिखलाकर बतलाया गया कि पिछत्र साल साहब इसका दाम तीन लाख मागता था और जब की सात्र डेड लाख पाकर भी सतोप क साय चल गया। अग्रेंजा म से अत्र बहुत कम ही रह गय थे।

उम दिन दापहर का भाजन माहु भाजुरन क यग था। पूरा भाज हो गया था, जिममे तिब्बती मठ, नेपाली व्यापारी और तिब्बती सरकार क विदगा म भेज गए कमीशन क सदस्य था थ। कमिशन क मुखिया तिब्बती सरकार क अध्यक्ष—रिजेट क भीज गत्रापा भी थ। सत्रमे बने तिब्बती व्यापारी पतदा छांग और भूजल का रामी दाजें अपन पुत्र-पुत्रिया और बधुजा के साथ भाज म जाई थीं। भाज क पहल और भाज क बाद भी दर तक बाने हाती रहीं, साहु भाजुरन न इस बाढी का ३० हजार म खरीदा

था। काठो बहुत बड़ी है उमर पाव नारगिया का एक सुन्दर बगीचा भी है। फसल क बदन कबल शून्य जोर स्थान की सुपमा करके ही जीव जोर मन तप्त हान हैं वलिन मधुर नारगिया भी मुह मीठा करान क लिए तैयार रहता है।

अगले दिन दापहर का गवाषा हमारे निवास पर जाए। यूरोप, अमरिका और भारत की यात्रे छान आए थ। चीनी कम्युनिस्टा म धवराये हुए थ। जागा की अमरिका, इगलठ महायना करम तर उहाँने निराग किया। नरन न भा जागा नही दिगाइ। अर क्या करता चाहिए यही प्रन था। मैं रहा—निगा म अर भी प्रचरित अधदासना वहाँ क लिए सबसे खतर की चोज है। उमर बिपक रहना सबसे बडा अनिष्ट का हनु है। चीन का तिब्बत म पहल भी सम्बन्ध रहा है। अग्नेजा न बीच म पडकर उमर बाधा डाली। क्या चीन फिर अपन पुरान सम्बन्ध को स्थापित करना चाहता। गिरा कम्युनिस्टा का तिब्बत म चीना सचि भेजन की जरूरत नही है। आपक पडाम म अग्ने खम और गागा क तिब्बती भाषा भाषी लग चीन का सीमा के भीतर हैं। व नम राम्ने का अपनाकर अपन तिब्बती भाष्या का अध्यासता क वाल्ड क नाच विमन नही दमे। साप्राण जनता अपन प्रभुआ क खिलाप हा जाएगी वसम सन्देश नहा। क्या आप गावा म तुरत स्कूठ गुल्गा सकत है और तिब्बत का आम प्रने म जा खराबट हैं उनका दूर कर सकत हैं? तिब्बत म जाधुनिर लग का गिगा की जरूरत है उमर सनिज विगपनों की सडक और नहर क इजो नियरा की और सनिज विगपना की भी जरूरत है। यूरोप और अमरिका वाला म गावधान रह, रह बनी बात का भी बिगाडन हा क लिए हाथ डालेंगे। उमर तिन थडे तिन के गिग जेनरा गागाट भी जाए, पर अत्रिक तर बान गराया क साथ हुइ। फले तिब्बत म लार्ड मस्कृत की पुस्तका पर बान गुन गुन लेकिन फिर वह राजनीति की तरफ मुड गइ।

१३ ताराय का ललावा हाजा व्यापारी का लला मिलन आया। वह पाच छ साल म रहता म रहता है और तलिम्पाय म भी उसका

दुकान है। ल्हासा से तिब्बत के भीतर भीतर ल्हासा जान का रास्ता है, किन्तु वह दा-नीन महीन का तथा चारा और लूट-मार की कठिनाइयाँ सभरा है इसलिए उधर जाने की अपेक्षा ल्हासा व्यापारी कश्मीर (श्रीनगर) तक पैदल या घाँसे पर आकर फिर माटर और रेग द्वारा कलिम्पोंग पहुँचते हैं, और यहाँ से तीन चार हफ्ते में ल्हासा पहुँच जाते हैं। तम्बेन बतला रहा था, कि ल्हासा बाल डर रहा है। साच रहा है—यदि चीनी कम्युनिस्ट ल्हासा पहुँचें तो हमारा क्या होगा? अगर गन्बटा हूँ तो व्यापारी लुट जायेंगे। मैंने उन्हें बतलाया कि तिब्बत के बड़े व्यापारी और तुम एक ही नाव पर हो और चीनी कम्युनिस्ट गन्बटा नहीं हान देंगे। हाँ उनसे जाने से पहले यदि गन्बटा हूँ, तो दूसरे बात है। उनसे यह भी मालूम हुआ, कि जय गान्तस में ल्हासा का अधिकांश मिला है। भर परिचिन और सहायक नाना छेरतन् पुन् छोरा जब तहमीलदार हैं और नायक-नामाल-दार भी ल्हासी हैं। नागा बड़े थुद्गा बुद्ध व पीछे याह करके दमाई बन गए। अग्रजा के जमान में इमम कुछ लाभ भी था, लेकिन अब तो वह घाट का मोटा था, क्योंकि ल्हासा के गद्गवन बुद्ध भक्त हैं और वह उनकी तरफ मन्त्र का दृष्टि में देखते हैं।

१२ अप्रैल का पता लगा भारतीय सचिवालय के मनोद के अनुवाद के लिए राष्ट्रपति ने एक समिति बना दी है जिसमें भरा भी नाम है। समिति के अध्यक्ष श्री धनंजयामसिंह गुप्त और सदस्य म सुनीति वासु श्री जय चन्द्र विद्यालंकार भर परिचिन व। इस काम के लिए अब लिखी जाने की जरूरत थी और मैं दिल्ली में सबसे दूर की पहाड़ी पर था।

कलिम्पोंग के अपने कुछ गुण हैं जिनसे वह मुझे अच्छा लगा। यहाँ भी दूसरी पहाड़ी गीतल पुरिया की तरह श्री पसीन का नीवन नहीं आती बस पत्तन गवन मर्गो भी नहा हाना और तिब्बत का प्रवेश द्वार हान में यहाँ तिब्बती विद्वानों का समागम का भाँ सुनीता है।

प्रायः चार वर्षों में दिमाग में 'मधुर स्वप्न' चक्कर काट रहा था। उसका सामना मैंने तन्त्रान और लनिनवाद में जमा की थी। अब मन

कर रहा था, उम कागज पर उतारा जाए। पिछले साल मे हा दिमाग में यह बात समा गई, कि अब कहीं एक जगह बैठकर काम किया जाए। यात्रा करना डायबटीज के कारण सुखद नहीं है। रहने की जगह ऐसी हानी चाहिए जहाँ बारहा महान काम किया जा सके। ऐसी जगह पहाड़ ही पर हा सकती थी। कई जगहों पर मैं नजर दौड़ाई और अब कलिम्पांग पर भी मन जा रहा था। मर नये प्रकाशक अग्रिम रूपमा स्न के लिए तयार थे, इसलिए उसकी कठिनाई नहीं थी। मिथा न कई जगह दिगलाइ। महाप्रज्ञा प्रधानजी न एक घर दिगलाया जो बिजली के क्षेत्र से बाहर था। जगह भी गंदा हूँ उसमें खेत अधिक थे। पर खेत लेकर हम क्या करना था? दाम १५ हजार बतलाया जाता था जो उम पुराने मकान के लिए बहुत अधिक था। यह तो हम जानते थे कि इतने से कम में अनुभूल मकान नहीं मिल सकता। वहाँ से लौटने समय राधन केथलिक का बंट मिला। यूरा पियन मिदरों अपने कितने ही मकानों को बेचकर जा रहे थे। उम समय उनकी बड़ी मस्याओं की भी हालत डावाडोल थी। लेकिन केथलिक गायद ही कहीं अपनी इमारतों को बेचने या अपने मिगन को बंद कर रहे थे। दूसरे ईसाई मिगनरियो न उनका सबसे बड़ा सुभाना यह है कि उनके कामकर्ता परिवार मुक्त आज्ञा-म सबके साधु-साधुनिया थे।

अप्रैल के मध्य में पता लगा मोहन गम्होर भी अब दिन गिन रहे हैं। उनके अनुज बरर गम्होर का कहना है गम्होर से हमने राज्य जीता है, और उसी गम्होर के बल पर हम उसे रखेंगे। भारत सरकार भी अभी नेपाल के बारे में बाद निश्चय नहीं कर पाई थी बल्कि राजागाहा न यूना की मददयता के लिए जय इच्छा की ता भारत सरकार उममें सहायता देने के लिए तैयार थी।

म्यापी निवान बनाने के रूपाल ने एक बार मिक्कम के अंतिम गाँव लाइन की ओर भी मन खींचा। तबत्रत से लौटने वकन दो बार मैं इस गाँव से गुजरा था। इधर सदा के लिए वह वाटगढ़ और कुल्लू बन गया है। एक दिन ग मिगनरी महिला न इस गताने के आरम्भ में वहाँ आना

अड्डा जमाया । साधा, और मिस्तरिया की तरह शायद वह भी अपने बगले का वेचे उसे ही बधा न ल लिया जाए । न बच, तब भा देवदारो की सुंदर छाया म साई इस भूमि म भवान बनाने क लिए जगह मिल सकती है ।

२२ अप्रैल का हाम्म की जार टहलने गय । उसके एक छोर पर एक एग्लो इडियन का मकान था जिसके साथ एक एकड़ स कुछ अधिक जमीन थी । खास मङ्गल से बाहर की भूमि सिर्फ नेपाली ही खरीद सकते थे । मकान बहुत पुराना था और फर्नीचर भी बहुत घिसा टूटा । दाम २८ हजार बतलाया गया । उसी दिन पता लगा, कि डा० जाज रोयरिक यही हैं । उनके यहा जान का पता पहले भी पत्र से मालूम हो चुका था । शाम की जाक निवास "कुवेटी" म गए । मा जब अम्बस्थ थी, इसलिए उनसे नहीं मिल सके । तीन घंटे तक हमारी बातचीत हाती रही । १९४७ म कुल्लू म जा खराबी हुई उसके कारण उनके परिवार का मन उखड गया । वह अपने पिता और अनुज की तरह चित्रकार-कलाकार नहीं हैं उनका विषय भारत तिबत मगालिया क इतिहास का अनुमधान है । युरोप म उनका प्रतिभा बडा तिबती और मगाल भाषा का विद्वान् शायद ही कोई हा । कलिम्पोग म रहने पर तिबत के विद्वानो क साथ सम्बन्ध स्थापित करने म सुभोता था इसलिए भी उह यहा स्थान पसंद आया । उहाने तिबती इतिहास के एक बहुत बडे ग्रन्थ दन्जर टानपो (नोल पुस्तक) का अनुवाद अंग्रेजी म किया, जा आजकल बंगाल एगियाटिव सोसायटी स छप रहा था । पिछठ ही साल कलिम्पोग मे उनकी माना का दहान्त हो गया । जाज अपनी साहित्यिक साधना म लग हुए है ।

२० अप्रैल का टहलत समय भिक्षु अनिरुद्ध साथ म थे । भिक्षु अनिरुद्ध थडानु नवार बौद्ध पिताके पुत्र हैं, पिता भी घर्मालाक के नाम से भिक्षु बन गए, और चाहा जपन दाना पुत्रा को भी भिक्षु बनाने आगे की परम्परा ही ताडें । लेकिन छात्र लडका इसके लिए तैयार नहीं हुआ । उनकी बात सुनकर हमो आना थी । वह भिक्षु बनने क लिए ही सिहल गया था । पर कहना था — मरदा "याह लिने है, इसलिए मैं भिक्षु नहीं बनूंगा । वह भिक्षु न

बनकर निबन का व्यापारी बन गया। उड़ने का न मित्र म श्रामणेर दाधा का जोर जब मिश्रु हाकर भी अनिच्छित व नाम स हा प्रसिद्ध है। वमा म धे उमो समय महाबुद्ध टिका जोर वमा जापान के हाय म चला गया। गार बुद्ध भर बनी रह। जापानी भाषा बालन भर क लिए ता मीय ला लकिन उनका मन किसी भाषा के पत्रन म नहा गता। उनक मानर जत्र भा कच पन अधिन था लकिन स्वभाव म अच्छे थ।

दिल्ली—मविधान के समीचे का अनुवाद करना था लकिन उमरी परिभाषा का क बार म मैंन धर कुठ नयागे का। ठाका लाइन का गाडी म खून परगान हा चुक थ दसगि मर द्वारा लिखी जान का हिम्मत नही तु। त किया कि बागलगर म कच्छता और कच्छता म लिखी विमान म जाएं। कच्छियाग के एक मागगा मित्र न लिखे खरोदन का ना प्रबन्ध कर दिया। भाजन का प्रबन्ध महंगी न मभाल लिया था हमार दाना मित्र परिभाषा के काम म लग गये थ। २३ अप्रैल का मात्र स हम खाना तुए। मित्रिगुना ६० जोर वनी म ६ माल कच्छर १० वन बागडागरा पच गण। यात्रा म तीन घण्टे गये। हवाइ जल जम्बाइ-मा था। खाता पना जमान पर लाह का लालिया बिठा करके अवतरण भूमि तयार की गता और आफिस के लिए लकड़ी के झापडे थ। काठियान राव (छपरा) के था रघुवग प्रमा नो गाय चल रहे थ। पहल-पहल विमान म चला था लकिन बून डर रहे थ। हमन लिम्न लिगत तुए कहा—

रघुवग बाबू डरने का जरूरत नहीं। यदि कभी ऐसा हाता भा है तो विमानवाक का यागिया की मान मित्रनी है। वम कुठ हा मिनता म जान्मी लम पार म लम पार पहुँच जाता है। लकिन यागिया का मौन मरन के लिए भा कितन तयार होंगे। आनकर ता जब म डाक्टरान इन हृदय की गति बन्ना हाना (गटफ) का राग कहना गुन किया है तत्र म जान-पण जोर भी कम गता है। गर मैं ना चला रता था, इसलिए रघुवग बाबू का कुठ लगम आया। हम ५ बजकर २० मिनट पर अल्ल पर पहुँच थ और एक घण्टे बाद विमान लनगाया था। सामान तागा गया जोर

शरीर भी। सामान २० सर से अधिक होना, ता किगया दना पडता, लेकिन शरीर का वजन इस म्याल में लिया जाता है, ताकि उतना ही बोध रखा जाये, जितना कि लोह का गण्ड उठा सकता है।

विमान दोपहर आसमान में उड़ चला। कान में नार की आवाज आ रही थी, पर वह उतनी कष्टकर नहीं मालूम हुई, जितनी कि तहरान से मास्ता जान वाग विमान पर। वह था भी बाया हान वाला विमान। बस सत्रागे न मिलन पर यह भी नारगिया और दूसरी चीजें लादकर टगडा हो बन जाता था। पहाड़ पीछे छूटा आग नीचे सब मदानी जमान था। विमान दक्षिण की जार जा रहा था। भूमि में छोटी छोटी बटुत भी नगिया हैं, और ज्यादा वर्षा हान के कारण वह बिल्कुल सूखती नहीं। दक्कन में माप भी टडा मडा मालूम हाता थी। गाँव मराना के महा घराद के खुद मालूम पडन थे, और वृक्ष घान। जाह जगह घरत डार चाटिया से दिग्वाई पडत थे। विमान पाच आर छ हजार फुट की ऊचाई पर उड रगु था। कही कही वादला के कुछ टुण्डे उसके नीचे से भागत जान पडन थे। ५ बजे के करीब जा चिट मिगी, उमम पता लगा कि हम हजार फुट ऊपर उड रहे हैं, और गति है १६५ मील प्रतिघटा। ४ बजकर ५३ मिनट पर विमान इगलिंग राजार के ऊपर उड रहा था। कानी ता जान पता था सहस्र घारा बन गई था और गगा इतना पतली थी कि हम पार करते भी पता नहीं लगा। समझ ही नहीं पाए निय त्त विहाग को सीमा पाग कर हम बगाल में चल जाए। विमान की मालह माग म उन तिहाई साली थी। भारत में यह पहली बार विमान-यात्रा का मौका मिला था। पुष्पर विमान का म्याल आता था। चाह कल्पित हो हा क्विन कविया न आममान से पृथ्वी कम दीवती है, इसकी जार कल्पना दीगई थी। यह कल्पना इतनी आनपक नहीं हा मरना थी, जमा कि हमारे देश की यह पूर्वी भूमि दीग पड रहा थी।

६ बजे गाम को तमदम हवाई-अड्डे पर उतरकर टकनी में हम मणि-बाबू के घर ४ नम्बर रामजागर जगिया उन पहुच। यात्रा के बाद और

विशेषकर रात को स्नान करने की मेरी आत्त सी है। गद्द गुवार के कारण रत्न यात्रा में तो यह आवश्यक भी है पर विमान में कोई बमा बात नहीं थी। पर अब गर्मी आ गई थी इसलिए स्नान आनन्दकर था।

२४ तारीख का सबेरे ६ बजे ही फिर हवाई अड्डे पर पहुँचा। बाग डोगरा से कलकत्ता तक बिरिया ७४ रुपया था और दिल्ली तक का २०३ रुपया था। इंडियन नेशनल एयरवेज का विमान "मत्तलुज" हम मिला जिसमें २४ सीटें थी, और सभी पर मुसाफिर बठे हुए थे। यह विमान अधिक स्वच्छ और सजा मालूम होता था। या भी यह अंतर्राष्ट्रीय विमान पथ पर चलन वाला। इसकी चाल दो सौ मील से अधिक थी, और उड़ रहा था छ हजार फुट पर। कलकत्ता से ७ बजकर ४० मिनट पर हम रवाना हुए और दिल्ली पहुँचने में चार घंटा २० मिनट लगे। यात्रायत्त के नवीन साधन दूरिया का कितना कम कर रहे हैं? इस विमान में ४४ पाँड पर बिरिया नहीं था चार पाँड अधिक होने का चार रुपया और देना पडा। कलकत्ता से दिल्ली तक का मारा नक्का हमारे पैरों के नीचे पडा था। कहीं कहीं धुंध अधिक थी जिससे साफ नहीं दिखाई देता था। अच्छी तरह देखने के लिए दूरबीन की आवश्यकता थी। हवाई अड्डे से पाटा लेना मना है। नदिया नीचे मय गति से चल रही थी। जगल बाग गाँव और गहर जगह जगह सूखत जा रहे थे। मकाना की ऊँचाई किमी मिनती ही में नहीं थी। कितनी ही दूर तक गंगा फिर सोन आई फिर कुछ दूर चल गंगा का पार हा गामता के सहारे चल। फिर रामगंगा और गंगा पार हाने जमुना आई और विमान दिल्ली में पालम के अड्डे पर १२ बज उतर गया। अड्डे से टेक्सो ल कुछ हा मिनटा में १३ फिराजगाह राड पर थी चन्द्र गुप्त विशालवार के यहाँ पहुँच गए। कलिम्पाग से दिल्ली पहुँचने का यह रास्ता बहुत टेडा मडा था। यदि बागडागरा से सीधे दिल्ली की विमान ब्यवस्था होती, तो कल ही हम कलिम्पाग से दिल्ली पहुँच गए हान।

कलिम्पाग में टहलने पर भी डायबटीज की शिकायत कम नहीं हुई। यहाँ वह कुछ कम हा गया थी। शायद चावल और सत जगह के कारण हा,

लेकिन यह दिन बहलाने का ही रखा था। वजन अब भी १७२ पौंड अधिक मालूम हाता था। दिल्ली में १०३ गर्मी थी, परेशानी तो होनी ही चाहिए। २२ तारीख को शाम के समय पार्लियामेंट भवन के उस कमरे में गए, जहाँ हम काम करना था। सातों विशपन—जयचन्द्रजी, सुनोति बाबू दात घनश्यामसिंह गुप्त, प्रा० मुजीव सत्यनारायण जी और मैं—वहाँ मौजूद थे। अभी हम पहली बार मिले थे इसलिए भापा और परिभापा के बारे में विचार विनिमय हुए। प्रा० मुजीव को छाड़ सभी ने अपने विचार प्रकट किए। प्रा० मुजीव तो तभी बोल सकते थे जब उद्ग परिभापाआ के लिए भी कोई गुंजाइश हो। लेकिन परिभापा के सम्बन्ध में भारत की बाकी सारी भापाएँ एक तरफ थी, क्योंकि सभी सरकृत के गल्प को लेने के लिए तैयार थी जबकि उद्ग की परम्परा उसे अरबी से जोड़े हुए थी। इस बात में सभी सहमत हुए, कि अनुवाद की भापा सुगम होनी चाहिए, अनात और कठिन शब्दों से बचना चाहिए। परिभापाएँ भारत की दसा भापाआ में एक सी हानी चाहिए, और निर्माण में सबकी सहायता लेनी चाहिए। मुझे यह जानकर भी बड़ी प्रसन्नता हुई, कि हमारे सचिव बालकृष्ण भापा और परिभापा के सम्बन्ध में बड़े ही योग्य व्यक्ति थे। वहाँ से उठकर श्री गुप्त जी और बालकृष्णजी के साथ हम ठेकेदार नारायणदास के घर पर पहुँचे। हम तीनों का अनुवाद करके अगल दिन लान का काम सौंपा गया था। बहुत रात तक हम काम कर रहे।

२६ अप्रैल को फिर समिति की बैठक हुई, और वल जिन अनुच्छेदों का अनुवाद हमने किया था, वे स्वीकार कर लिए गए। यहाँ भी निश्चय किया गया कि मैं और प्रा० बालकृष्ण अनुवाद करें, और अगली बैठक में १० मई को उसे पढ़ा करें। उस दिन भी रात के ११ बजे तक हम दादा अनुवाद करते रहे। हमने जा रास्ता अपनाया था उसमें छ सदस्याम किसी का भी मतभेद नहीं था यह जानकर बहुत सन्तोष हुआ।

२७ अप्रैल को डा० भारद्वाज में मिले। उनसे मंडिरल परिभापाओं के काम के बारे में बात हुई। यह जानकर आश्चर्य हाता ही चाहिए कि

इतने जस आधुनिक ढंग के मुग़िक्षित दम्पति विधवा विवाह के विरुद्ध थे। उस समय हिंदू विवाह व्यवस्था में स्त्रियाँ को तलाक के लिए भी अधिकार मिलनेवाला था। वह उन लागों में से था जो समझत थे, कि तलाक की छूट हाने पर स्त्रियाँ बतहागा जदार्ता की जार दी- पड़ेंगी। महारयाल नहीं था, कि पुरुष न चाँदी के धागा से स्त्री का बाध रक्खा है। जब तक स्त्री का आर्थिक स्वतंत्रता नहीं है तब तक वह पुरुष की सब तरह की गुलामी करने के लिए तैयार रहती। उस दिन ६ बजे रात तक का सारा समय बालकृष्णजी के साथ मिलकर अनुवाद करने में लगा। रघुवीर गाँधी ने एक विचित्र क्लिष्ट तथा नई भाषा तैयार की थी जिसमें पिण्ड छुड़ाना जरूरी था। श्री सत्यनारायण जी हिंदुस्तानी के पक्षपाती थे लेकिन वह भी हमारे अनुवाद से सतुष्ट थे।

दिल्ली में रात तो अच्छी थी, पर दिन में पता हो जीवनाधार था।

२८ तारीख को मध्याह्न भाजन श्री सत्यनारायण जी के यहाँ किया पुनः जान के ह्याल से गद्दे मसहरी का यही छाड़ १२ बजे टालमिया की इंडियन नेशनल एयरवेज के आफिस में गया। लू चल रही थी टिकट लिया १ बज विमान उड़ा। वहाँ घरती पर गर्मी के मारे खापड़ी भन्ना रही थी, और वहाँ ६५०० फुट पर दो सौ मील की चाल चलन विमान पर मौसम बड़ा सुहावना था। बनारस पर उतत समय वहाँ की गर्मियाँ याद आने लगी और उमी के ६००० फुट ऊपर ऐसा सुखद मौसम। पीन पाँच बजे हम कलकत्ता के दमदम जडड पर पहुँचे और १८ आना टैक्सी को दो बजे मणिहय जी के घर पर पहुँच गये। उस समय कम्युनिस्टा का उच्छिन्न करन पर सरकार तुगी हुई था। उस दिन कम्युनिस्टा की भूख हडताल के समय में जुठूम निकाला था त्रिम पर गाँधी चलाई गई।

कलिम्पोंग—२६ अप्रैल का सबराम्पम के अडडे से पहुँचकर ६ बजे कर १० मिनट पर हम उडे। रात में बादल था, विमान उसने ऊपर उठा और अधिक समय तक भूमि दिखलाई नहीं पड़ी। एक तरह की मूर्खता अज्ञान में चलना था। विमान में मुमाकिर कम और माल अधिक

भरा था। एक भारवाडी सट्ट्यात्री शक्ति हृदय में बठ थ और दूमर वमन म व्यस्त। विमान अधिक हिलता डालता नहीं था न पट की चीज हिल सकती थी, फिर वमन क्या? मनावैज्ञानिक कारण सही? वादलो के कारण हिमालय का दख नहीं सके। दो घंटे उडान क बाद बागडोगरा पहुँच। फिर विमान कम्पनी की माटर वमन हम सिलिगुडी स्टेगन पर पहुँचा निधा। मुस्लिम होटल का मालिक भोजन करात बतला रहा था—यहाँ दानो जार की भूमि भारत की है किंतु रलक लाइन पाकिस्तान की है। बगाल क गवनर डा० काटजू जान वाल थे उनक स्वागत के किग लाग जमा थे। १० एए म माटर की अगला सीट मिली और साडे १२ बजे घमोदय पहुँच गए। आनन्दजा मौजूद मिने। वैशाख पूर्णिमा का तयारी हो रही थी। दिल्ली म गैटन के बाद घर लन का उत्साह कुछ म हो गया। सोचन लग, मपवति स दूयरे क घर म रहता ही ठीक है क्या घर मे बेंधे और क्या रणयो क तरद्दुद म पडे? दिल्ली फिर जाना था। और इस खबर का सुनकर प्रमन्नता हुई, कि दिल्ली स सीधे बागडोगरा जान का प्रयत्न किया जा रहा है। लकिन मेरे समय यह नहीं हा मका। दिल्ली म वर्षा नही थी अब तिन और रात झडी लग गई थी।

टहलन का नियम फिर पाला जान लगा। वालन समय बराबर बालने रहना पयता था। साबा एक घंटा मौन रखा जाए नाकि 'मधुर स्वप्न' क धारे मे गवावा बनाया जा सके। उपयाम मे एक छाटकर ऐतिहासिक ही गिनता आया है और आज यति लिखना हागा, ता एतिहासिक ही लिखूंगा। इसम काफी महत्त पढनी है। देग-काल पात्र-मन्वधी बाद अनौचित्य न हो, इसक गिग मभी तरह की प्राप्य सामग्री का अध्ययन करके नाट कर लेना पडता है। अध्याय के अनुसार उपयाम का ढाँचा तैयार करना फिर उसम सामग्री को मयाम्यान रचना। इनक बाद बडी बडा घटनाओ का भी सनिवाग करना। फिर वहाँना सामन आती है जा गितनी ही जगह लख को रचग क न रहन भी दूर गींच ले जानी है।

१. "मधुर स्वप्न" क कुछ भाग लिखना दिया गया था। महंग लिखन का काम

कर रहे थे। ५ मई का आठवाँ अध्याय लिखवाया। उसी दिन गाम को दार्जिलिंग के डिप्टी कमिश्नर श्री निमलजी आए। वह सनगुप्त के सहपाठी भी थे। दर तक देश की स्थिति पर बातचीत होती रही। अगले दिन गाम का घर्मोदय के नीचे श्रीमती स्काट के अध विद्यालय म गए, जिनमें २४ लड़के शिक्षा पा रहे थे। उनका सारा प्रबंध श्रीमती स्काट करती हैं, इस तरह के निरवलम्ब आदमिया को स्वावलम्बी बनाना बड़ा काम है। उनसे पता लगा कि लद्देन की मिशनरी बुडिया मर गई है लेकिन फिन लण्ड मिशन ने वहाँ अपना काम छाड़ा नहीं है।

७ मई को मलेरिया रानी ने सूचना भेजी— 'यह मेरा भूमि है, मैं आपसे मिलना चाहती हूँ।' भला यह उनका स्वागत का समय था। परो म सुरसुराहट हुई, पट म कुठ गडबडी मालूम हुई। मैंने कुनन की दो गालियाँ देकर छुट्टी लेनी चाही। अगले दिन टहलना रक गया। भल भी नहीं थी पर ज्वर का अभी स्पष्ट पता नहीं था। उस दिन भी दो टिकियाँ थमाइ। मसहरी दिल्लो म छाड जान का पछतावा होने लगा, क्याकि अब मच्छर बट गए थे।

प्रत्यक्ष गारोर की परिभाषा का जितम रूप देने म हम लाग लगे हुए थे।

११ मई को लव की बगाम पूर्णिमा पडी। कलिम्पाम म काफी बौद्ध है, और उनका एक स अधिक मंदिर भी है। घर्मोन्त्य विहार मे सवेर बुद्ध पूजा हुइ, दोपहर को भिक्षुआ का भाजन कराया गया। काफी स्त्री-पुरुष आए। विहार का अच्छी तरह सजाया गया था। डेढ बजे आनंदजी क समापतित्व म सभा हुइ। एस० डी० आ० श्री प्रधान न घर्मोन्त्य सभा के पुस्तकालय का उद्घाटन किया। वान्त उमट घुमडकर आ रहे थे लेकिन उन्हान यन म बाधा नहीं डाली। [मैं भी बाला। टा० भट्ट अपनी भापा (कानट) म बाल नहीं सकते थे अंग्रेजी जीर जमन पर उनका पूरा अधि कार था, लेकिन वह संस्कृत म बाल। उनका स्वाभाविक संस्कृत का मैं पहले भी प्रामाण था। अब इतन वर्षों बाद भी वह उगी तरह अधि कार

रख सतत हैं, इसकी वम आगा थी। कलकत्ता यूनिवर्सिटी में इस समय तिब्बती क अध्यापक एक बृयत मगाल भिक्षु भी बहा आए। उनस बात चीत हाती रही।

तिब्बत में पांच विषया—दंगन, तकशास्त्र, विनय महापानसूत्र और माध्यमिक शास्त्र—य पांच ग्रथ पढाए जात हैं —अभिधमकांग, प्रमाण वार्तिक, विनयसूत्र, अभिसमयालकार और मध्यमाकावतार। इनमें अन्तिम को छोड़कर सभी संस्कृत में प्राप्य हैं। पहले दाना का मैं सम्पादित करके प्रकाशित कर चुका हूँ, तीसरा सम्पादित होकर छप चुका है लेकिन प्रकाशन अचार बनाने में लग हुए हैं। चौथी पुस्तक रूस से छप चुकी है, और अन्तिम अभी तिब्बती भाषा में ही उपलब्ध है। मैं सोच रहा था यदि संस्कृत और तिब्बती अनुवाद को आमने सामने रखकर प्रकाशित किया जाए, तो हमसे दाना भाषाओं के जानने वाला को लाभ होगा। पहली पुस्तक क मुद्रण क खर्च का जिम्मा मरे मित्र श्री त्रिरत्नमान ने ले लीया, लेकिन सबसे बड़ी दिक्कत तिब्बती टाइप की हुई। कलकत्ता में एक प्रेस का आज चौगुना पचगुना था, दूसरा प्रेस फँसाकर रखने वाला था उसके ही कारण महामहापाध्याय विद्युत्तर भट्टाचार्य द्वारा सम्पादित अमग को 'यागचर्या भूमि' अभी तक नहा निकल सकी और सम्पादक बिल्कुल निराग हा चुके हैं। कलिम्पोंग में श्री यचिन का प्रेम काम कर सकता था, लेकिन वह भी पर्याप्त नहीं रखत। इही दिक्कतों से यह काम रह गया, नहीं तो दा-त्तोन पुस्तकें तो जरूर निकल गईं हातीं।

अगले दिन (१२ मई का) टाउन हाल में बुद्ध जयन्ती मरे समापितक में मनाई गई जिममें मगाल, भारतीय, तिब्बती नेपाली, म्बिस और सभी श्रद्धालु वाले थे। बौद्ध धर्म का अन्तर्राष्ट्रीय रूप यहीं आता के सामने था।

तिब्बतक भविष्य क बारे में निश्चित और प्रसन्न था। किन्तु, एक बात को चिन्ता मुझे जरूर हाती थी, कि तिब्बती भाषा क प्रमाण्ड पठित नहीं मुनी-मुनाइ बातों को मुनकर दंगल भागन क लिए तयार न हा जाएँ

और उनकी विद्या का कोई माल न रह जाए। १३ मई का एन ऐस ही मंगल पडित जाए। अपने दंग से आकर मेरा विहार म वपों रहकर पढते रह। जब ५५ साल के हो गए थे। कुछ चित्ररत्ना भी बनाना जानते थे। कल्मिपोग म आए साल भर हा गया और चित्र ही स कुछ जीविका कमा रत थे। बहुत कष्ट म थे। उनकी विद्या का यहा कोई उपयोग नही हुआ। मैं जानता था पाँच रुपया दकर मैं अपनी पीडा दूर कर रहा हूँ उनकी पीडा दूर करन का रास्ता तो यही था कि वह तिवत लौट जाते। और कुछ दिना बाद उह पढाने लिखान का काम जरूर मिल जाएगा।

तिवत म उत्तर ह्वाग हा उपत्यका म तुगन (चीनी मुसलमान) लोग का आर कम्युनिस्ट भुक्ति सना वर रही थी। वहा क मुस्लिम नेता अपने लागे क सर्वोसर्वा होकर शाहाना ठाठ से रहते थे। वह क्या कम्युनिस्टा क स्वागत क लिए तयार होत ? पर हारकर उह भागना जरूर था। मुझे इस बात की चिन्ता थी कि कही वह भारत भागन का सीधा रास्ता न पकड और लूटासा हाने कल्मिपाग न जाए। एसा हाने पर उनकी लूट पाट म रेडिड लहासा आदि के प्राचीन बौद्ध विहार नष्ट हो जात जिनम साथ हमारी सहस्रा अनमाल साम्कृतिन निधिया भी ध्वस्त हो जाती। मैंने कम रानर के बार म राष्ट्रपति को लिखा, और विश्व दंगन म एक लेख भी लिखा। राष्ट्रपति न चीन स्थित अपने राजदूत का दमवी सूचना दो और इन निधियो की आर चीन सरकार का ध्यान दिलाने क लिए कहा। मौभाग्य स तुगन हारकर अस रास्त नही भाग, व और पश्चिम की तरफ हटत गए और अत उनक नेता सिडक्याग स कश्मीर म चल आए।

कल्मिपाग म जीर सत्र ठीक हा गया था लेकिन अभी भागन का अच्छा प्रबंध नही हुआ था। भाजन म भिन्न भिन्न रचि रखन वाल लोग थे ता भी एन नही थे कि वह उसम हर फर करना न पसन्द करने। पर कोई अच्छा रमाश्या नही मिल रहा था। कई रमाशय बन्दन पडे थे।

धर्मोप्य की ऊपरी मजिल का करीब करीब हमन दखल कर लिया

था। बहुत जल्दी जगह थी—गहर स बाहर भी जार समीप भी। नीचे से कल्पिमांग जाने वाली सड़क जाती थी। यहाँ गर्मी का भय नहीं था, लेकिन परिचिता की मर्यादा कम नहीं थी, इसलिए मिलन जुलन के कारण समय बहुत बरबाद होता था। पर यह अवस्था गुरु में ही रही, जब लागू को मालूम हो गया, कि रविवार को आन में हम मुभीता है, ता वह उस दिन आन लगे। उस समय मैं सबेर साढ़े ५ बजे उठना १५ मिनट में हाय मुह धाकर छुट्टी लेना, डेढ़ दा घटा टहलने के लिए निकल जाता। ८ बजे के बाद कभी नास्ता करता, फिर लिखन या काग के काम में लग जाता, साढ़े ८ माटे ६ के बीच कभी जाय घटे के लिए ना भी जाना फिर काम में लगकर मन्दाह्न भोजन करके दैनिक पत्र का कुछ मिनट देकर साढ़े ७ बजे रात तक योग का काम करता। राति भोजन के बाद सायिया के साथ कुछ दर वार्तालाप हाना फिर दा घट "मधुर स्वप्न" का लिखवाता। इसका बाद कोई हल्की चीज पढता, और फिर डा० भट्ट के साथ काफी बान करके सो जाता।

डा० भट्ट का १८ वष का जमनी का प्रवाम बडी मनारजन आप-बोनिया में भरा था। वह मस्कृत के पुरान पंडित थे जब जमनी के लिए रवाना हुए अण्डा खाना भी उनके लिए मुन्निल था। पण्डिताऊ दृष्टिकोण साथ गया था। जमनी में पहुँचने के बाद उनके पास मुश्किल में सो स्पय रह गए हंगे। मर लिग्ने पर दुविगल विश्वविद्यालय के मस्कृत के प्राफेसर न काम के बन्ने उह कुछ आर्थिक सहायता दन के लिए कहा, और दो भी। पर वह महायना तनी कम थी, कि बडी मुन्निल में काम चला सकत थे। मैं मत्र बतला दिया—आत्मी का उलाग माग्ना चाहिए। आबिर बच् जहा भी उलाग माग्ना, वहा मानव समुद्र ही रहगा और मानवता हर जगह मनुष्य की रक्षा के लिए तयार है। अज्ञान-अपरिचित स्थान में भी आत्मी के मित्र बन जान हैं फिर गाडी चल पडती है। उलाग मारन वाला म हजार में एक ही डूबता है और हम ६६६ छाट-कर एक की श्रेणी में नाम लिग्ना की क्या अमरत ? डा० भट्ट न मस्कृत

किसी विषय को लेकर तुविगन में पी एच० डी० की। फिर उह प्राचीन
 वद्या संसतोप नही हुआ जयगान्न राजनीति लेकर बलिन यूनिवर्सिटी
 में डा० बन। उनकी विद्या और प्रतिभा न सहायता की, और बलिन यनि
 मिटी में वह प्राफेसर बन गए। कलम के भी धनी हाकर भारत के बारे में
 लेखत रहे। पीछे भारत सम्बन्धी आँकड़ा क महित उनका परिचय ग्रथ
 इतना अच्छा था, कि उनका लाखा का सस्करण निकला। पुस्तका और
 ऐसा की रायल्टी भी मिलने लगी।

द्वितीय महायुद्ध छिडा। डा० भट्ट अपने देश की आजादी के लिए
 अधीर थे, और उसके लिए काम कर रहे थे। जब नेताजी वहा पहुँचे और
 उन्होने जमन अंग्रेजी में पत्र निकालना चाहा—तो उसके मुख्य सम्पादक के
 लिए उनकी नजर डा० भट्ट के ऊपर पड़ी। फिर वह नेताजी के दाहिने हाथ
 के तौर पर तब तक काम करत रहे जब तक कि नेताजी वहाँ से अलाप
 होकर पूव में पहुँच नही गए। उनका वाद भी भट्टजी अपने काम में डटे रहे।

जमनी की पराजय हुई। मित्र शक्तिवा उनका किस तरह स्वागत
 करती, यह उह मालूम ही था। इसलिए दक्षिणी जमनी के एक देहात में
 चले गए और किसी किसान के यहाँ सेती और मूअरो के पालन में सहा
 यता देने लगे। जमन भाषा पर अधिकार था, पर अपने का जमन कस कह
 सकते थे, जब कि उनका रंग हमारा यहाँ के रयाल सं भी पूरा गारा नही
 था। उन्होने इस कमी का अपन का पूर्वी यूरोप का रामनी (जिप्सी) कह
 कर पूरा किया। तीन बप तक इसी तरह उन्होने अपना समय काटा यह
 बौद्धिक मृत्यु का समय था। अभी वह जमनी जल्ना छाडन के लिए मजबूर
 नही थे। इसी वाच उह हृदय का रोग हा गया। दवाइयाँ मिलनी मुश्किल
 थी। इसके साथ जमभूमि और उसकी आजादी पर अपनी आर खींचा।
 किसी तरह चुपचाप वह जमनी की मामा पार कर स्विटजरलैण्ड में जान
 में सफल हुए। हमारा दूतावाम मौजूद था जिसकी सहायता से बड़ी-बड़ी
 उमर्गे लेकर वह अपनी जमभूमि में आए। पर यहाँ अभी गुणा के प्राहक
 वहाँ थे ?

डा० रोयल्टि चाहत थे, कि भारतीय और तिब्बती भाषाओं और मसूहति के अनुमन्त्रान के लिए एक प्रतिष्ठान काममें किया जाए। इसके लिए कल्मिषाग सबसे उपयुक्त स्थान था, पर प्रतिष्ठान के लिए रुपया की आवश्यकता हाना। प्रकाशन के लिए ही नहीं, बल्कि तिब्बती मंगोल या भारतीय विद्वानों के लिए भी खर्च की जरूरत थी। सिक्किम के महाराज से खर्चलाता आना नहीं हो सकती थी, क्योंकि वह उसके वैज्ञानिक महत्व का समझने में असमर्थ थे। और सहायता देने पर गताक मरखन का आग्रह करते। चंदा और पसा जमा करना मैं सीखा नहीं इसलिए उसके बारे में काद भी सहायता नहीं कर सकता था। हा प्रतिष्ठान में मैं अपनी लेखनी में योग देने के लिए तैयार था।

२४ मई का हम टहलत-टहलत चीनी स्कूल की तरफ गए। कुछ सालों पहले चीनी लडका के पढ़ाने के लिए यह स्कूल खाला गया था। उसके पास एक एकड़ जमीन में एक लकड़ी की क्षापड़ी थी। मैं उसको भी दखन गया था। वह पाँच हजार में मिल रही थी लेकिन अभी खूँटे से बधना में नहीं चाहता था। बड़े-बड़े मकान मिट्टी के मात्र बिक रहे थे पर मैं तो उनके बारे में मोच भी नहीं सकता था। डा० रोयल्टि जिम बंगले में रहते थे उनके पास ही किसी अंग्रेज का बहुत बड़ा बंगला था। लडाईं के दिना में उसके मान लाख मिल रहे थे, और अब मूरजमल-नागरम न पौन दा लाख में खरीद लिया।

प्रत्यक्ष गारार की परिभाषा का काम समाप्त हो गया था, और अब दूसरे कामों में हाथ लगा था।

दिल्ली—२५ मई का फिर हम १० बजे माटरने वागटागरा के हवाई अड्डे पर पहुँचे। कल्मिषाग में बतलाया गया था कि टिकट तैयार है, पर यही आन पर मालूम हुआ कि टिकट नहीं लिया गया। मर नगह गाली थी, टिकट मिल गया और १ बत्त खाना हाजर कर बत्त के कुछ बात कलरत्ता पहुँच गया। मणिल्यजी के यहाँ रात का ठहरा। तिब्बती-मसूहति पुस्तक छापन का धुन था, इसलिए प्रेसा से मान बत्त

गए। जारियटल प्रेम छापन क लिए तयार था, पर उसके पास माघन कम था। उसका टाइप भी बहुत बुरा था, जिसके कारण 'अभिधम वाग' १६ फाम म छप पाता। बाप्टिस्ट मिशन अपन छोटे टाइप म मात फाम छाप सकता था, किंतु बहुत बड़े चाज पर भी उसक काम लन म सद्दह था।

२६ मई का सांठे ७ बजे दमदम स विमान पर चत्कर ठीक १२ बजे दिल्ली पहुँच गया। नीच जमीन पर उतरते ही धूप से ग्वापडी भक्षान लगा। आज पत्रा म यह हृपदायक समाचार मिला, कि शघाई का बिना लडे हा कम्युनिस्टा न ले लिंगा। उस बिगाल नगर का बहुत घबस हाता यति लडाई नगर क भीतर हुइ हाती।

श्री सत्यनारायणजी क घर म ताला बन्द था इसलिए श्रीमती कमला चौधरी क मकान १३ फारोजगाह रोड म श्री जयचन्द्राणी क फाम ठहर। जान पर पता लगा कि बठक १ तारीख के लिए मुलतवी हो गइ अर्थात् मैं पाँच दिन पहले जा गया। लेकिन, इस बीच म श्री बालकृष्ण के साथ मिलकर कुछ काम कर सकते थे, चाह उसके लिए हम पास स पानर ही काम करना पटना। २७ मई को ६ बजे कौंसिल चेम्बर म जा १६ नम्बर क कमर म बालकृष्णजी क साथ बठे। कमरा बायु नियंत्रित है इसलिए दसम न गर्मो का डर था न सर्ती का। मविधान-सभा न अब तक सविधान क ६२ अनुच्छेद पाम कर लिए थे, उह हमन देखा। अनुवाद का काम करन लग। इन बीच बालकृष्णजी बहुत मा अनुवाद कर चुके थे। मालूम हुआ प्राफेसर मुजोर न इस्तीफा द दिया। जागिर उदू की ता काई बात यहा सुनी नहीं जा रहा थी इसलिए वह अपना रहना बनार ममज्ञत थे। उदू की तरफ इस बरखाई क लिए अनुवाद समिति की गिनायत नहम्जा क पाम पहुँची जीर उन्ने इमक खिलाफ एक पत्र राजेन्द्र बाबू को लिखा। लेकिन, यह समिति क सत्म्या का दाप नहीं था जा कि वह परिभाषा का निर्माण जीर भाषा क प्रयाग म एक ही रास्ता ल रहे थे। हिन्दी की उदू स बमनस्य की बात कहा जा सकती है लेकिन मराठी

कनक, मलयालम तेलुगु वगला के ऊपर तो यह लाछन नही लगाया जा सकता । अगर परिभाषाओं के निर्माण की दो हजार बष की परम्परा मारे देग म एक सी है, ता इमका दाप भूमिति के मन्था पर नही लगाया जा सकता । पर नह्जी और उनके जसे लागा को समझाया कैम जाए ?

बया मुये नगर से अधिक ग्राम, मैदान स अधिक पहाट पसन्द आता है ? यह ता नही कहता, कि नगर और मदान काट खान के लिए दोऊन हैं । कल्मिषाग ग्राम नही है लेकिन ब्रह्म मुये पसन्द है । हा, उसमे भी अधिक पसन्द हाता । भारत की सीमात का अतिम भाव लाछेनु, बयाकि वहा प्राकृतिक मौस्य बहुत है विश्व के सबमुन्दर वृष देवदार की बहूनायत है और साथ ही मरे लिए भारी आकषण तिब्बन की मीमा नज्जाफ है वहा की भाषा वाग्न वाल लाग भी वहा मिलत हैं जा मूयत किरात जाति से सम्बन्ध रखन हैं । गायन दिल्ली क १०८ डिग्री के ताप म चुलमन हुए मुये ठण्डे म्याना की ज्यादा याद आती थी ।

१ जून १ अनुवाद समिति की बठक हाउ लगी और २ बजे साठ ५ बजे तक हम उसक काम म लग रहने । सविधान-ममा सविधान क जितने अनुच्छेदा का पाम करती जाती, उनका ही हम अनुवाद करना था । गाडो बग निवली थी, इसलिए न काई दिक्कत हाती थी न डेर । इनन दिना बँठ-बँठे 'मधुर-स्वप्न' की प्रेम-कापी तैयार करना रहा । यदाकदा गायत्रीजी अपन पिता थी हरमगवानजी के साथ आती, उनका फालि पत्र देता । अनुवाद क काम म थी घनश्याममिहजी मजस अधिक महनन करते थे । बच् बकील भी प्रेमीर अप्रेजी सविधान का अक्षरग मिलाने का परिश्रम उटान के लिए तयार थे ।

दिल्ली क लिए कहना चाहिये तीन लाख म मधुरा यारी । बस मभी नगर दहात स अलग अलग रहन का भाव रखन हैं, पर दिल्ली ता मानूम हाता था, भारत की भूमि पर है ही नही । यहाँ क श्रेष्ठ लाग ना आचरण करन, उसी पर इनर लाग भी आव मूदनर चलन की कागिर करत थ । दिल्ली बहन स वहाँ के गरौब आत्मिया को नही लिया जा सकता । वह

ता वहाँ के दरोगीवारा वहाँ की सड़को और नालिया की तरह बहुत कुछ निर्जीव म थे। उह वहा का नागरिक नही कहा जा सकता था और राफी तादाद का नाम मतदाताआ के रजिस्टर म भी नही था। दिल्ली भारत की सर्वोपरि विलासपुरी है। यहा की हक बात पर पाश्चात्य प्रभाव है—अचरन और चूडीदार पायजामा नाम के लिए ही भारतीय है। बेशभूषा और साज सज्जा पर पेट काट करके भी लाग खच परने के लिए तयार है। जब तक कार न हो तब तक ममाज म काई पूछ नही हो सकती थी, और न दूर दूर पर होने वाले ममाराहो म उपस्थित हुआ जा सकता। इसलिए चाह केज करना हा या रिश्वत लेनी पडे, इम सर्वावश्यक चीज का अपने पास रखना ही था। न रखने पर खतरा भी था। हरेक तरणी मुन्दरी काल पौडर और लिपिस्टक के बल पर सम्मानित नही हो सकती और अपन घर म कार न हुई ता दूमरे की सहायता लेने के लिए मजबूर है। पढा मुना करत थे कि बसंत म लन्दन म कुमारिया का जमा बडा इसलिए होता था कि वह वहाँ के नाच और पान-भोष्ठिया म मम्मि लित हाकर अपने लिए घर तलाग करें। अत्र पेशान पाने वाले या दूमरे नगरा म बसन वाले माता पिता अपनी तरण पुत्रिया का इसी के लिए दिल्ली म लाने लग हैं। क्या दुनिया म हर जगह का गुजरा इतिहास हमारे यहाँ भा दाहराया जायगा।

इसी समय श्री नवीनजी के व्याह की चर्चा थी। बाल सफेद हाने पर व्याह करन की तमादी नही लग जाती यह मैं मानता हूँ फिर डा० प्राण नाथजी बधू के गुण और रूप की प्रशंसा करते नही थकत थे। नवीनजी भी कवि है उनकी दृष्टि धोखा नही ला सकती।

६ जून तक हमारा अनुवाक का काम रहा ७ को यहाँ म चलना निश्चित हो गया था। भारतीय सविधान म हिन्दी के राष्ट्रभाषा हान के प्रश्न पर विचार हान वाला था, अहिन्दी भाषाभाषिया को हिन्दी विरोधिया के पूरी तीर से भडकान की काशिंग की थी, इसलिए उसक बारे म भी हिन्दी वालों को कुछ काम करना था। ५ तारोख को फीराजगह रोड

पर अवस्थित दीवानचन्द हाट न गाम का उसी सम्बन्ध मे सभा हुई । प्रो० क्षेत्रेशचन्द्र चट्टापायाय जीर ५० जयचन्द्र विद्यालकार दो दो घंटे बोल । मैं भी आध घंटा हिंदी का समर्थन किया । बाहर निकलने पर एक जाध्र तरण मिला, जिसका जोर था कि संस्कृत का राष्ट्रभाषा बनाया जाए । गोया संस्कृत को राष्ट्रभाषा के आसन पर बठान मे हिंदी से कम दिक्कत का सामना करना पडता । फिर अप्रचलित भाषा को भारत की बडी जनता को सिखलाया कैसे जा सकता है ? कितन हा मिलने वाले आए, डा० किरणकुमारी गुप्ता से यह जानकर बडी प्रसन्नता हुई कि वह अग्रवाल विवाह प्रथा पर सामग्री जुटाने मे लगी हुई हैं ।

६ जून को शरणार्थियों की जगह देखने गया । डेढ वष से ऊपर हो गया लेकिन अभी भी वह उसी तरह की बेमरो सामानी की जिन्दगी बिता रहे है । कपडे फट मले, झोपडियाँ गन्दी, पशाव पाखाने का उचित प्रबंध नहीं, जिसके कारण उनकी बस्तिया भी गन्दी । जिस तरह वे रह रहे थे, उसमे यदि बच्चे माटर के नीचे चल जाएँ, तो क्या ताज्जुब । जिन्होंने अपन परा पर खडे होने की वाशिंग की उनकी हालत कुछ बेहतर हो गड, पर गत प्रतिगत लागे से यह आशा नहीं की जा सकती थी । नई दिल्ली मे कई जगह फुटपाथा पर से उह हटा दिया गया । हटाकर किसी रहन लायक स्थान पर पहुँचाया होता । यह नहीं, खुले आसमान मे बर्षा और धूप मे मरने के लिए उह छाड दिया गया । उसी दिल्ली मे वायसराय (राष्ट्रपति) का इस्टेट है, सैकडा सज हुए विशाल कमरे ही नहीं, बल्कि विस्तृत गौगालाएँ और भसशालाएँ हैं, साग तरकारी के खेत और मेवा के बाग लगे हुए हैं । भत्रियाँ और दूमरा के भवन-वभव का देखकर इन्द्र को इर्ष्या हो सकती है, लेकिन वही ये नये भूखे लागे अपन घरा स निर्वासित नक की जिन्दगी बिता रहे थ ।

ता वहाँ के दरगशीवारा, वहाँ की सड़क और नालिया की तरह बहुत कुछ निर्जीव स थे। उह वहाँ का नागरिक नहीं वहाँ जा सकता था और काफी नादाद का नाम मतदाताओं के रजिस्टर में भी नहीं था। दिल्ली भारत की सर्वोपरि बिगासपुरी है। यहाँ की हरेक बात पर पाश्चात्य प्रभाव है—अचकन और चूड़ीदार पापजामा नाम के लिए ही भारतीय है। वेगभूपा और साज सज्जा पर पेट काट करके भी लाग रख करन के लिए तयार है। जब तक कार न हो तब तक समाज में कोई पूछ नहीं हो सकता। इसलिए चाह बज करना हो या रिश्वत लेनी पड़े, इस सर्वावश्यक चीज को अपन पाम रखना ही था। न रखने पर खतरा भी था। हरेक तन्शी मुदरी केवल पीडर और लिपिस्टक के बल पर सम्मानित नहीं हो सकती और अपन घर में कार न हुई तो दूसरे की सहायता लेने में मजदूर है। पढा मुना करते थे कि वसत में लदन में कुमारिया का जमा बडा इसलिए होता था, कि वह वहाँ के नाच और पान-मोष्ठिया में सम्मिलित हाकर अपने लिए बर तलाग कर। अब पान पाने वाले या दूसरे नगरो में बसने वाले माता पिता अपनी तरफ पुत्रिया को इसी के लिए दिल्ली में लाने लग है। क्या दुनिया में हर जगह का गुजरा इतिहास हमारे ही भी दोहराया जायगा।

इसी समय श्री नवीनजी के ब्याह की चर्चा थी। बाल सफेद होन पर ब्याह करन की तमादी नहीं लग जाती यह मैं मानता हूँ फिर डा० प्राण नाथजी बघू के गुण और रूप की प्रशंसा करते नहीं बबते थे। नवीनजी भा कवि हैं उनकी दृष्टि घोग्या नहीं खा सकती।

६ जून तक हमारा अनुवाद का नाम रहा ७ को यहाँ से चलना निर्दिचन हो गया था। भारतीय सविधान में हिंदी के राष्ट्रभाषा होने के प्रश्न पर बिचार होन वाला था, अहिंदी भाषाभाषिया को हिंदी विरोधिया के पूरी तौर से मडकाने की कोशिश की थी इसलिए उसक बारे में भी हिंदी वाला को कुछ काम करना था। ५ तारीख को पीरोजगह रोड

कलिम्पोंग में

पर अवस्थित दीवानचद हाल में गाम का उमी सम्मेलन में समा हुई। प्रा० क्षेत्रीयचद चट्टापाव्याय और प० जयचद विद्यालवार दा-दा घट बा। मैं भी बाघ घटा हिंदी का समयन किया। बाहर निरलन पर एक बाघ तरुण मिला, जिमका जार था कि मस्कृत का राष्ट्रभाषा बनाया जाए। गाया मस्कृत का राष्ट्रभाषा के आसन पर बटान में हिंदी में वम दिक्कत का सामना करना पटता। फिर अप्रचलिन भाषा का भारत की बडी जनता का सियलया कमे जा सकता है? कितन ही मित्रने वाले आए, डा० किरणकुमारो गुप्ता से यह जानकर बडी प्रमत्ता हुई कि वह अप्रवाल विवाह प्रया पर सामग्री जुटाने में लगी हुई हैं।

६ जून का गर्णाधियो की जगह दखन गया। डेड वप में उपर हो गया, लेकिन अभी भी वह उमी तरह की बेमरा-सामानी की जिदगी बिना रह है। कपडे पट मैत्रे, चापडिया गदो, पगाव-पावान का उचित प्रवध नहीं, जिमने कारण उनकी बन्धियां भी गदी। जिम तरह वे रह रहे थे, उमम यदि वच्चे माटर व नीचे चले आएँ, ता क्या ताज्जुब। जिहाने पन परा पर खडे हान की कागिग की उनकी हालत कुछ बहतर हो गई, पर गन प्रतिगान लागे से यह आगा नहीं की जा सकती थी। नद दिल्ली में कई जगह फुटपाथा पर से उट हला दिया गया। हलाकर किमी रहत लायक म्यान पर पहुँचाया जाता। यह नहीं, खुत्रे आसमान में वर्षा और धूप में मरने के लिए उन्हें छाड दिया गया। उमी दिल्ली में वायुमगय (राष्ट्रपति) का इस्टट है, सबडा सज हुए बिनाल कमर ही नहीं, बल्कि विस्तृत गोणालाएँ और भैमणालाएँ हैं, छाग-तरकारी व खेत और मत्वा के बाग लग हुए हैं। मत्रिया और दूसरा के मजन-बैमव का देखकर चद का ईप्या हा सकती है किन वही मने भूत्रे लाग अनन परा मनिबामित्र नक की जिदगी बिना रह थे।

कालिम्पोग में शेष काम

७ जून का सवा १२ बजे पालम के हवाई अड्डे पर गया। घंटे बाद विमान से घरती छाड़ी। आज आधी सीटें खाली थी। विमान साढ़ ग्यारह हजार फुट की ऊँचाई पर उड़ रहा था। गर्मी के यौवन का दिन था, और हम उत्तर प्रदेश के भिन्न भिन्न गहरा—वनारस जादि के ऊपर से उड़ रहे थे। जब मैंने जपन साथिया का परा पर कम्बल रखत देखा तो नीचे घरती पर झुलसत आदमिया का ग्याल जान लगा। मुझे इतनी सर्दी नहीं मालूम हा रही थी कि कम्बल लता। यह वाइकिंग विमान था। गायद इतन ऊपर उठन के कारण ही धुंध ज्यादा थी और चीजें बिल्कुल साफ नहीं दिखाई देती थी। सान पार कर लने पर तूफान की सूचना मिली। रागनी से मकत हुआ और सब लागा ने अपनी कमर में कुर्सी में बांधने वाली बल बांध ली जिससे तूफान में विमान के उछलन से आदमी लुढ़क न जाए। चार घंटे में सारी यात्रा पूरी करके हम सवा ५ बजे कलकत्ता के हवाई-अड्डे पर उतर, और कमानिक कम्पनी की टेकनी पर मणि बाबू के घर पहुँच गए।

८ जून को भी कलकत्ता में रह जाना था। पत्रों में देखा किक्कम के गायन का प्रजा के प्रतिनिधिया से भारत सरकार ने ले लिया। राजा के निरकुंग गायन से तग आकर प्रजा ने अपना प्रजामण्डल बना मधप गुरू

कलिंगयोग में शेष काम

किया, जिससे मजबूर होकर राजा ने उमना मन्त्रिमण्डल बना 'गामन' के कितने ही कामों का मन्त्रियों के हाथ में दे दिया था। राजा अब भी बाज नहीं आता था। जब मन्त्री बाबू में नहीं आए तो उसने भारत सरकार पर प्रभाव डाला, और मन्त्रिमण्डल भंग करके सरकार से प्रवचन के लिए एक दीवान माग लिया। भारत सरकार ने राजा पर अनुग्रह दिखाया। यद्यपि सिक्किम भी भारत की दूसरी सक्को रियासतों की तरह ही एक रियासत था, जो स्थिति बाकी रियासतों की हुई, वही सिक्किम की भी होनी चाहिए। ऐसी स्थिति में उसे दार्जिलिंग जिले के साथ मिला देना चाहिए था, जिसके ही निवासियों के भाई-बंद सिक्किम भी रहने हैं। पर यह नहीं किया गया, सिक्किम को भारत-संघ से बाहर रखा गया। उसे भूटान और नेपाल की तरह अलग राज्य माना गया। इस प्रकार एक ओर राजा का अब प्रजा का अगुआ दिवानों का मौका दिया गया, दूसरी तरफ भारतीय नौकरशाही का निरकुण गामन वहाँ पर स्थापित कर दिया गया। जिससे न इधर ध्यान देने की जरूरत नहीं समझी, यदि भारत की भूमि में वह बाहर का राज्य है तो उत्तर के पड़ोसी भी उससे स्वतंत्र सम्बन्ध स्थापित करना चाहेंगे। वस्तुतः वर्तमान गतादी के आरम्भ होने तक सिक्किम और भूटान निम्नवत् के अधीन माने भी जाते थे।

कलिंगयोग—६ तारीख को सवा १० बजे विमान उड़ा और १० बजे से पहले ही हम बागडोगरा पहुँचे। आसमान साफ था इसलिए हिमालय का दृश्य बड़ा सुन्दर दिखाई पड़ रहा था। चामालुगमा (एवरस्ट) की छत्र निराली थी। पीछे दमन पर्वतमालाएँ और आगे की जाकर हर भरे पहाड़ थे। बागडोगरा में मणि बाबू की मोटर मिली और थोड़ी दूर मिलिगुनी में ठहरकर हम ३ बजे घर्मोदय पहुँच गए।

दापट्टर व बक्त कुछ गर्मी भी मालूम हो रही थी। कलिंगयोग ४००० फुट ऊँचा है। गर्मी में त्रिलकुल बचन के लिए ६००० फुट की ऊँचाई चाहिए जहाँ जाड़ा में बर्फ भी पड़ जाती है। "मधुर स्वप्न" गमाप्त हो गया था। ११ जून से "आज की राजनीति" लिखाना शुरू किया। जून में

घ्य म वर्षा भी पूरी तौर से आरंभ हो गई थी और बाहर सवेरे घूमना तभी हो सकता था जब आसमान साफ हो।

बलिम्पोग जाए डेड महीना हा गया था। जाने व साथ जितना गन्ना को लम्बाना था उह तरण तरुणियाँ लिख चुके थे। हम जब-तब जमा हाने वाल गन्ना व लिखान व लिए एव ही की आवश्यकता थी। श्री परमहंस मिश्र १९३० से ही मरे परिचित थे। वह यहाँ मिशन स्कूल म अयापक थे। लिखन वाले लडके-लडकिया का प्रबंध उहाने ही किया था। मैंने उनसे कहा—नि काइ सबसे चतुर लिखने सम्मने बाटे लडके या लडकी को भेज। काम लिए हुए लडकिया म कमला परियाग भी थी। परमहंस जी ने उसकी ही सिफारिश की और वह १४ जून स आकर काम करने लगी। उमक अन्धर भी साफ थे। मेट्रिक पास हाने से अंग्रेजी भी ठीक, और हिन्दी का भी गान अच्छा था। मेट्रिक पास लडके-लडकिया को काम मिलना आसान नहीं था। कमला गरीर स बहुत दुबल और बेकारी से चिन्तित थी उसकी पढन की इच्छा बहुत थी लेकिन गरीबी की मार आगे काम बढने देती? वह हमारे यहाँ से पुस्तकें ले जाकर पढा करती।

१४ जून को गाम के वक्त टहलत हुए हम चन्द्रालोक म गए। आरा के श्री निमलकुमार जन न बडी साथ स अपने लिए यह भवान एस वान पर बनवाया था जहाँ दूरबीन स पहाडी की दोना तरफ की भूमि दूर तक दिगई पडती है। जब तक सम्पक म न आय तब तक आदमी व वारे म क्या पता लगता है, विगेपकर उसका जो लेखनी का घनी नहीं हो। हमारी कई पुस्तकें उहाने पनी थी और मद्रस पीछे निकले 'जा दास थे' को भी। इसलिए अपन वारे म परिचय देने की आवश्यकता नहीं थी। मुझे वह बडे ही अध्ययनगील और सुमस्हत पुरुष मालूम हुए। सास्कृतिक वातावरण उनके सारे परिवार म था। उद्याग घघे के लिए बडे-बडे स्वप्न दमे। चीनी की मिठे ही नये स्थापित की बल्कि अल्मोनियम पत्ता करने के लिए सबसे पहला कारखाना उहान ही स्थापित किया। पर आविर म सभी चीजा पर सगेरी मठा का अधिपार हा गया। वह आर्थिक शान्ति का गवा की दृष्टि

से नहीं दखन थे । दाना भाई आजकल यहा थे । वितनी ही देर दानचीन करने के बाद रात का माडे ६ बजे हम प्रमोदय लौट आय ।

१५ तारीख म 'धुमकड गाम्त्र' लिखना शुरू किया । महानारायण लिखने म चुम्न और अन्तर भी उनक माफ बनन थे । धुमकड हान स सैकडा तम्ण मुषमे धुमकड की के बार म पूछत रहन और जानना चाहते कि उहें उस पथ पर कस आम्ड होना चाहिए । धुमकड हाने की जिनासा को इतनी वडी-चडी देकर मुये प्रमनता भी हुई और माथ-माथ में यह भी अनुभव करन लगा कि चिट्टिया म उत्तर दन या ज्याग मे ज्याग बात करन पर भा जिनामा पूरी नहीं हा सकती, इसलिए इस पर एक पुस्तक लिखनी चाहिए । पुस्तक लिखने वक्त मुझे यह विश्वास नहीं था, कि उसके कदरदान तरणा से वादर भी काफी मिर्गेग । सत्रम पहर श्री कटैयालाग मुगी के मुत्र स इस मातर्वे गाम्त्र की तारीफ सुना । उनके बाद त्रिहार के दाना विश्वविद्यालया न अपनी पाठय पुस्तका म उसने कुछ अगा को स्थान दिया । मरा ता बलि इममे माथा ठनका । यह तो आ बल मुये मार" जैसी दान थी । तम्ण ता घर छाडकर भागन के लिए तैयार बठे रत्ते हैं । पाठय पुस्तक म यदि उसी क लिए उत्तेजना दी गई ता यह विद्यार्थिया के माना पिताजा के मल की बात नहीं हा सकती ।

इसी समय दक्षिणी कलकत्ता म पार्लियामेन्ट की एक भीट का पुन-निर्वाचन हुआ । श्री गरतचन्द्र वाम चौगुन वाटा से काप्रेस उम्मीदवार को हराकर चुन लिए गय । काप्रेस वाट कभी आगा नहीं कर सकन थे कि नता जो क अग्रज और स्वय भी देग क गक वडे राष्ट्रीय नेता को वह हरा सकेंगे । फिर भी अपनी भद कराने के लिए उहाने काप्रेसी उम्मीदवार खडा करा ही दिया ।

इम वक्त मधुर म्पन और 'धुमकड गाम्त्र' दाना की साथ साथ लिपाई हा ग्ही थी, कभी कभी 'आन की राजनीति पर भी लिखा जाता था ।

महानजी अभी नवतरण थे । पढ़न की उनम तीव्र इच्छा थी और

गकिन भी रखने थे। वह भिफ हिंदी जानते थे। जागे चलकर संस्कृत या अंग्रेजी न जानने के लिए उन्हें अपमान होता। यह सोचकर मैं उनसे कहता, आगे पढ़ा। वह भी इसे पसंद करते थे लेकिन माय में रहते इतने बरम थे कि इच्छा होने पर भी काफी समय नहीं दे सकते थे। पहले भी मैंने कहा था यदि निबन्ध होना चाहते हो तो साधु बन जाओ। साधु बनने का अर्थ महंजी के जस लाग यह लगान है कि एक मनुष्य उस जाल में पड़ा, तो फिर निकलना नहीं जा सकता। लेकिन, यदि जाल टूटना पसंद जा जाए तो निकलने की जरूरत ही क्या? मैं दसना या साधु होकर आत्मो विद्या के लिए आजीवन विद्यार्थी रह सकता हूँ। धरसे कौटी के घुमकण्ठी बनने का उससे बड़कर कोई रास्ता नहीं। महंजी को कभी कभी बात पसंद आती और कभी बिदर जाने। विवाहित भी थे, और पत्नी से प्रेम भी था। गायद यही मांग में बाधा थी। वह जब पांच छ वर्ष पर छात्र बन गए, तो पिता निराग होकर उनकी पत्नी के लिए एक दिन मद्रास पहुँच गए, और द्विपाद महाराज को चतुष्पाद बना दिया। खर उनमें हिचकिचाहट थी। मैंने इच्छा प्रकट करने पर एक बार अपने मित्र स्वामी सत्यस्वरूप जी को उनके बारे में लिख दिया। यह भी निश्चय हो गया कि दो-तीन मास के खच का कोई प्रबंध हो जाएगा। १८ जून को यह निश्चय कर लिया कि जुलाई में महंजी बनारस जाएँ।

पुस्तक के लिखने का मकाल था। यह समस्या डेढ़ साल से सामने थी। कभी अनुकूल लिपिक नहीं मिलता। अनुकूल मिलता तो वह अधिक दिना तक साथ रहने के लिए तैयार नहीं होता या हमें हा उसका भविष्य का ख्याल करके मामूली कलमघिसाई में उसके तरुण जीवन को ध्वस्त करना पसंद नहीं आता। महंजी के जान पर फिर वही परगानी उपस्थित हुई। आखिर लिपिकों के बल पर ही भारत लौटने के बाद जाधे दजन स ऊपर (बुढ़ काफी बनी बड़ी) पुस्तकें मैंने लिखीं। लिपिक के अतिरिक्त डायरीटोज भी एक समस्या थी। यद्यपि अब उसका छूटने की आशा बहुत कम रह गई थी और यह भी हा गया था, कि इसका परगानी

से बचन के लिए हम रोज इन्तुलिन लेना चाहिए। पर अभी तक उमस में बचता आया था। बहुत दिना तक बचा जाएगा, इसकी आशा नहीं थी। इसी समय हमारे यहाँ कमला भी काम कर रही थी। महान जी के बाद लिखन का काम बड़े अच्छा तरह कर लेंगी, और टाइप करना भी सीख लेंगी, जिससे हरक पुस्तक की दो कापिया तैयार हो जाएंगी। इस तरह से अब निश्चितता हो गई।

धर्मोत्पत्ति में जिस मकान में हम रहते थे, वह बहुत ही स्वच्छ और रहन के अनुकूल भी था। पर गहर के नजदीक होने से कितना ही करन पर भी लोग का आना-जाना होता रहता था, जिसके कारण समय बरबाद होता था। वैसे रविवार का मैं सारा समय भेंट मुलाकात के लिए दिन का तैयार था। हम दूढ़ रहे थे, कि कोई एकांत अनुकूल मकान मिले।

१६ जून को रविवार था। सबर डा० रोयलिक के पास गया। किसी शायर का कहना ठीक ही है—“सूत्र निबहंगी जा मिल बढेंगे दीवान ग।” हम दोनों एक ही मज के मरीज थे। तिब्बन के सम्बन्ध में हमारी न कृपण होने वाली जिज्ञासा थी, और उसा के लिए काम करना चाहते थे। डा० रोयलिक के साथ तै हुआ, कि धमकीनि के महान ग्रन्थ ‘प्रमाणान्वित’ का अंग्रेजी में अनुवाद किया जाए। उस समय यह काम पूरा नहीं हो सका। निश्चय हुआ डा० रोयलिक निवृत्ती अनुवाद से अंग्रेजी में करे और पीछे मैं सम्बन्ध से उसका मिलऊँ। एक परिच्छेद का कुछ अनुवाद कर भी चुके थे और तीन परिच्छेद रह गए थे। किसी का भा इस महान ग्रन्थ का अनुवाद करना ही होगा।

गाम का श्रीमती ज्यास्ना चटर्जी आई। वह कल्पिपो महिला कितनी ही याता की जिज्ञासा रखती थी। उनका भाभी श्रीमती बुलबुल प्रयाग विश्वविद्यालय में अध्यापिका हैं, उनका भी कितनी ही जिज्ञासा थी। आज की गाष्टी में ता बल्कि नन्द अधिस्तर आता रहें। उस समय अभी यह मालूम नहीं था, कि हम ज्यास्ना जी के बंगले को ही विराय पर लना पड़ेगा।

उसी दिन स्वामी सत्यस्वरूप जी को चिट्ठी मिली, जोर उहाने महेश जी का प्रबंध कर देने के लिए लिखा था। महेश जी के जान से हम कुछ हिचकिचाहट भी हाती थी, क्योंकि कमला मुस्तै थी लेकिन बहुत जम्बव्य-सी दुबड़ी पतली। इतने काम का सभाल भी मक्केगी इसमें सन्देह था। महेश जी भाजनशाला की व्यवस्था जोर चोगा के खरीद फरोमन का हिसाब भी रखते थे। इसी समय श्री रामेश्वरसिंह भी हमारे परिभाषा निर्माण के काम में सहायता देने के लिए चले आए थे। जिसको जादभी बचपन में देखे रहता है बड़े हान पर भा उसका बचपन का रूप ही सामने आता है। रामेश्वर जी छपरा जिले में मन्टान से दूर पोखरपुर गाँव के एक बड़े भद्र और सुसंस्कृत परिवार में पैदा हुए हैं। यह केवल गिण्टाचार के लिए मैं नहीं कह रहा हूँ। उनके पहले की पीढ़ी में अपने जीवन शिखा और खेतीबारी में इतना परिवर्तन किया था जिसकी उस गाँव में आशा नहीं हो सकती थी। ताम्रिक-रुचि उनके परिवार में देखी जाती थी। परिवार ने लड़को ही नहीं लड़कियाँ तब की उच्च शिक्षा दिलाई। यद्यपि वह सामाजिक तौर से उतनी आगे नहीं बना लेकिन शिक्षित और संस्कृत बना देने पर गली पीढ़ी अपने आप सम्मान निकालती है। अगर पहले पीढ़ी छूटा छाता भादू मूर्तिपूजा में मुक्त हुई तो जगली पीढ़ी जान पान से भी मुक्त हो जाए इसमें आश्चर्य या शोक प्रकट करने की जरूरत क्या? हम परिवार की एक लड़की ने पिछले ही साल अपनी राजपूत बिराणों छोटकर दानो कुला की पराहन करने ब्याह किया। रामेश्वर जी बड़े ही योग्य तथा आदर्शवादी तर्क हैं। सरसे मुदिक् यह है कि वह बनावसपत्नी हैं, किसी एक जगह दो चार महोने में अधिक रहना उनके लिए मुश्किल है। पर, अभी वह भारत में बाहर नहीं गए। महेश जी के जान पर रामेश्वर जी और सनगुप्त भी कुछ काम संभाल लेंगे इसका भरोसा था।

२१ जून का पटना से बीरभोजा आए। अब जोर कामा के साथ हम नए घर का तलाश में भी थे। धर्मोत्थ में साल बिताने में कोई निवृत्त नहीं हाती। उस समय ता मालूम होता था कई साल यही रहकर काम करना

पडेगा। वही रह हान, ता काम के बारे में तो नहीं कह सकत, पर डा० भट्ट का बुरी तौर से राग में फँसन की गायद नौबत न जानी। २२ तारीख को हम घर की तलाश में उस तरफ गए जहाँ कवीन्द्र रवीन्द्र बगडा 'चित्रभानु' है। महाकवि नामा के चुनन में भी कितनी पनी सूच और सुरुचि रखते थे, यह इस बगले के नाम से स्पष्ट है। उसका नाम ही श्री अवनी मित्र का एक घर था। घर छोटा था किन्तु बुरा नहीं था, और हम चार-पाँच आदमियाँ का गुजारा चल सकता था। लौटने समय किमी न चलवाया और हम श्रीमती ज्यास्न्या चटर्जी के 'पावती बगले को देखने' चल गए। बिराया १५० रुपया माँगता था, जो उस समय अधिक नहीं मालूम होता था। यह गहरा सडूर भी था और बहुत साफ-सुथरा भी। पडोस में भी अच्छे लार थे, इसलिए यह मन में बस गया।

वीरेन्द्र जी से प्रकाशन के बारे में बात हुई। उसकी तरफ ज्यादा ध्यान देने की जरूरत थी, क्योंकि मुझे अपना सारा खर्च पुस्तक की रायल्टी से ही चलाना था और खर्च पाँच सौ रुपए महान से कम था नहीं। साहित्य सम्मेलन में एक पैसा लेने का रूपाल भी नहीं कर सकता था। वैसा करना होता तो काम में हाथ उठा लेता। यदि पहिले की पुस्तक के नए सम्स्करण निकलत रह और नई पुस्तकें छपती जाएँ, तो आर्थिक कठिनाइयाँ का सामना करने की जरूरत नहीं थी। हमारी पुस्तक के पठन वाले देश में काफी धे उह यह पता लग जाना चाहिए कि कौन सी नई पुस्तक निकली है तो वह लन के लिए तैयार थे। कहावत है 'नामी चार मारा जाय, नामा बनिया कमा लाय।' निश्चित आमदना हानी चाहिए। मैं जब निश्चय किया कि सार सम्स्करण की रायल्टी का आधा रुपया अधिम मिले। वीरेन्द्र जी न मरी कई पुस्तकें प्रकाशित कीं, लेकिन उनके साथ इस नियम का पालन दाना और की ग्लाइ के कारण नहीं हुआ। २५ तारीख को कित्तब महल की रायल्टी का हिसाब आया, जिसमें मालूम हुआ कि पाँच हजार रुपया रायल्टी से मिलन वाला है।

'सुबह हानी है गाम हानी है। उम्र या ही तनाम हानी है। यह

वान ता में दाहरा नहीं सकता था, क्योंकि मेरी उमर या ही खतम नहीं हो रही थी। हफ्त के साना दिन काम म जुटा रहना था, और इमने कारण ही पना नहीं लगता था कि कब सुबह हुई कब शाम और कब हफना समाप्त हा गया ? हाँ जिन्दगी क आखिरी साला म तो यह खच खाते म जमा हो जाने थे। २७ जून को मैंने दाशनिक उडान भरते हुए लिखा था— आदमी का गति की सीमा समझ कर उसी क अनुसार काय अपन सामने रखना चाहिए, और उतनी ही की चिन्ता करनी चाहिए। लोग ग्रीचना चाहत हैं, किन्तु खिचाव म नहीं आना चाहिए।”

२८ को 'आज की राजनीति' के प्रथम अध्याय का कमला ने टाइप कर लिया। दूसरे की लेखनी की सहायता स लेखक को कितना सुभीता हाता है, इसका अनुभव मेरा कई वर्षों का है। अब यह एक कदम और आगे था। यदि पुस्तक टाइप हो ता उससे प्रेसवाला का भी आराम रहता है और काब्रन से एक कापी कराकर अपने साथ भी रखी जा सकती है। मेरी जीवन-यात्रा क पचास पृष्ठ खोकर प्रेमवाला न सिखला दिया था कि प्रेस कापी की एक नकल अपन पास जरूर रहनी चाहिए। मैं कभी रेवाडर पर बाल कर डिक्लेट करने की बात सोचता था। पर अब देखा, रिवाडर फिर उमी गति से ही दाहराता है जिसका अर्थ है कि उस द्रुतलिपि म ही लिखा जा सकता है और इसक बाद टाइप करन की नीवत आती है। यह अपन बम की बात नहा मालूम हुई। अभी लिखकर टाइप करान की ही बात माच रहा था पर आग तजबों ने बतला लिया कि टाइपराइटर पर बाल करक लिखान म और भी सुभीता है। इसलिए पीछे उमीको अपनाया। २० जून का 'धूमकण्ड' गान्न समाप्त हो गया फिर "आज की राजनीति" नियमपूर्वक लिखा गुरू किया। १ जुलाई का फिर 'पावती' दखन गए। उमी दिन म अब कमला को साहित्य-सहायिका क तौर पर रखन का निश्चय कर लिया। २ तारीख को 'पावती' के दखन पर मालूम हुआ कि हम पाँचा आदमी यहाँ रह सकते हैं। फर्नीचर कम थे और मकान भी उतना अच्छा नहीं है। श्री निमलकुमार जी का एक मनका

इससे बेहतर मिल रहा था, लेकिन उसका किराया दो सौ रुपया मासिक था। हमन अन्त में छ महीन के लिए पावती को ही लेन का निश्चय किया और उसके लिए लिखा पढी कर ली।

“पावती”—३ जुलाई का मामान बाघ बूधकर १२ बजे हम नए मकान में पहुँच गए। अब उसके दोप भी मालूम होने लगे। वस्तुतः एक आर सोन के लिए एक बड़ा कमरा और एक काठरिया थी। दूसरी तरफ दो कमरे भोजन और बैठक के लिए थे। इनके अनिश्चित एक छोटी-सी बराडे वाली कोठरी थी, दो छोट-छोटे गुमलखाने भी। रमाईघर और भण्डारघर की कोठरिया एक साथ अलग थी। बगला कलिम्पोंग के क्षेत्र में पडता था, जहाँ हरेक मकान के लिए फलशवाला पाम्वाना हाना अनि-वाय था। आसपाम चारों तरफ छाटी सी फुलवारी थी। खुली जगह थी। हमने बैठक के कमरे को काम करने का कमरा बना दिया। भोजन की मज खुले बराडे में लगा दी और उसके कमर का शयनकक्ष में बदल दिया। बड़े कमरे में भट्ट और सेनगुप्त का आमन लगा, अड्डे कमरे में मैंने अपना आसन लगाया, उसकी बगल की बराडेवाली कोठरी महेश ने दखल की। रामेश्वर जी अभी आए नहीं थे, पर, उनका आना निश्चय हो गया था। उस समय उनको कहा रखा जाए इसने लिए भी साच लिया था— फोल्डिंग चारपाई कायगाला में बिठा देंगे। कुछ दिनों के लिए श्री त्रिधा निवाम जी आन वाले थे, दूसरे भी आ सकते थे। उनके लिए भोजनगाला की काठरी तयार थी। पहले दिन के तजवें से यह तो मालूम हो गया कि वहाँ स्थान हमारे लिए पर्याप्त नहीं है। मकान लेन पर जब अधिक अनुकूल बगटे भी मिलने लग थे लेकिन अब तो छ महीन के लिए ‘पावती’ में हम जम जाने के लिए मजबूर थे। ‘पावती’ से थोड़ा हा हटकर थोड़ा-सी चौरस कराई जमीन थी। सेठ जागान न उसे मावजनिक उपयोग के लिए बना दिया था, इमीलिए मैंने उसका नामकरण ‘जालान-स्थल’ रख दिया। वह इतना छोटा था कि उसे मदान नहीं कहा जा सकता था, और फल इतना नगण्य कि उसे फुल-

वारी भी नहीं कह सकते थे। मेरे लिए वह बड़ा ही उपयुक्त स्थान था। वरमात के कारण दूर टहलने के लिए नहीं जा सकता था, यहाँ उतन ही म सौ पचास फेरे करके टहलने का काम पूरा कर लेता था। वहाँ से आसमान साफ रहने पर दूर हिमालय की हिमशिखर पकितयाँ दिखाई पड़ती थी, रंगित और तिस्ता नदिया की हरी भरी उपत्यका का नयनाभिराम दृश्य मामन पड़ता था।

रसोइया एक लेप्चा ईसाई प्रौढ मिल गया, जिसे हमने बिना भोजन के ३५ रुपए पर रख लिया। उसका काम इतना सतोपजनक रहा कि हम कलिम्पोंग छोड़ते समय उसे साथ लाना चाहते थे, लेकिन वह अपना घर छोड़ने के लिए तयार नहीं था। खैर भाजन की किच किच हमारे लिए खतम हो गई। भट्ट जी हृदय की बामारी में जमनी में ही पीड़ित थे। यहाँ हर वकन दवाई खाते रहते। ४ जुलाई की रात का उनकी तबीयत बहुत खराब हो गई हम लाग बड़ी चिन्ता में पड़ गए। गहर से दूर रहना हमेशा नफ का सौना नहीं रहता। गहर के पास रहे हाने ता डाक्टर को आसानी से बुला सकते थे। अब यहाँ से मील डेढ़ मील जा आधी रात को कमे डाक्टर का बुलाया जाता। वर्षा जार गार की हान लगी थी। क्या जान उसका प्रभाव डा० भट्ट व स्वास्थ्य पर पड़ा है।

६ जुलाई को श्री विद्यानिवास जी अपने भाई व साथ दम ग्यारह दिन के लिए आए। परिभाषा व काम करते हुए उन्हें सम्मेलन का वेतनभोगी कायकर्ता रहना पड़ता, जिसे उन्होंने पसन्द नहीं किया, क्योंकि वह सम्मेलन का सरगम सदस्य रहना ज्यादा अच्छा समझते थे। इसी समय रेडिया से शककोश बनाने का काम मिल गया था। वह गायद ज्यादा स्याई होता, इसलिए उन्होंने उसे स्वीकार कर लिया था। पुस्तको के लिखन से इतना उत्साह बढ़ गया था कि मैं साच रहा था 'मेरी जीवन यात्रा' की तीसरी पायी भी लिख डालूँ। पर उस लिखने का मौका अब सान वष बाद मिला है। पावनी आने का यह लाभ ता अब जरूर मिल रहा था कि मिलने जुलने वालों के कारण समय अधिक बरबाद नहीं हाता था। १० जुलाई

शामवार का भी पांच ही सात आदमी जा सकते थे। ११ तारीख का राधे श्वर जी भी आ गए। उन्होंने फार्मोसी विमान लेकर हिंदू युनिवर्सिटी से सी० एस्-सी० किया था। वह उसी की परिभाषाआम लग गए। उसके लिए वह कितनी ही पुस्तकें भी माच लेते आए थे। महेश जी को कुछ दिनों के लिए और रोक लिया, उनके जाने से काम की अडचन मालूम होती थी। कमला लिखन का काम कर रही थी। टाइप पहलू ता बकायदा ही काफी सीख गिया था, पीछे बानायन सोलकर उहान अपनी गति भी बना ली। लेकिन स्वास्थ्य बहुत दुबल था, आखा के सामने अंधेरा छा जाता था। वजन बिल्कुल कम (६२ पौंड) था, और जब तक वजन न बड़े तब तक गरीर में काम करने की पूरी शक्ति नहीं आ सकती थी। बस बुद्धि बहुत अच्छी थी। स्वास्थ्य पर सबसे अधिक ध्यान रखने की जरूरत थी किंतु उनकी तरफ से वह बंपर्कहि थी। स्वभावतः वह अस्वस्थ नहीं थी। घर की भीषण गरीबी ने बचारी का ऐसा बना दिया था। ऐसी दरिद्रता की मार गायद ही किसी शिक्षिता तरुणी का खानी पड़ी होगी।

१२ जुलाई का तिब्बत के सबसे बड़े व्यापार पन्ना छाग आए। यह उनके परिवार और घर का नाम है। व्यक्तिगत नाम याद रखने का और रोग अधिक हयाल नहीं रखते। देर तक उनसे बात हाती रही। उनकी बाठिया तिब्बत में कई गहरा और कलिम्पोंग ही में नहीं हैं बल्कि पूर्वी तिब्बत (सम्प्रदाय) और चीन में भी कई गावाएँ हैं। चाग-वाई शक और कुमिताग के शासन का उनका व्यक्तिगत अनुभव था। वह नहीं चाहते थे, कि कुमिताग चीन में और रहे। चीन से चाग-काइ गेव का पतन बट ही गया था। पूछ रहे थे—तिब्बत को क्या करना चाहिए? मैंने कहा—बाहर की सहायता की आशा रखना बकार है, चीन ही तिब्बत का अपना है और जदा से रहा है। चाग-वाई गेव का राहु जय मिर से उतर गया है। कम्युनिस्ट तिब्बत की भलाई के लिए सब कुछ करेंगे। पुरानी व्यवस्था अब चल नहीं सकती। बाहर भागने का भी हयाल छोडकर आप लागे का जपन देना में रहना चाहिए। आपकी याग्यता दंग की सवा के लिए आवश्यक है

है। (पीछे लाना का प्रेम पूर्ववत् स्थापित हो गया) श्रीमती राय न सुनी से काम का स्वीकार कर लिया किन्तु पारिथमिक स्वीकार कराने में हम काफी कठिनाई पड़ी। वह जब टाइप करती तो खटपट की आवाज इतनी जल्दी जल्दी जाता कि मिश्राम नहीं हाता था, इतनी तेज गति में टाइप पर अगुलिया चल सकती हैं। उनके आन में कमला को भी एक बड़ा लाभ हुआ। कमला हिंदी टाइप करने लगी थी लेकिन उन्होंने टाइप करने की विधि को बाकायदा सीखा नहीं था। जाइरिन जमा गुह उन्हें दूसरा कक्षा से मिलता? उन्होंने बड़े प्रेम में कमला का टाइप करना सिखाया, यद्यपि यह नागरी टाइपराइटर था लेकिन टाइपराइटर की कुजिया और उन पर अगुला रखने की विधि तो एक ही तरह की है। कुछ दिनों में कमला उसे सीख गई और उसकी टाइप करने की गति भी बढ़ गई।

२४ जुलाई को कामिताग रेडिया से पता लगा लहासा में कम्यनिस्टा का प्रभाव बढ़ गया है और हमारे प्रतिनिधि को निकाला जा रहा है। विराधिया के नेता मुर खड चाड से हैं। मुर खड चाड से हमारे परिचित जेनरल के बड़े भाई थे। उस दिन मध्याह्न का भोजन मैं उनसे ही साथ किया था। अब लहासा में यह सोचा जा रहा था कि कामिताग के आदमियों को उत्तर में तुंगना के इलाके में या भारत में भेज दिया जाय।

तीसरी बार दिल्ली—२५ को फिर अनुवाद समिति के काम के लिए बागडोगरा जाकर ११ बजे का विमान पकड़ा। मालूम हुआ कि चश्मा भूल आए। चश्मे के बिना दिल्ली में जाकर क्या करता? पढ़ने के लिए वर्यो से उसकी अनिवाय आवश्यकता थी। दोपहर बाद कल्कत्ता पहुंच पहले ही चिंता हुई कि एक चश्मा लिया जाय। घमंतल्ला में एक चश्मेवाला दूकान पर गए। पर वह विधि विधान बतलाने लगे—पहले आंख में दवा डालेंगे फिर जांच करके नम्बर का पता लगाया जायेगा, तब चश्मा देंगे। मैं 'नीमन तेल की गत मानने के लिए तयार बस हो सकता था? अगले ही दिन मुझे दिल्ली पहुँचना था। मैं कहा जो चश्मा मेरे आंख में लगता है, तबक पडाक उस मुच द लीजिए। ५० रुपय पर

चश्मा खरीद लिया। बड़ी दूकान थी नहीं तो दूसरी जगह वह इमसे चौथाई दाम पर भी मिल जाता। सेनगुप्त कुछ दिनों के लिए छुट्टी पर घर गये थे। वह भी मिले और सेंगरजी भी। कलकत्ता पहुंचने पर सगर जी क साथ रहने का घटो अवसर न मिले यह हो नहीं सकता था। २६ जुलाई को ७ बजे सवेरे खाना खाने वाला विमान जाकर पकड़ा। यह बिडला कम्पनी का था, जा पत्ता बनारस, लखनऊ म हकता साढे छ घट म दिन्नी पहुंचन वाला था। डकोटा विमान पाच हजार फुट ही तक ऊपर उडते हैं धरती क नजदीक उडन के कारण विमान के भीतर गर्मी मालूम हा रही थी। डेढ बजे में दिरली पहुँचा। उसी दिन ३ बजे अनुवाक ममिनि म उपस्थित हुआ वह काम रोज चलता रहा।

२६ जुलाई को मेरे सबसे छाट अनुज श्रीनाथ अपने दोनो पुत्रा आम प्रकाश और जयप्रकाश को साथ ले आये। अभी भी वह किसी मिठाई की दूकान से मिठाईया लेकर फेरी करते थे। दम बाग्ह वष दिल्ली म रहने हा गए लेकिन वह फेरी म ही लगे रहे। यदि खानदानो बनिए हाते, तो इतने समय म दूकान खडी कर लिए हाते। कह रहे थे अगर रुपये होते, तो हम अपनी दूकान इस वक्त खडी कर सकते थे। मैंने २१०० रुपये उहे इमके लिए दिये भी परन्तु व्यवसाय की बुद्धि कुछ दूसरी ही हाती है। वह फिर फेरीवाले ही बने रहे। हाँ गहर मे रहने से उनके लडका को कुछ पढन का सुभाता था पर वह ता घर के दूसरे लडका को भी हो रहा था।

दिल्ली में चारा ओर अंग्रेजी का वातावरण है। २६ तारीख का एक महिला को अपने कुत्ता के साथ अंग्रेजी म बान करते मुना। मुना भी था कुत्ते अंग्रेजी ही म बोलन पर समझने हैं। मरा विश्वास एसा नहीं है। मसूरी आन पर मैंन चार हप्ते के भूतनाथ का अपने पाम रक्वा। वह पाँच बरस का हा गया है लेकिन अंग्रेजी का एक अक्षर भी नहीं समझता। इस वक्त मविधान-मभा म अंग्रेजी का स्थान हिन्दी ल या न ले इम पर विवाद छिडा हुआ था। जिन नौनरागाहा की राणी अंग्रेजी पर चल रही थी अपनी जिन्गी भर उगन महम्मन हान की गारटी देने पर भी वह हिन्दी का आगे

वदन दना नहीं चाहते थे। दिल्ली के सभी कार्यालयों में केवल अंग्रेजी के बल पर जा लाग छाया हुए हैं वह हिंदी के सख्त विरोधी हैं, और जफ्मोसता यह कि नेहरू का भी बल उनका प्राप्त था। आजकल अंग्रेजी और भाई भतीजा भांजा या बहिन भतीजी भाजी यह दो योग्यताएँ ही आदमी का ऊँचे दर्जों पर पहुँचा सकती हैं। यह पक्षपात अत्यन्त भयंकर है। लाग बड़ी आलाबनाएँ करत हैं उनके दिल में आग जल रही है। हमारे एक महा पुरष की बहिन के समधी की लड़की एक विभाग में ऊँची नौकरी पर थी। व्याहृ हान के बाद उसे नौकरी से अलग कर देना चाहिय था। लेकिन जब देवातिदेव के सम्बन्ध की बात हो तो उसे हटाने की कौन हिम्मत कर सकता है? ऊपर एक जगह यदि एसा अयाय हो रहा हो तो नीचेवालों को उमसे क्या न प्रोत्साहन मिले?

धुमकवड गास्त्र के लिए राजकमल वाला ने एक हजार रुपया अप्रिम भी दे दिया। अब के उसके तीन फाम छपे भी मिले। गास्त्र १९४९ में ही छप गया था लेकिन उसकी तीन हजार कापिया १९५६ में समाप्त हुई। यह बतलाता है कि हिंदी पुस्तक की खपत कसी है? इसी यात्रा में हिंदी के लिए अखिल भारतीय सम्मेलन बुलाया गया था, उसमें भी भाग लेना था। सेठ भाविदत्ताम जी ने मुझाव दिया था—वही सम्मेलन के सभापति थे—कि भारत के सभी प्रान्ता के विद्वाना का सम्मेलन करके उसमें हिंदी के पक्ष का समयन कराया जाए, तो उसका असर पार्लियामेंट के ऊपर बहुत पडेगा। सम्मेलन में इसक लिए बीस-पच्चीस हजार रुपये खच किये लेकिन वर्ग जमी मूर्तियाँ आई थी उनमें से कितना का देखकर निराशा होती थी। डा० नोल्कथ गास्त्री हिंदी और उर्दू दानो का राष्ट्र भाषा बनाने के पक्षपाती थे, क्याकि दोना के काल अक्षर उनके लिए भस करावर थ। इसके साथ ही वह यह भी जानते थे कि शिक्षा विभाग के देव आजाद और भारत सरकार के महादेव उर्दू के समयक हैं। उर्दू हिंदी भाड में जाये, उन्हें तो दबो महादेवा की कृपा कटाक्ष की आवासा थी। विश्व विद्यालयों और कार्यालयों में तो वह अनन्तकाल तक के लिए अंग्रेजी को

चाहते हैं। सुनीति बाबू हिंदी भाषा और दवनागरी का स्वतंत्र देग के लिए अलवार की चीज रखना चाहते थे। दूसरे देग के साथ दौरे सम्बंध स्थापित करने में इनका मर्यादित व्यवहार होना चाहिए। लेकिन सरकार और विश्वाविद्यालया का माध्यम अंग्रेजी ही रहे। डा० खाडे का विचार बहुत सुधरा हुआ था और वह संस्कृत के विद्वान् हात हुए भी जानते थे कि हिंदी ही हमारे देग की सम्मिलित भाषा हो सकती है। डा० कुहन राजा संस्कृत का राष्ट्रभाषा बनने देखना चाहते थे।

६ अगस्त का मकर ८ बजे इम्पीरियल हाट में भिन्न भिन्न प्रदशा में आय विद्वाना की एक बड़ी गांठी हुई। ६ बजे में साडे ११ वन तक लागा ने अपने विचार प्रकट किए। अधिकतर लाग हिंदा के पक्ष में थे और दस-पंद्रह साल की अवधि के भीतर अंग्रेजी को पूरी तौर से हटा देन के पक्षपाता थे। गंगा न अंग्रेजी में भाषण दिए। मैं देख रहा था सभी प्राणा से आये हुए विद्वान् संस्कृत जाननेवाले थे इसलिए मैंने अपने विचारा का संस्कृत के माध्यम से रक्षा, जिसे लागा ने पसंद भी किया। खैर इस गांठी में त्वा का क्या फल है इसका पता लग गया। दापहर बाग कान्स्टिट्यूशन भवन में विद्वद् परिषद् की बैठक हुई। डा० वाणे आ नहा मक ४ सुनीति बाबू अंग्रेजी की आर ज्यादा विमर्श गये थे, इसलिए डा० गान्वाल को सभापति चुना गया। डा० राघवन, डा० नीलकण्ठ गान्धी तमिलनाड के मलाबार के महाकवि वल्लभाय और चन्द्रहासन कन्नड के नागप्पा और इसी तरह दूसरे विद्वाना ने भी भाषण दिए। मुझे संस्कृत में बागने का आग्रह किया गया, मैं उसमें हा बाग। फिर महामहापाध्याय गिरजर गंगा ने कहा राहुलजी ने रास्ता दिखला दिया इसलिए मैं भी संस्कृत में ही अपने विचारा से प्रकट करता हूँ। उस परिषद् में कितने ही एम विद्वान् थे जो हिन्दी नहीं समझते थे। परिषद् ६ बजे तक रहा। बहुत अधिक मर्याद में लोग ने हिन्दी का समर्थन किया। अगले दिन फिर परिषद् हुई जिसमें प्रस्ताव पाम हुए—भारत की राष्ट्रभाषा नागरी लिपि में हिंदी होनी चाहिए अन्तर्राष्ट्रीय कामों के लिए हिंदी तुर्गन अपनाई जानी चाहिए

अतर्प्राणीय तथा के द्र के कामा म दम साल के भीतर हिंदी को हो जाना चाहिए, सभी विद्यार्थियों को अपनी मातृभाषा व अतिरिक्त हिंदी और हिन्दी भाषियों का कोइ एक दूसरी भाषा अनिवाय रूप से पढाई जानी चाहिये। आदश वाक्यों के लिए संस्कृत भाषा का भी इस्तेमाल करना चाहिये। शाम का दा वजे से साढ़े ७ वजे तक की परिपद म उक्त प्रस्ताव एक मत से पास किय गए।

उस दिन रात का श्री शिवनलाल सक्सेना से बहुत देर तक बात होती रही। उस समय रूस म दर तक रहकर लौटनेवाले भारतीय कम ही थे। सक्सेना जी ने मुझम रूस व बारे म बहुत सी बातें जाननी चाही। उसक बाद उह रम्युनिस्ट चीन और कम्युनिस्ट रूस को अपनी जाग्रा अच्छी तरह देखन का मौका मिगा, और समझ गय कि वहाँ कितनी गीघ्रता से परिवर्तन हुआ है, लागा की हालत बेहतर होती जा रही है। उसी दिन श्री महं प्रसाद श्रीवास्तव भी आ गए। उनके साथ तो आधी रात क बाद तक बात चलती रहा। मैं थोना ज्यादा था और वक्ता महं प्रसाद जी थे। वह काप्रेम म भाग लेन कई बार जेठ गय थे। उसी समय स विजय-लक्ष्मी और दूसर ननाजा के सम्पर्क म आय थ। रहनेवाले रावाँ के किसी गाँव व है। जब विजयलक्ष्मी जी भारत की राजदूत बनकर रूस जान लगी तो महं प्रसाद जी के कहन पर उह चपरासी बनाकर ले गई। श्रीवास्तव साल भर उाके साथ मास्को म रहे। हिंदी अच्छी जानते थे और हिंदी टाइप करना भा जानन थ। वह चपरासी बनकर गए लेकिन मास्का म जान पर उनका जवसर मिला जब कि सोवियत सरकार क रूल का देख-कर भारतीय दूतावास का बरनी लिम्बा पत्नी म हिंदी को अपनाव के लिए मजबूर हाना पडा। वहाँ जो आइ० सी० एस० और दूसर मन्त्रीकरणगठ गय थे, वह सभी अग्रजी का दूध बचपन से पिय हुए थ। हिंदी से उनका काइ वास्ता नहीं था। एक रूसी महायिका श्रीवास्तव से पूछ रही थी—अमुक महागाय जन छाट टाट बच्चा म जगजा म क्या वाल्त हैं? यह का उग अपरिगठित रूसी महिगा के दिमाग म उठ सकती थी लेकिन

हमार इन्दा आग्लियन लाणा की समय म जाने की यह बात नहीं थी। गम ता तब आय जब आत्मी कुछ समय पाय। श्रीवास्तव न उनसे कहा— वह भाषा का अभ्यास करा रहूँ। यह गलत बात थी। अभ्यास नहीं करा रहूँ वे बल्कि अपन साहबजाण और साहबजाणिया का आभिजात्य बग म गमन क लिए यह जरूरी है कि अपनी भाषा का निरस्कार किया जाय और अंग्रेजी का अपनाया जाए। त्रिजयलक्ष्मी जी क माय एक हरिजन रसोदया भी प्रयाग से गया था। हमारे लेगी साहब मम यूरापीय पक्वाना की भी खा लेत हैं लेकिन बचपन की ममालेनार चटपटी चीजें उनके मुह स नहीं छूटती इसलिए भारतीय रसाइय की भी जरूरत पड़ी। हमारे देश म काम करनवाले नौकर चाकरा के ऊपर यदि मालिक की बनी दया हुई ता वह कभी कभी कुछ मीठी बातें बाल दत है। वर आदमी हाने क नाते बराबर मान जाए इसकी ता बरपना भी नहीं हा मफनी। वहा रसी विदेश विभाग का बोद बटा जफमर आता और यदि अवसर होता तो रसाइय क साथ मज पर बठ के चाय पीता, और दिख खालकर बातें भी करता। रसोदया रूम स खुग क्या न हाना ? एक बार ता किमी अभद्र बर्ताय स अमतुष्ट हाकर वह मोचन लगा या कि वही का हा जाय। भारतीय दूतावाम क सभी छाट नौकर रूम से खुग थे क्याकि वहा के बडे आदमी भी उनक माय समानता का बर्ताव करत थे, पर घुट नौकरगाह रूमिया की हरक बात पर नाक भों मिनालत थे। वह रूमिया स मिलत भी नहीं व। भाषा की दिक्कत थी, लेकिन उस वह काफी दूर कर सकते थे। उनका उठना बैठना ज्यानानर इगलण्ड और अमरिका क दूतावामिया से हाता था, जिम रूमो बट मरह का दृष्टि म देखन थे। त्रिजयलक्ष्मी अपने सारे काठ म रूम का भारत के नजदीक नहीं ला मनी, इसका यही कारण था।

प्रयाग—६ अगस्त का अनुयाय ममिति का काम करक उमी दिन रात की प्रयाग की ट्रेन पकटी। त्रिजया की इतनी दौड धूप रूमिया म हा रहा थी। यद्यपि हम अधिकतर कल्मिषाग म रहने थे, लेकिन पहाड मे नीचे

उतरने में राधा गिर जाता था। अब सोचना था अच्छा हा यदि फिर जाडो से पहले दिल्ली आने की जरूरत न पड़े। १० अगस्त को साँ ६ बजे प्रयाग पहुँच गए। स्टेशन पर सनगुप्तजी मिले। श्रीनिवासजी के यहाँ भोजन करके सम्मेलन कार्यालय में पहुँचे। 'प्रत्यभगारीर और दूसरे भी कई लोग अत्र प्रसन्न व लिये तयार थे। यहाँ देखा छापन की गति अत्यन्त मन्द है। यह बन्नी निराशाजनक बात थी क्योंकि कम से कम आधे दर्जन काशा के प्रकाशित होने पर ही हमारी गाडी तेजी से चल सकती थी।

कलम्पोग—१२ अगस्त को सबेर रामदास म बटिहार जाने वाली छोटी लाइन की ट्रेन पकड़ी। ट्रेन में पहले दर्जे का डब्बा नहीं था, इसलिए दूसरे दर्जे का टिकट बलवाना पड़ा। १२ तारीख के सबेर गाडी बरौनी से आग बन्नी और साँ ११ बजे बटिहार पहुँची। समय नहीं था इसलिए उतर कर मित्रा से नहीं मिल सका। आग जाने की गान्धी तुरन्त तयार थी, धामी घामी चलती १० बजे रात को नवलबाडी पहुँची। वहाँ से एक रुपया द बम पर चढ़ मिलिगोडी स्टेशन पहुँचा। एक टक्की से बात कर उसी में रात को सो गए। जल्नी थी इसलिए मनमाना किराया देना मजूर किया। २८ रुपया का आल्मियो का भी बहुत हाना था टक्की भी बहुत पुरानी थी और डर लगने लगा रास्ते में ही वहीं बठ न जाए। सर विसी तरह ८ बजे हम 'पावती' पहुँच गए।

कमला ने टाइप करने में बड़ी प्रगति कर ली थी। अपने मन में हिन्दी की पुस्तकें पढ़ भा रही थी। हमने सोचा कि इसी माल सम्मेलन की विचार द परीक्षा दे दें लेकिन कलम्पोग या पास में उसका केंद्र नहीं था इस लिए उस माल बह नहीं हो सका। श्री सनगुप्त लखनऊ में डा० मालवीय और दूसरी जगह के विद्वानों से परिभाषाएँ लेने व लिये रह गए थे।

पावती डा० भट्ट और रामश्वरजी काम में लगे हुए थे। एक दिन चारिणा में कमला बहुत भाग गई इसलिए १८ अगस्त में उधे भी यही रहने का इत्तजाम करके पराधा से तैयारी करने व लिये बह गया। कमला के पिता मर गए थे, और पाँच भाई-बहिना व परिवार में बड़ा भाई मुश्किल

से अपने खर वच के लिए कमा पाना था। मा दर्जी का काम करती थी लेकिन उमक पाम किराये की मंगीन थी। मैं कमला से कहा एक मंगीन खरीदकर अपनी मा का दे दा। यह दे आई। बट न जानहा किया, वह बेटो न किया, इसम मा का खुशी हानो ही चाहिए थी।

कमला अब बन्त नजदीक आ गई थी। बन्ता खुवा है कि चायबटीज म इजेन्शन और लिखन के काम म महायता की। इधर बिना ही समय स मुझे बटी चिन्ता था कोई स्थायी व्यवस्था करनी आवश्यक थी। यह कमला कर सकती थी। फिर उनके स्वभाव का देखा। पढ़ने की लगन तथा तीव्र बुद्धि थी, इसलिए और घनिष्ठ होना स्वाभाविक था। श्रीमता राम ने अब टाइप करन म उट्ट पण्डित बना दिया था और दा घट म एक लख टाइप कर डालना उनक लिए आमान था।

चीन म कम्युनिस्ट मुक्ति मना न लखाउ गहर का लकर ४ मिनम्बर तक तुंगन ४ नादिरगाह की राजधानी मिनिंग को भी ले लिया था। लेकिन रेडिया न घोषणा की, निब्बन्ती भाइया को भी हम प्रतिगामिया के हाथ म नहीं छाड सकते। यह भी पना लगा कि ४० मन्चंग पर मामान लादकर दा अमरिक्न ल्हामा जा रह है। यह किमलिए ? चान मुक्ति मेना का ल्हामा म आना वह कस पमाद कर सकते थ ? बट चारा तरफ हाय-पैर मार रहे थ। लेकिन, इसका अन्त म आई कर हागा, इसकी सभावना उस वक्त भी नहीं मारूम हानी थी। मैं ता एव तरह वमे ही खुशिया पुष्टि की दृष्टि म गनरगत आरमी था। अब कलिम्पोंग म आकर निबन्त की मामा के पास बठ गया था। इगलण्ड के किमी पत्र न इगका उल्लेख भी किया था लेकिन चाना व मिवा मरा और किमी काम म कोई सम्भव नहीं था। मगे पूरी महानुभूति चीन के साथ थी। मैं जानता था, निब्बन्त की भलाई चीन व माम रहने म ही है, और वह छात्रक उमक लिए कोई रास्ता भी नहीं है। इस चान की ठिग ठिगकर कृता या मोचना था यह चान नहीं थी। मैं इस सम्बन्ध म नवीन चीन स्वयंसेवक आदि लख भी लिखे थे। जा आदमी अपनी मय चानो का भाव सांख्य रखता है, उमक

ऊपर खुफिया का रखकर हजारों रुपये खर्च करनी की क्या जरूरत ? इस प्रश्न का जवाब तो दिल्ली के देवता ही दे सकते हैं ।

१० मितम्बर का श्री सनगुप्त का जन्म निक्स था । घर भर का एक पार्टी हई । जासपास क रई पड़ोसी भद्रपुत्र्य और महिलाएँ भा गामिल हुइ । वष व आरम्भ ही म सनगुप्तजी अपने ज्योतिष के बल पर घापित कर रहे थ कि इस साठ ता मुझ मर जाना है । श्री विद्यानिवास जी भी फलित ज्योतिष व विद्वान् हैं । यह मैं मानूंगा कि सनगुप्त इस विद्या म उनस कम पारंगत नहीं थ । जब विद्यानिवास जी न यह बात सुनी, तो कटा लग—भारी बकबूफी है, ज्योतिष व ग्रहा का अपन ऊपर थोड़े ही घटाया जाना है । मैं सनगुप्तस वष व आरम्भ ही म कह दिया था, इस साल ग्रहा से बचाने की जिम्मेदारी मैं ल रहा हू । लेकिन, अर फिर तुम अपने ज्योतिष व ज्ञान की अपने ऊपर मत लगाना । और सनगुप्तजी अब स्वस्थ और प्रसन्न हैं । उस साल तो बड़े ही निराशावादी थे स्वास्थ्य भी उनका अच्छा नहीं था । पेनिसिलिन की दादी स्ट्रेप्टोमिसिन अभी दुलभ थी, लेकिन उमके भी इजेक्शन वह ल रह थे । ऊपर स शका का भूत तवार था ।

रामेश्वरजी बड़े कमठ तरुण थ । काम म जुट जाना उनस स्वभाव म था । लेकिन लकवा का असर उनकी एक आँग पर था जिसके कारण दर तब पुस्तकें देखन पर उनकी आँखा स पानी बहने लगता और दद गुरू ही जाता । घंटा भर भी पुस्तक देखना उनक लिए मुश्किल था । ऐसी अवस्था म काम म उनका मन नहीं लग रहा था । एस तरुण का खाना हमार लिए अपसास की बात थी । धारे धीरे यह भी पता लग रहा था कि गायन परिभाषा का काम हम ज्यादा जिनो तर न कर सकेंगे । जब तक ५० उलभद्र मिश्र सम्मेलन क प्रधानमन्त्रा थ तब तब हम हर तरह की सहायता मिल सकती थी सँगार परिभाषा-कोषा क छपान व बारे म वह भी विनय नहीं कर सक थे । अब तो सम्मेलन क अपन प्रस म माना टाइप भी आ गया था लेकिन तब भी श्री सीताराम गुठे जसा कोई प्रबन्धक नहीं मिला था,

जिसके कारण मार माघनो क रहने भी काम आगे नहीं बढ़ सकता था। माचता हूँ, यदि प्रस न मुसुनदी स काम करना शुरू किया होता तो हम परिभाषा क काम का आग बढ़ा सकते थे। सम्मेलन की भीतरी राजनीति से मेरा कोई सम्बन्ध नहीं था। मैं सभी दला का साथ लेकर चल सकता था। पर परिस्थितियाँ बनला रही थी, कि अत्र ज्यादा आगा नहीं रक्नी चाहिए।

परिभाषा के काम के ही लिए अनुकूल ठण्डा जगह ढूँढकर हम कलिम्पोग म आय थे। यहाँ से हटने पर मुझे किसी दूसर स्थान की तलाश भी करनी थी। काटगढ से डा० भगवार्त्तसिंह अब भी पत्र लिख रह थे। उन्होंने एक अच्छा-सा बगना भी ठीक किया था, पर वहाँ बिजली पानी का कराब करीब अबाल पड जाता था और मिटना और भा मुश्किल था।

१८ सितम्बर के एक पत्र में मालूम हुआ कि सविधान सभा न हिंदी और देवनागरी लिपिक को राष्ट्रभाषा और राष्ट्रलिपि स्वीकार कर लिया हँ अश्रेजा अका के साथ। आजाद खुलकर और उनर साथ नेह्रू भी पहले जो ज्ञान में कागिण करते रहे, कि हिंदी का स्वीकृति मिले ही नहीं। पर लाग उनके साथ उठी थे इसलिए चलन चलने विमियानी विलगी की तरह उन्हें अश्रेजी अका का मत्वें मढ़ने में सफरता हुई। हरेक लिपिक लिखने की अपनी विशेष कलम छाती है। उमी स अक्षर भी लिखे जान हैं और उमी स अक भी। काई सुलेखक हिंदी लिखने की कलम से अश्रेजी अका के लिखन म असमथता दिख सकता है? हिंदा के मजर हान पर आजाद न वह विलाप शुरू किया, जो थादादरी ने भी रावण क मरन पर नहीं किया होगा। और लारी साहब ने तो मेम्बरी स स्वीकारा ही द दिया। और अत म पाकिस्तान हाई-रोट की जरी मभान्न चले गए। सविधान ने पन्द्रह साल तक के लिए अश्रेजी की भीव मजबूत कर दा, सविधान के निर्माताभा का उम ममय भी बिदवास था कि पन्द्रह साल बीतन के बाद हमारी जिदगा बरकरार रह हम दूसरे पन्द्रह साल की अवधि बढ़वा लेंगे।

एक दिन हम सब कई और मित्रों के साथ पिबनिक के लिए दूरबीन ढाँडे पर गये। ढाँडे का यह सबसे ऊँचा स्थान ऐसी जगह पर है, जहाँ से नीचे दूर मदानी भूमि भी दिखाई देती है तबस्ता जीर उसके साथ मिलन वाली दूसरी नदी की घाटी भी। डा० रोयरिक श्रीमती क्रिस्प, श्रीमती आयरिन राय और दूसरी भी कितनी ही महिलाएँ और पुरुष साथ थे। यद्यपि हम कलिम्पोग छोड़न का विचार कर रहे थे लेकिन यह तो मानना पड़ेगा, कि वहाँ कुछ व्यक्तियों से नहीं बल्कि सबको परिवारों से ऐसी आत्मीयता मिली थी, जिससे उसका आम्पण कम नहीं था।

कभी-कभी आदमी बसी घुरी तरह फँस जाता है ऐसी घटना सितम्बर में घटी। गहरा म कई तरह के लोग होते हैं जो भिन्न भिन्न तरह से अपनी जीवन-यात्रा करते हैं। अच्छे छपे हुए लेटर पेपर पर किसी लम्बे-चौड़े नाम वाली समस्या का निमंत्रण-पत्र आए, तो आदमी उस पर क्या गवा की दृष्टि डाल सकता है। मैं आन-जाने से बहुत बचता था, और किसी सभा या अधिवेशन में मजबूरी होने पर ही जाता था। कलकत्ता के एक सज्जन ने अपनी जेबो समस्या के अधिवेशन के लिए निमंत्रणा का ताता बाध दिया। मुझे भी न जाने क्या खयाल आया कि अंत में उसे स्वीकार कर लिया।

कलकत्ता—अब की मैंने रेल से ही कलकत्ता जाने का निश्चय कर लिया। पाकिस्तान बनन के बाद रस रास्त मैं नहीं गया था। उस समय कलकत्ता में सिलीगुडी सीधी ट्रेन आया करती थी। २८ सितम्बर को ६ बजे मैं सिलीगुडी पहुँचा। दार्जिलिंग की ट्रेन के आने पर ही यह ट्रेन खुलती थी इनके कारण ट्रेन का घटा लेट हुई। स्टेशन पर ही पाकिस्तान के कस्टम का आफिस था जहाँ मे एक सर्टिफिकेट ले लिया। उसके मिलने में कोई त्रिक्कन नहीं हुई। अभी पासपोर्ट आदि का पक्षट नहीं था। सेवण्ड बलाम में सोन से काफी अधिक जगह मिल गई। हमारे साथ कलकत्ता जाने वाल श्री कपुरियाजा भी थे। वस तो वह लगनऊ के कश्मीरी पण्डित थे, लेकिन अब वर्षों से कलकत्ता में रह रहे थे। वद थे जीर उदू ही नहीं

हिन्दी को भी कविता करत थे। परिचय होते ही कण्ठ खुल गया। हमन गद्य में कुछ बातें कहीं और उतारने अपने पद्य के नमून सुनाए। कितन ही घट तक हमारा सत्संग चलता रहा। वह दार्जिलिंग में जा गृह्ये। हांती होगी कुछ माम्ती चाय अच्छी विस्म की चाय बहा पदा करन क वन्दन से बगीचे दार्जिलिंग में हैं। कपुरियाती न अपने मार होन्डाल को चाय के डब्बा में भर रखा था। पाकिस्तान क रास्त जाना था लेकिन वह पाकिस्तान की चीज ता नहीं थी, ता भी ढर ता था ही। मैं तो कभी एसा खतरा माल नैन क लिए तयार नहीं हो सकना था। पाकिस्तान मरवार न एसा नियम बना लिया था, कि कार्द पाथो पचाम ग्यय न अधिक पैसा नहीं ले जा सकता था। यह नियम वहाँ तक पालन हुना था, दस में नहीं कह सकना। गायद मेर पास भी पचाम खय थे। रात भर ता हमने नहीं देखा, पाकिस्तान के स्टेशन लाग और भूमि बँसी है। सचेरे ट्रेन आआडागा स्टेशन म खड़ी थी, और तीन घटे लेन थी। स्टेशनों पर अधिकतर मुसलमान ही दिवाइ पढत थे, पद्यवि हिन्दुजा का अभाव नहीं था। पूर्वी बंगाल के बडे-बडे जमीदार प्राय सभी हिन्दू थे और किसान मुसलमान। एमणिए जमींदारों के चाम्त कार्द राने वाला नहीं था। हमार डब्ब म चार हिन्दू चने। उनम वहाँ की बातें मालूम हुइ। बनला रह्ये हिन्दू व्यापारी खूब मौज म अपना व्यापार कर रहे हैं, बम उहें इनता ही करना पडता है, कि अपने नके म पाकिस्तानी अपमरा का गामिल करना पडता है। धूमखारी और चारबाजारा का दौर गौरा है, उसम कही अधिक जितना कि भारत म हम लखत हैं। हिन्दू तरणिया क अरक्षित रहन की भा चान बतगाई गई।

जिम समय पौड-स्टलिंग के काम गिरन पर हिन्दुस्तान न अपन खया का काम गिरा दिया था उम समय पाकिस्तान न अपन खय क मूल्य का पहेते ही क खराबर रचा। लेकिन, बँसा करन स खूब क काम को आग गिरन में राका नहीं जा मरा। पाकिस्तान म बडे-बडे मनिक् या अमनिक् अपपर अधिकतर पनावा थे इमके कारण अब वहाँ पजरदो और

पद्मामिन श्रीमती मित्रा के यहा चायपाटी थी । मितने हा मेहमान आण थ, जिनम एव डाक्टर भा थे । उहाने बनगाया, चाय म चीनी विन्कुर छाडने का आवश्यकता नही उम कुछ लेना चाहिये । उहाने बनलाया—आलू चावल मीठा फल आदि नही खाना चाहिए मीरा टमाटर प्याज और नीरू खूब खाने चाहिए । भाजन का मात्रा कम रखनी चाहिए । मुर्गी या चिन्टिया का मांस ज्यादा लाभदायक है । हल्की चर्च-कर्म भी करनी चाहिए और पेट सदा साफ रखना चाहिए । किन्तु, हमार जतन मात्रा के नजरों से ता यही मालूम हुना कि बिना किसी मे पूछे-नाछे राज खान मे पहिने इन्मुक्ति ल गना चाहिए खान म किसी चीज का परहज नहा करना चाहिए और मात्रा का वाबू म रखन क लिए रात का भाजन छोट दना चाहिए ।

आपरिण महिण श्रीमती विम्प भी हमार घनिष्ट परिचिता म स थी । डा० भट्ट का लकर 'वातुल गए मुगल हाइ जाण बाल मुगली बानी । आव आव कहि पुनऊ मरिगं, नटिया नर घरा पानी । ' यह लाकाविन मृने बरा बर पाण खानी थी । वह विन्कुर ही यूरोपीय मतावृत्ति के हा गए थ । भारत-ताय जीवन मे वह पानी म मछण की तरह नरत थ । उह उगामी हानी । हम हर तरह स उनना भुखान की कागिण करने । स्वस्थ हात ता मफ गना भिगना, पर उचाये हृदय क राग म बुरी तीर म फेंमे थे । पीन म खनि ता नही करत थ, लेकिन मन्त्रि उह चाहिए जम्बर थी । हमार मर्न काई उसम हाथ लगान वाला नही था, पर उनके पीन म काई बापा भी दना नहीं चाहना था । मुने उह दमकक अचरत्र आना था । उनक एसा अरेजी, जमन, मन्कृत पर अपना भाषा बन्दह क समान हा अधिकार रखन वाग परिवार क बाज म मुक्त प्रतिभागगी व्यक्ति क्या जीवन की चिन्ता कर ? लेकिन उनकी चिन्ता का कारण यती था, कि जतन मात्रा बाद भारत म गीतन पर वह अपन का पानी म बाहर फेंकी मछणी-भा ममदन थे । अरेजी जेय कभी-कभी वह पय-यत्रिवादा म लिख भजत थे । उह मर कहन पर भी उल्हास नहीं हाना था, कि बन्दह लेय लिये । यदि वह अनन जमना क

बहान ही से उन्हें चंदा मिल सकता था। जखनबारा म मेरे समापति होने की वान सुनकर और भी कितने ही आ पँमे। झाती के कवि डा० आनदनी बेचारे उननी दूर से आए थे। उह भी अब बरग लौटना था। उस दिन एक कराडपति क यहा मध्याह्न भोजन करना परा।— 'महल तो बन गया किन्तु हाथ घोने का नलका नगरल और थालिया तथा दूसरी चीज मली। २ अक्नूबर का उच्चतर क्लब के वन भोज म गए। इस वरब क रुहेरवा साहसी पुम्प थे जिहाने मारवाडा स्त्रिया मे पदों क खिलाफ जहाद बोला था। वनभोज म स्त्रिया भी थी। भोज मारवाडी ढग का था। घूरमा और रायता अच्छा बना था। मुझे भी वहा कुछ बोलना पडा।

कलिम्पोग— ३ को ८ बज सवेरे विमान उडा और ६ बजकर ५० मिनट पर बोगडागरा म उतर गया। ११ बजे सिलीगुडी पहुच गए। कभी-कभी सिलीगुडी स्टेशन पर टक्सी बडी आसानी से मिल जाती है, और चार पांच रुपय स अत्रिक एक सीट का देना नही होता लेकिन जब आदमी गरजू हो और टक्मिया कम हा ता क मनमाना किराया वसूल करते हैं। एक और तिबती तम्न महामात्री मिल गया। हम दोना ने चौदह चीन्ह रुपय पर डाइवर का राजी किया। दा वार ता उसने सामन से आती लारी स टकरा सा लिया था। बडी वेपवाही स हाँक रहा था। ३ बजे हम पावती पहुँच गए। ४ तारीख से श्रीमनी आदरन राय का टाइप क काम जारी था। वह बहुत ही गुड और बडी गीघ्रता स टाइप करती थी। १८० रुपया पारिश्रमिक दत हुए हम बहुत हिचक रहे थे। यदि परिभाषा का काम वही रहकर करना पडता तो वह हम इस टाइप कराने की चिंता से मुक्त कर सकती थी।

डायबटीज तो घरावर के लिए साथ थी। कभी मुह सूगता पेगाव कभा कम हा जाता और कभी ज्यादा। पेगाव ज्यादा होने पर ध्यान उघर जाता। चावल का मिफ हसन म दा दिन क लिए रखा कयाकि दा तिन हमारे यहाँ माम बनता था जिमक साथ चावल अच्छा लगता। कला भी छाड दिया, लेकिन आलू अभी विचाराधीन था। ६ अक्नूबर का हमारी

प्रशामित श्रीमती मित्रा के यह चायपार्टी थी। निम्न ही मेम्बरान आण थे, जिनमें एक डाक्टर भी थे। उन्होंने बनलाया चाय में चीनी बिन्दु छानने का आवश्यकता नहीं उमे कुछ लना चाहिये। उन्होंने बनलाया—शाल, चाय में मीठा पत्र आदि नहीं खाना चाहिए खाग टमाटर प्याज और नींबू सूख खाने चाहिए। भोजन की मात्रा कम रखनी चाहिए। मुर्गी या चिकिया का मांस ज्यादा लाभदायक है। हकी चट्ट-कदमा भी करनी चाहिए और पत्र मद्रा मांस रखना चाहिए। लेकिन हमारे इन मांगों के लक्ष्यों से तो मनी मास्म दुजा कि बिना किसी से पूछे-नाछे राज खान में पहिले अनुमति लेना चाहिए। खान में किसी चीज का परहज नहा करना चाहिए और मात्रा का काबू में रखन के लिए रात का नाश्त छोड देना चाहिए।

आपसि महीला श्रीमती किम्प भी हमारे घनिष्ठ परिचिता में थी। डा० मट्ट का लक्ष्य काबुल गए मुगल हाड आए, बाते मुगली बानी। आव आव कहि पुनऊ मर्गि मरिया नर घर पानी। यह लक्ष्यकि मुसे बरा यर याग बानी थी। वह बिन्दु ही यूरोपीय मनोवृत्ति के हा गए थे। भारतीय जीवन में वह पानी में मछली की तरह नैरत थे। उन्हें ज्ञानी हानी। हम हर तरह से उनका मुल्बान की कागिण बग्न। स्वस्थ हात ता मरणा मित्री, पर बबारा हृष्य क राग में बुगी तीर ग फेंके थे। पीन में अनिना नहीं करन थे, लेकिन मदिरा उन्हें चाहिए जरूर थी। हमारे यही कोई उनमें हाथ लगात वाला नहा था, पर उनमें पीन में काइ बाधा भी देना नहीं चात्ता था। मुसे उन्हें दण्डकर अचरज आता था। उनमें एसा अंग्रेजी जयन मरुत पर अदना भाषा बन्दट क समान ही अधिकार रखन काग परिवार क बाध में मुक्त प्रतिभागागे व्यक्ति क्या जीवन का चिन्ता कर? लेकिन उनकी चिन्ता का कारण यह था, कि इन मांगों बाद मान में गीतन पर वह अनन का पानी में बाहर फेंकी मछली-ना ममता थे। अंग्रेजी के कभी-कभी वह पत्र-त्रिवाधा में लिए अजत थे। उन्हें मरे कहन पर भी उमाह नहीं जाता था, कि कलह लेम लिये। यदि वह अनन अमना क

अनुभव को हा धारावाहिक रूप से किसी कठिन पत्रिका में लिख डालने, ता कर्णाटक व लग उह हायाहाय उठा त्त । इनके एमा योग्य विद्वान् वहाँ कौन था ? श्रीमती त्रिम्प और उनके परिवार के साथ वह अधिक आत्मीयता अनुभव करते थे और कभी कभी दो चार दिनों के लिए वहाँ चले भी जाते थे ।

त्रिम्पोग के हमारे सहृदय भद्रजनाम वहाँ के सब डिविजनल जाफिमर श्री मानीचन्द प्रधान भाये । जब तब उनसे मुलाकात हा जाती थी । वह हमारे परिभाषा व काम में भा दिग्दर्शी रखने थे । ६ तारीख को दशन के अध्यापक श्रीमुख जो से अनामी में मिलन गए । दशन के सबध में बात हाती रही । हम इस उद्देश्य से गए थे कि मनाविधान की परिभाषा का मग्रह का वह काम उमम ल । वह तयार थे पर थे अस्वस्थ । एक आपरेगन हा चुका था और दूसरा हान वाग था इसलिए निश्चयपूर्वक क्या कह सकत थे । बंगाली परिवार साम्प्रतिक परिवार हाता है । हमारे यहा अभी सम्कृति ऊपर ऊपर का पुचारा है और बहुत कम परिवारा में वह भीतरी स्तर तक घुस आई है । इसक निदगन मुखर्जी महाशय की तोना पुत्रियां थी जा मगीत-बग म निपुण थीं । अजगी के लखनऊ के मेरिस कालज में मगीत की शिक्षा प्राप्त की थी और वहा रडिया पर कभी-कभी गाया भी करता थी ।

परिभाषा निर्माण विभाग के लिए कभी आगावान् हाता पडता और कभी हनाग । १० अक्टूबर को पता लगा कि सम्मेलन न माच १९५० के लिए १३ हजार टाया मजूर किया है । ६० हजार गदनाग आगे बनने चाहिए । हम साचन लग माच तक काम करके छात्र देना चाहिए पर डा० भट्ट के लिए भवस अधिक चिन्ता थी ।

कमला अब काम करने में बहुत आग प्रचुकी थी । टाइप कर लेती थी सारा प्रबंध का काम भी मंगाल हृदयी लखिन उनके स्वाम्य में कोई मुषार नहीं हा रग था जिमक हा कारण बराबर मिरदक बना रहता था । मैंने १४ अक्टूबर को ही मान लिया था— कमला बहुत समग्यार है, साधा-

कलिम्पोग मे गेप काम

रण बातो ही मे नही, विद्या की वाता मे भी। लेखन साधना का भी पूरा ध्यान रखती है।" ऐसी हानहार लडकी गरीबी के कारण आगे पढ न सके न अपने आंतरिक गुणा को विकसित कर सके यह बडे खेद की बात हानी। सासकर जब कि मैं उनसे पूरी तौर से परिचित हो गया था। भीतर ही भीतर मैंने निश्चय कर लिया कि उह आग बढ़ाना होगा। टाइप करन म जितनी प्रगति हुई थी, यह इसीसे मालूम होगा कि १८ अक्टूबर को उहान कुल्होप के १४ पष्ठ टाइप किए। बहुत मी तालिकाए भी टाइप करनी थी। नही तो और भी कर सकती थी। १६ को उनकी आँखें दुख रही थी तब मी वह टाइप करन म लगी थी। मना करने पर भी नही मानती थी, गायद समझनी हागी, घुप बठे रहना अच्छा नही है।

दंग विदेग की खबरा की जानकारी के लिए श्री सेनगुप्त भी उतने ही व्यग्र थे जितना मैं। उहाने २६ अक्टूबर को खबर दी, कि तुगन (चीनी मुसलमान) कम्युनिस्ट सेना के दबाव के कारण तिब्बत की सीमा पर पहुच गए है और तिब्बती सेना के साथ उनका युद्ध हो रहा है। मेरे लिए बडी चिन्ता की बात थी, क्यकि तुगना के इघर बढ़ने पर तिब्बत की सांस्कृतिक निधिया का विनाश निश्चय था। यह बडी ही भयानक घटना हानी। अगले दिन खबर मिली, कि डा० राजेद्रप्रसाद भारत के प्रथम राष्ट्रपति हागे। वही प्रमानता की बात थी, विशेषकर यह स्थाल करक, कि राजेद्र बाबू हमेगा जनता के आदमी रहे हैं, और उह गहर की अपना किमाना की भीड म अधिक आत्मोयता मालूम हानी है।

कालिम्पोग के अन्तिम मास

अनुवाद समिति व काम के लिए फिर मुझे दिल्ली जाने की जरूरत पड़ी। २४ अक्टूबर को ढाई बजे चलकर साढ़े ५ बजे सिलीगुड़ी पहुंच गया। कटिहार में तिलक पुस्तकालय व वार्षिकोत्सव में भी सम्मिलित होना था इसलिए कलकत्ता का रास्ता नहीं ले सकता था। सिलीगुड़ी से लोहा से भरी बस में जगह मिली। ६ बजे नक्सलवादी पहुंचे। बड़ी मुश्किल से पहले दर्जे में जगह मिली। कम्पाटमेंट सनिकी के लिए रिजव था। मैं और एक और सहयात्री उसमें डरने डरने बैठ गये थे और सचमुच ही मेरे साथी को कनक व आन पर जगह छोड़नी पड़ी। रेलों के लिए अभी यह कोई असाधारण बात नहीं थी, फिर यह लाइन तो बहुत ज्यादा चलती थी। पहाड़ के लग नौबरी की सलाह में कलकत्ता जाते, और फिर वहां में लौटते। २४ अक्टूबर को पूर्वाञ्चल में ही कटिहार पहुंच गया। कटिहार जूट व कारखाना का केंद्र है, आबादी भी ६० हजार है। पर यहाँ व दगो दीवारा से गाँव की दरिद्रता बरस रही थी। म्युनिसिपैलिटी भी दरिद्र है। जाकर देखने हैं वह न देने में समर्थ हैं जो दरिद्र हैं वह क्या दोगे ? भावडिया जी के यहाँ ठहरे जो मूलतः गलावाटी में उदयपुर में रहने वाले हैं। तिलक पुस्तकालय व अधिवेशन में शामिल होने पर सबसे बड़ी प्रसन्नता हुई बड़े सीधे-सादे विद्वान् मेधावी ५० मूलनारायण चौधरी से मिलकर।

कल्पियों के अन्तिम माम

जबघाप के काय ग्रथा का मुद्र अनुवाद करके उन्होंने हिंदी की कपी मेवा का है। उनके हृषचरित के हिंदी अनुवाद का भी दावकर मुने कपी प्रमत्तना हुई।

वमे ता उम समय रेल की यात्रा का नाम मुनकर भी तवीयन घबरा उठनी था यह छाटा लाइन तो गामन देन म मवमे वर चर थी। अब उमाम हम प्रयाग तत्र जाना था। २६ अक्तूबर का प्रयागवाली ट्रेनपर बैठे। यही वर कुछ ट्रेट हो गई। छपरा २७ के मवर पहुचे। पहल मे मरर नही द मक थ। दो-एर परिचित चेहर स्टेशन पर दिवाइ वडे पर पुरान चहर ता कम हान जा रह थे और नए आ गह थे इमत्रिए परिचित चहर कहा म अधिय हात। श्री नमदा प्रमा कवीर का नौबान कर दिवाइ पडा। ज वर बूटा हा गया था। कितनी जल्दा परिवतन न गया। आडि यार पहुच ता बहा बाबू गया प्रमाद मिह व भनात्र मि गए। छाटा गान म उनक क रस्तग चलन है। उन्होंने आप्रह करके भोनन कराया। बनारस तत्र वर माध चर। यहाँ तत्र छाने लाइन म जान ता जा गया था। यद्यपि छाने लाइन का टिकट प्रयाग तत्र का था किन्तु मैन यही दिन्ना जान वाली बडी लाइन की ट्रेन परटी। प्रयाग जा करके नी इमी ट्रेन को परटना था इमलिए उमर लिए उतर गए। टिकट लिया ज प्रहर जेके क चर म बरा ता मचमुच हा मालूम हुआ कि मैन नक र म्बम म आ गया। कम्पायमट की चार मीला म एक मानी थी। दा पर कपान मट्टाचाय अपनी पानी क माय थे जो एर पर मैन। जहा छान गान म धी, कपी हा कम्पायमट म मभी चीजे स्पन्ड मौजू थी।

२८ अक्तूबर का लार्डे उने दिन्ने पडैव नौगा र आ चरगुज विजा उतर व पर पर गया। दम्पति कितनी काम म बातर गय न थ। मविधान वा अनुमा पूग करता था और गाय ही मविधान वा म्बीहुन परिभाषा मभी प्राणीक भाषाया का परिपद् म रपरर जन्निम रर देना था। उमानि था धनयाम मिह गुज परे हा म माजू थ। तम

किस चालू किया जाए उस पर बातचीत हुई। मैंने कहा—परिषद् म पढ़े ता भिन भिन भाषाया क प्रतिनिधिया के अपने विचारा वा रखन वा अवसर दिया जाय, और फिर वह समिति का रूप ल ले, और एक एक परिभाषा पर विचार किया जाय। ८०० स ऊपर परिभाषाए थी अभी मालूम नहीं था कि वहस म कितना समय लगेगा।

२६ तारीख का पौन १० बज पार्लियामेंट के राज्य सभा भवन म परिषद् जुटी। रात्रेद्र बाबू न सभापतित्व किया। भिन भिन प्रदगा मे ३७ विद्वान् आए। पाँच घट तक भाषण और विचार विनिमय हाते रहः। तीन प्रस्ताव पास हुए—१ परिषद् २ नवम्बर तक लगातार बठे, आव-श्यता हाने पर आग भी समय बढा दिया जाए। २ प्राचीय भाषाया म अनुवाद क लिए विगपना की नियुक्ति प्रधान द्वारा बनाई समिति करेगी। यही सविधान के संस्कृत म अनुवाद करन क लिए भी एक समिति बना दी गई जिमम भरा भी नाम था।

एमी समय कलिम्पाग की कमाइ आज की राजनीति का प्रथम संस्करण राजकमल की आर म छप रहा था।

परिभाषाया पर काम हान लगा। ३० तारीख का दिन भर म ४० गान् स्वीकार किए जा सके। गति मन्द थी इसस तीन सप्ताह लग जात। लेकिन हम विश्वास था आग चलकर हरेक गठन पर इतनी वहम की जन्-रत नहीं हागी। हमन जिस मिद्धात के अनुसार गठन को बनाया था उसन कारण मतभेद की गुजाइश कम थी। कुछ ता परिषद म एस आल्मी ग्व लिए गए थ, जिह न मरकृत का पान था और न परिभाषा क निर्माण की परम्परा का। वह एम मुझाव रख दत थे जिनक धार म न वह युक्ति द सकन थ, और न वह साधारण तौर स दग्न पर भी विचार करन लायक हीत थ। पहले एक ता दिन उह भी अवसर दिया गया। पीछे उहाने स्वयं देखा कि मुयावा का रखकर वह मदस्या के मनारजन क पात्र बन रह हैं। उहू वाले विगपण पहले दिा की सवेरे वाली बठक म आए उगन वाग फिर नहा आए। कपी माहय भी सदस्य नियुक्त किए गए थे

लेकिन वह कभी जाए ही नहीं। २१ तारीख का बैठक म हमन सौ गब्द ठीक किय। वही गब्द लिए जा रह व जिहू हमन रमा था। एन विद्वान् काफी महनन स सम्कृत की स्मृतिया जादि मे शर चुनकर गए, लेकिन हरक गब्द अपन विगप स्नान पर हा जवचातक हाता है। स्मृतिया म एक ही चीन क लिए प्रयकारा न मनमाने गब्द भी रखे ह, एस गब्द का अपनाकर हम भ्रम नहीं फेंग सकत थ। यह वान नहीं थी, कि मैं परिपद् म अरिज बालन के लिए उत्सुन था, पर गुप्तजी का भी आग्रह होना और परिभाषा का वार म जा भी प्रश्न उठाय जात, उसका जवाब देने के लिए मुझे वाचना पडता। एक दिा चुबलाकर बाल उठे आप अपन हा शब्दो का रख लते है हमारे गब्द का नहीं स्वीकार करत। हम उपयुक्त गब्दो को स्वीकार करन क लिए तैयार नहीं थ, यह वान नहीं थी। पर शब्दा का स्वीकार करन क लिए यहाँ सभा भाषाआ के याग्य विद्वान् आए हुए थे उनम म गायद नी कादहा जा मरकृत की अच्छी याग्यता न रखता हा और परिभाषिक गब्दो के मम का न समझता हा। हमार मस्कृत के वह विद्वान् जा एक प्रश्न तक ही ज्याग्य सम्बन्ध रखत है, दूसर प्रदशकाल क गब्द म नही जानन, भाषा की नब्द का पूरी तरह पहचान नहा सकते। मुझ अपनी गिशा क सम्प्रथ म निन निन प्रश्ना क मस्कृतज्ञा क घनिष्ट सम्पक म आन का मौता मिला था इसलिए मैं जानता था संस्कृत क भी कितने ही गब्द वस्तुन एक ग्ज अर म हमार सभी प्रश्ना म इस्तमाल नहीं विण जान। उपयाम उत्तर म नाबल का कहन है और दक्षिण म भाषण का।

बलरुता—३ नवम्बर का रात की गानी पकडकर प्रयाग क लिए रवाना हुआ। बर पहल ही म रिजब थी, इसलिए मान की दिक्कत नहीं हुई। सामने बच पर बाबू लक्ष्मीनारायण बठे थे। मुजपरपुर क इम तरण ने अपना सारा जीवन त्याग क काम क लिए लगा लिया। जमह्याग की आंश्री म बालेज का परीक्षा यतम कर चुक थ, लेकिन व्यवसाय कोई नहीं अपनाया था। उमी समय वह दंग के काम म लग गए, और आज

तब बराबर उमो म हैं । किमी बटन म टिगि जाए थ, और अर त्रिहार लौट रहू थें । उनका सारा सामान गाधा सादा और गादी का था । उनके अधनम और कुठ मग्नि स बस्त्रा का भी दग्जर कम्पाटमट म जप्रेज पानी-महित बैठ भारतीय कने समय मजते थे, कि यह जामी पूरी तौर से निश्चित सुममृत है साय ही उनका सारा जावन अडिग तपस्या का रहा है । बहुत वर्षों बाद मौजा मिला था । दर तक हमारी बातचीत हागी रही ।

४ ताराप को सवरे बानपुर जाया । हाट म वर्षा हा गइ थी कमलिग जहाँ-तहा कुछ पानी दिखाद पडता था । यात्रा म मैं देखा, रपटैल की छने भरवायी (जिग इनाहावाद) से गुर् हाती हैं । उसस पश्चिमी मिट्टी का छने यूरोप की सामा पर अवगियत उराल पवतमाला तर चगी गइ हैं । जहा वर्षा जियर हा, वहा कच्ची मिट्टी की छने अनुकल नहीं हा सकती ।

प्रयाग म पहुचकर थी माचवेजी क यहाँ गया । उस समय वही के रेडिया स्टेशन म वह काम कर रह थे । उसी यग म अनेयत्री भी रहते थे । मम्मलन-बायाग्य म जा वहाँ कोग के बारे म कुछ दखभाल और पूछ ताछ थी । आजकल मारनाथ म वापिकोत्मव का समय था । कमलिग वहाँ जान का निश्चय कर लिया । गाधी पकड कर आधी रात का सारनाथ स्थान पहुँचा । मारनाथ म दस समय आन का एर लाभ था भिग भिन जगहा स आधे मित्रा म मिलन का । जानदजी भी वहाँ मिल गए और चादप जी भी । सभम अपूव दान चंग वाग का हुआ । मुनि वान्ति सागर स भी उनका पुरानात्विक स्थाना की खाजा क बार म बातचीत होती रने । चाता पूचा (हाटा पूचा) भी मिग और उनका दान्त ही बाध गया के चाता फची और बग पूची की मनारजक विवाग की बान याद जागे लगी । बरा पूचा अर कम मसार म नग रह । वह चानी थे और चाता पूचा माँ की जार स तिगि और वाप की जार म चीनी । दाना बाध गया के धमगाग्य म वर्षा स रह रह थें । जाम प्रतिद्विदिता भी थी । वर्षा रहन पर भी बडे पूची हिगी नी क बराबर ही मीग मके । वह छाट पूची की पिदा

‘चाता पूची वाना पन-पमी, पूचा तारा-नारा ।’ अर्थात्

छात्र पूजा समाजमी खाना खाना है और पूजा कम करता है। और अपन लिए कहते हैं—'बरा पूजा काना तारा-ताग पूजा पनी-पनी।' दापनर नव मागनाथ म रहकर मित्रा म मित्र लिया, फिर छात्री अदन की गाड़ी पकड़ कर मवा म वने गाम वा प्रयाग लाट गया। अपनी पुस्तका क प्रका- गन क मध्यम म कुठ दान करना थी। वस्तुतः अब पुस्तकें इतनी अधिक हा गट थीं कि उन्हें का एक प्रकाशक प्रकाशित भी नहीं कर सकता था। वहा स म बजकर १० मिनट पर दिल्ली मल पकना और कचवमा क लिए खाना हा गया। ७ तारीख का ११ बजे हावना पहुचा और पौन घट बाद श्री मण्डित्त की के मकान पर। टस्या नहीं मिली घाना गानी ला। रान्ने म बडा सातार वा मरक पर उल्ला भीर थी, कि दर तक खना पटा। उन दिना कचवत्ता म यद् आम गिवायन थी, और किमा किमा समय एक सडक म मिक एर जाग जान का नियम लागू किया जाता था। अब की प्रयाग म अदरती न अरती पुस्तक 'ले गारा द दी थी। पड गया। इसम अदरती और नवा पना कीगल्या लाना की लानिया क चमकार अलग-अलग लिए हुए थे। मृषे ता कीगल्या पनि का पछाड कर जाग रती मातूम हरे। उनकी लाना म स्थाभाविता तथा प्रसादगुण अधिक था। हा मकना है भापा सँवारन म अचाना न कुठ महापना की हा अकिन दाना की लाना वा नद मष्ट मातूम लाना था।

कचवत्ता म अत्र गटा का न मनावृत्तिया मा रती जाना थी। रितन

तक बराबर उसी में हैं। त्रिमो बैठन में दिल्ली जाएं, और जब बिहार लौट रहे थे। उनका सारा सामान गांधा भादा और खादी का था। उनके अधनान और कुछ मलिन से बस्त्रा को भी देखकर कम्पाटमट में अप्रेत्र पत्नी सहित बैठ भारतीय कसे ममज्ञ मरत थे, कि यह जादमी पूरी तौर से शिक्षित मुसम्बृत है साथ ही उसका सारा जीवन जडिग तपस्या का रहा है। बहुत वर्षों बाद मौना मिला था। देर तक हमारी बातचीत होती रही।

५ तारीख को सबर कानपुर जाया। टाउ में वर्षों हा गइ थी, इसलिए जहाँ-नहा कुछ पाता दिखार्ई पडता था। यात्रा में मैंन लता सपडल की छत भरवाडी (जिला दलाहाबाद) से गुरू हाती है। उससे पश्चिमी मिट्टी की छत मुराप की सीमा पर अवस्थित उराल पवतमाला तक चला गई है। जहा वर्षों अधिक हा, वहा बच्ची मिट्टी की छने अनुकल नही हां मवती।

प्रयाग में पहुचकर श्री माचवेजी के यहा गया। उस समय वही के रेडियो स्टेशन में बह काम कर रहे थे। उसी बगल में अनेयजी भी रहत थे। सम्मलन-कार्यालय में जा वहाँ कोण के बार में कुछ देगभाल और पूछ ताछ की। आजबल मारनाथ में बापिकात्मर का समय था। इसलिए वहाँ जान का निश्चय कर लिया। गाठी पकड कर आधी रात का सारनाथ स्टेशन पहुँचा। सारनाथ में इस समय जाने का एक लाभ था भिन्न भिन्न जगहा से आधे मित्रा से मिलन का। आनंदजी भी वहाँ मिल गए और वाश्यप जी भी। सबसे अपुव लगन चला बासा का हुआ। मुनि काति सागर से भी उनकी पुरातात्विक स्थाना की खाजा के बारे में बातचीत होती रहा। चाता पूचा (छाटा पूची) भी मित्र और उनका दयन ही बाध गया क चाता पूची और बरा पूची की मनारजक विवादा की बाधें याद जाने गयीं। बरा पूची अब हम ममार में गही रह। वह चीनी के और चाता पूची भाँ की जार से तिगनी और बाप की गोर में चीना। दाना बाध गया के धमगाग्य में वर्षों से रह रहे थे। उनमें प्रतिद्विद्धता भा थी। वर्षों रहन पर भी बने पूची हिग्य नही के बराबर हा मीग मर। वह छात्र पूची की तिन्दा बरन कनन थे—‘चाता पूची बाना पम-यगा, पूता सारा-नारा।’ जर्वात्र

छोटा पूजा बना उसा ग्याना खाना है और पूजा कम करता है । और अपन लिए रहत र—' उसा पूजा बना लारा-तारा पूजा पनी-पसी । ' दापहर तब गारनाथ म रणकर मिना स मिल लिया, फिर छाटी लान की गाडी पन कर मना क बो गाम का प्रयाग गेट गया । अपनी पुस्तका क प्रकाशन क मन्त्र म कुछ बात करनी थी । वस्तुतः अब पुस्तके पना जविन हा गई थी कि उह बाद एक प्रकारक प्रकाशित भा नही कर सता था । वना म क बजकर १० मिनट पर टिनी मल परना और कलकत्ता के लिए रवाना हा गया । ७ तारीख का ११ बज लवटा पहुचा और तीन घट बाद श्री मणिहप जी क मदान पर । टकनो नही मिला, धाना गाने ली । रास्त म बटा राजार की सक् पर खनी भीड थी कि ल तन स्वता पडा । उन दिना कलकत्ता म यह नाम गिनायन थी, और किसी दिना समय एक सडन म सिफ मर आर चान का नियम लागू किया जाता था । अर की प्रयाग म अक्षजा न खानी पुस्तक ' दो धारा ' द दी थी । पड गया । इसम अक्षती और उनसी पला बोलिया दाना का लगनिषा क बमत्वार अग्य जग्य लिए हुए थे । मुने ता जोसल्या पनि का पडाड कर भाग बना माहूम हइ । उनरा लगनी म म्नाभाविता तथा प्रयागगुण अधिक था । हा मन्ना है भापा सवाग्ने म अक्षता न कुछ महामना की हा । जिन दाना की खना का म्ना स्पष्ट मारूप हाता था ।

कलकत्ता म अर मटा की न मनावृत्तिया भा रजा जाती थी । कितन ही अरापनिषा न कादम का पन्ना पगडा था । सभी वही एन समान गुणर नही हा जवन थे, इसलिए भी उह दूरर दरगार का ज म्ना थी, और कुछ यन भा समान लग, कि कागम म जा भ्रष्टाचार पैदा है उन कारण जग्य ज्याग जिना का आगा नही रती जा सक्ती । इगोलिए अर यह सागिस्सा न माथी बनन गे । सागिस्म म म्ना एन कराडपनि सटा का बना रना-रना था । उनम कारे एना आग्यमात् की मात्रता भी न्ना थी, जिसरी प्रयाग म बह सपस्वी ज्यप्रमाण नागयण क चरणा म बटन क लिए म्नुत हा । यह जानन थ, कि समाजवात् का समाजवात् द्वारा हा

भारत में जान से रोका जा सकता है। वह नली भाँति जानने के, कि समाजवाद के असली वाहन कम्युनिस्ट ही होंगे। इसलिए उनसे बचना जरूरी समझने के।

पश्चिमी पाकिस्तान से हिंदुओं का निष्कासन तब तक पड़ा कि और बड़ी श्रुतता के साथ हुआ। उनके पुनर्वास का काम यद्यपि अभी समाप्त नहीं हुआ था, लेकिन बहुत कुछ अपने परापर बड़ा हानिकर उत्पन्न समस्या का कठिन नहीं बनने दिया। उनके लिए एक सुभीता यह भी हुआ कि पूर्वी पंजाब के मुसलमान भारत छोड़कर चले गए जिनके मकान और खेत नवागत शरणार्थियों को दिए जा सके। पूर्वी पाकिस्तान में ऐसा नहीं हुआ। अब तक तो पश्चिमी बंगाल से बहुत ही कम मुसलमान पाकिस्तान गए, जिसके कारण खेत और मकान खाली मिट्टी बाले नहीं थे। और दूसरे पूर्वी पाकिस्तान से हिंदुओं का निष्कासन जल्दी नहीं हुआ, वह ताता अब भी लगा हुआ है। अतएव तो ऐसा लगता है कि वहाँ बहुत कम ही हिंदू रह पाएँगे। इनके पुनर्वास की समस्या अब (१९५६ में) भी उसी तरह बड़ी चिन्ताजनक है। १९४६ में कलकत्ता में एक और दृश्य दिखाई दिया। सरकार शरणार्थियों को अपने ढंग से बसाना चाहती थी परन्तु यह नहीं रखा करती थी, कि जंगल के महंगे को लेकर शरणार्थी चाट नहीं सकते। उन्हें ऐसी जगह चाहिए जहाँ वह हाथ पर हथियार या दिमाग चला कर राजी जमा सके। यह सभावना गहर के पास ही रहती है इसलिए यदि शरणार्थियों में से बहुत से कलकत्ता के आसपास बसना चाहते थे, तो यह स्वाभाविक रहा था। कलकत्ता के आसपास जितनी भी जमीन थी, वहाँ तक ही बसती हुई महानगरी जल्दी पहुँच जाने वाली थी। इनमें जमीन का सटान खरीद लिया था। मारवाडी सटान के पास ही रखा था इसलिए ये जमीनें उन्हीं के हाथ में थीं। टालीगंज के रिजेंट पाक के समाप में एक ग्यांगे जगह को दान दे गया जहाँ पूर्वी बंगाल से जाय शरणार्थियों ने अपना अड्डा जमा लिया था। जमीन किसी सटान से रखा थी। यद्यपि सम्पत्ति हमारा सरकार के लिए परमपवित्र है, इसलिए उस शरणार्थियों

क अनुकूल स्थान पर ब्रमान से भी अधिक व्यक्तिक सम्पत्ति और उस पर वानुवी अधिकार रखने वाले व्यक्तिमा क स्वाय का दखना जरूरी था। शरणार्थिमा न खुली जगह देखकर वहाँ अपनी थापटिया गट्टी कर दी। श्री शरत बास जस जननताआ ने भी उनका समर्थन किया। सेठा म इतनी गक्ति नहीं थी कि शरणार्थिया और उनक पीछे भारी जनता क मुनाबले म अपना जमीन पर काना रखत। सरकार न पट स वहाँ पलटन भेज दी, जिसम वहाँ मकान न बनन पाएँ। शरणार्थिया न चटाई की दीवारें खड़ी कर उन पर फूम की छन डाल दी थी। सनिक कह रह थे—“हमको हुकुम है कि नई थापटिया का नहीं बनात दें।” शरणार्थी अपनी भूमि का किराया देन फिरत स दाम भी चुकान के लिए तैयार थे। इमम बन्कर और क्या उचित हा सकता था। लेकिन, सरकार निहित स्वार्थों का जरा भी धति हाने देना नहा चाहती थी। उसके पिटठू बहने फिरत थे, शरत बास अपना नवृत्त कायम रखन क लिए प्रातीयता क युद्ध का उत्तेजित करना चाहत हैं। दुर्भाग्य स कलकत्ता के घनकुपर अवगाली हैं किंतु क्या प्राणी-यता का हर समझ कर बगाली अपनी उचित मांगा का छाड दें ?

कलिम्पोग—१० नवम्बर का ८ बज विमान स उडकर दो घट म मैं बागडागरा पहुँच गया। जाकाग स्वच्छ था, सर्नी नहीं मालूम हा रही थी, यद्यपि यह नवम्बर का दूसरा हफता था। हवाई अड्डे स सिलीगुडी पहुँच कर १६ रुपय म टैक्सी म जगह मिली और टाई बच पावती' पहुँचा। भट्ट, सेनगुप्त और कमला सभी अच्छी तरह काम म लग हुए थे। हमारा परिभाषा का काम चलन लगा। इसी समय डा० रोयलिक के साथ प्रमाण दानिक क अग्रेजी अनुवाक का भी काम शुरू हुआ। अब की बन्कता म था परमानन् पाद्दार स बानचात हुई। उहने २१ हजार रुपया अग्रिम दत्त मेरी कितनी ही पुस्तका का छापन की बात तय की। कलिम्पोग रहन ही उसकी लिखा-वशी भी हा गई।

दार्जिलिंग—कलिम्पोग म रहन के समय का अंत आ रहा था। दार्जिलिंग भी देग आने का निश्चय करके १६ नवम्बर का सबर ८ बजे के बाद हम

मणित्प जी की त्रयी जाम्बिन पर निकले। डाइवर के साथ में बठा था और पिछली सीट पर सनगुप्त कमला और कमला का चचेरी बहिन तथा बाबू राधामोहन की पत्नी जमुनादेवी बठी थी। रास्ता तिस्ता-उपत्यका से चढ़ा चढ़ कर जाता है जिसकी सख उतनी अच्छी नहीं है और भारी गाड़िया के लिए अनुकूल नहीं समझी जाती। तिस्ता पुल से दार्जिलिंग २८ मील पर है और पुल कल्मिपाग से १० मील। ३८ मील की यात्रा हमन टेढ़ घट में पूरी की। उपत्यका छोड़ने पर सस्न चढ़ाई चढ़ते पेगोक चाय बगान के पाम पहुँचे। आगे कितनी ही दूर तब भी कुछ चढ़ाई रही, कहना चाहिए चढ़ाई ता घूम तक थी। रास्ते में लेप्चू छमाल जार-बगाल, घूम बाकथाडा पड़े। सिलीगुडी से दार्जिलिंग जाने वाली सड़क घूम में मिल गई। रास्ता सारा चायबगाना या हर भरे जंगल का था। हरियाली मनमोहक थी। चाय के बगीचे बाहर की लक्ष्मी के जावाहन के सबसे बड़े साधन थे। चाय यद्यपि सौ हा बप पहले इस भूमि में जाई थी, लेकिन आज दार्जिलिंग की चाय दुनिया में सर्वश्रेष्ठ मानी जाती है। चार-पाच हजार फुट ऊँची ठण्डा जगहा की पत्तिया में विशुद्ध गुण हात है। यद्यपि सिलीगुडी में चाय यहा से दूनी और अत्रिब भी उपजती है पर महगाई के कारण यहाँ के बगान ज्यादा नफे में रहते हैं। जसा कि पहले कहा दार्जिलिंग अब नेपालीभाषिया का है। पर वह बगानों में कुली ही भर वन सज्ज है। पहले मार बगीचे जग्गेजा के हाथ में थे जब उनमें से कितने ही हमार मठा के हाथ में चले आय हैं और जा बच हैं वह भी पक्क आम की तरह उनकी गोद में गिरने के लिए तयार हैं।

रास्त में जगह जगह दूनाएँ और छोटे छोटे बाजार थे। चाय और सिगरेट सा प्राय दो ता मील पर विक रह थे। थोड़ी सिगरेट अब और जगहा में भी बहुत पिय जान ह इन पहाटा में ता मित्रया को भी उसने पीय बिना ताम नहा चलता। घम से जाग प्राय बस्ती ही बस्ती चली गई थी। दूर से हा हम पबत पृष्ठ पर बसा दार्जिलिंग नगर का देख रहे थे। नीले गुम्बद वाल राज्यपाल भवन और बन्दानराज वाली दण्ड की दृष्टि का

अपनी आर थाट्टु किए बिना नहा रह सकती थी। आजकल नवम्बर का तीसरा हफ्ता था। मह सलानिया व आन का समय नहीं था तब भी दार्जिलिंग बवल सलानिया का नगर नहीं है, बल्कि वहा अपने स्थायी वाणिज्य भी बहुत काफी है। जिल का वाणिज्य का केंद्र है। इसलिए यह जाड़ा म बसा मूना नहा हा जाता, जसा ननाताल मा मसूरी। सेंट्रल हाटल म हम टहर गये, जो मन्न क हाटला म से एन था। कमरे का किराया दस रुपया प्रतिदिन था। भोजन यहा का ठीर नहीं था, त्रेमिन उस समय किसी एक की एसी गिवायन करता उचित नहीं था।

उसी दिन हम महाराल देखन गए। बौद्ध अपने विहार या मन्दिरा का स्थान चुनन म सभा दशा और काला मे कमाल गये है। यहाँ पर सबसे ऊँची जगह पर उठान अपना मन्दिर स्थापित किया था। जहाँ बुद्ध की भी मूर्ति रही होगी, लेकिन साथ हा घमपालक महाराल भी स्थापित थे। हिन्दुआ व लिए भी यह नाम परिचित है, इसलिए हिन्दू और बौद्ध मन्गकाल म एन हा गए। जस अत्रेज यहाँ पहुँचे, ता उह यह देनकर बुरा लगा कि सबसे उच स्थान पर काफिरा का मन्दिर हो, और उनके पिजे का मस्तक उसस हेठा रह। उठान महाराल को वहाँ से हटवाया और पास म अपना गिजा लडा किया।

दार्जिलिंग म हिन्दी भाषी भी काफी ह। मारवाडी तो मेठ और छोटे दूतानगर हैं। उनस भा अधिक सन्ध प्रिन्सर और उत्तर प्रदेश व भाज पुरिया का है। जा अधिन्तर छोने माटी दूताने करत ह। प० लालजी सहाय यहाँ क हाद सूत्र म अध्यापन थे। श्री जगमहादुर प्रपान भी हिन्दा क उन्माही वाचनर्त्ता थे। इनम प्रमत्तस वर्द माण पहर यहाँ डिमाचल हिन्दी भवन स्थापित हुआ। तीर धूप करन पर अनुकूत भूमि भी मिल गद और उम पर लयजा का मरान यना कर दिवा गया त्रिम आठक मिडिल स्कूल चल रहा था। मराना जीर यना के लिए ३० हजार रुपया भा जमा हा गया था। लेकिन जरत थी ५० हजार की। त्रिभवन दार्जिलिंग क हिन्दी भाषिया क साहित्यिक और सांस्कृतिक जीवन का केंद्र है।

२० नवम्बर भी दार्जिलिंग में ही बिनाना था। जल्पान करके ८ वजे निकले ता भोजन के लिए दो वजे ही लौटकर जाय। वनस्पति उद्यान यहाँ की एक दृग्गोच्य चीज है और मेरे लिए ता परिभाषा के कारण भी वह विशेष आकर्षण रखता था। इस उद्यान में ठण्डे मुल्का के बहुत तरह के वृक्ष लगाये गये हैं। वृक्षा पर अंग्रेजी में उनका नाम भी दिया हुआ है, लेकिन भारतीय नाम गायद ही किसी का मिलता है, हालांकि उद्यान के कमचारों, विशेषकर माली प्रायः सभी वृक्षा के दृग्गोच्य नाम जानते हैं। वह आसानी से इन नामों को दे सकते हैं, किंतु उनके पास दो चार दिन रहने के लिए किसी के आन की जरूरत थी। वहाँ के अधिकारी से इसके बारे में बात की, और वह महायत्ना के लिए तैयार थे।

गहर के हिंदू मंदिर में गए। जिस तरह हमारे रहने-सहने में गदगदी है उसी तरह हमारे देवता का रहने-सहने भी हा, तो अचरज क्या? लेकिन हिमालय के तमग लाग भी बहुत अधिक स्वच्छता पसंद नहीं हैं, उनका विहार क्या इतना स्वच्छ है? जामामस्जिद भी यहाँ की एक खास धार्मिक इमारत है। उसमें भी हिंदू मंदिर से अधिक स्वच्छता देखी। मस्जिद के साथ घमशाला है। प्रबंधक हमारे छपरा के मौलवी साहब निकले। उन्होंने सभी चीजें बड़े प्रेम से दिखलाई, और बतलाया कि हमारी घमशाला में हिंदू मुसलमान कोई भी आकर रह सकते हैं। दार्जिलिंग में बचहिल भी एक दृग्गोच्य स्थान है। यहाँ में कलिम्पांग लिवाई पटता है। बच भुज वृक्ष को कहते हैं और वह इस स्थान से और सात हजार फुट ऊँची जगह में हाता है जहाँ साठ में नौ महीन जमीन को बर्फ ढँक रहती है। यहाँ बच का कोई वृक्ष नहीं था, फिर इसका नाम भुजपत्र क्या रखा गया? जगला में डँका हुआ यह पवन पित्रनिक और मनोरंजन के लिए अच्छा है।

दार्जिलिंग में आकर अपने पथ प्रदर्शकों में से एक कुरामी जामा सदोर (अन्वेषणकार जामा के द्वारा) की समाधि का विना दक्षे यात्रा कम पूरी हो सकती था? हम उत्तर-पूरुबीय कलिफ़्तान में गए। बहुत कठिन के भीतर

वहाँ डट चुन कं बठरान न गम्भी के माय जामा की समाधि दस्ती । जाम
 १७८४ ई० म हगरी म पैदा हुआ । उन मालूम था कि हमार मगयारा के
 भूवज एगिया स आए थे । उसर मन म जाया अपन एवजा का भूमि और
 अपन नाईयता का दया जाए । बड़ी-बड़ी तकलीफा का महकर मह अन्ध
 धुमकड भारत पहुँचा फिर मुनमुनारर तिवन का अपन लागा का मूल
 स्थान ममय वह लदाय पहुँचा । मगयार लागा टूणा का सन्तान थ और
 जिनका मूल स्थान मगालिया था, जोमा का वहाँ जाना चाहिए था । पर,
 वह कालम्बम का तरह डूटत भारत चला जाया—कालम्बम भारत डडन
 अमेरिका चला गया । इसम पह् हा दसो लाग तिवनी भापा और वहा
 क बौद्ध गम स सुपरिचिन हा गण थे, कयाकि उनका सम्पक १८वीं सदा क
 जारम्भ म ही मगाल लागा स हो गया था जा घम म बौद्ध व आर जिनकी
 घमभापा तिवता था । दसो विद्वाना न भापा और घम के ऊपर काफी
 लिता भी था, कर्मलिए जामा का प्रथम तिवनी भापाविद् नहीं कहा जा
 सकता । पर इसम गव नहीं कि पश्चिमो सुराप क विद्वाना क लिए तिवन
 का दरवाजा उमा न खाल । वह लदाय और जाम्बर म एम लागा म
 रहा, जा तिवनी भापा छोडकर और दूसरा भापा नहीं जानत । भापा
 मातन का अन्ता अवसर और क्या हा सकता था ? उसन तिवनी भापा
 पडो । अथेजी म उमका प्रथम व्याकरण और प्रथम कोण लिता । साडे पाँच
 हजार भारतीय पुस्तकें तिवनी भापा म अनुमि हाकर कजूर-नजुर के
 ३३८ 'जिला म सुरभिन हैं उनका किलपण जामा न अग्रजी म तिया,
 और तिवन क वार म बहन लिता । वह विद्या क पीछे फकार था । उमकी
 योग्यता की अप्रेज रदर करत लय थ । कलकत्ता का एगियाटिन सामाडटी
 न उद्यर रहन के लिए विगप तीर स प्रयत्न तिया था । लकिन, वह उकी
 तरह और धगा ही मोपी-सापी पागत म वहाँ रहता था, जम हिमालय के
 अपन प्रथम म गृह भुवा था । यदि वह एक आर तिवनी भापा का एक
 प्रसिद्ध विद्वान् था, ता दूसरा और उमका माला-मादा जावन एर सधुर
 काय्य था । वह कलकत्ता म चत्वर दार्जिलिंग इमलिए आया था कि

तिष्ठत की जार प्रस्थान करे। इसी समय वह बीमार पड़ गया और अपनी अन्तिम वृत्ति पूरा किए बिना ११ अप्रैल १८४२ का यहाँ दार्जिलिंग में उसने अपना गरीर छोड़ा। आज वह इसी समाधि में १०७ वर्षों से मारा रहा था। समाधि के ऊपर इटें बून का खम्भा पाछे खड़ा किया गया। इन पर हंगेरियन (मग्यार) भाषा में दो और अंग्रेजी में एक अभिलेख है जिसमें यही बतलाया गया है कि यही जोमा को ब्रह्म है।

धीरघाम देखन गए। यह नपायिया का मन्दिर स्वच्छ और बड़े ही अनुकूल स्थान पर अवस्थित है। दार्जिलिंग अंग्रेजों का कब्र रहा है। चाय-बगीचे वाले ता बारह मास यन्ती रहते व गर्मिया तथा बरसात में कलकत्ता से बड़ी भारी संख्या में अंग्रेजों-पापारी और जफ्फर अपने परिवार का लेकर यहाँ आया करते। पुष्प चाहें अपने काम पर लौट भी जाते थे किन्तु बीबी-बच्चा का यहाँ ठहर जाना जब डगमग जाना महोना का काम था और यात्रा भी निरापद नहीं जानी थी उन समय अपने बच्चा की शिक्षा के लिए टिमाल्य की पुरिया का महत्व अंग्रेजों को मालूम हुआ, और यहाँ उन्होंने बहुत से बाल-बाल और स्कूल स्थापित किए। इनमें उनका प्रथम अंग्रेजी वातावरण में और वही के विश्व विद्यालयों के पाठ्यक्रम के अनुसार शिक्षा पाते थे। अज्ञान के बाद यद्यपि उनमें से कुछ स्कूल बन्द हो गए लेकिन बाकी अर्धों भी काफी फूल फल रहे हैं। जब तक अभिभावकों का विद्वान है कि अंग्रेजों द्वारा ही बड़ी-बड़ी नौकरियाँ का दरवाजा खुलता है तब तक इन स्कूलों का हानि नहीं पहुँच सकता।

अपने पुत्रों परिरक्षित स्वामी मच्छिदानन्द जी मिल गए। अपने धुन में चला रहा था विमानों मन्तव्य के लिए काम करते थे।

डा० एम० व० मजूमदार और उनकी जयन्त पत्नी का महत्त्व विद्वान दम्पती हैं। गारगा शत्रु में मुझे अभिमान पत्र पुत्रिया गया निम्न प्रधान डा० मजूमदार रहे। यही श्री मूयविभ्रम पत्रांगी में साक्षात्कार हुआ यद्यपि पत्र द्वारा उनका परिचय पहले से भी था। वे नशली इतिहास और भाषा के बड़े विद्वान हैं और उन पर उद्दान का पुस्तकें लिखी हैं।

कल्पियाग—२१ को सत्रे पौने ८ बजे दार्जिलिंग छोड़ना पड़ा म
कल्पियाग पहुँच गए। जाते समय हमला को कै हुई थी। पहाड़ की माटर-
यात्रा में यह बहुत अच्छी है, लेकिन आन हिम्मत की वसलिए क की शीवत
नहीं आई। उम दिन की चढाई अब लगी उनराई थी, जिसमें गाड़ी को
बहुत सभाग कर चलाना पड़ता था। लौटन पर कई चिट्ठियाँ मिलीं।
डा० ब्रजकिशोर मालवीय ने जीव रसायन की परिभाषा का प्रतिगणना
में अपन मुवाव को रखने का आग्रह किया था। विशेषता क दिख हुए प्रति-
गणना का बहुत मूल्य जाना है इन हम जानने थे लेकिन माथ ही एक ही
नरह के पारिभाषिक शब्द विज्ञान की कई शाखाओं में आते हैं। अग्रजी म
जैसे उनकी एगता अगुणा रही जाती है, वैसे हा हम भी करना था, इस-
लिए मातृश्रीयजी का हमन पीछे समझा कर लिखा और वह हमारी बात
मानन क लिए तयार हो गए। मालवायजी उन विद्वाना में हैं जा लिंगी क
नविषय पर पूरा विश्वास रखत है और उसके लिए काम करने के लिए भी
तयार है। वह चिन्तना विज्ञान की और शाखाओं में भी काम कर सकते
थे। श्री गाविर् मातृश्रीय उन समय हिंदू विश्वविद्यालय के उपकुलपति
थे। उन्होंने मुझे प्राच्य विद्या की एक याजना बनाने क लिए लिया था,
मैंने याजना बनाने में भी दे। मैं चार्ता था, हिंदू विश्वविद्यालय में भी
बौद्ध वाट मय और उनकी भाषाओं का अध्यापन-अध्यापन और अनुमोचन
का प्रयत्न था। मैंने जिज्ञाना मैंने किया था और मातृश्रीयजी क अच्छा
प्रकट करन पर त्रिभुत में काजूर और तनूर का पुस्तक मँगवा दी।

दिल्ली—२३ नवम्बर का समिपान क अनुवाद-वाय के लिए दिग्गी
प्रत्यान करना पना। सांने ११ बज मिंगीगुली में विमान-रम्पना क कार्या-
लय पर पहुँच कर द्वार बंद तन बनी बठा रहना पना। फिर बागलागरा
जाकर ४ बज विमान क धरती छानन का समय आना। आन मारा विमान
नरा हुआ था—१६ यात्री थे। बृष्ट लाग मर्गे क कारण धर का जार लौट
रहे थे। अधेग तन से पहले ही कलवता पहुँच जाना जमरा था। जडडे
में हम पौने ७ बज मणिप्यती क निवाग पर पहुँच। २४ क सत्रे अमम

अठ्ठे पर पहुँच जाई० एन० ए० के वाइकिंग विमान पर सवार हुए। वह छ हजार फुट की उचाई पर उड़ता चला, और मात्र तीन घंटे में दिल्ली पहुँच गया। गगन पर म बाल एकाध ही शिखाई पडे हा धुंध अधिक थी। सहयात्रा अधिकतर विदेशी थे। साठ ६ दजे गाम का प्रिलिंगटन अड्डे से विमान मार्गालय में पहुँच थी चन्द्रगुप्तजी व यहाँ चला गया।

२५ को = बज भाषा विरोधता का परिषद् जारम्भ हुई। जय की आसाम और कश्मीर व भी प्रतिनिधि आये हुए थे। परिभाषाया का निश्चय क लिए काम हाता रहा। पना लगा, २म वष सम्मेलन के सभापति थी चन्द्रबलि पाडे निर्वाचित हुए हैं। चन्द्रबलि पाडे हिन्दी के तपस्वी हैं। उन्होंने अपन जीवन की सारी उमर हिन्दी पर वार दी सारा समय उसी व साहित्य को समृद्ध करने के लिए उपाया। इस तरह का तपस्वी पण्डित हिन्दी में दूसरा नहीं है। उनका सभापति चुना जाना भर लिए बडे ह्म की बात थी। यह समझकर और भी गव हाता था कि वह भर जिल (आजमगढ) व हो नहा बल्कि मने पितृग्राम में चार ही पाँच जोस हटकर छटियाव में पैदा हुए। परिषद् को बठक टनवार (२७) को नहीं हुई लेकिन हम अनुवाद-समिति यात्रा का उम दिन भी काम करना पडा। ३० नवम्बर तक जहाँ तक हिन्दी अनुवाद का और परिभाषाया का सम्बन्ध था काम खतम हा गया। अन्तिम दिन परिषद् ने प्रस्ताव स्वीकृत किया कि भारत का सभी भाषाया की परिभाषायालि गव रखी जाए, दूसरे गाम अधिन अनुसूत जान पडे वहाँ भी काएर में सावधिक परिभाषाया का रना जाए। परिषद् में श्री बाबू सुब्रह्मण्य अय्यर, कश्मीर-भारतपण राव जम सिद्धान्त व गुणाव अच्छ हात रहे वह मान लिए भा जान व इसलिए अनुवाद समिति पर अपन परिभाषाया व आग्रह का आभेप नही किया जा साता था। यदि अनुवाद समिति व गव प्राय सभी मान स्थि गत ता काया कारण उनका आयह नही था बल्कि सभा प्रादेशिक भाषाया व सिंगपप हने ठीक समझन थे। श्री विजुभाई देसाई (मुजराती), श्री अनुसूत भारद्वाज (श्रीवन्दर) और श्री रामचन्द्र

वमा (बनारस) क सुवाव यदि लागा का पस नही आत थे ता उसका कारण यह था कि वह इम बात का ध्यान नही रखत थे कि हमार भापा भडार का वट्टन-सी निधियाँ सभी प्रादणिक भापाआ की सम्मिलित सम्पत्ति हैं इसलिए हम सिफ हिंदी या गुजराती की दृष्टि स परिभापाआ का निर्माण नही कर सकत थे। श्री तीयनाथ गर्मा (असम) सुनीति बाबू (बगला) मुनि त्रिविजय जी (गुजराती), श्री घनश्याम गुप्त (हिन्दी), श्री टी० एन० श्री कठया (कनाटा) श्री जियालाल कौल (कश्मीरी), श्री कुहनराजा (मलयालम) श्री चेनु पिल्लइ (तमिल) श्री सत्यनारायण (तल्लु) श्री वाइ० आर० दात (मराठी) श्री आतवल्लभ महता (उडिया) श्री गुरमुखसिंह मुसाफिर (पजाबी) काजी अब्दुल्गफार (उदू) परिपद के सदस्य थे। बालमुत्रहाण्य अय्यर (ससूत) न परिपद क निणया म अच्छा सहयाग दिया।

सविधान के ससूत अनुवाद समिति भी बन गई थी। १ दिसम्बर क २ बज स उसकी बठक हुई। सविधान का कुछ थोडा-सा अनुवाद श्री कुहन-राजा श्री बालमुत्रहाण्य अय्यर डा० मगलदेव और डा० रघुवीर भी करके लाए थे। लेकिन यह बठक सिफ मिलकर बठन भर क लिए हुई थी। समिति क प्रधान डा० काने यहाँ आने म असमय थे इसलिए काम का आगे के लिए छोडकर बठक उठ गई। ससूत समिति के सभी सदस्य मर परिचित थ। सिफ डा० काने का दरान नहा हुआ।

उमो तिन श्री प० सत्यनवजी (रामपुर) मिल। उहाने बतलाया साल भर स ऊनर हो गया, लेकिन हिमाचल प्रदेश म जनता क हित का कोई काम नहा हा रहा है। जो कुछ आमदनी हाती है वह नौकरागही क सच म चली जाती है। सचमुच ही हमारा शासन प्रजा के हित क लिए नही बल्लि शासन क हित क लिए है। यह बडे दुःख की बात थी।

३ दिसम्बर का मनानीत राष्ट्रपति राजेन्द्र बाबू का जन्मदिवस था। भारतीय पचाग क अनुमार पूस बनी १ का होता था। उस दिन अनुवाद समिति क लाग भी उनके यहाँ गए। हवन-पूजा की —

सामने बिखरी हुई थी और राजेन्द्र बाबू नेपाली बगल-दी पहन आसन पर बैठे हुए थे। सभी लोग बधाई दे रहे थे। मुझे भी बोलन की जरूरत पड़ी। मैंने कहा— गणतन्त्र की घोषणा के समय यह भी घोषित कर दिया जाय कि आज से सड़का और रास्ता पर दाहिने से चलना होगा। सिवाय अंग्रेजा के मुल्क और उनका सामिल होने के दुनिया में सभा जगह दक्षिण चलने का नियम है। यूरोप अमेरिका ही नहीं एशिया में भी यही बात है। फिर हम क्या अंग्रेजा के जाने के बाद भी दुनिया में चारों ओर उनकी स्थिति बनाए रखें। राजेन्द्र बाबू ने कहा— 'वाहरलाल से कहें। क्या सचमुच अंग्रेजा की सारी धनकूपिया और हठा को वायम रखन का बीजा नहरेजी न उठाया है? यह तो मालूम ही था कि राष्ट्रपति पद के लिए राजगापालाचारी भी लालायित थे। और उनके समर्थकों में गायद नहरेजी भी थे पर पटेल राजेन्द्र बाबू के पक्ष में थे। इसे सभी स्वीकार करेंगे कि वह राजाजी के कभी अधिक दृढ़ पद के योग्य थे। वह जनसाधारण के आत्मो थे। मैं तो समझता था राष्ट्रपति बनने पर भी राजेन्द्र बाबू उसी तरह जनसाधारण में घुलते मिलते रहेगे और जहां तक उनका सम्बन्ध है उनका भाव वस ही है भी। पर नहरेजी और दूसरे सिपाकिया ने स्थिति में बैठक दिया है कि राष्ट्रपति के पद की मर्यादा की रक्षा करने के लिए तटन भंगन का रहना जरूरी है। धारा कुर्ते में नहीं अचकन और चूनीदार पायजामे में रहने से एक पत्र के गौरव की रक्षा होती है। राजेन्द्र बाबू न यद्यपि घाती कुर्ते का छात्र नहीं लेकिन सास खास मौका पर नेहरेजी की राष्ट्रीय पागल का धारण करना जरूर स्वीकार किया। मैंने उस दिन कहा था— अचकन और पायजामा नहीं बल्कि घाती के माथे चौत्र-दी जखिन राष्ट्रीय पागल है। भागलपुर जल में सिमी नेपाली दर्जी ने ऊनी चौत्र-दी उनका लिए मा दी थी जिस वह दृढ़ समय पत्रन हुए थे। वह लय— 'दमिय मैं यत्र पहन जाऊ हूँ।' चौत्र-दी एक समय प्रायः सारे ही भारत का राष्ट्रीय पागल थी। आज भी वह महाराष्ट्र गुजरात गान्ध्यान हरियाणा पन्थ, नेपाल तक पहनी जाती है। पहलू असम बंगाल, उड़ीसा और जाधन में भी

पहनी जाती थी। यदि अपना एक विशेष योग्यता प्राप्त-प्राप्त समय के लिए आवश्यक है तो बगलबंदी, घोती या बगलबंदी माधारण पायजामे को रखना चाहिए। नहरूदाही योग्यता ता दुबले पतले आदमी का वाटून बना देनी है और कितने लाग कहन लगते है अब केवल सारंगी की कसर है।

अनुवाद का अन्तिम पुनरावलोकन हो रहा था। उसमें कितना समय लग रहा था यह इसी से मालूम होगा कि ५ दिवसम्बर का ८ बजे हम वहाँ गए और गाम का ७ बजे टूटी मिली। अनुवाद के काम में समय अधिक मेहनत श्री वनश्याम सिंह गुप्त और बालकृष्ण जी को करनी पड़ी। तरण बालकृष्ण जी उनके लिए सबसे उपयुक्त आन्धी सिद्ध हुए। उनकी स्मृति बड़ी नीबू थी। अंग्रेजी और उनके भारतीय प्रतिभादा के सूक्ष्म भेद का परस्पर की उनमें शक्ति था और मेहनत करने में तो वह शक्ति ही नहीं थे।

७ दिसम्बर को मरे दिल्ली से कल्याण की गाड़ी पकड़ी। रेस्तारों गाड़ों का भाजन बिल्कुल फीना था। अभा पुराने जमाने के चौटन की मना बना नहीं मालूम होता थी। रात्रि भाजन का साइ तीन रुपया दना पडा, पर वह सभरे के नार्द रुपय वाले जिनका बुरा नहीं था। निली मेठ गया से आगे पहुँच कर तब रुका रहा। मैं तो अपना दगा— इजन खराब हो गया है और गडो ट्रेन का रस्सा बाँधकर खींचा जा रहा है। रस्सा खींचन वाला मैं आगे आगे मैं हूँ।" चठाइ और समतल भूमि न वैसे ही सीधता रहा पर उतराई आन पर रुक गया। माथिया का भी कहन लगा कि ट्रेन पीछे से रावा बिना पटरी के ही चल रही है। कितन अकर्मद लाग कह रहे थे कि पखी की पटरी स्वभावतः अधिक बढार होती है, इसलिए एग चलन में कोई हज नहा है। स्वप्न भा जागति का ही अविचलन प्रतिनिधित्व करता है। ट्रेन की चाल से उठे हुए मन ने यह दृश्य सामने रखा था।

८ दिसम्बर के सभरे ट्रेन गामा स्टेशन पर एक घटा लट पहुँचा। आगे आगनमाँ तक पथरीनी भूमि है। यह कहने की आवश्यकता नहा कि मुगलसराय से हमारी ट्रेन न गया, हजारीबाग राइ का रस्सा लिया था।

यह वह रास्ता है जिस पर ही हमारी कायल और धातु का लाने पड़ती है और आग चलकर इसका महत्व पटना या भागलपुर हाकर जान वाली लगना स भी बढ़कर हागा। इजन न कागिन की, तब भी हावडा हम ४५ मिनट लट पहुच। मणि वातू की कार मौजूद थी हम सीधे उनका घर पर पहुच। था पादारजा स पुस्तका क प्रवागन क वारे म बात पूरा हुइ और उतान माच म २५ हजार अग्रिम दना स्वीकार किया। यह अग्रिम पीछे कई कठिनाइया का कारण हुआ जिनम पहल ही नम टकम अफमर न कस आमदनी मानकर मुपर टकम लगा दिया और बटी तरद्द करन क वात इसम पिण्ड छूटा। फिर उस रुपय का बैंक म रुपय पर एक तरफ रुपय क मूल्य गिरने म उसक सुरा जाने का डर था ता दूसरी तरफ अपना मवान नने का भी आग्रह हुआ और उन मजान का लिया भी जिनम य पकितियां लियी जा रहा हैं और जिस हम छाटना चाहते हैं किन उसे वाइ पूछने वाग नही है।

अपन पुगन परिचिन स्थाना क दखन का गौर आत्मी को हाता ही है। बनारस जान पर मैं मातीराम क बगीच क देवन का लाभ सवरण नहा कर सजता और कलकत्ता म आन पर १८०७ और १९०६ क परिचित राजा चौन की उम वाठरी का दखन क लिए उत्सुक हा जाना जिसम मैं पाठकजा क आधिन रहा करता था। मैं समजता था जिनका नम्बर ६४ है वह निमज्रि पर ८० नम्बर की वाठरी है। अत्र भी कुछ कोटरी हटकर वही नर्थासिंह मुरम बापे का माननाइ लगा हुआ था।

कलिम्पिंग—१० तारीख का ८ बजे मुये लकर विमान उडा। २१ साटा म सिफ ४ पर यात्री बटे हुए थे चाकी म कुछ माल नरा हुआ था। भला एमी स्थिति म विमान-यात्रा क अन्दे प्रपच की आगा कम हा सकती है? अभी विमान-व्यपतियां सारी गटा की थी जिनका सत्रम पहले ध्यान लाभ गुन की आर हाता है। हेन बजे तक मैं कलिम्पिंग पहुच गया। अच सनों बड़ गईं था और हमार लोग अमीटा जलान लग थ। थी मनगुप्त स्वप्नी क बडे पक्षापाता हैं। हम लाग गान म बांटे चम्मच का इस्तेमाल

करत थे, ता वह नाक नीं सिखाडत अपने हाथ स खात थे। अब देला, वह नी काँटा चम्मच इस्तेमाल कर रह हैं। पूछन पर बतलाया पानी ठण्डा है गरम होने पर भी कुछ देर म हाथ तो ठण्डा हो जाता है। मैन मेनगुप्त जी का इस बुद्धिमानी क लिए माधुवाद लिया। सचमुच हमारे बहुत से जाचार विचार म दग और काल का प्रभाव निर्णायक हाता है। सेनगुप्त जी काटे चम्मच का नाम लेने पर कहते थे— क्या मेरे हाथ नहीं हैं। 'जीर अब बिना किसी क कह इस परिवर्तन का मानन क लिए तैयार हो गए। यद्यपि कलिम्पाग की सर्दी बहुत कटी नहीं हानी इसीलिए वहा बफ नहीं पटती। लकिन, सर्दी तां थी, और उसस सेनगुप्त जी का सबसे अधिक बप्ट हो रहा था।

११ दिसम्बर का डा० रायरिक्स मिलने गया। आजकल उनके अनुज स्वेतस्लाव और उनकी पत्नी दबिका राना भी आई थी। स्वेतस्लाव को बारह बप बाद देला था। उस समय भी उहाने दाङ्गी रखी थी लेकिन अब वह अधिकीन सफल हो चुकी थी। दबिका रानी हिंदी तथा लाक-कथाआ क बार म बात करती रही। आयु ४० साल की हागी लकिन प्रसाधन भी क्या कमाल करता है। दखन म पाङ्गी मालूम हा रही थी, जोठा पर अघर राग, मुब पर सूधम थोम वाला म एक दजन कुचित अल्क, बेग गालीन, आँखा म चमक, मुग पर प्रसन्नता की स्वभाविक मुद्रा—यह थी दबिकारानी जिनके देखने क लिए कलिम्पाग म भीड लग जाया करती थी। वह सुगिणित जीर मुमस्वृत महिला हैं यह उनक बार्ता लाप से मालूम हो रहा था।

१५ दिसम्बर का सेनगुप्त जी बरबसा दस-बारह दिना क लिय गए। अब हम कलिम्पाग से दड-बमडल उठानवाले थ। चार ही महीन बाद फिर टडी जगह का तलाश करनी थी, इसलिए कई मित्रा का लिख रखा था। १७ दिसम्बर का ५० गयाप्रसाद गुबल का पत्र दहरादून स आया। उहोंने लिपा था चवरोता म एक अच्छा बगला है, जा किराय पर भी मिल सनता है और मोल भी। उस समय यह पता नहीं था कि वपों क लिए

हम गुकलजी के पड़ोसी होने जा रहे हैं। कमला का पत्र दिल्ली में ही मिल चुका था जिसमें उन्होंने लिखा था यहाँ रहने में मुझे मानसिक पीड़ा होती है। मैं उनकी स्थिति का कुछ-कुछ अनुभव करता था और यह निश्चय कर चुका था कि अब उन्हें अपने भाग्य पर नहीं छोड़ना होगा। उनकी अपनी प्रतिभा का जिस तरह भी अच्छी तरह उपयोग करने का अवसर मिले वही मुझे करना होगा। विदाइ देन के लिए लोग आन लगे। १८ का मिसेज निरम और दूसरे कितने ही मित्र आय। कमला का परिवार भी मिलन आया। जबके साल साहित्य सम्मेलन का वार्षिक अधिवेशन हैदराबाद में हुआ था। मेरा जान का कोई डराना नहीं था लेकिन श्री बलभद्र मिश्र का आग्रह था इसलिए मैं उसे टाल नहीं सका। साहित्य वाचस्पति' की उपाधि अबके साल मुझे मिली थी। इसकी कृतज्ञता के लिए भी सम्मेलन के इन अधिवेशन में जाना जरूरी था। पर सबसे ज्यादा जिस बात में मुझे जान के लिए बाध्य किया वह था परिभाषा का काम और उसके लिए ५० बलभद्र मिश्र का हाथ मजबूत करना। यदि मिश्रजी सम्मेलन के कणधार आगे भी बन रहते तो उनसे बड़ी आशा थी। वह भी दलाग आत्मीय थे और उचित बात के लिए अपने या पराय की मुरीबत मानने के लिए तयार नहीं थे।

दार्जिलिंग जिले का अन-जल इतने दिन तक साकर उमक के लिए कृतज्ञता प्रकट करना मरे लिए जरूरी था। और उसी का क्या सारे हिमालय का मुझ पर ऋण था। मैं वहाँ हिमालय का गीतल छाया और गीतल जल का आनंद लेता आया था। उमक पवता, उपत्यकाओं हिमानिया और मोघे-माँ लगा से आत्मीयता पदा की उनसे परिचय प्राप्त किया। यात्रा करते वक्त मेरा हमेशा ध्यान रहा कि वह कबल स्वान सुखाय नहीं हानी चाहिए बल्कि उसके आनंद में दूसरा का भी सहभागी बनाना चाहिए। इन्हींलिए मैंने अपना हरक यात्रा के विवरण लिखे। अब हिमालय कह रहा था हमारे ऋण में भी कुछ उर्ध्व हाना चाहिए। इसीलिए मैंने निश्चय किया, दार्जिलिंग के बार में लिखना चाहिए। बलिम्पाग में ही

मैंने दार्जिलिंग परिचय ' लिखना घुट कर दिया और सामग्री उसी समय जमा कर ली। दार्जिलिंग परिचय ' के बाद फिर ननीताल में रहने कुमाऊ ' में हाथ लगाया। मसूरा में आने पर गढ़भूमि (गढ़वाल) का आग्रह हुआ और उस भी लिखा। फिर नेपाल कहने लगा मुझ कयो बीच में छोड़ रहा। उस भी लिख डाला और जन्त में ' देहरादून जौनसार और हिमाचल प्रदेश ' लिखकर भूटान की पश्चिमी सीमा से जम्मू-कश्मीर की पूर्वी सीमा तक फैले हिमालय के बारे में लिखकर मैंने अपने को उन्नत करना चाहा। पुस्तकें मैंने लिख डाली, कुछ के प्रकाशक अभी नहीं मिले, और कुछ के प्रकाशक फुटवाल बना या कर्पो रखकर जचार बनाने की चिन्ता में हैं।

हैदराबाद-सम्मेलन

सभी को कलिम्पाग से जाना नहीं था। भट्ट और सेनगुप्त जी को यही रहकर काम करना था। कमला को हैदराबाद सम्मेलन भी दिखलाना था। इस तरह आधे भारत का वह देख सकती थी इसलिए उह भी साथ लेकर २१ दिसम्बर का टक्की से २ बजे हम सिलीगोड़ी पहुच गये। रास्त म कमला का दो बार क हुई यद्यपि उहान इसस बचन के लिए पेट का खाली रखा था। बागदागरा पहुँचे। विमान अधिकतर खाली था। सिफ ६ मुसाफिर थे। मैंने बहुत समझाया कि विमान पहाड पर चलने वाली माटर की तरह स हिलता डुलता नहीं है इसलिए इसम क करन की बिल्कुल जरूरत नहीं है। जो क करत हैं वह केवळ मन क कारण ही। कमला ने निराहार ब्रत रखा था और मन का काफी समझान की कागिंग की। विमान म तो क नहीं हुई लकिन बलरस्ता नगरी म मोटर पर चलत अपने को बह रोज नहीं सक्ती। हम मणित्पजी क यहाँ पहुँच। उसी रात नागपुर की तरफ रवाना हाना चाहत थे। मल ट्रेन म कोई जगह नहीं थी। पैसजर मे जगह मिल रही थी। हर स्टेगन पर वह सडी हाती चलती। समय का झून तो था ही लेकिन हम चौबीस घटा प्रतीक्षा करन के लिए तयार नहीं थे। दो सीटें रिजव करवाइ। हाबदा स नागपुर पमँजर १० बजे रात का

को रवाना हुई। हमारे कम्पाटमेंट में सात सीटें थीं जिनमें से दो खाली रही।

कमला जीवन में क्लकता भर आ पाई थी। अब उन्हें बंगाल से मध्य प्रदेश की भूमि में चलने का मौका मिला। बंगाल को देखकर वह ममयती हागी, सभी जगह सपाट मैदान है और हरे भरे पहाड़ कवल हिमालय में दखन का मिलत हैं। यहाँ अब उनके सामने छत्तीसगढ़ की हरी भरी पहाटियाँ थीं। वषा का समय होना, ताँ वह और भी हरी होती। घान के खेत बट रहे थे। बंगाल, उड़ीसा की भूमि का पार कर वह मध्य प्रदेश में चठ रही थी। हैदराबाद में जाकर उन्हें तलमलाना भी देखने का अवसर मिला। उसके बाद बिन्ध्यप्रदेश, उत्तर प्रदेश, दिल्ली, पंजाब, बिहार ही नहीं नेपाल भी वह देख चुकी। पहाड़ में पैदा हुए व्यक्ति के लिए यह मामूली साहस यात्रा नहीं थी।

२३ दिसम्बर का ६ बजे सवेर हम नागपुर पहुँचे। अपना सामान बर्षा की गाड़ी में रख माच रहे थे कि वहाँ चलकर कुछ घंटे विधाम करें। लेविन प्लेटफार्म पर ५० बलभद्र मिश्र मिल गए। उन्होंने बतलाया प्रयाग में ही रिजर्व डब्बा आ रहा है, जिसमें बहुत-से साहित्यिक मिन जा रहे हैं। फिर सात समागम में बचिन रहन के लिए बौन तयार हाता? ५० लक्ष्मी नारायण मिश्र, राय रामचरण अगाव गुप्त, श्री पुरपात्तमन्स टण्डन धादि परिचित वधु वहाँ आसन लगाय बठे थे। वही हम भी पहुँच गए। कमला को महिलाओं के सत्संग का लाभ हुआ। बर्षा में गान्गी घंटा भर गड़ी रही। यही जलपान हुआ। लौटकर राष्ट्रभाषा प्रचार समिति में आना था इसलिए अपना आधा सामान वहाँ भिजवा लिया। आनन्दजी भी उमो ट्रेन से चल रहे थे। गाड़ी फिर रवाना हुई।

अब हम हैदराबाद की तरफ चले। रात को बाँग के बाद जगल में नीवाली दयो। लम्बा जहाँ बस जाए वहाँ दीवान्गो, और उसक दगारे पर एक दिन की नहीं बारहा माम का दावाली हा मक्ती है। यहाँ कोई बारसाना था।

रात के साठ ६ बजे काजीमन्नपट में पहुँचकर हमारा डब्बा काट

दिया गया। भिन्नसार से सवा ६ बजे उसे हैदराबाद के लिए रवाना होना था। हम रेस्तारा में चले गए। वहाँ मुगमुसल्लम के तयार की बात सुनी। हमने मँगा लिया। अम्यस्तन के लिए भी छुरी-कांटे से मुगमुसल्लम खाना जहमन की बात है। वह कमला के बस की बात नहीं थी। उहाने सरी कांटा इधर-उधर चलाया लेकिन मुग बटने की जगह जिंदा होकर प्लेट से बाहर बूटने के लिए तयार था। वह मानती थी कि मुगमुसल्लम छाड़ने की चीज नहीं है लेकिन मजबूर थी।

गाड़ी डाक हा गइ थी। सबेर दो घंटे दिन से हैदराबाद की भूमि देखने का मौका मिला और मिक्लारावाद हाते ८ बजे हम वहाँ पहुँच गए। स्टेशन पर स्वागत के लिए बड़ी तयारी थी। जलूस निकलता और घंटो हैरान होना पड़ता। हमने पता लगाया जब मानूम हुआ कि श्री लक्ष्मी-नारायण गुप्त की पोठी पर ठहरना है तो शहर से बाहर हम उनका मकान में पहुँच गए। सबसे पहला काम था स्नान। रेल की यात्रा में आदमी भेरेच्छ हा जाता है। स्नान के बाद चायपान। फिर हम सम्मेलन के स्थान हिंदी-नगर में गए। हैदराबाद के लिए एक साल पहले हिंदी तुच्छ और अजनबी-सी भाषा थी। निजाम सरकार यहाँ की देगभाषा—मराठी, कन्नड और तल्लुगु—का मानने के लिए तयार नहीं थी। वह उदू का बटाने के लिए बरोगा स्पय पानी की तरफ बहा रही थी। उस समय हिंदी का नाम लना भी कुप्र हाता था। लेकिन अब निजामगाही खत्म हा चुकी थी, निजाम रात में राजप्रमुख बनारस छाड़ लिया गया था। राजकाज उन लोग का मगा के मुताबिक हाता था जिनका निजाम कोई दकअत देने के लिए तयार नहीं था। 'कभी नाव गाड़ी पर आरकभी गाड़ी नाव पर' हाता ही रहना है। हैदराबाद तल्लुगुभाषा क्षेत्र में है। तल्लुगु मराठी और कन्नड ताना भाषाओं के बानन वाला नहीं जानत कि पर्दा किन किटिया का नाम है। वहमनीगाही और निजामगाही के ६ सौ वर्षों के पार प्रचार तरन पर भी पना यहाँ जनप्रिय नहीं हा सरा। इमोलिए हिंदीनगर में कि सिव्या की नारी सरना सिगाई दनी हा ता काई ताजजुन नहीं। तरण

मध्य-मेविकाए अपन काम को बड़ी अच्छी तरह से कर रही थी। भाजन का प्रयत्न भी बहुत मुश्किल था। राती भी थी किन्तु निम देग म जाना, वहाँ का भाजन अपनाता मुझे ज्यादा प्रिय है। दापहर को वही चाकड़, फीकी या गट्टी आलू की तरकारी और दूसरे व्यंजन लाये। मिच को गिकायत हा सबती थी, किन्तु यहाँ बनाने वाला ने उसका आग्रह छोड़ दिया था। रसम् (इमली का स्वादिष्ट पानी) दक्षिणी भोजन म मुझे बहुत प्रिय है किन्तु मेरी ही तरह दूसरे महान उसके गुणग्राहक नहीं थे।

७ वजे मे स्थायी समिति बैठे। कई साला स सम्मेलन की नियमावलि के मगापन की बात चर्चा रही थी। इस समय भी उसका वार म कुछ बात हुई लेकिन नियमावलि का सगोधन यदि जतनी जल्दी हातर वह पास हा जाती ता सम्मेलन को आज के दिन कम देगन पडन ?

सम्मेलन—साडे १ बजे अधिवेशन शुरू हुआ। स्वागताध्यक्ष श्री लक्ष्मीनारायण गुप्त ने अपना स्वागत-भाषण पढा। फिर मध्य प्रान्त क मुख्यमंत्री प० रविशंकर शुक्ल ने उद्घाटन भाषण दिया। मनातीत मभाषति प० चन्द्रबलि पांडे के नाम का प्रस्ताव सठ सावित्र दास ने रखा। मैन और प० जम्बिकाप्रसाद बाजपथी ने समयन किया। सारा भाषण पडन म बहुत देर हातो और वहाँ समय का मवाल था। ७ वजे हम अधिवेशन-स्थान से गुप्तजी क घर पर चल आय। कमला ने सम्मेलन का विगाण समा का भी दग लिया। मुझे मच पर बठना था। उन्हें रानी टण्डन मिल गद, जिगान दुबली-पतली लडकी पर अधिक छाह लिवाना जरूरी ममथा। यद्यपि कलिम्पाग क आत्मो के लिए हैदराबाद का दिमम्बर का महोत्स भी म नही हा सत्रता लेकिन राय रामचरण ने अपनी गरम चादर लाकर द दी।

२५ दिमम्बर के मवेर साहित्य-परिषद् म श्री लक्ष्मीनारायण मिथ का बहुत ही सुन्दर और मार्गभिन भाषण हुआ। सम्मेलन और साहित्य परिषद् दाना क सभापति आज मगनी थे। जना ही की योग्यता का लाग लाग मान रहे थे। यह मेरे लिए वैयक्तिक अभिमान की बात थी। परिषद्

से उठकर म्यूजियम देखने गय। मुगल गामन का दिल्ली में खातमा हो रहा था, उसी समय एक मुगल सामंत निजामुलमुल्क न हैदराबाद में अपनी ध्वजा फहराई। अंतिम मुगल-काल में दिल्ली में चार राजनीतिक दल थे—१ मुगल या मध्य एसियायी तुर्कों का दल, जिसका नेता निजामुलमुल्क था, २ ईरानी दल, जिनके नेता अबघ और मुंगिदाबान्द नवाब थे, ३ पठाना का दल अर्थात् जिनका सबसे बड़ा नेता नजीबुद्दौला था और जिसने नजीमाबाद को बसाया ४ मुल्की दल अर्थात् देग के मुसलमानों की पार्टी जिसके नेता मुजफ्फरनगर जिले के सयदबाघु थे। निजामुलमुल्क मध्य एशिया के तुर्कमान कबील का था इसलिए वह बादशाह निजी दल का आदमी था। वहाँ से बहुत-सी चीजें वह ला सकता था जिनमें से कुछ इस म्यूजियम में रखी हुई थी। मुगलकालीन लघु चित्रों का यहाँ सुन्दर संग्रह था। बहुत-से हस्तलिखित ग्रन्थ थे जिनमें एक 'नौरम' पुस्तक भी थी। बहुत सुन्दर मूर्तियाँ हैदराबाद में जगह-जगह बिकरती थी जिनका बहुत अच्छा संग्रह हो सकता था। लेकिन वह तो कुफ्र की निगानी थी, इसलिए उनकी तरफ बंपरवाही करना स्वाभाविक था। एक जगह पर बराटे में काँइ गांधार-कला की मूर्तियाँ माधारण मूर्तियाँ बँडे में पड़ी हुई थी। यही बनला रही थी कि इस अधेर नगरी में चौपट राजा ही रह गजते हैं। जो दुरवस्था गांधार मूर्तियाँ की थी वही अमरा बनी की मूर्तियाँ का थी। किता मूर्ति पर काँइ परिचय वाक्य नहीं लिखा हुआ था। भाजनोपरांत हम राजकीय पुस्तकालय देखने गय। फारसी अरबी का मरी जानकारी न महायता की और अधिकारी ने हरेक चाज का अच्छी तरह जियलाया। पुस्तकालय की मूची बन रही थी, इसलिए दक्खिनी भाषा की बकिताआ और दूमर ग्रन्था का हम अच्छी तरह नहीं देख सके। उनका दयना हैदराबाद जान के मरे मुख्य उद्देश्य में से था।

हार्ड-नाट दया अस्पताल की भव्य इमारत भी फिर चारमीनार गण। उद्दु बुक्सटरों ने मुझे काम था लेकिन चलती पुस्तकालय का छाड दूमरी पुस्तकें दुलभ हानी जा रहा था। प्रा० जार ने दक्खिनी के ग्रन्था का सम्पा

दन किया था, उनसे मिलने की भी इच्छा हुई, पर उस दिन उनका प्रकाशित कुछ ग्रन्थों को ही पान्च सताय करना पडा। इन पुस्तकों का निवास स्थान पर छोड़कर फिर मैं हिन्दी नगर आ गया। महिला-सम्मेलन में भी कुछ बोलना पडा। महिलाओं की इतनी बड़ी समस्या देखकर पता लग गया कि यहाँ की महिलाएँ उत्तरी भारत की महिलाओं का अभी भी काफी पीछे छोड़ गई हैं। कुछ अधिवेशन में भी एक प्रस्ताव पर बालना पडा। रात के भोजन के बाद विषय निवारिणी समिति में पौन ११ बजे तक रहना पडा।

२६ दिसम्बर का सवरा हुआ। जलपान करके हम ६ बजे हिन्दी नगर पहुँचे। विज्ञान परिषद् के सभापति डा० रजन का भाषण सुना। मैं भी परिभाषा के सम्बन्ध में कुछ कहा। डा० टोपा उस्मानिया विश्वविद्यालय दिगम्बरों के लिए ले गए। टोपा साहब पहले ही से यहाँ निजाम की नौकरी में थे। कश्मीर के बाहर के कश्मीरा होने से उद का वह अपनी मातृभाषा समझत थे, और यह भा मानत थे, कि अग्रेजा ही एसी भाषा है जिसका अपनाए बिना गति नहीं। लेकिन, वह देख रहे थे, स्पानीय भाषाएँ इस बात का मानन के लिए तयार नहीं हैं। हैदराबाद अब उदू के पृष्ठपापक निजाम का नहीं है बल्कि वहाँ की लक्ष-लक्ष जनता का है। तेलुगु, कन्नड, मराठी अपने स्थान पर जबरदस्ती बैठन जा रही हैं। उनका महानुभूति पारर हिन्दी भी अपना स्थान बना रही है। टोपा साहब हम यहाँ समयाने की काँग करत थे कि जान विज्ञान की भाषा भी जनता का भाषा से दूर नहीं होनी चाहिए। जनता को भाषा में उनका मत था, जा गिहित लिखना चाह और कश्मारी पण्डित बालन हैं। यह जवाहरलाल की सत् महा समझत थे कि मा के दूध के साथ जितनी भाषा सीसी उसमें अधिक जानन की जरूरत नहीं। हालांकि अग्रेजी के लिए दजना घप दकर इस बात का स्वय सण्डन कर घुर हैं। टोपा साहब सम्कृत से भी कारे थे इसलिए यह कहना-समझना उनकी समझ से बाहर की बात थी कि सस्कृत के तत्सम गल्प का हमारा भाषाओं में १६वीं सदी से ही लेना शुरू किया और हिन्दी तत्सम गल्प के लन में बलि तेलुगु, कन्नड, मराठी और मलयालम से

बहुत पीछे है। जनता व कवि तुलसा ने भी तत्सम गान् को बहुत लिया है। तुलसी व प्रयोग म लाय मस्कृत शब्दों को लेने का हम अधिकार है या उह भी छाडना पडेगा। टापा साहब बतलान लगे—जनता की भाषा से दूर जाने के कारण निजाम सरकार का कराडा रुपया खच करके भी विफल होना पडा। कद वर्षों तक निजाम सरकार विद्वानों की खबर अपन यहाँ उदू के पारिभाषिक गान बनवाती रही जो प्राय सभी जरबी के थे। टापा साहब न उनक डेर का लिखलाकर कहा कि यही अवस्था होगी यदि हिंदी न भी बसी गलता की। मैंने कहा इम डेर का भी उपयोग हा सकता है क्याकि पाकिस्तान वाले उदू का ही आग बढाना चाहते हैं। रही हिंदी की बात तो हिन्दी जकली इस नाम पर नहीं बठ रही है बल्कि उसके साथ ही जम मिया बगला उन्धिया तेलुगू तमिल मलयालम कन्नड मराठी गुजराती, पंजाबी नेपाली ही नहा बल्कि सिंहली बर्मी म्यामी (थाइ) कम्बुजी भी बैठी हुई हैं। हम वाशिश कर रह हैं कि भाषा के विकास व इस काम म सभी एक दूसर का घनिष्ट सहयोग लरें। सादस-काज आट-काज की मुन्दर नमारतें बनान म निजाम न मुकनहस्त हो खच किया है। उस समय उम्मानिया यूनिवर्सिटी के उप कुलपति काई मुगलमान सज्जन थे। साम्प्र दायिवता और उदू व पलडे को पकट कर आग रने की गुजाइग नहीं थी इसलिए वह अपन का डावाडाल स्थिति म पात थ। टापा साहब कश्मीरी के अर्थात् नहल गीर काटजू की गिरादरी के इसलिए उनरी कदर सबम अधिक की क्याकि वहा उनके गाने समय म काम आ मरत थे।

दा उल इस्लाम साहब स देग म नहीं पर तेहरान व निवास व समय मेरी बहुत घनिष्टता था। घटा बातें होती थी। वह बहुधुन इरानी पण्डित थे। फारसी उनकी मातृभाषा थी। यद्यपि वह गिया के लकिन फारसी सम्प्रति भारत व मुगलमाना का हमारा माय रही इसलिए निजाम व दरवार म उनकी कदर र्क जोर उहान कई जिला म फारसी का एक बडा काम नयार किया। वह जानत थे फारसी और संस्कृत दाना एक परिवार की भाषाएँ हैं। इसा कारण संस्कृत व प्रति भी उनका बहुत प्रेम था और

यहाँ रहते उहाने उसे पढ़ा था। अपने बोग में जगह जगह उहाने सम्बन्ध गल भी दिये। हैदराबाद में उनका अपना घर था वहाँ यहाँ रहे थे। मुझे उम्माद थी कि वह इधर आए हान। बहुत पूछताछ करने पर धटा बाद घर मिल गया, किन्तु मालूम हुआ वह बम्बई चले गये।

२७ निसम्बर का सबेरे खार साहब में मिलन गया। भट नहीं हुई। थाड़ी दर तक डा० हुसैन जहीर से बात हाती रही। अपन अनुज सज्जाद जहीर का तरह यह भी विचारा में प्रगतिशील हैं। विषय उनका साइन्स (रसायन) है लेकिन माहििय में भी रुचि रखते थे, और इमके कारण हिन्दी उदू की समस्याओं का वान में भी उनकी दिलचस्पी थी। उदू की रखा और प्रचार के लिए मैं अपन का किसी से कम नहीं जानता। मेरा विश्वास है कि उसका अनिष्ट नहीं हाया। हाँ, अब उदू के लिए नागरा लिपिका वायसाट नहीं दिया जा सकता।

उसी दिन सांने १२ बजे बहुत से साहित्यिक मित्रों के साथ मालकुण्डा जाता पडा। पहल उम्मान नागर चान गये। यान विनाल सरावर मिचाई और नगर के पानी के लिए सातवें निजाम के समय तयार किया गया था। विनारे विकनिक के भी म्यात है। वहाँ कितनी ही मुमन्मान मिश्रिया भी पुरपा के साथ विकनिक के लिए आइ हुई थी। उनका मूरत गल उत्तर-भारत की हिन्दू मिश्रिया जसी ही थी यद्यपि गिभित परिवार की महिगएँ विनाबा उदू बालन में गार ममचना थी। "दक्खिना" मुनन में बडा प्यारी मालूम हाती है। जनभाषा में विगप तरह का मधुम हाता ही है। उल्मान-नागर से फिर हम मालकुण्डा के किल में गये। चाग तरफ विनाल नगर प्राकार था, जा कितनी ही जगह अब गिर चुका है। निजाम ने मालकुण्डा का नहा बन्वि मालकुण्डा के बादगाह कुल्ली कुतुब की वगम हैदरमहल के नाम से बस दूध नगर का अपनी राजधाना बनाई। मालकुण्डा का भाग्य क्या नहा लुटता। दूरी छनै और दीवारें रो रही थी। एर पहाड का अजय दुग समग्रकर यह किला बनाया गया था—कुण्डा (बाडा) का अब पवत है। यह मूरत द्रविड भाषा का गल है। पहाड कुछ मालग्या है इसलिए

मालमुण्डा नाम पडा। इसी पवत की चारा तरफ नगर बसा था। हम किले के भानर चये। फाटव के पास गोल पटाव वाला गुम्बज मिला जो जावाज दन पर कुछ हिलता सा मालूम हाता था। प्रतिघ्ननि भी ज्यादा होनी थी। इसे एक चमत्कार बतलाया गया। इस तरह क चमत्कार हमारे पुराने दश वास्तुशास्त्री अक्सर दिखलाया करत थे। पहाड के ऊपर सुरतान के महल अब भी अधिकतर सुरक्षित हैं। भय प्रासादो म विगाल गांठाएँ थी, फौजवार भी लगे थे। सुल्तान कुल्ली बुनुव का जमाना याद आ रहा था। १७वीं सदी के पूर्वार्ध म यहाँ कितना ऐश जग होता रहा हागा पर अब वह उजाड और वस्तुप्राय था।

आज भी दापहर बाद हिंदी नगर म गए। एक बठक म आचार्य नरेंद्र देव जी भी आय थे। यही उनके साथ अंतिम साक्षात्कार था। नरेंद्रदेव जी से वर्षों मेरा घनिष्ठ सम्बन्ध रहा और महीना उनके परिवार क व्यक्ति क तौर पर भी कांशी विद्यापीठ म मै रत्ता था। मैं कम्युनिस्ट हूँ और वह ऐसी सोशलिस्ट पार्टी क नेता, जो कम्युनिस्टा का अधाधुंध विराध करना अवश्य-वन्तय समझती है। फिर भी हमारे वैयक्तिक सम्बन्ध पर इसका कोई असर नहीं पडा। किसी समय हम दानो न मिलकर काल माक्य की 'कम्युनिस्ट घोषणा' का अनुवाद रिया था वह भी बौद्ध दान और संस्कृति क गम्भीर विद्वान् थे। इस प्रकार हम समानधर्मा थे। हमारा साहित्यिक सहयोग उसके बाद नहीं रहा, किंतु हमारी साहित्यिक प्रवृत्तियाँ एक दूसरे का हृषित जरूर करती थी। नरेंद्रदेव जी मानव क तौर पर बडा ही आकर्षक व्यक्ति रखत थे। वहे जिदादिठ थे। जय वह इलाहाबाद युनिवर्सिटी म पन्ने थे उन समय की बात है। दान म बहुत से धर्म दखत दखते वह ऊब से गए थे। उनकी जन्मभूमि फजाबाद क पास ही अयोध्या है जहाँ सली मन का जबदस्त प्रचार था। पुरुष समयत थे कि स्त्री बत बिना भगवान् उनको स्वीकार नहीं करेगे। इन मुच्छंदर स्त्रिया का राम जी के रनिवास म क्या काम था? और फिर रामजी ता एक पत्नी-श्रत थे। राधास्वामी और आयसमाजी, ब्रह्मसमाजी आदि आदि पचासा धर्म

चल रह थे। उह मूखी कि इन पया क केरिक्चर क तीर पर हम भी एक पय सडा कग्ना चाहिए। वह और उनक मित्रो न मित्कर चाच पय' कायम किया। जब न लग आपम म मिग्ने ता दाहिन हाथ का चाच की तरह बनाकर अभिवादन करत। बाहरी जिनामुओ को गहन गम्भीरता स समथान सच्चा और मूल धम 'चाच-पय' ही है। इमक लिए वट विष्णु वाहिन गरटजी, प्रेता क भक्त जटापु और सम्पाता का बातें बनला कर कायल करत। कितन ही दिना तक चाच पय विद्याथिया क लिए मनारजन का साधन रहा।

मुझे जहाँ-तहाँ जाना पडता था। सभी जगह कमरा का दिम्लान म सहायता नहीं कर सनता था। पर स्वयं मक्काजा क कम्प म उह मुन्दर-वाई मिल गई, जिनक साथ उनका सखित्व स्थापित हा गया और जब भी दाना सगिया म पत्र व्यवहार हाता रहता है। उस समय एक पहाड़ी लडकी क लिए मदान का यह विंगाल गहर विचित्र और भयान्पादक मालूम हाता था यद्यपि जमन कलकत्ता देग लिया था पर वह दूमर की अगुली पकडे जैसा ही देखना था। पुरान रिवाज क अनुमार सगी बनन का एक विंगय कम-काण्ड होना है, जिसे पहाड़ म भी माना जाता है। हमारे भोजपुरी क्षेत्र म ता बोई एक स्त्री अपनों सला का नाम नहीं ले सकनी। मतो बात समय वह एन घाली या पतल म खाना है। मुन्दरवाइ और कमला सस तरह स ता सगो नहीं बनी किन्तु उस समय मुन्दरवाई क कारण हैदराबाद कमरा क लिए जतना डरावना नहीं माूम हुआ। वह उनक साथ घूमा करती। श्री मुमिशाकुमारो सिहा और श्री काकि—हिन्नी की दो कव-सिगियाँ—भो वही पढ़ैवा थी। उनके कारण भी उनका मन लग जाता था। काबिलजी बचारी का तो रूपया ही जिमा न चुरा लिया, और उह बडो मुक्किल का सामना करना पडा। २८ तारोख का कमला अकेलो रह गई। उनका रोआंगा चन्दा दयकर श्री सत्यद जी (बदरी पुर) दिलवाई करना चाहते थे। उह सममान प्रदाना म ल गए। खाने क लिए मिठाइ भी दी, लकिन मिठाइ आंगुआ का राकने म समय नहीं हो सकतो थी। सत्यद जी

से उनका परिचय भी नहीं था। उन्हें क्या पता था कि वह क्या इतनी खातिर कर रहे हैं। बड़े शहर में लड़कियाँ के चोरी होने की बात सुन रखी थी, इसलिए प्राण कठ तब आ पहुँचा था। खैर मैं आ गया फिर उनको डाँस हुआ।

सम्मेलन के लिए तयारी बड़े जोर शोर से हुई थी। निजामगढ़ा से दम घुटते हुए लागा को ताजी हवा मिली थी। इस अखिल भारतीय मिलन के द्वारा हैदराबाद के हिन्दीभाषी और हिन्दीप्रेमी अपने मन का उल्लास दिखलाना चाहते थे। हिन्दी नगर में रात को दीवाली का दृश्य होता। प्रबंध सभी अच्छा था।

मैं पुरानी उलू विधेपत दक्षिणी कित्ताबा के सग्रह करने की धुन में था। चाहता था हिन्दी के इस महत्वपूर्ण और अतिप्राचीन साहित्य का 'दक्षिणी हिन्दी काव्यधारा' के रूप में सग्रह प्रकाशित करूँ। उस दिन आविद राड पर गया। मकतब इब्राहिमिया का नाम सुनकर वहाँ भी पहुँचा। उन्होंने बतलाया कि कल हूँ काफी कित्तबों दे सकेंगे लेकिन अगले दिन जान पर कोई नहीं मिली। कितन ही प्रतिनिधियाँ का भाजन श्री जेतला के यहाँ हुआ। प० रामनारायण मिश्र के दामाद होने से जेतली साहब और इनकी पत्नी का हिन्दी-साहित्य से विशेष अनुराग था। हैदराबाद के नए प्रशासन की ठीक से चलान के लिए जो अपसर बाहर से आए थे उनमें ही जेतली साहब बड़े अपसर हाकर आए थे। उसी दिन (२८ का) उस्मानिया यूनिवर्सिटी के वायस चांसलर ने चाय पार्टी दी। उस दिन वह हिन्दी के लिए बहुत प्रेम दिखला रहे थे लेकिन 'गंगा गंग गंगादास, जमुना गंग जमुनागंग का क्या भरामा?' कासिम रिजवी के समय में लागू उनकी जय मनात हांग। गंग का आचार्य नरेंद्र दय के सभापतित्व में दक्षिणी भारतीय साहित्य संसद का अधिवेशन हुआ जिसमें हिन्दी और दक्षिणी भाषाओं की उन्नति और विकास के ऊपर विचार विनिमय हुआ। रात का राजा पित्तो के यहाँ भाजन हुआ। यह यहाँ के सठ हूबुमचर हैं। भोजन के सभी पात्र चाँदी के थे। हैदराबाद में बहुत व्यस्त प्राणाम रहा। इसी

बीच काफी पुस्तकें माल म या नोट में मैं दक्किन की जमा कर ली।

वेस्ट (एलोरा)—२६ की रात को हमारी काफी बड़ी मण्डली हैदराबाद के प्राचीन स्थान का खनन निकली। थी वाचम्पनि पाठक अगाव जी आदि तथा कुछ महिलाएँ भी साथ म थी। बय रिजव थी ३ बजे गाढा पकड़ा। रास्ते म जालना स्टेशन पड़ा। नाना की पुगनी वानें याद आन लगी। वह घर स भागकर यहाँ पलटन म भरती हुए वे जीर यही दम बप के करीब तिलगा रह थे। यहाँ की कितनी ही अपन माहस और गिबार की यात्राएँ वह नानी का मुनाया करत थ, जिह में अबाध काल म ही मुना करता था, और जिहान मर हूय म घुमकवडी का बीज पैग किया था। लेकिन अब यहाँ उतरकर दफन ही क्या। जालना के कुछ हिले प्रमी हैदराबाद म मिले थे। उनसे यह मालूम हुआ कि वहाँ पर दग वाली पलटन का सन्तानें मौजूद हैं। उनसे यह कंम पता लगता कि इनम रामगण पाठक की सन्तान कीन है। ज्ञाता भी ता इस समय नाना का लडका ८४ वय का हाना। तरह-तरह की बातें साचन हम आग बढे और ३० दिसम्बर के ५ बजे औरगाबाद पहुँच। यही म बम्बई और अजिठा (अजन्ता) की यात्राएँ करनी थी। स्टेशन के पास ही एक बड़ी धमगाला थी। अब हमारी विग्न हान वाली बारात थी, गायन इसलिए या ५ बजे रात के असमय के कारण वहाँ कोई पय प्रत्याक नहीं मिला। हम धमगाला के दो-तान काठरियाँ लेकर अपन हालडाल और सूत्रकस पटकर बाग की यात्रा की चिन्ता करने लगे।

दो घूरे करके वेस्ट के लिए निजाम बम-बक्स की एक बस ठीक की जिसम चढन के लिए २७ आत्मिया का प्रबन्ध हुआ। मुट्ट-हाय घाया चाय पाना हुआ कुछ गान की चीजें साथ लीं। मैं अनक बार यहाँ आ चुका था, इसलिए निक्कता का जानता था। ८ बजे हमारी बस खाना हुई। पहले बम्बई चलन का निश्चय किया दवगिरि (दौन्ताग्रा) का लौटकर दफन के लिए छाड दिया। गप्पा (गुफा) म २ बजे पहुँचे। बम बन्दन नजराक पहुँच गए। मिहल म भी गुग विहाग का जेना कहा जाता

है और महाराष्ट्र म लुप्या । भारत की और जगहा म इस गब्द का प्रयोग नही है ।

हमने उस छार स गुरू विया जहा बौद्ध गुहाए है और जा सब सानवी से बारहवी सदी की है । अजिठा म पहली मे छठी सदी तक की बनी गुहाएँ अजिठा की उत्तराधिकारिणी है । य देवगिरि क मादवो क काल की बनी हुई है इसलिए उनकी राजधानी क पास है । गुफा म पहुँचने पर अँधेरे म देखन के लिए टाच की जरूरत थी । हम टाच सँभालकर लाए थे लेकिन कमला उस बस पर छोट आई । जली म जादमी उतावला हाता है, और जावग को प्रनट करन म गंगा का ख्याल नही रखता । मैंन कुछ कठार स्वर म कहा । कमला राती हुई लेण्या की जार चली गई और साधिया मे स कोद टाच लन गया । प० वाचस्पति का सहृदयता को इसस ठेस लगी । उहनि मुझस तो कुछ नही कहा लेकिन कमला को बहुत समझाया । सचमुच ही उतनी भीड क सामन किसी आत्म-मम्मान रखने वाले ब्यक्ति को डाटना बुरा था । इस समय कमला न वाचस्पति पाठक की सहृदयता का मोल समझा । यद्यपि पावती वाला क जामू थमे, पर उस इन पुरानी गुहाआ क दखन म उनना मजा नही जाया हागा इसम क्या सन्देह है ? उस समय कमला का इतिहास का उतना ही जान था जितना मेट्रिक म हाता है । मुझे अपनी सारी मण्डली का जानररी पय प्रदशक बनना पडा और छाटा माटा लेक्चर देत हुए हरक गुफा को निललाता रहा । भला इस तरह जा आत्मी अपन कतय म लगा हुआ है वह कैसे कमला का ध्यान कर सकता था । कमला को यह गिवायन हानी वाजिव थी कि मैं जिमक साथ इननी दूर आई वह भरी सुघ भी नहा लता ।

बौद्ध गुफाआ क दखन क बाद हम ब्राह्मणिक गुफाआ म गए । पहाट काटकर विगाल बलाग मन्दिरा का आश्चय और अभिमान के साथ दसा । फिर जन गुफाआ की बारी आई । डा० उदयनारायण प० बलभद्र मिश्र वाचस्पति पाठक, आनन्दी भगवतीप्रसाद वाजपयी डा० कंगरीनारायण गुप्ता सभा एम ब्यक्ति मण्डली म थे जिनके साथ इन स्थाना क देखन म

जान द आता था। लौटत वकन हम खुलगावाद (स्वगपुरा) आए। शायद औरगजब ने ही इस यह नाम दिया। दक्षिण की रियासता का छिन भिन कर मुगल-साम्राज्य को बढ़ाने क लिए जिस समय औरगजब अपन शासन क आधे साल इधर लगा रहा था हो सकता है, उस समय यह स्वगपुरी हो रही हा। लेकिन आजकल ता अधिकतर गिरे पडे और श्रीहीन मकान ही दिखाइ पडते थे। औरगजब इधर ही मरा और खुल्दाबाद ही म उस दफ नाया गया। वहा स हम देवगिरि (दौलताबाद) गए। यह दक्षिण क दुर्गो म अजेय ममया जाता था। गालकुण्डा की तरह यहा भी एक अलग थलग शर क चारा तरफ विगाल नगरी बसी हुई है। उस नगरी क अवरोप दूर-दूर तक मिलत है। लेकिन देवन लायक इमारतें शर क ऊपर या उमक पास म है। फाटक क भीतर हाकर हमारी मण्डली मौनार क पास पहुँची फिर पवत पर चढन लगी। वहाँ की इमारतें देखन लौटकर पुरान सूखे हुए जलकुण्ड क पास हजार मम्भा की मस्जिद देखा। ६ सौ बप पहले मन्दिर स इम मस्जिद म परिवर्तित किया गया था और अब आठ माम हा गए वहाँ भगवती विराजमान थी। पुजारी भी नियुक्त हा गए थ। हमारे साथिया प० भगवतीप्रसाद बाजपेयी ता थाठी देर के लिए वहाँ द्वारपाल बनन क लिए तैयार हा गए जबकि मैं फाटा लिया। मन्दिर १३वी सदी क अन्त तक जीर फिर मस्जिद और फिर १६४६ म मन्दिर—परिवतन आखिर ससार का नियम है। देवगिरि क इम शर न और भी बितन परिवतन आखिर हाग। मुहम्मद तुगलक न इस दौलताबाद बनाकर रसक भाग्य का खोलना चाहा था। तिल्ली का उजादकर यहाँ बह नई तिल्ली बसाना चाहता था। लाग उस पक्की और मनकी बन्त थ लेकिन इमम पक जीर सनन का ता बाइ बात नहीं थी। वह जानता था और दख चुका था कि राजधाना का अगर राज्य क एक छार म रस्ता गया ता दक्षिण पर हम अपना अधिकार कायम नहीं रत सकत। इमो दूरी के कारण यहाँ बहमनी रियासन बना फिर

उमकी जगह पाँच रियामत जा मौजूद हुई जिहान गाहगहा और औरगनेत्र के दौन खट्टे कर दिए ।

बड़ी सड़क के किनारे हम लागा का मशाल्ल भोजन हुआ । गाम तक के लिए हम निश्चित धूमन रह । औरगाबाद लौटन पर रात हा गई । धमगाला म किसान तरह गुजारा हो गया । दूकानें बाहर बहुत थी, खान की कोई दिक्कत नहीं थी लेकिन हमारे दंग म पाखान का और जभा ध्यान देने की जरूरत नहीं ममज्ञा जाना । जब तक हमार पाखाने साफ मुथरे नहीं हो जाते तब तक हम सम्य और मस्टूत भी नहीं कह जा सकते यह भी निश्चित है ।

अजिठा (अजता)—१९४८ की आज अन्तिम तिथि और गनीचर का दिन था । हमन अजिठा आन-जान के लिए अपन जादमिया के लिए एक बस ठीक कर ली थी । यदि पूरी बस अपन हाथ म हा और साथी सभी सहृदय और ममानयमा हा ता दस-बीस क्या सक्डा मीला की यात्रा जानू लेने हुए की जा सकता है । हमारी बस डाऊल इजन की थी । इजन या मोटर अगर मेंभालकर रखी जाए ता उह बहुत दिना तक अच्छी हालत में रखा जा सकता है बगार टाली जाए ता उमम खराबी हान म दर नहीं लगती । इसा बव हिनो स हमारी बस की गति मन् थी । हम सवा ८ बजे अजता स चल । ५८ मील पर अजिठा गाँव है, जहा स सात मील आगे अजिठा लेण्या—वेस्ट १८ हा मील पर था । गति मन् हाने स मन म कुत्न हो रहो थी । रास्त म सड़क के किनारे कई गाँव पडे । हैन्रावाद रियामत मे ६० प्रतिशत स भा अधिक हिन्दू रहने हैं लेकिन मुगल बाल ही म यहाँ का हरब मुसलमान हिन्दुआ का अघ-दास समझना आया था । मैं उम युग को कई बार यहाँ जाकर देस चुका था । अब दान रहा था, कासिम रिउवी के समय जा मुसलमान मिह की तरह दहाड रह थे वे भीगी विल्ही हो गए थे । अभा नात्रा दान है कमलिण पह्ला स्थिति म नइ स्थिति म आन म बह अभा अपना मतुत्न गा चुक थ । कुठ समय लगगा फिर बह ममजन लगेंगे कि हम भूमि के हम ना उमा तर म्वामा हैं तम यहाँ के हिन्दू ।

यहा की हरक चीज का हम भी उन्ही की तरह अपना समझना चाहिए और यहाँ का सभी कीतिया का हम अभिमान हाना चाहिए । य काफ़िरो की यादगार हैं, धार य मुसलमाना की, अथवा य हमारे यादगार हैं और य मच्छा की यह भाव छूटकर सबके हृदय म एकता जम्र जाएगी, चाहे उसम कुछ समय लगे ।

अजिठा गाँव बड़ी बस्ता है । इसक किनारे प्राजार ह । बाजार भी है । पाम की नदी बाँव लो गई है, ताकि गर्मिया म भी पानी मिलता रह । बाजरे और गहूँ को फमल एक साथ रती थी । वस्तुत हैदराबाद काफी दक्षिण है और उत्तर का ऋतु भेद यहा कम मिलता है ।

गाँव से आग बन्ती हुई हमारी बस लण्णा के पाम ११ बज पहुँची । अज्ञता तन नई मडक बन गई है । गुफाआ बखन म हमारे ढाई घट लग । चित्रा का विधेय तीर म देना गया । । उत्तर म जेलगाँव स्टेशन पर उतरकर भी अज्ञता आया जा सक्ता है, पर हैदराबाद म आन वाले के लिए यही रास्ता ठीक है । जेलगाँव यहाँ म २५ मील ही है । गुफाआ क दशन क बाएँ हमन मडक के किनार ही बैठकर मध्याह्न भाजन किया । सभी चीजें हमार साथ थी । पत्र एमा नहीं था । अर की ता मातूम हाना था, अज्ञता म राज ही दगाका का छोटा-भाटा मेला लगा रहता है । पहली बार में १९२६ म आया था । उन समय अभा यहाँ मुनमान जगल-सा दीखता था । १९३३ म भी उसम बहुर स्थिति नहीं ऐसी, लेकिन १६ बप बाद अर काया पलट-भो मातूम हाना थी । हमार राष्ट्र को अजिठा पर अभिमान है लेकिन इस अभिमान का हम कबल अपने तक सीमित नहीं रख सकते । यह इसा स मातूम है कि १९५५ म चीन न अजिठा की १५ की गताब्दी मनाई है । चीनी गणराज्य अपनी चित्रकला म अजिठा की दन का स्वीकार करता है । एसा क प्रति जयना सम्मान प्रकट करने क लिए जमन यह उद्यम मनाया । भारत की अभी दर नजर भी नहीं गई । सबमुव ही यह खबर सुनकर हम जीव मल्लरर दान लग, हम सात रह गए और अजिठा के प्रति अपना धडा प्रकट करने म चान आग बड गया । अज्ञता न भार-

गीय सस्वृति स प्रभाविन हरेव देग का एउ मून म बाँध रखा है। जापान क प्राचीनतम मन्दिर हारियाजी के बाधिमत्व की तस्वीर खचकर मभी अजिठा का यात्र करन लगत हैं।

भाजन क बाद हम लाग बस पर बठे। बनारसी हा और उसका पान मे प्रेम न हा यह अमम्भव है। वाचस्पतिजा पक्षक बनारसा है। उनका बडा मा पनड वा हमगा पान क बोडा म भरा रहना है। उसम बनारसी पान यहाँ कस हा सक्ता था ? किम बनारसा पान कहन हैं वस्तुत वह मगही पान है। लकिन दूसरे की चाजा पर अपना ठप्पा लगाना बनारस खूब जानता है। राम कही स आया और उस बनारसी राम (कागी मिल्क) का नाम मिल गया। पालि-ग्राम म कागी चदन का उल्लेख जब मैंन पढा ता मुने म्याल टुजा कि सुदूर दक्षिण क चन्दन का ही लेकर बनारस न अपना ठप्पा लगाया हागा। यह धारणा गलत माविन हुइ जबकि छपरा जिन्ने के भावी गाँव म जगती चदन के कुछ बिरवे दमे और यह मानन क लिए मजबूर हाना पडा कि कागी की भूमि म भी चदन पना हाता था। मैं बनारस का ता नही लकिन कागी जनपद का ही सन्तान हूँ। और अस जनपद क गाँवा म भी जच्छे किमम क पान का खाकर मुझे यह भी विस्वाम हा गया कि ताम्बू विग्राम की आदि भूमि कागी हा है। पान स मरा बर नही हा सक्ता था लेकिन पान का मौका छठ-छमाह मिलता। अच्छा मिले ता ग्वा लता घटिया क पान की इच्छा नही हानी। छठ-छमाह क पान पान म अक्कर बोडे म कभी अधिख चुना रहता और मुह कट जाना। फिर गुनाह बलज्जत कहर पछतान लगता। साचना मैं क्या इम पाना हूँ ? उन दिन अजिठा म भाजन क बाद आराम स बस पर बठ मैंन कहा—

पाठकजी पान ! ' पाठकजी न अपना डब्बा मर हाथ की आर बना दिया। मैं ऊपर का बाटा मुह म डाला। मुह म चुनचुनाट मालूम हुई। मैं पाठकजी स कहा— चुना जयाना ग्वा दिया है क्या / पाठकजी घबरा कर बाल—ऊपर का पान ता नही लिया। मचमुच ही मैं ऊपर का पान लिया था और कायने क अनुमार मुझे पाना हा करना चाहिए था। लकिन

जब तक पाठकजी हा-ट्टी' करें तब तक मिफ चूना रखा हुआ वह पान दाता व नाचे आकर बुचला जा चुका था, घर माटे मुह मे चूना भर गया था। धूकन से क्या होता है ? चूना तो अपना काम कर चुका था। थोडा बटुन कटाव होता ता गरी गान म या दूमरी तरह स कुछ प्राण मिलता। जब रूपन भर व लिए नमकीन, मसाला मिचवाला गाना हराम था। अच्छा गान पका हुआ देखकर टुटुर-टुटुर ताकत रहना पटना। मसालेदार आलू दयता ता अपनी उम दिन की बचकूफी पर राप आता। मैं तय कर गिया कि अब पान नहीं खाऊंगा। छ बप म ऊपर इस नियम का पालन करन हा गए। वार्ड धार्मिक खपन तो थी नहीं, जिसका मानने के लिए मैं मजबूर हूँ लेकिन किसी बात का तर्क करने पर मर लिए वह बसा ही हा जाती है। उनसे भी बढकर यह भी ता स्याल आता है कि छोटे-छमाह खान पर फिर मुह कटता ही रहेगा।

गन हा गई थी, जब कि माटे ८ बजे हम औरगाबाद पहुँचे। आध घटे म हम मनमाड की गाडी पकडनी थी। बड़ी भीड थी। १९४८ साल बीतन के आध घटे वा हम मनमाट पहुँचे। ३ बजे नागपुर एक्सप्रेस मिला जिसम हम अपन मन्शा-बल व मराम हा चन्ने म सफल हुए। चन्त-चन्ने कुत्ती आकर एक दिम्तरा यह कर् कर रख गया कि यह आपके मायी का है।

इस माल व कामा म 'धुमकड गाम्ब' बाज की राजनीति' और परिभाषा निर्माण मुख्य थे। पहला दाता पुम्नके लिखकर प्रकाशित भी हा गई। 'मधुर स्वप्न २० अध्याय तक गिया जा चुका था और 'दार्जिलिंग परिचय व भी कुछ अध्याय तयार हा चुक थे। मविधान के अनुवाद म वाषा मसल लगा था। मत्र मिगवर माल व्यम्न जीवन का रण।

नीड़ की खोज

१६५० वं प्रथम दिन का सवरा बम्बई की सीमा व भातर हुआ । आनन्दजी डा० केसरीनारायण में और कमला दूसर दजों के एक ही डब्बे में थे । सवा २ बजे दिन को हम वधा पहुँच । हिन्दी नगर में दा नाई दिन रहना था । मनमाड में जा हालडाल कुली रख गया था और जिस नील भद्रजी वझे यतन में उठाकर लाए थे यहाँ आन पर काइ उमका पूठनवाला नहीं मिला । खालकर देखने पर उसमें स्लीपर गौन एक लाल साडी और कुठ और कपडे थे । उस पर जी० एम० लिखा हुआ था । लेकिन भारत वष व ४० कराने लागे म जी० एम० का कस पता लगता । पता लगाने की कोई कुजी वहाँ नहीं थी । अदाज से यह कहा जा सकता था कि किसी गुजराती महिला का यह हालडाल है । इस किसका सोंपा जाय इसकी चिन्ता नीलभद्रजी का करनी थी ।

वर्षा—यद्यपि सवाग्राम हम कितना ही बार देख चुके थे लेकिन साथ में नए मित्र हा ता उनक साथ गाचीजा व आश्रम का देखन जाना आवश्यक हा जाता है । २ जनवरा को प० चन्द्रासर वाजपयी, हपबदनजी (प्लाहावा) और कमला का लिए हम सवाग्राम पहुँच । चार मील की यात्रा तांग न पान घट में पूरी की । तांगवाल एक बड़े पतकी वान बनलाई । रामन में महिला आश्रम पया । हम सकेले पागा व मुह से अगुड नाम निव-

रत मुरतर वह कस चुप रहन ? उसने महिला आश्रम का निर्वाचन करते हुए बतलया—बाजूजी, यहाँ स्त्रियाँ रहती हैं अपन ही हाथ मला साफ कर लेनी है, इसीलिए इसका नाम 'मला जामरम' है। मचमुच हम स्वप्न म भी अमली तत्त्व का पता नहीं लग सकता था। जिनको हम लाम अतिथित उगडड ममथन है वह नो क नो कभी लात्र रुपए की बात बतला दत है। मैना बाहर का था महिला आश्रम की भ्राणी गान्नाबन का भी अमली रहस्य नहीं मालूम था, गांधीजी स सम्ब ध ग्वनवा आश्रम म मैला साफ करने का काम लोग करत ही हैं इसलिए उनके लिए इससे उपयुक्त नाम नहीं हो सकता था। इस समय संवाग्राम मे अन्तर्राष्ट्रीय गान्ति परिषद् हो रही थी जिसके कारण चहल-पहल थी। गाँधीजी क रहन की बाठरिया म सान्न खोड लगा लिए गए थ। एक आश्रमवासी दशका का पथ प्रदशन करते हुए उनक बार म बतला रहे थ। अभी उनका परिचय सीधे-साधे गान्ति म होता था, अभी पँवाड बनन म कुछ देर थी। सौ बप बाद इनका परिचय विन्कुल अतिरिजित रूप म ही किया जाएगा। हाँ, तकिन यह तभा जब कि भारत साम्यवाणी न हा जाण। साम्यवाणी हान का मतलब यह नहीं कि गाँधीजी के आश्रम को भुला दिया जाएगा। हम म ताल्न्ताय के मानिया पोत्या क बार म हम जानते हैं, जहाँ महान् लणक, और महान् गान्ति प्रचारक तथा गाँधीजी क भी गुरुआ म स एक ताल्न्ताय का हरेक चीज का सुव्यवस्थित रीति से रणन गया है। लाग उसे तीथ समझकर दशन करन आने है।

बाहर चापडो के बाहर गन जगह मौच म टली एव-सी पाँच मूर्तियाँ गिवाई पडी। मभो की पमलियाँ गिनी जा सकनी थी और सभी क पेट और पीठ सटकर एक हा गए थ। य गाँधीजी क पास रहनवात्र पुरुष थ। जापाना जात्र सम्प्रदाय क भी एन मिधु मिल। बट बुद्ध और गाँधी का शर्मा बत गिशा कर प्रचार करन चान्त्त थ। लौटन समय हम महिला आश्रम गम और गान्ति बा का तीगिवाल की व्याख्या सुनाने। अगल दिन ६ बज गतर महिला आश्रम म फिर भाषण दन क लिए जाना पडा।

आनन्दी पट्टल भी कभा-कभा एक जगह रूटे म बघन की गिवायन

करन थे लेकिन अब वह अधिक उन्मत्त थे। प्रयाग वाले सम्मेलन के वण धार अपनी दलबन्धी म कभी कभी इनका ऊपर भी कुछ छोटे बस देते थे। आनन्दजी साबने थे—स्वच्छंद रहना ता आज चारा खूट जागीरी म रहना देग विन्श म जगह जगह घूमना फिरता। यहाँ काम का जिम्मेवारी सभालन पर यह मन भी मुनना पड रहा है। वह त्यागपत्र दे देने की बात कर रहे थे। भाडे की एक दरिद्र काठरी से आरभ हारर राष्ट्रभाषा प्रचार समिति आज एक विंगाल मस्था बन गई थी। हिंदीनगर सचमुच ही एक नगर-सा जान पडता था। उसके कायकर्ताआ का जाल सारे भारत म फैला हुआ था। इतनी मफलता किसी एक व्यक्ति के कारण नहीं हो सकती यह ठीक है उसम सबसे बडा कारण समय की मांग थी। हिन्दी का अब समय आ गया था इसलिए उसके काम को हाथ म लेकर आग बत्न वाली मस्था के लिए बहुत मुभीत थ इसम मन्हेह नहीं। लेकिन साथ ही मस्था का रायना और उम पानी स सीच-मूच कर बटाना, बटनी हुई कर्मिणा की मस्था का समट कर ले चलना नाग सहायथा और मित्रो को प्राप्त करना ये सब काम याग्य शक्ति ही कर सकता है। इसलिए राष्ट्रभाषा प्रचार समिति की इतनी उन्नति म आनन्दजी का मदम बडा हाथ था इसम गव नहा। और भी अधिक इसका श्रेय यह छयाल करके आनन्दजी को देना पडता है कि गाँधीजी न इस विरवा को लगाया और छोडे ही समय वाट हिन्दी हिन्दुस्तानी के विवाद को लहर उमक विगधी हा गए। वह अपनी उन्नरता स समिति का अत्यनिष्ट करने के लिए तयार नहीं हो सक्त थ लेकिन चले बसा करने म कभी वाज नहा आए। इन गारे विरोधा क हात भी आनन्दजी गाँधीजी क चलो क मड म रह—पानी म रहकर मगरमच्छ स कर रिया और मजे स आग अडन रह। मैंन यही कहा कि जब तव वैमा परिस्थिति नहीं उत्पन्न हा जानो तत्र तत्र त्यागपत्र नती भेना चाहिए जत्र कभी स्थिति पना हा जाए ता एउ मिनट के लिए भी रुकना नहीं चाहिए। समिति का कारवार बहुत बड गया था लेकिन दा कर्मिया मुझे सटवती थी। एक तो समिति का एक अच्छा प्रेम हाता चाहिए। अच्छा

प्रेस तब तक नहा हो सकता, जब तक कि मानाटाप न हा। दूसरी बात आवश्यक थी कि समिति अनप्राप्त श्रेष्ठ वृत्तियां क दानादान का साधन बन। हिन्दी क माध्यम म वह भारत का सभी प्रादेशिक और विद्वान भाषाओं को भी हमारा दण क लागू क सामन रखे। इन दाना चीजा का एक दूसरे म सम्बन्ध है क्योंकि एमो वृत्तिया का मुन्दर प्रकाश तब तक नहीं हो सकता जब तक कि काम माना टाइप म न हा। समिति की परीक्षाओं म लागू विद्यार्थी बैठत थे उनक लिए पाठ्य-पुस्तकें समिति ही छापती थी। एक-एक पुस्तक के बीस-बीस ताम-तीस हजार क सस्करण निकलत। कम्पाज करना कम जाना और छापना अधिक और दाना गिफ्ट म भी काम पूरा करना मुश्किल जाना। मुझे आनन्दजी न प्रकाशन की योजना बताकर उन क लिए कहा। मैंने पढ़त ही साच रखा था, इसलिए उस दिन कागज पर उतार कर देन म काइ लिखत नही हुई—१ हिन्दी हिन्दी हिन्दी विद्वान भाषाए हिन्दी क का छाप जाए, २ दानी विद्वान भाषाओं क हिन्दी माध्यम मे स्वयं शिक्षक तैयार किए जाए जिनक साथ व्याकरण भी हा। ३ हिन्दी और दूसरी भाषाओं क साहित्य इतिहास प्रकाशित किए जाएं, ४ हिन्दी प्रादेशिक भाषाओं और विद्वान भाषाओं क हिन्दी अनुवाद के साथ बकिता मद्रद, ५ दानी विद्वानों प्रथ रत्ना म म हरक भाषा की तान-तान पुस्तकों का अनुवाद हिन्दी म किया जाए। इस काम को आरम्भ करने क लिए ५० हजार की पूजा पर्याप्त है, जा समिति की शक्ति म बाहर की बात नही है।

दापहर बाप हम वर्षों से रवाना हुए। नागपुर म कुछ ठहरन पर छ बज एगारमा की आर जान वाला पमिजर मिला। ४ जनवरी का ५ बज अभा रान ही थी, तभी हम इटारमी में पहुच गए। यहाँ से प्राय छ घट बाप कलकत्ता मेल मिलने वाला था। इटारमी म प्रानराण करके हम कलकत्ता मठ म बडे। हमारे इच्छ म गुजरावाला के एक जन मज्जन तथा तीन अग्रज मिस्तरा चल रह थे। जन पाकिस्तान मे भारत चले जाए थे, रमायन के एम० एम-मो० थ और मिट्टी के खात क कारगान म काम करने क लिए विशेष अध्ययन करके साल भर इंग्लैण्ड और अमेरिका म रहकर

लौट रहे थे। वह मिन्नी की परिस्थिति से जस-तुष्ट थे क्याकि वहा माग्यता की कदर नही मिफारिण सब जगह चलती थी। मिशनरिया म एक दम्पती आमाम के खमिया म काम करन जा रहे थे। भापा नहा जानत थे जिमके लिए दार्जिलिंग म रहकर कूछ टिना तयारी करना चाहत थे। दूसरी मिशनरी महिला नस का काम करने के लिए आमाम जा रही थी। उस समय और जब भी हमारे देश म अमेरिकन गुप्तचरा का जाल बिछा हुआ है। मिन्नी डाक्टर नस और शिक्षक के रूप म अपन को अच्छी तरह छिपा मरते है। इसलिए अमेरिकन मिन्नी इना क प्रेम का स-देग देश के कान कोन म फलान जा रहे हैं इसकी जागा नही रखनी चाहिए। पर हम यह भी नही कह सकते कि इस प्रचार के उद्देश्य म जान वाला हरेक अमरिकन मिशनरी अवश्य जान बूझकर गुप्तचरी कर रहा है। जिसको जरा भा उगार विचार का समझती है उस अमरिकन सरकार कभी इस दंग म भेजन के लिए तयार नही हाती। जब उह मालूम हुआ, मैं रुम रह आया हूँ ता उहाने रुम के बारे में बहुत-भी बातें पूछी।

इस वकत फसल बट चुकी थी हरियाली कम दिखलाई पडती थी। ट्रेन के लट हान की गिकायत नही हो सकती थी, जब कि दा जगह समय से पहले पहुँचन के कारण उस रुक जाना पडा। एक जगह ट्रेन म ही एक मुसाफिर मर गया जिसके लिए भी वह कुछ दर बटनी के जास पाम मडी रही। ष्टारमा म राजा महेंद्र प्रताप कही जात हुए जा गए। अदृष्ट परिचय तो मरा बहुत पुराना था। जापान म एक समय मुलाकान हात हान रह गई। उनके राजनीतिक विचारों म सहमत हाना मर लिए बटिन था। वह जानत हैं कि आज मरी बात का कोई मुनन के लिए तयार नही है ता भी अपनी जग म जपना काम किए जा रह है। आजकल सामन्ता के मुलों का जवाब मर उह फिर बर्दी-पटो पहनाकर रग्य करन ना ना काम वह कर रह हैं उस दखवर ता जोर भा ल्या आती है। यह सब हात हुए भी राजा महेंद्र प्रताप आग म तार हुए कुत्न हैं। जाजीवन यह दंग के परत-प्रकता अप्रजा के मामन नही चुक और यदि दंग स्वतंत्र नही हुआ हाता ता जाज

भी हम उन्हें अपनी उमी प्रतिभा पर डट रहकर दुनिया का खान छानन पान । देन की जाजादा क लिए अदम्य विवाम जीर अपनी दृष्टि क अनु सार प्रपन्न, अफ्रेजा क प्रति अपार घृणा आर सारी असंग-मामानी के रहन भी अनव बार दुनिया का परिग्रभा करत प्रथम श्रेणा का घुमक्कट टना—य तान गुण जन बर जीर नतनी माना म उनम हैं जिनक कारण उनक सान खून भा माफ है ।

इलाहाबाद हम माद १० वज रान का पहुँच और वहा म तागा करन माचवजी क घर चल गए ।

प्रयाग—५ जनवरी का अब प्रयाग का काम नतना था । 'बौद्ध सस्कृति का हिन्दुस्ताना एकडमी छापन क लिए तभी तयार थी, जब कि उसम काट टाट की जाती । मैं ता लिखी पस्तक का भी अपवाप्त समझता था, क्यल्लिए एकडमा क न छापन पर मैंन उस प्रकाशक को बिना ठोक विग ही ला जनल प्रेम मे द निया था, अब आ परमानन्द पाहाए उमे ने चुक थ । ला जनल प्रेम उस कम्पोज करन लगा था । यह ५ जनवरी १८५० की बात है । पुस्तक छपकर आज स तीन वष पहाए तैयार हा गई थी उनके ब्याक भी बन चुक हैं, लकिन २६ फरवरी १९६५ तक भा पुस्तक न अघेरी काठरी स बाहर निकल प्रकाश नही दला । पंच-छ दिन प्रयाग म रहता था इतन समय म मैंन 'दात्रिलिङ् परिचय' कमला म लिखवाना शुरू किया । अभी "मधुर स्वप्न" भी लिखकर समाप्त नही हुआ था । मित्रा म मुलाकात हाती रही । डा० कपिल द्विवेदी ने रामगढ़ की प्रभा का और मन कुछ-कुछ लिखन लगा । ६ तारीख का रेडियो क काम करन वाले मित्र स्टेशन म उस्ता कँपाज ला का पान मुनाज के लिए गए । उनका हाथ आर कला जिवना नती लि रला था, उनना वहाँ क चिन्ता ही गुणग्राहक थाता शुरू रह थ । मुझे ता यालूम हाता था, पागन की मण्डली म वहाँ म ना कँमा । उम्तानी गान मुचे बिल्कुल पमद नही आता । इसरा मतलब यह नती कि मैं उस्ता का कदर नही करता, या उनरी जभरन नही समझता । यकीन क तत्वर्णी पारदर्शी हैं । वह मगानकगुण है । अभी

तरह उनका गुणा का उपयोग करना चाहिए लेकिन गाने के लिए मधुर कण्ठ पहनी गत है, जिसमें अधिकांश कोरे हान हैं। आश्चर्य है, वह अपना दाप का ममज्ञ नहीं पात। उन्हें उच्चा-भे उच्चा सम्मान मिलना चाहिए। जीवन की अवश्यवताओं से उन्हें निश्चिन्त रचना राष्ट्र का कर्तव्य है। कन्नड़ की मगात जकादमी का सदस्य बनाकर उन्हें जाजीवन अच्छी मामिक पगन मिलनी चाहिए और मगात के उच्च विद्यालया में अध्यापक बनाकर उनमें लाभ उठाना चाहिए। दिल्ली में नहीं हरेक प्रादेशिक राजधानी और बड़े-बड़े नगरों में मगीत शिक्षणालया का प्रास्ताहन करके इन गुणिया का जगह देनी चाहिए। उनकी वृत्तिया और कीर्ति को चिरस्थायी रखने की कागिनी करनी चाहिए। यह सब ठीक है पर उन्हें गाने या दूमरा को उस सुनने के लिए मजबूर करना हमारे गौरवमय मगीत मला का अपमान करना है उसके प्रति लागा में विरक्ति पदा करनी है। उस दिन की तरह यन्त्रिक कटपथी बाह बाह की झडी लगाए या भूत सिर पर आए की तरह सिर हिलाएँ ता उससे उस्तादी गाने की अप्रियता का ढाँका नहीं जा सकता। सार अलकारा और ध्वनिया को ही जमा करके पद्य रचना करने से वह अच्छी कविता नहीं हो सकती। सिर्फ मसाला मिच और खटाई को ही तयार करके भोजन की थालियो में चुन देना स्वादु भोजन नहीं हो सकता। उसी तरह मगीत के नाना प्रकार के स्वरा मूठनाया गमका को जमा करके उस डूडे गले से भाय भाय निवालेन से वह मगीत नहीं हो जाता। इन बातों का कहकर उस्ताद फैयाज खा के प्रति मैं असम्मान प्रकट नहीं करना चाहता। उनकी जिदगी भर की तपस्या की पूरी कन्नड़ हानी चाहिए।

प्रयाग में मैं दार्जेलिङ परिचय लिखवा रहा था और समयता था कि बीच में मुझे जब अदृष्टस्थित रहना पडेगा, उस समय कम-ग उस टाइप कर लेंगी।

७ जनवरी का कप्तान गिवप्रसाद सिंह आए। लटाई के वक्त में वह अध्यापकी छात्रक पीठ में चले गए थे। इधर वह कश्मीर में नियुक्त थे।

उनका कहना था कि अन्धकार का सामारण जनता भारत के पक्ष में नहीं हो
 पा, किन्तु गिम्नाना में कम कम है। वाकिम्नाना में जिनका इलाका
 जिन तरफ है, वह उनकी जय मना रहे हैं। मुहम आदर्य के भाव मुना
 कि थोनगर से करगिल तक जोप जाता है। वाच में जाजो-ला का माल में
 नौ मशान शिमाच्छादिन छाया मिलता था। इस पर जोप जान की मभावना
 भी पहा नहा की जा मवना था। लकिन लटार्ड अमम्भव का मम्भव बना
 दनी है। हमारी सना को अपन टका का जाजो ला पार कराना जरूरी था,
 नहीं तो पाकिम्नाना का सनिक और सहानुभूति रखन वाला ससवा का बल
 हम सफ्त नहीं हान दन। टैक के चले जान के बाद जोप भला उमम पीछे
 क्या रह सकती थी। अब जाडों का छाटकर वह करगिल की और दौन्ती
 रहनी है। भारतया सनिका न सारी कठिनाइया के रहत बदमार में जा
 सफलता प्राप्त का उमस उह विश्वास हा गया था कि अगर हम राका
 नहीं जाता, तो हम सार बदमार का पाकिम्तानिया से गाली करा
 लिए हान।

८ जनवरी का माचव-दम्पती के साथ कमला का लिए हम माहित्य
 ममद में निरालाजी में मिलन गए। पहा में कुछ कृण थ, नहीं तो वही
 प्रमन्न भूति थी। वाने करत रहे कभी हमन और कभी अपन मन से।
 सिद्धराज जा टहर। वह दाना लाकों में एक ही समय विचरने में ममथ
 थ—कभी जागृत जगत् में और कभी स्वप्न जगत् में। चाय पिलवाए बिना
 क् कम छाट सकत थे और जब हम चने, तो ताग तक पहुँचान भी आए।
 निरालाजी का कौन पाएल कह सकता है? जिस व्यक्ति की जागृत और
 स्वप्न की भीमाएँ टूट गई हैं उसके लिए मयम रखना मुश्किल नहीं अमभव
 है। यह हम अपना जागृत स्वप्न अवस्था का दम्बर जान सकत हैं।
 निरागत्रा इस सीमा के उच्छेद के बाद भी बड़े मयम और गिण्टाचार का
 पालन करत हैं, यह अनाधारण है। कार्द भी अपरिचित सहृदय व्यक्ति
 उनके पास जाकर कभी निराग या अपमानित हाकर नहीं लौटना। सभी
 उनकी मानवता का प्रगता बन्न नहीं सकत। प्रयाग में आन पर निरालाजी

डा० मगदूम को अनुवाद करने का काम सौंपा जाए, एक-चौथाई अनुवाद हा जान पर उस देने के लिए समिति की अगली बैठक बुलाई जाए। प्रस्ताव मजूर हुआ। डा० रघुवीर 'ननु मन्त्र' लगाना चाहते थे लेकिन यहाँ अर्थात् मन्त्र राजा बनने की गुंजाइश नहीं थी।

इस यात्रा में कमला साथ नहीं गई थी। सम्मेलन समिति का काम उस तरह एक ही दिन में खत्म हो गया, हमारे कुछ मायों उन इतनी जल्दी खत्म कर देना नहीं चाहते थे। १३ की रात का ही चलकर अगले दिन सबेरे साढ़े नौ बजे मैं प्रयाग पहुँच गया। मेला का दिन था हम भी दोपहर बाद त्रिवेणी गए। उत्तर प्रदेशीय प्रचार विभाग में गया, पत्रकारों और सम्पूर्णानन्दजी के बड़े-बड़े फोटो के साथ अंग्रेजी में उनका वक्तव्य लगा हुआ है। शायद सरकार समझती है कि सभी मेले वाले लोग अंग्रेजी जानने वाले हैं, उन्हें हिन्दी की आवश्यकता नहीं है। मैंने इच्छानुसार इसका लिए साधुवादा लिया। उन्होंने कहा—क्या करें ऊपर से अंग्रेजी में छाप कर हमारे पास भेजा गया है। आज लाहड़ी थी। पंजाब का यह राष्ट्रीय त्योहार है। रात का आग जलाने पर परिवार और मित्र मण्डली का बैठना, वार्तालाप या गीत में मनोरंजन करने से बड़ी खाना। अंग्रेजी उम्मीद बगल में रहते थे, वह भला लाहड़ी का क्या भूल सकते थे? इसके लिए हम उनका वृत्त होना चाहिए। कितनी ही रात तक हँसने-हँसाने के चुटकुले हम साथ कहते-सुनते रहे।

सम्मेलन की कहावत है 'छिद्रेष्वनर्था बहुलो भवति'। उसके अनुसार टायरटिज्जका छिद्र 'दाय' ता हमारे पास था ही, जिसमें घाव या पुनसोपादा बहुत बुरी चीज है। शरीर छिले-छाले नहीं, इसका बराबर ध्यान रखने भी आखिर चलन फिरते नहीं-नहीं कोई चीज लग ही जाती। मालूम नहीं चमड़ा पतला हो गया या क्या, घट खून भी निकल आता। घाव लगा हुआ था। उम्मीद बगले में एक बंगाली डॉक्टर भी रहते थे। उन्होंने पत्रमिलन का पहला इज्जत दिया, बाकी तीन इज्जत कमला रानी ने दिया। जिसने मैं सहायक और एमे समय में चिकित्सक बनकर

वह मेरा बहुत काम कर सकती है, इस ग्याल न मुझे उह अपन साथ रखा के लिए मजबूर किया। साथ ही मैं यह भी चाहता था कि उनकी प्रतिभा का विकसित हान का मौका मिले जो कलिम्प्यांग में नहीं हो सकता था। डायपेजीजता अब धमने का नाम नहीं लेती थी और दो घंटे से पहले ही जब पंगाब हान लगता, ता चिन्ता बढ जाती। लेकिन अभी नियमपूर्वक इन्सुलिन लेना नहीं शुरू किया था।

२१ तारीख को हिंदी अनुवाद समिति के लिए दिल्ली रवाना हुआ। कमला का भी दिल्ली दिखा देना चाहता था। उसी ट्रेन में श्री धनश्याम सिंह गुप्त भी चल रहे थे। हम वास्टिट्यूशन हाँस में ठहरनेवाले थे लेकिन बच्चा के लिए कुछ मिलीन थे जिन्हें दान के लिए रास्ते में चन्द्रगुप्ताजी के यहाँ चल गए। फिर वही ठहर जाना पडा। इस वकत उनका यहाँ कई महमान थे इसलिए सबाच बहुत ही रहा था।

उसी दिन (२२ जनवरी को) कुतुब दिसान के लिए कमला का ले चला। हवा चल रही थी—कहावत है पूस जाड न माघे जाड जत्र हवा तात्र जाड। माघ मुनी चौध थी हवा चलने के कारण सर्दी बहुत बढ गई थी। सद जगह की रहने वाली कमला का भी दिल्ली ठिठुरन के लिए मजबूर कर रही थी। कुतुब मीनार लाह की लाट और पुराने मदिगा के अवगो के लिए लाया। वहाँ से बौद्ध विहार दिखलाकर कमला का डर पर रखा और ४ बजे मैं अनुवाद समिति को बठक में गया। सविधान का हिंदी अनुवाद तैयार था। समिति के सदस्या न उस पर हस्ताक्षर किया फिर हम उस के कर राजेद्र बाबू से मिलने गए जो २६ जनवरी का गणराज्य घोषित करने के साथ भारत के प्रथम राष्ट्रपति बननवाले थे।

२३ का ताँगा में पुराना किला हुमायूँ का मकबरा निजा मुरीन जादि दिखाने ल गया। पुगना किला गैरगाह और हुमायूँ की राजधानी रहे चुका था। हुमायूँ का मकबरा भुगला का सबसे पुराना मकबरा है जिस अवक न बनया था। यह बहुत ही सुन्दर इमारत है। पास में ही गैरगाह के अमार ईसाई की कब्र है जो सद्दमराम में मौजूद गैरगाह

का कदम बहुत मिलती जुलती है। हाँ उसमें छाटी है। हुमायूँक मक-
 बर में आजकल शरणार्थी भरे हुए थे। ऐतिहासिक इमारत उस समय
 पेगाव पाखाने से गनी बनी हुई थी। लेकिन इस वकन तो लावा की
 तादाद में चले आए शरणार्थियों के सिर के ऊपर छत की आवश्यकता थी।
 सांस्कृतिक रुचि और ऐतिहासिक सम्मान के म्याल करने के लिए समय
 बीता नहीं जा रहा था। उसी में खाना बनाने के कारण छतें काली हो रहा
 थी। मुँों की कोठरियाँ में जिं दे रहकर थोड़ी देर के लिए यदि आराम कर
 लें तो क्या बुरा है? फिर वहाँ से निजामुद्दीन औलिया की समाधि पर
 गए। औलिया में मुँ कुछ लना देना नहीं था, लेकिन वही पाम में फारसी
 के महान कवि खुसरो साए हुए थे। कवि की समाधि पर दा फूल चढ़ाना
 मर लिए आवश्यक था। दिली से लावा आदमी चले गए लेकिन अब भी
 लाल से अधिक मुसलमान मौजूद थे। निजामुद्दीन माहल्ल से भी बहुत से
 लोग पाकिस्तान चले गए। उस समय अभी बहुत बमरो सामानों की स्थिति
 में था। खुसरो-सम्बन्धी फारसी की पुस्तकों की तलाश में था लेकिन दा
 ही एक मिल सनी। लोगो के घरा से ढूँढने देन के लिए दूकानदार ने
 कहा लेकिन मैं इतना टहरनवाला नहीं था? राजघाट में गाधीजी की
 समाधि पर गए। उनके चिन्ता का स्थान है। उससे भी स्मरणीय हाँ गान
 के साथ, वह स्थान है जहाँ पर नशान-टप्यारे ने अज्ञानानु पर गोलियाँ
 चलाई थी। अभी वह भवन प्राइवेट सम्पत्ति है किन्तु जहाँ गाधीजी का
 रक्त गिरा, वह भूमि अधिक समय तक प्राइवेट सम्पत्ति नहीं रहे सकती।
 चिन्ता स्थान उनका स्मरणीय नहीं है जितना वह स्थान जहाँ बापू का
 गरम गरम खून गिरा था, और जहाँ पर उगान अन्तिम साँस ला थी।
 गाधीजी का स्मारक वही बनना चाहिए था, आज इतिहास की वही माँग
 है, लेकिन वह स्थान किसी की निजी सम्पत्ति है और वहाँ राष्ट्रीय स्मारक
 बनाने का अना नहीं म्याल किया जा रहा है।
 राजघाट में हम जामा मस्जिद गए फिर लाल किला भी पहुँच।
 लेकिन वहाँ नीतर जाने के लिए लागा का लम्बा कपू रंग हुआ था, घट

मर वहाँ कौन इतजार कर। मैं तो अग्रेजा के समय ही एक बार लाल किले में गया था उसके बाद क्यू के कारण फिर कभी नहीं जा सका।

मथुरा—तान दिन बाद ही दिल्ली में भारत के गणराज्य का घोषणा हानवाली थी। उस समय के लिए यहाँ बड़ी तयारी हो रही थी। लेकिन हमारा दिल्ली का काम पूरा हो चुका था इस चले पहल जोर भौड़ में देवन के लिए हम तयार नहीं थे। २३ तारीख का १ बजे रात को हम मथुरा पहुँच गए। ताँगवाले से किसी हाटल में ले चलने के लिए कहा वह हम ग्रीन हाटल ले गया। मामूली हमांगुमा जसा के लिए हा यह हाटल खुला था। मथुरा में परिचित भोथ लेकिन उस रात का किसी को तन स्लीप देना पसंद नहीं था।

२४ के सबरे प्रातराग के बाद वृत्तावन गए। कमला ने वहाँ के मंदिरा को देखा, और एक वृष्ण भी सरादा। साधु लाग हरद्वार-कुम्भ की तयारी कर रहे थे जा १ परवरी से घुल हानवाला था। पढा बहुत लिंगान का आग्रह कर रहा था। मैंने कहा—झूठा वृत्तावन क्या लिखला रह हा? कदा वन मथुरा के बीच में जमना पढती थी। यह ता किसी गौडिया साधु का जाल है। गाविलराज और रगजी के मंदिर देखन के बाद हम लौट पडे। रास्ते में बिहला था गीता मंदिर और राजा महेंद्र प्रताप का कीर्ति प्रेम महाविद्यालय भी पढा। श्री प्रमुत्पाल मित्तल का भा बूढ निकाला। उन्होंने अपन पाम आ जान के लिए बहुत आग्रह किया लेकिन एक रात की और बात था इसलिए रहे वही और सायकाल का भाजन मित्तलजी के यहाँ किया। म्यूजियम दूसरा दगनीय स्थान था जिस कमला का लिखाया।

आगरा—जल्दी-जल्दी में निश्चय करन के कारण मित्रा का कार्द पत्र नहीं लिख सका। भोजन करके चम्बई मल पकटा और १ बजे के करीब राजामण्डा स्थान पर उतर गया। पहल पता लगाकर दाकर होटल में चले गए जहाँ ६ स्थान रोज पर अच्छा खासा कमरा मिल गया। सबसे पहल यहाँ के स्थानीय स्थाना का दगना-लिखाना था। ताँगा लेकर हम दाना ताजमन्त गए। हम वन मरम्मत हो रहा थी। ताज का बानावरण मौज्य

मप है अगर उसक इतिहास का न जानें, तब नी उसके देखने म आनंद की कभी नहीं हाती। लौटकर किले का भी देखा। जहाँगीर के महल स वहीं बर चढवर उसके पुत्र क महल है। सम्पूर्ण सगमर की मानी मन्जिद भी देखी। दीवानवास के सामन एक अप्रेज की कन्न गोभा बिगाडन क लिए ही माता रखी गई थी। दापहर बाद था पञ्जिह कमलस डा० मयेद्र और श्री महदजी स भेंट हुई। हम थगल हा दिन चल देना चाहते थ लेकिन आगरे क मित्रा के आग्रह पर २७ जनवरी का रात का गाडी पनटन का निदचय किया।

०६ जनवरी स्वतंत्रता दिवस था। आज १५ गताब्दिया बाद फिर हमार देग म गणराज्य स्वापित हो रहा था। पुरान गणराज्य एक ग जिलों क रू, और अब माग देग गणराज्य म परिवर्तित हा रहा था। यह बात खटकती जकर था कि हमारे देग म तो गणराज्य है, और हमारा देग ऐसे राज्य-समूहा म हो जिसकी मुखिया राजा रानी हा। सवेरे मुरारीगल खत्री बालिका काउज म डा० किरणकुमारी गुप्ता के आग्रह पर झण्डा फहराना और एक छाटा सा भाषण देना पडा। अभी वह एफ० ए० तक था, लेकिन कुछ ही समय बाद द्विपी कालेज हानवाला था। डा० किरणकुमारी की काय-नस्परता क बारे म यह कहना ही काफी हागा कि कई महिलाआ न विवाह प्रथा पर पुस्तक लिखने का चीन्हा उठाया लेकिन उस अच्छी तरह पूरा कर्के प्रकाशित करन का श्रेय किरणजी का हा है। छात्राआ की सभ्या माइ मान भी बनला रहा थी कि कथाआ की गिभा पर अब किनना अधिक ध्यान दिया जा रहा है। मध्याह्न भाजन कमलजी के यहाँ हुआ फिर बार म फतहपुर मौकरी क गिग चल लिए। मौकरी का पहले भी नेत्र चुना था, और उमके बारे म लिख नी चुना है। अब की ता विनायकर मंग का गिगान क लिए र गया था। दीवानवास, यामवाई महल देगे। जहाँ बगम का फूल की गाणडी क नमून पर बना छाटा सा मुन्दर कमरा गनीय था। बुल् दरवाजेरानी मन्जिद क साथ लगी बावही म स्नान करने की बान मुनकर हमें मनेह प्रकट करत देग एक बूटे न उसमें कूदकर

दिगलया। सीकरी गाँव की मडक पर वहाँ के डाक्टर ने लाल पत्थर का दरवाजा बना १९४७ में अपनी मूर्ति स्थापित करवा दी। निम्नतान पुरुष की इस प्रकार अपने अमर होने की लालसा निरन्तर नहीं है। सीकरी का बाजार आज के लिए खूब मजा हुआ था। जहूम भी घूमघाम के निकला। माह ५ बजे हम आगरा की तयारा देखने के लिए लौट आए। लोग में कोई जाग नहीं मालूम होता था। जाग जाए कब? अग्रेजा को धीरे में खिसना कर उही के आसन पर काल साहब बैठ गए उनकी राज रोज की ज्याम्य ताजा और भ्रष्टाचार में लागा की घणा हो जाती जा रही थी। हरक चीज दुःख और महगी और मभा जगह चारबाजारी। जब चौबीस घट इही वाना का देख रहे हैं, तो जन मन में उरसाह कैसे आता? बहुत कम जगहा पर रात का दीपमाला ली गई। बाजे जरूर बजते रहे। दूकान खुल गयी।

२७ जनवरी का वानपुर के लिए खाना होता था इसलिए सबके होटल छोड़कर कमलाजी के यहाँ सामान रख लिया फिर सिक्तरा में जन्म की कत्र देखने गये। १२३ म स २३ एकठ में इमारत है बाका बाग और घास का मैदान है। यहाँ हिरन भी पाए गये हैं जो बन्दर अधिन हो गए हैं। पालन के लिए पाए लिये लेकिन उनके खाने का खयाल नहीं किया गया। चारा पानी बिना कभी-कभी काइ मरकर अपने साथिया को आराम देने की कागिग करता। खुर भी बहुत थ। जबकि के इस मकबर में आन वाल मभा मुगल बागगाहा के लिए जगह रगो गई थी किंतु हुमायू मरा दिल्ली में, जहाँगीर लाहौर में गाहजहाँ आगरा में मरकर ताजमहल में दफन हुआ और गजब खुल्लाबाद में सा रहा है। इस तरह दूमरे भी जयत्र मरकर मित्ररा में नहीं आ सक। गाहजहाँ ने ताजमहल के चारा त्रिगाल मोनारा की प्रेरणा मालूम होता है यहीं स पाई और जहाँगा न इस त्रिगा इमारत का बनाकर इन त्रिपय में अपने बट का पय प्रगान किया। आरम्भ जबकि न किया था लेकिन अपना गद्दी पर बैठने के ६ वर्ष बाद—१६११ ई० में—जहाँगीर ने इस पूरा किया। लौटने वक्त पुरानी पाठगागा नामनेर के जायममाज में गये। हमारा मुगाफिर

विद्यालय एक टूटा फूटी इमारत में था लेकिन अब वहाँ आयममाज का नया साफ-सुथरा मंदिर खड़ा।

आगरा काण्डेज की स्थापना में सबसे बड़ा हाथ गंगाधर गास्त्री का था। लेकिन, उस समय अंग्रेजों का ही नाम रखा जा सकता था। यह काण्डेज बहुत पुराना है, और बिगाल हाल मेस्टन हाल का नाम में मंगलूर है जिस अब गंगाधर गास्त्री भवन कहा जाता है। उसी में तीन घंटे क्वि-मम्भान हुआ जिसका समापति मुझे बताया गया। मध्याह्ननांतर जलपान डा० मलयद्र के यहाँ हुआ फिर आगरा छावनी में गाड़ी पकड़ी। यहाँ से एक डेरा बानपुर के लिए जाता था इसलिए हमें रास्ते में ट्रेन बदलने की तैयारी नहीं पड़ी।

बानपुर—२८ का ६ बजे मकर बानपुर पहुँचकर पहले स्नान ब्यू हाटल में सामान रखा, और एक दिन का दम रपमा भी दे दिया। फिर घूमने निकल। श्री सतीशचन्द्र चौगल से मिल। वृत् भंग हाटल में कैम ठहरने देते सामान उठवाया गया। स्नान भाजन करन के बाद फिर कैलाश मंदिर के हान में श्री कैलाशचन्द्र कपूर के यहाँ पहुँचे। डा० कृष्ण कुमार गर्मा से मिलकर अपनी प्रशंसा की। वह गुरुकुल के आयुर्वेदिक स्नानक हान के वाज एलापयी के डाक्टर बन। तेरह बजे से चित्रिमा विद्यालय की परिभाषाओं के निमाण में जुट गए थे। उस समय तो लोग अत्यन्त में सतर्क समझते हमें। उस समय उनका मान्य था, हमारी यात्रा में उनमें बन्दर हय विन्दा हाता ? परिष्क भडिना (छोपड़ि काग) और पया-लौजी (निशान) के काग का उन के बाज में मिले वता। उनमें बहुत मद्र मित्रता, लेकिन आता उन काम का ही छात्र दना पडा।

प्रयाग—२९ जनवरी का। मकरे का जलपान श्री पुनपोतम कपूर के यहाँ मनोराम की बगिया में हुआ। वहाँ बानपुर के और कितने ही माहि त्विन मित्र आय। निशिन मित्रा और मन्दिआ से मैं विवाह प्रथा के गाना और रवाजा को लिखित करने के बारे में कहने में बाज नहीं आ सकता था। कपूरजी की पत्नी विमलाजी में भी वही काग की घमपत्ता

नया अनुज-वधू का ना प्रेरणा दा। वीगन्जो की पत्नी क ही पितकुल न आगर का खत्री वालिका कालज बनवाया था। गाम का ५ बजकर १० मिनट पर डाक पक्की और ८ बजे शलाहाबाद पहुँचकर माववजा के पाम चले गये। गर्मी दा महीन बाप जान वागी ही थी इसलिए उसका वार म साचना जम्मा था। कमला की ना राय का देखना था। उनका आग्रह था स्थान एसा हा जहाँ पर बिचली जम्मा हानी चाहिए। किसी स्थान को लना और उसम एस जाग्मी का मलाह न रना जिस ही अनम उसे संभालना है ठीक नहीं हाता। कमला का आग्रह मैं पूरी तरह ने मान नहा सका, गाम मानन पर कई तरदुता से बच जाना।

सम्मलन म जान पर ५० बलभद्र मिश्र स मुतावान हुई। दिल्ली म कार्यालय बनान जौर वहा भूमि हागिल करन की जम्मत सबस अधिन प्रधान मना समझन ५। काम म दीघ-मूत्रता उह छू नहा गई थी लकिन उसकी पूर्ति टान्तजा करन क लिए तयार थे। वहाँ गहर क भीतर बडे अच्छ मौक पर जमान मिल रही थी, कितन ही घर जौर किराय पर लगी दूकानें था। अपन पिता क दम स्मारक क लिए बट कुछ पसा दन क लिए भी तयार थे। मिफ लन का स्वीकृति देनी थी लकिन टान्तजी अन्त समय तक उसका वार म बाद निश्चय नहीं कर पाय। मिश्रजा म पता लगा आनन्दजा न लम्बीफा लिम्बर भज दिया है, राट्टभापा प्रचार ममिति स वह अग्य हाता चाहत हैं। काग का छगार्द म जसा डिलार्द हा रही थी वह ता मर लिए अमल्य थी। मैं विद्वाना का बचन दकर उनका परिश्रम स जमा किय हुए गलकाना का तयार करना और वह यही खटाइ म पडे थे।

जाग ममान मालूम हाता था। फरवरी क पहल ही तिन सर्गों का पता नहीं था। डायबराज वसा हा चल रहा था पर न बिगप टुबलना थी और न बजन ही कम हुना था। ३ फरवरी तन 'गार्जिलिंग परिचय' लिम्बवा क समाप्त क र लिया। अब उन दाहरान लगा था। 'बिनाम' म लग लिपन क लिए बना गया था। मैंन अपन लख म निम्न बानें परिभाषा क सम्बन्ध म बनलाइ—(१) बहुजन क लिए सुगम और भविष्य क विद्या

धिया की अपेजी का याग्यता की कमी क कारण हिंदा के माध्यम म विधान का पढाना आवश्यक है । आज के अध्यापका को हटान का मवाल नहीं है सत्राति-वाल म परिभाषाएँ दाना चल सकनी हैं । विदेगा भाषाआ के बापनाट करन का सबाल नहीं है क्योंकि विधान क विद्यार्थी के लिए भाषा कूपमडूक होना अहितकर है । (२) परिभाषा निर्माण म हम न रघुवीर का रास्ता लेत सस्कृत क अनात और अप्रचलित गब्दों से उसका निर्माण करत हागा, और न जवाहरलालजी क विचार-अनुमार आम फहम गब्दा स हम काम चला सकेंगे क्याकि परिभाषाएँ सारे भारत नहीं, बहुतर भारत की नी एक हान की दृष्टि से बनानी हैं । सभी भाषाआ क प्रतिनिधिया का इसके लिए समय-समय पर सम्मलन या समिति बुलानी चाहिए । परिभाषाएँ सस्कृत म बनें किंतु सरल और सुपरिचित गब्दा से हो । सादस की जिन परिभाषाआ क साथ बनानिका के नाम लगे हुए हैं, उन्हें उमा तरह सुरक्षित रखना चाहिए इत्यादि ।

कल्पिपाग की हमार गृह की स्वामिनी श्रीमती ज्यात्सना चटर्जी यही अपन भाई के पाग आइ हुई थी । उनके पाग चाय पीन गय । ज्यात्सनाजा महानपस्विनी हैं । क्यों म उनक पति का दिमाग विकृत हा गया है । पागल क साथ जीवन बिताना श्रामान काम नहीं है लेकिन उन्हूनि अपना सारा जीवन उही क साथ बिता दिया ।

कपिलजी न रामगढ़ क मकान को और भी कुंठ वाने बनलाट—दा वडे-दो छोटे कमर है एन अलग नहान काटुक है रमोई का अलग घर है । मालिक सफिक टैंक का पाखाना लगान क लिए तैयार है । पानी का नल भी है पर बिजली नहीं है । मिट्टी का तन उस समय आमाना स नह मिलता था । यद्यपि बिना रिजनी की जगह पर कमला की राय क अनुमान ममान नहीं लेना चाहिएथा पर यह ता किराय का मकान था, इसलिये मैंन समझा कि इस ल लेन म काइ हज नहीं । पर एक बार वहाँ जाक निश्चय करना हागा यह ता तय हा कर लिया । गाम का प्रयाग के बगालं वधुआ का सभ्या विचित्रा म गय बहुत बड़ी मकश म पुष्प और महि

लाएँ आई थी। सगीत का भी जायाजन था। हमारे पुरखा न ता न जान कब कह दिया था—“छाजा बाजा केस। यहा बगाला टस”। और अब ता दा गताद्विया क विश्व के सम्पक क कारण बगाली ममाज सस्वृति और मुश्चि म हमारे देग का जगुवा है। मुगे भी वहाँ कुठ बालना पडा। उम दिन हुमायू फिल्म दखने गय। फिल्म दखन पर कमला की आँखें जन्र दुवा करती पर देखे बिना रह भी नहीं सकती। यद्यपि इमका यह मतलब नहा कि कमला राज राज फिल्म टपन जाती। यह फिल्म ता माल भर बाद्र दखन का मिगी थी। कलिम्पाग से डड कबडल टकर चला आना था, इमलिए कमला का कलिम्पाग ल जान की जरूरत नहा थी।

कलकत्ता—६ फरवरी का ८ बजे रात का दिल्ली मेल पकड कलकत्ता रवाना हा गया। मुगलसराय म गया की गार्डन से हमारी ट्रेन चली। धननाद म सवेरा हो गया। वह पीन ११ बजे हावरा पहुँची। मणिहूपजी जरा दर म पहुँचे जब मि में टकमी लक रवाना हा धुना था। भीड क मारे मडक एकतरफा चलनी थी इमलिए बटून चक्कर लगाना पटा। नाखुटा मस्जिद क पाम टैकमी का छोड देना पडा और कुली म मामान उठनाकर रामजीनाम जटिया लेन क मवान म पहुँचा। कलकत्ता म थानी बटून खरीद फराम्न करना थी। मधुर स्वप्न का कितना ही प्रूप लेवन थी परमानदजी मिग। उसक बाद क आज की नीति जीर 'दाजिलिग परिचय म हाय लगान वाल थे। राजकमल न आज का राजनीति आधा ही छापा थी उनक महत्वपूण अग परिगिष्ट का टाड दिया था जीर जाधुनिक पुस्तक भवन म उम अब परमानदजी निवाग रह थ। ८ फरवरी क लिए बागडानग का विमान का टिकट मिल गया। हिमाय का बपरवाग प्रवट करन पर मैंन मणिहूपजी म बग— भाई, किमी का पमा अपन ऊपर रह जाना जच्छा नहीं। यति पुनजम हाना ता क भैमा बनक उमम उच्छेण हान की गुजाग रहती। निवाणगामा क म ऋण उताग्न क लिए आणगा।

८ तारीख की शाम का मारवाठी छात्रा क मामन गगराय क द्वार म

कुठ बाग—हाल से दून श्रान्त थे। जाजकल खूमट दिमागी हिंदुआ व नता वरपात्री जी जीर अकरावाय बलबत्ता मे पडे हुए थे। हिंदू बागून का लरर घमयुद्ध छड रता था। इसी का विरान करन क लिए श्री भवर-मल मित्री न वस भाषण का आयोजन किया था।

कलिम्पाग—६ परवरी का साडे ८ बजे दमदम के अडड स हमारा विमान उडा। विमान म ही मर नाम के वह तरुण भी अकस्मात मिल गए जिनके बारे म कितनी हां बार मैं सुन चुका था। मरा नाम काइ रगे यह न अनुचित है न अनहानी बात। जाखिर मुझम भी पहले इम नाम क बहुत म गग हा चुक हैं। पर गगा म भ्रम पदा करना दूमरी बात है। मैं उनके लेखा का पत्र धुका था उसम तरुण की प्रतिभा और विद्या का पना लगता था। मैंन बिना किसी भूमिका के सक्षेप म उनमे कहा—जापन पाम विद्या और प्रतिभा, साहम और तरणाई है जिसस किसी महत्वा वाक्षा का भी पूरा हाना आसान है जल्दी का रास्ता न पकडें। अपन गुणा म म भी २/ प्रतिगत कम करके प्रनागित करन का इच्छा रखें। मरा दमम कुछ नही बिगडता था, यदि वह मरा तिज्वन की मानाआ ने पडन क बल पर पूछन पर हकार नर दें माना उहान ही य यात्रायें की हैं। पछि नेपाल जान पर मालूम हुआ कि लागान वहाँ राहुलजी क स्थागत म चाय-पाट्री दी। मुझे दम हुए लाग भी चहर और आयु क म का देखकर कुछ शक्ति जम्र हुए, लकिन नमारे तरुण न चहर पर बिना जरा भा बल लाय अपन पाल का जग किया।

पोने १० बजे विमान वागडागरा म उतरा। दा जयेंज दम्पता कलिम्पाग जा रह थे। इसलिए यही नक्की मिल गई और २ बजे पावना पहुच गय। भट्ट और मनगुप्त स्वस्थ और प्रमान थे। भट्ट की कुछ इजजान लन पडे थे। मर्गे अत्र कम थी। कलिम्पाग क छाडने मे पहले इम अचल की कुछ जगहा का देख-सुन लेना था। हमार पाम १३ दिन के हम २२ परधरा का यही म प्रस्थान करनवाल थे।

अपनी पुम्पन। जीर मामान का फिर पक कराने म लगना पया।

रमान्या अच्छा मिला था चाहते थे कि चले तो उस साथ ले चलें। श्री मनगुप्त ने सूचित किया यह पुलिस का सब बाता का पना दन जाया करता था। आगिर तीन स्टार क मदिग्य व्यक्ति हाने मे अग्रजा की तरह भार ताया की सरकार भा मरे पीछे पडी हुई थी। डाक का मँसर करने मरे जान जान या मर पाम जानवाग की दखभाल करने की जिम्मेवारी खुफिया पुलिस का मिली थी। पूर-ताउ क लिए मरे पाम जान का हिम्मत नही हाना कर्मिण उहान रमान्ये को कुछ देकर अपना काम बनाया। यही नहा जोर जगहा पर भी रमा किया जाना था। इसम मुझे गन्तित हान की जरूरत नही थी क्याकि मरे जा भी विचार या काय मे वह प्रकट थ।

फरवरा क मध्य म हवा जय-नव तज हानी जिसम मर्ते क जाना। यहि इस मर्ते न मनगुप्त जी स अपना घम छुडवाया और चम्मच इस्तमाल करने क लिए मजबूर किया ता उह कस गाय किया जा सकता था ? रात का वह गरम पानी की बातल लेकर मान थे लकिन अभी भी पूरा तौर स गरम सूट का व्यवहार नही करत थे। मैंन कहा अभी पूरा मर्ते स पाला नही पडा है नही ता भूट-बूट बिना कह ही पहनन ग्याग। वह गरम कपडा मिलवाकर लाय थे क्विन घाती छाडन म लज्जा अनुभव करन थे। इलाहाबाद विन्विद्यालय म जब रसा क अध्यापक हा गय तय उह अपन सहकारिया की सेवा गनी घाती का पट म बदलन म आना काना नही हुइ।

बगल क बगल म एन अमरिवन मडिन मिदनी डा० डाग आ गय थे। उर ११० मय भागिर पर पावता म कनी अच्छा एव सुंदर बगल मिल गया था। डा० डाग और उनकी पनी सप्तम दिन एडवेंटिस्ट मिगन का आर स पश्चिमी चीन म तिगत का मामा क पाम साला म काम कर रत थे। कम्युनिस्टा र गामन मभारतन पर बना रहना उनक लिए सम्भव नहा हुआ क्विन माय ही उनका मिगन चाहता था कि वह तिगत की मामा क पाम रहें इगलिए वह यही चले आय थे। उनकी पत्ना कनी मन्नता था अन हाय म घर का साज सुधरा रगना भानन बनाना

खिलाना और बच्चा का सभालना सभी काम करती थी। हम १३ का उनका यही भाजन का किया गए। हम अपना नाम हुआ कि एम पढाओ का चाहे ही जिना तक मत्स्य गृहा। पीछे डा० डांग मसूरी म भा एन बार मिल थे, तब उनको नियुक्ति बम्बई प्रदंग म कही पर हुई थी। उसी दिन प्रयाग मे कमला का पत्र आया। उन्होंने लिखा कि मैं पढ रही हूँ किन्तु दबन गई मिर दद लकर लौगे। हमार बगल म बूबी (कुत्त) न अपना-आपका स्वयं जाकर अपिन कर दिया था, वह बडे जार गार से चौकीदारी करता था। दूसर आत्मी का वह हात म आना पमत्त नहीं करता था और एक स अधिक आदमिया का बाग भी था। आन भी उसका तीन किमी के पैर पर पडा।

बम्बियाग म ग्राहम हाम्स एक बला ही मुन्दर शिक्षणालय है। १६०० ई० म पादरी ग्राहम न मुख्यत एग्ला इंडियन बच्चा के लिए छात्रावास महित इस विद्यालय का खाला था। हिन्दुस्तान की हुवा लगन स एग्ला इंडियन बच्चे अपने हाथ काम करन का नफरत का निगाह स दखत हैं, उसी तरह जम हिन्दुस्तानी मध्य और उच्च बग क लडके। यहाँ पाच स पन्द्रह वय तक के लडक-लडकिया रहत थे। स्थान हजार के लिए था पर उनकी सख्या सात सौ म ऊपर कभी नहीं पहुची। द्वितीय विश्व-युद्ध के समय चीजा का दाम बड गया इसलिए सख्या घटानी पडी। सख्या पर कर्जा हा गया था, जिस उतारन क लिए भारत सरकार ने एक लाख रुपया दिया। उस समय ४८० लडक-लडकिया पढ रह थे। हड मास्टर मिस्टर गमड ने हम ले जाकर अच्छा तरह हरक काम को सिखलाया। सुप्रिन्टेण्ट डवनगी बाबा न चच और छात्रावास दिखलाये। हाम्स म ६०० एरड म अधिक भूमि है। एक छाटा-सा मदान है, जिसम छाटा हवाई जहाज एक मत्तये उनरा था। अब भारतीय लडक भी लिय जात हैं। अंग्रेजी माध्यम है लेकिन द्वितीय भाषा क तौर पर बगला और हिंदी भा पढाई जानी हैं।

रास्न म पड्डा छाडू का उन-भोगाम दया। यहाँ उन का निम्न, मध्यम, उतम श्रेणिया म वर्गीकरण हाता है फिर बाहर भेजन क लिए

गाठ बाध दा जाता है। हिन्दू युनिवर्सिटी के लिए मगाय गए तजूर की १८ गाठें आ गई थीं। मणिहंपजी के अनुज रत्न ज्योति जी ने अपने गाणम में ले जाकर उन्हें दिखाया। मैं गाठ का बिना खाले ही बनारस भेज दिया। रत्नज्योति अभी बिबुध तर्ण थे। उस वक्त कौन आना करता था कि वह इतनी जल्दा अपने स्वजना को राते छाट जायेंगे। पर मृत्यु के लिए तर्ण क्या और बढ़ क्या।

मगपू—भारत के कुनन की खच को पूरा करने के लिए सिनकाना का बगीचा और कारखाना मगपू में है। उस देसन के लिए १६ फरवरी को सवा ६ बजे मनगुप्त और रत्नज्योति के साथ चला। भट्टजी के लिए चटना उभरता अच्छा रहा था इसलिए वह नहीं गए। दम भील जान पर निम्न पुत्र और आठ भील जाने पर रम्बी पुल पार हुए जहाँ से एक दूसरे रास्ते छ मोल जान पर मगपू पड़ा। माटर घना तक जाती है यत्र छ मोल की गल भी अच्छी है। प्राय एक मोल जान पर सिनकाना के बाग आरंभ हो जाते हैं। सिनकोना वृक्षपाद काम के मुभीन के लिए जटिक बढ़ने से राना जाता है क्योंकि वह सभी पारस में कम ही लोख पड़। जाने के अन्त में उन वृक्ष से पत्ते लाने हा रहे थे। पत्ता चखन में कम कच्चा था पूरी फटाहट छाल में हाता है सिनकाना की छात्र में ही कुनन बनाई जाती है। पहले बाग के सचालक डा० सेन के बगल पर गए वह उस समय कलकत्ता गये हुए थे। कुनन विशपन स० मा० बनर्जी के पास गए। उन्होंने फक्द्रा में ल जाकर कुनना बनाना की प्रक्रिया दिखाई। वक्ष की छाल घट भाग परिमाण में एक जगह सूख रही थी। वह मगपू में डालकर पीसी कम जाती है फिर पहली छात्राई कम हाता है फिर चूना और गन्निन तल कसे मिलाया जाता है फिर साझा वाटराव मिला कर टुबारा उनाई कस हाती है और अन्त में स्पटिफाणु कम बनते हैं और फिर चूण करके या गाली बनाकर कम त्रिना में बरकी जाती है सभी घातें हमन लखी। एक प्रक्रिया से गुजर कर दूसरी जगह जान में कवयर (वाहक) स्नमात् किया जाता है। फक्द्रा गाम बहून पुगनी हान में उनना आवपक और स्वच्छ नहीं

थी। स्वच्छता ता इतना भी नहीं थी जितना डायरेक्टर व बगल में। हमारे सनगुप्त जी रमायन व ही विद्यार्थी हैं इसलिए वह हमसे अधिक बारीकिया की जान सकते थे। उनकी टिप्पणी थी—कितन ही ब्राडप्राइवट (गौणउपजा) का फेंक दिया जाता है जिनका इस्तेमाल ही सकता है। कुनन की बृष्ट चार्जें सम्म न बनाई जा सकता है, जिन्हें यहाँ नहीं बनाया जाता। श्री अनर्जी न बड प्रेम से सभी चीजें दिखलाए। गालीनता और सह्यता ता बगानी का सहज गुण है उमी तरह स जसा अतिथि मत्कार पजावी का। माम में वह बगानी भा हम लिखगया गया जिनमें बमींद्र खींद्र १९३८, १९३९ और १९४० में आकर रर थ। उम खींद्र स्मारक का रूप दिया जानेवाला है यह रूप का समाचार हमसे मुता। मध्याह्न भोजन मंत्री समाप्त किया। रात्म में एर जगह टायर पक्कर हा गया इसलिए कुछ दर से पीने व बज घर लौट।

१३ फरवरी का पुम्नकेँ बकमा में बहुत कुछ बद की जा चुकी थी। दोपहर बाद हम श्रीमता त्रिप्प व यहाँ गए। रविवार को जान के लिए कह रगा था, लेकिन दो दिन पहले हा चने गये। वहाँ से विद्यालय डा० रायखि के यहाँ पहुँचे। आज तिबनी नव बय था। राना दोजे व भाज में वह गये हुए थे। वह आण, 'प्रमाणवातिक' के अग्रज्ञ अनुवाक का काफी काम हुआ।

दिमाग में फिर श्रुत न एव चक्कर मारा— पूण गान्ति या थापातन पूण गान्ति क्या है? वह कम प्राप्त जाना है? 'प्रथम का उत्तर है—हृदय व किसी जान में ठीके हवा का क्षारा या टीम न लग। दूसरे के लिए श्रुतना हो कहता हूँ कि हृदय का आर क्षारा पहुँचाने का छिद्रा का अधिक-से अधिक अभाव हा, अर्थात् कयकितन सम्बन्ध कम-से-कम हा आवागाम्य भी कम हा। सावजनिक सम्बन्ध ता रगना हा पडता है। वहाँ परा-मा हवा-सा भी पाया अप्रिय जाना है, जन्मस्तर में उदामी छा जाता है यदि टीम न भा उठ पाए।

१८ फरवरी का हिल्यू हॉटल में सांस्कृतिक प्रतिष्ठान के सदस्यों का

सामने “तिब्बत में भारतीय संस्कृति पर भाषण दिया। बीस के करीब और सभी शिक्षित श्रामिका—नेपाली, बंगाली हिंदी भाषी थे।

गंतक — १६ तारीख को साडे ८ बजे सेनगुप्त जीर रत्नज्याति के साथ हम मांटर से गन्ताक के लिए रवाना हुए। मडक नीचे तिस्ता और तिस्ता से रागफू और आग तक बहुत अच्छी रही। पर जहाँ से गन्ताक की सड़क दाहिनी ओर मुड़ी, वही से खराब मिली। रागफू के पुल पर पुलिस न अप्रेज का नाम लिखना चाहा रत्न हमारी गाडी में कोई अप्रेज नहीं था। मौसिम चीने महीना हा गए लेकिन रागफू में अब भी नारगी की भरमार थी। गायद भारत में दूसरी जगहा के लोग का नहीं मालूम है कि सिलहट (आसाम) और नागपुर से यहा की नारगी कम अच्छी नहीं होती। नेपाल की तो सबश्रेष्ठ होती है। योव के यापारी उह यहाँ खरीदते हैं। कलिम्पोग में पाँच रुपए में मिलन वाला टोकरा यहाँ तीन रुपया सक्डा मिल रहा था। सिगतम पुल पार कर बाजार के पास से तिस्ता उपत्यका छाडनी पडी। एक गाखा नदी के किनारे दूसरी आर चले। मरतम गाँव के डाक-बगले को छाडत रास्त में एक जीप पडी देखकर रुक गए। मालूम हुआ सिक्कम के दीवान मिस्टर लाल रास्त में पडे एक गरीब तिब्बती को चलन में असमथ देखकर उससे हाल चाल पूछ रहे थे। फिर लारी पर उस चढा-कर वह अपनी जीप में आए जीर रास्ता राक देन के लिए हमसे क्षमा माँगी। लाल महागाय इस जगह के अनुरूप थे उनकी नम्रता से हम बहुत प्रभावित हुए। उनकी पोशाक भी बडी सीधी-सानी और धुस्त थी। पोशाक में कमर तक फौजी गरम सडूका या और सीट पर फौजी थोला पडा हुआ था। मैंने कहा—यह है आत्मी।

गन्ताक से आठ मील पहले हा पुल के पास हम ठहर गए। यही बठकर साथ गया भाजन किया। फिर चत्तर डेठ बजे के करीब गन्ताक पहुँचे। पुल में आगे चढ़ाई-ही-चढ़ाई थी।

आज हाट थी इसलिए यनी भीड थी। हड मांटर ब्रजनद बावू छट्टा पर थे इसलिए उनसे मुलाकात नहीं हुई। पार्लिटिवल अप्पर जय यहाँ

अप्रेज हुआ करते थे, तब उनके पास अनुमति-पत्र के लिए मुझ कई बार जाना पडा था। माचा अबकी भी हो लूँ। वहाँ कोई मिस्टर दयाल आई० सी० एस० इस पद पर बिगजमान थे। बिना समय लिए हम गए थे। इस लिए एटिकेट के खिलाफ वह हमने मित्रने के लिए कैसे तयार हा सकते थे। उनक यहा आने की क्या योग्यता थी? न तिब्बती भाषा और न तिब्बती बात विचार स उह काइ वाकफियत थी। मरे जमे तिब्बत म अनक बार गए हुए जानकार आदमा स मिलन से इकार करक उहोन यह भी बनग दिया कि उनकी और जानने की चाई इच्छा भी नही है। हा, उनम यह गुण जरूर था कि उनकी पत्नी टनिस स्टार थी, उनकी माम श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित की ननद थी और मिस्टर दयाल आई० सी० एस० थे। उहाने बचपन युरोपियन स्कूल म त्रितामा फिर विलासत गए, आई० सी० एस० हुए और आज वह सिफ चमडे स हा भारतीय थे। मही हमने दूसरे आई० सी० एस० मिस्टर लाल का रास्त म दखा था। उहाने हमको नया दिया और इहान हमम क्या लिया, पर जादमी आत्मी की अलग पहचान हाती है। मिस्टर दयाल अंत में थोडी दर क लिए आए लकिन मालूम हुआ, वह गला दवान क तौर पर ही हैं। हमार दाना हाथ जोडन का उत्तर उहाने एक हाथ के सलाम स दिया। बात म उहाने अप्रेजी का पक्ष समयत सस्त्रुति का विरोध उदू क लिए दद प्रकट किया। मालूम हुआ उनने पूवज आगरे के थे लेकिन उनका बचपन नैनीताल के युरोपियन स्कूल मे गुजरा। वह नहरू क छोटे सस्वरण मागूम हुए। सेनगुप्तजी भी साथ थे। उहाने माफ कहा—नहरू क सम्बाध क कारण ही यह यहाँ बैठाव गए है। जिस स्थान पर विलियमसन गाल्ड जस राजनीति के पुराईट, लकिन साथ ही सस्त्रुति क जिनामु बँटते थे, वहाँ यह बाल साहब बँठे हुए थे, जो तिब्बत के एन समय के ट्रेड एजेंट कप्तान हैली के पासग भी नही थे। पुलिंग ने पुस्तक पर लिखन क लिए कहा, तो मैंने लिख लिया "अन्ध तम" (घार अघेर नगरी)।

उसा दिन ७ बजे गाम को हम कलिम्पांग लौट आए।

२० तारीख को १० बजे डा० रोयलिक आए। 'प्रमाणवातिक' के प्रथम परिच्छेद का अनुवाद समाप्त हो गया इससे हम खुशो हुई लेकिन तीन परिच्छेद और रह गए थे। दापहर बाद पुत्र सहित श्रीमती त्रिस्प भी आई। यह जपेड आइरिश महिला बड़ी ही जिंदादिल थी। बितनी ही घटनाएँ सुनाते हम मुग्ध कर देती थी। मनुष्य भी वनस्पतियों की भाँति जरा मा स्नह पाते ही जड़ फलाने लगता है। पिछले दस महीना में यहाँ फली जड़ें अब हम उठते दस अपनी जोर तान रही थी। सयोग और वियोग दोनों एक ही वस्तु के दो पक्ष हैं। आह यह मानव जगत ? पाँच लाख वर्ष से पहले जिसका कहीं पता नहीं लगता, और गायद पाँच लाख वर्ष बाद भी वही बात है। यदि सभालकर उस नष्ट ले जाया जा सके। लेकिन आतावते च यन्मन्ति वतमानपि तत्तथा' (आन्ति अन्न म जो नहा, वह वतमान म भी वैसा ही)—यह नहीं कहा जा सकता। वस्तुएँ अचिरस्थायी हैं इसलिए उन्हें निमूल्य नहीं कहा जा सकता। यदि एक बार वरुण से सदा के लिए बुभुक्षा गान्त नहीं हा जाती तो उसका अब यह नहीं रि भाजन का मूल्य ही नहीं। वस्तुओं का मूल्य उनकी चलायमानता में ढकना हागा। विगता व त्वयात् स निस्तारता स्वीकार करना एकागी विचार है क्या रि आन वाला पीढ़ियाँ भी ता हैं। क्या आधा आयु व बाद मृत्यु की समीपता स्पष्ट माटूम हान लगती है ? पचाम से पहल भी ता मरने वाले होत हैं। हाँ उनकी अधिव जीवन की सम्भावना है जा पके जामा व लिए सम्भव नहीं।

२० की शाम को श्री व० दगराज के यहाँ चायपान था। वह पजाबी, और यहाँ के सपर ठरेणार हैं। उनकी पत्नी हमारे एम० डी० जा० श्री मोना चन्द प्रधान की बहिन है, जयार्द सिद्धू घर की हैं। दगराज भी पहल हिंदू थे और जय इमाइ। सिद्धू ईसाई दाना धर्मों का सम्मिलन इन घर में हा रहा था।

२१ तारीख अन्तिम दिन था। यान् राधामाहन वनाएँ आए। फिर श्री मानाच प्रधान। दूसर भी मित्र मित्रवर गए। हमारे १ वनम तथा ८

ट्रक का वजन साठे १७ मन था। तीन मन स ऊपर हम अपन साथ ले जाने वाले थे। इतने सामान को लेकर अभी हम अनिश्चित स्थान ही म जा रहे थे। कमला की नाक से खून आया था, प्रयाग म इजेक्शन और दवा हा रही थी। २२ का लारी पर सामान लदवाया। साठे ११ बजे टक्सी जाइ, जिस पर हम तीना जनें चढर चल। अब सिलीगाडी म रेल पहुच गई थी, और उसके स्टेशन का सिलीगाडी उत्तर कहा जाता था। सडक री तीर से बनी महा थी लेकिन मुसाफिर चलन लगे थे। अपार भीड थी। हाँ से सीट रिजव नहीं हुइ। २२६ र० ८ आ० म प्रथम श्रेणी क हमने ने टिकट लिए। यदि इम दर्जे का टिकट न हाता तां स्थान पाना मुश्किल। राज ही यहा बहुत-म यात्री छूट जान थे। गाडिया म लोग लटनकर च रह थे। खर हमन पौने १५ मन सामान लगेज की गाडी म डाला जोर अपन डब्ल म बैठ गए।

बटिहार—रात को ४ बजे ट्रेन बटिहार पहुची। पहरे दर्जे का प्रतागालय भी भरा हुना था इमलिए वहा प्लेटफाम पर पडे रह। लेकिन मघ दबता न चन से रहन नहीं दिया। खैर निमी तरह २३ का सवरा हुआ और हम श्री महावीरप्रसाद भावडिया क घर पर पहुँच। स्नान भाजन किया। आज ही चल दन का निदचय कर लिया था, पर हम क्या पता था क्या होने वाग है। भोजन करन के बाद हम गाणी क लिए जल्दी जल्दी ब्राह्मण की तरह भाजन किया। भावडियाजी न २५५ का मिगरट सामने रख दिया। एन पर बो—ठमन पायेव भा ल लिया। कुछ बूँटे पड रहा थी। भावडियाजी अपना बार का ड्राइव करन हम ले च। रलब लाइन पार करन हुए सनगुप्तजी न भट्टजा का दगकर कहा—अच्छा साना चाहत है। स्टेशन पर बार मडी हुई। एना भट्टजी बेहाग हैं। उट उठा र ट्रेन पर ल गए। भावडियाजी दोरकर टाकर गमप्रसाद सू का लाए। ए माच न कहा, अब इन ट्रेन स उट नहीं ल जाया जा सकता। गाणी म सामान जनरवाया फिर भट्टजा का रलब अस्पता म ल गए। अभी

हम बँस हँसो-खुशी मना रह थे, और अब भट्टजी की स्थिति देखकर दिल काँप रहा था। कई कै हृद। डाक्टर मूद ने कई इजेकशन दिए। वह बग तत्परता से देखन लगे, लेकिन अस्पताल म दवाएँ नहीं थी। हम इन स्थिति मे वहाँ पडे थे। धीरे धीरे पता लगा कि भट्टजी के एक अंग म लकवा मार गया। हृदय की बीमारी ता थी ही, पर पहाड पर एमा हाना चाहिए था। लेकिन चार हजार फुट की ऊँचाई मके लिए काइ बाधक नहीं हाना। हम भट्टजी का अस्पताल म रखकर भावडियाजी क यहाँ चले आए। सामान रखकर वहाँ जान आन लग। अगले दिन भी भट्टजी का अवस्था बसी हा रही। आँखें बंदूत कम सालन ये। कभी हाग म रक्त कभी बहागी म। अस्पताल की बमरा मामानी स प्रयाग पहुँचना अच्छा था लेकिन उन हालत म जान की डाक्टर मगाह नहीं द रह थे। फिर मत्र दवाकर डा० मूद न कहा— साय म एक डाक्टर लेकर जा मजन हैं। भावडियाजी न तर्ण डाक्टर वालीप्रसाद दाम को तैयार किया। वह बडे ही सहृदय मित्र। चरन म भय ता था किन्तु यहाँ रहन म भी वह बसा ही था। बहतर हाना हम रखनऊ जान क्याकि वहाँ मेडिकल कालन था। पर मारा मामान कगाहा बाग की आर जा रहा था इसलिए पल्ल प्रयाग हा चलन का निश्चय किया। सबसे बड़ी चिन्ता की बात यह थी कि भट्टजी का काइ चीज पचती नहीं थी सब वमन कर देन थे।

२५ तारीख का डा० मूद और डा० बूडून दखा दवाइयाँ भी लिय दी। दापहर बाद डा० भट्ट का लवर गाडी म बँटे। २ बजकर ४० मिनट पर हमारी गाडी रवाना हुई। डा० वागीप्रसाद दाम एम० बी० हैं उनकी पत्नी भी डाक्टर हैं। भट्टजी का तीन बार मत्तर का रस दिया गया लेकिन तीना बार उहने वमन कर दिया। अब ग्लुकास क इजेकशन का हा आमरा था। बस आज उनकी स्थिति म कुछ सुधार हुआ था। छाटी लाइन का गाटियाँ क्या कभी भी सुघरेंगा यहा हम सवाल आ रहा था। गद्दे पाये हुए पायना डर मड, उजवा द्वार मुग गिडकियाँ टूटा पूरों। पसेवा मित्रा का बुलाकर बनवा दिया गया था नहीं ता परगानी हाना। भाड

इतनी थी कि लोग छत पर भी बैठे हुए थे। एक जगह तो एक पूरी की पूरी बारात महिलाओं के पहलू दर्जों में बठ गई। टिकट-कलक्टर जब टिकट मागन गया, तो उसका पिटन की नौबत आ गई। इधर अभी व्यवस्था के लिए ट्रन के साथ रेलवे मजिस्ट्रेट नहा चल रहे थे।

२६ फरवरी का सबरे हम छपरा पहुँचे। यही चाय पी। हमारे ढन्वे में दलन छपरा के अवधेग बाबू रेलवे मजिस्ट्रेट बलिया तन के लिए साथी बन। बलिया में भट्टी का ग्लुकोस का इजकशन और देवा दी गई। बोलना नहीं चाहते थे, या शायद बोल नहीं सकन थे। एक बार पित्त का वमन हुआ। वमे घोंग घोंडा ग्लुकोम और एक नारंगी का रस दिया। अभी भी उनका नाडी बहुत मन्द थी। औडिटार में भाजन के समय पहुँच। दारागज पहुँचन अघेरा हा गया। तार द लिया था। डा० उन्धनारायण तिवारी में। रामबाग स्टेगन पर एम्बुलन्स तयार थी और राय रामचरण लाल भी अपनी कार लेकर आए थे। भट्टीजी का एम्बुलन्स कार में बिठाकर मातोलाल ममारियल अस्पताल ल गए। पहले काल्विन अस्पताल के नाम से प्रसिद्ध यह प्रान्त का अच्छा अस्पताल है। हम प्रयाग में अभी अस्पताला से काम नहीं पडा था इसलिए हम इमे जानत नहीं थे। डा० पाटणकर न भट्टीजी को अठा तरह संभाला। उनकी नाडा की गति ४२ से ५२ तक थी। एक अच्छे चिकित्सालय में अपन मित्र का पहुँचाकर हमन सत्ताप की सोम ला। यहाँ नसें भी थी, सभा तरह की देवादर्पा भी थी, दत्तन वाले सहृदय डाक्टर भी थे, और इमारत लागा का प्रभाव भी था। भट्टीजी यद्यपि कुछ दिना बाद मृत्यु के जबड़े से बाहर निकल आए, लेकिन उनका लकवा बड़ा दूसरी जगह चले गए। मरी बड़ी इच्छा थी, उनकी सहायता के, लेकिन उनके बाद ननानाल और मनूरी में चला गया जहाँ की ऊँचाई एक बुलान में भारी रनावट थी। सिवाय मित्रा के पास पत्र लिखकर हन के मित्रा और कुछ करन में असमय था। इन वचनों पर मुझ सना प्रयोग रहा।

तारीख माच का वहाँ के लिए खाना होन से पहले भट्टजी क पास गए । स्थिति म विशेष परिवतन नही हुआ था । गाडी ४ बजे चल देनी है, इसकी सूचना एकाएक मिली और सचमुच ही वह ठीक समय पर चल पडी । यहाँ से देहरादून का डब्बा लगता था, जा बरेली तक जान वाला था । यद्यपि यह दूसरे दर्जे का डब्बा बहुत सँकरा, टाट के गद्दवाला था, तो भी छोटी लाइन स बहुत अच्छा था । लखनऊ तक तीन आदमी रहे । पीछे एक आदमी उतरा और दा और चढे । पसिजर ट्रेन थी, इसलिए हर स्टेशन पर ठहरती चल रही थी । ६ तारीख का सबेरे सवा ८ बजे बरेली पहुँचे । अब छोटी लाइन (ओ० टा० आर०) की गाडी बदलनी थी । पहले दर्जे का टिकट और छ मन सामान का लगेज बनवाया । गाडी ८ बजे खुली । सहयात्री ने बतलाया कि हाली के रग फेंसन का लकर बरेली म थगडा हा गया । मुसलमाना क दा लक्रे मारे गए और बहुत से घर जला दिय गए । उनम कुछ भगदड सा मच गई थी । अभी दोना आर की असली स्थिति समझन म कुछ देर लगगी । पर यह ता निश्चय ही था कि साम्प्रदायिकता की आग हमार यहा मदा नही भडकाई जा सकती ।

उत्तर पचाल की हरी भरी भूमि का दग्धत हम सवा १२ बजे काठ-गाणम पहुँच । रामगड के लिए यही स ३५ रुपय स एक पूरी बम बर ली । ३ बजे हम भबाली पहुँचे । रामगड के लिए मोटर की सटक अभी हाल ही म चालू हुई थी । सँकरी थी, और नाम भी बच्चा हुआ था इसलिए सटक एकतरफा चालू थी । एक घटा प्रतीक्षा करन के बाद हम फिर ४ बजे खाना हुए । सडक बुरी नही थी । ७००० फुट स अधिक ऊँचे डाडे का पार कर १ बज हम रामगड पहुँच । बाबू बच्चोसिंह प्रधान का बँगला सडन से एक माल नीचे प्राय साथी उतराई म था । कुलिया स मामान उठवाया, और बँगल पर पहुँच । बँगला बुरा नही था, लेकिन उमम पाखान तक का नी प्रवाप नही था । दा सान क कमरे दा बडे कमर, दा नहान कोष्ठक—बाफी जगह थी । एक आँव दग्धन ही पता लग गया कि यहाँ हमार रहना सम्भव नही । यही ख्याल करके हमन कुलिया का मजूरी नही दी, और उह

दूर नहीं जब उद्गु वं लिए भी नागरी अपनी लिपि हा जायेगी, इसके कारण उद्गु बहुत लागो के लिए सुपरिचित भी बन जाएगी। फिराक साहब अपना सारा साहित्यिक जीवन उद्गु वं लिए दिया है। मैं भी अगर बैस किया होता—और लटकपन से मैंने पढी तो उद्गु हा थी—ता मैं भी गाय उद्गी की तरह सोचता।

होली वं दिन बनारस म मैं मुख्यवन्ध्या देवी थी। नहीं बह सबन बह व्यवस्था ३६ ३७ वष बाद आज भी है या नहीं। वहाँ दोपहर तत्र चा जो भी फेंका फेंकी हो लेकिन दापहन के बाद ठाग सिफ सूखी अबोर क ही प्रयाग करत थ यहाँ तो मुबह शाम वाई अतर नहीं था।

२ तारीख का अस्पताल मे जाने पर निश्चय माटूम हुआ कि भट्टजी के बाए जग म लकवा मार गया। डाक्टर ने बनलाया मन्के दूर होने बहुत देर लगगा। अब भी उनका मस्तिष्क काम नहीं कर रहा था। डा भट्ट के लिए अब मुझे सबसे अधिक चिन्ता थी। यदि वह स्वास्थ्य-लाभ नहीं कर सक तो कौन उनका भार उठाएगा? मम्मलन कुछ दिना नव सहायत जरूर करेगा। हा सबता है राष्ट्रमाया प्रचार समिति कुछ कर लेकिन कित दिना तत्र। भट्टजी व परिवारवाल अब भी दक्षिणी बनारा जिन् म थे वह मनातनी माध्व ब्राह्मण थे। विलायत जाकर भट्ट न अपना घम खो दिय था। उहाने मुभा था कि घरमाला न उह मरा मानकर ध्याद भी व टाला है। उनगी पत्नी भी मौजूद थी और पति व जीविन रहत विगवा उहाने न अपन घर स सम्भय रगा न बनाटक म ही, और अब इस स्थिति म थे।

६ मार्च का डा० यशोनाथ प्रसाद स मिला। वह माल भरक लि पटना विश्वविद्यालय म गए थे। अगतुष्ट थे। बह रह थे—वहाँ तो औ नी निम्न दर्जे की बेईमानी है और दरवार म हाजिरा दना आवश्यक है

रामगढ़—अत म रामगढ़ व लिए मैं सहमन हुआ, पर कमन न उ यित्नु पमद नहीं किया। मैं बहा दिना दखे राय नहीं दना चाहिए। हाँ दयेंगे यदि टाव रहा, ता रहेंगे, नहा ता और जगह चल देंगे।

ताराख माच का वहाँ क लिए रवाना हान म पहल मट्टी क पास गए। स्थिति म बिरोप परिवर्तन नही हुआ था। गाडी ४ बजे चल दती है, इसका मूचना एकाएक मिली, और सचमुच ही वह ठीक समय पर चल पडो। यहाँ से दहरादून का ढक्का लगता था, जा बरेली तक जान वाला था। यद्यपि यह दूसरे दर्जे का ढक्का बहुत मँकरा, टाट के गद्दवाला था, तो भी छाटा लाइन न बहुत अच्छा था। लखनऊ तक तीन आदमी रह। पीछे एक आदमी उत्तरा और दा और चप्पे। पसिजर ट्रेन थी, इसलिए हर स्टेशन पर ठहरता चल रही था। ६ तारीख का सबर सवा ८ बजे बरेली पहुँच। अब छाटी लाइन (आ० टी० आर०) की गाडी बदलना थी। पहल दर्जे का टिकट और छ मन सामान का लगज बनवाया। गाडी ८ बजे खुली। सहयात्री न बतलाया कि हाली क रंग फौजन का लकर बरला म षगडा हा गया। मुमामाना क दालक मारे गए और बहुत स घर नला दिय गए। उनम कुठ भगन्ना-मा मच गई थी। अमा दाना आर की असली स्थिति समझन म फुट दर लगगा। पर यह ता निश्चय ही था कि मास्प्रनायिकता की आग मार यहाँ मग नही भडकाई जा सकती।

उत्तर-पचाल की हरी भरी भूमि को दखत हम मवा १२ बजे काठ नाम पहुँच। रामगड क लिए यहा स ३५ रुपय स एक पूरी बम कर ली। २ बज म भवाला पहुँचे। रामगड के लिए माटर की मटक अभी हाट ही म चालू हुद थी। मँकरा थी और काम भी कच्चा हुआ था, इसलिए सटक एतरफा चालू थी। एन घटा प्रताधा करन क बाद हम फिर ४ बज रवाना हुए। मक बुरा नहा थी। ७००० फुट स अधिक ऊँचे डाँड का पार कर १ बज हम रामगड पहुँच। बाबू वच्चीसिट प्रथान का बँगला सक् स एन माल नाचे प्राय सीधा उनराई म था। कुलिया स मामान उठवाया, और बँगल पर पहुँच। बँगला बुरा नहा था, लकिन उसम पास्तान तक का ना प्रबन्ध नहा था। दा सोन के कमर दा बडे कमर, दा नहान बाप्टन— गनी जगह थी। एक आँख दगन हा पना लग गया कि यहाँ हमारा रहना मभव नहा। यहाँ ख्याल करन हमन कुलिया को मजुरी नही दा, जोर उह

बल फिर सामान लेजर मोटर के अड्डे पर पहुँचाने के लिए वह दिया। बमरा की बड़ी प्रसन्नता हुई, जब मैंने कहा— बल हम नैनोताल चल देंगे।' रामरु ६००० हजार फुट की ऊँचाई पर बसा हुआ है। यहाँ फटा के बहुत भे बगीचे हैं। उसका दुर्भाग्य समझिये या हमारा जो हम वहाँ जाके के अन्न भे पहुँचे थे। इस समय हरियाली दावने को आँखें तरमती थीं। फन्दार बधा के पत्ते सूख गए थे वह सूखे काँटे से मालूम होने थे। यह दृश्य कसे हम अपनी आर खीच सकता था? बंगले के पास ही दा एक दूबान थी, लेकिन वहाँ जम्रत की बीज मिश्रती नहीं थी। और तो और, चिराग जलाने के लिए मिट्टी के तल के भी लाते थे। किसी तरह हमने रामगढ़ में एक रात बिताई और उसने लिए हमे अकमोस रही था। न आते तो पछतावा जाना कि हम एक अच्छे स्थान का देयन न बचित रह गए। बहार और बरसात के दिना में यह ऐसा श्रीहीन नहीं रहता हागा इगम सदह नहीं। फटा की भूमि हान के कारण इसका बतमान और भविष्य भी अच्छा है। अब तो वहाँ अच्छी मडक बन गई है और गडमुकने बरत सब माटरेँ आती जाती रहती हैं।

नैनीताल

हमने बँगले में सामान भी नहीं खाला था। १० मई का सबरा हुआ। बुला आ गए, और फिर हमारा सामान बस की टिकान पर पहुँच गया। १७ रुपये दानो तरफ की डोआई के लगे और १५ रुपये में नैनीताल के लिए बस कर ली। उसमें अधिकतर हमारा ही सामान भरा था। माघ में ५० रुपए दरदत्त पत्र चल रहे थे। वस्त्रोद्योग के विशेषण हैं, और इसका विशेष गिन्या प्राप्त करने के लिए गल्ले हुए थे। पर सरकारी नीति और पूजा पनिया की धर्माली से असंतुष्ट थे। वस्तुन जा लूट में शामिल होने के लिए तयार नहीं, और पैसा का कुछ आये ले जान की कल्पना रखना है, उसक लिए आज का व्यवस्था में असंतुष्ट रहना बठिन है। दस मील चलकर नवाला आई। फिर सात मील आगे ६ बजे नैनीताल पहुँच गये। नेपाली बुलिया की पलटन एसी कही नहीं दगी थी। यही बात फिर मसूरी में देखने में भी आई। पदिकमो नेपाल के गंग राठी की तरफ में नैनीताल, बदरी नाथ, मसूरी आदि में सबका ही तादाद में चले आते हैं, बाढ़ ता दा-दो, तीन-तीन बप तक घर का मुह नहीं दगन। नेपाली मकान अधिक महनती हैं। तीन-तीन मल बोझा पीठ पर लाए लेना इनक लिए कोई बात नहीं है। धून पसीना एक करके चार पैसा बमाकर अपने बाल-बच्चा में जाने है। लेकिन उन नेपालिया में ता य अच्छे हैं, जा मलयाली की परतत्र रखन के

लेण अंग्रेजी साम्राज्यवाद की बलि के लिए दो पसा पर बिज रह है ।

होटल मेट्रोपोल—डा० सत्यवैतु विद्यालवार से पहा ही पत्र-व्यवहार हो चुका था । वह भी हमारे आजकल आने की प्रतीक्षा कर रहे थे, अर्थात् रामगढ़ के लिए हम निश्चित नहीं थे । ननीताल का श्रृंगार वहाँ का ताल है जा जिसी भी पबतीय विलामपुरा म नही है । बस का अड्डा तल्ली (निचल) ताल म है । यहाँ भी बाजार है और बडा डाकखाना भी महा है । बुलिया पर सामान उठवानर ताण को बाण छोडत हम सडक क आगे बडे । थोडी ही दूर जाग पहाड की आर दूकान और हाटल गुरू हो गए । यहा मिनमा भी है । ताल के परले छार का तल्ली (उपरला) ताल कहत हैं । हाटल म पहुँचने स पहले डाक्टर साहब के ज्यण्ट पुत्र श्री विश्वरजन जी मिल । फिर डाक्टर साहब भी आए । सामान गादाम म और हम दोनो रहत के कमर म चले गए । बगला किराय पर लेता था । डाक्टर साहब ने कहा, उसका मिलना मुश्किल नही होगा देखकर ले गे । हम वहाँ ठहर गए । पहला ही नजर दखन पर हमन लिख मारा— निश्चय ही ननीताल के सामन गिमला और दार्जिलिंग बछ भी नही है । 'लेकिन साथ ही यह भी लिखा है— 'कमा है ता यही कि यह हिमालय के बाहरी क्षेत्र म है । 'लेकिन इसस भी बगी कमियाँ ननीताल की मातूम हुइ—यहाँ आल्मी का मातूम हाना है कुए म है, जिनक किनार पहाड की बिगाण दीवार लगी हैं । इन दीवारों का ही दग्ना जा सकता है । हिमाच्छादित पवन-श्रणिया को दखत क लिए भारी दीवार का फाँदना पडेगा । बषा और पानी क बछ हान की भी गिवायत की जाती है लकिन मैं उसका नही मानता ।

गाम का टहलन तल्ली ताल तत्र गए । रात म ही ताल स सटी म्युनिमिपल गदबेरा या जिनर पुनराव्यय हीरालाल जी बिच परिचित की तरह मिले और ननीताल क नियाम म बह हर तरह स सहायता करने क लिए तैयार रह ।

११ माघ का किराय का बगना देवने गए । अंग्रेजी क जाने के बाद

इन विंगमपुरिया पर माडे सानी सनीचर का काप है। नैनीताल मे अंग्रेज किराय के बगला म रहन थे, जिन्हें भारतया ने अंग्रेजा के आराम की दृष्टि से हा बनाया था। जिन बगला का किराय पर चडे वषों हा गए, वह जीर्ण, गद, पुराने या टूट फनीचर वाग हा, ता क्या ताज्जुब ? अल्मा कौटिज और ग्लेनमार दा बगले बूछ अच्छी हालत म थे लेकिन उनम आठ-आठ नौ-नौ कमर थे, जिनकी सफाई के लिए एक अलग आदमी चाहिए। ग्लेनमार बाजार स एक मील पर अवस्थित है। कमला का पसंद आया। माडे छ हजार फुट की ऊंचाई पर ताल है और यह उसस भी एक हजार फुट ऊपर है। किराय एक हजार वार्षिक के करीब था। कौमल बुक डिपा क स्वामी श्री बरिगाल जो भी हमारी सहायता के लिए हर वक्त तैयार थे। उन्होंने श्री रामलाल गार्ह की काठिया दिखलाई।

पूनाह्ल म हमन उत्तरवाली कोठिया का देखा। शाम का साडे ४ बजे दक्षिणवाली काठिया की ओर चले। फन काटज हटन काटज, डल्होमी वाटज और स्नाउडन काटज आदि किता ही बगल दस्त। स्नाउडन सबसे अधिक पसंद आया। मालूम हुआ वह बिकने वाला भी है लेकिन २० २२ हजार तक ही हा तय ही ता। किराय एक हजार तक पट जान की उम्मीद था। दक्षिणगिरि की काठिया अपसाकृत बेहतर अवस्था म थी, इनके फनीचर भी बुर नहीं थे। मौजिन सिर पर था इसलिए डाक्टर साहब अपन हाटल का तयार करने म बडे व्यस्त थे। पर दिखान के लिए आदमी दे दिया।

१२ मार्च को उसक मालिक के साथ ग्लेनमार बगला दफन गए। अधिकांश बगलों के मालिक कुमाऊंवा गार्ह लाग हैं। यह व्यवसायी बहुत कुछ मोचे के अग्रवाल बनिषा से है। ग्लेनमार बहुत बडा बगला था इसम छ बडे-बडे कमर थे। फनीचर भा था। हमन उसक गुण ही देख उसी पर मुग्ध होकर कह दिया दा कमर कल तयार कर दिये जाएँ। किराय हजार ठीक हुआ लेकिन गार्हजा न कहा, आल्मी ज्यादा रहेंग, ता किराय बगल देंगे। बगला कई मास म किराय पर नहीं चला था, इसलिए बहुत मरम्मत

करनी थी। हमने कह दिया कि मरम्मत नहीं करेंगे, तो मरम्मत कराकर उसका पसा ंसी किराये में काट लेंगे। मालूम हुआ स्नाउडन दो साल पहले ११ सौ रुपये पर उठा था अब वह आठ-नौ सौ में जम्पर मिल जाता। आजकल किराया जमतौर से गिरा हुआ था लेकिन मेरा उतावलापन कहिए। स्नेनमार से फिर वागा और चढ़कर पवत प्राकार के ऊपर पहुँचे जहाँ से हिमालय थोड़ी दिखलाई देती थी। डघर में पाँच मील पगडडी में उत्तरकर भवाली से रागीसेत जानवाली सड़क मिल जाती है।

३ माच को फिर बँगला की खान में निकले। सरेरे स्नाउडन गए। स्नाउडन की दो मजिला इमारत और उससे अच्छे साफ-भुयरे कमरे हम बट्टा पसल आए। चौकीदार को कह दिया कि मालिक में पूछो यदि नी सौ रुपये वार्षिक पर देना चाहें तो ले लेंगे। उधर हीरालालजी गार्ह का भी स्नेनमार के स्वामी के पास उनका ही किराया पर दन के लिए टेलीफोन करन को कहा। दापहर बाद चढ़ू गले गार्ह के प्रगला डलहौमा विला, डल हीमी काटज हटन हाट और हटन काटेज देखने गए। नूटन हाल बहुत बड़ा था और हजार रुपये में मिलन पर भी हमारे काम का नहीं था। डलहौमी बिना उतना ही बग था जितना स्नेनमार। हा, उममें कुछ अधिक साफ था। डलहौसा काटेज और हटन काटेज हमारे लायक थे। मेरा मन अधिक तर स्नाउडन चाहता था और जम्पर स्नेनमार की तरफ जागड़िन थी। मर जिमाग में बँगला परीस्न का नी ख्याल चयसर माग रहा था सम्यता था यदि स्नाउडन का दाम मागूँ हा तो उस ले लेंगे। डाक्टर साहब ने भी कहा २०-२५ हजार में वह जम्पर मिग जायगा।

स्नेनमोर—१४ माच का तीन बँगला का जाफर आया लेकिन सबसे पहले स्नेनमोर में। १३ बुनिया के साथ हम २ प्रजे स्नेनमार पहुँचे। ६ बडे बड्डे जम्मे जम्पर थे लेकिन मीम गरके दूरे हुए थ चिटवनिया और गीचा का काम तीर में ताग गया था। काम का जय मान के लिए दरवाजा बंद करा लग तत्र मालूम हुआ कि यहाँ तो सभी चार्जे खुग हुई हैं और भीतर घुमन की गारी बाघाण दूर करके रखी गई हैं। फिर बाजार में यह बहुत

दूर करीब-करीब गिरि प्राकार के सिरे पर टगा हुआ है। यहाँ से उतरना-चढ़ना आसान नहीं था, और था बिल्कुल अरशिन स्यात म। यहाँ से हम खिमके ही नहीं कि आसानी से सारी चीजें उटाई जा सकनी थी। रात भर इसी चिन्ता म अपनी जल्बाजी पर अफमास करत रह।

ओक लाज—रात को ही बँगले का छोड जान का निश्चय कर लिया। अभी एक ही रात रह थे, और बँगले के वारे म लिखा पडो नहीं हुई थी। तुरंत दूसरा जगह जान का प्रयत्न करना पडा। चाय पीकर एव चिट्ठी थी हीरालाल गाह का मकान के नापसाद हान के वार म लिखी और स्वयं थी वकिलाल कासल के पास पहुँच। आक लाज म पहुँचे। वह इस सारे बँगले के किरायदार थे, नीचे उनका परिवार रहता था ऊपर एक भाग म गुप्ताजी आवरसियर थे, और दूसरे भाग म दा कमरे और बराण्डा खाली था। रसोई खाने के लिए एन गुसलखाना काम दे सकता था। यद्यपि यहाँ स्थान की कमी थी और फर्नीचर भी बहुत कम था किन्तु पहले ता हम ग्लेनमोर से पिण्ड छुगने की जल्दी थी। दूसरे यह भी साचा कि यहाँ कामलजी का परिवार भी रहता है जिमसे कमला की अनुकूलता होगी। चटाई भी यहाँ स आधी थी। कम भी गुजारा करला है, यही साच रहे थे।

लौट कर सामान उठवान के लिए आए ता थी हीरालालजी न कहा जाप मकान का किराए पर ले चुक हैं इसलिए किराया नना अनिवार्य होगा। मैं कहा जब तक लिखा पडो नहीं हुई तक तक कोई कासूनी वाध्यता नहीं। खर वहाँ से सामान उटवाकर आक लाज म चरे आए। निताबा को खालें, तो रसे वहाँ पहले यही समस्या आई। कमरा म कोई आलमारी नहीं थी। रात ११ बज तक कमला मकान का सजान म लगी रही। गिबलाल का हमने रमादवा रक्या जा खाना बताना नहीं जानता था।

नए मकान म वम भी आदमी का कुछ अडचन मालूम हाना है। इस मकान के गुण के लिए यही कह सकत हैं कि ग्लेनमार से निरालन के बाद इसन गरण दो। जब पुस्तकें लिखत म लगता था और कमला का इस साज

साहित्य सम्मेलन की विशारद परीक्षा अवश्य दनी थी। अगले दिन हमने छ बक्सा की पुस्तकें निकाल कर जहाँ तहाँ रख दी। अपन ताजस भी गुजारा कर सकते थे, लेकिन चिन्ता थी मेहमाना के खान पर क्या किया जायेगा। जो भी हा, अब ननीताल म १६ जून तक के लिए हम ओक राज के हो गए।

१७ तारीख स हमने अपना काम भी शुरू कर दिया। कमला घटे म डेढ़ पृष्ठ फुल्स्केप टाटप कर सकती थी जो थोड़े से अम्भाम स दा हा सबसे थे। चाय पीकर ६ बजे से १ बजे तक हमन टाटप करन का काम रखा। किराया पूछन पर साल भर का छ सौ रुपया या जिसका आधा अभी दना था। दगले का किसी चीज की मरम्मत करान म वह असमय के क्वाकि मवान मालिक उसके लिए कुछ खर्च करना नहीं चाहता था। नए मवान मे अटचने थी, जा मरे उतावलेपन का दण्ड था। यदि डाक्टर साहब की बात को मान कर कुछ दिन और हाटल म रहे मवाना को अच्छी तरह देखभाल कर के पसन्द करता, तो इसम काम म अच्छा बँगला मिल जाता।

डा० बेसरवानी उस वक्त भवानी टी० बी० सनिटारियम के अध्यक्ष थे। बराबी-बाप्रेम के समय उनस मरी भेंट हुई थी। गुरुकुल कागडी क आमुर्वेद के स्नातक थे। पीछे इटली मे एलापमि क एम० डी० हुए, और जमनी म भी चिकित्सा विधान की शिक्षा पाइ। लडाइ के दिना म जमनी मे रहे और जमन सेनाआ क साथ हम के भीतर तक पहुँच। उहान रविवार (१६ माच) का अपन यहाँ बुलाया था।

इस समय खान की चीजा का तगी थी। ननीताल म यह सुभीता था कि यहाँ आधी रातनिग थो इसलिए कुछ राशन वाइ से और कुछ बिना राशन क चीजें मिल जाती थी। राशनवाइ आसानी स का मया जिमके बन् पर तीन रुपए म तीन मर आटा और दो सग चीनी लाए। डा० सत्य केतु क पाग गए। भारतीय इतिहास क गम्भीर विद्वान्, गुरुकुल कागडी क स्नातक और मेरिया युनिवर्सिटी क डी० लिट० हावर उहनि सोचा था, यहाँ पन्ने पढ़ाने का काम करेगे। पर लडाई ने रहे-मह प्रयत्न का भी विफल

कर लिया। वह और उनकी विदुषी पत्नी सुशीला देवा गाम्भीर्य दिल्ली में बच्चा का स्कूल खोल हुए थे, जिसे बन्द करना पडा। फिर जीवन-यात्रा के लिए ता कोई बसीला ढूँढना ही था। प्रोफेसर डाक्टर और हाटल-बीपर में बहुत अंतर है। लेकिन, इस अन्तर का देराने के लिए जो तयार है वह सप्ताह में कभी सफल नहीं हो सकता। उन्होंने मसूरी में लक्समोट में एक होटल खोला। लडाई के दिना में होटला के लिए परिस्थिति बड़ी अनुकूल थी। कुछ कमाया, फिर बड़े स्वप्न देखने लगे। ननीताल का सबसे बड़ा यह हाटल किराए पर लगाने वाला था। पहले किसा अग्रज का था जिससे अवयव के तालुकदार राजा महमूदाबाद ने खरीद लिया था। डाक्टर साहब ने हाटल को लेकर चलाने का निश्चय किया। बहुत बड़ा कारवार था लेकिन अब लडाई खतम हुए पाँच साल हो गए थे और हाटला की हालत बदतर हो गई थी। वह अब इससे पिण्ड छोडा मसूरी के लक्समोट में ही जाकर रहना चाहते थे जो अब भी उनके हाथ में था। इन सब बातों पर विचार करने पर मर मन में ख्याल आने लगा मैं भी क्या न मसूरी चला चलू। डाक्टर साहब ने कहा कि वहाँ पर दाम या किराये पर अच्छी कोठिया के मिलने में शक नहीं होगी। महाराज युद्ध गमशेर की ५० हजार की काठी बिकाऊ है, जो गायद जाये दाम में मिल जाए। डाक्टर साहब २४ माच तक यहाँ में मसूरी चल जान वाले थे। अब्यावहारिकता तो मर में हानी ही चाहिए क्योंकि मार जीवन व्यवहार के पय का अनुसरण नहीं किया साचने लगा दो तान महीना में रुपया का प्रवचन करके उम ले लेंगे 'मसूरी भी बुरा नहीं है वहाँ किराने के नजदीक भा पहुँच जायेंगे।

जाज का टाक में श्री प्रेमराज या पत्र मिला। मैंने अपने 'किन्तु दंग म' में सराफन के बंगल में उनसे मर नगर में प्रयास करने की भी पुमाने हान का गिवायन किया था। उन्होंने बहुत भावपूर्ण गाय गरी भत्याना करने लिखा था कि उम लिन गगहृत के बंगल में शिम पति पत्नी में मुत्तागत्र हुई थी वह कोई इजानियर पाय थ। यह दग्गनी बगाली शिम नहीं थ इसलिए इस बात का कम मान सकता था? ता ही उपाय अगर मर लिये

हो ता मन्त्रि स्वावलम्बी हो सकता है। लेकिन, फिर आज के मकान पर्याप्त नहीं हाग।

हमारे निवास में मालिक से मरम्मत कराने का आग्रह नहीं था और दूटे हुए गीगा से सदीं और हवा भीतर पहुँच रहा था, इसलिए उहे अपने ही लगवाया। २६ माच को कुछ घण्टो तक बजरी पडती रही। आला बफ जैमा कठोर हाना है और नरम पिठपिल जाल का बजरी कहते है जिसके गिरने पर दीन की छन भडभडानी नहीं और आग्नी की सोपडी पर चोट नहीं पहुँचती। सद स्थाना में टेम्परेचर गिरने के साथ बरसना पानी बजरी के रूप में परिणन हाता है और कुछ सदीं और बाने पर वह हिम बन जाता है अधिक सदीं होने पर कषा के रूप में नहीं बल्कि रई के बडे बडे फाहो के रूप में हिम हवा में सरते हुए गिरने लगता है।

कमला अमाधारण दुःख थी। सत्र ६२ पीण्ड वजन था फिर सिरदद पेटदद और दूमरी तरह की गिजापनें क्यों न होती? यहाँ क सरकारी अस्पताल क डा० मलहात्रा न रीतगन कराने को कहा। दूमरे दनो में एवमरे का उमक आविष्कारक जमन विद्वान् क रीतगन नाम से पुकारा जाता है, लेकिन अग्रज जमन नाम क्या पमद करने लगे? उही का दिया नाम एकमे दे हमारे यहाँ चलना है। रीतगन करवाया डाक्टर ने और परीक्षा की और बतलाया कमला का रक्तनाय कम है, विटामिन की आवश्यकता है, जिसके लिए मलाट टमाटर और कलजा खानी चाहिए। लेकिन कमला मलाट और टमाटर के बगिनाफ है। मैंने झुझला कर कहा— कमला की औषधी सोपडी इमे मान तब ना। जीभ औषध ग्रहण करने में रुकावट डाल रहा है। कमला का वजन टोक हाने में बहुत समय लगा, और वजन टोक हाने पर गिजापनें कम हा गए यह स्वाभाविक था। २४ अप्रैल का फिर डा० मलहात्रा और मिडिल सज्जन न कमला को देखा। सिराजाल का गालियाँ और एन टानिक पाने के लिए कहा। नाम को भाजन क बाट टानिक खान पर क हा गई। इधर वजन भी पीण्ड तक पहुँचा

करता था जिसके कारण पढ़न लिखने में अड़चन थी। मलाद मुदिनल से कुछ ग्या लनी, लेकिन टमाटर की तरफ उनका देगन का भी मन नहीं करता था। खाने के बारे में जब्तस्ती करना अच्छा भी नहीं, क्योंकि उसमें क हा जाने का डर था। आषाणीपी का कागण चरम की जरूरत भी हो सकती थी। डा० भायादास न देखकर परीक्षा करके चरमा दिलवाया। डा० भायादास मनीताल की विभूति थे। वह दाशनिक डाक्टर थे, गंगी की चिकित्सा करना, हर तरह से जमकी दिलजोई करना वह अपना परम कतव्य समझत थे। मस्तमौग ता एम कि पीठ पर चाला रखे मीले घूमने चले जान थे। रास्त में मिलने पर काइ कह नहीं सकता कि यह एक सिद्ध-हस्त डाक्टर हैं।

दिल्ली में सबर मिली कि वहा शिक्षा मंत्री न भारतीय सांस्कृतिक सम्बन्धी परिपद् स्थापित की है जिसके २६ सन्स्था में मरा भी नाम है। वहाँ मैंने डा० काणे कृष्णम्यामी अय्यगर तारापोरवाला, आर० सी० मजूमदार जम नामो का अभाव लेवा और एक निहाई से अधिक इस्लामिक संस्कृति के प्रतिनिधिया को पाया। यह युग नहीं था, पर गिम्हा मन्त्रालय से भारतीय संस्कृति के सम्बन्ध में इनसे अधिक आगा ही क्या हो सकती थी ?

पश्चिमा पाकिस्तान में एक बार जार का तूफान आया, और उसके बाद हिन्दुआ मुसलमानों का खून मलय पय इधर से उधर जाना जाना फिर काम सतम हो गया। लेकिन, पूर्वी बंगाल में हिन्दुआ पर विपदा टर रह कर था रही थी। हिन्दुआ के लिए वहाँ निश्चित और सम्मान-व्य रत्ना मुन्जिल-मा हा रहा था, इसलिए वह बड़ी भागी मन्था में पन घरा को छोड़कर पश्चिमी बंगाल में आ रहे थे—यह मित्रमिला आज २८ फरवरी १९५६) भी जारी है।

डा० नटू के लिए अत्र एक दूसरी चिन्ता जान लगा। अस्पताल वाले हैं और अपने में अपने को जममव बतला रहे थे। उनका कर्ण प्रवचन गया जाए, यह एक बड़ा समस्या थी। थड़ेय टण्डनजी न भा इमके लिए

प्रयत्न किया और उनका परिणामस्वरूप भट्टजी को तिकातवर मडक पर नहीं फेंक दिया गया।

जमी मैं ननीताल ही म था, लेकिन अमनऊक 'पायनियर' म छर गया था नि मैं ममूरी म चमन जा रहा हूँ। उस समय यह अभी भविष्य प्राणी सी ही थी। रमोइय की बड़ी तिकात थी। * अर्प्रैल को एन नये रमोइय विमुक्तसिंह को रखा। असल म मई जून म जब सीजन शुरू हाता है तभी पहाड क भिन भिन म्यातो स काम करने वाले लोग विलामपुरियो मे पहुचते हैं। हम समय मे पहले चले आए थ इगलिये अभी न अच्छे रमोइये मिल सकते थे न मरगाा क प्रबन्धक एजेन्ट या स्नामी यहाँ मौजूद थ।

हिन्दी कौरवा भाषा का साहित्यरूप है। कुरुक्षेत्र मुग्यत गंगा जीर जमुना के बीच उत्तर म हिमालय की तराई से दक्षिण म आध बुलढाहर जिले तक फैला था। जमुना क पश्चिम जाजबल का हरियाना उग समय कुरुजागल नाम से पुकारा जाना था। यहाँ गर आबाद जगल अधिन थे, जहाँ पर गुरजा क पंगु अधिनतर घरा बरत थ। कुरु जीर कुरुजागल अथवा मरठ क मिन्दरी का पत्नी भाषाभाषा भाग जीर हरियाना की बाला एक ही है। वैसे ता चार चार भास पर भाषा म कुछ अंतर आ जाता है। पश्चिमी हरियाना म एक और एक है नि जहाँ और जगह क कौरव, है घातन हैं वहाँ पश्चिमी हरियाना का म कान ह। इगो तरह हूँ भी मूँ हा जाना है। लेकिन इस ह-म क अंतर स भाषा म भिन नहीं कहा जा सकता है। गुजराती म भा ह स का अन्तर उगर पश्चिमी और पूर्वी रूपा म मिगता है जीर साहित्यिक गुजराती ह का नहीं स को रचोदार करती है—हारा-जारा, होरा गौरा। हिन्दी भी साहित्यक भाषा क गिण अपनी गार भाषा स घनिष्ट मन्त्रध म्थापित करना जत्यावश्यक है। इगक बिना बह प्रवाह हीन नयी की छाडन बन जानी है। मैं यपों स जान कौरव मित्रा का प्ररित करता रहा नि कौरवी क गान-गीतो लान कयाआ और दूगर नमूना का जमा करना चाटिण। इधर किता हा लक्षण लागी इस काम म लग गए हैं लेकिन ननीताल क मर निवास क समय

अभी बसा करते लाग नहीं मिले थे। आकलाज ४ काठे व एक भाग म आवरसिपर धा गीतलप्रसाद गुप्त रहने थे। उनकी सौतली मा गमन माई ८० वष की बुढ़िया उनक साथ थी। रामन माई मुजपफरनगर जिडे म पदा हुड, और मरठ जिल क मवाना तहसाल के एक गाँव म ब्याहो गई। जममर अनपढ़ और गाँव की रहन वाली रही, बहुत चुप रहन वाली नहीं। पुगानी बाता के सग्रह क लिए सहामता करने के वास्त वह आदश थी। मुपे खयाल आया कि रामन माई स गीता और कहानिया का क्या न इकट्टा करूँ। अब उनस काफी परिचय हा गया था, और कमला पर ता उनका बहुत वाल्मल्य था। आते हा पूछनी—“कमलारानी राटा-राटी कर ली ? कौरवी क इन मधुर शब्दा को सुन कर भारी आकपण हुआ। उनक पडोस म रहत तान हपने हा गए थे, रमलिए मकोच की यान नहीं थी। मर कहन पर रामन माइ न अपनी माइ कहानिया और गीता का ठिगाना स्वाकार कर दिया। दोपहर के भाजन क बाद मैंने एन कहाना लिखन का निदचय किया और पढ़नी कहानी ४ अर्पत का लिखी गई। कुछ हा दिन बाद ता मेरो ही तरह रामन माई का भी अपनी कहानिया का ठिगा देन को धुन हा गई। पहूँचने मे जग भी देर हाने पर आकर पूछनी—‘क्या आज कहानी नहा लिखाणी है ?’ आग ता मैंने एन एन तिन म तान-तीन कहा लिया। मरपि रामन माई के बुगप की स्मृति क कारण बितनी कहानिया और गीतें पूरी नहीं थी, और सभी कहानियाँ माहित्य की दृष्टि मे बहुत ऊँची नहीं थी, ता भी विनेपता यह थी कि य मभा कहानियाँ एक व्यक्ति के मुह मे निकली थी एक हा भापा म थी, जा आज म ७० वष पत्त जसा बानो जानी थी, उस रूप म थी। रामन माई क पुथ ता कुठ इन पमत्त भी करन थ, लेकिन उनकी पत्ता हेमलताजी गवार नहीं गिगिता तरगा थी। वह गला क गैवारू भडे उच्चारण का पमत्त नहीं करती थी। माचता हागी, यह ता हमार परिवार के मसृतिहान हान का निगानी है। लेकिन रामन माइ का अपनी बहू की हम रण को काइ पचाह नहीं थी। य कहानियाँ और गान उमी साल आदि हिनो की कहानियाँ और गीत

ताल का पता नेपाल से कुमाऊँ छोड़ने (१८१४) के बाद पाया। फिर यहाँ बगल बनन लगे, तथा धीरे धीरे ननीताल प्रदेश की ग्रीष्म राजधानी बन गया। २३ अप्रैल का सर्वोच्च गिखर पर जाने की हमारी सलाह हुई। ननाताल जानवाले पिकनिक के लिए एकाध बार वहाँ जरूर आते हैं। सड़क से कितनी ही दूर जा गिरिमेखला के डंडे को पार कर पगढण्डी पकड़ ऊपर गिखर पर पहुँचे। एक पत्थर पर सामने दिग्वाई देनेवाले हिमाच्छादित गिखरों के नाम लिखे हुए थे, जो रेगा की सीध में देखने में सामने दिग्लाई पत्ते थे। आज हमारे दुर्भाग्य से अधिकतर गिखर बादल से ढक गये। बदरीनाथ से जमुनात्री (बदरपूछ) तक के गिखर ही नहीं देख सके बल्कि पूव में नेपाल के गिखर भी सामने पड़ते हैं। हम ६ आदमी थे। रास्त भर चुटुल और विनोद हाता गया। यहाँ घंठकर बनभोज हुआ। सामने नीचे की आर ताल में नावों को दौड़ते और आग मदानी भूमि दग्धते रह। सवा ६ बजे वहाँ से लौटे। हमारे रास्त से जो बेमल पीक (ऊट गिखर) की आर में हारर आता है। चीना चुगा तब हम सड़क मिली। अब भूय भी डूब गया और हमारे माधिया में पगढण्डी पकड़ ली, जिसमें कितनी जगह सीधी खन्नी उतराई उतरनी थी। ऐसी जगह यन्त्रि पर काँपन लगता था क्या? जब सड़क पर पहुँचे ता जान में जान आई। अधेरा हा जान पर ८ बजे घर लौटे।

१ मद्र का श्री परमानन्दजी ने १० हजार रुपये का चेक भेज दिया, अर्थात् अब मजान खरीदन की आर लुढ़कन का आधा सामान तयार हो गया। नामनाल भी ननीताल जित्त में एक सुन्दर स्थान है। वहाँ एक बगल में बिकाऊ हान की बात सुनी। अधिक पता लगान पर मालूम हुआ कि चाइ गाह्य आठ हजार में खरीदकर उस १५ हजार में बचना चाहत हैं। हम रामगन्ध दय चुक थे इसलिए ऐसे स्थान में जान के लिए तैयार नहीं थे, जहाँ विजयो-पानी का प्रबंध न हो। चन्द्रवान्तजी कुल्लू से लिख रहे थे कि मनाली में सवा ४ भाग में साथ एक बहुत अच्छा बगला बिक रहा है। मनाली की सुषमा मरने लिए आबपव हा सक्ता थी, लेकिन ममला उसके

भी लगा हुआ था, पर अब उसकी आशा खत्म हो गई। मई के मध्य में पहुँचते-पहुँचते नैनीताल का सीजन पूरी तरह से शुरू हो गया। सलानी चारों तरफ दिखाई पड़ते। सभी दूकानें खुल गई थी। शाम को ताल के किनारे के राजपथ पर सैलानिया की भीड़ रहती। पंजाबी ललनायें फशान में मक्का कान काट रही थी। नैनीताल उनके श्रृंगार के लिए मनो अघर-राग और काजल खच कर रहा था। लोग दिन में भिन्न भिन्न स्थानों में पिकनिक करने जाया करते थे।

२१ मई इतवार का दिन था। हमने भी पिकनिक के लिए डारोयी सीट की ओर प्रस्थान किया। बाकलालजी सपरिवार, गुप्ताजी सपरिवार, हम दोनों और माचवेजी सभी चले। पक्वान पर स बनाकर ले गए। चाय पीकर गए थे पर कलकत्ते के मित्र श्री मदनलाल टाटिया मिल गए उन्होंने चाय पिलाई। १० बजे चढ़ाई चढ़ते डारोयी सीट पर पहुँचे। यहाँ से नैनीताल और आसपास का पर्वत का सुन्दर दृश्य सामने आता है। किसी अग्रज ने अपनी पत्नी डारोयी के नाम पर यहाँ सीमट का एक चबूतरा बना दिया था जिसे पर खड़े होकर लोग परिदृश्य करते। हरे हरे वन की छाया में हमारी एक दर्जन से अधिक पुरुषों और महिलाओं की मण्डली भाजन के लिए बैठी। सत्रने कुछ कुछ सामान और कुछ विशेष पक्वान तैयार किए थे। बैठकर खान में बड़ा आनंद था रहा था। हमारी कोशिश थी कि यह आनंद जल्दी समाप्त न हो जाए। काफी चढ़ाई चढ़ कर आए थे इसलिए विश्राम लने में भी एक विशेष चुनौती मालूम होती थी। बहुत दूर बाद वहाँ में चलकर एक देवदारा से घिरी घाटी-सी खुली जगह में पहुँचे। यहाँ भी कुछ फग्लार हुआ। फिर हरे हरे वन में भीतर में चलते हम घर लौटे। मुझे इस बात का बड़ा दुःख हुआ कि रामन भाई का टाटियाजी का बगल पर ही छाड़ दिया गया। उनका चढ़ाई चढ़ना गायब मुश्किल होता और ढाँढी पर चलने के लिए वह तैयार नहीं हुई इसलिए और कोई चारा नहीं था। मिहारीलालजी कायल पहाड़ी हैं। वह आयरपाटा (दक्षिण गिरि-मण्डल) की एक श्रृंग चोटी टिफिन टाप पर हम लगे जहाँ से हम में से

बहुता का उत्पन्न म बड़ी मुश्किल मालूम हुई। कमला का एक जगह पैर बट गया, इसलिए उह डाँडी पर भेजना पडा। बाजार म आकर शरदजी के भी पर उठने मुश्किल हा रहे थे इसलिए उह भी डाँडी का सहारा लेना पडा। मभी लौटन पर थकावट से चूर चूर थे, लेकिन दिन बहुत अच्छा बटा, इस सभी मानत थे।

२३ मई का मनगुप्तजी के पत्र स मालूम हुआ कि भट्टजी अस्पतात् छोडकर बिना सूचिा किए दूसरा जगह चले गए जहाँ दस रुपय प्रतिदिन खच लग रहा है। कुछ रुपय उनक पास थे लेकिन वह कितन दिना चलत? उमी दिन हमन सम्मेलन का हिमाव करके बाकी रुपया भेज दिया जो अब एक तरह वाम से हाथ खीच लिया।

मधाली— कुमाऊँ लिखने की धुन थी। लेकिन हिमालय क किसी भूभाग का परिचय अधूरा ही रहता है, यदि उसम अपनी की हुई यात्रा का भी कुछ बणन न हा। माचवेजी भी तयार हा गए। हमन निश्चय किया, कुमाऊँ के कुछ म्याना का दवा जाए। डा० कसरवानी कितनी ही बार मिलकर और पत्र से भी भवाली आन क लिए तिव चुक थे। २४ मई को भाजन करके १० बजे हम तल्ला ताल के माटर-अड्ड पर पहुँचे। साडे ११ बजे भवाली की बस मिली और १२ बजे मनीटारियम पहुँच गए। डा० घर्मन कसरवानी अपन काफिस म थे। अपन बगले पर ल गाए जा ६३०० फुट की ऊँचाई पर था। पहले यह रामपुर-नवाव की सम्पत्ति थी। यहाँ जल्द्वर बाबू (छपरा) का देतकर और भी प्रसन्नता हुई। वह बकात्त छोडकर कितन ही दिनो म भारत सरकार क श्रम-परामाक (एयर एडवाइजर) थे। छपरा म हम राजनीतिक-अहकमी थ। निल्ला म भी उनसे एक बार मुलाकात हा चुकी थी। वह अपन काय से मनुष्ट नहीं थे। उनसे कम पापनावाले लाग हाईकाठ क जत्र बत गए थे इसलिए भी उनका मन नहीं लगता था। घनिष्ट मित्र होने के कारण मरी भी उहनि सहाह मांगी और मैंन भी इस पद को छोडने की ही राय दी। डा० कसरवानी गुरुकुल क स्नातक होने स हिन्दी और मसूतन के विद्वान और प्रमा थे,

इसलिए परिभाषा के काम में उनकी रुचि ज्यादा है। यह स्वाभाविक था। उनकी पत्नी जो महाराष्ट्र तरुणी हैं भी मौजूद थीं लिखना तो चाहते थे, लेकिन समय की दिक्कत बतला रही थी। मैं ब्रह्मा, किसीका रखकर डिक्टेट कराइए।

भवाली की पहचानियाँ चीट के जगत से देखी है। टी० बी० के लिए चीट की हवा अच्छी समझी जाती है इसलिए उसके जगल को और भी प्रोत्साहन मिला है। काम को टहलाने के लिए डाक्टर साहब हम बगले में उस तरफ रु चल जहाँ से नल का पानी जाता है। जलेश्वर बाबू भी हमारे साथ थे। रास्ता क्या पगडण्डी भी उन मुखिल से वह सकत थे। उस रास्ते चलना भर लिए भी मुखिल था पर जलेश्वर बाबू तो बहुत पछताने लगे। डा० केशरवानी की पत्नी की सखी कुमारी स्मृति सायाल भी इस समय अपनी दण माता का दयन यहाँ आई हुई था वह भी हमारे साथ थी। उम मुखिल की स्थिति में उन्होंने अपने मधुर कठ से कुछ गीत सुनावकर हम सताप प्रदान किया। भवाली में दा माँ एकड से अधिक भूमि सेनिटारियम के काम है और २४० रोगी रहत है। इसका आरम्भ १९१२ में हुआ था। भवाना की कमी है इसलिए और रागिया का लिया नहीं जा सकता। डा० केशरवानी जमनी के बड़े-बड़े अस्पताल और बड़े-बड़े डाक्टरों के सम्पर्क में रह चुके चाहत थे काम को कुछ आगे बढाए। लेकिन उनकी टॉप पकड-बर सीचने वाले लोग अधिक थे। उनका परा स्वभाव भी बाधक था। पीछे जा लाग उनके सामने इस ऊँचे पद का पान में असफल रह के मौके की तार में पड़े हुए थे। पहली अपनगी जात पाति शुठ सच सभी उपाया से वे उह नाचा गिराना चाहत थे। मेरे नैनाताल आने के बाद वे अपने उद्देश्य में मफल हुए और डा० केशरवानी का भवाली से दूसरी जगह बदल कर मान्यन के पद पर रण दिया गया। तब ही से सताप नहीं हुआ बल्कि तिद्धिद्विपा की मह पर डाक्टरों की सभा में इनका नाम सदस्यता में यह इतर गारिज कर दिया कि वह गुणगुण के आयुर्वेद स्नातक हैं। एंगोपयी डाक्टर नहीं। डा० केशरवानी ने इस विषय में मुझसे कहा, और वह

लेत गए। राम युनिवर्सिटी के वह एम० डी० थे, और जमनी म बड़े ऊंचे
द पर रहकर डाक्टर का काम कर चुके थे। हा वह जितना काम कर
सके थे, उसक लिए रास्ता बंद हो गया।

२५ मई का डा० केंसरवानी ने अपना गल्यगृह और मजरा की चीज
देखलाई। कुछ रागिया क भवना म भी हम गए। स्त्री रागिया की भी
गेठरिया को देखा। उहान हृदय क ऑपरेशन किये थे, वह भी दम्।
'दय का ऑपरेशन आसान काम नहीं है।

अल्मोडा—उसी दिन १० बजे हम बाजार मे मोटर के अड्डे पर
टूच गये। आठ रुपये म अल्मोडा क दो टिकट लिए। बड़ी गर्मी मालूम
मे रही थी। बड़ी-बड़ी छुवानियां देखकर मुह म पाना जान लगा। हमन
मे थाया और माचवेजी ने भी। बस आगे चली। डाक्टर के पास वाली
पैती सलागा न के करना शुरू किया। एक क बाद एक पूरी पैती लट
पई। फिर दूसरी पैती की भी बही हात हई। हमारी पाना आडे-बडे दा
री। माचवेजी सामन की सीट पर थे, जिसमे भी महामारी पट्टी। एक
क बाद एक बोर लुइन लग। माचवेजी ने बड़ी हिम्मत की, लेकिन आखिर
च नहीं पाये। उस दिन ता इतना हा रहा। उसक बाद तो छुवानियो म
उनका बिड हा गइ। नैनीताल मे गरद जी यदि दा छुवानी सामन रस दती,
हा मह माचवेजी का पारा गरम करन क लिए काफी थी। वह समझने के
आरे चिन्तन के लिए बर रही है।

रानी सेन रास्त म पढा, लेकिन उमे हम स्टेशन क लिए छाड गये।
राग एक जगह सदन का माड था। एक-दूसरे की बिना दसे आमन-मामने
में आई, और डाक्टर का जसा स्वभाव है, हान उन की जल्दत नहीं
समझा। उस दिन दाना के भिड जान म कोई बगर नहीं रह गइ थी,
किन्तु अन्न म महगाड पगड म घँस गया। डाक्टर न बर किसी तरह म
सका जीर हम बाल-बाल बचकर आग चले। ५ बजे अल्मोडा पट्टी,
समय हातल म टहन। नाम न भनकिए नहीं यह अल्लुल मामूग तरह का
साजा मामान बाग मजदूर हाटल था। बाजकल बापाग जी भी यही

ठहरे थे। उनसे मुलाकात हुई। हरिदचन्द्र जोगी प्रो० पाडे और कुछ और मित्रों का लेकर हम घूमने निकले। सुन्दरी मन्दिर में विष्णु की सुन्दर मूर्ति थी जो गुजर प्रतिहार या कल्चुरी काल की हासकती है अर्थात् अल्माडा नवीन स्थान नहीं है।

अगले दिन (२६ मई का) सारा दिन घूमने में ही लगाया। सबेरे नता दबी गए जिसे राजा दीपचन्द ने बनवाया था। त्रिपुर सुन्दरी मन्दिर में कई खण्डित किन्तु अत्यन्त सुन्दर मूर्तियाँ थीं। पुजारी से आना लेकर मूर्तियाँ का बाहर निकाल फाटा लाने का प्रयत्न बिल्कुल बबकूफी है। एस स्थानों के लिए गाली भर कर बन्दूक तयार रखे, और इतनी फुर्ती से दागे कि जब तक किसी का खबर लग तब तक काम बन जाए। मैं इसी नीति का मानन वाला हूँ। फाटा के लिए उन खण्डित मूर्तियों को बाहर निकाला। बुनियात पुजारा से डर लग रहा था। लेकिन जब उस मालूम हुआ कि हम फाटा ले रहे हैं तो वह भी पहिन ओलकर पास में बठ गई। वहाँ से हम लक्ष्मीदत्त जोगी (सठजी) के पास गये। वह सांस्कृतिक धस्तुआ के बड़े प्रमी थे। हस्तलिखित पुस्तक तथा दूमरी कितनी ही चीजें मग्न करके रखे हुए थे। दोपहर के भोजन के बाद कुछ क्षण विश्राम करने के लिए लेट गए। ३ बजे फिर चल। हरीश जोगी वकील के यहाँ एक छाटी-सी साहित्यिक गांठी थी। प्रा० प्रकाशचन्द्र गुप्त मगपाल में और कुछ स्थानीय साहित्यकार वहाँ आय थे। भाषा के बारे में मैं भी अपनी राय देते कहा कि प्राणैगिक भाषाओं का अपने प्रदेशों में सर्वोत्तम रखते हुए भी सार देण की एक सम्मिलित भाषा की हम अनिवार्य आवश्यकता है यदि हम हिन्दी का यह स्थान नहीं देने, तो अंग्रेजी से हमारा पिण्ड नहीं छूट सकता।

बटारमल—धुमाऊँ के सबसे पुराने मन्दिरों में बटारमल भी है। यह नाम पढ़ने का कारण क्या है इस नहीं कहा जा सकता। पर यह मूय का मन्दिर था। जो बनलाता था, यह गुजर प्रतिहार काल से भी पढ़ने का ही मरता है। मूय की बूटधारी प्रतिमाएँ गणों के साथ भारत में आकर स्थापित हुई। माड़े गाँव बजे की बस से चलकर नीचे वासी नदी के किनारे

का एक दूकान में हमने अपना मामान रख दिया जो कि मन्दिर की आर-
 चक पड़े। पहले गाँव मिला जिसमें ८० ९० परिवार रहते थे। नायक,
 गंग (राजपूत), ब्राह्मण और गिणिकार (हरिजन) सभी थे। मन्दिर के
 पुजारी गंग थे जिन्होंने देवता से मदद दी। मन्दिर भग्नावस्था में था
 बहुत-सा मूर्तियाँ थीं जो अधिक मुट्टर रही हागा जिन्हें अग्रज मैलानी या
 क्यूरिया व्यापारी उठा ले गया हागा इसमें नष्ट नहीं। उसमें तीन चार
 से साल पुराना नक्काशी का काठ का दरवाजा किमी म्यूजियम में सुर-
 णित रखन लायक था। मूर्त की वृद्धिधारी तीन मूर्तियाँ थीं। गिण और विष्णु
 की भी मूर्तियाँ थीं। मन्दिर के जगमान के सामने के खम्भे पर कुठिया
 अक्षर में तीन पत्तियाँ का लख था जिसमें मल्लिक साफ पढ़ा जाता था।
 मल्लिक मल्लिक पीछे के क्यूरिया का भी उपाधि मिलती है। चन्द्र का म
 पढ़ते कि किमा राजा ने इस मन्दिर का बनवाया हागा। गिण के एक
 तिहाई भाग गिर चुका था। इस प्राचीन मन्दिर के नष्ट भ्रष्ट करने का अप-
 राध १७४० ई० के करीब हुआ न किया। वे धातु का मूर्तियाँ का गंग कर
 दरव बनाने के लिए कमर माय लिए चलते थे, इसीलिए धातु की मूर्तियाँ
 मन्दिर में नहीं मिलती। पत्थर का मूर्तियाँ किमी काम का नहीं था, इसलिए
 उहमग मग करके छाड़ देते थे। एक धर के पास पट्टुचकर में पुजारी में पूछ
 रहा था, नायक लागा के घर कहीं है। पुजारी ने मुझे चुप रहने के लिए
 कहा और पाछे बनलाया कि ये घर नायक लागा का है। पूर्वी उत्तर
 प्रमग के गणव लागा की तरफ महीं के नायक लागा धानधानी के व्यावृत्ति का
 पगा करते रहे या करने के लिए मजबूर थे। उनकी लक्ष्मियाँ यहीं या नीचे
 देग में इसक लिए चला जाता थी। बनमान गनाला में उनमें एक लिए
 फडा आन्दागत हुआ जिसमें इस प्रया का मतम कर दिया। अब ता के
 नायक नाम भी सुनना नहीं चाहते।

मुख्य मन्दिर के पीछे के मन्दिर में एक बगह पत्थर पर गुप्ता हुआ था
 'जगम राउत जागी जान राउत जागा।' जगम पणुपना (गंगा) का कहते
 थे, जो अब उत्तर भारत से नष्ट हो चुका है, और ब्रह्म देश में बनाए,

तमिलनाडु में वीर शैव का नाम में मौजूद है। दक्षिण का गांधी ने ही बनारस में जगन्नाथजी का नाम से अपना प्राचीन मठ कायम कर रखा है। पहाड़ में पाण्डुपत घम समय पाँचे तक रहा यह इस अभिलेख से भी पता लग रहा था।

किन्नर देश में मैन पुरान काल की कला और चाजो का देगा था और जानता था कि उस समय लोग मुर्दों का श्रावण की कुपिया जीर भाजन मरे बरतन का साथ कला में स्फुर्तात थे। मैं समझता था यह प्रथा सारे हिमालय में शानो चालिए। अन्धाटा से वम म आते समय एक सज्जन ने बतलाया कि रानीखेत के पास हमारे गाँवा में भी ऐसी कला निकलनी हैं जिह लोग मुसलमाना की कला बतलान है। चूकि उनम खान पीने के बरतन निकलान हैं इसलिए य मुसलमाना की कला नहीं हैं यह निश्चित था। कटारमल दक्कनर कोमी के किन्नारे अपना सामान लेकर माटर से बजनाय की ओर जान के लिए आय। दापहर रहा गया था। भोजन किया और बस पर खाना हुआ। श्री हरीग जानी का मीट जलमाडा से हा रिजब कर कर हमारे लिए गण थे नहीं ता यहाँ से बस में जगह मिलनी मुश्किल हाती। दाना तरफ के पहाड़ कीड के दरखला से ढँके थे। कही-कही खाली जगह या खेत भी मिलत थे। मामावर काफी बड़ा बाजार है यहाँ एक पुराना मन्दिर भी है। वहाँ में आगे चलकर कोमानो पहुँचे। क्विवर पल्ल जिम घर में पैदा हुए थे उस घर का भी दखल। कोमाना मुन्दर और ठण्डी जगह है। जगला में अधिनतर चीर के स्तम्भ हैं। कोमानो के डाँठे पर पहुँचकर मामन हिमालय श्रणी लिपार्ई पहा फिर वम नीचे उतरने लगी। धूम धुमौवा राम्ने में ६ बज हम गाना पहुँचे। अभी माटर-मठक यही तक आई थी आगे बागवर तर उमक जान में अभी कुछ वर्षों की देर थी। मामान उतरवा कर हम बजनाय मन्दिर का आर चल जा वहाँ से आष मीन से ऊपर तथा ननी के पार था।

बजनाय—गाना लिपार्ई तब बजनाय कुमाऊ का राजधानी रत्ता। कन्तर कुमाऊ के मम्मिलिन राजा बत्सुरी राजाया का राज्य जय छिन्न भि न

हुआ, ता तब गया अपनी पुरानी राजधानी जोशीमठ छाटकर वैजनाथ (वज्रनाथ) में आ गई। राजधानी के लिए पहाड़ में भी काफी ममता और सुरक्षित स्थान ढूँढा जाता है। वज्रनाथ में यशना गुण २। एक तरफ कोसानी का ऊँचा गिरिप्राकार था, और दूसरी तरफ गामनी क निकास का द्वार। यहाँ से द्वागहाट और जागीमठ का भा जानवाल रास्त थे। अब भी वज्रनाथ का बहुत भा माँ गण्ड में माटर से उतरकर मा रास्त जागीमठ जाता है। गण्ड से हा भूमि चौरम मो हा गढ़ है, जिसमें बड़े बड़ मपाट सेत चड़े गए हैं, जो पहाड़ के लिए असाधारण स हैं। वज्रनाथ में गामद हमार बारे में चिट्ठा पहुँच गई थी, इसलिए कुछ परिचित पुरप आ गए। हरीशजी के साथ रहने में और भी सुभीता हुआ। माटर से उतरकर हम बाजार होने आगे बढ़े। माटर का अन्तिम बड़ा हान में यहाँ का बाजार काफी बड़ा है जिसमें हमारे सामान के नागविक मानविक लाग भी काफी थे। जाहार और गरव्याग के निवासों में भाद पदिचमी ति-वन के सबसे बड़े व्यापारी हैं जो माल तरादन के लिए बम्बई-कलकत्ता तक पहुँचते हैं। उनकी दूकानें यहाँ क्या न हाना? म समय गाम के ६ वन चुके थे, इसलिए हम पहले त्रिवान पर आना था। मन्त्रि का पुत्रमुट, जिस वज्रनाथ कहते हैं, यहाँ से प्राय माल भंग था। गामना का पुल पार करने दाहिने मुड़कर गामनी हा के एक धुमाव पर वज्रनाथ है। एक अछे साफ सुथरा कमरे में ममवा टहराया गया। अन्न की समस्या सार भारत में ही आजकल कठिन थी, और कुमाउ गणवा ता अन्न के बा में स्वावन्म भी नहीं हैं। त्रेकिन, यहाँ भी दो चार दुकानें थी, जिनमें खान का सामान मिल गया। श्री जय-बल्लभ ममगाई ने मरा सहायता में का कमर उठा रहा।

अगले दिन (२६ मई का) वज्रनाथ के निम्न निम्न मदिग और उनकी मृत्तियाँ का दगा। अष्टभुजा भगवता का काफी बड़ी मूर्ति बहुत गुत्तर है। बाघिकाग मृत्तिया का गल्ला न ताड दिया और मदिग भी टूटने के लिए छाड़ दिया। प्रधान मन्त्रि का चिह्न भर अवशिष्ट है। मन्त्रि, राजा का राजमहल यहाँ से कुछ दूरकर तलीहाट में था। कुमाउ-गणवाल से

पुराने समय में हाट बाजार का नहीं, बल्कि राजधाना का वाचक था, जिस नाम के साथ हाट हो वहाँ अवश्य ही पुराने मन्दिर या अवशेष मिलेंगे यह द्वागहाट और दूसरे हाटों से सिद्ध है। तेलीहाट क्या नाम पडा ? तेली शायद किसी शक्ति का बिगडा हुआ रूप है। जैसे ग्वालियर के तिले में तैलप के मन्दिर का तेली मन्दिर कहकर किया गया है। गाव में चौपड चतूतरा दिखा कर बतलाया गया कि यही राजा रानी चौपड खेला करते थे। बहुत सम्भव है यही राजा का जन्म पुर रहा हो। नारायण मन्दिर की मूल मूर्ति इस वक्त गणनाथग में रखी हुई है। मन्दिर खाला है। रावरा मन्दिर भी गाव के भीतर है। लक्ष्मनारायण मन्दिर गाव से बाहर है जिस पर गांव १२२४ (सन् १३०२ ई०) का लेख है। यह भी मालूम होता है कि राजा हमीरदेव ने इसे बनवाया या मरम्मत करवाया था उनका गुरु या महन्त लिंगराव दे थे। रानी धारादेई ने मन्दिर पर सुवर्ण बल्लभ चढवाया था। एक दूसरे लेख में किकरा लावा रावल पाल्ह १४२१' लिखा हुआ था। १४२१ भी गांव ही होगा जिनका मतलब है कि रावल पाल्ह १४६८ में हुए थे। रावरा मन्दिर भी गूँथ मन्दिरों में से है। गाँव के बिल्कुल बाहर खेतों में सत्यनारायण का जन्म घरेलू मन्दिर है जिसकी मूर्ति पुरानी नहीं है अर्थात् १७४२ के भी बाद की होगी। पुरानी हाती तो रहल बिना खण्ड मुण्ड किस किस रहते ? पुजारी वण्णव थे। पहाड में साधु रहना बसा ही मुश्किल है जैसे स्वर्ग का अप्सराओं के बीच। बजनाथ के महन्त भी कभी दगनामा साधु थे और अनेक बसन्तों का एक गाव बग गया है। वही खान यहाँ साधु की हुई है। बजनाथ तेलीहाट और दूसरे प्राचीन स्थानों में जितनी मूर्तियाँ आज दगी जानी हैं पहले उनसे कहीं अधिक थीं। लोगों ने बजनाथ कि गामनी का जब पुल बनाने लगा तो उसमें गाडिया में मूर्तियाँ लोकर नाव में डाल दी गई। सारनाथ के रत्न पुत्र के बारे में भी हम यह बात सुन चुके थे इगण्ड अविश्राम करने का कोई कारण नहीं था।

लौकर बजनाथ के मुख्य मन्दिर के बाहर की सुन्दर देवी मूर्ति का दसा। पास के एक मन्दिर पर खुदा हुआ है भयकरनाथ जागी। नाथ

से गारलनाय पथी भी हो सकता है, दमनामिया म भी नाय की उपासना का प्रचार है हो सकता है यह नाय जगम (वीर शैव या पाण्डुपत) रह ही । हम मालूम है उत्तरी भारत म मवस पाछे तक पाण्डुपतयर्मी लाग हिमालय प्रन्त म रह्ने थे । पुगनत्र विभाग का ध्यान महा की बहुमूल्य मूर्तिया की आर गया था और उमने एक मूर्ति गानाम जनाकर उमम २८ मूर्तियाँ मुरगित गव दी हैं । एक मूर्ति के ऊपर लिखा था "महाराजाधिराज परम भट्टारक श्री लखनपालददम भूमिना राजा त्रिभुवनपालददव दाः ।" "लखनपाल वैद्यनाथ कार्तिकवपुर" लेख से माफ हा है कि राजा लखन पाल वैद्यनाथ (कार्तिकवपुर) के गामक थे । कार्तिकवपुर राजधाना का नाम था जा गामद कत्युरीपुर का मम्भूत रूपान्तरण है । कत्युरी-का १४वीं १५वीं तक कुमाऊँ का गामक रहा । उमक बाद भी उमरी भिन्न-भिन्न गामवायें भिन्न भिन्न जगहा पर गामन करती रही । उमरे बार म और अपनी इम मापा के गम्ब ध मे भी हम कुमाऊ म लिन चुक है । लेगा म यह भा पता लगना है कि लखनपाल के बाद लद्पाल और उनक बाद त्रिभुवनपाल हुए थे । त्रिभुवनपाल म श्री वैद्यनाथददम भूमिनाल सुरनराउठ भूमि लीयमाना सुवणनाठ ' लेग लिखवाया था और भूमि और मान का गान लिया था । वैद्यनाथ म म्थ का बूटगारी मूर्ति भी मिला । यह बहुत सम्भव है कि एक काल म हिमालय क रणो पर गवा का पाफी प्रभाव पडा । यह क्या मागूम हागा कि मध्य-गमिया म दाना का उदगम एक ही था । हम यर्ी स आज ही बागदरर (ध्याघ्नेत्र) जाना था । घाडे की आगा म मध्याह्न का नाजन करक हम बटून दर तक इल-जार करन रह । जय उनर आन की जागा नगी ग्ही, ता माडे ४ बजे नाम भर की चीजें कधे पर रग हम दाना चल पडे । कुछ दूर जान पर थी मम-गाइजी दीये जाण और कल कि घाडे आ गा । हम घाड पर जायें और बह पैल, यह हा नही सकता था दमगिा हमों घाड का रकर चल पडे । आगे घाय का दूवान क पाम पहुँवन पहुँवन जार की कर्पा आई । कुछ दर करना पडा, फिर मल्लार रान का कमडा गाँव म ६ बजे पहुँव । यह गम्ना

काफी चातू मालूम होता है। आमपाम व पहाडों में बहुत स गाव भी हैं, इसलिए सड़क पर जगह जगह बनिया न दुकान खाल रखी हैं। हम रहने व लिए सिर पर छा मिल गई। घान्नेवाला न भोजन प्रताया। गन्ने में माचवेत्री एक जगह घाडे की पीठ से जमीन पर आ गए। जिनके पुर्णे घाडा की पाठ पर रहे सारे भारत का विजय करन में एक बार बरीब बरीब सफर हा गठ थे उनके लडके गुल्लकाकपण के बल पर घुसवारी करें यह अचरज का बात थी।

घान्नेवर—जगल दिना (२६ मई का) अघेरा गहन ५ बजे हा हम चल गिये। रास्ता जट्टा था। माटर की सड़क का काम भी शुरू हा गया था। चाहिए था मील मील सड़क तैयार करन आग बढ़त लेकिन क्रिया गया था सड़क का सब जगह चागाया जाए और पुल का काम का पीछे के लिए छा दिया जाए। जब बजट में खपता नती दिमाई पटा तो जहाँ नहीं बनी सड़क का बिगडन के लिए छाड दिया गया। साठ ६ बज तक हम साठे चार मील की यात्रा पूरी करके घान्नेवर पहुँच गये। काफी बड़ा बाजार है। यहाँ साल में एक बार भाट और पहान के व्यापारिया का कई टिना का एक बडा मला लगता है। बतनास स आनवाली गामती और दूसरा तरफ से जानवाली सरजू का यहाँ सगम—त्रिचणी—है। बतना मना रम स्थान है। अधिकतर दूजानें और बाजार नती के पार बसा हुआ है। पर सरजू के पार भी बस्ती और कितने ही साधुजा के स्थान हैं। ध्याघरे-ध्वर में बत्तूरी राजाभा का एक गिलालय था जिस दरतन का सास आनपण था पर माउम हुआ वह चारी चला गया। मन्दिर के गंगा की तरफ जानवाले दरवाजे पर पत्थर की दो अप्पाकृत बड़ी मूर्तियाँ पडी हुई थी। इन्हें मूर्तियाँ नहीं कहना चाहिए, क्योंकि बहुत गौर में दायन पर ही जाहार प्रसार मूर्ति का मिलना। ये अप्पाम्य मुग्ग में बुद्ध की मूर्तियाँ थीं। एगो हालत में क्या? तापद जिस मन्दिर में ये मूर्तियाँ था उसमें जाग लगा कर जला लिया गया और ज्वालाम आग का पत्थर का भाग तिनककर निकल गया। १७४० में रहल ठूट पाट करल मार कुमाऊ गढ़वाल में दौड था।

उन्होंने मन्दिरों में आग लगा और मूर्तियों को तोड़ कर मवाद में गिरा दिया था। अक्सर वे एक नौकरों में हट जैवर्गल मुहम्मद हुसैन मुहम्मद न भी पहाड़ पर जगल बाली थी। जानी है, १९३० के आसपास और १९३० के मध्य में इस प्रकार का बारा मूर्ति नष्ट कर मन्दिरों में जहादा यहाँ पहुँचे थे। बागल के मन्दिर का भी उस वक्त मूर्ति नष्ट होगी, लेकिन दोवार अधिकतर पत्थर की थी विनाल गिराई में पागु पत का चिह्न नहीं मिलता जैवर्गल बगल में दो-तीन छोट छोट मन्दिर हैं जिनमें खण्डित मूर्तियाँ में मुसदुस्त लिए भी है जा बतलाते हैं कि यह पागु-पता (लबुलीगो) का एक समय गढ़ था। बल्युरी गिलालेत में व्याघ्रेश्वर महादेव का भूमि दान का उल्लेख है और यह भी कि राजा क मित्र किसी किरात-पुत्र न भी अपनी जमीन दान दी थी। हिमाचल में बल्युरी सोमा से लेकर नेपाल के उत्तर हात बम्बुज (बम्बाडिया) तक विनाल मोनरमर जानि का पता लगता है। आज तिब्बत के सोमाल पर भी मुस मुसवानी जो जानिपाँ मिल रही हैं उनमें से अधिक विनाल निम्ननी छान मान् कहते हैं। जोहार गरव्याग, नीति बाल्य व्याघ्रेश्वर में कुछ ही दूर पर आस्वाट में बल्युरी किराती (राजी)—उसा वग की हैं।

किया। एकाध मकाना में अगूर की लताएँ देखी, उनके फलों के लिए चार महीने तक यहाँ रहना चाहिए था। सम्भव न देखकर हमने वहाँ से अगूर जरूर खटटे हारे। बल पगवा क सेनानी के बराबर दाई हाथ के टट्टू से जमीन पर आ पड़े थे उससे हाथ में कुछ चाट आ गई थी। अस्पताल देखकर उपचार के लिए हम वहाँ पहुँच गए। डाक्टर साहित्य में प्रेमी हैं, यह काम ही दिया जाता है लेकिन यह थे। उन्होंने पिछले ही हफ्ते दिल्ली के 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान' में छपा मरा एक लेख पढ़ा था और नाम से पहचान ही परिचित थे। यदि हम ऐसा समय हात में यही सामान छोड़ना होता। खर कुछ देर तक बात हाती रही। गांधी आश्रम के उनकी कतार-बुनाई के कदम भी दगा। १२ बजे हम खाना खा गये। दाईं मील चलने पर जोर की आँधी आई और डेढ़ घंटे के लिए हम एक दूकान में गिरण लेनी पड़ी। आज हाथ में टिकट का इंतजाम करना था जिसका मिलना आसान नहीं था। इसलिए हमने घाड़ों का पर बढवाया और ६ बजे बजनाथ पहुँच गए। एतदसमय विश्वास करने से काम नहीं चलता इसलिए स्वयं टिकट लेने के लिए गुरुद्वारा पहुँच। जवाब मिला—'बल दग। क्या पता बल टिकट मिलगा है?'—'यत्न कृतं यि यदि न सिद्ध्यति कोऽपि दाप।' दर गुरुद्वारा का देखा और सामने बजनाथ की आर के पहाड़ों के ऊपर मजबूत हिमालय के उत्तम गिरा—त्रिशूल आदि की पीठा का भी। बजनाथ में दानो मलानिया के आन की खबर लग चुकी थी। रात का डाक्टर स्कूल के अध्यापक तथा दूसरे साहित्यप्रेमी आ गए, जिनसे देर तक गप्पें खाता रही, हम दाना बारी बारी से बालत रहे।

द्वाराहाट—बजनाथ से पहाड़ी ढांडे का पार कर एक सीधा रास्ता भी द्वाराहाट का जाता था जो आठ घंटे माल से अधिकांश लम्बा नहीं था। लेकिन हमें छ महीने के नहीं बरस दिन के रास्ते का पसंद करते थे, इसलिए लौटकर रातमें ही द्वाराहाट जान की टानी। माटर में जगह मिल गई और साढ़े मान बज हम खाना हो गए। चौसानी में दो मिनट के लिए उतरे फिर मोमबत्तों में पहुँच। यहाँ से अपभावन कुछ मरल रास्ता द्वाराहाट

को जाता था। घाडे मिलने तो गायद हम इसी रास्ते चल देते लेकिन उसकी सम्भावना नहीं थी। वस्तुतः सवारों या भारवाहकों का अच्छा और बराबर का प्रबंध तभी हो सकता है जब यहाँ बराबर मैदानी आते रहें। छोटे-छोटे आनेवाले सैनिकों के लिए कौन अपने घर से खा पीकर यहाँ इंतजार करता रहेगा? कामी पुल पर जरा देर रुक कर उसी बस में हम रानीखेत पहुँचे। डी० सिंह हाटल को दग्वर वही भाजा के लिए चले गए। फिर हिंदों के कथाकार अणावजी (श्री जमुनादत्त पांडे वगैरे) मिल गए। जब भाई विरार्ली का आत्मा मियाँ जाय तो भाई स्थान अपरिचित बस रहे सकता है? लेकिन, हम आज ही द्वाराहाट जाना चाहते थे। क्या था कि इतनी हड़बड़ी करने की क्या जरूरत? लेकिन भूतकाल क और वर्तमान काल क क्षण में अंतर होता है भूतकालिक क्षण टक सेरस भी मसने मायूम होत हैं। हमने अपना सामान अणावजी के पास 'जीवन-विलास' में रखा और पैदल चल पड़े। घाटों क मिलने की न सम्भावना थी, और न आगा में हम बैठे रहना चाहते थे। आगा निला क लिए किसी न कह दिया था कि गगास के पुल पर घाडे मिल जायेंगे जा यहाँ में साडे पाँच माल उतर कर पहना था। बदरीनाथ जानवाला क कुछ रास्ते एक ही हैं लेकिन लौटनेवाले यात्री गगासागर का गगा की तरह सूर्यधार में बह जाते हैं। इन्हीं में एक चौखुटिया से द्वाराहाट हाकर रानीखेत में मोटर पकड़ बाठगालाम ग्लवे स्टेशन जाने का है। मोटर चलता दग्वर हममें क कितने ही समझते हैं कि अब भाई काहका पैदल चलता होगा लेकिन बरानाम के यात्री अब भी बट्ट से ऐसे हैं, जो भुक्किल से रल के लिए कुछ रुपये जमा कर पाते हैं, और जाते मलू चौखर पहाड का सारी यात्रा पैदल बिना पैस की करते हैं। हम महक पर चलते बदरीनाथ क लोटे कुछ यात्री मिले जा बल्ला रहे थे कि वही चावल दा गगास भर मिल रहा था। गगास क पुल पर कोई घाटा नहीं मिला, और न आने दह-माह में ही। बगदा का भा वही हालत रहा। उसमें कुछ पल्ल मन्क की एक शापडी में चार छोटे छोटे बच्चा और बीबी के साम एक

मिला। पूछने पर पता लगा, उमन देग के लिए कई बार जेल काटा है। उसन कुछ चिलम रख छाडी थी, जिनको पहानी लोग खरीदते थे। वही गुजारा का साधन था। कह रहे थे—बच्चो का कोई प्रबन्ध हो जाय, बस मुझे इसी की चिन्ता है। किसी के बच्चे भी अनाथ हों, यह असह्य और असह्य बात है। आधी दुनिया में बच्चो का अब अनाथ होने की जरूरत नहीं है। उनके माता पिता सरकार है, लेकिन हमारे यहाँ अभी जनतांत्रिक अहिंसामय समाजवाद की बाट जाही जा रही है।

कफन से चलाई चढ़नी पडी तल्लामिरे पहुँचे। नया घर बन रहा था जिसमें धूप के लिए चिमनी भी लग रही थी। उसने अच्छे दिन आए थे कफन से इस तरफ क पहाड वधा गूय है। जान पडता था हम तिब्बत में आ गये। इन वधा का सहार आदमी के हाया ने किया। मुझे हरे या नगे पहाड याद आ रहे थे और बीच बीच में चुट्टल करने की भी इच्छा हाती थी लेकिन माचवेगी की बुरी हालत थी। उतराई में ता कोई बात नहीं थी लेकिन षढाई भारी आदमी के लिए भली नहीं मालूम होती। पैर पूर चुके थे और वह हिम्मत करक ही चल रह था। डर लगन लगा था कि हम मलगी मरे तर नहीं पहुँच सकेंगे। इसी समय हिमालय के देवनाआ का दया आई काई पाली घाडेवाला मिल गया। खर हम लोग उन पर चढ़ कर वहाँ पहुँच। चलाई पार कर गए फिर उतराई थी। रास्ते पर ही चडेमर (चन्द्रेवर) का पुराना मन्दिर मिला जिसमें बितने ही बत्तूरी या गुजर प्रतिहार काठ की गण्डित भूतियाँ मिली। उसी काल की भूतियाँ जिनकी बुदलगण्ड क सजुराहा में मिलती हैं। इनमें वराह की भी एक गुत्तर छाती-नी भूति थी। अभी द्वाराहाट आगे था लेकिन उतराई में हिम्मत बड़ा दा थी माय ही सहायता देने क लिए दूध की तरह छिन्की चाँदनी। आ गई थी। चाह माटर की न ही, पर यह सडक थी, इसलिए भूलन लचन का डर नहीं था। यहाँ क मत्त एटातागपुर क से जान पडन थे। मत्त में हम द्वाराहाट पहुँच गए। किसी समय यह हाट (राजधानी) रही होगी, अब हजार बारह नौ लगा का एक बडा गाँव है, जिसमें बहुत सी

दुकानें बाजार की तरह पाता स लगा हुए हैं। रानाखन स किसी न श्री जमरनाथलाल शमा का पत्र द दिया था। उनक घर पर पहुच। उनक भाई हरिचन्द्र पत्र बढे उत्साहा सहायक मिल गय। नेपाल की तरह का कई मजिला का और अधिकतर काठ का मवान था। सबम उपरत भाग पर सान क लिए स्थान मिला। डायमटीज क लिए मान का बह स्थान मुवत नहा हाना जहाँ पान म पगाव का प्रयथ न हा। रान का जिना खाव पलजी कस सान दन, यद्यपि हम लागा का उस थकावट म सबम प्रिय भूख था। एक हा दिन पटल ता हम बागवर म थ और उमर दूमर हा दिन द्वाराहाट पहुँच गय।

मवर निकर पढे। चाय पीन क लिए घर पर इन्जिजार करन म किसी दुकान पर चाय पीना अच्छा था इसलिए मजवान क आप्रह पर भी हम दाना उठ लढे हुए पय प्रत्यान हरिचन्द्रजी थ। द्वाराहाट म बहुत दूर तर पुरान नगर क चिह मिलन हैं और मन्त्रिा की मन्था दजन क करोव हागो। कई मन्त्रिा का मुग्गिन घापिन कर दिया गया है। य मन्त्रिा विलुल खाली थ। आतिर दूनी पूनी भी मूर्तियाँ ता कहा हानी चाहिए। पर जब पिछर मौ साला क मूर्तिचारा और मूर्तिमक्ता पर ध्यान देगे तो नारण मालूम हाना मुक्किल नही हागा। मूर्तियाँ भूगाल क भिन्न भिन्न भागा पर बिगर गई हागी। कितनी ही इगलण्ड म कुछ पुरान म और केतना हा अमरिका भी पहुँच गई हागी। मृत्युजय मन्त्रि म जान पर रवा सती क आमपास की कुछ दूनी पूटी मूर्तियाँ मिली। द्वाराहाट म भी नगा का कन्ना का वान सुनन म आर्ष और बनठाया गया इनम मिट्टी क बरनन मिलन हैं। धूमन घामन नगी पार कन्तर मन्दिर म गए। यहाँ पीतल की पादवनाय और पत्थर की तीथकर मन्त्रीर का मूर्ति दना। पातक की मूर्ति का बालगापाल बहकर पूजा जाना था। द्वाराहाट जब राजधानी थी ज समय वहाँ क सम्पन्न सठा म काई जन धम का भी मानता हागा। पाँच पीठा पहल भरवगिरि पक्कड माधु यहाँ आए, जिनरा सनाने यहाँ रहती हैं। नगा पार कर हम बाजार लौट आए। नगा क्या नागा है।

लेकिन जहाँ साल में ३०-४० इंच पानी बरसता हो, वहाँ पानी या दुःख क्या? ऊपर बाँध-बाँधकर भारी जलनिधि तैयार की जा सकती है लेकिन यह काम यहाँ के बारह सौ जीव तो नहीं कर सकते। यदि जलनिधि तैयार हो जाए, तो यहाँ दमिया हज़ार बहुत अच्छे से न मोतिया जैसे चावल का उगाने के लिए तैयार हैं। रतनेवक मन्दिर में गए। यह सात मन्दिरों का झरमुट है जिनमें एक में भा मूर्ति नहीं है। मया मन्दिर में भी उसी तरह सात मन्दिर हैं। गायद मप्तमातवाएँ यहाँ कभी पूजी जाती थीं। मन्दिर का चहारदीवारी में एक जैन मूर्ति देखी। और मन्दिरों की तलाश करते करते पंडित जवाहरलालजी के शर्म पुराने प्राइवेट मशेंटरी श्री गिवदत्त उपाध्याय के घर के पास पहुँचे। उपाध्यायजी घर पर नहीं थे। पास में कालिका का स्थान है जिसमें भा तीन खण्डित जैन मूर्तियाँ (पावनाथ, महाभार की) देखी। फिर द्वाराहाट के सबसे पुराने दामजिला मका का देगन गए जिसने गायमा गायन का देवा था लेकिन अब गिरन की प्रतीक्षा कर रहा था। इस ता ऐतिहासिक स्मारक के तौर पर सुरक्षित रखना चाहिए। कचनी गायन राजा की बचतरी रही है। यहाँ दम गियरदार मन्दिर हैं। मूर्तियाँ तेलिया (काल) पत्थर की हैं। गुरद्वेज का मन्दिर किसी समय यहाँ का सज्ज भय मन्दिर रहा होगा। गुरद्वेज से गायन गुजर प्रतिहार राजा अभिषेक है। इस मन्दिर की सारी दीवार गुदर मूर्तियाँ और नक्काशी में भरी हुई थी। अब मन्दिर का निचला भाग ही बच रहा है। ६वीं ११वीं शताब्दी में यह भूमि गुजर प्रतिहार के हाथ में थी इसमें ता मदह नहीं। कनीज में प्रतिहार का क अपदस्थ हान पर भी उमरा कोई हाटा माना राजा गन्तवारा क अधीन रहत यहाँ गायन करता हा ता जाचय नहीं। मन्दिर के भीतर एक गुदर खण्डित मूर्ति है। बाजार पार कर मियान्द की पाखरी के पास बने नम मन्दिर में कितनी ही गण्डित मूर्तियाँ देखी। मियान्दे पोखरी सूख गई है। बदरीनाथ के मन्दिर में खनी एक चूटपारी मूर्ति की मूर्ति भा है।

भोजनापरान्त हमने रानीगढ़ की ओर मुड़ किया। रास्ते में ही हाई

स्कूट था, वहाँ गया। अध्यापक से घंटे भर चर्चा होती रही। पता लगा कि द्वाराहाट से बदरीनाथ की आर थोड़ा ही बढन पर गिला म मूर्तियाँ खुदी हुई हैं। यह भी बनना रहे थे कि यहाँ की खेती राम भरासे हाती है, अर्थात् वर्षा के मार पानी को वह जान दिया जाता है। द्वाराहाट म १४-१५ घंटे म ही काफी परिचय हा गया था, इमलिए किराये पर दो घाडा व मिलने म दिक्कत नही हुई। हम साँ १२ रजे रवाना हुए, और साढ ६ रजे अशोकजी व स्थान पर पहुँच गये।

रानीखेत—रानीखेत आधुनिक अथ म म्मालय की सप्तपुरिया मे है। अग्रजा न गर्मी स वचन व लिए इनकी स्थापना की थी। रानीखेत मुख्यन सैनिक छावनी का काम देती रहा। फिर भारतीय नवशिक्षित लक्ष्मीपाम भा इन पुरिया म लाभ उठान लग। अगावजी एक तरुण स्वनिमित्त कुशल चित्रकार के पास ल गये। यदि वाक्यादा गिशा पान का अवसर नही मिला, तो यह राष्ट्र का दाप है। लेकिन चित्रकला व भरास जोना जानकल मुश्किल है। बढनेर प्रतिभावान चित्रकार फागोग्राफी स शरीर-यात्रा चलान के लिए मजबूर हैं। वही बात इनकी भी है। सवम अविक आकषक चाज उनका थापा का सग्रह था। विवाह या उत्सव आदि के समय दीवार पर थापे या रगवल्ली (रगौली) बनाने का रवाज है उसी तरह जँम मधुर राकगोता के गान का। गीता का अब भी मधुर और अभ्यस्त कण्ठ मिल आत हैं लेकिन थापा व भाग्य म एसा बहुत कम दया जाना है। उत्तरी भारत म सभी जगह थापा के नाम पर चिहारी खीचा जाती है। यदि लडकियाँ बडी बूढिया म कुछ समय लगा कर ध्यानपूर्वक सीगनी रहनी ता इन चिहारिया की नोबत नही आता। चिहारियाँ भा अपना मूल्य रगतो है दमम म देह नही। मैं समयना हूँ कि उत्तर भारत म कला की रट्टि से सबसे सपृष्ट बुमाजों के थाप हैं। इनका कागज म उतारने की भी प्रया है। तरुण चित्रकार न मकडा थापे बडे परिश्रम स जमा किय हैं। इस साल (१९५६ ई०) श्री अगावजा म मातूम हुआ कि उनका सग्रह और भी आगे बढा है। यह राष्ट्रीय निधि हान लापन है और इन दिल्ली की

राष्ट्रीय चित्रगाला में सुरक्षित रखने की जरूरत है। निजी मद्रहा के नष्ट हान की संभावना जाना है क्योंकि उत्तराधिकारी भी उनके साथ वही भाव रख यह बहुत कम देखा जाता है।

रानीखेत पहाटी रीठ पर दूर तक बसा हुआ है। जिधर दगों उधर चीठ के दरारें हैं जा कि हिमालय के कुरूप वक्षा में से एक है।

दापहर का २ बजे रानीखेत से खाना हुआ और साढ़े ४ बजे भवाली पहुँच गया। उसी दिन २ बजे बाद तल्लीताल में उतर, नाव से मल्लीताल, फिर ६ बजे आकर राज में पहुँच गया।

ननीताल—ननीताल का जीवन शुरू हो गया था। डा० गारख प्रसाद और डा० अमरनाथ या से मुलाकात हुई। अठारह बजे बाद ५० रुद्रदेव गास्त्री से मिलकर बहुत हँस हुआ। छाटा-भा बंद जिस पर प्रभाव लाने के लिए पण्डितजी ने दादी पालन का किसी समय रहस्य बतलाया था अब वह त्रिकुट सफल हो गई थी।

४ जून का कुठ ज्वर का मालूम हुआ। १० बजे ९७ डिग्री, १२ बजे ९८ / डिग्री ३ बजे १०० डिग्री जीर ६ बजे १०० डिग्री तापमान रहा। उम दिन भाजन नहीं किया। अगले दिन भी उपवास रखा और ४८ घंटे के बाद सांठाने के पथ्यवाल उपवास से ज्वर न बिगई ले ली। पहाट में माम भक्षण सदा से विहित रहा है लेकिन गिनार के मास का सौभाग्य बहुत कम का ही मिलता है। ७ जून का साधारण गिनार नहीं बल्कि गाराल मग का मांस किसी मिश्रण भेजा। गाराल का गिनार अंग्रेजों के लिए बड़े साधु की चीज थी। मास बना स्वादिष्ट लगा।

भवाली—भवाली में चाई समारोह था जिसमें डा० कमरवाणी ने हम भी निमंत्रित किया। १० तागाय का साढ़े ११ बजे हम वहाँ पहुँच गया। सेनिटारियम का एक गागा डा० अमरनाथ या से उद्घाटन करवाई गई। वहीं एक अंग्रेज के विकाऊ बगैरे डेब्रीनगायर का दमन गये। बीस हजार दाम मांग रहे थे। दीवारें टूटी छत टूटी था। फर्नीचर कामचलाऊ वह जा सकते थे। सान हजार में भी मित्रता तब भी मैं लेने के लिए तैयार नहीं

था। पास में आक लाज का दाम ३८ हजार बनलाया जा रहा था। सेनि टोरियाम व यह काम व हो सकत थ लेकिन सनिटारियम का अपना स्थान यहाँ से कुछ दूर है। अगले दिन (११ जून को) ननीताल लौट आए।

कल ही श्री धूपनाथ सिंह और वीरेन्द्र कुमार आ गये थ। वही ट्र तब वानचीत हाती रही। धूपनाथजी का अपन विद्याल परिवार की स्थिति तब वानजनन मालूम हाती थी पर एक व चार और चार व माह्र घर तो हमेगा स हाते आए हैं। घर भरा-भूरा बहुत अच्छा लगता है। चार मह माना व साथ बातें करन, चाय पीन या खान में स्वाद दुगुना हा जाता है। हमार घर में सूत्र चहल पहल थी। कुछ मलानी मित्र आ जात थे। १५ जून का ५० वाचस्पति पाठक आए। पाठकजी मगन रहू चाला" व बडे अच्छे उताहरण हैं। वपों की मनहूसी घर में उनपर रपत ही माग खनी हाती है। उनक साथ गंगाप्रसाद पाडे भी थे फिर चन्द्रगुप्त विद्यालकार आ गए। विद्यालकारजी एक प्रकागक के लिए काई उपयास लिखन के शान्ते कह रह थ लेकिन अभी ता लिखने का कोई स्थाल नहीं था।

मसूरी—डा० सत्यवतु से सलाह हा गई थी कि वह मसूरी में मवान व रहें, और लिखने पर मैं चला आऊंगा। कमला को भी ले जाना चाहता। लेकिन पहाल में मोटर की सवारी उनक लिए मुसद नहीं हाती इस-ए साथ ल चलन का स्थाल छोडना पडा। काठ गाशम में रेल पकडनी थी। १७ का हमार साथी धूपनाथजी वीरेन्द्रजी और गरद तथा अमग के साथ माचवजा भी ननीताल से निकल। बाजा (असग) अभी २० माग का ही था लेकिन बाजा हँसाता कभी भालू-नाच लिखलाता, कभी दूमरी नकल भी करता। वीरेन्द्रजी न कहा मैं अपनी प्रकागन-सम्प्या का नाम राटूल पुस्तक प्रनिष्ठान रखना चाहता हूँ। धूपनाथ व परिवार के लिए मैं स्वार बन कर सकता था? मुझे बरेली पहुँचकर रेल पकडनी थी, और दूगरा का काठ गाशम में लमलिए तलीता में ही हम अलग अलग हा गये। सात रपय दनर मैंन बननी यागी बस पकडो और ७ बजे चत्तर माह ६ बजे बरली पहुँच गया। रात में हलवाना कम्पा दगा। तराई में मृगमाना व

गांव क गांव है यह भी पता लगा। शायद १६वां से १८वीं सदी में ये यहाँ बने। कुछ दिना पहले भयकर आधी इधर से गुजरी थी। सड़क के किनारे कितनी ही पेड़ जड़ से उखड़कर पड़े हुए थे। बरेली में पता लगा कि गाड़ी साढ़े ११ बजे रात का मिलेगी। गाड़ी पर चढ़े। हमारे ड्राइव में प्रसिद्ध इंजीनियर राजा ज्वालाप्रसाद के पुत्र श्री त्रितीवीर गुप्त, श्री सुशीलादेवी गार्गिनणी के पितबुल क थे और भरे बर में भी कुछ जानत थे। उन्होंने बिजनौर से चार मील पर अपना काम खाल रखा है। जाड़ा में आने के लिए निमंत्रण मिला।

पी फटते समय हमारी गाड़ी हरद्वार पहुँची। फिर वह दून में घुसी, और ७ बजे हम देहरादून पहुँच गये। बाहर बसें और टिकियाँ खड़ी थी स्टेसन से पीने दो रूपय का टिकट लेकर रोडवेज की बस पर ८ बजे बठे और २२ मील चलकर ९ बजे किन्नेग पहुँच गए। मसूरी अब से सात वष पहल एक बार देखी थी लेकिन उस समय का कोई मानसिक नक्शा तुलना करने के लिए ठीक से मौजूद नहीं था। किन्नेग जहर कुछ-कुछ याद आता था। पहल चिट्ठी भेज दी थी। डा० सत्यकेतु अडड पर ही मिले। फिर उनके साथ लक्समोट गए। चाय पान और स्नान हुआ। कुछ देर के लिए गा गए। गाम की चाय पीकर ५ बजे दखने के लिए निकले। कमलस बक (ऊँ-पाठ) सड़क से हाकर एक चक्कर लगाया। सिधानिया का प्रासाद दखा। उससे आग आधा फलाँग पर नीचे 'इक्मिणा बिला' बिकाऊ था। उसक साथ एक बान्ज (कुटी) भी था। बिला में ६ कमर और एक नहान कोष्ठक डूमर में तान कमरे और एक बाष्ठक साथ में साढ़े तीन एकड जमीन थी। लेकिन घर तुरन्त रहने लायक नहीं था। रहने लायक बनाने में दम हजार की जरूरत थी। पसाद नहीं आया। कुल्हडी से नीचे भी १६ १७ हजार पर मिलन वाला घर दखा। उसमें जमीन कुछ नहीं थी, और कमरे भी बरक की तरह बंधे। डाक्टर साहब न लण्डीर डिपो में भी बँगले की बात बनलाई। अपनी अश्वहारिकता पर अब हँसी आती है लेकिन उस समय यदि नाई बहता, तो मुनन के लिए भी तैयार होता। सच है

एक बार जहदाव, तो बावन वीर वहावे ।" एक बार घाखा खान पर ही हम अक्ल आने वाली थी। लेकिन यह एक बार ता आविरी बार हान वाला नहीं था। इस वेवकूपी की बानगी इन कुत्ताने वाली पत्निया स भी स्पष्ट है—'लण्डीर डिपो म बंगला अच्छा मिल जाए वही के लिए कागिग करनी है। मकान लेकर ही लौटना यह निश्चय है" (१८ जून)। एस उतावलेपन स अच्छे की आगा नहीं हा सकती थी। डा० सत्यवतु की चन्ती, ता हम किराय पर ही यहाँ कुछ समय बितात फिर ठोक ठठाकर काई मरान लते। घुमकरड शास्त्री से अब हम एवान्तवासी बनना चाहत थ। यदि कही लण्डीर म मकान लिया हाता, तो न जान कसो बातनी ? घुमत हुए एक जगह प्रा० घमोन्द्र शास्त्री तकशिरामणि मिल गए। 'यायकली पढ़न दूय दुहा रहे थे। पजाव की छाप पडी थी इसलिए दूय क लिए पनीर क्या न हात ? और शुद्ध दूय तभी मिल सकता है, जब भस सामने टुग जाए। आजकल यहाँ यग बीमन त्रिदिचयन एसोसियशन क मरान म डा० पाचाउ (इलाहाबाद) ठहरे हुए थ। अगल लिन (१९ जून) वह मिलन आण। यह कम्युनिस्ट प्रान्ति क पहले स आकर भारत म रह रह थ और राज-नीति स सम्पक नहीं रखत थ। कम्युनिस्ट क बार म कितनी हा झूठी-चची बातें सुन रखा थी उहीं क फेर म पड़े थ। डा० पाचाउ घानी द्व-साहित्य क अच्छ पण्डित हैं। इलाहाबाद युनिवर्सिटी म पढ़ाा हुए अब डी० लिट० की भी तपारी कर रहे थ। मैंन कहा—नवीन खान म विद्वाना के लिए विस्तून वायद्योत्र प्रतीक्षा कर रहा है। आप धमिग का काम ग्राम करत हा चीन जाइय।

भाजनोपरान्त ३ वजे डा० सत्यवतु मुझे लिए लण्डीर डिपो की तरफ चल। लण्डीर म श्री जानवीनाथ दर्जीनियर मिल गए। उतावा अता भी मकान बिकाऊ या जिम मरान या लियगान थ थ, उता यत तरे थ। डिपो और मसूरी की गरम ऊना करी गाल दिखा है। उग समय गाल नाम इतना भयकर नहीं था नरी ता काई दूगग ड। नाम पडा। गरी ग हर दूर तर उत्तर म हिमालय धमिग और लिय म मरान लियाई दगा है।'

मैं यदि बादल बाधक न हूँ। टिब्ब के बाद एक विंगल बँगले में ले गए जमम उम समय पाँच यूरोपीय परिवार ठहरे हुए थे। हम इतन बड़े बँगले को लेकर क्या करते? फिर सी फाम बँगले का दिवाया। डिपो पवत की उरिभ्रमा सडक है जिसके किनारे एक-दूसरे से हटकर कितने ही बँगल बने हुए हैं। डिपो को अग्नेजो न सबसे पहले जावाद किया। डिपो का मतलब कम्पनी के जमान में मैनिज छावनी था। बीमार गारो के लिए ही इस जगह को पसन्द किया गया था। ममूरी के दूसरे सभी पहाडा से यह ज्यादा हरा भरा है और देवगारा के कारण सुन्दर है। साठे सात हजार फुट की ऊँचाई होने से यह सड़ भी अधिक है और जाड़ा में यहाँ बर्फ पहले पटती है। सी फाम के साथ साठ पाँच एकड़ जमीन भी थी। इसमें काफी हटकर एक और बगला और कुटीर मिला। बगला साठे १२ हजार में मिल जायगा, यह जानकर प्रसन्नता हुई। छोटा सा किंतु सुन्दर था। सामने छाटो-सो फुट बगिया थी और साग-सब्जी के लिए रोत भी काफी थे, जिनमें आलू लगे हुए थे। उस समय वहाँ डेमाक का राजदूत ठहरा था। छोटे छोटे कई कमरे थे। मैं मुग्ध हो गया। उस समय जरा भी पचाल नहीं आया कि यह ममूरी का कालपानी है जहाँ साजन में भी आदमियाँ के बहुत कम चेहरे दिखलाई देते हैं। करीब-करीब मैं तब बच चुका था। फिर हम उसने साथ उग हुए कुटीर को देखने गए। कुटीर में दाँतीन कमरे थे और सस्त के कारण एक यूरोपीय पादरी अपनी पत्नी के साथ ठहर हुए थे। कुटीर से आगे बगल पर रास्त में यह मिल गए। श्री जानकीनाथजी ने उनसे घर सगह पूछी ता वह मुझे गिराकर बाँके— जरा ही धर उबर गया था कि बर हमारा बम्बल कोई उठा ले गया। इस जगह के बगले का यह दूसरा रंग भी मालूम हो गया। मैं इस पतरे का माँ लन के लिए सँभार नहीं था इसलिए उन बँगल और डिपो में बही भी मजान लन का पचाल छोड़ देना पड़ा। २० जून का सबर ८ बजे सुगो-गजी और डाक्टर माह्य के साथ लोवेला की आर निकले, जिसे दगत ही मैं उमरा नाम मुभूमि रंग गया। ममूरी के एक छोर पर यह सुन्दर स्थान है जिसमें बहुत से बँगल

वन हुए हैं। चालविल का फाटक आया फिर नीचे जान वाले रास्ते का पकड़ा। हेपीवेली क्लब के सामने काफी लम्बा चौड़ा मदान देखा। एक फाटक पर बिडला भवन के भवन का नाम उत्कीर्ण देखा। आगे चुगी की चौड़ी मिली। बाएँ दा बेंगला का छाटकर हम हन किन्फ पहुँचे। न जान क्या साबरर उम दिन की डायरी में ब्रेकट में इसका नाम "माकम भवन" भी रख दिया। गायद बिडला भवन से तुब मिलाई। उस समय चौकीदार मौजूद नहीं था, इसलिए मकान की बाहर ही से घूमकर देगा। साढ़े १६ हजार के आम-पाम मकान पट जायगा यह खयाल कर मन में और भी उछाह था—अग्रिम २५ हजार रुपय बैंक में आ हा चुक था।

गाम का फिर आकर भीतर से जाकर देगा। बीच में एक बड़ा हाल और उमकी जगल-बगल में टॉल जस दा गयनकक्ष जिनके दाना सिरा पर दा स्नानगृह था। सामने मौस बाग बरखा लाकमरा का गबन में मौजूद था। दिमाग उन्न लगा—गयनकक्ष बठक भा हा सजती है और अनिधि निवगन भी। बस्तुन छह कमरा की जगह थी किन्तु बड़ा बनाकर रत किया गया था। विभाजन करके हाल को दा बनाया जा सजता है या भाजनालय के तौर पर एक जा बगडे का इस्तेमाल किया जा सजता है। गयनकक्ष का विभाजन द्वारा दा बनाया जा सजता है, और बरौदा लकर एक समय तीन अनिधिया का काम चल सजता है। और हीन (बाहरी घर) में दामनिश आठ काठरियाँ थी जिनमें से एक को अनिधि भवन में भी परिणत किया जा सजता है। यदि उसी बगल वाली का स्नान-बापक बनाया जा सके। बेंगल की जगल-बगल में साग-भाजी के लिए मेत भी था। सामने बहुत म्यान मगी था, किन्तु फाटक वाले पादक में बठन का एक अच्छा म्यान बनाया जा सजता था। दा एक जमीन जीर साढ़े १६ हजार रुपया दाम बहुत म्याग नहीं लगा। पना लगा, टहरो रानी की मत्पत्ति है। मकान के बारे में विगन हा चुका था ता भी लौटन बक्त हम द्वारे राम्म से चले। वहाँ पटियाला के राजकुमार और उनके भाले दलोपपुर के राजा का काठियाँ देगी। राजा साहब की काठा में बस्तुन में कमर दे, लेकिन दाम ४०

हजार माँग रहे थे। राजकुमार ता लास की बात करते थे। कुछ ही दिनों बाद य कोठिया मिट्टी के माल गढ़, पर उस समय अभी लोग लासा की साचते थे। मैं हन किलफ को पसन्द कर चुका था। और कोठिया कोई ऐसी देखने को नहीं थी या यह कहिये कि उतावले आदमी के पास उसके लिए पुरसत नहीं थी। हन किलफ भाम्य से बघ गया, और उस रात निद्रिचत होकर सोया।

मसूरी को

२१ जून का एजेण्डा से बातचीत हुई। दाम अधिक बढ़ते थे लेकिन साढ़े १६ हजार स ऊपर बढ़ने के लिए मैं तैयार नहीं था। उस समय ऐसे मकान का उतन से ज्यादा दाम नहीं हो सकता था और आज तो २० हजार खर्च करके यदि आया मिल जाए तो बहुत ममक्षिय। पड़ोसी किल्डर वाल जो ६० हजार से कम की बात सुनने के लिए तैयार नहीं थे पीछे २२ हजार मिलने पर स्वामिनिया न इसे बहुत समझा। तब तक उतने ही दाम पर मकान ठीक हो गया। मकान पुराना था लेकिन हमने साचा दस-बीस साल तो चल ही जाएगा। किताबघर की ओर जा रहे थे ता रास्ते में श्री जगदीशचन्द्र माधुर पत्नी सहित मिल गये। आजकल बिहार सरकार व शिक्षा-मन्त्रिय थे। बड़े मुस्तद पुरुष हैं। बिहार सरकार ने डा० जायसवाल रिसर्च इन्स्टीट्यूट कायम करना निश्चय किया था। माधुर साहब न बत लाया कि इसके खर्च के लिए इस साल २५ हजार रुपया रखा गया है। जायसवालजी से मेरे सम्बन्ध और मेरे काम के बारे में उन्हें जानवारी थी। हिन्दी के एक अच्छे माहित्यकार के नाते वह मुझमें परिचित थे। मकस पहलू हमारा परिचय उस समय हुआ था, जबकि लडाइ के निमित्त मकसु निस्ट हान के कारण मैं हजारोंग जल में बल था, और माधुर साहब आई० सी० एम० करके काम सौजन्य के दौरान जल में आए। मर जैम

सतरनाक राजबंदी के साथ उम समय मुलाकात करना नये अप्सर के लिए खतरे की बात थी लेकिन मायुर साहब का अपने ऊपर विश्वास था। जायमवालजी के नाम की सस्याम काम करने की इच्छा कभी न हानी लेकिन न मैं नीररी कर सकता था, और न बिहार की गर्म-बरसात को बर्दाश्त कर सकता था। मैं यही कहा कि मैं सहयोग देने का तयार हूँ, किंतु वैतनिक काय नहीं कर सकता। मिताबघर (गढ़बेरी) को सौ साल पहले अंग्रेजों ने अपने लिए स्थापित किया था। पहले इसमें अंग्रेज छाड काई मेम्बर नहीं बन सकता था। अब छूट थी यद्यपि प्रबंध एंग्लो इंडियन पुरुषों और महिलाओं के हाथ में था। इसमें अपने मकान में नीचे कई दूनों हैं जोर सदस्य गुल्म भी आता है इसलिए इस निघन नहीं कहा जा सकता। सौ साल में बहुत-सी काम की पुस्तकें जमा हो सकती थी, लेकिन यहाँ हल्की फुल्की पुस्तक ही ज्यादा दायी। हिमालय के सम्बन्ध की एटकिंसन की जैसी महत्वपूर्ण पुस्तक का अभाव था।

२२ ताराय को फिर एजेंट साहब ने मकान के काम बन्दान की बात शुरू की। पहले तो मालूम हुआ, जब दूसरा घर ढढना पड़ेगा। हम उममें एक पग भी जाने बढ़ने के लिए तयार नहीं थे। अतः मैं उतना ही ठहरा, मैं दो हजार बयाना दे दिया। डा० सत्यनतु का पाँच सौ रुपया दर मरानको मरम्मत और सफाई जादि कराने के लिए कह दिया। डा० बसन्त डा० सत्यनतु के परिणाम परिचित थे और मुझसे भी दयादयी थी। उम दिन गाम का लकममाट में वे चाय पीने के लिए गए। मुझसे भी दरस परस हुआ। उम गाम को फिर हनत्रिकुफ गया। हनत्रिकुफ के सारे गुणा को दायन के लिए न उस समय मरे पास आये थी जोर न उसने दोषा का ही देय मानता था। मुय बारहा महीना मगुरी में रहना था जहाँ जादा मैं मिनती ही बार मिन में भी तापमान हिमबिन्दु में नीचे रहता है। एक समय के लिए शगना नोसदार बरादा बहुत जनुनू साबित हुआ क्यकि उसमें मूर्योत्थ के समय ही मूय की किरणें आ जाती और मूर्यास्त तन हटन का नाम नहीं लनी था। बराडे के भीतर या बाहर से हिमाच्छादिन गिरियाज

की चोटियाँ प्रायः वेदारनाथ के पास के जमुनाती के करीब तक दिखाई पड़ती थी। चोटियाँ ही नहीं, उससे नीचे बहुत दूर तक अनेक पर्वत पक्षियाँ एक-दूसरे से मिलती जमाऊँ ऊपर उठती चली गई थी। वर्षा-काल में जब नीचे की सागी पवन-स्थली हरियाली से हरी और ऊपर रजतगिरर शृङ्खलाएँ निरभ्र दिन में सामने उपस्थित जातीं तो दृश्य बड़ा मनमोहक होता। बादलों के होने पर उपरका के एक छोर से दूसरे छोर तक तना हुआ सतरंगा इन्द्रधनुष यहाँ के लिए दुर्लभ चीज नहीं थी। इन गुणों को उस समय मैं नहीं समझा था, और न इस बड़े दोष को कि ये तीन हांग का जा लम्बे चौड़े ही अधिक नहीं हैं, बल्कि दामजिला इमारत के बराबर ऊँचे हैं। आग जलाने का इन्तजाम ज्ञान पर भी कभी गरम नहीं किया जा सकता, आग के पास हुवर का बठने पर ही याटा-सा गर्मी मिल सकती है। बगले में पत्तों और वागसित का इन्तजाम नहीं था पर एसे बगल ही यहाँ अधिक मिलत है।

ननीनाल—मकान टीस ठाक हो जाने पर जब ननीनाल जा सामान सहित कमरा का लहर आ जाता था। २३ जून को श्री प्राफ़मर गयाप्रसाद गुकल के यहाँ (सर्व आश्रम रोड पर) मरा ११ बजे पहुँचा। जून का अन्त था। वर्षा होने पर भी पसीना हाना आम बात थी, और गुकलजी के यहाँ पस का सहारा लेना पता; मकियाँ भी बहुत थीं। इन बातों का मसूरी या ननीनाल में अभाव था। दहरादून में अपनी लाचिया के लिए बड़ी श्वाति प्राप्त की है। यहाँ की अच्छी लीचियाँ अपने स्वाद और आकार में मुजफ्फरपुर की लीचियाँ से किसी तरह भी कम नहीं जाती। एक टाकरी नीची सीगात के तौर पर मैं भी ली। गाडे ७ बजे रात का टिकी जानना एमग्रेस पत्र जिसमें प्रयाग का डर्रा रहना था। हमारे डर्रा में जबपुर जाने वाले एक निरभ्र कनल का १०-१२ वर्ष के एका इण्डियन लड़का था। कनल साहब के दा लडके को उनका माय चल रहा था, और पिता-पुत्र केवल अग्रजी में बात करत थे। यह दिमाग भंग गिपाटियों में घुलने मिलन दया। लेकिन ननीनाल मागे हुए में भाग पपी मालूम होती है।

लुक्मर म डब्बा सवेर तक खड़ा रहा, फिर पश्चिम से दुमरी ट्रेन मे जुड़कर ६ बजे धरेली पहुँचा। प्रा० भोलानाथ शर्मा से मिलना चाहता था, लेकिन काठगादाम वाली ट्रेन क जान म देर नहीं थी। उसे पकड़कर ५ बजे शाम को मैं काठगादाम पहुँचा फिर बस पकड़कर पीने ७ बजे ननीताल। वर्षा हा रही थी। इसी वर्षा म हम ममूरी स्थान परिवर्तन करना था। आजकल खूब भीड़ थी नावा म लाग शिगरो खेल रहथ जिसके कारण वह नहीं मिली और बुली पर सामान उठवाकर रात को ओक लाज पहुँचा।

२५ जून को इतवार था। जाज साहित्यकार प० गोविन्दवल्लभ पंत आय। बहुत सीधा-सादा लेकिन तर्ज के लिए अति आवश्यक व्यक्तित्व है। उन्होंने उपन्यास लिखे नाटक लिखे और सभी बाफी परिश्रम से तथा अच्छे लिखे गये। मुझे आश्चर्य और दुःख भी हाना था कि क्या इस सीधे-सादे पुरुष का हिन्दी बाल समझ नहीं रह है। बहुत सी बातें गान्तिप्रिय द्विवेदी और गान्तिप्रिय पन्त म एक सी है। गान्तिप्रिय द्विवेदी की नी ब्यून निना तक उपेक्षा रही लेकिन इस गद्द और अथ के सजग गिल्पी का जब हिन्दी वाले पहचानने लग हैं। इस अष्टावक्र मुनि क ऊपर अपना दह भर हो का गान है जा मन भर का भी नहीं है। गान्तिप्रिय को पूरु हें, ता उड जाएँ। उनकी वृत्तियाँ अगर आज स ५० वर्ष बाद अस्तित्व म आनी तो उनक पास अपना बगना हाता अपनी वार होनी, एक स अधिप महिलायें प्राइवेट सत्ररा साहित्य सत्रेरी और टाइपिस्ट का काम करती। याआ पिया मौज करा की घनि घर क दरदोवार स भी निरन्तरी लेकिन आज अजगरी वृत्ति है। सिर समाने के लिए ठीक से पर भी नहीं। अपना घर हाता हो कम ? इसी साहित्य समिता महिला का वृगा-कटाग उह कभी नहीं मिला। गान्तिप्रियजी का अगु जम पर विद्वान है इसलिए गायद वह इस जम का घाटा अगल जम म गूद-दर गूद क गाय पूरा कर लें। इतना होत पर भी जब पंतजी का मुवाबिला गान्तिप्रिय स करत हैं ता यह कहना पन्ता है कि पन्त को और भी भीषण कष्टों और बिताआ क बीच स हातर गुजरना पन्ता है। ननीताल म सस्ता

हानक कारण वह एस ममान म रहते हैं, जा कभी भी गिरकर उठें
 चिताजा से मुक्त कर मन्ता है। क्या इसी स्थिति में ता वह उत्तम नहीं
 रहत ? उनकी कृतियाँ भी मानी क अधरा से लिंगी गई हैं। "दूरजहा"
 का उदात्त वक्तु मुझे ख्याल आया यह ऐतिहासिक क्या को देख कर टिप्पणी
 हुई पुस्तक है, जा 'दुग्म पथ तद् वचया वदति।' इस दुग्म पथ म पद
 पर स्वल्पित हान का डर है, किन्तु पुस्तक समाप्त करन पर मैं बाह
 वात् करते इस बात में अमन्तुष्ट हुआ कि मैं हा क्या टटन दिना तत्र इस
 दशन म बचिन रहा। पतक नामरागि हमार प्रणेश के मुख्यमत्री भी
 हैं। साहित्यकार न अपन नाम क साथ कोई उपनाम भा नहीं पाया, इसका
 परिणाम अकसर यह होता है कि साहित्यकार पन्त की चिट्ठियाँ मुख्यमत्री क
 पाम चला जाती हैं और उनके चिट्ठियाँ क जगल म भूतकर कितनी ही
 फिर लौटकर अपन म्यान पर लनी पहुँचन पाती। एस सुन्दर साहित्यकार
 की इस दीन हीन स्थिति का देखकर दिग् बागा हा कहता— उठकर सभी
 अट्टालिकाआ म आग लगा दा। पर यह ता पागलपन हाता। अट्टा
 लिकाआ न क्या अपराध किया ? अट्टालिकायें भा स्वामा परिवर्तन कर
 मक्ता हैं और उनम म एन उपनाम-नाटककार गोविन्दवल्लभ पन्त का
 और एक मानिया पिरान वाल गानिप्रिय का मिल मक्ता हैं। इन अट्टा-
 लिकाआ पर जाज अयागवा का अधिकार है अधरेनगरा जा है। जब तक
 अधरेनगरी दूर नहीं जाती, तत्र तत्र ममा जगत् अथेश माना रहगा।

श्री प्रभुदयाल मित्त (मयुरा) का पुस्तक "श्रुतु-सौंदर्य" भूमिका
 लिखन क लिए आई। मित्तलगा न ब्रजभाषा की कितनी ही निधिया का
 जिन लगन क भाव मग्रह और सम्पादन किया है, उन दग्धन आग्रह का
 टुकराना मर लिए सम्भव नहीं था। पर काव्य-कृतिशा क सम्पादन मे राय
 तन म मुझे हट्टे का मकाष हाता है। मैं उसक लिए अपन का अयाग्य
 ममपता हूँ। अयाग्य क्या न समर्थ ? जिन पवित्रता की सुनकर लाज मम्य
 हा गिर हिलान लगन हैं उह सुनकर या पढ़कर मग मन न पनीजता है
 न उत्तप्य होता है, जन जैन के सामने चीन दण रही है। मयमुच ही मैं

लुकर म डबा मवरे तब खडा रहा, फिर पश्चिम से दूसरी ट्रेन मे जुडकर ६ बजे वरेली पहुचा। प्रो० भालानाथ गर्मा से मिलना चाहता था, लेकिन काठगादाम वाली ट्रेन क जाने म देर नही थी। उसे पकडकर ५ बजे शाम का मैं काठगादाम पहुँचा फिर बस पकडकर पीने ७ बजे ननीताल। वर्षा हा रही थी। इसी वर्षा म हम मसुरी स्थान परिवर्तन करना था। आजकल खूब भीड थी, नावा म लाग झिझरी भेळ रह थे जिसके कारण वह नही मिली और कुली पर सामान उठवाकर रात को आक लाज पहुँचा।

२५ जून का इनवार था। आज साहित्यकार प० गाविन्दवल्लभ पंत आये। बहुत सीधा-सादा लेकिन तज्जब क लिए अति आकर्षक ब्यक्तिव है। उताने उपयास लिखे नाटन लिंग और सभी बाफी परिश्रम स तथा अच्छे लिखे गये। मुन आचर्य और दु ग भी होना था कि क्या इस सोधे-मादे पुरष या हिंदी बाल समझ नही रह है। बहुत सी बातें साहित्यप्रिय द्विवेदी और गाविन्दवल्लभ पंत म एन मो हैं। साहित्यप्रिय द्विवेदी की भी बहुत दिना तक उपेक्षा रही लेकिन इस गान और अथ के सजग गिल्पी का जय हिन्दो ताले पहचानन लग हैं। इस अपृावत्र मुनि के ऊपर अपन दृष्ट भर ही का बाझ है जो मन भर का भी नही है। साहित्यप्रिय को फूँक दें, ता उड जायें। उनकी श्रुतियाँ अगर आज स ५० वष बाअस्तित्व म आतीं ना उनर पास अपना बगडा हाता अपनी कार हाती एक से अधिन महिनायें प्राद्वट सेक्रेटरी साहित्य सप्रेटरी और टाइपिस्ट का काम करती। याआ पिया मौज करा की ध्वनि घर क दरादीवार से भी निवर्त्ती, लेकिन आज अजगरो वक्ति है। सिर समाने क लिए टोक से घर भी नही। अपना घर होना हो कस ? किसी साहित्य रसिका महिला का शृपा-कटाश उह कभी नहा मिला। साहित्यप्रियजी को अगर जम पर विनागम है इसलिए गायद वह इम जम का घाटा अगरे जम म मूद दर मूक क माय पूरा कर लें। इतना हान घर भी जय पंतजी का मुखाविला साहित्यप्रिय न करा है ता यह कहना पडता है कि पंत का और भी भीषण छुँ और चिन्ताया क बीच ग हाकर गुजरना पडता है। ननीताल म सस्ता

हानक बारा बह एव न्यान में रहत हैं, ना कमी नी गिजर उहें
 चिन्ताओं न मुक्त कर सकता है। कना इन्ने न्यल न ना कउ उवन नहो
 रहत ? उनकी इतिहासों नी नाता के कानों न गिया गई हैं। 'बुजहा'
 का उजाव बक्त मुने ख्याल आना का एतिहासिक कना का लखर सिचो
 हूँ पुस्तक है, जा टुम् पय तद कनपा वान्ति। इस दुगम पय में पद
 पर पर म्बलित ज्ञान ग डर है, लेकिन पुस्तक समाप्त करन पर मैं वाह
 वाह करत एव वात्र न अमलुट हुआ जि मैं ही कनो इतन जिना तव एव
 इतन न बचिन जा। पन् क नामरागि हमार प्रण क मुन्मयी नी
 हैं। माहिषका न अपन नाम क माघ काई उपनाम भी नही जात। इनका
 परिणाम अक्षर यट हाता है कि साहित्यकार पन् का चिट्टियाँ मुन्मयी क
 पान बग जात हैं और नक चिट्टिया क जाण म भूलकर कितनी ही
 फिर लौकर अपन स्थान पर नही पहुँचन पाती। एस मुन्म माहिषकार
 का इस गीत हान स्थिति का दक्कर जि बागी हा कहता— उठकर सभी
 अट्टालिकाजा म आग लाग दा। पर यह ता पागलपन हाता। अट्टा
 लिकाजा न कना अतराय किया ? अट्टालिकायें नी स्वामा परिवतन कर
 सकता हैं और उनम न एक उपजाय-नाटककार गात्रिन्दवल्लभ पन् का
 और एव मानिना पिरान बाल गान्धिप्रिय का मिल सकना हैं। इन अट्टा
 लिकाजा पर आज अयाग्या का अधिकार है अचेरनगरा जो है। जब तर
 अचेरनगरा दूर नही होनी तब तब सभी जगह अचेर-नाता रहगा।
 श्री प्रभुपाल मित्तल (मथुरा) की पुस्तक 'ऋतु-भौतिक भूमिका
 जन व लिए आई। मित्तलजा न ब्रजभाषा की कितनी ही निधिया का
 तन लगन क साथ मयट और सम्पादन किया है उस दखन आग्रह का
 दुगराना मरे लिए सम्भव नहा था। पर बाध्य-वृत्तिया क सम्बन्ध म राय
 पन म मुझे हट दजे का सकाच हाता है। मैं उत्तर लिए अपन को अयाग्य
 नमपता हूँ। अयाग्य क्या न समर्थ ? जिन पक्षिया का मुनवर लोग मन्त्र
 हा सिर हिलान लगन हैं उह मुनकर या पत्तर मरा मन न पनीवता है
 न उत्तप होता है जस नग क सामन घीन बज रही है। सचमुच हा मैं

अपन का काय नेत्र का जघा समथता, यदि अश्वघोष, कालिदास वाण, तुलसी नयशकर प्रसाद इस परथर क दिल का हिलाने और पिघलान म समथ न हाने । मित्तलजी की पुस्तक क साथ में जयाय नही कर सकता था पर दूसरे भी कितन ही तरण और प्रौड कवि जब इसी तरह का आग्रह करन है तो घडी मुमात्रन जा जाती है । कितना का मम्मति लिपिन की बात करक टरकाना कितना को बदरग वाक्या मे कुछ लिख देना पता है ।

२६ जून को थी पुष्पोत्तम वपूर का लखनऊ स भिजवाया दसोरी जाम आया । पहाड की सर्दी क लाभ मे फौमन का यह सत्रस बडा घाटा रहता है कि आमा क मौमिम म आमा क पास रहने का मौका नही मिलता । जाम क प्रति मरा विशप पक्षपात है यत् कहना आत्मलाघा हागी क्याकि जाम अज्ञानगत्र नही यत्रि मवमिन है । तिमालय की बिलामपुगिया म बसे आम दुल्भ नही हैं केवल दाम दूना होता है लेकिन मत्रस घाटे की बात यह है कि पडा क तीधे ताज पव आम का बाल्टी क पानी म रखकर खान का जा आनन्द आता है वह आनन्द यहा कहां ? वाञ्छवकन ता मालूम हाता है हम जाम नही बठार पस खा रह हैं ।

इसा समय खत्र पत्नी, अमरिका आधे दक्षिणी कोरिया से सतुष्ट न रह सारे का अपना मुट्ठी म करना चाहता है । उसन अपनी बठपुतली मिगमन री का उगगाकर उत्तर कारिया पर आश्रमण करा दिया है । जसली बात यह थी लकिन हमारे महां ता सार ससार की खत्रें रयूत्र की माफत आती हैं जा अमरिका क गिलौन त्रिग की माझाज्यवादा नीति की प्रचा रक एजेंसी मात्र है । जखबारा म छप रहा था आश्रमण उत्तरी कारिया न बिया है । उत्तरी कारिया का कम्युनिस्ट गामन अमरिका क आँखा का काँगा था, जिस मान लन र लिए उन बराबर जफमास हा रहा था ।

२७ जून का परमानन्जान बाकी १५ हजार ना पेव भी भेग दिया । दग हजार पहल आया था, उनम रा खच हाकर अत्र तीन हजार रह गया था । अभी १४ हजार मनान का दना था । हम बगी ग्राह्यर्ची त्रिपला र्थ, लेकिन माऊ भर का र्ची क लिए चिन्ता भी हा रहा थी ।

२८ जून का एकाएक यह पत्र पाकर मैं सन्न रह गया कि २८ जून का स्वामी महानन्द का देहांत हो गया। उनके शरीर और राम-राम की कमठना दयाकर मुझे कभी खयाल भी नहीं हो सकता था कि वह इतना जल्दा जगत्पद छोड़े। पता लगा उनका रक्तचाप की बीमारी थी। मुत्तफरपुर जिले में माटर में कहीं जा रहे थे। राम में दायर हट में अधिक बढ़ा और उनका लकवा मार गया। अस्पताल पहुँचाना बनार हुआ। मजर कितान राज्य की स्थापना का निमित्त स्वप्नद्रष्टा गापिता पीठिया का जन्म नना बनना। अभी इसी मास का ता वह प्रयाग में मित्र ध और आग की जेनता ही यात्रनाम बना रहे थे। अगस्त के कारण ही ता जन्म जिन प्रयाग में जिनता ज जगहा पर दूत दूत आखिर जन्म मुत्त पकट निवासा था। सम्मुनिष्ट पार्टी की वर्तमान नीति में नका मतभेद था लेकिन पार्टी के वह अन्याय विचिन्तक ही नहीं बल्कि भक्त थे। कहते थे तपे हुए इमानदार कायना यही है। यहा वह तरण और प्रीत हैं ना अपन काम का सीपन के लिए पूरा महत्त करन खूब पन्न खूब माचन है। य भ्रष्टाचार में नहीं पक मनन। पार्टी ही हमारे दंग के भविष्य की एकमात्र आशा है। उस समय पार्टी के कुछ नेता तुर्ल ज्ञान्ति के लिए काम करना चाहते थे। स्वामीजी उस समय का अनुकूल नहीं मानते थे। कन्त य—हम ना समयाण छयाग मारन से हम भी बाज नहीं आयेगे। पर एमा ना तभी हाना चाहिए, जब एग की प्रबुद्ध तरण मानवता का बून बना नाग त्य छयाग में माय दन के लिए तयार हो तमा कुछ बन मनता है। स्वामीजी तर विल (आजमगढ़) के पहागा गाजीपुर जिले में पण हुए थे यह कहना पान्त नहीं है मर जितग्राम से नका जमग्राम कुछ हो काग पर था। मरन पहर उनका नाम अमत्याग के जिन म मुता था जिन म समय में विहार में काम करना था और वह मुत्त प्रान्त में। पट्टी मुत्तारा १९२५ में म छरता में हुई थी। वही भूमिगत शासन सम्मलन हो ग्या था। जारम्भित माधजनित जावन में स्वामीजी ने भूमिहारों के ज्ञान का बोहा उठाया था। य ज्ञानि गिरा दुई नहीं थी। पूर्वी मुत्त प्रान्त और

बिहार में ही भूमिहार रहते हैं। उहाँ के बड़े बड़े जमींदारों का अधिक सरया भूमिहार थी। किसान होने पर भी वह अच्छी हालत में थे जिसका यह अर्थ नहीं कि भूमिहारों का अधिक सरया भूमि प्यास की पहुँच से बाहर है। यह बात कुछ समय बाद स्वामीजी समझ पाए। उस समय स्वामीजी के चरण धोने के लिए सबमुच ही बड़े बड़े भूमिहार महाराजा और महाराजा बहादुर तयार थे। सम्मान की मुण्डण जजीर से बाहर निकलना आदमी के लिए बहुत मुश्किल होता है। लेकिन उस मज्ज और निर्भीक हृदय पुरुष का जपन ध्येय से कोई शक्ति नहीं राक सकती थी। भूमिहार सम्मान में छपरा में उनसे मिलकर उड़ी प्रमनता हुई। किन्तु यह दगकर दुःख भी हुआ कि वह जात पात के हितों के समयक हो रहे हैं। १९२६ में कांग्रेस ने वीसियों के चुनाव में सीधे भाग लेने का निश्चय किया। बाबू जलद्वर प्रसाद कांग्रेस की तरफ से उम्मादवार लड़े हुए थे और उनका प्रतिद्वंद्वी वीसियों के ही दूसरे कायकर्ता बाबू धीनदन प्रसाद नारायण सिंह थे। धीनदन बाबू का कांग्रेस कमिया का बहुत अधिक सहयोग मिला था जिले के कांग्रेस कर्मी उड़ी का लडा करता चाहते थे। पर जब जलद्वर बाबू का कांग्रेस न लगे कर दिया, तो मरे लिए उनका मसखन करके व सिवा कोई रास्ता नहीं था। जलद्वर बाबू मरे के निष्ठ मित्र थे यह बावण नहीं था, वलिय धीनदन बाबू का स्नेह और सम्मान भी मरे प्रति कम नहीं था। उस समय चुनावों में स्वामीजी और मैं आमन-मामन थे। जलद्वर बाबू के साथी में था और धीनदन बाबू के साथी में। मैं सिर्फ छपरा जिले में ही समय अधिक चुनाव प्रचार का काम करता था और स्वामीजी कई जिलों में घूम रहे थे। हूँ चुनाव के दिन जहर हम दाना उन यानों में बट हुए थे जहाँ के घोट निर्णायक थे। दा दला के अगुवा हानर वयकित्त स्नह और सम्मान के बट्टे ल मवता है हमरा पात मुर्धे मही लगा। स्वामीजी के ऊपर व्यक्तित्वत आभेय मुनने के लिए मैं तयार नहीं था, और वही यान उनसे मन में नी था। १९३१ में हम अपने उद्देश्यों में एक हो गए और तब से १९ वय यान गए, हम एक दूसरे से अत्यन्त समीप रहें—

आध्यात्मिक गरीर में हम अभिन्न हो गए। उनसे कितनी आशाएँ बँधी हुई थीं उनके गरीर को तीन ही महीने पहले कायस्थमन्त्र चुका था। एम पुष्प का एकाएक हमारा क लिए बिठाह क्या न अमह्य हाना ?

मसूरा में डा० मत्स्यन्तु के पत्र के आन की दर थी, और हम महा म चल पटना था। उनका पत्र महीने की अन्तिम तारीख का आया कि ७ जुलाई तक बगला रहने लायक हो जाएगा। लेकिन हम ११ जुलाई को ही ननीनाल छोड़ सक।

इधर केंद्रीय सरकार के कई मंत्रालयों ने हिंदी पारिभाषिक गठना क बनाने का काम अपने हाथ में लिया था। इसका कारण मौलाना आजाद की आत्मीयता या कामराज नीति थी। शिक्षा मंत्रालय का इसके लिए आगे बढ़ना था, पर मौलाना के दिल को बहुत घक्का लगा, जब उद्दू के सम्बन्ध में उनकी बात नहीं मानी गई। अब वह अपनी नाक बटाकर ना असगुन करने के लिए तैयार थे। कृषि मंत्री ने भी अपने विभाग सम्बन्धी ऐसी परिभाषावलि जमा करने के लिए एक समिति बनाई जिसमें मेरा भी नाम था। उस ही कुछ और विभागों ने भी समितियाँ म मुने रखा पर मसूरी पहुँचने के साथ मैं अपने सामने क कामों में ही पूरी तौर से लगना चाहता था जिसमें समितियाँ की सदस्यता बाधक होती इसलिए मैंने सबसे इस्ताफा दे दिया।

५ जुलाई से अपनी बिलखी हुई कित्तावा का फिर बकना में डालकर वर्षों में बचा के लिए तिरपाल में मढवाना शुरू किया। मकान का बाकी तीन सौ रुपया किराया भी चुका दिया। ६ जुलाई को हमारे पदामा श्री गीनल प्रसाद गुप्ताजी ने एक छाटा सा भोज लिया जिसमें नौचे ऊपर के सभी लोग शामिल थे। मालूम था रहा था पिछले तीन चार महानों में यहाँ हमारे जड़ नीतर तर घली गई थी। गुप्ताजी का परिवार बाँक लालजी का परिवार दादा अपने परिवार से हा गए थे। एक दिन भी मन मुटाव हान की नौबत नहीं आई। रमोडप की त्विस्त हम बराबर रहते थे लेकिन उम समय बाँकलालजी के यहाँ आग्रहपूर्वक हमारा भाजन लया

हाना। बाँकलालजी का सारा परिवार आयसमाजी था। वह नगीताल आयसमाजी के मुखिया थे और इस समय आयसमाजी मन्दिर बनाने में लगे हुए थे। उनका पत्नी शनिवार की मौन रहती थी न जान नितन महीना या वर्षों से। हमने कभी नहीं कहा मौन बकार है बल्कि उसकी अति गयान्ति पूजन प्रणसा करत रहे जिसके कारण उहाने एक दिन अपन इम ग्रन का छाट दिया। बिहारीलालजी जस जदम्य पवतारोही थे वसे ही वह हममुग्य भी थे और मेरी सहायता के लिए ता हर वकत तयार रहत थे। घर के बच्चे भी बहुत प्यार थे। रामनमार्दन तो कौरवी की सुन्दर कहानियो और गीतो का बालकर हमारी बडी सहायता की थी। उनकी बात भूलन की नहीं राज खाना ता १० ११ बज आकर बहती— कमला रानी, रोटी राटी कर ली। गुप्ताजी और उनकी पत्नी हमलता रामनमाई की तीसरी पीढी लायक थी। वह ऊपर की मजिल में हमारी बगल में ही रहते थे इसलिए उनसे साथ रात दिन का सम्बन्ध था।

१० जुलाई का सामान का जुक करने भिजवाने में गुप्ताजी और श्री विद्याप्रकाश कॉन्सिल ने बडी सहायता की। पाँच बक्सा को ही हम रेलवे पासल से भेज सके बाकी तरह चीजें अपने साथ रखी थी। गुप्ताजी और विद्याप्रकाशजी की मदद से बस में जगह मिल गई। कमला ने पहाड़ की माटर यात्रा के लिए सत्र से ही तयारी की थी मेरी चली हानी ता एक प्याग चाय भी न पीन देता। रामने मे उह पाँच बार के हुइ। वह इमका दाप पट्टाक की गध का दना था। आँसु बाद करके चलन की बात का भी बेजार मानती थी। सचमुच ही बेकार थी क्याकि यदि मन नहीं तयार है ता आँगा के बाद करन से क्या होता है? ट्रेन से हम बरगी हाकर मसूरी ता रहे हैं यह सबर धा भाऊनाथ गर्मा को मिल गई थी। वह बाठगाणम पर आ गाय हा बरला तन गान वाल थे। उनमें बडी सहायता मिली। इसा डर में राजस्थान के टापुर बनल गालूमिह भी जा रहे थे। नगीताल में उनमें चाय-मत्कार पान का सीभाग्य प्राप्त हुआ था। अभी यह पीटी

हिंदी की तरफ मुड़ा नहीं है, लेकिन उसका साथ एक तरह का स्नेह जरूर पदा हा रहा था।

हमारा ट्रेन लेट हाकर १० बजे रात का बरली पहुँची। डून एक्सप्रेस भी एक घंटा लट था। काठमाण्डम से ही हम ५० भोलानाथजी क जरस्तू क 'राजनीतिशास्त्र' क अनुवाद को देख रहे थे। वह अपन काम म बड़े सजग रहत हैं। अगर ग्रीक दार्शनिकों की पुस्तक का कोई नया संस्करण यूरोप या अमेरिका म कहीं निकला मुनत हैं ता उनकी सहायता लिए बिना अपन काम का अपूर्ण समजन। अरस्तू का लिखा एथन्स का मविधान नया मम्पादिन हुआ था। अनुवाद कर लन पर यह बात उह मालूम हुई। उस पुस्तक का भी मगाया। इस प्रकार १८५० क मध्य म राजनीति शास्त्र हिन्दी म अनुवादि हानर तयार हा गया लेकिन उसका प्रकाशित हाने की नीमत १९५६ म ही आई। यदि पहले प्रकाशित हा गया हाता ता अरस्तू क कम से कम तान ग्रन्थ और उहाने मूल ग्रीक स हिन्दी म कर डाल हात। हिन्दी को यह कितनी बनी क्षति है? एसा याग्य विद्वान् यस काम के लिए हर वक्त मिल नहीं सजता। अपनी बरसी पर हाय मलना पडता था। एक्सप्रेस म पहल दर्जे म सिफ एक स्थान खाली था और हम थ दो आदमी। लेकिन किसी तरह चलना तो था ही। बर्षा भी उस वक्त भिगान क लिए तैयार थी कहीं कहीं गाड़ी को छन स भी बूढ़ें टपन रही थी। सामान रखा जीर दोना एक साट पर बँठ गए। ५० भालानाथजी न हान ता बहुत मुश्किल हाता। अधिक सामान लनर चटना बड़ी बचाहट सजरे (११ जुलाई) ८ बजे बाद हम देहराडून पहुँचे। ५० गयाप्रसाद गुक्ठ जो स्टेशन पर आए थ। जल्पान करन चलन का उनका आग्रह था, लेकिन मसूरी जाने की बर्मे स्टेशन क बाहर सगी थी। सारे सामान का लेनर या छाटकर जल्पान क लिए जा फिर यहीं लौटना था। कमला ता जल्पान नी नहीं कर सजती थी बसकि अभी पहाड की माटर-बवारी सामन थी। एक स्टेशन-बान पर सब सामान रखाया और चल पडे। बस पर जात

ता किन्नेग पर ही उतरना पड़ता वान या टँकसी मे सीधे किताबघर पहुँचा जा सकता था, जहाँ स हूपीवेली नजदीक थी ।

नौ बुलिया पर सामान रखकर हम दून क्लिफ पहुँचे । मकानक एजेंट ने कह रखा था कि विन्नी की लिखा पढी हा जाने पर ही बँगले म रहना हागा लिखा-पढी अभी हुई नही थी । पर उसका हम पता नही था । बँगले क चौकीदार को भी यह बात मालूम थी लेकिन उसन बाधा नही डाली । उसने रगला खोल दिया । सफाई अच्छी नही हुई थी लेकिन डा० सत्यवतु क फुटन म चोट आ गई थी, इसलिए देखभाल नही कर सके थे । फर्नीचर मे से भी कितने ही उठ गए थे, और हम अचानक आकर बैठ न जात, ता और भी कितन उठ गए हान । मकाना क विक्रत समय अक्सर ऐसा हाना है । चार अच्छी चारपाइया की जगह चार रद्दी चारपाइया थी । सामान की सूची म आखिर सख्या ही ता लिखी जाती है और वह यहाँ पूरी थी । एक कमर की दरी का आधा भाग भी गुम था । कमला ने बँगले को पसन्द किया । हाँ, उसक एकांत म होने की बात अवश्य कर रही थी । लेकिन हन क्लिफ मामूली एकांत स्थान नही था । यह ऐसा बगला था जिसके लिए ऋषि मुनि भी तरसत । मसूरी म्युनिसिपलिटि की सीमा और बगले की सीमा एक थी, अर्थात् पश्चिम म इसक बाद कोई बगला नही था । ऊपर हनहिल का विंगाल बँगला था, जिसका ही हनक्लिफ मेहमानखाना था, और बेघत वक्त ही दाना की भूमि का बँटवारा हुआ था । हनहिल भी वर्षों स किसी रहन वाल का मुह नही देख पाया था, और वही अवस्था उसक पाम की हनली बँगले की भी थी । हनली के नीचे जिन्डेर का दामजिला भव्य बँगला था, जिसके पूसाग बहनें और उनक भाई स्थायी निवासी थ । वर्षों तक उाँक पडोमी रहन का हम आनन्द मिता ।

यागिराज विटटलदाम (गुजराती) इसी समय मसूरी म आय हुए थ । मर माय उनका अष्ट परिचय था । मैंन उाँह एक सिद्धहस्त धुमकठ पाया । उाँहने पुर्नी न लिपलाई हानी, ता उमी लिन विजली पाना हमारे लिए न खुशना । यह भी पता लग गया कि रलके पासल स भेजी हमारी पुस्तकें जौट

एजेंसी मे आ गई हैं। पुस्तका का रखन क लिए सिफ दा रक थे। तीन अलमारियाँ बपनों की थी, तीन चार बपवोड पुस्तका का रखन के लिए उपयुक्त नही हा सकत थे। दा-तीन अलमारिया की तकाव आवश्यकता मालूम हुई।

११ जुलाइ अपन मकान मे पहली रात थी, अभी बपों मुझे डम मकान से अमानुष्ट होन की जरूरत नही थी। उस समय ता बहुत खुशी हा रही थी।

१२ जुलाइ को मकान ठीक ठाक करन मे दोपहर तक लग रहे फिर कमला क माय लकममोट गए। योगिराज ने कुछ गुजरानी पक्वान तैयार किए थे। योगिराज योगिक आसन और कितना ही और त्रिशर्ण जानत थे, और उनका प्रयाग रहस्यमय ढंग से नही, बल्कि स्वास्थ्य क उपयोग क लिए करत और दूसरा को भी सिखलात थे। यह अपनी इसी विद्या का लेकर यूरोप घूम आए थे, और कुछ ही दिना बाद फिर विश्व-परिभ्रमा क लिए निकलने चाले थे। सठ गोविन्दनाम की "पूमिबी परिभ्रमा" मे योगिराज यूवाक मे मिले थे। कितने साला से न मिलने पर मन लालामित ता हाता है लेकिन घुमक्कड़ ता बतामपछा हात हैं, जा बिछड़ गए या बिछड़ गए।

नय मकान का विसी ने लिया है, यह मुनकर एक मिन्त्री आए और कहा, बंगले का पुन्ना कमजोर है इसे मजबूत करना चाहिए नही ता गिर जान का डर है। हम कोई कमजारा नही मालूम हुई। और पुन्ना मजबूत करन का मतलब हजार डेड हजार स्वाहा करना था। साच रह थ एक रमाइया ता रखता ही हागा जिसक लिए भाजन और २५ रुपया महीना देना पड़ेगा। आस-न्याम जा जमीन है, उसका पुन्नवारा सजाना चाहिए, जिसके लिए ४० रुपय मासिक धम-स-धम माली का भी दन पड़ेंगे। सब राहिए लेकिन पास मे रुपय कितन हैं इसको भी दानना पा, इसलिए उस समय एक रमाइय का ही रखन का निश्चय किया। बाजारस कुछ काम की चीजें खरीनी जिसमे ६० रुपय लग गए। रेडिया भा अब अनिवाय मालूम हान लगा, तासकर इस एकान्त बंगले मे उसकी जरूरत समाचार क

रजिस्ट्री कर दी। मैं नहीं गया, डा० सत्यवेंतु ने सब काम का विवाद हान पर सारी जिम्मेवारी हमारे ऊपर रखने की थी, जिसे मैंने निबलवा लिया। उसी दिन मे डा० सत्यवेंतु नौकर मातंगरसिंह का रसोई बनाने के लिए हमारे पास भेजा मिल नौकरा में वह सबसे अच्छा था। ईमानदार था, काम बनने था और बिना कहे काम को करता जाता था। हाँ अच्छी नहीं बना सकता था और वेतन भी अधिक था।

मैं भी कभी तीर्पामन किया करता था। योगिराज ने हलासन की तारीफ की, तो फिर १६ जुलाई का मैंने शुरू कर बहुत दिना तक चला नहीं। वस्तुतः बाहर टहलने से बचने, मन ने यह बहाना ढूँढा था और पीछे उमने यह भी वह दि बेटीज तो जीवन भर के लिए साथ हा गई है। इसलिए इसमें धीरे धीरे हम हनविल्फ के घामी और मसूरी के नि यहाँ की चार्ज कुछ दिना तक नहीं सी देखती रही पीछे उनका जाना रहा। कमला का स्थान के प्रति स्नेह बहुत मूढम गी लगा। वह तपस्विनी होने के लिए नहीं पना हुई थीं, औ घुमकण्ड थी।

मसूरी का प्रथम

निवास

१६४३ म मैं पढ़े पहल मसूरी आया था और मानसराज र जन निबत की सोभा क पास क नलग गाँव स जल्नी-जल्नी मजिल भाग्ना महीं पहुँचा था । भर माय नेग गौर का एक नहन था उनक परिचित विगन मिठ लणौर बाजार म रहत थ । उन्नि अपना छानो-ओ दूकान और निवास की कुटिया को लिखगार कहा था— 'तरीफ ता हागा लकिन यह कुटिया हाजिर है ।' उन्नि कुछ एम स्वर म म बानें वही थी कि मैं उहीं के पास ठहर गया । कुटिया हा या महन सब जाह आनदपूवक रहना धुमकड के लिए आवस्यक चीज है, मैं उयवा अम्यस्त था । विगन-सिंह की फिर मद आइ और २४ जुलाई का कमला क माय हम धूमन उनक पास गए । मसूरी मे उह मैंन मदा अपन स्वजन बंधु मा पाया । विगनसिंह बनौर के बनमू गाँव क रहनवाले थे । अपने मारि-बन्ग का तरह व्यापार क कारण वह भा निव्रत बद् धार गम, और वहाँ की भाषा का अपनी मातभाषा की तरह बालन लग । धुमकड म बन्ग-वदन पर उह महीं लाया द्विपा से चतुष्पाद हा गय आग पट्टण और अष्टापद ट्टण । जीविका के लिए दूमरे सम्बा भोटिया की तरह उहोंने भी मूर्ई पागा, चाकू-बची, साबुन और इसी तरह का सस्ती चीजा का छाटा मा दूकान माल की । साजन क वक्त उनको पत्ता मसूरिया का सामान लवर हाटला म

साहवा क पाम भी जानी, लेकिन अग्रजा क चले जान पर जब इन चीजा के ग्राहक बहुत कम थे। जाडा म वह दिल्ली म रहते थ। वहा घुरापियन ज्यादा थे जा तिन्त और चीन की दन कलापूण चीजा का पमद करते थ। मसूरी म १० १५ सम्बा तिब्बती परिवार थे, जो पहले स ही यही काम करत जाये थ। किर्नसिंह न भी वही जीवन अपनाया था। किसी तरह गुजारा कर लत थ। किर्नसिंह से मिलकर फिर लण्डीर बाजार के अतिम सिर तक गये। मकान म बढइ स कुछ काम करवाना था, पूरनसिंह हागिधारपुरो अपन पुत्र क साथ जान न लिए तयार हुए। कई सीस टूट गय थ लण्डी की चीजा म भी मरम्मत करनी थी छत कही-कहा चूनी थी और हौम की बुरी हालत थी। दरअसल वस घर की मरम्मत नाम मात्र की ही हा पाई थी। उस दिन लण्डीर मे हम बहुत सी चीज खरीदकर लाय। मसूरी म लण्डीर, कुल्हनी और किताबघर तीन बाजार है जिनम लण्डीर ही मारहा महीन का है क्यकि यह सिर्फ मलानिया पर निर्भर नहीं रहता बलिक जास पास क पहाडी गावा क लाग भी यहाँ चीजें खरीदन आने हैं। पहाण का तरफ भी अब माटर सटक बन रहा हैं अब बहुत से गाँवना म लण्डीरवाग का हाव घाना पडेगा। उस समय अग्रेजा न जान पर भी उनक सम्बन्ध की बहुत सी चाज दिक् रही थी। फौज का बकार का मामान और दवाजा का डेर लगा हुआ था अग्रजा किताब और अग्रेजो क दूमरे सामान भी दिक् रह थ मैन एन पाठ पर का सनिक चाला भी ले लिया जिसम १५ सार सामान आमानी स आ सनता था। सांच रण था, अगल साठ गन्वाल क मिलसिठ म बदरीनाथ जाना पडेगा उस वक्त यह काम आयगा। घुमकनची ता में कर चुका था लेकिन मरी यह लालमा अपूण था रहा कि सब सामान अपनी पीठ पर रखकर चला जाए। जिन्गी म मिक एक बार कुछ जिना क लिए पहली तिन्त यात्रा म एसा मौका मिला था। लेकिन सामान जम्न म कुछ अधिक था, और मुग बाजा डान का अम्बाग नहीं था। समनता था, जब अम्बाम करक गायन उस पूरा किया जा सर। बहुत पहले घुमकनची म पैर रखत ही बडा साथ क साथ इन

श्लोक का पत्र था "एसाकी निम्पुह गान पाणिपात्रा दिगम्बर । कदा भविष्यामि ।" पाणिपात्र और दिगम्बर धनकर प्राथना करने की साथ ता अब नहीं रह गई थी पर इसकी साथ जरूरी थी कि सब सामान अपनी पीठ पर रखकर घूमता । लेकिन, यह क्या उस समय सोचने की बात थी, जब कि मैं घर बाध चुका था, और कोई कहे, न गन् गहमियाहु गहिणी गद्गमुच्यत ।" ता गहणी भी गृह के साथ जा गई थी । कमला के साथ परिचय और घनिष्टता दूसरी स्थिति और दूसर उद्देश्या से हुई थी । पर वह घनिष्टता अब दूसरे रूप में परिणत होनेवाली थी । मैं जब दाना की आयु का ख्याल करना, तो त्रिचविचाना था समझता था, कमला का सुशिक्षित कर अपन पुरों पर खडा कर देना ही ठीक होगा । पर जब अपने दान के समाज का देखता तो यह नीचे दर्जे का स्वाय मालूम होता । जाधिर कमला और मेरे साथ रहने का समाज किस अर्थ में था रहा था इसकी यदि मुझे पवर्हि नहा थी, तो यह ता देखता हा था कि दूसरा का टीका-निष्पणिया का कमला के ऊपर क्या असर होगा । यह सब देखने घुमकानी का खवाब अब निम्नकुल बकार की बात थी ।

२४ को हा सरदार पूरनसिंह अपन लडके के साथ काम करने के लिए चले गए और कई दिना तक काम करते रहे । बगैरे के कुछ सामान उठ गया था लेकिन ता भी काफी सामान था । गद्दीदार कई कुमियाँ भरम्मत के बिना बकार वा, दो-तीन छाटी छाटी मेजें भी गोणम से निकल आई । फर्नीचर की भरम्मत के बाद छत की भी रगना आवश्यक समझा गया । हमारे बगैरे का छत बिना रगी थी । गुणिया न बनलाना कि रग देने पर लाह की चादरें मुजें से भी बच जाती हैं । उनकी आमु बड जानी है । खैर, छ वष ता अभी इन चादरा का बचवाने की जरूरत नहीं पड़ी, क्या जान यह रँगने ही के प्रताप से हुआ । थी सनगुप्त अब भी इलाहाबाद में परिभाषा का काम कर रहे थे । मैं उनकी दरभाल कर लिया करता था पर ५० बलभद्र मिश्र के हट जान के बाद मुपन कोई आगा नहीं गन् गई थी सनगुप्त का वही युतिवसिटी में रूमो पत्रान का काम मिल रहा था, मे

भी इसमें सहमति और सहायता रही। अब वह युनिवर्सिटी में चले गये। लेकिन उमक बाबू भी उठाने काम से हाथ नहीं उठाया। कलिम्बाग में तैयार किये हुए हमारे कामों में से कितने उनकी ही मावधानी व कारण अच्छी तरह छप सके।

मेरी दा-तान पुस्तकें गुजराती में अनुबाधित हो चुकी थीं। अहमदाबाद के श्री नवनीतलाल मद्रासी गुजराती प्रकाशन का काम करते थे, और मेरे मित्र प० भागवताचार्य के मन्त्रपात्र थे। उठाने कुछ और पुस्तकें गुजराती में अनुवाद करके प्रकाशित करनी चाहीं। मैंने अनुमति दे दी और 'जय योधेय' 'सिंह सनापति', 'मधुर स्वप्न', 'जादू का मुल' आदि कई पुस्तकें उठाने प्रकाशित कीं। उनके पत्र में मालूम हुआ कि आजकल प० भागवताचार्य जी अफाका गये हुए हैं। स्वामी सहजानन्द और स्वामी भागवताचार्य में कितनी ही बातें एकसा थीं। दोनों ही मेरे स्नेह और सम्मान के एकस भाजन थे। दोनों ही सस्कृत के प्रकाण्ड पण्डित थे। राजनीति में भी दोनों आगे बढ़े हुए थे, पर स्वामी सहजानन्द जहाँ मजूर-विसानों के वित्कुल अपने ही गये थे, वहाँ भागवताचार्य जी गांधीजी के मानवतावाद तक पहुँचे थे। उठान सस्कृत में गांधीजी की पद्यबद्ध जीवनी भारतपारिजातम् तीन भागों में लिखी थी।

इस समय बाई० डब्लू० सी० ए० (तन्मय महिला त्रिचिपयन मभा) में कई दणों की महिलाओं का क्लास हो रहा था। डा० पाचाड से उन्हें मेरे बारे में मालूम हुआ, और उठान मुझे व्याख्यान देने के लिए कहा। इसमें बाई उजुर नहीं हो सकता था बिनापकर जब कि इसका द्वारा एमिपा के बहुत से भागों की महिगाओं से भेंट करने का मौका मिला रहा था। पर भारत में अग्रजा में व्याख्यान देना मैं पसन्द नहीं करता। इसमें एक तरह की हीनता का मान समझ लीजिए। या अग्रजा का भापा हानि से अपने दण में गुलामा का किहू समझतर उमक उपयोग में आ-मालानि हाणी है। हिंदा जाननवाला यदि अग्रजी में पत्र लिखता, तो मैं उसका जवाब देने से इन्कार कर दगा। लेकिन, यदि बाई अग्रजी ही जानता है, तो उससे बोलने

या पत्र-व्यवहार करने के लिए अंग्रेजी के व्यवहार में मुझे कोई आपत्ति नहीं। यहाँ भी आखिर जापान इंडो चायना, फिलिपीन, सीलान आदि की महिलाएँ थी, जो अंग्रेजी ही समय सकती थी इसलिए मैंने उनके यहाँ भाषण देना स्वीकार कर लिया और भाषण दिया भी।

हमारे नीचे का 'हन लाज' बगला जान लेहली व पिता की संपत्ति थी। बक के मनेजर वूडे लेहली थे। अवकाश प्राप्त करने पर मसूरी में 'हन लाज' और 'आर्टन' दो बगला को लेकर यही रहने लगे। आर्टन मे लेहली पिता पुत्र रहते, और 'हन लाज' में एक गणार्थी सरदार दो-तीन साला से रह रहे थे। वह बूका सिक्क थे। बूका गुरु रामसिंह और उनका गिप्या ने देना के लिए कितना आत्मवलिदान किया यह सभी को विदित है। उनके सैकड़ों गिप्यों का गोली स उड़ा या फाँसी देकर गुरु रामसिंह का अंग्रेजान बर्मा भेज दिया। गिप्या ने प्रतिज्ञा की कि हम अंग्रेजों की कचहरिया में नहीं जाएँगे हम अंग्रेजों की रेल पर नहीं चढ़ेंगे इत्यादि। और हमका उहनि भारत के स्वतंत्र हान तक निर्वाह किया। सरदार स जब तक बातचीत हा जाती थी, पर उनका पान और रुचि सीमित थी इसलिए हम मामूली बात तक ही सीमित रहत। उहनि बत-लाया यहाँ बघेरे ता हैं, और जाडो ही नहीं, गर्मी-बरसान में भी रात को आ जाते हैं, लेकिन अभी तक उहोंने किसी मानव पुत्र को कोई कष्ट नहीं दिया न उस पर हमला किया। हाँ कुत्ता को वह बिल्कुल नहीं छोटत। अपन एक कुत्त के बार में बतला रह थ अभी मूय बिल्कुल डूबा भी नहीं था। लडक जजीर में बघे कुत्त को खाना खिला रहे थ। इसी समय न जाने कहाँ स वह टूट पडा और उस लेकर चम्पत हा गया। हमार ऊपर की काटी 'हन हिल' वपों स सूना थी। एक ओट हौम दुमजिला था, और एक कई कमरा का एकमजिला नौकरो के लिए। इन कमरा में खोरीदार के अतिरिक्त घोबी, नाई और सीवन के बकन में डूगर भी काम करनेवाले रहत। घाबिन के कई कुत्ते बघेरा ल गया था। कुत्ते और बघेरे के इस सम्बन्ध को गुनकर हमन साचा, तब कोई महंगा कुत्ता नहा लेना चाहिए।

लेकिन बुत्ते के लिए अपनी जान तो महंगी ही हाती है। खर, अभी कुत्ता मर मर था। विद्वानसिंह ने कह रखा था कि एक हमारे लिए ना दूब रहे। उनके पास एक सुन्दर तिब्बती कालान पडा हुआ था। कमला उसकी जख्मत नहीं बनला रही थी, लेकिन विद्वानसिंह को हम कुछ सहायता करना चाहत थे इसलिए मौ रूपय पर उसे ले आए।

पिछले साल चूक जान का अफसास था। इस साल कमला का विगारण का परीक्षा अवसय दिखवानी थी। चाहे इसने लिए इलाहाबाद हो जाना पटता। मालूम हुआ दहरादून म भी परीक्षा केंद्र है। हमने दाना जगह फाम भरवा दिया। कमला पहल ही स कुछ तयारी कर रही थी। साल भर से रात दिन वह हिन्दी ही बोल रही थी हिन्दी पुस्तकों को पढ भा रही थी मरा नई पुस्तक का बही टाइप नी करता था इसलिए भापा का पान उनका काफी था अब पुस्तक को तयार करना था।

‘हन विल्फ म रहने के लिए हथियारा की जख्मत था मैंने एक रिवाल्वर और एक बंदूक के लाइसेंस के लिए दयास्त दे दी। पुलिस इराक वान म जांच कर रहा थी। पुलिस क्या खाक जांच करनी? राज नातिन दृष्टि से मैं पूरा अविद्वसनीय था। विश्वसनीय हान पर भी पनवाल का हा अंग्रेज हथियार लिया करत थे। यदि पमा नहीं है तो यह तक दिया करत थे कि उस किस चीज की रक्षा करने की जरूरत है। देश का परतंत्र रूपन के लिए उन लोगों को निहया रखना भी उनके लिए जरूरी था। स्वतंत्र भारत के शासन सूत्रधार अग्रजा का बनाई लकीर से जरा भी विन्न-कुत्तनाल नहीं हैं। मालूम होता है वह भी हमारी जनता म उनका ही डरत हैं जितना अग्रज डरत थे। डरना भी चाहिए, क्योंकि उनका शासन जनता के हित के लिए नहीं, बल्कि कुछ मुट्ठी भर चारपाजारी सेठों और घूमसार मंत्रियों-नोकरगहा के लिए है। अग्रजा से स्वतंत्रता की मांग करत थाग्रस म प्रस्ताव करत थे कि हर स्वतंत्र देश के नागरिक को हथियार रखने का अधिकार है, इसलिए हथियार के बानून को रद्द करना चाहिए। पर अब यह प्रस्तावकर्ता अगर जिन्दा भी हैं, तो यह मानने के

लिए भी तयार नहीं हैं कि वह कभी ऐसी माग करने थे। यदि स्वतन्त्र नागरिक के लिए अपनी रक्षा के लिए बन्दूक और पिस्तौल का रखना नागरिक के हक के तौर पर उचित है और ऐसा दूसरे देशों में दखा भी जाता है तो हथियार के कानून का क्या नहीं उठा के ताक पर रख दिया जाता और बन्दूक तथा पिस्तौल को भी लाठी छूरे की तरह माना जाता ? इन हथियारों के दाम इतने हैं कि गरीब स्वयं इन्हें खरीद सकते हैं। और मंत्रिया और प्रमुखा को जैसे-जैसे आत्मिया के हाथों में इन जाने स डरना भी नहीं चाहिए क्योंकि जस तसे जादमी अगर किसी की जान लेने के लिए तयार है ता हथियार का कानून उनको रोक नहीं सकता। क्या गाइसे को उसन राता ? क्या हमारे देश के भिन्न भिन्न भागों में लूट-मार करनेवाले सबको डाकुआ को आधुनिकतम पिस्तौल बन्दूक ही नहीं बल्कि लुटस गना के पाने से बचिन लिया ? जनता को निहत्थी रखकर बल्कि उन्हे इन हथियार लेकर घूमनेवाले लुटेरा की दया पर छाड दिया जाता है। निमी भा दृष्टि से देखन से अब हथियार के कानून की आवश्यकता नहीं थी किन्तु किसी तरह भी साचने से यह आगा नहीं कि आज की सरकार कमजोर भी निलाई करगी।

पर इस समय तो देण के लिए नहीं बल्कि अपन लिए हथियारों की आवश्यकता थी। पुलिस की रिपोर्ट पर वह नहीं मिल सकते थे। यद्यपि मैं छ-सान हजार रुपये की आमन्त्री पर टक्का दे रहा था, और कम प्रकार रखा पान का हक था। उस समय था लालबहादुर शास्त्री युक्त प्रांत में मह विभाग के मन्त्री थे। उनका पाग मैंने चिट्ठी लिखी मैं एमो जगह रहता हूँ जहाँ हथियार का जम्हरत है। पुलिस क्या मेरे बारे में जांच करके मालूम करगी। आप मुझे और मेरे राजनीतिक विचारों को भी वहीं अधिक जानने हैं। यह बनलादय नि लाइमन्स दन की मनता है या नहीं। लाल बहादुर शास्त्री वस ता बहुत हलक फुडक मुटका भर के आत्मी हैं। गिणा के लिए भी उन्हें आकस्फोड या कम्प्रेज तो दूर यहाँ के निमी विधानविद्यालय का भी मुह देसना नहीं पडा, वह काफी विद्यापीठ में पड़े। लकिन, न

काबुल में गदहो का अभाव होता है और न दूसरी ही जगहों में। लाल-बहादुर शास्त्री का विचारों से सहमत होना न मेरे लिए जरूरी था, न मेरे विचारों से सहमत होना उनके लिए पर मैं अच्छी तरह उनका मूल्य को जानता था, और वस्तुतः इसीलिए मैंने उन्हें सीधे लिखा था। नौरशाही लाल पीत से बचना तो मुश्किल था, लेकिन अगर किसी आदमी में उसकी अवदलना की गति थी तो वह लालबहादुर शास्त्री थे। उन्होंने ऊपर से हथुम दिया। मुझ बंदूक का लाइसेंस मित्र गया और कुछ दिनों बाद पिस्तौल का भी लाइसेंस आ गया।

६ अगस्त को श्री आनंदजी के गहन अम्बाला के लाला सूर्यभानजी आये। वह गांधीवादी और आनंदजी के पुराने नाम हरनामदास में कुछ परिचित भी थे। आनंदवाद की पुट तो जीवन में थी। अम्बाला का बाहर बितना ही एक जमीन थी, जिसमें साम्यवादी परिवार का प्रसारे का स्वप्न देखते थे। उस समय ख्याल कर रहा था यही पास का 'हन हिल' बगले की लेजर उसकी काफी जमान में सता वारी कर रहे थे। लेकिन, बहावत है "अल्ला मियाँ गजे को नाखून नहीं देना। नहीं तो वह अपनी चाँद हाँ बुरेद डाले। मेरे मन में भी तरह तरह के स्वप्न आते थे जिनमें एक स्वप्न का अभी अभी मकान का टूटे से बाँधन पूरा किया। अगर लाख रुपय और मिल जाते तो इसमें गव जहाँ कि 'हन हिल', 'क्लिटर' और 'हन ली' का भी गरीब डालते। सोचते यहाँ साहित्यकार मित्र आकर रहें। ऐसा करने में मेरा अनुभव गायद महादवीजी से विस्तृत भिन्न नहीं जाना लेकिन, अल्ला मियाँ न नाखून न कर अच्छा ही किया।

७ अगस्त १९५० में लिए बहुत ही स्मरणीय दिवस था। उसी दिन मुझ जन्म-जन्म का बिछड़ मित्र की तरह एक बंधु से साक्षात्कार करने का मौका मिला। स्वामी हरिहरणानंदजी जन्मजात धुमकाठ थे। यह समान गुण हम दोनों में एक सा था। यागिराज विठ्ठलदासजी का साथ वह पहले भी एक दिन आया था, लेकिन उग दिन उनसे परिचित हुए का मौका नहीं मिला था। आज वह अपनी पत्नी जानकीदेवी के साथ आए। फिर उनमें

बान करने उनक बारे म जानन का मौका मिला। यद्यपि मुझे उहाने देना नही था पर मरी पुस्तका क पढने स मरा काफी परिचय रखत थ। पहले मैंन यही समजा कि वह दुगम पहाडा क जवत्स्त घुमकड रहे हैं एक सफ्त बद्य हैं पीछे कुछ ही दिना म जब उनकी आयुर्वेद सम्प्रधी पुस्तकें पढी, ता यह भी मालूम हुआ कि वह कूपमडूकता स बहुत दूर हैं और राजनीतिक-भामाजिक विचार भी बहुत आग बढ़ हुए रखते हैं। इसन बाद ता हमारी घनिष्टता दिन पर दिन वत्ती गई। मैं उन्हें भैया कहने लगा। मैं अपन घर म सबसे बन्ना लडका था और पास पढोस क परिवार म भी कई मुयसे बडा नहा था। गाया मैं किसी बडे भाई का डूड हो रहा था और वह स्वामी हरिसारणानन्द के रूप म मिल गए। वह हर साल मसूरी आत और कई महीने रहत थ। उस समय बडा मन लगता पुस्तका क काम का छाडने म भी दु ख नही होता। हपने म एक दिन जरूर मैं उनक यहाँ जाता और वह भी मर यहाँ आते। वह मुझस कहा अधिक व्यावहारिक थे यह कहना उनके गुणा का कम करना हागा। आदशवाणी रहत भी जिननी व्यावहारिकता रह सकती है, वह सारी की सारी उनक भीतर मौजू थी। मैं ता इसम अपन को बोरा समझता हूँ यद्यपि अबुद्धिवादी न हान क कारण उसस मुझ उतनी हानि नही उठानी पडी।

स्वामी हरिसारणानन्द की जीवनी अलग लिख चुका हूँ इसलिए उनक बारे म विस्तार स यहाँ कहन की आवश्यकता नही। वह बानपुर म मुयसे दो-तीन साल पहल पैदा हुए। माँ पटल मर गई पिता भी बचपन ही म चल बस। साधुओ क सम्पर्क म आए। अयाध्या मन्त्रे म गए और साधु ही हरिदास बन गए। ८वीं ९वीं बलास तक स्नूत्र म पढ़े इसलिए उनको ज्ञान सम्पन्न गुरु और ममाज की आवश्यकता थी। घुमकडटी दग न्त्ताने को और सुनी-सुनाई बाता स याग क प्रति अनुराग यागा बनन की प्ररणा दे रहा था। घुमकडगी करत हरद्वार म उन्हें एक यागिराज म परिचय हुआ। यागिराज बष्णव सत्सी मत के थ पर रूत्निवादी नही थ। उहाने अपने सम्प्रदाय क सम्बन्ध को दिगलान क लिए दास का हटाकर हमारे मित्र को

न आगे बढ़ी न पीछे हटी। सबका स्वभाव एक नहीं होता, लेकिन स्वभाव में भेद होना से यह जरूरी नहीं कि दो पहिये की गाड़ी न चल पाए। दाना कभी टूटत भी, फिर मिल जाते।

कल्पियोग से लौटकर आई हुई डाक में शासन विधान सम्बन्धी परिभाषाओं की दो सूचियाँ भी थी, लेकिन इसमें बालकृष्णजी का नाम नहीं था जो खटकने की बात थी। बालकृष्णजी से योग्य इस विषय का जानकार व्यक्ति मिलना मुश्किल नहीं बल्कि उनसे तर्कों को देखकर कहना पड़ेगा कि असम्भव था। लेकिन अच्छी सरकारी मशीनों में भी गलती हाँ जाती है, और यहाँ तो नीचे से ऊपर तक उपयोगी को ही भरमार है। मिनिया में से अधिकांश जो हुजुरी या तिकडम के भरोसे ऊपर पहुँचे। अपने विभाग के सँभालने की उनमें कोई क्षमता नहीं। यदि आइ० सी० एस० सप्लायरों के भरोसे सँभालना है, तो किसी भी मिट्टी के लोदे का वहाँ बैठाया जा सकता है। बाकी जगत् पर भाई भतीजा भाँजों की या और किसी तरह से घनिष्टता प्राप्त सम्बन्धियाँ या उनकी सन्तानों की गुजाइश है। ऐसी अवस्था में याग्यता को कौन देखता है? कौन-सा याग्य आदमी इस दम घुटने वाले बानावरण में अच्छी तरह साँस ले सकता है? इसका परिणाम सारी मशीन का तीन सालों से भीतर ही अकम्प्य हो जाना हुआ। प्रान्तों से लेकर केंद्रीय सरकार तक के दफ्तरों में अप्रैजों के समय से अब चौगुने से भी ज्यादा कमचारी हाँ गए हैं, जबकि देश का क्षयफल पाकिस्तान के अलग हो जाना से कम हो गया है। यह कमचारियाँ की चौगुनी पलटन उतना भी काम नहीं कर पाती जितना कि अप्रैजों के समय इनसे चौथाई आदमी कर लेना था। १० बजे आफिस का समय हाँ, ता ११ बजे कमचारी और १२ बजे बड़े साहब यदि पहुँच जाएँ तो बहुत बेहरवानी है। कभी कभी बड़े साहब का पान आ जाना है कि आज कचहरी बँगले पर ही होगी। दूर दूर से तारीख पर कचहरी में जमा हुए लागा का अब साहेब का बँगले पर दौड़ करनी होगी। यहाँ पहुँचने-पहुँचते यह भी सुनना पड़ता है डिप्टी-कमिश्नर गार्ड्र आन दहात के दौरे पर चले गए हैं। कौन पूछन वाला है, जब एक ही

हॉडी के शालिग्रह से सभी पुत हुए हैं और सभी किमी न किमी भाँ चचा या मामा की सिफारिश का बल रखत ह। पोछे मालूम हुआ मचमच ही प्रो० बालकृष्ण को उस स्थान से हटा लिया गया। जधेरनगरा तग बग गक हा।

१८ अगस्त को सूचना के अनुसार ११ बजे में स्थानीय वचहग म गया। हथियार क लाइसेंस के बार म जाच करनी थी। नायक तन्मीलगर साहब साडे ११ बजे क करीब आण। घर गनीमत थी। डकम टकम का रसाद के बारे म पूछा। डकम-टकम ही सरकार क लिए प्रामाणिक चीज है, लखनी की सम्पत्ति का कोई मूल्य नही।

वर्षा क समय पहाडी म कहीं पर भूपाल ज्ञाना और रंग पुत्र रंग जाना साधारण-सी बात है। लेकिन मसूरी की तरफ जिमके पास मवा सी बय का तजबा हो वह बठिनाइया का जानता है और उसर लिए जालमी मौजूद रहत हैं। २१ की डाक नहीं आई। मातूम रआ गाल म कुछ राग ३ और अगले दिन पता लगा कि दहगदून स अनि वागी नक पर रंग पगल दूत गया। पहाड दूटन पर डाक क धरा को रमी समय भूना वात मुक्ति नही था लेकिन जब बहाना मिल गया, तब क्या तर्कदु उठाया जाए।

मैं ता जगल म आ गया था। अभी मुझे कुछ भी नहीं मातूम हा रहा था कि मैंन गलती की है। हाँ यह जरूर चाहता था कि गाम र हतल्लि और 'हन ली' दाना बँगला म अगर काइ हिनमिथ था ताल ता बून धच्छा। मूयमानुत्री पहले लाहृष्ट टूण थे, फिर भैया को भी मैंन आवृष्ट करना चाहा लेकिन वह मुगम वही अग्रिम व्यावहारिक थ। वर क्या हम जगल क दूते मगान म २५ ३० हजार फमान रंग रब जानत थ कि माल म तीन महीने के लिए तान-चार सौ रुपय पर क-रीय कुल्की वागार क आम-वाम अच्छा मवान मिल सकता है।

इस समय चीनी की बहून तिकत थी। महमाना के मतरार का मयम बच्छा साधन चाय है। चारवाजार की चीनी बून मेंहा था और भरमक उसम बघना चाहता था। एकाय बार रागन क जधिकारी न

स कुछ चीनी दिलवाई। फिर हमने सोचा गुड की साफ की हुई अच्छी चागनी बना ली जाए। गुड अपेक्षाकृत सस्ता था और उस पर कंट्रोल भी नहीं था। गुड व माय काफी पीना मैंने काफी की ज मभूमि कुगम में सीखा था। वहाँ रहते रहते यह मेरा विश्वास जम गया था कि काफी के लिए चीनी इस्तेमाल करना उत्तम स्वाद का घटाना है, इसलिए भी गुड की आर मरा पक्षपात था और काफी पीने व समय ता मैं बराबर गुड की चागनी ही इस्तेमाल करना चाहता था।

सितम्बर के पहले सप्ताह में मालूम हुआ थी पुरुषोत्तमदास टडन कांग्रेस व सभापति चुने गए हैं। यह भी कहा जा रहा था कि नेहरूजी ने उनका चुनाव का सबसे अधिक विरोध किया था, और यह भी धमकी दी थी कि उनका चुन जाने पर मैं इस्तीफा दे दूंगा। एक बार ऐसी ही परिस्थिति में गांधीजी का भारी विरोध होत भी सुभाष बाबू कांग्रेस व सभापति चुन गए थे। उस समय कांग्रेस व लिए गविंगाली नतत्व की आवश्यकता थी। पर आजकल कोई भी कांग्रेस का उस दलदल से निकाल नहीं सकता जिसमें वह अपने साथ देग का भी लिय जा रही है। कोई त्यागपत्र क्या देगा क्या सार्वार से निरालकर बाहर उसका लिए करन का क्या है? लोग न यदि नेहरू की बात का ठुकराकर टडनजी का सभापति बनाया ता दूसरा अर्थ यहा था कि अभी उनके दिमाग अपरिपक्व थे, और अपनी हानि लाभ का नहीं समझते थे। नय साधारण चुनाव व घाद जा मूर्तियाँ ऊपर आईं उहान इस तथ्य को समझा कि नेहरूजी के बिना हमारा काम नहीं चल सकता साथ ही हमारे बिना उनका भी काम नहीं चल सकता।

इन विस्थापन में साग-मन्ना व लिए जमीन जखरत के भुनाविक काफी थी और नया जादमी उस देगजर मसझेगा कि घाडा-मा हाथ पर चलाना चाहिये, फिर साग सजा खरीदन का जखरत नहीं पडेगी। मसूरी में साग मन्ना बहुत महगी मिलता है। नीचे दहगादून में जा चीज दा आना सर आगा, वह यहाँ छ आना सर। साग-मन्नी व लिए आस-पास व पहाडी

गाँव को श्रांमाहन देने की कागिग नही की गई । नई नगरपालिका के निवाचन हाने पर आगा की गई थी कि वह कुछ करेगी, लकिन जान पन्ता है राजा भाज के सिहासन पर बैठने हा आदमी का दिमाग फिर जाना है । पहे दा तीन वर्षों नञ् मुष पर माग-मव्जी का मेती की सनञ् मजार थी । अपने भी काम करता था । जानता ता था नही कि गान्ती कस और कञ् रापी जातो है, और टमाटर क लिए क्या करना हाता है । अपने, मानवरसिंह और कभी किसी मजदूर का लगाकर वर्षों से घास की चरागाह बन गइ क्यारिया को खुदवाया खाद डलवाई बाजार स बीज मंगवाया । माचा, यदि जमीन भीगी हा और खाद पड जाय, ता बाव जमेगा । जञ् बीज न हफ्ता जमन ता नाम नही लिया, तब मालूम हुआ कि उसके जमने क लिए तापमान की आवश्यकता है । जाटों म वह नही जमा करन । तापमान के अनिरिकन हरक का अपना काठ हाता है । हमन माचा, मभा चाजे जमीन म डाल ता, यह तजवा भाग काम दगा । गाभा टमाटर, पाक, मूली सब के बीजा को डाल दिया ।

सन ता है हा दुनिया म जब एस सेता म साग-मव्जी उगाइ जानी है, ता हम भी उगा लेने हाँ कुछ गल्ती करके तरवा हासिल करके । पर यह मालूम नही था कि यहाँ समय समय पर लपूग और लाल मुह क बदरा की पन्तन आजा करता है । यह धुमन्नु घर बाँधकर रहनशाला क हरेक श्रम को अपनी ही चीज ममस्तन हैं, और हफ्ता नही महानों न जागा कर गयी गइ पमल का पलक मारत मारन सफाचट करके चल दत हैं । इस साल जञ् हमन सेत का तैयार किया ता दरजमाउ पमल का समय बात घुसा था, हमलिए अनुमानजी को काली गारो पन्तन का नय रदन म लान उजान का कार्द भीजा नही मिला ।

बितावा क रान क लिए अलमारी की त्तरत थी । कचारिया क यणी भेया न करे न्ये । ७५ रुपये म दा गोपेदार अन्भारियाँ हमार गाम पहुँच गइ और हमन आनरयक बितावा का उनमें सजा भी दिया । जब काम देन लग ता नया न उगे लन स टकार कर लिया । बित्रा क साप

त कुछ चीनी दिलवाई। फिर हमन सोचा गुड की साफ की हुई अच्छी चाशनी बना ली जाए। गुड अपक्षाकृत सस्ता था और उस पर कटोल भी नहीं था। गुड के साथ काफी पीना मैंने कॉफी की ज मभूमि कुगम म सीगा था। वहा रहत रहत यह मेरा विश्वास जम गया था कि काफी के लिए चीनी इस्तमाल करना उसके स्वाद को घटाना है इसलिए भी गुड की ओर मरा पक्षपात था और काफी पीने क समय ता मैं बराबर गुड की चाशनी ही इस्तेमाल करना चाहता था।

सितम्बर के पहले सप्ताह म मालूम हुआ थी पुरुषोत्तमदास टडन कांग्रेस क समापति चुन गय है। यह भी कहा जा रहा था कि नेहरूजी ने उनक चुनाव का सबसे अधिक विरोध किया था, और यह भी धमकी दी थी कि उनक चुन जाने पर मैं इस्तीफा दे दूंगा। एक रात ऐसी ही परिस्थिति म गांधीजी का भारी विरोध होने भी सुभाष बाबू कांग्रेस के महापति चुन गय थे। उस समय कांग्रेस के लिए गतिशाली नेतृत्व की आवश्यकता थी। पर आजबलवाई भी कांग्रेस का उस दलदल से निकाल नहीं सकता, जिमम वह अपन साथ देश का भां लिये जा रही है। कोई त्यागपत्र क्या ागा, क्याकि सरकार से निरलखर बान्दर उसक लिए करन का क्या है? लागाने यकि नेहरू की बात का ठुकराकर टडनजी का समापति बनाया, ता मरना अथ यही था कि अभी उनक दिमाग अपरिपक्व थ, और अपनी हांति लाभ का नहीं समझत थ। नय साधारण चुनाव क बाद जा मूर्तियां ऊपर धाई उठाने इस तथ्य का समया कि नेहरूजी के बिना हमारा काम नहीं चल सक्ता साथ ही हमारे बिना उनका भी काम नहीं चल सक्ता।

इन सिलख म माग-गानी क लिए जमीन जरूरत क मुताबिक काफी थी और नया आदमी उम दखनर समझेगा कि थाडा मा हाथ पर चलाना चाहिये फिर साग साजी खरीन्ने की जरूरत नहा पडेगी। ममूरी म साग साजी बहुत महंगा मिलती है। नाच दहराडून म जा घोज दा आना सर गो बट यहाँ छ आना सर। साग-सब्जा क लिए आम-पाम क पहाडी

गांधी की प्रोत्साहन दन की कारिग नहों की गई । नई नगरपालिका क निर्वाचन हान पर आगा की गई थी कि वह कुछ करेगी, लेकिन जान पता है राजा भाज के सिंहासन पर बठत हो आदमी का दिमाग फिर जाता है । पाँके दा तीन वर्षों तक मुख पर साग-मन्नी का खेती की मनन सवार थी । अपन भी काम करना था । जानता था या नहीं कि गाभी बँत और कज राभी जाती है और टमाटर क लिए काम करना हाना है । अपन मातवरमिट और कभी रिमा मजदूर का लगाकर वर्षों स घास की चरागाह बन गई इफारिया को खुदवाया ताद डूबाई बाजार स बोज भेगवाया । सोचा यदि जमीन भोगी हो और खाद पड जाय ता बीज जमगा । जब बीज क हफ्ता जमन का नाम नहीं दिया तब मालूम हुआ कि उमर जमन के लिए तापमान की आवश्यकता है । जाहों म बट नहीं जमा करन । तापमान क अनिश्चन हरक का अपना काल हाता है । हमन गावा, मभी चार्जे जमीन स डाल दा यह तजर्जा आग काम दगा । गाभा, टमाटर, पाक मूली मध क बीजा का डाल लिया ।

सन ता है हा दुनिया म जब एम खेवा म माग मब्जो उगाई जाती है ता एम भा उगा लेंगे, हाँ कुछ गलती करवे तजर्जा हासिल करवे । पर यह मालूम नहों था कि यहा समय समय पर लपटा और लाल मुह क बदरा की पान्न आया करता है । यह धुमन्नु घर बाँधकर रहतवाला क हरद श्रम का जपती ही काज समयत हैं, और हफ्ता नही महीनों न चला कर रगी गई फमल की फलन मारत मारत सफावत करवे चल देते हैं । इन साल जज हमन सन का तैयार किया ता दरअसत फमल का समय बीत चुा था, इसलिए हनुमानजी की काली गारी पान्न का नय रदन स लाभ उठाने का कोई मौका नहीं मिला ।

बिताया क खन क लिए अलमारी की जन्मत थी । कवाशिया क यद्दी नया ने फरे लिये । ७५ रुपये म दा गीतेदार अलमारियो हमार पाम पहुँच गई और हमन आवश्यक बिताया का उनम सजा नी लिया । जज काम दन लग ता नया ने उमे लेन स इकार कर लिया । मिश्रा के साथ

ऐसा नाता स्थापित करना मुझे रचिवर नहीं होता, लेकिन भैयाजी इस साल ही तब नये रहे, अगले साल से वह नवीनता जाती रही, और इस तरह का आग्रह न हमारी ओर से हुआ न उनकी ओर से।

सत्सार में रहने पर बहुत दिना के विछुडे भी मिल जाने हैं। ३३ वष हुए मैं भी तरुण था और मास्टर विश्वम्भरदयाल भी। प्रथम विश्व युद्ध के समय १९१७ में घोलपुर के राजा ने वहाँ बनने आयसमाज मन्दिर को तोखा दिया या बनना बन्द कर दिया था। भिटके छत्ते में अँगुली दे दी थी। अभी सत्याग्रह की घूमदूर दक्षिण अफ्रीका में ही सुनाई पडी थी, लेकिन आयसमाजियों ने घोलपुर में उस युद्ध का छेड़ दिया। मैंने गुरु मुनी महाराजसाद जो वहाँ पहुँचे मैं भी गया, मास्टर विश्वम्भरदयाल भी जा मौजूद हुए, और भी न जाने जहाँ-जहाँ की मूर्तियाँ आई। स्वामी श्रद्धादा भी आए। उन्होंने ही बीच में पटकर राजा का समझाया। हम में से कितने ही गरम खूनवाले तरुण स्वामीजी का दखू कहने में भी बाज नहीं आए। लेकिन बात जागे नहीं बनी और हफ्त भर का करीब हा हम वहाँ सत्याग्रहियों के काम का जीवन बिताने का आनन्द मिला। मास्टरजी उस समय गायद गुरुकुल कागडो का स्कूल विभाग का हड मास्टर थे। उनका चेहरे और व्यवहार की छाप एसी पडी थी कि उनसे मिलत जुलत पटना का बापेसी नता लाल बाबू से धनिष्ठता ज्ञान पर मुझे बार-बार मास्टर विश्वम्भरदयाल याद आता। १० मितम्बर का वह मेरे घर आय। बद्ध और बूढ़ी हडिडिया की उठाने के लिए भारी भरकम गरीर। इन विल्फ 'आन में था। मैं भी चलाई थी लेकिन वह आय। उनका पुत्र भारतभूषणजी यहाँ के इंटर कालेज में अध्यापक थे वह भी उनका साथ थे। कितनी ही दर तक पुराने और नये युग की बातें हानी रही।

मगूरी में मर आन का पता लगाना का लग गया। हिंदी पत्रों में सूचना निकल गयी थी। वह समय भी आयगा, जब आज तक वही अधिक समुद्र और भारी मरणावादी मगूरी का अपना दनिष्ठ पत्र निकलगा जिसे लाग चाव तक पढ़ीयेगे। उन वकन मगूरी में कौन आ जा रहा है इसका पता

लगना मुश्किल नहीं रहेगा। अभी भी अंग्रेजी राज्य की देन दो-तीन साप्ताहिक अंग्रेजी म निकलते हैं, लेकिन वह विनापन के लिए ही हैं। गायद हो कई उह पस दवर खरीदता है। श्री सत्यप्रकाश रूडी ने "हिमाचल" की धूनी रमा दी है, लेकिन वही बताना सक्त हैं कि कैसे वह वपों स इमे चला रहे हैं। ममूरी के दूजानदार उसमे विनापन देने को लाभदायक नहीं समझते। यहाँ क अल्ट्रा माडन सीलागी जेटलमन और लेडीज ता हिंदी की आर देयजर नाव भी मिकाइला भी पस द नहीं करत। कुछ वपों रहजर रूनीजी अपन "हिमाचल" को श्रुपिकग के गये। यहाँ मे ता जरूर बहु बहतर हालत मे है। खर, किसी तरह १० नरदेव शास्त्रीजी को पता लगा। उहान भूचना दी और १७ सितम्बर को आय। शास्त्रीजी मेरे लिए उन पुष्पा म से हैं, जिनको आदस मानजर मैंन अपनी पटाई मे आगे बढ़ने की कागिग की। उनका बेन्नीथ जान मैंन भी वही रास्ता लिया और मध्यमा पास कर गया। यदि थोडा और प्रयत्न किया हाता ता बन्तीथ होन म कोई सन्ह नहीं था। शास्त्रीजी आय। स्थान की प्रसमा करत नहीं थक रहे थ। आखिर गुरुकुल के पारसी ठहरे और इस एकांत स्थान म दिखती शिभालय की छटा सामने आकर आदमी को आखो म चकाचौध पदा प्रिय विना नहीं रहता। नया भी उस दिन मौजद थ। वन बडे गर आदमी हैं अपनी विल्कुल उलटी गय साफ गन्दा म देन म नयी हिचकत।

अगस्तिन नया आय, तो उहोंने अपनी कल्पना मर सामन रखी। वह यावहारिक हैं लेकिन कल्पनापूय नहीं। यह मरी कठिनाया का समझ रथे। साच रह थ अपना प्रेस बड़ाया जाय पुन्का या प्रवीगत किया जाय। अयनसर म उनका प्रस था जिसम दो-तीन मगीने था। लेकिन अमृतसर भारत क एक खान म है, ता भी पाकिस्तान की सीमा पर। वहाँ किराये पर मरान मुन्जर स या बन्त महों मिलत हैं। पर आप अपन मरान या खमीन की बचना चाहे, तो विभाजन म पहल जिसरा गया लान मिलता उसका २५ हजार मिलना भी मुन्जिल है। ब्यापारी तो बडे-बडे खनदे मान लत क लिए तयार रन्त हैं। लडाई के दिना म गागिया क

भीतर से दाना गन्धु देगा के नागरिक अपन सौद का एक जगह से दूसरी जगह पहुँचाने में प्राणा की बाजी लगाते हैं। पाकिस्तान हिन्दुस्तान की सीमात चौकिया की गालिया से लुढ़कने का डर रहता है तब भी गर कानूनी तरह से माल को इधर से उधर करने में लाग वाज नहीं आने। जान पड़ता है मनुष्य सदा में प्राणा का जूआ खेलता आया है, अब भी वह इस छाटना नहीं चाहता। ता भी कोई उद्यागपति अब अमतमर में नया कारखाना नहीं खोलना चाहता, कोई व्यापारी अपने व्यापार को यहाँ बढ़ाने की जगह उम दिल्ली में स्थानान्तरित करना अधिक पसन्द करता है। भयाजी भी इसे समझने में और चाहने में प्रेम का अमतमर से जयश खाया जाय। मेरे पास रमन के स्याल में कितने ही दिना तन देहरादून में धार में साँचत रह। वहाँ जगह मकान भी दखे। मेरी चली होनी, ता प्रेस देहरादून आ जाता। जब प्रेम की बात छिन्न गई तो स्याल आया उसे थप टू डेट कर देना चाहिये। भयाजी न दिल्ली में भी जमीन देखी। उनकी व्यवहार-बुद्धि न बतला दिया कि देहरादून की बबूफी छोड़ो, निल्ली की यह जमीन ल ल। वहाँ कभी घाट की गुजाइश नहा। प्रेम प्रकाशन चगा, ता चला नहीं ता अल्ला-अल्ला खर सल्ला। उहाने ५४ ५५ हजार रुपया लगाकर फौज बाजार में बड़े अच्छे मौजे पर जमीन ले ली। उससे कुछ और अधिक रुपया लगाकर मकान भी सडा कर दिया। अमतमर में प्रेस मँगा-कर लगा दिया। दखन लय पीर बबूची भिन्ती सब हम ही हाना हागा। प्रेम की मनजरी करो, कम्पाजीटर टाइप न पुराएँ उनकी दखमाल धगे, बाहर से काम बूँदकर फाजा प्रकाशन में भारी खर्च लगाने के लिए तयार हाओ। यदि जवानी होती ता दगम दख नहीं भयाजी पिल पडते। मैं गलाह दे रहा था क्या अन्तिम मौम तर के लिए है-है गट-गट कर रहे हैं। गति का ग्व बग्या। छुडाआ हम प्रेम का जजाल में अपने गिर का। एक गन करके बेच लिया। अभी भी एक डा मगीनें गिनने को बाकी है। प्रेम जा हाल में बनाया था वह अच्छे विराय पर उठ गया। ऊपर की मजिल पर एक आर के फमरे अपने गिण रसे और दूसरी आर का डेड सो रुपय

महीने पर किराये पर दे रखा। तीसरी मजिल बरतन को बाकी है जिमका तीन सौ रुपया महीना म मास भर का किराया पगानी देने के लिए लोभ तयार है। कितनी दूर की सूख ? यदि प्रेम प्रकाशन नहीं चला तो भी जायनाद बेकार नहीं है। हजार बारह सौ रुपये महीने किराया मिलने का तयार है।

एक जगह घर बाँधकर रतन पर पुस्तकों का संग्रह किया जा सकता था। अब तक तो मरी अजगरी वृत्ति थी पुस्तकें मिलती थी उन्हें बाट देता था। पार्लि सस्कृत के अपन मसूरी का बिहार जिमच मासापटी के पुस्तकालय म रत छोडा था जिम अब यहा मगान का साचने लगा। प्रकाशक मित्रा ने भी अपन प्रकाशन की प्रतिवा भेजी। प्रयाग म ५० गणेश पाडे ने पत्र आरम्भ किया फिर मासापटी की पुस्तकें आई। उसका नाम देवराज जी न राजकमल प्रकाशन की पुस्तकें भेजी। धीरे धीरे हिंदी की पुस्तकें काफी जमा हो गई। पुस्तका के बार म पहले ही मयाना ने कह रखा है 'लेखना पुस्तिका नारी परहस्तगता गता।' और यहाँ तो लम्बे का पुस्तकालय है। अपने जिकने के साथ म उस न जान जिम पुस्तक की आवश्यकता पडे। पर कितना ही सवोच करा कभी पुस्तकें गता हान के लिए परहस्तगता हो हा जाती हैं।

२१ मितम्बर को बाई० डब्लू० सा० ए० म मैन एगियापी महिलाओं के सामने भाषण दिया। हमम लब्दान, फिलिस्तीन जापान, बमा लगा जावा स्वाम इदाचीन और चीन की ५० महिलाए थीं। उनका कोई कल्प या नेमितार चल रहा था। आयु म बहु ३० स ६० वर्ष तक की थीं। भाषण के बाद आपा घटा तक प्रतातर चलना रहा। आर्मनिशन यहिला भाकमवाद के बार म पूछन लगी। भाकमवाद या बौद्ध-ध्यान यह ता मछरी के लिए पानी का मित्र जाना था। पर ईसाई मिशनरा आम तौर मे कम्युनिजम न मडकत हैं एगिया में ता किन्तु तौर म।

२२ मितम्बर को दिल्ली के मासापिक "नवयुग" म मरा द्वाराहात की यात्रायाना लिए छरा। श्री म डा० रामदिलाम गर्मा का लक्ष मरे

विरुद्ध निकला, जिसमें उन्होंने यह सिद्ध करने की कोशिश की कि राहुलजी मार्क्सवादी नहीं बबल बौद्ध हैं। उसमें कुछ सत्य का अंश भी था लेकिन झूठ का अंग ज्यादा। रामकृष्णजी उन आदिमियों में हैं, जो किसी बात पर तुल जाएँ तो वह किसी हथियार का भी इस्तेमाल करने से बाज नहीं आते। इनके बाद और भी लम्बे उसी तरह लिखे। मुझे जवाब देने के लिए सम्पादक और दूसरे मित्रों ने भी कहा, लेकिन मैंने उसे बेकार समझा। हजारों पृष्ठ मैं इन विषयों पर लिखे हैं अगर वह मेरी सफाई नहीं दे सकते तो कुछ पृष्ठों का तू-तू मैं मैं से काला करना बेकार था। यद्यपि तरणाई में मैं वाणी के मल्लयुद्ध को पसन्द करता था बलम से भी और वाणी से भी ऐसा करने में मुझे आनन्द आता था। ऐसी घटनाएँ “मेरी जीवन यात्रा” के प्रथम भाग में मिलेंगी। अब उस तरह के मल्ल युद्ध की कोई इच्छा नहीं। मुझे बुद्ध का वचन याद आया सत्ताह सदा भविष्यति’ (बूठे प्रचार का हल्ला सप्ताह भर रहता है) फिर अपने आप ठण्डा हो जाता है। प्राचीन दशना में बौद्ध दशान मार्क्सवादी दशान के अत्यन्त समीप है। घमकीर्ति मार्क्स से हगल से भी अधिक समीप है इसलिए यदि घम कीर्ति के दशान के महत्व को मैं बतलाऊँ तो आश्चर्य नहीं।

मैंने मिहण्डाप में पालि त्रिपिटक के पढ़ते वक्त “बुद्धचर्या” लिखी थी, और १९३१-३२ में वह छपी। कितने ही दिनों से वह समाप्त हो चुकी थी। मैं तो ममज्ञता था इतनी बनी पुस्तक का हिंदी में नया संस्करण मेरे जीवन के बाद की बात है। पर देवप्रियजी की कृपा से अब उसका दूसरा संस्करण छपने लगा था। अपनी सत्तान आँखा के सामने न भर इसकी प्रमत्तता होती ही है। २५ सितम्बर का बरिस्टर श्री मुकुन्दीलालजी आप। मुकुन्दीलालजी अपने क्षेत्र में वहाँ स्थान रखते हैं जो कि जायसवालजी बिहार में दाना आवसफाड के स्नानन और बरिस्टर हैं। जायसवालजी बरिस्ट्रा से उभरे नहीं बने हुए एक के लिए पर्याप्त न होने पर भी वह इन में चार पाँच हजार कमा लेते थे। मुकुन्दीलालजी जन्म नहीं। रिया की चाक जड़ी करने चले गए। एक मतवा कुछ वर्षों के लिए आप

स्मान भट्ट हो जाइये, तो फिर प्रेक्टिस जमाना मुश्किल पड़ा जाता है। जाय-सवालजी की तरह मुकुन्दीलालजी भी हिंदी को आदर की दृष्टि से देखते हैं, और कभी कभी उसमें लिखते भी हैं। लेकिन, अपने सभी बन्धिया अण्डों का उन्होंने अग्रजी की एक ही टोकरी में रखा यह गलती थी। उनके गम्भीर और सुन्दर लेख अग्रजी के बड़े बड़े पत्रों और पत्रिकाओं में निकलते थे। चित्रकला, विषयकर पहाड़ी कलम, उनका अपना प्रिय विषय है। उस पर उन्हें सचिन लेख कीमती पत्रिकाओं में छप है। अंग्रेजा के राज्य के समय यदि फुसून निमालकर अपने विषय पर बड़ी पुस्तकें लिखने का छपन में कोई शिवांत नहीं होती। लेकिन आजकल अंग्रेजी के समय प्रकाशक भी अंग्रेजी पुस्तक के प्रकाशन में रुकवा लगान में बड़ी हिचकिचाहट दिखलाते हैं। कला की पुस्तक तो घर बीस वर्ष में भी अपने खच को नहीं निकाल सक्ता। मैं उनको देखकर अपने भाग्य को मराहता था। उन्होंने यदि एक टोकरी (अंग्रेजी) में अपने सारे अण्डे रक्ते तो मैं भी एक टोकरी अर्थात् हिन्दी में सब कुछ लिखा। दो चार पुस्तक लिखती मैं या दो चार सस्कृत में या ही लिखी। हिन्दी के लिए दिन पर दिन अनुकूल समय आता गया, और अब सौ सौ फाय की पुस्तक लिखने पर भी यह सोचकर खचन की जल्दतर नहीं कि इन्से प्रकाशित करनेवाला कहा मिलेगा। मुकुन्दीलालजी सही अर्थों में सुगंधित और सुसस्कृत पुष्प हैं। जय भी उनका माय बान करने का मुझे मौका मिलता है मालूम होता है, हम दोनों की बगल में जायगवालजी भी बैठे हुए हैं—मुकुन्दीलालजी का जयमवाल्जो से घनिष्ठ परिचय था। इस समय मैं 'गडबा' लिखन जा रहा था। मुकुन्दीलालजी गढ़माना के योग्य पुत्र हैं, और उसका इतिहास और गम्कृति का गम्भीर परिचय रखते हैं। उन्हीं से मालूम हुआ कि परमा टहरी के महाराजा नरद्वगाह नरद्वनगर में अपना माटल पर ऋषिकण जात सड्ड में गिरकर मर गये। शराव में धुंध होकर नार हीरना कभी न कभी ऐसा परिणाम जल्द लाता है। बकर की मां किन्नर दिना तक घर मनाती। महाराजा नरद्वगाह निरपुंगता का पसाद करते थे लेकिन गिणित और योग्य थे

इसमें सन्देह नहीं। हमने उनके ही मकान का लिया था और हमारी अनुपस्थिति के समय एक बार वह इस बगले के हाते में भी आय थे। गहना तो बात हाती। पर, मुकुंदीलालजी वहाँ से चली में नरकारी टारपीन पकड़ी व मुख्य प्रबंधक हैं।

उमा टिन (२५) भाभीजी के साथ भयाजी आए। १० गयाप्रसाद गुप्त भा भवरे आए थे। भोजनापरान्त चुकलजी देहरादून लौट गये। उह पहाड़ में घाटर पर चलने में फँस जाते जान पर आ बनती है इसलिए पैरों में भरसे ही वह पत्र लघन करत हैं। हम लोग कम्पनी बाग गये। जय तक ईस्ट इंडिया कम्पनी का राज रहा तब तक सावजनिक उद्याना या दूसरे सावजनिक स्मारका व साथ कम्पनी का नाम जोडा जाता था। कम्पनी बाग नाम मुनन से ही मालूम था कि इसकी स्थापना १८५७ के पहले हुई होगी। मसूरी के मुख्य केन्द्र से जितनी दूर हयाग स्थान है, वही करीब उतना ही यह बाग भी है। चालविल हाट में हों उसकी भी साथ अलग जाना है। कम्पनी बाग छाना किंतु अच्छा बाग है। फूरा की गजाबट गिलम्वर के अंत में ही क्या मरती थी वसे भा उस समय उसकी अवस्था अच्छी नहीं थी। कम्पनी बाग व साथ लगे हुए पहाड़ पर दूर तक अपेक्षा न देखा दिया है। दिनों को छोड़ मसूरी का सबसे बड़ा देवदार का जगह यहीं है। हम देखनेवाला समझोगा, यह प्राकृतिक देवदार वन है। पर प्राकृतिक देवदार नौ दस हजार फुट से नीचे नहीं जाना। हिमालय में विशेष विनाप उपत्यकाएँ ही है जहाँ स्वाभाविक देवदार पाया जाता है। अग्रजी गारसनवाल में जगला की रक्षा को ओर ध्यान जान पर जगलान विभाग संगठित हुआ। उसमें भी बहुत जगह नये देवदार वन लगाय। कम्पनी बाग में बच्चा के लिए झूला भी है रेस्नोर्गको घोटरी ओर मरान भी लेकिन इनमें अभी आशा ज्ञान की समावना नहीं है। अधिराज लाग अपन गाय ताने-पीन की चीजें गन हैं फिर यहाँ कौन अपना रेस्नोर्ग या दूकान खाल कर सबकी मारन के लिए तयार होगा? कम्पनी बाग व रासन में डा० अमरनाथ झा का बगला और प्रा० रजन की

बैठ मिलो। प्रो० रजन सादर व विद्वान् हैं इसलिए वग के प्रति उदासीनता दिखाएँ, ता काइ आश्चर्य नहो। मचमुच उम पानी स मडी तान-चार मामट को काठरियो क रूप म देखर ख्याल जाता है इने और बहुतर बनाया जा सकता था। टा० या का बग्या जिमा मात्र का पुराना बग्या है, और पहलपहल जा भी उमक नातर पहुचता वह जम्न ममयता कि हम इन्द्र को अमरावती क किमी बान म हैं। वहा चारा आर हर हर वशा और वनस्पतिया की छाया थी। या साहब क निम्न पर यह बग्या मिट्टी क मात्र बिन गया।

दिवम्बर क समाप्त हात-हात वषा खतम टूड मात्रम हान लगी। खन मून गय थे, तत्र पता ग्या कि यग पानी बिना कुठ नही ग सकता। पीन का पानी खेत म डालना एक ता नागरिक कानून की अवलना करना था, और दूसरा वह बहुत महंगा पडता था। इन क्लिफ और इन हिट हमारे आन स पन्ने एक ती थे। उर पानाघर बना था जिमम बरमान का दूसरा पानी जमा हा जाता जा खेता क लिए मात्र नर पर्वानि होना था। इस समय वर्षों स उत्र पानीघर की काई गान गबर लनवाग नगी था। उन टूट गइ थी, मामट नी उगड गया था, जिसन मारा पानी मुगकिन नही रह सकता था। ता भी माट पाइप द्वारा उन का पानी होज म आ जाता था। आजकल मैनी क लिए उसका काई उपयोग नही था। ही घावन को उसक कारण अपना कपडा धान क लिए ग-नीन मील दूर घावापट्टा जान की जरूरत नही थी। 'हनहिल क और होग म म्यायी गहनवाग निवासिया म घाबिन, उसका अ-वा-बहरा पति और नदू नीरर नी थे। बहर हाते क साथ आदमी यकि अ-वा भा हा वाप, ता सचमुच हा व मनुष्य कश प्राणा भा नहीं रह जाता। दुनिया की किमी चीज को टगाने भर का हा उमका अधिकार था। यदि वह आवाग ग्या तो मात्रम नहीं हाना कि उमकी आवाज जिमी क बान म पड रही है। वह नगी आ रहा है, इसलिए उन पर क्रोध करना चाहिए अथवा आमपाम काई मात्रम नही है' इसलिए दुस्मा कान स पायग क्या? बुगार की नीमा क नीतर

आ जाने पर उसने तरुणी बरेठिन से यह किया था। कितने ही साल दोनों कहींसी सुगी में गुजरे। उसी समय एक पहाड़ी छाकर को कपड़ा घोने के लिए नौकर रख लिया। नदू की बिरादरी के लोग हुआम का काम करते थे पर नदू ने कपड़ा धाना ही सीखा। फिर समय आया जब घोड़ी आंगो और काना का सा बड़ा और लोथ की तरह अपनी कोठरी में पड़ा रहता। क्या साचता और क्या बढबडाता था इस मुनन की किमी को पुरसन नहीं थी। ता भी बरेठिन उसको खिला पिला दिया करती पेगाव पाखान में सग्यता करती। एक दिन एक महीना नहीं बल्कि वर्षों तक ऐसा करना साधारण बात नहीं थी वह हर वक्त उमके पास उपस्थित नहीं रहती थी क्योंकि उमके काम कर जपन पनि को भी खिलाना था। जासपास का कोठियो में अब कम ही लाग रहत थे और बरेठिन कपड़ा भी अच्छा नहीं धाती थी ता भी उसका खान पीन के लिए कोई तकलीफ नहीं थी उसे काम मिल जाता था। नदू उसका काम का भागीदार था पर बरेठिन उमें नौकर ही कहकर याद किया करती थी।

साग-सब्जी उमान के लिए पानी जब हमारे लिए समस्या थी। यदि जलर के मरान का काइ खरीद लता और पानीघर का ठीक करवा देता ता मुमकिन है हमारा भी काम चलता। जम गय गोभी या टमाटर में हर हपन पानी डलवाने का जरूरत थी।

हमारा लग भी विचित्र है। दुनिया में भी जानिस हम्तरेया आदि पर विश्वास करनेवालों का अभाव नहीं है पर यहाँ की ता दुनिया ही दूसरी है। किमी जोतिणी न खबर उडा थी कि २४ २५ सितम्बर का भूकम्प जायगा। फिर क्या था लाग गहर का गहर खाली करने लग अमतसर से हजागे भाग कर मसूरी आ पहुँचे। देहरादून में हमारा लाग घर छाउ कर मदान में पड़े रह। ऐग ज्योतिपिया का फाँसी पर क्या नहीं चटा दिया जाता ? अनरी अफवाहा में चारा की बन आती है।

बारिया में धमासान युद्ध चल रहा था। अमेरिका उममें बूद पडा था और उत्तरी बारिया की सना का दकल कर वह ३८ अक्षांश के ऊपर से

जान पर तुला हुआ था, अर्थात् वह उत्तरी कोरिया को भी अपनी मुठ्ठी में रमना चाहता था। हमारी सरकार ने अमेरिका को मावधान किया कि यदि आगे बढ़े तो चीन चुप नहीं रहेगा। लेकिन, मदमस्त अमेरिकन थैली-गाड़ी के भारत की बान बान में क्या लाने लगी? युद्ध ने और तूल पकटा। चीन को उसमें बूझना पड़ा, क्योंकि वह अपनी सीमान्त को खतरे में डालने के लिए तैयार नहीं था। नवौंन चीन की सेना के विद्रोह का अमेरिका दख चुका था। चांग का गैक का गिलखड़ी बनाकर वह लडा था ही अपनी सेना द्वारा नहीं, बल्कि सेनापतिशा द्वारा। सब करन पर भी कम्युनिस्ट सेना ने चांग-बाद सेन का प्रगान्त महासागर में फेंक दिया। अमेरिका गायद समझता था, चीन बदर घुडकी दे रहा है। प्राय मार उत्तरी कोरिया का अपने हाथ में करन के बाद अमेरिका का चीनी स्वयम्भवा से पाला पडा। अब तुरन्त मन्घि मुलह की बात करना कायरता हाना। १० अक्टूबर का कोरिया में अमेरिकन प्रगति को देखकर हृत्प काप रहा था। अनन व्यक्तित्व का अपन नजदीक से दूर बनान का यही फल है। पर आत्मीयति ऐसा न हा, ता आदमी ही क्या? मालूम हा रहा था कोरिया में उत्तरा कोरिया की हार नहीं, बल्कि हमारी हार हा रही थी।

वर्षों तक हमारा भवान बिना घनी घारी का था। टाल-भाहल का लग उसे अपनी चरागाट बनाय हुए थे। किन्तु परिश्रम में और महंगा पानी डाल-डाल कर गाभी तैयार की थी। ११ अक्टूबर का घाबिन को चकरी न आवर सब साफ कर दिया। दरवाजे के फाटक का हमन लगवा दिया था लकिन बकरा ऊपर की तरफ में आई थी। गुम्मा किमन ऊपर हान ?

१५ अक्टूबर का ११ बजे बम्पटी फाल (जलप्रदान) लघन निकले। पीठ का फौजा पोला आसिन् किमलिण छरीण था? आज उस पीठ पर रणा और साली नहीं, कुछ सामान के माय। १४-१५ आदमिया को पलटन थी। डा० गयननु का परिवार, उनर माय और भा कुछ परिवार भवा भाभीजी, कमला और मैं। यही जान पर और भी टालियां मिलीं। बम्पटी

अपनी जमींदारी व गाँव व किसानों में भी बिताए थे, और प्रामाण्यपूर्ण बनना चाहते थे। पहले गाँववालों पर उनकी विद्या का प्रभाव पड़ा, लेकिन बहुत धूल मिल जान पर उन्होंने इन्हें अव्यावहारिक देखा। मेरा रामचन्द्र जो का सम्बन्ध पहिले ही जसा रहा। उनका दखल यही अपसोस हाता था कि दंग एक बड़ी प्रतिभा से वचित हो गया।

२० अक्टूबर का विजयादशमी थी। यह उत्तरी भारत के भद्राना का त्योहार है। हिमालय में नवरात्र का मास है, विजयादशमी से उन्हें कुछ लेना देना नहीं है। हाँ, यदि इसमें कुछ लीला-तमाशा ज्ञा, नाच गाना होता तो शायद पहाड़ के नर नारियाँ को जाकृष्ट कर सकती। मसूरी तो अंग्रेजों की थी उहे ये चीज पसन्द नहीं थी। जब ऐसी परम्परा कायम करने में बड़े श्रम घन और धन की आवश्यकता है।

बरसात के बाद मसूरी का दूसरा सलानी-मीजन शुरू होता है, जो मई-जूनवाले की अपक्षा छोटा हाता है पर दोनों के सलानी बँटे हुए हैं। सबसे पहले अप्रैल में दम्बई तरफ के कुछ घाटों से लाग आ पहुँचते हैं। फिर उत्तर प्रदेश और दिल्ली का सीजन शुरू हाता है। बरसात में पंजाबी लाग रहते हैं और बरसात के बाद दुगा पूजा की छुट्टियाँ का फायदा उठाते कितने ही बंगाली भद्र परिवार आ जाते हैं लेकिन ये मसूरी की एवान्त निष्ठा के साथ नहीं आते बल्कि इसी यात्रा में वे हरद्वार, ऋषिकेश, दिल्ली, मथुरा बनारस सब का शामिल कर लेते हैं। बंगाल विहार का पुराना सम्बन्ध है दोनों एंग प्रान्त थे और बड़ी जहाजहद के बाद विहार अपने को अलग कर पाया था। अब फिर पुनर्मिलन भव के यात्रा का चरितार्थ किय जान का उपक्रम हो रहा है। इस छोटे सीजन में विहार के भी कुछ लाग आ जाते हैं। उस दिन ५० गाँवों के मालवीय मिले। कुछ दुगले मालूम हा रहे थे। उमा जिन गाँवों के विहार के मुख्य मन्त्री थी वृष्ण बाबू सदल बल मामन महव में आते दिगार्ई पडे। विहार अपने वातावरण का, जान पहता है साथ टाक चन्ता है। बीस आठमियाँ से कम की मण्डली क्या रही हागी? दूसरे मन्त्री और मुमाह्वि भी थे, गरीर रक्षक भी थे और

दया दृष्टि के इच्छुक भक्त लग भी। मसूरी में चहल-पहल थी।

२१ अक्तूबर को श्री मुकुन्दलालजी न भालाराम के वार में बतलाया। 'गन्वाल' के वार में बान हा रही थी। भालाराम भारत के महान् और गन्वाल के परम योगस्वी चित्रकार ही नहीं थे बल्कि उन्होंने गन्वाल का पद्यबद्ध इतिहास लिखा था। उनका ऊपर मुकुन्दलालजी न लेख लिखे थे जिन्हें वह अपन साथ लाय थे। उनसे यह भी मालूम हुआ कि भालाराम के वार श्रीनगर में अब मुनारी का काम कर रहे हैं। अगले साठ गर्मिया में बरार-केनार की यात्रा करनी थी क्योंकि उनका बिना गन्वाल पूरा नहीं समझा जा सकता था माचा उसी समय उनका वारे में भी बितनी ही जानकारी प्राप्त करेगे।

२२ ताराख का तजबेन लिखवाया—'यहाँ माग पैदा करना काफी महान का काम है। लपूर और लालमुहें जान ही रहते हैं। अगले दिन मालवीयजी से मुलाकात हुई। वह इस समय हिन्दू विश्वविद्यालय के कुलपति थे। वह कह रहे हम विश्वविद्यालय में इटागाजा का महाविद्यालय स्थापित कर रहे हैं आपका उसमें आक काम करना चाहिए। बराबर नहीं तो कुछ महीना के लिए और ज़िम्मेदार बनें उसी बकन आकर रहें। मैं भानमपना था कागो इन विषय का विगाग कन्द्र बन सकती है। संस्कृत का केंद्र वह पहले ही न है और वहाँ आसानी में बृहतर भाग्य की जानकारी के लिए भाषाशा और साहित्य के पदान का प्रवच भी हा सकता है। पर अब तो मसूरी से जाना अनभव था गन्वाल के बगल का किमक ऊपर छाकर जाता ?

उसी दिन मैं जब लौट रहा था तो एक परिचित से पुरख न परम रहस्य के तौर पर कहा— आपकी पुलिस दखनाग करता है। 'वह छन सन थे मुझे यह माग्य नहा है। दखनाल करता रहे मुझे उसकी क्या पर्वाह। मेरे विचारता आत्रकी राजनीति' में आ गय है, और समय-समय पर अपन लेगा में भा उग व्यक्त कर दता है। मैं कम्प्युनिस्ट हूँ यद्यपि इस समय पार्टी का सम्बर नहीं था। पर कम्प्युनिस्ट हरक निषय का अपन का

जिम्मेवार मानता हूँ और वही कारण था कि हार हो रही थी। कारिया म उत्तर कोरियावालों की और यहाँ हमारी नाद हराम हा रही थी, मातूम होता था कलेजे म सज़डा सूइयाँ चुभ रही हूँ।

बगले मे पलश की कमी खटकती था। युगा म हाथ से पाखाना साफ़ होता रहा है, मसूरी म भी अधिकाश बगले पलश के बिना है, पर मुझे उसका अभाव बहुत खटकता था। दहरादून क गुप्ता से निटरी स्टासवाला न अपनी योजना दो। मैंने उस मजर किया। लेकिन, पलश के तयार हान म अगल साल क आरम्भ तक की प्रतीक्षा करनी थी।

गरदपूना बड़ी प्यारी हानी है। मसूरी म जक्सर उस दिन आकाश निरभ्र हाता है। ऊपर नाल आममान म सालह कला स उगे चन्द्रदेव, नीचे देवदारा क नाकदार उच्च वृषा वान (बज्जाठ) के घन पत्ता और खुली तथा ढकी जमीन पर फली हुई चादनी। इस एकान्त स्थान म रात की नीरवता जल्दी छा जाती थी, और कभी कभी काइ चिड़िया निम्बित सेवेड क बाद अपनी आवाज देती सारी रात बोलती रन्नी। चादनी सामन की हिम गिखर पक्ति पर और भी संज पडनी और वह गायबनगर सी दिखाई पडती। १० बजे रात की चाँद और ऊपर चढ गया, चमक और भी तेज हो गइ। इस समय हिमथणी पर दागल नही था। रातनगरी क उत्तुग विंगाल सौधा की भाँति हिमालय दिखाई पड रहा था यद्यपि सुस्पष्ट नही था। हिमालय लाखा नही बलिक कराश। वष स इसी तरह रहा हागा। गरद पूनो की यही छटा रहना हागी पर सारा शृंगार बेजार है यदि उसका दय कर तारीफ़ करनवाला न हा। मनुष्य नी पृथ्वी पर जानर इस सौंदर्य के मूल्य का बढ़ाया।

२६ अक्टूबर का गरनाथ स भिक्षु त्रमालाक आय। हमारी बिरादरी बहुत बनी हुई है। घुमकरड ता अपन ह ही निरगत और निरगत स मन्वध रगनेवाल भी क धु हैं और बौद्ध भिक्षु ता घुमकरड और बौद्ध दाना हान क नाते। साहित्यकार नी सहान्तर हैं कम्प्युनिस्टा क बारे म ता कहना ही नही। बहुत वष हा गए एन अप्रेज याग रहम्यवाणी विद्वान् डा० इवेज्व जन

यागायम सोचने के लिए ऋषिकेश में ३५ एकड़ भूमि ली थी। अब आथम्य सालन की सम्भावना नहीं रह गई इसलिए उन्होंने उसे महाबोधि के सभा की ओर कुठपमा के साथ देना चाहते थे। सभा ने घमालोजी की जमीन देने के लिए भेजा था। वह उम देकर यहाँ आया था। वह रहे थे वहाँ मच्छर बहुत हैं। ऋषिकेश में थाहा टूटकर जमीन थी। पास में ही मीरा ललित ने "पगुलाक" सोल गया था। मैंने कहा—'दोनों लोक एक जगह रहें अच्छा होगा। लेकिन जगह का महालत वक्त मसूरी में भी एक जगह लेना जरूरी होगा। उन्होंने पूछा— क्या? मैंने कहा— मलेरिया में लग जब महीना बीमार रहेंगे, तो उनके लिए एक स्वास्थ्यकर जगह भी चाहिए।' जगल लिन घमालोजी गया और उसी दिन भैया और भाभीजी भी। उनका साथ ही वह ऋषिकेश गये। भैयाजी अपनी याददास्त ताजा करने के लिए लक्ष्मण शूरा के महान रामादार दास के पास भी गये। अपनी घुमफाड़ी के समय उन्होंने नरुण रामोत्तर दाम का वहाँ के पहले महन्त के पास रखवा दिया था। मैं भी बरागी रहने उनका नाम सुन चुका था क्योंकि मरा भी नाम उस समय वही था। १९४३ में मैं लक्ष्मणशूला गया और उनके मठ के कई मकानों के विस्तार को भी देगा। न जाने वहाँ से मैं सवेर सुन ली थी कि जब वह उस दुनिया में नहीं है। इसे अपनी जीवन-यात्रा में भी लिख मारा। भैयाजी ने उसे पढ़ लिया था।

अमूरर के अन्त में उनके आगमन हो चुका था। पूरे समय मूय गया था। गिरनवाले पत्ने गिरकर पडा का नगा कर चुके थे। सन्ने बीरी पागर (चटनट) नामपानी सभी काँटे हा गया थे। हमारे लिए पहले पहल जाया मसूरी में आनेवाला था उसके बाद में जानकार लोग से हम जान नारा प्राप्त करने की कोशिश करते थे। मिस पूमांग और उनका परिवार में जो अच्छा परिवार हा गया था। यह बनला रही थी— १९४५ में वह दूनी अधिका पडी कि आना जाना रक गया। ६० गया लगाकर हमने रामना बनवाया। छत्ता पर दूनी बन पड गई कि किजना टूट गई और किजना की दावारे पस गने।" रामना था उस साल बना हुआ था।

२६ को बानपुर निवासी श्री बलदेवजी आए। उनके साथ मेरठ की श्रीमती गकुन्तलादेवी भी थी। बलदेवजी प्रायः हर साल ही मसूरी आ जाया करते थे, और उस समय हर साल उनसे बातचीत करने का मौका मिलता। गकुन्तलाजी का ता यहाँ अपना मकान है, और कुछ दिनों के लिए वह यहाँ जन्म आती थीं। इधर उन्होंने शिवजनिक कार्यों में हाथ लगाया था, इसलिए समय की शिकायत रहती थी। उद्योगपरायण हैं, यह तो इसी से मालूम होगा कि कितने सालों के बाद फिर भेटन करके उन्होंने मंडिर दूमरी शणी में पास किया। चाहती तो और भी आगे बढ़ सकती थी, लेकिन अब उन्हें मेरठ की महिलाओं का नेतृत्व करना था। जिसका जीवन अभी आधा भी न बीता था, और बचप्य का भार सिर पर पड़ा था, उसके लिए अपन जीवन का इससे अच्छा उपयोग और क्या हो सकता है।

भैया और भाभीजी के चल जाने से एक अभाव-मा मालूम होने लगा। जब से मसूरी पहुँचे थे तब से ही हर मप्ताह दा-तीन बार घंटों हम साथ रहते। यदि हम स्वामी हरिशरणानन्द के रूप में एक दिली दोस्त मिल गया था तो कमरा तो भी जाननीदेवी का स्नेह प्राप्त था। उनके रहत कमला का यहाँ का एकान्त अक्षरता नहीं था। मैं पुस्तक में डूबता हूँ, तो सब गम गलन हो जाते हैं। ६० के हान में मुझे तीन वर्ष की देर थी। दूसरे के सामने नहीं बल्कि अपने भीतर भी मैं यह मानन के लिए तैयार नहीं था कि मैं जरा भी सीमा के भीतर पहुँच गया हूँ। हाँ ६० वर्ष के बाद जबदस्ती जरा के इस मनवा लिया। उस समय हफ्त में दस दिन में मैं शहर जन्म चला जाता था। शहर का मतलब कितनाघर भी हो सकता था, क्योंकि वहाँ भी बहुत-सी दूगानें हैं, पर मैं कुल्हड़ी का ही शहर कहता हूँ। जा वे-द्र में है और जहाँ बड़ी गहवा में अच्छी-अच्छी दूगानें हैं। वहाँ बड़ा बाकसाना और रेलवे का आफिस है बैंक भी वही हैं। बैंक सबसे अधिक दूगानें लण्डौर में हैं। लण्डौर कभी छटे-छपाहे जा पाता था, लेकिन उस समय शहर जाता हो ता लण्डौर चला जाता था। ४ नवम्बर का सर्तों पूरी तोर में आ गई थी। लण्डौर गया तो महक सर्तों के कारण कुछ अधिन कती या फिमलाऊ

थी। एक जगह मरा बूट फिसला और जोर से गिरा। सैर, वही छिला-छला नहीं, और हथेली पर भार पड़ने से उसी में कुछ दब हुआ।

तिब्बती—लण्डीर म १५-१६ तिब्बतीभाषा परिवार हैं जिन्हें यहाँ के लोग भाटिया कहते हैं। किंगनसिंह भाटिया नहीं बनौरे थे लेकिन उन्हें भी उसी नाम से लोग जानते थे। लण्डीर जान का एक लालच किंगनसिंह से मिलना भी था। मसूरी के तिब्बतीभाषी वस्तुतः ग्यंगर सम्पाद्य। ग्यंगर भारत और समूची चीन के भीतर पूर्वी तिब्बत के बड़े हुए भाग का वस्ती है। यह मूलतः समूचे रहनेवाले थे, मम भारी सम्पत्ति है। वस्तुतः अज्ञान काल में किमा समय इन्होंने धूमन्तू-जीवन स्वीकार किया और अपनी धूमन्तू की महर माल भारत और तिब्बत का चक्कर काटते रहे। जाड़ा में दिल्ली, कलकत्ता, बम्बई तक घावा मारना और गर्मिया में मानसरावर प्रदेश चला जाना। इन्हीं में से कुछ बयूरिया की चीजें बचत मसूरी में पहुँच यहीं बस गयीं। कितने ही समय तक नये सौते का लाने के लिए तिब्बत भी जाते थे, फिर तिब्बत और चीन के नाम में बिकनवाली चीजें अमृतसर और दिल्ली में तयार हान लगी, जो सस्ती भी थी इसलिए वहाँ जान की जरूरत नहीं रह गई। इनसे मित्र पर तिब्बती भाषा बोलने और तिब्बत के बारे में जानने का मौका मिलता था। वही बतला रहे चीनी कम्युनिस्ट मना मित्रपौंग में चायांग के रास्ते मरना के पहुँच गई है। मित्रपौंग चीनी सुविमान है चायांग वह विनाल निजम मरना है जो आबा तिब्बत के उत्तर और मित्रपौंग के दक्षिण में पड़ता है। यह भा मालूम हुआ कि गरीब आने वाली नेता न जाय का उमाठ किया। अतः वारा में यह भी पता लगा, कि लहामा के साथ भारत का सम्बन्ध नहीं है। अभी तिब्बत और चीन के सम्बन्ध के बारे में भारत सरकार अपना कोई निश्चय नहीं कर पाई है। मरना राजगापागचारी और दूगर नवा चानी कम्युनिस्ट के घोर विरोधी थे, और उनमें विच्छिन्न मत समन्वय नहूँ जमा की चाना नहीं थी। तिब्बत में कम्युनिस्टों के आन पर नपाठ में भा मरना के साथ ता आचय क्या ?

भी हम इत्मीनान था कि अब कमला अकेली नहीं रहगी।

देहरादून में प० गयाप्रसाद गुबलजी के यहां गए। आज ही वह आगरा से लौटे थे। डी०ए०बी० कालेज में विद्याभिया व सामने मैंने भाषण दिया। कालेज में तीन हजार से अधिक विद्यार्थी हैं पर पुस्तकें केवल १० हजार, यह बात खटकती थी। हिंदी की समस्या पर भाषण और कुछ प्रश्नोत्तर हुए। रात की दिल्ली की गाड़ी में मोट रिजव थी। टेन में कुछ दर तक गुबलजी से बात हाती रही। फिर वहाँ में चलकर १८ के सवरे साढ़े ६ बजे दिल्ली पहुँच गए।

क्या बात थी, यहाँ का भी तापमान मसूरी जैसा ही दीप्त पड़ता था। अब की बौद्ध विहार में ठहरा। वहाँ सिहल व भिक्षु मिले, जिन्होंने बतलाया कि इस समय विद्यालय परिवेण (विहार) में त्रिपिटक का सगायन चल रहा है और कितने ही भिक्षु मिल कर उसका सगायन कर रहे हैं। जिस समय बुद्ध के उपदेश कागज पर उतरे नहीं थे और लोग उन्हें कठस्थ करके रखते थे उस समय विशेष स्वर से मिलकर उनके पाठ करने को सगायन कहते थे। अब तो सगायन का सवाल नहीं था क्योंकि सभी विनय, सुत्त और अभिघम्मपिटक मुद्रित हैं। कोई कठस्थ करके रखनेवाला भी नहीं मिलेगा। घम्मपद जैसे छोटे माटे सदम का याद रखनेवाला भले ही कोई मिल जाए। पालि त्रिपिटक इस समय सिहली बर्मी चाई (स्यामी), कम्बाजी और रामन लिपिया में छपा मिलता था, जिनमें पूरा और अधिक सुलभ बर्मी और स्यामी लिपि का ही था। भारत में संस्कृत की पुस्तक पहले नागरी बगला उड़िया, तल्लु प्रथमिल मलयालम वानड लिपिया में छपा करता थी। नागरी सबकुं ऊपर हावी हो गई और २०वीं सती के आरंभ में जा उताने संस्कृत पर एकाधिपत्य कायम करना शुरू किया, तो आज ऐसा अवस्था पैदा हो गई कि गायद ही चाई संस्कृत पुस्तक उन लिपिया में छपनी ह। नागरी के लिए पालि साहित्य में भी बहुत मौका है। यहा एव लिपि है जिसका पाणि क त्रिए आज क चारा बौद्ध दंग अपना सबन हैं। वस्तुतः किन्तु ही हृद तक अपनाये भी हैं। सिहल में प्राय सभी

पालि पठित निम्नु मम्भृत स परिचित हाते हैं क्योंकि बौद्ध और ज्योतिष की पुस्तकें वन् मम्भृत म ही पढाई जाती हैं । और बौद्ध दगा म भी घाडे वन्त मम्भृत पढनवा अत्राव नागरो अतर स परिचित विद्वान् मिल जात हैं । अत्र तक नागरो म त्रिपिटक का प्रकाशित करन म मफलना नही हुई है । इम दिगा म जा प्रनन दृग वट वून दूर तक नही जा सक । निम्नु इनम की महायना मे इम लगा न नागरो में पालि त्रिपिटक का सम्पादन गुम् किया था लकिन वन् मुक्कनिकाय क कुछ ग्रथों तक हा मामित रह गया । जातक का भी एक ही भाग नागरो म निकला । दीघनिकाय और त्रिनपिटक क छिट-मुट ग्रथ नही-नही म छप । यह प्रननता की बात है कि भारत सरकार, नालन्दा म मार त्रिपिटक का नागरो अतरा मे छपवाने जा रही है । दीघनिकाय प्रन म चगा गया है और सम्पादन का काम बहुत जग म हा ग्हा है पर मुद्रा चीटी का चा म हान क कारण इम गति से इम गनाली क अन्त तक पायद त्रिपिटक का नागरा अक्षरा म दखा जा सक । मर, यह गुम आरम्भ है आगा है पालि क बार म नागरी वहा काम करन म समय हागा जा कि मम्भृत क सम्बन्ध म उसने किया ।

परिभाषाओं की विषयन समिति बनाई गई थी तिमके ही सम्बन्ध म दिल्ली आया था । हमार परिचित थी बालमुत्रह मण्य अय्यर और डा० कुहन राजा भा इमम गामिल हुए थ । कानून और दूमरे विषया की परिभाषाओं के लिए अलग अलग समिति की गालाएँ बनान का निश्चय हुआ । पहले ससद (पालियामण) सम्बन्धी परिभाषाएँ, फिर भू-वर आदि कानूना सम्बन्धी हाय म ली जाए । बालकृष्णजी का अभाव सटकता था जा मन-लाना था कि परिभाषा के बार म सरकार ज्यादा उत्सुक नही है वह उमे टालना चाहती है ।

अगले साल राष्ट्रभाषा प्रचार समिति मरी दी हुई याजना क अनुमार साहित्य का काय करान जा रही था, तिमम विद्वाना की आवश्यकता थी । नागाजी उमक लिए बहुत योग्य थ, पर उनका स्वास्थ्य अच्छा नही था । डा० भारद्वाज न बननाया, यि वर्दान कर मके, ता काई हज

भी हम इत्मीनान था कि अब कमला जकेली नहीं रहेंगी।

दहरादून में प० गयाप्रसाद शुक्लजी के यहाँ गए। आज ही वह आगरा से लौटे थे। डी०ए०बी० कालेज में विद्यार्थियों के सामने मैंने भाषण दिया। कालेज में तीन हजार से अधिक विद्यार्थी हैं, पर पुस्तकें केवल १० हजार, यह बात गटकती थी। हिंदी की समस्या पर भाषण और कुछ प्रश्नात्तर हुए। रात की दिल्ली की गाड़ी में सीट रिजर्व थी। ट्रेन में कुछ देर तक शुक्लजी में बात हाती रही। फिर वहाँ में चलकर १८ के सबेरे साढ़े ६ बजे दिल्ली पहुँच गए।

यथा बात थी, यथा का भी तापमान मसूरी जैसा ही देख पड़ता था। अब की बौद्ध विहार में ठहरा। वहाँ सिहल के भिक्षु मिले, जिन्होंने बतलाया कि इस समय विद्यालयकार परिवेण (विहार) में त्रिपिटक का सगायन चल रहा है, और जितने ही भिक्षु मिल कर उमका ससाधन कर रहे हैं। जिस समय बुद्ध के उपदेश कागज पर उतरे नहीं थे और लाग उन्हें कठम्य करके रखते थे, उस समय विनाय स्वर से मिलकर उनके पाठ करने का सगायन बहुत था। अब तो सगायन का सवाल नहीं था, क्योंकि सभी विनय, सुत्त और अभिषम्मपिटक मुद्रित हैं। कोई कठम्य करके रखनेवाला भी नहीं मिला। धम्मपद जैसे छोटे माटे सदभ को याद रखनेवाला भल ही कोई मिल जाए। पालि त्रिपिटक इन समय सिहली बर्मा याई (स्यामी) बम्बाजी और रोमन लिपियाँ में छपा मिलता था, जिनमें पूरा और अधिक मुल्म बर्मा और स्यामी लिपि का ही था। भारत में ससृष्ट की पुस्तकें पहले नागरी, बंगला उर्दिया तेलुगु प्रयत्नमिल, मज्जालम कन्नड लिपियाँ में छपा करता थी। नागरी भबक ऊपर हावी हो गई और २०वीं मती के आरम्भ में जा उत्तने ससृष्ट पर एनाधिपत्य कायम करना शुरू किया, तो आज एमी अवस्था पदा हा गई कि नायद ही कोई ससृष्ट पुस्तक उन लिपियाँ में छपती है। नागरी के लिए पालि साहित्य में भी बहुत मौका है। वही एक लिपि है, जिसको पात्रि के लिए आज के चारा बौद्ध दंग अपना सकते हैं। वस्तुन जितने ही हृद तक अपनाये भी हैं। सिहल में प्राय सभी

पालि पढ़िन मिथु सस्कृत स परिचित हात हैं क्याकि बैद्यक और ज्यातिष की पुस्तकें बहा सस्कृत म ही पताइ जाती हैं । और चौद दगा म भी चाडे-बहुन सस्कृत पढनवाटे अनएव नागरी अक्षर से परिचित विद्वान् मिल जात हैं । अब तक नागरी म त्रिपिटक को प्रकाशित करन म सफलता नहीं हुई है । इस दिशा म जा प्रयत्न हुए, वह बहुत दूर तक नहीं जा सके । मिथु न्तम का महायना स हम लागा ने नागरी म पालि त्रिपिटक का सम्पादन शुरू किया था, लेकिन वह खुदकनिकाय क कुछ प्रयास तक ही सीमित रह गया । जातक का भी एक ही भाग नागरी म निकला । दीघनिकाय और विनयपिटक क छिट-पुट प्रथ जहाँ-तहाँ म छप । यह प्रयत्नता की बात है कि भारत सरकार नालन्दा से सार त्रिपिटक का नागरी अक्षर म छपवान जा रही है । दीघनिकाय प्रेम म चला गया है और सम्पादन का काम बहुत तेजा स हा रहा है, पर मुद्रण चीटी का चाल म हान क कारण इम गति स इग गताली क अन्त तक गायद त्रिपिटक का नागरी अक्षर म दवा जा सके । खैर, यह शुभ आरम्भ है आगा है पालि क बार म नागरी वही काम करन म समय हागो, जा कि सस्कृत के सम्बन्ध म उमन किया ।

परिभाषा की विषयन समिति बनाई गई थी जिसके ही सम्बन्ध म दिल्ली आया था । हमारे परिचित श्री बालमुकुन्दहृमय्य अध्यक्ष और डा० कुहन राजा भी इसम शामिल हुए थे । कानून और दूसरे विषयों की परिभाषा के लिए अलग-अलग समिति की गठनाएँ बनाने का निश्चय हुआ । पन्द्रह सद (पार्लियामण्ट) सम्बन्धी परिभाषाएँ फिर भू-कर आदि कानूनी सम्बन्धी हाथ म ली गए । बाह्यदृष्टि का अभाव गटकता था जा घन-लता था कि परिभाषा के बारे म सरकार ज्यादा उमन नहीं है, वह उम टालना चाहती है ।

अगले साल राष्ट्रभाषा प्रचार समिति मरा दी हुई योजना क अनुसार साहित्य का काम कराने जा रहा थी, जिसमें विद्वानों की आवश्यकता थी । नागार्जुन उमने लिए बहुत साध्य थे, पर उनका स्वास्थ्य अच्छा नहीं था । डा० भारद्वाज ने बताया यदि वह सगरे बर्तान कर सकें, तो बाद हूँ

नहीं। मैंने नागाजुनजी का आन क लिए लिख दिया।

१६ का फिर विरोपनों की समिति की बठक हुई। हम लोगो न पहले ही विचार किया था कि स्टाफ (कर्मियों) का बढाए बिना काम शीघ्रता से नहीं हो सकता। इस बठक में राष्ट्रपति और अध्यक्ष मावलकरजी आए थे। गुप्तजी ने स्टाफ बढाने का सुझाव रखा। दाना ने इस माना। जब तक सविधान सभा थी तब तब राजेन्द्र बाबू उसका अध्यक्ष थे। सविधान बनाने पर वह भारतीय गणराज्य के प्रथम राष्ट्रपति बन। वह जानते थे, परिभाषा का काम बहुत महत्वपूर्ण है। उसका बिना अंग्रेजी हमारी छाती पर नहीं उतर सकती क्योंकि परिभाषा बिना हिंदी उसका स्थान लेने योग्य नहीं होगी। वह यह भी समझते थे कि मौलाना और उनका शिक्षा विभाग सविधान में उदू के सम्मिलित भाषा के प्रयत्न की हार से और जल उठा है वह हिन्दी के रास्ते में पग पग पर रोना अटकाएगा। इसलिए विरोपनों की समिति का भार मावलकर का दिया। इधर जय और तरह से काम नहीं बनने देखा और परिभाषा का काम जपान विभाग में नहीं जाया, तो जाजान ने एक दूगरी चाल चली और दिवाकर मत्पनारायण तथा मावलकर के मिलकर छाहा कि परिभाषा बढाने का काम हिन्दुस्तानी एंडमी का दे दिया जाए जिसमें फारसी काटेलकर सर्वोत्तम बनकर सारा गुट गाबर करें। मुझे आश्चर्य हाता है इन लोगों का नाम की साध से दूर क्या गता मूखता? जिना एक या तम पाँच आदमी के प्रयत्न से कोन भाषा भारत की सामन्तिय भाषा नहीं हो सकती। जिना बसा हान की क्षमता है उहा हो सकता है। हिंदी सन्ध्या में अंतर्प्रतीय क्षेत्र में सम्मिलित भाषा के तौर पर व्यवहार की जानी रही है। क्योंकि वेग के बहुत बडे क्षेत्र में वह बागीया समझी जाती है। उदू उही हिंदी गली ही सावदगिक भाषा बनने की क्षमता रखता है, यह हमारे या किसी के प्रयत्न के कारण नहीं, बल्कि हिन्दी और भारत की और प्राणिक भाषाओं के गन्धकोण एक होने के कारण जिसमें उसका यह जग पहले ही में हिमालय से क्याकुमारी तक फैला जाता है। उन् के फारसी अंग्रेजी गन्धकोण अममिया बगला उडिया

तल्लुगु तमिळ, मलयालम, कन्नड मराठी गुजराती के लिए लोह के चने हो जाते हैं। हिंदी को हटा कर उन्हीं हिन्दुस्तानी के नाम से धासे घड़ी से भावदगिज भाषा नहीं बन सकती, इसे जरा नी निमाग रगनवाग आदमी समझ सकता है, लेकिन पतात से अन्नी ग्यापन्धिया के लिए क्या कहा जाए ? काका बालेत्कर अपनी महवी चाहते थे मत्यनारायण उमी के नाम पर ऊपर तक सुरसुर के, दिवाकर और मावलकर बडा की हा म हा मिलान वाले ठहरे। हिन्दी के खिलाफ यह पढयन दक्कर सचमुच कोषन हाती थी।

जिना काम बडा से मिलन की मरी दच्छा नहीं हाती। लेकिन श्री मोहनलाल गाम्त्री और गकरानजी ने बहुत जोर दिया इसलिए गजरा नदजी के साथ १६ नवम्बर का मैं डा० अम्बडकर के यहाँ गया। अम्बडकर का याग्यता और काम का न मानना मर गिए संभव नहीं था। उनका कितनी हा प्रतिगामी वाता को जात भी सबसे दलित जाति से चेतना और आत्मा भिमान पदा करन का जा बडा काम किया था उसका लिए मैं उनका बहुत प्रणामक हूँ। सचमुच ही मर लिए यह समझना बहुत मुश्किल था कि उनका तरह का समझदार जात्मा कैसे अमरिकी और अत्रेय अलीगाहा का समर्थक और रूस जैसे गोपण के बट्टर गनु तथा अपन व्यवहार से विषमताओं का हटानेवाला दग के प्रति द्वेष रख सकता है। मुझे अम्बडकर से मिलन की इच्छा नहीं थी। साथ हीन घटे बाने हुए। वह हम समय बुद्ध या एन वाणी तैयार कर रहे थे, उगक वारे से नी कहा। इस पुरुष का जिन्गा से बड़ी टारने माना पड़ी। बड़ी जातवाला न बराबर यह समझान की वाणि की कि तुम अपनी स्थिति समझो। लेकिन इसने कण के गला से कहा—

‘मूता या मूतपुत्रा वा या वा वा वा न्याम्पहम् ।

दवापत्त कुत्ते नम मत्पत्त तु पीर्यम् ॥

अम्बडकर ने अपन पीर्य से अपना लाहा मनत्रा लिया। मर गिए उनका घट रूप बहुत हा प्रिय और सम्माननीय था। पर उस घाड़ी पर की वात-व्यवहार से मुझे उतम नीरगता मालूम हुए। मना पहले हा बन रहा था, इसलिए जरा ना कुछ दूगरा रूप दगडर धारणा बनाना आसान

था। इस तरह की मुलाक़ात में चाय पानी की बात करना जरूरी था, लेकिन माकूम हाता था, मैं कानून मंत्री के आफिस में कोई नौकरी ढूँढने के लिए गया हूँ, उन्हें नहीं तुली ही बातें करना चाहिए। खैर, इससे कोई मतलब नहीं था। इसके बाद मेरा विचार यही हुआ—'सात छून माफ़ तामक आदमी है किन्तु मेरी तो यह प्रथम और अन्तिम भेंट मालूम होती है।' मृत्यु से कुछ दिन पहिले नेपाल में अम्बेडकर का दगा। योद्धा अब भी थे पर स्वास्थ्य जवाब दे चुका था। मरने से पहिले अम्बेडकर ने बौद्ध धर्म की नींव पुनः रख दी।

बौद्ध विहार में कई जगहों के आदिमियाँ से मुलाक़ात हुई, जिसके लिए हाँ जब के मैं वहाँ ठहरा था। पाकिस्तान के हाथ में गये मोरपुर (जम्मू) के शरणार्थी श्री आमप्रवाणजी मिले। वह उस समय अपने घर से भग, जब मोरपुर में भी आग लग गई थी। उनके पिता बकील थे। अपना घर द्वार और सम्पत्ति थी। बड़े ही भागे। अपना और अपना का प्राण सम्पत्ति से अधिक मूल्यवान् हाता है। जब हाग आया तो चारा ओर से अपने का धिरा दगा। पिता और परिवार के कितने ही लोग मारे गये। दो बहनें पाकिस्तान में कई वर्षों तक रही, जहाँ उनका ब्याह भी हो गया था लेकिन यह जबरनस्ती का था। इसलिए अवसर मिलने पर वह अपने भाई के पास भारत चली आई। किस तरह हिन्दू स्त्रियाँ ने आततायियाँ के हाथ में पडने की जगह नदी में डूब कर अपना छुटकारा किया बसा सासत सही इसका बड़ा हृदय द्रावक वणन कर रहे थे। मैंने आमप्रवाणजी से कहा—इसका लिखित बर डालिए। हाँ, यह जरूर था कि यह आततायीपन एकतरफा नहीं हुआ जहाँ जिमका बम चला, वहाँ उसने अपने को मानवता में गिरा माबिन किया।

अमृतसर—भयाजी का बहुत आग्रह था कि दिल्ली आने पर अमृतसर जरूर आऊँ। आजकल सर्दियाँ का समय था इसलिए तरलीफ का कोई सवाल नहीं था। ६ बजे रात की अमृतसर वाली गाँधी पकड़ी और सहा गुर के रास्ते चलकर २१ नवम्बर के सुबे अमृतसर पहुँच गये। भयाजी और भाभीजी स्टेशन पर मौजूद थे, इसलिए घर ढूँढने की तकलीफ नहीं

उठाना पड़ी। तीन वर्ष पहले अमृतसर में आग लगी थी वास्तविक और मान-सिद्ध भी। समझता था कि गहर अधिकतर उजड़ा मिला और लोग बहुत कम। भैया का घर गहर के गभ में था इसलिए गहर के बहुत से भाग का रास्ता में देखते जाना पड़ा। मनुष्यों की संख्या कम नहीं मालूम होती थी। पहले कूबा कुत्तियाँ में भैया के निमजिला मजान की ऊपरी छत पर पहुँचा। इधर उधर की बातें हुईं, भोजन किया तब बाहर निकले। अकाली मार्केट में भैया का प्रेस पञ्जाब आयुर्वेदिक फार्मसी और दवाईखाना है। भाई साहब दिमाग में विन्कुल आधुनिकता रखते हैं और बुद्धिवाद की तो साकार मूर्ति हैं। जब आयुर्वेदिक दवायें बनानी शुरू की तो उन्होंने सोचा दवाओं के बनाने में आधुनिक यंत्रों की भी सहायता ली जा सकती है। गोलियाँ के बनाने के लिए पहले भी कितनी ही लागू मशीन का इस्तेमाल करते थे। भैया ने सरल और ठोकी तथा आगल का काम भी बिजलीचालित यंत्रों द्वारा लिया और इसके लिए मशीनों यहाँ के मिस्त्रियों से बनवाईं। भस्म बनाने में भी उन्होंने आधुनिक माधना का उपयोग किया, और दवाइयाँ अनन्त शुद्ध कच्ची सामग्री इस्तेमाल की। इसी के कारण उनकी फार्मसी खूब चली। फार्मसी के कारखाने को देखकर यह मालूम होता था कि उस पर यंत्र-युग की छाप थी पर घर में उनका सफाई नहीं थी। पर यह अपना घर भी नहीं था। जस-तसे घर में काम शुरू किया था जिसमें सुधार करना अपने काम की बात नहीं थी। वाइलेट (अतिवासिनी) किरणों का तैला पर क्या असर होता है, आजकल इसकी परीक्षा पर भाई साहब जुट गए थे। अबधी प्रान्त में भी दूध का बायकाट नहीं है लेकिन दूध के घ्रम से घूने के पानी पर दूध देने वाला दूधभक्त यहाँ काई नहीं मिलेगा। पञ्जाब में भाई साहब को रहते तीस वर्ष से अधिक हो गये, इसलिए यदि पञ्जाब की कितनी ही बातों का अपना चुके थे तो क्या आश्चर्य ? भाभीजी को यहाँ आए अभी दस वर्ष भी नहीं हुए, लेकिन उनकी बाल्या पर पञ्जाबी अधिक छाई हुई थी। पर मैं पढ़े पढ़े दूध देने वाली दो भैंसों थीं। इस समय एक दूध दे रही थी। दूध, मक्खन, या दही का क्या प्रयोजन ? देना में

न हो पर उस घर में तो दूध की नदी बह रही थी। छाछ इतना होना कि मुहल्ले वाला में सदावत जारी था। अपने राम भी छाछ के बड़े पमी हैं। दूध के लिए जमा आक्षेप दूसरे पर करते थे बस ही दूसरे छाछ के लिए हमारे ऊपर कर सवत थे। घर में तांगा और अच्छी घानी ही नहीं बल्कि उसकी बछेरी भी थी। घुमकन्दराज न गृहस्थी अच्छी जोनी है, क्या दूध बहने की आवश्यकता है ?

इस यात्रा में हात दरवार साहब की ओर चले। दरवार तो तालाब के बीच में है लेकिन तालाब के हात के भीतर घुसते ही हुकुम हुआ सिर टोक लीजिए। सम्मान प्रर्णित करने के अपने अपने तरीके हैं। जब वेग रखना परम धर्म माना गया तो यश का नगा रखना गोभा की चीन नहीं थी इसलिए पगड़ी बाँटना अनिवाय हो गया। जब मार लाग पगड़ी बांध कर मंदिर में जा रहे हैं तो दूसरा का नगे सिर बस जान दिया जाए इस लिए सिर झूमन के नियम का सबसे मनवाया जाने लगा। बौद्धों में सिर झूमकर मंदिर में जान का अब असम्मान प्रदर्शित करना है इसाश्या में भी यही बात है। पर मुसलमानों में गिरावना जरूरी है। गायत्री किन्तनी हाँ याना की तरह इस भाँ गिनतों से मुसलमानों में लिया। अमूर्तिपूजक भिन्न मंदिर के भीतर कोई मूर्ति नहीं रख सकते और जो मूर्ति का जब दस्त बायनाट करेगा, यह कला से बचित हो जाएगा। लेकिन, लागा का क्या पता कि यस्तुत भगवान् सठा है और मूर्तियाँ ही मन्त्री हैं। भगवान् उतन उच्च भावा का मनुष्य के हृदय में नहीं भर सकता, जितना कि मुन्दर का पूर्ण मूर्तियाँ। प्रय साहन को वहाँ दो अथे रागी पद नहीं गा रहे थे। पर इसग सगीत की तो पूछ जरूर है। तालाब के किनारे सगमरमर का पग लगा है। जान पड़ता है धीरे धीरे आसपास सगमरमर ही सगमरमर हो जाएगा। बहुत में मवाना का गिराकर वहाँ एक तरह के मवान बनवाये गए थे। मरानर के भीतर मंदिर दगनर विगत के बौद्ध इस गुप्त पक्ष-सम्भव का स्थान मानते हैं और जाहल में किन्त ही निव्वती तीर्थयात्री दण्डवत् करत परिश्रमा करत भी दम जान हैं। मंदिर का दगकर दग के

लिए सिक्का का बलिदान याद आये बिना नष्ट रहना । इन वीरा व भविष्य की सेवाओं का ब्याज आते तुरन्त कामागतानामा की अमर कहाना आका व सामन आ जाती है, और प्रथम विश्वयुद्ध में ३० ३० वारा व हंसत हंसत देग के लिए मूली फासी पर चढ़ जान का रूप मामन उपस्थित हा जाता है । करता रमिह होता ता आज बूटा हाता, तकिन जनमान वप की अवस्था म ही अद्भुत निर्भीकता का परिचय द अपनी जवानी का बिनान किया था और उसकी वह जवानी अमर है ।

शिली म वमन की पुस्तक 'मिस्ट्री आफ विटिंग हाउस' मिली । उस घर में बैठे पढ़न रह । आवा व सामन यह सब हा रहा था तर भा बिसा व कान पर जू क्या नही रेंगा ?

अमृतगर में मिफ दा तिन व लिए आया था । पहल तिन रात का ऊपर न मीनिया स उतर रहा था गगना माफ नही थी और पैर ने एक की जगह दा साझा पार करना चाहा । गाय यह आतरा मीझी थी, इमजिये प्याम से गिरन पर वहन चाट नही आई ही घुटना टिग गया । 'कीर्द वान नहीं' — मैंने उस वकन यका बना ।

२० का चाय पीना कम्पनी बाग की आर टपन गए । आजका सनिक उत्सव का तैयारा हा रही थी । रात में गारिगनग मिली । एक जगह घाना ना गिर गई और नौगा उनके ऊपर पहुँच गया । पर पाड रसक अम्यस्त हान है । डा० पडामन ग भेट करन गए । ६० वप व ना चुक है । य पुगता वीग व उन पुगपा म ने है जिनका बुद्ध के व्यक्तिचन वान आवृष्ट किया । घोड और दूगरी पुस्तका का एक अग्र मपह उनक पास था और पुरानी मूनिमा व नी प्रभा थे । मय बुद्ध भक्त व जीव बुद्धि यादो, पर वनी रापावामो की भक्तिन थीं । डाड-ममाम था, पर विगुड प्ररुति र लाने म जय स्न हाता ना वट ना वटन फना म्य लना है ।

नाम को टपला जलियावाला बाग म । दाशरा व ऊपर ३१ वप बाद अब ना विजना ही गारिगों के निगतन मौजू थ । भाई साहब न उम

मन्दिर का भी दिखलाया, जिसका पीछे छिपकर उन्होंने और दूसरा ने अपन प्राण बचाये ।

मसूरी—२२ की शाम को देहरादून की गाड़ी पकड़ी और सोते हुए रात के पौन बजे महारनपुर पहुँच गया । दिल्ली के अखबार इसी वकन यहाँ आकर विधेय कार से मसूरी पहुँचाय जाते हैं यह हम मालूम था । स्टेशन में बाहर निकलने ही आवाज सुनी और सात हफ्ता दूर 'स्टेटसमन' वाली टैक्सी में बठ गया जा पौन चार बजे रवाना हुई । अघेरे ही अघेर में मदान ठाट सिवायिक में प्रविष्ट हा घाटा पार करते पता भी नहीं लगा । हाँ रागनी में राजाजी सैक्युअरी जेजेजा में लिगा देखा । मालूम हुआ, अघेजे के समय का 'अभयान वन' अब राजाजी व नाम से प्रसिद्ध किया गया है । घटे भर में हम देहरादून पहुँच गए । कारवाले ने एजेंटों को अखबार दिए, फिर पहाट पर चढ़ते हैं बज वितावधर में ल जाकर हमें उतार लिया । अभी भी चिराग जल रहे थे । देहरादून से मसूरी का दीपमालिका दिवाई पता थी और यहाँ से ता देहरादून हजारों विजली के चिरागों से जगमग-जगमग कर रहा था । इतने सारे भला कुली वहाँ से मिलता । चिरागों के बुझ जाने तक अपना सामान लिए अड्डे पर बठा रहा । अघेरा दूर हुआ कुली आए । एक ही पीठ पर सामान रखकर अपने घर का ओर चल । रास्ते में सड़क पर कुछ एमों जगह हैं जहाँ मूय की धूप नहीं पडती । वहाँ की आम जयन्त सके बफ बनी हुई थी ।

महाद्वजी मदीं से परशात मित्र, लेकिन कहा— 'काइ बात नहीं भुगत लेंगे ।' रात का आग जला लेते थे । यवान खरीदन वकन ऊँचा छत का भूषण समया था लेकिन अब यह भूषण दास रहा थी । छाटी छत हानी, तो लकड़ी जगाकर सारे मकान का गरम कर लिया जाता और जाड़े का बाहर रहकर चिरीय करना पडती । पत्रग बनान में डिलाई हा रनी थी । मीने समझा था लोट न जाने तक वह तैयार मिलेगा ।

महाद्वजी की सर्गों का इन्तिजाम सबसे पहले करना था, इसलिए अगले दिन (२४ नवम्बर को) उनका साथ हम लण्ठौर बाजार गए, और

गरम कपड़ा काट पायजामा बनाने के लिए दर्जी का दे आएं। बाजार जान पर डा० सत्यकेतु ने यहाँ चाय पीना अनिवाय था।

लौटते वकन हूपी बली कब्र के घर का रंग जान देखा। किसी समय यह कब्र मसूरी की नाक थी। उस समय समझा जाता था इस कब्र के बिना मसूरी श्रीहीन होगी। इतना लम्बा चौड़ा समतल स्थान मसूरी में किसी मकान के पास नहीं है। उसमें सात आठ टनिस काट थे। गांधीजी ने यहाँ कितना हाँ वार गामकी प्रायना कराई थी और पास में ही बिड़ला निवास में ठहर थे। मैंने अपने प्रथम वर्ष के निवास में बहुत चाहा कि अंग्रेजी नाम बदलकर इसका भारतीय नाम हो जाए और गांधी भूमि जम नाम का सुझाव भी दिया था। उस समय कई सालों में नगरपालिका के बाड़े का ताड़कर प्रबंध का सरकार ने अपने हाथ में ले लिया था। आगा था कि जन निवाचित नगरपालिका कुछ करगा पर वह पहले से भी गई जाती भावित हुई—इसी नहीं और बाना में भी। हूपी बली कब्र वर्षों में मूना पड़ा हुआ था बरसान में छत चूती थी, जिसमें कितने ही फर्नीचर और दरी टाट खराब हो गए थे। कब्र में पुस्तका का भी एक अच्छा संग्रह था जिसकी पूछ करनीवाला कोई नहीं था। आज घर का रंग जान देकर आगा हुई हूपी बली का भाग्य गामदे फिर जमेगा लेकिन जब सारी मसूरी का भाग्य सा रंग हो तो इस कब्र का क्या आगा थी ?

नेपाल में उस समय स्वतंत्रता का युद्ध छिड़ा हुआ था। नेपाली वाक्म के वीरों ने बारागढ़ का राणा शासन में मुक्त कर लिया था। लेकिन, बाप्रेसी स्वयं मन्वक मुनिशिन बना नहीं थी न उनका पास हथियार थे। भारत सरकार किमा तरुट का महायत्ना प्राप्त करने में बाधा डालने के लिए उत्तार दी। स्वतंत्रताप्रेमियों का चक्का के दा पाटों के भारत पडकर पिगना था। २४ नवम्बर का पना लगा नेपाली वाक्म के स्वयंसेवकों का बीरगढ़ छात्र कर पाछे हटना पना। क्या उनकी बुवानियाँ ब्यय जाएंगी ? उस समय एक हाँ आगा था कि नेपाली मना राणाओं के हाथ से बहाय हो जाएंगे मारा परिश्रमिनि प्रतिभूत मालूम हो रहा थी लेकिन बाक्म

मन्दिर का भी दिखलाया जिसके पीछे छिपकर उहोने और दूसरा ने अपन प्राण बचाय ।

मसूरी—२२ की शाम को देहरादून की गाड़ी पकड़ी और सोते हुए रात के पौन बजे सहारनपुर पहुँच गया । दिल्ली के अखबार इसी वकन यहाँ आकर विगय कार में मसूरी पहुँचाय जात हैं यह हम मालूम था । स्थान से बाहर निकलत ही आवाज सुनी जोर सात रुपया देकर “स्टेटसमन” वाली टक्की में बैठ गये जा पौने चार बजे खाना हुआ । अंधेरे ही अंधेरे में मदान छाड़ मिवालिफ में प्रविष्ट हो घाटा पार करते पता भी नहीं लगा । ही रोगनी में “राजाजी सेवचुअरो” अंग्रेजी में लिखा देखा । मालूम हुआ, अग्रजा के समय का ‘अभमदान पत्र’ अब राजाजी के नाम से प्रसिद्ध किया गया है । घंटे भर में हम देहरादून पहुँच गए । काग़वाले ने एजेंटा को अखबार दिए फिर पहाड़ पर चढ़ते ६ बजे किताबघर में ल जाकर हम उतार दिया । अभी भी चिराग जल रहे थे । देहरादून से मसूरी की दीपमालिका दिखती पड़ती थी और यहाँ से तो देहरादून हजारों बिजली के चिरागों से जगमग-जगमग कर रहा था । इतने सारे भला कुली कहीं में मिलता । चिरागों के बुझ जान तक अपना सामान लिए अड्डे पर बैठा रहा । अंधेरा दूर हुआ, बुला आए । एक की पाठ पर सामान रखकर अपने घर की ओर चले । रास्ते में सड़क पर कुछ ऐसी जगह है जहाँ मृग की धूप नहीं पड़ती । वहाँ की आम तमकर सफेद बफ बनी हुई थी ।

महादेवजी मर्तों से परगान मित्र लेकिन कहा—“काई बात नहीं भुगत लेंगे । रात का आग जला लत थे । मकान खरीदत वनत ऊंची छत की भूषण समया था लेकिन अब वह दूषण दीख रही थी । छाटी छत हानी, तो लकड़ी जगानर सारे मकान का गरम घर किया जाता और जाड़े को बाहर रखकर चिरोरी करनी पड़ती । पत्ता बनान में दिलाई हो रही थी । मैंने समझा था, लोहे के आने तक यह लपार मिलगा ।

महादेवजी की मर्तों का इतिहास सबसे पहले करना था इसलिए अगले दिन (२४ नवम्बर को) उनके साथ हम लण्णौर बाजार गए और

गम कपरा कोट पायजामा बनाने के लिए दर्जी का दे आएं। बाजार जाने पर डा० सयकेनु के यहाँ चाय पीना अनिवाय था।

लोटते वकन हपो बेली कन्व के घर का रगा जाते देखा। किसी समय यह कन्व मसूरी की नाक थी। उस समय नमझा जाता था, इस कन्व के बिना मसूरी श्रीहीन हागी। इतना लम्बा चौड़ा समतल स्थान मसूरी में निमा मकान के पास नहीं है। उमम सात आठ टेनिस काट थे। गाधीजा न यहाँ कितना ही बार गाम की प्रायना कराई थी, और पास में ही विटला-निवास में ठहरा। मैंने अपने प्रथम वर्ष के निवास में बहुत चाहा कि अग्रजा राम बडलकर इसका भारतीय नाम हो जाए और गाधी भूमि जने नाम का मुझाव भी दिया था। उस समय कई सालों से नगरपालिका के बाड का ताडकर प्रबंध को सरकार ने अपने हाथ में ले लिया था। आशा थी कि जन निर्वाचित नगरपालिका कुछ करगी, पर वह पहले से भी गई-वाती साबित हुई—इसी नहीं और वाता में भी। हपो बेली कन्व वर्षों से सूना पटा हुआ था, अरमान में छत चूता थी, जिसमें कितने ही फर्नीचर और करा टाट खराब हो गए थे। कन्व में पुस्तका का भी एक अच्छा संग्रह था जिसकी पूछ करखवाता काइ नहीं था। आज घर की रंग जान दग कर आगा हुई हपो बेली का भाग्य गामद फिर जगगा लेकिन जब सारी मसूरी का भाग्य मा रहा है तो इस कन्व को क्या आगा थी ?

नयाँ में उस समय स्वतंत्रता का मुद्दा छिडा हुआ था। नयाँ के वायम के बीरा ने बाराज का राणा गामन से मुक्त कर लिया था। लेकिन, कांप्रेसी स्वयं गणक मुर्गिधिन सना नहीं था न उनके पास हमियार थे। भारत सरकार जिमा नगह का महायत्ना प्राप्त करने में बाधा डालने के लिए उतावली थी। स्वतंत्रताप्रेमियों का चक्का के दा पाटों के भीतर पढकर विमना था। २४ नवम्बर का पत्र लगा नयाँ के वायम के स्वयंसेवकों को बारगज छाड कर पी, देह हटना पडा। क्या उनका कुवानियाँ ब्यथ जायगा ? उस समय ता एक ही आगा था कि नेपाली गना राणाआ के हाथ में बहाय हो जाएगी। सारी परिस्थिति प्रसिद्ध मालूम हो रही थी, लेकिन काल स्वतंत्रताप्रेमियों

के पक्ष में था। अगले दिन की खबरा से मालूम हुआ कि नेपाल का सगन्त्र विद्रोह सफल नहीं हुआ। काप्रसवाले सना को प्रभावित नहीं कर सके, भारत सरकार ने भारी रक़ावट पदा कर दी। अग्नेज बलि का बकरा बनाने के लिए नेपालिया को अपनी सना में भरती कर रहे थे जिसमें राणा परम महायज्ञ थे इसलिए वह अपने पौष्यपुत्रों का कैसे अपनस्थ होने दन ? इसी बीच त्रिभुवन बाठमाण्डू के भारतीय दूतावास में शरण लेकर और हमारी दृष्टि का कारण भारतीय विमान में चढ़कर दिल्ली पहुँच गए। सरकार की ओर से उनका खूब स्वागत हुआ था। पर यदि राणाओं का अपना पद पर बन रहने के लिए अप्रत्यक्ष रूप में काम करने देना था, तो इस प्रदर्शन का क्या मतलब ?

भारत में पिछले कई वर्षों से जागतिक का मूक कांग्रेसियों का हाथ में आया तब से भ्रष्टाचार और अयोग्यता इतनी बढ़ गई कि नितन ही लोग समझने लगते कि कांग्रेस अब खूनी नास है, उसमें रहने की जरूरत नहीं। डेमोक्रेटिक फ़ाट यही माचकर कांग्रेस से अलग हो गया। हरिन, कांग्रेस का निवलाजा में तभी फायदा उठाया जा सकता है जब उसका मुकाबला में वमा ही एक मम्मिलिन संगठित मार्चा तयार हो।

धम्बई—मंत्रिधान के मस्तुत अनुवात् समिति के डा० बाण अपनी बद्धावस्था के कारण धम्बई में इधर उधर जान में तसमय थे इसलिए समिति की बैठक धम्बई में बुलाई गई थी मुझे भी वहाँ जाना था। २७ नवम्बर को घर से प्रस्थान कर तीन घण्टे में टकमी ले मवा १० बजे गुवाटी के घर पहुँचा। पला बनानवाले बड़ी मुस्ती लिखला रहे थे। गुप्ता स्टार में पूछने पर मालूम हुआ अभी कलकत्ता से सामान नहीं आया। छपरा के दा तदग दहरा में वर्षों से रह रहे थे एक सफल वैद्य थे और दूसरे न हिन्दी विद्यालय खाल रखा था। दूरा उनका घर बनना जा रहा था अगली पीढ़ी तो शायद छपरा की वाली भी भूल जाएगी।

आजकल मुनियसिसिया में डाक्टर बननेवाला की बाढ़ जा गई थी। पी एच० डी० और डी० लिट० का टक भर जाना कुछ रणगा का बुरा लग

रहा था। पर यह दोष द्विप्रिया का नहीं है। द्विप्रिी व लिए अनुमत्तान करने वाला म कोई-काई अच्छे भी निवल आ सकत हैं। गुक्लजी ससृत और हिदा व विद्वान् तथा मफल अध्यापन हैं। उनकी कुछ इच्छा दय मीन भी क्यादा प्रासाहन ल्या। विषय 'कृष्ण कान्य का श्रात' रचना था। कुछ साला तन गुक्लजी का ध्यान इवर था और मैं भी आगे बढ़ान की कागिा करता रहा। लकिन, यह भार होना उनने लिए मुस्विल और व्यय भी था। हिन्दी विभाग व अध्याप थे देहरादून छात्कर और वहाँ काम करने जाना नहीं था, इसलिए डाक्टर बनन म काइ लाभ नहीं था। फिर गुक्लजी बहुधधी और सक्की सेना के लिए हर वक्त तैयार रहत हैं। कालेज म पढाई व घटा व। छाटर वानी मारा समय उनका परोपकार म लगता है। मवेरे चाप और मध्याह्न भाजन ता घर म हाना निश्चित है। फिर १२ बज रात तन उनका घर म पता नहीं रहता। साईकल भी नहीं चलाना जानते सारी यात्रा पदल हा करत थे। इसमे एव लाभ ता उन्हें जम्पर होगा कि वह गुक्लाइनजी की तरह कभी डापवटीज के गिवार नहीं हुए। नगरपालिका व नय चुनाव म बहु गिम्भा विभाग व अध्याप बना ल्या गण— एक करेला दूमरे नाम पर चला। अय मला उनको सॉम लेन की फुरमत वहाँ हा सक्ती थी? पर मेर आन पर घाटी बहुत फुरमत उन्हें निवालनी ही पन्ती थी।

देहरादून म बम्बई व लिए रवाना हुआ। २२ नवम्बर का सवेरे पौ पटते हमारी ट्रेन लिल्लो पढुवा। यहाँ हम ट्रेन बालनी थी। दूमरी ट्रेन म बय रिजव नहीं दगलिए जगह मिलन म मन्ट मालूम हा रहा था लकिन पाटियर मल म कितन ही लाग लिल्ली म उनरे। मैं जिम टाव म बंठा, जगम अमृतगर म आन बाल दा तरण भी थे। ट्रेन न यही स लेट हाना गुरू विना। मपुरा भरतपुर काग रतलाम बगीचा मूरत स हान जाना था। रामन म करीली और जयपुर व ना इलान मि। एन जगह जयपुर व गुनजी गानी पर चढ़े हमारा बम्पाटमट पूरी तौर स नर गया। मालव की भूमि पार करत गुजरान म प्रमिट हान व कारण कुछ ही दर बाग रात

हा गइ। सवरे बत्तार जाया। मातूम हुआ ट्रेन दो घंटा लेट है। दो घंटा लेट ही हम बम्बई सेंट्रल स्टेशन पहुँच। श्री घनश्यामदास पोद्दार को पहले ही पत्र लिख चुका था उनका आत्मी मौजूद था। इसलिए मलाबार हिल पर सेठजा व घर पर पहुँचने में कोई दिक्कत नहीं हुई। आजकल स्वास्थ्य के ख्याल से पोद्दारजी समुद्र के किनारे जुड़ में रहने थे मुझे उनके घर पर हा ठहरना था। दो दिन पहले आ गया था साक्षात् इसमें बम्बई के मित्रों से मिलना जुलना हा जाएगा। उस दिन स्नान और भाजन के बाद थोड़ी देर विश्राम किया। बड़े गहरो में एक जगह से दूसरी जगह जाने की बटी दिक्कत हानी है पर बार मौजूद थी। मुझे परतंत्र सवारी में घूमने में एक डर यह भी रहता है कि वही कोई घाव न लग जाय। सिद्धांत के तौर पर तो पहले से ही मानता था कि डायबेटोज में घाव या फोडा फुसी जाना ही उस बीमारा का रूप देना है।

अमृतसर में घुटना मामूली-सा छिल गया था। जिंदगी में इस तरह का छिलना कोई बात नहीं समझता था। मसूरी में रहने पर मालूम हुआ वह सूख गया। यहाँ आकर स्नान करते वक्त भिगोन से परहज नहीं किया। जब डायबेटोज बीमारी ने अपना रूप दिखाना शुरू किया। पहले दिन खतरा उनका मालूम भी नहीं हुआ था। उस दिन ३ वज निकला। गढ़वाल 'लियन में हाथ लगाया था इसलिए कंठारण्ड जीर कुछ दूसरी संस्कृत पुस्तक का आवश्यकता थी। बेंकटेश्वर प्रेम गया। 'बेंकटेश्वर समाचार' के सम्पादक गाम्त्रीजी जीर दूसरे त्रितने हा अदृष्ट परिचित निकल आए। बेंकटेश्वर प्रेम ने गस्टरन की बटी सहा की है। अपन बचपन में गस्टरन से अपरिचित हस्त गमय पत्राहा में मैं इस प्रेम का नाम सुना था जब कि मेरे जाना व पुराहित ऊनी बाया के नाता ने कोई पुस्तक यहाँ से बी० पी० द्वारा भेजा था। उना व आसपास बनना में आन पर इस प्रेम की छोटी कुछ चीन्हा और दूसरे पुस्तकें अपन घर पर मिली जिन में मंगल फूफा ने बम्बई में भेजा था। आजकल उसका प्रबंध रिमीवर व हाथ में था जिसके कारण उनमें रुक गई थी। सारा प्रेम लियाया गया, बदरखण्ड

भी मिल गया। प्रेम क मालिक तरुण मठ भी मिल।
 वहाँ स पाठों के क-त्रीय आफिम म गए, कुछ परिचित मित्रा से मुला
 बात हुई।

अगल दिन ३० नवम्बर का डा० हमचन्द्र जागी स मिलने गया।
 आजकल वह यहाँ 'वमयुग' माप्नाहिन का सम्पादन कर रह थ। प्ला
 चन्द्रनी नी यहीं पर थ। 'वमयुग' का त्त चलू करना था त्त इनक
 लिए उननी मापना से लाभ उठाना था जब इनका काम और बग-पहेली
 क काम्य वमयुग ५० हजार स नी अधिन छपन ग्या ता इननी जम्-
 रन नहीं रह। और नठग न घत्ता बना लिया। डांग स मिलन गय। वह
 उन वक्त घर पर ही थे। कितनी हा त्त तक वानचान हाती रनी। डांग
 सवन पुरान तप हण मचदूर नता और मावनगा क पण्डित हा नहीं बन्नि
 भागीय दनिहाम और मस्त्रुनिक नी गम्भीर विद्वान हैं। उनके माय
 वान करन मे आत्मीया आन जाता है। वह रह थ हम पाठों की
 मोनि कान्नी हागी बी गन्ता की गद है तिसन पागों को बहुत हाति
 पहुचो है।

उसी समय एक चानी फिम का निजी प्रणत मद्रू स्टुडिया
 (तारुव) म हा गया था। एन फिम दान का बहुत कम ही मिलन के जा
 मिलन न पया करत हा। एन मौन त लान उजाय विना में कम रह सकता
 था। पान भी मिल गया था। एक चानी वार तरुगी का जीवन इसम
 चित्रित किया गया था। क त उनन इमते-हैनन जापानी आभनगावारिया
 क हादा जपन प्राण लाय और गत पहुँचे कितन ताहस क बढ-बढ काम
 किय थ उनन शिनाया गया था।

१ न्तिम्बर का दगा, वारें घुनत का छिग भाग हरा हा गया है।
 दगार्द लगाद, पानों त घोछ बचाया ना पर व टोक नहीं हुआ। आज
 अनुगा समिति का बटन थी, इसगि पत्त वही जाना जग्गी था। समय
 था समलि पत्त म्मुत्रियम म डा० मानीब क पाउ गया। फिर नम
 ही वानचीन हाता रहा और म्मुत्रियम नहीं गया। उमिति की बटन त

घटे तक चली। प० लक्ष्मण शास्त्री जीर डा० मंगलदेव शास्त्री व किए हुए अनुवाद को दाहराया गया। डा० मंगलदेव शास्त्री डा० बाबूराम सबसेना सुनीति बाबू और डा० काण उपस्थित थे। डा० कुहन राजा ससृत पतान ईरान चल गए थे इसलिए उनका आना नहीं थी। अब राज अपराह्न में समिति की बैठक हान लगी। सोमवार को श्री बालमुद्रहमण्य अय्यर और महामहोपाध्याय गिरधर शर्मा भी आय, लेकिन सुनीति बाबू और डा० बाबूराम चल गये। अनुवाद का काम धर चलना रहा, और इधर मर पावन अपना रूप दिखाना शुरू किया। तब भी एकाध दिन रोका। 'रिपु रज पावक पाप इनहि न गनिय छोट कहि।' की सूक्ति दिमाग में चक्कर काटन लगी जब डाक्टर का परण लेना अनिवाय जान पडा। सठजी के मकान के पास ही उनका डाक्टर थे। उन्होंने सूत्र की परीक्षा करने बतलाया कि चीनी दो सैकडा है रक्तदाय १७० १६० है, जो थोडा सा अधि है। पराम हल्की सूजन भी है। आज उहान इमुलिन दे दो। अभी तक मैं इमुलिन का एनात भक्त नहीं हुआ था, उससे बचना चाहता था वस सूई लेने में कोई खतरा नहीं हाती। डाक्टर ने कहा, आवश्यकता हुई तो बल पनिसिलिन देंगे, और तब तब के लिए पनिसिलिन की दस गोल्याँ खान के लिए भी दी। सोच रहा था—'अवहित भार हूँ। जीवन में करणीय से अधिक कर चुका हूँ इसलिए मृत्यु का जरा भी भय नहीं जपना ही नहीं। ता भी बुरी मौत मरने की आवश्यकता क्या?' अब पर पर अपना पूरा अधिकार नहीं था लेकिन अवलम्ब रखने का उतनी आवश्यकता भी नहीं थी। समिति की बैठक की जगह पर बार से पहुँच अपनी कुर्सी पर जा बठता।

कोरिया की स्थिति न अत्यन्त गम्भीर रूप धारण किया था ३५ अक्षांश का पार कर आगे बढ़, अपने का बडा तीसमा था लेकिन जब चीनी सनिका से पाला पडा ता उसकी मच गई। जान पडन लगा कि चांग काद गन की तरफ भी चानी बहादुर प्रगान्त सागर में फँस कर था

माणु वम इस्तमाल करन की घमकी दा । घमकी ही नहीं, उसके इस्तमाल करन क लिए वह तुला दीव्य पडा । पश्चिमो पूराण क उसक पिटठू घवडा उठ । म्म क पास भी परमाणु वम था वह अमरिका का खुला छाड नहीं सकता था । म्म क परमाणु वम क सबम पट्ट गिकार इग्लण्ड और फ्रांस हान और वहाँ "स्टा न काउ बुल रोवनिहाग की नौवन आती इसलिए एटली यह समधान क लिए भाग भाग अमरिका गए परमाणु वम इस्तमा न करें और चान क साथ मुल्ह की जाय ।

पनिमिन्नि और इन्मुलिन दानों का राजवान हान लगा । यहाँ स चलन क पहल घाव का मूल जाना चाहिए था । पर डायरोटोज एमी वान सुनन क लिए तैयार नहीं थी । वम्बई क कौसिल भवन म हा हमारो बठक हाना थी म्यूजियम भा वहाँ स बहुत दूर नहीं था । ५ निम्ब्वर का मग्रहा लप म डा० मातीचजी म एक घटे वाने हानी रही । वही पटना के एक क्यूरिया विद्वाना मिल गय । वह रहे थ हमार पाम ४० हजार हस्त-निचिन प्रय है । म्मन और जालानती न राजगुरु प० हमराज की बहुत मी पुम्नके सराग ला है । राजगुरु न वनी महनत म जिन्गी भर वितना ही जालपत्र और दूमरी दुलम पुम्नके जमा की थी । इम तरह का मग्रह मिलना ताहिय था किमी राक्षाय सप्रहालय या पुस्तकालय का । अब वह इन तरह बट रग था । निजी मग्रहा म अनमाल वस्तुआ का सुरगिन रखना समव नहीं है यहा म्माल करक मैने अपन मग्रह का पटना म्यूजियम और विहार रिच सामाग्री का द दिया था ।

आज हा ७८ वष की उमर म थी अरविन्द घाप क स्टालन की खबर मिया । मर्हापि रमन और अरविन्द आध्यात्मिकता के महान् प्रकाश-मन्मथ थ । मरी लटि न मल हा वह महान् अचकार स्तम्भ रग हा पर लावा उन म मत थ । उठ-मठाना तथा राता रानी ता उट अतिम अवताग समज्ञ क आरता उतारन थ । अपनाग है यह दाना चल बज । लकिन पूरी उमर पासर हा इसलिए किती की गिराफ्त करन की गुजादग नहीं । दाना का निम्न गतिना का सिछली चौवाड गता म्म म धुआधार प्रचार म्म

था। अरविंद के चेले कहा करते थे कि उनका शरीर कभी नहीं विकृत होगा लेकिन दा ही दिन में जब गंध आन लगी तो जल्दी जल्दी उन्हें बकम में बंद करके दफना दिया गया। हिंदुआ न दफनाने की प्रथा बहुत पहल ही छाड़ दी थी, और उसकी जगह जलाने की स्वास्थ्यकर प्रणाली अपनायी थी। पर चला को तो अरविंद की कब्र पुजवानी थी इसलिए कबो उस जलाने लगे ? दाना आध्यात्मिक प्रकाशास्तम्भा में आपस में नहीं बनती थी। कभी एक जगह बैठन का ता उन्हें मौका नहीं मिला पर मन हा मन समझने थे कि एक जगल में दा सिंह नहीं रह सकते। विद्यामिया का घबरावन की तरून नहीं अगर उनक पास मूढ थड्डा मौजूद है ता जघकारपुज के दूसर महास्तम्भ बडे हान में मुश्किल नहीं होगी। देर लगेगी लेकिन कलकी अवतार आर्वेगे जरूर। अरविंद के मरन में सारी बम्बई पर गोक छा गया यह कहना गलत है क्वाकि बहु ठेबल उस वग क पूज्य और परिचित थे तिमनी सह्या अंगुलिया पर गिनी जा सकती है। उन रागा में जरूर गान छाया हुआ था।

६ दिसम्बर का डा० जगदीशचंद्र जैन से मिले। फिर जधेरी में सरदार पक्कीसिंह से मिलन गया। सरदार जाजरक यह नहीं थ जोर प्रभाभाभी जा पुत्र विजय क साथ धूमन गई थी इसलिए दानों से मुलाकात नहीं हो सकी।

७ दिसम्बर का डा० मोतीचंद और उनके एक पारसी मित्र क साथ ताज होटल में चाय पीन गया। पारसी सज्जन पीतला और पीतल की मूर्तिया क सप्राहक तथा उत्साही जिणालु थे। वहाँ में डा० मानीचंद दूसरे हाटल में ल गये जहाँ मुगमुसल्लम का भाज हुआ। उनक चचा भारत दु हरिश्चंद्र अपने समय क ममाज से बहुत आगे बडे हुए थ, लेकिन मुग मुसल्लम का माहस उहान भी कभी नहीं किया हागा। यदि जीत जी यह सौभाग्य नहीं प्राप्त हुआ ता श्राद्ध का मुगमुसल्लम ता मौजूद था। आओ परमवण्णव, और नहीं ता 'घ्राणम् धद्ध भागनम्' ही मणे।

८ दिसम्बर को फिर अधरा गए। अब के प्रभा बहिन मिली। विजय

की वहिन प्रता भी समार म आद थी। वही भाजन हुआ। फिर पिछठे कई साला की जाती वानें सुनी। सरदार का एक पैर बम्बई म और एन पर भावनगर म रहता है। प्रमा वहिन वच्चा की शिक्षा का ख्याल करके बम्बई छाडन के लिए तैयार नही।

६ डिसेम्बर को अन्तिम बार समिति म तीन चार घंटे रण। भारतीय विद्या भवन म आज ही भारतीय सभृति पर भाषण देना था। मुनि जिनविजयजी ममिति व मन्स्य हान व कारण वही मिल गय थ वही रस समा व मभाषति थ। मुनिजी बहुत वर्षों तक भारताय विद्या भवन व मचालन म उमक प्रतिष्ठाता थी व हैपालाल माणिक लाल मुजीजी थ। मुनिजी भारतीय सभृति और विद्या ल गम्भीर माधक विद्वान थ। हम दाना का पश्चिम भी माधारण नही था। उन्होंने 'प्रमाण वातिनभाष्य' का दहा म प्रकाशित करना चाहा था जिमम वह मन्त्र नही हुए। निम्बनने एक दूगरी मन्त्रपूष ताल पोधी ह्यवघन शौलात्तिय व गुण गुण प्रम की महान् वृति विनयमूय का उत्तारकर में लाया था। जो सारे विनयपिटक का सार था। मूतपिटक व वाग म जा काम वसुधुन अपन अनिघमनाग व रूप म किया वहा काम विनयपिटक व सम्बन्ध म गुण-प्रम न किया था। तिन्त्र म पाँच मूल पाठय ग्रथा म एक यह ना है। रमक तिन्त्रनी अनुवाद का पना ता गोगा का था पर मूत्र व मिलन की आगा नही थी। मैं उस बढी माध व माध वहाँ स उत्तारकर लाया था। रण गान म पहर विद्या भवन न उस छपवाना शुरू किया था। सारी पुस्तक १९४७ म ही छप गुना थी सिफ भूमिका व लिप्यन की जरूरत थी जिसन लिए मैं व्यग्र था। पर ४७ म टन गइ पुस्तक १९५६ म भी प्रकाश म गी बाँ। गायत हमारी अगगा पीपी का हम दान का अवसर मिलेगा। एन दीय सूत्रता मर लिए अगतम्य थी लकिन फरफगान स बना जाता है? मुनिजी अब बम्बई म रहत भी बन थ। चितौड म चार मीत्र पर वृषि-आश्रम बनान की धुन म थे और माय ही रातस्वान मरजार ने भी अपन अनुमदान प्रतिष्ठान का वागनार उन्हें मौन दिया है, इनलिए उन्हें भी क्या

दाप दिया जाए ?

आज ही शाम का पौद्धारजी के यहाँ जुहूँ गया। पाँच बघ के लिए जमीन मिली थी, जिस पर ५० हजार रुपया खच करके बँगला खड़ा कर दिया गया था। साल का दस ही हजार तो हुआ। स्थान हवादार और स्वास्थ्यप्रद था। इस कहन की आवश्यकता नहीं। सेठ घनश्यामदास सरल प्रकृति के मितभापी और मारवाडी सठा व बहुत से दुगुणो स मुक्त पुरुष है। इस समय लखनऊ के एक कलाकार तरुण उनके यहाँ ठहरे हुए थे। वह नाक से सितार गहनाई वीणा ऐसी सुंदर वातात थ, कि असल जीर नकल म भेद करना मुश्किल था। कई भापाआ र बालन म वह गजब का अनुकरण करत थ। इस दिना म उनकी प्रतिभा गम्भीर कला का रूप ले सकती था, किंतु अभी इन चीता का मामूली कौतूहल साधन तक ही सीमित रखा जाता है। रात का म भी वही जुहूँ मे रहा। अगल दिन सबरे उठकर समुद्र तट पर गया जा कुठ ही हाथो पर नीचे तरंगित हा रहा था। पैर अभी ऐसी स्थिति म नहीं था कि बहुत दूर तक चहलकदमी कर सकता। जास पास म रिडला सठ आनदीलाल पौद्धार आदि व भी बगले थे। जमनालाल बजाज न यहाँ बहुत सी जमीन मिटटी के माल सरीद ली थी जा अत्र सान की हो गइ थी। चारा ओर बगल बगलिया और सौध बनत जा रह हैं। यहाँ तक बस जा जान क कारण बस खच म आन-गाने का भी लागो को सुभाता था। मलायार हिल स यह जगह अधिक ठडी थी किंतु बम्बई म सर्दी का बात करन की जरूरत ही नहीं वहाँ ता माघ-पूष म भी सिनमा घरा म पस चलान पडत है।

आज पूर्वाह्न म माटुगा व मद्रासा व धुआ की हिंदी कथा म भाषण दन जाना पडा। वहाँ तरुण-तरुणियाँ सरदा की सरया म उपस्थित थे, और बतला र थ कि तमिलभाषा लाग भी हिंदा क महत्व का समझत हैं। मैंन अपन भाषण म पल्लव-समृति पर कहन बनलाया था, कि तमिल भूमि की सत्कृति न जाया और बम्बाय पर किनना प्रभाव डाला था।

आज भी गान के बाद १ घं स ४ बज तक अनुवाद समिति म रहा।

वर्धा—गाडिया म अब भी बहुत भीड़ रहा करती थी, लेकिन मैंने पहल टर्जे का एक वय पहले ही म रिजव करा ली थी। हमारे डब्बे म एक मारवाडी दो पिता पुत्री बच्ची और मैं चार ही जादमी थे। वे तीनो उड़ीसा (जगाल) क नेपाल बाबा क पास जा रहे थे। लडका नेपाल उड़ीसा म ईसा मसीह का अवतार बनकर पदा हुआ था। अथे जाते और वह एक आंग्य नेम नेना, आंग्य मिल जाती। ँगडे लूले जाते और दशन मात्र से वह पैरा स दौडन लगते। काडिया की कचन काया बन जाती, निघन मालामाल हो जाते। कौन सी तपलीफ और चापत थी, जिसका नेपाल बाबा क दान मात्र मे नही हटाया जा सकता था। बच्ची बृद्ध की लडकी की एक जांग्य म बहुत बडी फूली पडी हुई थी। वस वह तरुणी और सर्वांग सुंदरी थी। नेपाल बाबा यानि उसकी फूली को हटा दोगे, ता फिर वह किसी मन्त्रा स कम नही हानी। इम लालसा स वह पिता क साथ जा रही थी। मारवाडी मज्जन भी अपनी किमी गरज के लिए जा रहे थे। मारा टेन म मागूम हाना था नेपाल बाबा क भक्ता का बच्चा था। बडी भीड़ थी। लाग आपस म बात भा कर रहे थे तो नेपाल बाबा ही की। मैं दिलचस्पी स उनकी बातें सुन रहा था, लेकिन अपनी तरफ स कोई ध्यान नही प्रकट कर रहा था। ट्रेन दिन ही म खाना हुई था। घटा-डेड घटा तक हमारा आर स नेपाल बाबा का भक्ति क बार म कुछ भी न निश्चत देखकर एवं न स्वय बहा— 'एस महात्मा का दान भाग्य मे मिलता है।' मैंने कहा— 'मन क्या गज ?' ट्रेन म तिल खाने की जगह नही, यही इसका प्रमाण था उन्होंने कहा— 'आप भी चलिए।' मैंने कहा— 'मर खतन भाग्य बहा, ता उम निष्प पुख क दान कर सऊँ।' उन आँस क लवा क सामन मैं नेपाल बाबा का आर म मन हटाने की बात करने की क्या कोशिश करता।

११ दिमम्बर क सारे क का मैं वर्धा स्टेशन पहुँचा। आनन्दा और दूसर मित्र स्टेशन पर मौजूद थे। हिन्दी नगर म अब भी जाता, वहाँ कुछ बद्धि भरण्य दिखाई पन्ता। अबरी अनियि भरण तैयार हा बुना था। एन कुणें पर बिजली का पम्प नी लग गया था। साहित्यिक योजना क बार म

कुछ बातचीत हुई, और वायवर्गाआ के वेतन और दूसरे खर्च का हिसाब लगाया गया। गाम का टाउन हाल में वर्तमान परिस्थिति पर व्याख्यान दिया। मिनेदजी को परिचय का काम मिला और अतिशयार्थक लिए उनकी जीभ पर गारदा बठ गई।

१२ निसम्बर का २ बजे आनन्दजी और विनायकी के साथ नागपुर गया। वहाँ लन्डिया की पाठशाला में पत्रले भाषण दना पडा फिर नागपुर महाविद्यालय (मर्मि कालज) में छात्रों और अध्यापकों के सामने हिंदी साहित्य और परिभाषा पर बोला। रात का डेड घटा साहित्यिक गाण्डी हुई जिसमें यहाँ के सर्वोच्च अधिकारी तथा नागरिक सम्मिलित हुए। बहुत तरह के प्रश्न पूछे गए उनमें हिंदी की रुचि को देखकर मुझे प्रसन्नता हुई।

१३ दिमम्बर का हम यहाँ से ममूरी को प्रस्थान करना था। घाव का घाना-घाना अब नीचे ही चल रहा था और वह सूजन का नाम नहीं ले रहा था। दापहर की गाड़ी पकड़ने से पहले राज्यपाल तथा मंगलदास पक्वासा सम्मिलना ठीक हुआ था। ५० हूपिन्ग गर्मा पक्वासाजी की सुयोग्य पुत्रधूम के हिंदी अध्यापक थे। उनका हाँ आग्रह पर उस स्वीकार किया और पौन ६ बजे राजभवन में पहुँचे। प्रातरात्र के साथ ही बातचीत भी करना थी। एक सुनिश्चित सम्बृत्त गिष्ट दानप्रेमी के अनुसार ही वहाँ मवाल जवाब हुआ। पक्वासाजी स्वयं भी डायबटीज से मरीज थे। उन्होंने अपने तन्त्रों को बख्शाया और हम दान की बनी इच्छा प्रकट की। उस समय अभी हमारा काग्रही नना कम से भटवन था, और आजकल की तरह की आवा गार्ही की कल्पना भी नहीं कर सक्ते थे।

ममूरी—राजभवन से स्टेशन आकर गाड़ी पकड़ी। फिर अनन्त दार चक्के उमो रास्त से द्वाँरसी की आर वना। नापा रास्त में पडा। अगले दिन (१४ निसम्बर) का मयरा आगरा में हुआ, ११ बजे दिल्ली आइ। दिल्ली में उतरना था। घाव का नीचे दाननाल तरनी थी। भयावह स्थानीय मन्तार थी गौरालाल घानना स्टेशन पर आये हुए थे। डाक साथ गली में

उनके घर पर गए जो पुरानी दिल्ली के मोहल्ले में था। महा आधे टिन्डू और आधे मुमन्मान रहा करन ये। विभाजन के बाद सार मुमन्मान पानि-स्तान चने गए और उनके घरों में पञ्जाब के शरणार्थी रहने लगे। श्री गौरालजी भी उमा तरह अब एक कोठरी में रहने लगे। दापहर का भाजन करके तान घटा माना रहा। आगे दहरादून तक न जान मान का मिले या नहीं, इसीलिए पहले ही हमी पूरी कर देना चाहता था। "पालू करके ८ बजे फिटियर में पर सवार हुआ। जगह पहले ठहर मिली। एक ता हायरे टीक बाग को पञ्जाब के लिए उठना पड़ना है, इसीलिए भी ऊपर की सीट अनुकूल नहीं होना पर अब ता उगना भी हा गया था। दूसरे मज्जन ने अपनी साट हम दे दी। घब की मरहम-पट्टी हट करके उसमें कुछ भी सुधार नहीं माना जाना था।

सहारनपुर तर हा हम ट्रेन में जाना था जहाँ रात २ बजे में पहले पहुँच गया। अन्धकार वाली रात में बठार माडे ५ बजे किताबघर पहुँचा। वहाँ में सामान उठवाया, और उपानाल में ही हा बिस्फ" का गदा। देना, पञ्जाबाठा न पादप बँटान के लिए जमीन ग्या ली थी। महादेवजी के दाहिने हाथ में हजर कितन हा दिना से दद था, वह लियन में असमय में। अब वह चाने की साच रहे। पर, मैंने कहा—'कोई लिपिक आ ही रहा है इसलिए उसका चिन्ता न करें। अपना पट्टी ग्याली ता घाय का हव देवकर जान पट्टा अस्पताल जाना पड़ेगा। लेकिन कमला को विचारद का परीक्षा इती महान लनी थी। अस्पताल यहाँ से बहुत दूर लण्णौर के पास था। यहाँ जान में न जान सितना समय लग, इसलिए तर तर मरहम पट्टी महा करन का निश्चय किया।

आज सरदार बल्लभभाई पट्टर का सम्बन्ध में देहात हा गया। "कांग्रेस में वही एक आदमी था जो कुछ करन की दायता रखता था। चाहे मूल में भी हा।" रियासत का एकीकरण सरकार का सबसे बड़ा काम था और हैरतकाण्ड का टाक करना उसमें भी बड़ा काम। बाग्याना के नना के ये काम हमारा स्मरणीय रहेग। वैंत व पटा के सवा बड समयन थे, और

अपन रास्त म किसो रोडे को फूटी आँखा भी देखना नही चाहते थे ।

कमला का साथ रहते अब डेढ़ वष से ऊपर हो गया था । उह आगे बढ़ाने म पहला कदम यही हुआ था कि इस साल वह विगारद मे बठन वाली थी । उह मर साथ और मुये उनके साथ रहना था । इतने दिनों म हम एक-दूसरे की प्रकृति से काफी परिचित हो चुके थे । स्त्री पुरुष के एस घनिष्ट सम्बन्ध का अनिश्चित स्थिति म रचना ठीक नही था । पुरुषों के राज म स्त्रियों के लिए यह स्थिति और भी अमह्य थी । इसलिए १८ दिगम्बर का हमने निश्चय किया कि दाना पति पत्नी बन जाएँ । मुझे हिषक सबस बडा आयु की थी । मैं नही चाहता था कि तरुण जीवन को बचपन म छोडूँ । २३ दिगम्बर का उपा—बाबा के साथ डा० सत्यनेतु और गीलाजी ११ बजे जा गए । नागाजुन के आने की आशा थी लेकिन अभी वह नही जा पाए थे । महादेव भाई साथ ही थे । १२ बजे के करीब डा० सत्यनेतु पुरोहित बन और हम दाना का स्वाह हो गया । साहित्यिक काम और मेरे स्वास्थ्य के बारे म डेढ़ साल तक का दखभाल कमरा के भी थी यह बडी ही सफलताय थी । डायरियाज का निवारण करीब हो रहा था इसलिए उसका ठीक से चलाने म भी कमला के हाथ की जरूरत थी । यदि मैं इसे न करता तो वह हल्के दर्जे की स्वायपरता हाता और कमला के साथ भारी अभाव भी । अगले दिन (२४ दिसम्बर का) परीक्षा देने के लिए कमला का दहरादून जाना था, जिनसे पहले इस काम का कर लेना था ।

१६ दिगम्बर का भी घाव की बही हालत रही । अब इन्मुलिन का इन्वजन रान के पहले रोज लन लगा मिवाजाल की गालियाँ भी खाई । घाव म बचाना तथा इन्मुलिन का बराबर रत रहना है अब यह माफ दिगलाद देने लगा । जब तक घाव है तब तक ता इन्मुलिन से पिण्ड नही छूटना अनिषिद्ध के अति समझना था कि उस रोगातार नही पूगा, भाजन का सबन रखूंगा । पर यदु रोगा जासान काम नही था । वष के अन्त म ३१ दिसम्बर का डायरी म लिखा—“अभी भी घाव अच्छा नही हो रहा है । रल चाहते हैं अनिश्चित रना । दो माई महीने के करीब यह घाव मरे

साथ रहा। उसने शिक्षा दी कि अत्र इन्मुलिन का राज लेना चाहिए, और घाव से नितना बचा जाय उनना बचना चाहिए। ममूरी में रहने उसकी सभावना कम थी, लेकिन बाहरा यात्रा चाह रत् की हा मोटर को या पैदल घाव का डर बना हो रहता है इसलिए मैंने बाहर जान का स्थाल छोड दिया। पहले इन्मुलिन गाम-मवरे दा वक्त लता रहा फिर साचा यदि खाना गाम का छोड दें ना दा वार सूई चुमान को जरूरत नहीं हागी। तत्र मे शाम का खाना छोड दिया। पीछे डाक्टर ने बनलाया एक वक्त अधिक खान से हृदय का बहुत काम करना पडता है, हृदय का दद उनी व कारण है। तत्र २४ घण्ट का इन्मुलिन लकर दाना वक्त खान लगा भेद न काम करन से इन्वार कर दिया, और खट्टी डकारें जान लगी। इसलिए दा वक्त व चाय व वक्त घावा भाजन बनकर मध्याह्न भाजन का ही मुख्य बनाने का निश्चय किया। घाव न रहने पर इन्मुलिन न लेने से पेगाव का अधिक खाना मुट् का सूखा बन रहना और साथ ही दिमाग में एक तरह का खुमार सा बना रहना बुरा था जिसके कारण ही इन्मुलिन-शर्ती बनना पडा।

२४ डिसेम्बर का परीक्षा दिन के लिए कमला देहरादून गई। वह परीक्षा ही दिन के लिए नहीं गई थी, बल्कि उह अब को कलिम्पान भी जाना था, अर्थात् महान मर वाट ही वह लौट सजती थी। उस दिन बादल छाया था, सर्दी बहुत बढ़ गई थी। आग जलाई ता चिमना का रास्ता रका हुआ था, सार घर में धुआं भर गया। रात का पानी घरमा। २५ को बडे दिन का सबरा आमा। वर्षा हिमपात के रूप में परिणत हो गई। दोपहर तत्र हमारी ब्यारियो और रास्ता बर्फ की सफेद चादर से ढँक गया। हवा बिल्टूल बंद था। बर्फ बूझा के गाछा गाछा, पत्ते-पत्ते पर मड गई, सामने को विलायता मजूर पहल हापो के बान जम अपन पत्ता का हिलानर बर्फ के फाया को हटाना चाहता थी, पर जब हुआ बंद हुइ ना पत्ता पर भी पाय चिपकन ला। आसपास और खमार महान को सारी छनें मके हो गईं। कौट-पतप पशु-पशा नहीं किमी का आवाज नहीं सुनाद देती, चारा तरफ नीरवता का अमण्ड राज था। बरामद में दिन में भी तापमान ३४ डिग्री था, बाहर और

भी कम, इसलिए बक के पिघलने का कोई सवाल नहीं था। मैं ज्यादातर चारपाइ पर बठे बठे गढ़वाठ" लिपिन में अपना समय बिताया। अगले दिन 'प्रथम हिमपात' का नाम से एक छोटा-सा लेख लिखकर "नवयुग" को भेजा। आज बक पिघलने लगी, लेकिन आवाग से बादल बिल्बुल हटे नहीं था। ता भी सूख धीरे धीरे में चानकर दीप्तता था। २६ को महादेवीजी देहरादून से जा गये।

हमारे पड़ोसी लडली परिवार और पूसग परिवार ईसाई एंग्लो इण्डियन थे। दाता के ही साथ हमारा सम्बन्ध बहुत अच्छा था। घटे दिन का पक्क उनके लिए वस ही महव रखता था जमा हमारे लिए होली दीवाली। चाह हम उससे धार्मिक जग पर विद्वांस न रखें पर बचपन में उनसे कारण ता भीठे पक्वान गाय हैं परिवार और समाज में जो उल्लास दगा है वह अत्र भी अपना आनपण पना किय बिना नहीं रह सता।

२६ का महाश्वजी फिर देहरादून गए। उनमें कह दिया यदि कमला कलिम्बाग जाना चाह, ता इसी वक्त हा जाए। कमला परीक्षा देकर यहाँ गई भी।

३० दिसम्बर का सर्दी बढ गई थी। ५० सुगलालजी ने अपने सम्पादिन हेतु विदु की एक प्रति भिजवाई। धमकीति की इस महवपूर्ण पुस्तक का मूल संस्करण नहीं मिला था। किन्ती उन भंडार में अचट लिखित इमका टाका मिली थी, जोर दुवेंक मिश्र को उम पर अनुनीता निब्वन में मैं लिया था। ५० सुगलालजी ने इन्हें सम्पादिन करने का भार लिया। मैं निम्नी के जाघार पर उनसे मूल्य का भी संस्करण में कर दिया। तीता चीजें एक गाय छपी हैं यह गानर मुझे प्रगतता हुई—उम कीति की एक और कृति भूत भाषा में उनसे सम्पादो के भामन जा गई।

१९५० का अंतिम दिन (३१ दिसम्बर) शतवार का पडा। गाल भर का लता जागा ला पर मातूम हुआ कि इस साल 'मधुर स्वप्न' की शक्तिरिचय प्रकाशित हुए। कुमाऊँ लिखर प्रेम में भेजा था किनु १९५६ का अंतिम पाठ में ही उमसे छान की नौबत आई। "आदि

हिन्दी" की छागई म हाथ लगा और गढवाल ' क दा सौ पृष्ठ लिखे जा चुक । अपन काम स मताप था । पर अभी सामन ढेर का ढेर काम पडा हुआ था । सबसे बडा काम था ' मध्य एमिया का इतिहास ' जिसम न जान निनना समय लगया । उस साल बाहर न जान का सकल्प रहन भी कलिम्पाग कलकत्ता दिरली प्रयाग, अमृतसर, बम्बई वधा नागपुर, हैदराबाद जाना पया । 'गरार म गति की कमी नहा मालूम हाती था, ता भी घाय विवट रूप ले रहा था इसरी चिन्ता जरूर थी ।

मसूरी म रहने प्राय ६ महान हा गण थे । यहाँ का प्रथम आनपण न रहने पर भी वह अच्छी मालूम हेनो थी । जागोहया रिन्तुल अनुकूल थी । सर्गे मने लिए परेगानी की चीज नही थी और सफे-मफे दप नो देखन म ता घस हा आनद मिलता जस हर हर दवदारा क पन का दवनर । परिचिन अविन बताना पसद नही था क्पाकि उत्तम समय क अपज्यय का मवाल था, ता भी सहृदय हितव घुआ स भिन्कर जा आनद प्राप्त हाता है उमम वचित रहना में भा नही पसद करता था । 'हन विन्फ' स बानार की आर आन जान म याग-भी बगद पडता थी जो बिल्कुल मालूम नहा हाती थी और न हृदय पर उमका विमी तरह का बान मालूम हाता था । डायरगैज न घछपि इन वक्त परेगान था, रिन्तु चीनी इतनी नही जा रही थी कि जिमका वजा पर असर पडता ।

गनी-बारी का तजवा अभी नया-नया था जोर गृह भा उम समय का जबकि गरी का मौसम चीत चुका था । घट डू घट निवासर सत म काम करता में चाहता, और करता ना था । पिनना ही साग-मजिया स निराग हातर भी हिम्मत छाजनवाला नही था । बफ क रिना म राई और गाभा डटा रहा । बफ पिपलन हा उमकी हरी हरी पत्तियाँ फिर बमवन लगा टमाटर न मूररर फिर उठन का नाम नही लिया । लाल मिच की भी स्थिति बमा ही दीग पने । तजवें सग्या कि अगर घरता क नीतर पनका पट का हा मृन न हान दिया जाय ता बगन म बहा पड फिर पत्त और अबुर दा लाव हैं, और सयस पहल इनम फल लगन हैं । हर माल

उनकी रक्षा में हम यथोचित ध्यान नहीं दे सक, लेकिन तो भी इन्होंने, विशेषकर मिच ने निराग नहीं किया। १९५० की लगाई एक लाल मिच तो आज भी उसी तरह तयार है, और हर साल सक्टा फल देती है। कड़वी पत्तनी, कि बड़े बड़े मूरमाआ के दात खट्टे कर देती है। प्रो० विश्वनाथ गुक्ल बड़ी डींग हाँवते थे। जब घर की एक छाटी सी मिच उनके सामन रस दी गई ता उहान हार मान ली। मिच का बिल्कुल वायकाट ता नहीं करता पर हमारे घर म मिच प्रेमिया की कमी नहीं है। कमला का ता उसक बिना सरता ही नहीं।



